डोसी

डोसी गौत्र की उत्पत्ति

ऐसा कहा जाता है कि संवत् ११९७ में विक्रमपुर में सोनगरा राजपूत हरिसेन रहता था। आचार्य्य श्री जिनदत्तसूरिजी ने इसे जैन धर्म का प्रतिबोध देकर ओसवाल जाति में मिलाया और डोसी गौत्र की स्थापना की।

भिक्खूजी डोसी का खानदान, उदयपुर

इस खानदान में भिक्खूजी डोसी बड़े प्रसिद्ध हुए। आपने महाराणा राजसिंहजी (प्रथम) का प्रधाना किया। आपही की निगरानी में उदयपुर का मशहूर राजसमन्द नामक तालाब का काम जारी हुआ एवम् पूर्ण हुआ। इस तालाब के बनवाने में १०५०७६०८) खर्च हुए। इस तालाब के पूर्ण बनजाने पर महाराणा राजसिंहजी ने इसके उद्घाटनोत्सव के समय पर कई लोगों को कई तरह के इनाम व इज्जत प्रदान की थी। डोसी भिक्खूजी को भी इस अवसर पर महाराणा ने एक हाथी और सिरोपाव प्रदान कर उनका सम्मान बढ़ाया था।

महाराणा राजसिंहजी अपने समय में राजनगर नामक स्थान पर विशेष रहते थे। कहना न होगा कि उनके प्रधान डोसी भिखोजी को भी वहीं रहना पड़ता था। आपने वहाँ एक सुन्दर मकान बनवाया था जो कि वर्तमान में भी डोसीजी के महल के नाम से मशहूर है। इसके अतिरिक्त आपने वहां एक सुन्दर सफेद पत्थर की बावड़ी और एक बाड़ी भी बनवाई थी। उक्त तीनों चीज़ें इस समय भी आपके खानदान वालों के कब्जे में हैं।

उदयपुर में आपने वासपूज्य स्वामी का एक सुन्दर कांच का मन्दिर बनवाया। इसके अतिरिक्त ऋषभदेवजी के मन्दिर के पास में भी आपने एक उपाश्रय बनवाया था। जो वर्तमान में वासपूज्यजी के मन्दिर के ताल्लुक में मौजूद है। लिखने का मतलब यह है कि आपने अपने समय में बहुत से अच्छे अच्छे काम किये। तथा महाराणा साहब भी आप पर बहुत प्रसन्न रहे।

आपके कुछ पीढ़ियों पश्चात् क्रमशः रायचन्दजी, धनराजजी, रामलालजी, चन्दनमलजी और अम्बालालजी हुए।

अम्बालालजी—आपका जन्म संवत् १९५२ के ज्येष्ठ सुदी १२ को हुआ। आप यहां स्टेट में इन्जीनियरिंग डिपार्टमेण्ट में सन् १९१२ से ओवरसियरी का काम कर रहे हैं। आपके इस समय चार पुत्र हैं। पुत्रों के नाम भँवरलालजी, उदयलालजी, मनोहरलालजी और जीवनसिंहजी हैं। इनमें से बड़े तीनों पुत्र विद्याध्ययन कर रहे हैं।

सेठ गम्भीरमल कनकमल डोसी, भोपाल

लगभग ७० । ७५ साल पूर्व मेड़ते से डोसी गंभीरमलजी भोपाल आये और यहां दुकान की। आपके सिरेमलजी तथा कनकमलजी नामक दो पुत्र हुए। डोसी कनकमलजी के पुत्र नथमलजी हुए तथा सिरेमलजी के नाम पर भेरूमलजी दत्तक लिये गये। कनकमलजी और सिरेमलजी का कारबार उनकी मौजूदगी में ही अलग अलग होगया था।

डोसी नथमलजी का जन्म संवत् १९३७ में हुआ था। आप भोपाल म्युनिसिपैलेटी के १२ सालों तक मेम्बर रहे, संवत् १९७५ में आपका शरीरान्त हुआ। आपके पुत्र डोशी राजमलजी का जन्म संवत् १९६४ के भादवा मास में हुआ।

डोसी राजमलजी ने मेट्रिक तक शिक्षा प्राप्त की है। तथा अपनी फर्म पर कई नये व्यापार खोले हैं। संवत् १९८६ से आपने राजमल केशरीमल के नाम से भेलसा में दुकान की। भोपाल में राजमल जवाहरमल के नाम से हार्डवेअर, इलेक्ट्रिक व मोटर गुड्स, जनरल मर्चैण्डाइज़ तथा गंभीरमल कनकमल के नाम से इम्पोर्ट व्यापार होता है। डोशी राजमलजी की फर्म भोपाल के व्यापारिक समाज में प्रतिष्ठित समझी जाती है, आप यहां ६ । ७ सालों से ऑनरेरी मजिस्ट्रेट भी हैं।

दूगड़

दूगड़ गौत्र की उत्पत्ति

दूगड़ गौत्र की उत्पत्ति राजपूत चौहान वंश से है। यह राजवंश पहिले सिद्धमौर और फिर अजमेर के पास वीसलपुर नामक स्थान में राज्य करता था। सन् ८३८ में इस राजवंश में राजा माणिकदेव हुए जिनके पिता राजा महिपाल ने जैनाचार्य श्री जिनवल्लभसूरिजी से जैनधर्म अंगीकार किया। आपके क्रमशः दो तीन पीढ़ी बाद दूगड़ और सूगड़ नामक दो भाई हुए इन्हीं के नाम से दूगड़ गौत्र चला।

श्री बुद्धसिंह प्रतापसिंह दूगड़ का खानदान, मुर्शिदाबाद

दूगड़ और सूगड़ के कई पीढ़ी बाद सुखजी सन् १६६२ ई० में राजगढ़ आये। आप बादशाह शाहजहाँ के यहाँ ५ हजार सेना पर अधिपति नियुक्त हुए और राजा की पदवी से विभूषित किये गये। आपके बाद १८ वीं शताब्दी में वीरदासजी हुए जो किशनगढ़ (राजपूताना) से बंगाल के मुर्शिदाबाद नगर में जाकर बस गये। तभी से इस खानदान के लोग यहाँ ही निवास करते हैं। आपने यहाँ बैंकिंग का व्यावसाय आरम्भ किया। आपके पुत्र बुद्धसिंहजी हुए। बुद्धसिंहजी के पुत्र बहादुरसिंहजी एवम् प्रतापसिंहजी ने इस व्यवसाय को तरक्की पर पहुँचाया। बहादुरसिंहजी निसन्तान स्वर्गवासी हुए।

राजा प्रतापसिंहजी दूगड—आपने भागलपुर, पुर्णिया, रंगपुर, दिनाजपुर, माल्दा, मुर्शिदाबाद, कुचबिहार आदि जिलों में जमीदारी की खरीदी की। आप बड़े नामांकित पुरुष हो गये हैं। आपकी धार्मिक मनोवृत्तियाँ भी बढ़ी बढ़ी चढ़ी थी। आपने कई स्थानों पर जैन मन्दिरों का निर्माण कराया। सार्वजनिक कामों में आपने बड़ी २ रकमें भेंट की तथा अपनी जाति के सैकड़ों व्यक्तियों के उत्थान में उदारता दिखाई। दिल्ली के बादशाह और बंगाल के नवाब ने खिल्लत बख्श कर आपका सम्मान किया था। बंगाल की जैन समाज में आप सबसे बड़े जमीदार थे। आपने पालीताना और सम्मेद शिखरजी की यात्रा के लिये एक बहुत बड़ा पैदल संघ निकाला था। इस प्रकार पूर्ण गौरवमय जीवन व्यतीत करते हुए सन् १८६० में आप स्वर्गवासी हुए। आप अपने पुत्र लक्ष्मीपतिसिंहजी और धनपतिसिंहजी का विभाग अपनी विद्यमानता में ही अलग कर गये थे।

राय लक्ष्मीपतिसिंहजी बहादुर—आपने अपने जीवनकाल में अपनी विस्तृत जमीदारी में कितने ही स्कूल और अस्पताल स्थापित किये एवम् सार्वजनिक संस्थाओं में यथेच्छ सहायतायें दीं। जैन समाज में आपने भी बहुत बड़ी कीर्ति पैदा की थी। आपने छत्रबाग (कठगोला) नामक एक दिव्य उपवन लाखों रुपयों की लागत से सन् १८७६ में बनाया जो मुर्शिदाबाद और बंगाल का दर्शनीय स्थान है इसमें एक सुन्दर जैन मन्दिर भी बना है। इन सार्वजनिक सेवाओं के उपलक्ष में सन् १८६७ में आपको गवर्नमेंट ने 'राय बहादुर, की पदवी से अलंकृत किया। आपने भी सन् १८७० में एक संघ निकाला था। आप बड़े समय के पाबन्द तथा उदारचित्त महानुभाव थे। आपके छत्रपतसिंहजी नामक पुत्र हुए।

छत्रपतसिंहजी—आप बहुत स्वतन्त्र विचारों के निर्भीक सज्जन थे। कलकत्ते के जैन समाज में आपका खूब नाम था। वर्तमान में आपके पुत्र श्रीपतसिंहजी और जगपतसिंहजी विद्यमान हैं तथा अपनी जमीदारी का प्रबन्ध करते हैं। आप भी सरल स्वभाव के शिक्षित महानुभाव हैं। समाज में आप सज्जनों का भी अच्छा सम्मान है। जगपतसिंहजी के राजपतसिंहजी, कमलपतसिंहजी प्रतापसिंहजी और

यदुपतसिंहजी नामक चार पुत्र हैं। इनमें राजपतसिंहजी बी० ए० की उच्च डिग्री से विभूषित हैं। श्रीपत सिंहजी ब्रिटिश इण्डिया ऐसोसिएशन, कलकत्ता क्लब आदि संस्थाओं के मेम्बर हैं। आपकी जमींदारी संथाल परगना, मुंगेर, भागलपुर, पुर्निया, रंगपुर, दिनाजपुर आदि में है।

राय धनपतसिंहजी बहादुर—आप भी बड़े नामांकित पुरुष हो गये हैं। आपने जैन धर्म के अप्रकाशित आगम ग्रंथों को प्रचुर धन व्यय करके प्रकाशित करवा कर मुफ्त बँटवाया। इसके अतिरिक्त आपने अजीमगंज, वालूचर, नलहट्टी, भागलपुर, लक्खीसराय, गिरीडीह, बडापुर, सम्मेद शिखर, लछवाड़, कांकड़ी, राजगिरी, पावांपुरीजी, गुनाया, चम्पापुरी, बनारस, बटेश्वर, नवराही, आबू, पालीताना, तलाजा, गिरनार, बम्बई तथा किशनगढ़ में मंदिर और धर्मशालाओं का निर्माण कराया। इन सब में विशेष उल्लेखनीय शत्रुंजय तलहट्टी का मन्दिर है। इसी प्रकार आपने तीन चार संघ भी अपने समय में निकाले थे। बंगाल की सभी संस्थाओं में एवम् सार्वजनिक चन्दों में आप मुक्त हस्त से सहायताएँ प्रदान किया करते थे। आपकी इन सेवाओं के उपलक्ष में सन् १८६५ में गवर्नमेंट ने आपको 'राय बहादुरी' का सम्मान प्रदान किया। आपके तीन पुत्र हुए जिनके नाम क्रम से राय गणपतसिंहजी बहादुर श्री नरपतसिंहजी एवम् तीसरे श्री महाराज बहादुरसिंहजी हैं। इन तीनों सज्जनों में से सन् १८८७ में आपने राय गणपतसिंहजी और नरपतसिंहजी को पृथक् किया।

राय गणपतसिंहजी बहादुर—आपको सन् १८९८ में राय बहादुर की पदवी प्राप्त हुई। आपने अपनी स्टेट में बहुत तरक्की की। आपका विद्या दान की ओर भी काफ़ी लक्ष्य रहता था। कई विद्यार्थियों को मदद देकर आपने शिक्षित किया था। आप संतोषी तथा उच्च चरित्र वाले सज्जन थे। आपके पश्चात् आपकी सम्पत्ति के उत्तराधिकारी आपके छोटे भ्राता नरपतसिंहजी हुए। नरपतसिंहजी के तीन पुत्र हुए जिनके नाम क्रमशः श्री सुरपतसिंहजी, महीपतसिंहजी एवम् भूपतसिंहजी हैं। आप ही तीनों सज्जन वर्तमान में इस खानदान की जमीदारी के विस्तृत क्षेत्र का संचालन करते हैं।

राय नरपतसिंहजी बहादुर, कैसरेहिन्द—आप और आपके भ्राता राय गणपतसिंहजी बहादुर ने मिलकर भागलपुर जिले में, हरावत नामक स्थान में अपनी जमीदारी स्थापित की और वहाँ के राजा के नाम से आप लोग प्रख्यात हुए। आपकी जमीदारी ४०० वर्गमील में फैली हुई है तथा १२०००० जनसंख्या से भरी पुरी है। आपने अपनी जमीदारी में स्कूल, अस्पताल सार्वजनिक संस्थाएँ बनवाई तथा उच्च शिक्षा का प्रबन्ध भी आपके द्वारा किया जाता है। वर्तमान में श्री सुरपतिसिंहजी के पुत्र नरेन्द्रपतसिंहजी तथा वीरेन्द्रपतसिंहजी और महीपतसिंहजी के योगेन्द्रपतसिंहजी, वारिन्द्रपतसिंहजी, कनकपतसिंहजी और कीर्तिपतसिंहजी नाम के पुत्र हैं। भूपतसिंहजी के राजेन्द्रपतसिंहजी नामक एक पुत्र हैं।

मेजर जनरल रा० ब० विशनदासजी दुगड़ C.I.E. C.S.I. [illegible] बी. ए. एलएल. बी. एडवोकेट [illegible]).
लेट दीवान काश्मीर (जम्बू)

[illegible] लाला [illegible]जी दुगड़, रावलपिंडी.

लाला निहालचंदजी जैन (के. सी. निहालचंद) रावलपिंडी

महाराज बहादुरसिंहजी—आपका जन्म सन् १८८० में हुआ। आप अच्छे शिक्षित समझदार एवम् उदार हृदय के रईस हैं। आप अपने मंदिर, धर्मशाला, स्कूल आदि की व्यवस्था बड़े ही योग्य ढंग से करते हैं। सम्मेदशिखरजी, चम्पापुरीजी, आदि तीर्थों का प्रबन्ध भार जैन समाज की ओर से आपके जिम्मे है और उसमें आप बड़ी तत्परता से भाग लेते हैं। अपने पूर्वजों की कीर्ति को अक्षुण्य बनाये रखने को आपके हृदय में बड़ी लगन है। आपके कुमार ताजबहादुरसिंहजी एम० एल० सी०, श्रीपाल बहादुरसिंहजी, महिपाल बहादुरसिंहजी, भूपाल बहादुरसिंहजी तथा जगतपाल बहादुरसिंहजी नामक पुत्र हैं। श्री ताजबहादुरसिंहजी सुशिक्षित एवम् विचारवान नवयुवक हैं। ९ जून सन् १९२९ में आप बंगाल लेजिस्लेटिव कौंसिल के मेम्बर निर्वाचित हुए थे। आप लोगों की विस्तृत जमीदारी बंगाल तथा बिहार प्रान्त के मुर्शिदाबाद, वीरभूमि, हुगली, वर्द्धमान, रंगपुर, दिनाजपुर, पुर्णिया, संथाल परगना, राजशाही, हजारीबाग, गया, कूँचबिहार आदि जिलों में है। दिनाजपुर में प्राइवेट बैंकिंग का काम भी आपके यहाँ होता है। आपकी स्टेट बालूचर स्टेट के नाम से प्रसिद्ध है।

मेजर जनरल दीवान विशनदासजी रायबहादुर सी० एस० आई० सी० आई० ई० का खानदान, जम्मू

इस खानदान के लोग श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी सम्प्रदाय को मानने वाले सज्जन हैं। यह खानदान पहले बीकानेर में निवास करता था। वहाँ से सैकड़ों वर्ष पहले यह सरसा में और वहाँ से कसूर में आकर बसा। कसूर से महाराजा रणजीतसिंहजी के समय में लाहौर में चला गया। लाहौर से मजीठा (अमृतसर) में तथा वहाँ से गदर के समय में सियालकोट और फिर जम्मू आकर बस गया। तभी से इस खानदान के लोग जम्मू में निवास कर रहे हैं।

इस खानदान में लाला बुग्गामलजी हुए। इनकी तीसरी पुश्त में लाला दानामलजी हुए। आप पंजाब केशरी श्री महाराजा रणजीतसिंहजी के अहलकारों में से थे। आपके पुत्र लाला किशनचंदजी का जन्म संवत् १८९३ में तथा स्वर्गवास संवत् १९७२ में हुआ। आपके दो पुत्र हुए। जिनके नाम श्री विशनदासजी राय बहादुर एवं दीवान अनंतरामजी हैं।

राय बहादुर विशनदासजी का जन्म संवत् १९२१ में हुआ। आप उन लोगों में से हैं, जो अपनी प्रतिभा और बुद्धि के बल पर अपना गौरव व मान प्राप्त करते हैं। आपने अपने परिवार को व अपने समाज को अपनी बुद्धि के बल से खूब चमकाया। आपने सन १८८९ में काश्मीर-स्टेटकी सर्विस में प्रवेश किया। शुरू २ में आप स्वर्गीय राजा रामसिंहजी के प्राइवेट सेक्रेटरी रहे। इसके बाद आप Military Secretary

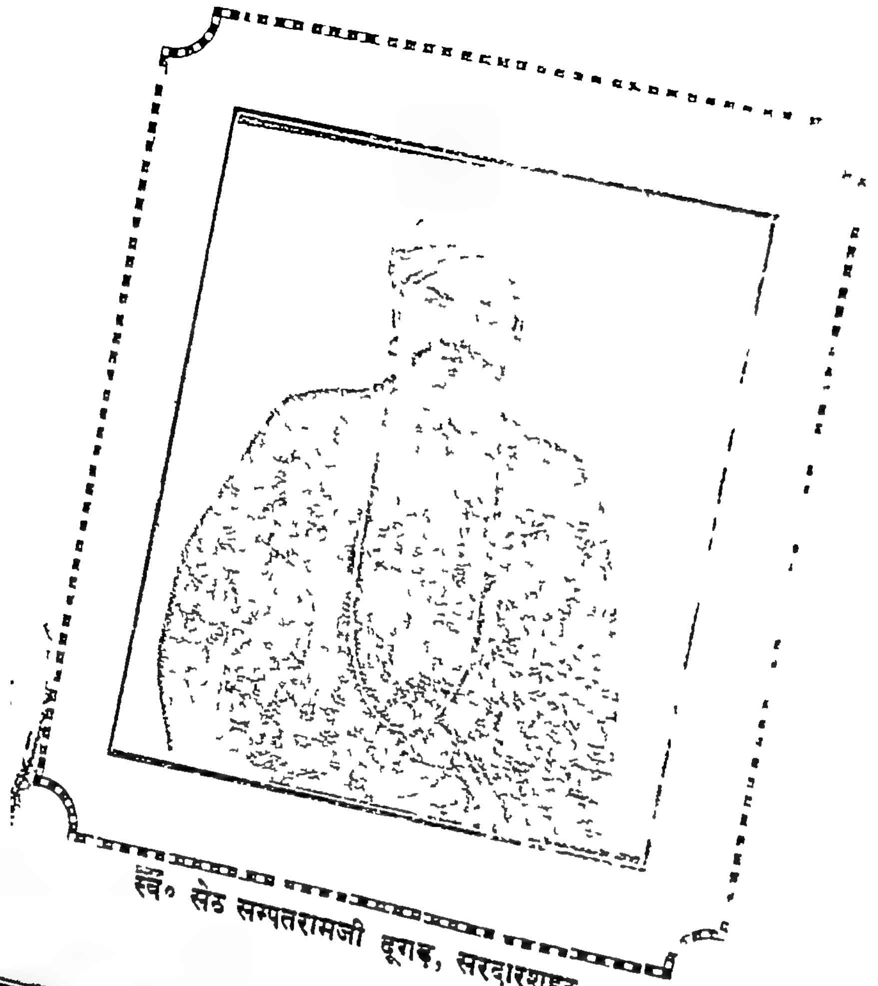
to the Commander-in-chief of Kashmir Army रहे। इसके पश्चात् आप काश्मीर स्टेट के होम मिनिस्टर (Home minister) और फिर इसी रियासत के रेवेन्यू मिनिस्टर (Revenue-minister) हुए तथा इसी प्रकार आप अपनी सेवाओं से बढ़ते २ काश्मीर स्टेट के चीफ मिनिस्टर हो गये। तदनन्तर आप रिटायर हो गये। आप वर्तमान में रिटायर लाइफ बिता रहे हैं।

विश्व व्यापी यूरोपियन युद्ध में आपकी सेवाएँ बहुत अधिक रहीं। आपने गवर्नमेंट की मदद के लिए बहुतसे रंगरूट और रुपया भेजा। जिसके उपलक्ष्य में ब्रिटिश गवर्नमेंट ने प्रसन्न होकर आपको कई उच्च उपाधियों से विभूषित किया। आपको गवर्नमेंट की ओर से सन् १९११ में 'राय बहादुर' का खिताब, सन् १९१५ में "सी० आई० ई०" का सन्माननीय खिताब व सन् १९२० में "सी० एस० आई०" के टॉयटल प्राप्त हुए। इनके अतिरिक्त आपको और भी कई परवाने तथा सार्टिफिकेट्स प्राप्त हुए।

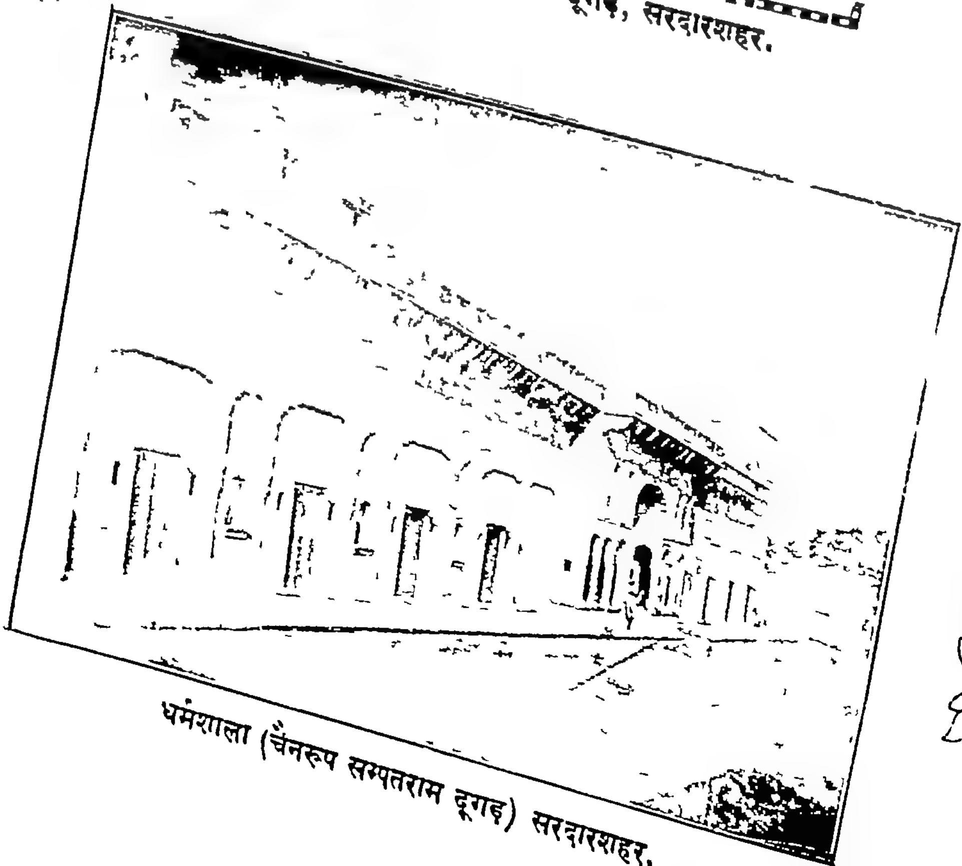
इसके अतिरिक्त आपकी धार्मिक व सामाजिक सेवाएँ भी बहुत महत्वपूर्ण एवं प्रशंसनीय हैं। आप पंजाब प्रांत के "पंजाब स्थानकवासी कान्फ्रेंस" के सियालकोट तथा लाहौर वाले अधिवेशनों के सभापति रहे हैं। जब ऑल इन्डिया स्थानकवासी कान्फ्रेंस का प्रथम अधिवेशन मोरवी में हुआ था तब आपको सभापति के लिये चुना था मगर कार्य्यवश आप वहाँ उपस्थित न हो सके। काशी के धर्म महामण्डल ने भी आपको एक उपाधि देकर सम्मानित किया था। और भी कई स्थानों पर आपने प्रायः सभी सार्वजनिक एवं धार्मिक कार्य्यों में भाग लेकर बहुमूल्य सेवाएँ की हैं।

आपके छोटे भाई दीवान अनन्तरामजी पहले तो काश्मीर महाराजा के यहां पर प्राइवेट सेक्रेटरी रहे। तदनन्तर इस पद को छोड़ कर आप वहाँ पर वकालत करने लगे। आपने बी० ए० एल० एल० बी० तक शिक्षा प्राप्त की है। आप पुनः राजा अमरसिंहजी के प्राइवेट सेक्रेटरी हुए तथा फिर क्रमशः उनकी जागीर के चीफ जज, कमेटी ऑफ एडमिनिस्ट्रेशन ऑफ इस्टेट के मेम्बर, चीफ जज तथा लीगल रीमेम्बरन्सर के पद पर काम करते रहे। वहाँ से रिटायर होकर वर्त्तमान में आप जम्मू हॉयकोर्ट के पब्लिक प्रॉसीक्यूटर हैं।

रा० ब० दीवान विशनदासजी के चार पुत्र हैं लाला प्रभुदयालजी, चेतरामजी, चंदूलालजी एवं ईश्वरदासजी। लाला प्रभुदयालजी ने काश्मीर स्टेट में रेव्हेन्यू डिपार्टमेंट में नायब तहसीलदार से लेकर वजीर वजारत के ओहदे तक काम किया और वर्त्तमान में आप वहाँ से रिटायर होकर शांति लाभ करते हैं। लाला चेतरामजी भी फौज के मेजर रह चुके हैं। वहाँ से आप ने रिज़ाइन कर अपनी प्राइवेट प्रापर्टी की देख भाल करना प्रारम्भ कर दिया है। लाला चंदूलालजी काश्मीर स्टेट में इलेक्ट्रिक इन्जीनियर थे। वहाँ से पंजाब गवर्नमेंट ने आपको लॉयलपुर हॉइड्रो इलेक्ट्रिक इन्स्टीट्यूट में बुला लिया। वहाँ सर्विस



स्व० सेठ सम्पतरामजी दूगड़, सरदारशहर.



धर्मशाला (चैनरूप सम्पतराम दूगड़) सरदारशहर.

करके आप रिडक्शन में आ गये। लाला ईश्वरदासजी ने एफ० एस० सी० तक शिक्षा प्राप्त कर सालिमार वर्क्स के नाम से एक फर्म स्थापित की है। वर्त्तमान में आप ही उस के सब काम काज को संभालते हैं।

दीवान अनन्तरामजी के पुत्र लाला शिवशरणजी इस समय काश्मीर में डिवीजनल फारेस्ट अफसर हैं तथा छोटे पुत्र देवराजजी मेडिकल कालेज में पढ़ रहे हैं।

यह परिवार सारे पंजाब प्रांत में बड़ा प्रतिष्ठित माना जाता है।

सेठ सम्पतरामजी दूगड़ का परिवार, सरदारशहर

इस परिवार के सज्जन तेरापन्थी श्वेताम्बर जैन सम्प्रदाय के मानने वाले हैं। इस परिवार के पूर्व पुरुष तोल्यासर (बीकानेर) नामक स्थान के निवासी थे। मगर वहाँ से व्यापार के निमित्त सेठ फतेचन्दजी के पुत्र सेठ चैनरूपजी, सरदारशाह में आकर रहने लगे। तभी से आपके वंशज यहीं पर निवास करते हैं।

सेठ चैनरूपजी—इस परिवार में आप बड़े प्रतिभा सम्पन्न और व्यापार चतुर महानुभाव हुए। आपने कलकत्ते में अपनी फर्म स्थापित कर उसके द्वारा लाखों रुपयों की सम्पत्ति उपार्जित की। जिस समय संवत् १९०५ में आप कलकत्ता गये उस समय आज कल की भांति सुगम मार्ग न था। अतएव बड़े कठिन परिश्रम एवम् अनेक दुःखों को उठाते हुए आप कलकत्ता पहुँचे थे। आपकी प्रकृति बड़ी सीधी सादी एवम् मिलनसार थी। आपका स्वर्गवास संवत् १९५० के करीब हो गया। आपके सम्पतरामजी नामक एक पुत्र हुए।

सेठ सम्पतरामजी—अपका जन्म संवत् १९२३ में हुआ। बाल्यावस्था से ही आपकी रुचि धार्मिकता की ओर रही। आपभी अपने पिताजी की तरह सरल प्रकृति के सज्जन थे। आपके समय कलकत्ता फर्म पर विलायत से डायरेक्ट कपड़े का इम्पोर्ट व्यापार होता था। उस समय यह फर्म बहुत बड़ी मानी जाती थी। इस व्यवसाय में भी इस फर्म ने बहुत उन्नति की। मगर कुछ वर्षों के पश्चात् आपकी वृद्धावस्था होने के कारण आपने अपने इम्पोर्ट व्यवसाय को घटा दिया। व्यापार के अतिरिक्त आपने सामाजिक बातों की ओर भी बहुत ध्यान दिया। यहां की पंच पंचायती में आपका बहुत बड़ा सम्मान था। आप जबान के बड़े पाबंद थे। बीकानेर दरबार ने आपको छड़ी, चपरास, ताजिम तथा हाथी वगैरह का सम्मान प्रदान किया था। इसके अतिरिक्त आपको कुर्सी का सम्मान, सोने का लंगर, बक्षा गया, तथा सोने के जेवर पैरों में पहनने का सम्मान आपके जनाने में भी प्रदान

किया है। आपको जगात की माफ़ी तथा चूने की चौथाई भी माफ़ है। तलाशी भी आपको माफ़ है। लिखने का मतलब यह है कि स्टेट में भी आपका अच्छा सम्मान था। आपका स्वर्गवास संवत् १८८५ के जेष्ठ में हो गया। आपके सेठ सुमेरमलजी तथा सेठ बुधमलजी नामक दो पुत्र हैं।

सेठ सुमेरमलजी का जन्म संवत १९५० तथा सेठ बुधमलजी का संवत् १९६१ का है। आप दोनों भाई भी मिलनसार एवम् सज्जन व्यक्ति हैं। आप लोगों को बीकानेर दरबार की ओर से सब सम्मान प्राप्त हैं जो आपके पिताजी को प्राप्त थे। आज कल आपकी फर्म पर केवल बैंकिंग का व्यापार होता है। आपकी गिद्दी कलकत्ता में नं० ९ आर्मेनियन स्ट्रीट में हैं तथा मेसर्स चैनरूप सम्पतराम के नाम से व्यवसाय होता है। कलकत्ता में आपकी ४ सुन्दर इमारतें बनी हुई हैं। सरदारशहर का आपका मकान दर्शनीय है तथा वहीं एक सुन्दर धर्मशाला भी बनी हुई है।

सेठ सुमेरमलजी के दो पुत्र हैं जिनके नाम क्रमशः भँवरलालजी और कन्हैयालालजी हैं। आप दोनों ही इस समय विद्याध्ययन करते है।

सेठ जवँरीमलजी, सोहनलालजी, भँवरलालजी, दूगड़ का खानदान फतेपुर

आपका निवास स्थान फतेपुर (सीकर) है। आपके पूर्वज कई वर्षों पहले मारवाड़ से होते हुए फतेपुर आकर बस गये। फतहपुर पहले नवाव के हाथ में था उस समय आपके पूर्वज सूरजमलजी हुए। आप बड़े प्रतिभा सम्पन्न एवम् दबंग व्यक्ति थे। आपने अपने समय में नवाब के यहाँ अपनी योग्यता एवम् होशियारी से देश दीवानगी का काम किया। आपके ही वंश में भांडोजी तथा आपके चामसिंहजी हुए। आप लोग बड़े बहादुर एवम् वीर व्यक्ति थे। आप लोगों को अपने समय में नवाव के यहाँ रहते हुए कई युद्ध करना पड़े। एक बार आप लोग जुमार तक हो गये। जुझार का मतलब यह है कि सिर के कट जाने पर भी आप दोनों ही भाई शत्रु सेना का मुकाबला करते रहे। जिस स्थान पर आप जुझार हुए उस स्थान पर आज भी आपकी आपके वंशज पूजा करते हैं। भांडोजी के एक पुत्री अक्षय कुँवरी बाई हुई। इनका विवाह जालोर के भण्डारी सुगनसिंहजी के साथ हुआ था। ये सुगनसिंहजी जालोर के किले वाले युद्ध में स्वर्गवासी होगये। आपके स्वर्गवासी होजाने के पश्चात् ये अक्षय कुँवर बाई फतेपुर में सती हुईं। जिनका स्थान आज भी फतेहपुर में है और पूजा भी की जाती है। भांडोजी एवम् चांमसीगजी के ही वंश में कई पुश्त बाद सेठ भैरोंदानजी हुए।

सेठ भैरोंदानजी इस परिवार में बड़े नामङ्कित व्यक्ति हुए। आप अफीम के वायदे के बड़े व्यापारी थे। आप ने अफीम के इसी वायदे के व्यापार में कई लाख रुपया पैदा किये। आप बड़े

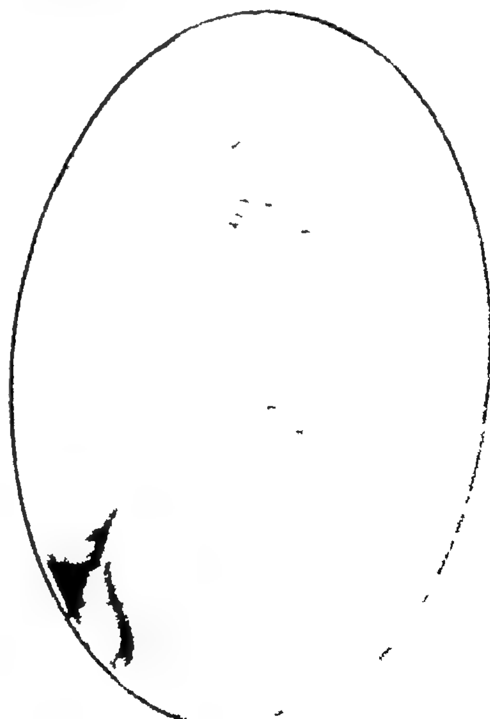




सेठ सुमेरमलजी दूगड़ (चैनरूप सम्पतराम) सरदार शहर

सेठ बुधमलजी दूगड (चैनरूप सम्पतराम) सरदार श







व्यापार चतुर, मेधावी एवम् सज्जन व्यक्ति थे। परोपकार एवं धार्मिकता की ओर आपका बहुत ध्यान था। आपके समय में आपके घर में रुपयों को कढ़ाई में भरते थे। इसका मतलब यह है कि उस समय आप के पास बहुत सा रुपया आता था। आपका स्वर्गवास सं० १९५७ में होगया। आपके पांच पुत्र हुए जिनके नाम क्रमशः धनराजजी, सदासुखजी, हीरालालजी, मंगलचन्दजी, चंदनमलजी, और आनन्दीलाल जो थे। इनमें से सदासुखजी और हीरालालजी का स्वर्गवास होगया। शेष सब भाई वर्त्तमान हैं। आप लोगों के परिवार वाले फतेहपुर तथा कलकत्ता में निवास करते हैं और वायदे का काम करते हैं।

सेठ धनराजजी—आप पहले कलकत्ता आया करते थे। आपने भी अपने जीवन में वायदे के बहुत बड़े २ सौदे किये। आजकल आप वयोवृद्ध होने से देश ही में रहते हैं और वहीं थोड़ा २ सौदा किया करते हैं। आपके तीन पुत्र हैं जिनके नाम जवेरीमलजी, रामचन्दजी एवम् हुलासमलजी हैं। आप तीनों भाई भी आज कल अलग २ होगये हैं एवम् अलग अलग अपना व्यापार करते हैं।

सेठ जवेरीमलजी—आपका जन्म संवत् १९३५ के करीब का है। आपने भी यहां अपने जीवन में वायदे का अच्छा काम किया। वर्त्तमान में आप भी वयोवृद्ध होने से फतेपुर ही रहते हैं। आपका ध्यान धार्मिकता की ओर बहुत हैं। आपके सोहनलालजी एवम् भँवरलालजी नामक २ पुत्र है।

सेठ सोहनलालजी—आपका जन्म संवत् १९५२ की जेठ वदी १३ का है। आप प्रारम्भ से ही यही वायदे का व्यापार कर रहे हैं। आप भी इस विषय में बड़े अनुभवी एवम् नामी व्यक्ति हैं। हज़ारों लाखों रुपये खो देना और कमा लेना आपके बाँयें हाथ का खेल है। आप बड़े मिलनसार, उदार, दानी एवम् सरल स्वभावी सज्जन हैं। आपने कई समय अनेक संस्थाओं को बहुत सा रुपया दान स्वरूप प्रदान किया है।

सेठ भँवरलालजी—आपका जन्म संवत् १९६० का है। आप भी अपने भाई सोहनलालजी के साथ व्यापार करते हैं। आपभी बड़े योग्य सज्जन हैं। आपके चार पुत्र हैं जिनके नाम रतनलालजी, शुभकरणजी, जगतसिंहजी और कमलसिंहजी है। इनमें दो पढ़ते हैं।

सेठ बनेचन्द जुहारमल दूगड़, तिरामिलगिरी (हैदराबाद)

इस खानदान के लोग स्थानकवासी आम्नाय को मानने वाले हैं। आपका मूल निवासस्थान नागौर का है। इस खानदान को दक्षिण हैदराबाद में आये हुए करीब ९० वर्ष हुए। इसके पहले इस खानदान ने बंगलोर में जाकर अपनी फर्म स्थापित की थी तथा तिरमिलगिरी (सिकन्दराबाद) में पहले पहल सेठ बनेचन्दजी ने आकर दुकान खोली। बनेचन्दजी का स्वर्गवास हुए करीब

५० वर्ष होगये हैं। इनके पुत्र का नाम जुहारमलजी था। आप दोनों ही पिता पुत्रों ने मिलकर इस फर्म की तरक्की की। जुहारमलजी का स्वर्गवास अपने पिताजी की मौजूदगी में ही हो गया था। आप के मानचन्दजी नामक एक पुत्र थे। आपने भी इस फर्म के कारबार में तरक्की की। आप सं० १९७४ में स्वर्गवासी हुए।

मानचन्दजी के दो पुत्र हुए। जिनमें बड़े समीरमलजी दूगड़ थे। मगर आप केवल १९ वर्ष की अवस्था में ही संवत् १९७५ में स्वर्गवासी हुए। इस समय इस फर्म के मालिक मानचन्दजी के छोटे पुत्र जसवन्तमलजी है। आप बड़े योग्य, विनयशील और शान्ति प्रकृति के सज्जन हैं।

इस फर्म की तरफ से तिरमिलगिरी के बालाजी के मन्दिर में एक धर्मशाला बनवाई गई है। और भी परोपकार सम्बन्धी कार्य्यों में आपकी ओर से सहायता दी जाती है।

आपकी दुकान पर मिलिटरी बैंकिंग, मिलिटरी के साथ लेनदेन तथा कन्ट्राक्टिंग का काम होता है।

सेठ बींजराजजी दूगड़ का परिवार, सरदारशहर

यह परिवार फतेपुर (सीकर-राज्य) से करीब १०० वर्ष पूर्व सरदारशहर में आया। इस परिवार के पूर्व का इतिहास बड़ा गौरवमय रहा है जिसका जिक्र हम अलग दूसरे इतिहास के साथ दे रहे हैं। फतेहपुर से सेठ बींजराजजी पहले पहल सरदारशहर आये। आप उस समय यहाँ के नामांकित व्यक्ति थे। यहाँ की पंच पंचायती में आपका बहुत बड़ा भाग था। जाति के लोगों से आपका बहुत प्रेम था। जब कभी जाति का कोई कठिन काम आ पड़ता और उसमें आपके विरोध से काम बिगड़ने का अंदेश होता तो आप उसी समय अपना व्यक्तिगत विरोध छोड़ देते थे। यहां की पंचायती में आपके द्वारा कई नियम प्रचलित किये गये जो इस समय भी सुचारु रूप से चल रहे हैं। व्यापार में भी आपका बहुत बड़ा भाग था। आपने कलकत्ता में अपनी फर्म स्थापित की। तथा व्यापारिक चातुरी एवम् होशियारी से उसमें अच्छी सफलता प्राप्त की महाराजा डूंगरसिंहजी बीकानेर से आपका दोस्ताने का सम्बन्ध था। लिखने का मतलब यह है कि इस परिवार में आप बहुत प्रभावशाली एवम् प्रतिष्ठित व्यक्ति हुए। आपका स्वर्गवास संवत् १९६३ में होगया। आपके सेठ भैरोंदानजी, सेठ तनसुखदासजी एवम् सेठ पूसराजजी नामक तीन पुत्र हुए।

सेठ भैरोंदानजी का जन्म संवत् १९१६ का था। आप बड़े बुद्धिमान एवं चतुर पुरुष थे। आपका स्वर्गवास संवत् १९७१ में हो गया। आपके केवल भानीरामजी नामक एक पुत्र थे। आपका जन्म १९३७ में हुआ। आप भी अपने पिताजी की भांति व्यापार कुशल व्यक्ति थे।

आपकी प्रकृति बड़ी उदार थी। प्रायः सभी सार्वजनिक कार्य्यों में आप सहायता प्रदान किया करते थे। आपको ग्रंथ संग्रह का बड़ा शौक था। कहना न होगा कि आपने अपनी प्रायवेट लायब्रेरी में बहुत अच्छे अच्छे ग्रन्थों का संग्रह किया। आपका स्वर्गवास संवत् १९८७ में होगया। आपके रामलालजी नामक एक पुत्र हुए। आपका जन्म संवत् १९६५ का है। आप सुधरे हुए विचारों के युवक हैं। आपको भी पठन पाठन का बहुत शौक है और आपने भी एक प्राइवेट लायब्रेरी खोल रक्खी है। आपका व्यापार कलकत्ता में मेसर्स बींजराज भैरौदान के नाम से ११२ क्रास स्ट्रीट मनोहरदास का कटला में बैंकिंग, कमीशन और इम्पोर्ट का होता है। आपही इस फर्म के संचालक हैं तथा योग्यता से संचालित करते हैं। आपके अनूपचन्दजी नामक एक पुत्र हैं। जिनकी अवस्था ५ वर्ष की है।

सेठ तनसुखदासजी का जन्म संवत् १९१६ का है। आप आजकल अलग रहते हैं। आप भी बड़े व्यापार कुशल सज्जन है। आपका शहर भर मे बड़ा प्रभाव है तथा आपकी सच्चाई पर लोगों का पूरा विश्वास है आपने व्यापार में भी लाखों रुपयों की सम्पत्ति उपार्जित की। आपके मंगसमलजी नामक एक पुत्र हैं। मंगलचंदजी के नाम पर आप शोभाचन्दजी को दत्तक ले चुके है। आप बाईस सम्प्रदाय के मानने वाले हैं। शोभाचन्दजी के इस समय चार पुत्र हैं जिनके नाम क्रमशः मालचन्दजी, भूरामलजी. किशनलालजी और रिधकरणजी है।

सेठ पूसराजजी का जन्म संवत् १९२१ में हुआ। आप बड़े गम्भीर विचारों के पुरुष हैं। आपकी सलाह बड़ी वजनदार मानी जाती है। आपका ध्यान भी व्यापार में बहुत रहा एवम् आपने बहुत सम्पत्ति उपार्जित की। आप बीकानेर-स्टेट कौन्सिल के मेम्बर हैं। आप भी बाईस सम्प्रदाय के अनुयायी हैं। आपके ५ पुत्र है जिनके नाम क्रमशः इन्द्रराजजी, शोभाचन्दजी (जो तनसुखदासजी के यहाँ दत्तक चले गये हैं) नगराजी, सोहँनलालजी और माणकचन्दजी हैं। इनमें से प्रथम इन्द्रराजजी आप से अलग होकर अपना स्वतन्त्र व्यवसाय इन्द्रराजमल सुमेरमल के नाम से कलकत्ते में करते हैं।

सेठ तनसुखरायजी और सेठ पूसराजजी का व्यापार शामलात में कलकत्ता में मनोहरदास कटला ११२ क्रास स्ट्रीट में होता है। यहां डायरेक्ट कपड़े का इम्पोर्ट और जूट का व्यवसाय होता है।

सेठ तेजमालजी दूगड़ का परिवार सरदारशहर

इस परिवार के व्यक्ति पहले फतहपुर (सीकरी) के निवासी थे। वहाँ वे लोग नवाब के यहाँ राज्य के ऊँचे २ पदों पर आसीन रहे। वहीं से उनके वंशज सवाई नामक स्थान पर आकर बसे। सवाई से फिर जब कि सरदारशहर बसा, तब इस परिवार वाले सेठ लालसिंहजी सरदारशहर आकर बस गये।

यहाँ आकर आप साधारण लेन-देन का व्यापार करने लगे। आपके चैनरूपजी, माणकचंदजी और बुधसिंहजी नामक तीन पुत्र हुए। वर्तमान परिवार चैनरूपजी का है।

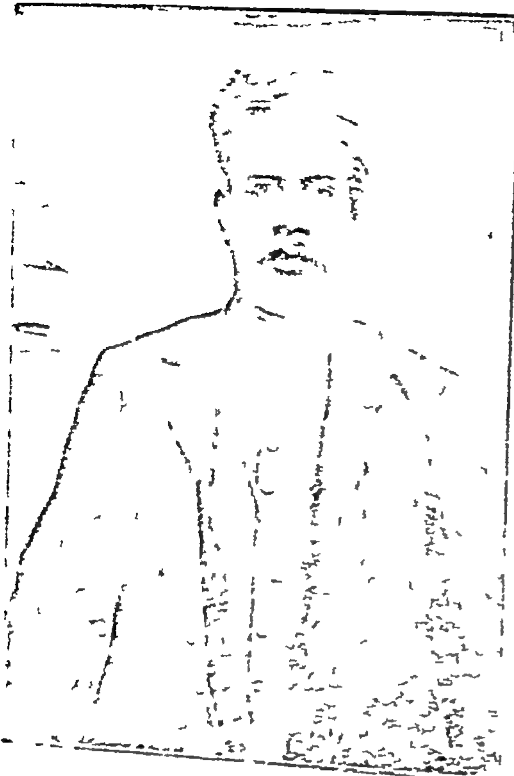
चैनरूपजी के तीन पुत्र हुए जिनमें दो का परिवार नहीं चला तीसरे तेजमालजी का परिवार विद्यमान है। सेठ तेजमालजी पहले अपने भाई के साथ कलकत्ता गये और वहाँ से फिर सिलहट जाकर वहाँ आपने अपनी फर्म खोली एवम् अच्छी सफलता प्राप्त की। वहाँ से आप वापस देश आ रहे थे कि रास्ते में हूँडलोद में उनका स्वर्गवास हो गया। आपके हजारीमलजी कोड़ामलजी, और बालचंदजी नामक तीन पुत्र हुए। कोड़ामलजी निःसंतान स्वर्गवासी हुए। बालचन्दजी के भी कोई पुत्र न हुआ। अतएव हजारीमलजी के पुत्र तोलारामजी दत्तक लिये गये, जो वर्तमान हैं। आपके मोतीलालजी, जयचंदलालजी और मानमलजी नामक तीन पुत्र हैं।

सेठ हजारीमलजी इस परिवार में खास व्यक्ति हुए। आपने कलकत्ता आकर संवत् १९४२ में हजारीमल समरथमल के नाम से रेडीमेड क्लाथ का काम प्रारम्भ किया। इसमें आपको अच्छी सफलता रही। आपका स्वर्गवास हो गया। आपके बिरदीचंदजी, खूबचन्दजी, सागरमलजी, तोलारामजी एवम् समरथमलजी नामक पाँच पुत्र हुए। आप सब लोग संवत् १९६४ तक साथ २ व्यापार करते रहे, पश्चात् अलग २ हो गये।

बिरदीचंदजी के पुत्र इन्द्रचन्द्रजी इस समय दलाली का काम करते हैं। आपके बुधमलजी और चन्दनमलजी नामक पुत्र हैं। खूबचन्दजी के पुत्र करनीदानजी एवम् रिधकरणजी भी अपना स्वतंत्र व्यापार कर रहे हैं। रिधकरणजी के मन्नालालजी नामक एक पुत्र हैं।

सागरमलजी एवम् समरथमलजी दोनों भाइयों ने मिलकर संवत् १९८८ तक फिर शामलात में काम किया और फिर अलग २ हो गये। इस बार आप लोगों को अच्छा लाभ रहा। सेठ सागरमलजी का स्वर्गवास हो गया और आपके पुत्र स्वरूपचन्दजी, शुभकरनजी और गणेशमलजी तीनों भाई स्वरूपचन्द गणेशमल के नाम से मनोहरदास के कटले में कपड़े का व्यापार करते हैं। आप लोग उत्साही और मिलनसार युवक हैं।

समरथमलजी प्रारम्भ से ही हजारीमल समरथमल के नाम से रेडीमेड क्लाथ का व्यापार करते आ रहे हैं। आपके सुमेरमलजी नामक एक पुत्र हैं जो उत्साही हैं और व्यापार कार्य्य करते हैं। आपकी फर्म १५ नारमल लोहिया लेन में हैं। यहाँ कपड़े का तथा चलानी का काम होता है। आपके यहाँ देशी मिलों से कपड़ा आता है और थोक बिक्री किया जाता है।



सेठ नुनानमलजी दूगड़ (मोतीलाल नेमचन्द) सरदारशहर



स्व० सेठ न्यागरमलजी दूगड़, सरदारशहर.



सेठ मोतीलाल नेमचन्द दूगड़, कलकत्ता

इस परिवार के लोगों का पूर्व निवासस्थान फतेपुर (सीकरी) नामक स्थान था जहाँ आपके पूर्वजों ने कमाऊ के काम किये जिनका विवरण अन्यत्र दिया जा रहा है। फतेपुर से चलकर आपके पूर्वज सवाई नामक स्थान पर आये। और जब कि सरदारशहर बसा वहाँ से आप लोग यहाँ आ गये यहाँ आने वाले सज्जन सेठ अमरचन्दजी के पुत्र गुलाबचन्दजी थे। आपके पुत्र मगनीरामजी सवाई में ही रहे और उनका स्वर्गवास भी हुआ। उनके पुत्र हरकचन्दजी हुए। हरकचन्दजी के तीन पुत्र हुए जिनमें से शोभाचन्दजी के पुत्र सुमेरमलजी विद्यमान हैं तथा इस समय नौकरी कर रहे हैं।

सेठ गुलाबचन्दजी इस परिवार में नामी व्यक्ति हुए। आपने कलकत्ता जाकर यहीं के आचालिया नरसिंहदासजी के साझे में मनीहारी का काम करने के लिये फर्म खोली। इसमें आपको अच्छा लाभ रहा। इसके बाद आपका साझा अलग अलग हो गया। आप संवत् १९५२ तक और भी लोगों के शामलात में व्यापार करते रहे। पश्चात् १९६२ में आपने उपरोक्त नामकी फर्म स्थापित की जो इस समय भी चल रही है। आपके तीन पुत्र हुए जिनके नाम रावतमलजी, चुन्नीलालजी और बालचन्दजी हैं। प्रथम और तृतीय का परिवार सरदारशहर ही में रहता है। वर्तमान परिचय सेठ चुन्नीलाल के के परिवार का है।

सेठ चुन्नीलालजी बड़े होशियार और व्यापार कुशल व्यक्ति थे। आपका स्वर्गवास हो गया। आपके केशरीचंदजी, मगराजजी और हुलासचंदजी नामक तीन पुत्र हुए। सेठ मगराजजी का स्वर्गवास संवत् १९६१ तथा केशरीचंदजी का संवत् १९७४ में हो गया। वर्तमान में हुलासचंदजी की वय ५७ वर्ष की है। आप सज्जन व्यक्ति हैं।

सेठ केशरीचंदजी के सुजानमलजी और उदयचंदजी नामक दो पुत्र हैं। आप दोनों भाई व्यापार संचालन करते हैं तथा खुश मिजाज हैं। सुजानमलजी के सौभागमलजी, कन्हैयालालजी और रतनलालजी नामक तीन पुत्र हैं।

सेठ मगराजजी के छगनमलजी, मोतीलालजी और इन्द्रचन्दजी नामक पुत्र हैं। इनमें से मोतीलालजी का स्वर्गवास हो गया। शेष व्यापार संचालन करते हैं। छगनमलजी के हीरालालजी, और इन्द्रचन्द्रजी के अनोपचन्दजी नामक पुत्र हैं।

सेठ हुलासचन्दजी के नेमचन्दजी, भैरोंदानजी और सोहनलालजी नामक तीन पुत्र हैं। नेमीचन्दजी का स्वर्गवास हो गया। शेष व्यापार संचालन में सहयोग देते हैं।

इस फर्म का व्यापार कलकत्ता में ४६ स्ट्रांड रोड में मोतीलाल नेमचन्द के नामसे चलानी का तथा

सोहनलाल हीरालाल के नाम से जूट का होता है। फारबिसगंज में इन्द्रचन्द्र सोहनलाल के नाम से पाट कपड़े का तथा सिरसा (पंजाब) में हीरालाल भँवरलाल के नाम से गल्ले का व्यापार होता है। तथा गुलाब बाग (पूर्णियाँ) में सुजानमल करनीदान के नाम से जूट का व्यापार होता है। पिछली दो फर्मों में आपका साझा है। आप लोग तेरापंथी जैन धर्म के अनुयायी हैं।

सेठ हनुमतमल नथमल दूगड़, सरदारशहर

इस परिवार के पुरुष पहले सवाई नामक स्थान पर रहते थे। वहीं इस वंश में खेमराजजी हुए। आपकी बहुत साधारण स्थिति थी। आप वहां रहकर खेती बाड़ी का काम कर निर्वाह किया करते थे। वहीं आपके पनेचन्दजी नामक एक पुत्र हुए। इन्हीं दिनों सरदारशहर बसाया जा रहा था, अतएव पनेचन्दजी भी संवत् १८९५ के करीब सवाई को छोड़कर सरदारशहर आ गये। आपके लालचन्दजी नामक पुत्र हुए।

सेठ लालचन्दजी का जन्म संवत् १८८८ का था। जिस समय आपके पिताजी सरदार शहर में आये थे उस समय आपकी वय केवल ७ साल की थी। की करीब २५ वर्ष की अवस्था में आप तेजपुर नामक स्थान पर गये और वहीं आपने मेसर्स महासिंहराय मेघराज बहादुर के यहाँ सर्विस की। पश्चात् आप वहीं मुनीम हो गये। वहाँ से आप वापिस संवत् १९५५ में देश में आ गये एवं अपना जीवन शांति से बिताने लगे। दस वर्ष बाद आपका स्वर्गवास हो गया। आपके हनुतमलजी और नथमलजी नामक दो पुत्र हैं। प्रारम्भ में आप लोग भी अपने पिताजी के साथ तेजपुर ही में रहे। पश्चात संवत् १८४८ में आपने बीकानेर के सौभागमलजी के साझे में सौभागमल नथमल के नाम से कलकत्ता में चलानी का काम प्रारम्भ किया। इसके पश्चात् संवत् १९५५ में आपने उपरोक्त नाम से निज की फर्म स्थापित की। इसमें आप दोनों भाइयों ने बहुत सफलता प्राप्त की। बड़े भाई आजकल देश ही में रहते हैं तथा नथमलजी फर्म का संचालन करते है। आपका कलकत्ता में १६० सूता पट्टी में तथा ५।१ लुक्सलेन में उपरोक्त नाम से कपड़ा, जूट तथा इम्पोर्ट का व्यापार होता है। कासीपुर, हटगोला वगैरह स्थानों पर आपके निज के पाट गोदाम हैं। इसके अतिरिक्त इन्द्रचन्द्र सूरजमल के नाम से इस्लामपुर (पुर्णिया) में जूट का काम होता है।

सेठ हनुतमलजी के मालचन्दजी, इन्द्रचन्दजी, पूनमचन्दजी, तथा नथमलजी के बालचन्दजी नामक पुत्र हैं। आप सब लोग मिलनसार व्यक्ति हैं तथा फर्म का संचालन करते हैं। इनमें से इन्द्रचन्दजी के भँवरलालजी तथा बालचन्दजी के हनुमानमलजी नामक एक २ पुत्र हैं।

सेठ सालमचन्द चुन्नीलाल दूगड़, कलकत्ता

संवत् १९०० के करीब इस परिवार के पुरुष सेठ जेठमलजी दूगड़ कल्यानपुर नामक स्थान से यहाँ आये तथा घी का व्यापार प्रारम्भ किया। उस समय इस व्यापार में आपको अच्छा लाभ रहा।



स्व० सेठ दानसिंहजी दूगड़ ([illegible]
मोतीलाल) सरदारशहर.



सेठ [illegible] दूगड़ सरदारशहर.



सेठ मोतीलालजी दूगड़ (प्रतापमल मोतीलाल)
सरदारशहर.



कुँ० नेमचन्दजी दूगड़ S/o मोतीलालजी दूगड़, सरदारशहर.

आपके केवलचन्दजी और सालमचन्दजी नामक दो पुत्र हुए। दोनों ही भाई करीब ७० वर्ष पूर्व जलपाई गौड़ी नामक स्थान पर गये और साधारण काम काज शुरू किया। पश्चात् सम्वत् १९३१ में आप लोगों ने जेठमल केवलचन्द के नाम से अपनी फर्म स्थापित की। इस पर कपड़ा, सूत, किराना एवम् गल्ले का व्यापार प्रारम्भ किया। इसमें आप लोगों की बुद्धिमानी से अच्छी उन्नति हुई। आप लोगों का स्वर्गवास हो गया। केवलचन्दजी के पुत्र न हुआ। सालमचन्दजी के चुन्नीलालजी नामक एक पुत्र हुए।

सेठ चुन्नीलालजी ही इस समय इस परिवार में बड़े पुरुष हैं। आप मिलनसार हैं। आपने अपने व्यापार को विशेष रूप से बढ़ाया तथा कलकत्ता में चुन्नीलाल जसकरन के नाम से फर्म खोली। आजकल इसका नाम चुन्नीलाल शुभकरन पड़ता है। इसपर जूट, कपड़ा एवं चलानी का व्यापार होता है। इसमें आपको अच्छी सफलता रही। आपके इस समय ७ पुत्र हैं जिनके नाम क्रमशः जसकरनजी, सूरजमलजी, जैचंदलालजी, चम्पालालजी, सोहनलालजी, शुभकरनजी और पूनमचन्दजी हैं। इनमें से जसकरनजी अपना स्वतन्त्र व्यापार करते हैं। शेष सब शामिल हैं। आप लोग जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सम्प्रदाय के मानने वाले हैं।

बानिन्दा के दूगड़ दानसिंहजी का परिवार, सरदारशहर

सेठ टीकमचंदजी बानिंदा (सरदारशहर) नामक स्थान से चलकर यहाँ आये। आपके चार पुत्र हुए जिनके नाम क्रमशः सेठ शिवजीरामजी, सेठ जीवनदासजी, सेठ मुकनचन्दजी और सेठ दानसिंहजी थे। करीब ८० वर्ष पूर्व आप चारों ही भाइयों ने मिलकर सिरसागंज में अपनी एक फर्म स्थापित की तथा अच्छी उन्नति की। इनमें खासकर उन्नति का श्रेय सेठ दानसिंहजी को है। आप बड़े प्रतिभा सम्पन्न, व्यापार चतुर और कठिन परिश्रमी व्यक्ति थे। आपका स्वर्गवास संवत् १९५२ में हो गया। आपके प्रतापमलजी, कुशलचन्दजी, चुन्नीलालजी एवम् मोतीलालजी नामक चार पुत्र हुए।

सेठ प्रतापमलजी व्यापारिक पुरुष थे। आपका यहाँ की समाज में अच्छा प्रभाव था। आपके कोई पुत्र न था। अतएव आपने अपने छोटे भाई मोतीलालजी को दत्तक लिया। आप भी मिलनसार और सज्जन व्यक्ति हैं। आपका जन्म सम्वत् १९४४ में हुआ। पहले तो आप अपनी पुरानी फर्म में साझीदारी का काम करते रहे। मगर फिर आपने अपना काम अलग कर लिया एवम् इस समय सरदारशहर ही में बैंकिंग का काम करते हैं। आपके नेमीचन्दजी नामक एक पुत्र हैं। आप भी उत्साही नवयुवक हैं। आपको फोटोग्राफी का बहुत शौक है। आपने कई इन्लार्जमेंट अपने हाथों से तैयार किये हैं। मशीनरी लाइन में भी आपको दिलचस्पी है।

सेठ कुशलचन्दजी का जन्म संवत् १९३१ में हुआ। आपके भी कोई पुत्र न था। अतएव आपने अपने भाई चुन्नीलालजी के पुत्र चंदनमलजी को दत्तक लिया। वर्तमान में आप ही इस परिवार में बड़े हैं।

सेठ चुन्नीलालजी का जन्म सं० १९२५ में हुआ। आप यहाँ के प्रतिष्ठित पुरुष थे। आपको पाटके व्यापार का अच्छा अनुभव था तथा जवाहिरात की परीक्षा भी आप अच्छी जानते थे। आपका स्वर्गवास सम्वत् १९७५ में हो गया। आपके चन्दनमलजी तथा कन्हैयालालजी नामक २ पुत्र हुए। चन्दनमलजी कुशलचन्दजी के यहाँ दत्तक चले गये। कन्हैयालालजी के मांगीलालजी नामक एक पुत्र हैं।

सेठ चुन्नीलालजी और कुशलचन्दजी के परिवार की सिराजगंज, कलकत्ता, भड़ंगामारी, मीरगंज, सोनातोला, और जवाहरवाड़ी आदि स्थानों पर शाखाएँ हैं जहाँ पाट का व्यापार होता है। सरदारशहर में इस परिवार की बहुत बड़ी २ हवेलियाँ बनी हुई हैं। आप लोग तेरापंथी जैन श्वेताम्बर धर्म के अनुयायी हैं।

सेठ मुल्तानचन्द जुहारमल दूगड़ कोठारी, कलकत्ता

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान बीदासर है। आप लोग जैन तेरापंथी सम्प्रदाय के मानने वाले हैं। यह फर्म करीब ८० वर्ष पूर्व जमालदे नामक स्थान पर जो कूँचविहार में है, सेठ मुल्तानचन्दजी द्वारा स्थापित की गई। इसके कुछ वर्ष बाद मेखड़ीगंज (कुँचविहार) में आपने इसी नाम से एक फर्म और खोली। इन दोनों फर्मों पर तमाखू और कुष्टा का काम शुरू किया गया जो इस समय भी हो रहा है। सेठ मुल्तानचन्दजी के कोई पुत्र न होने से जुहारमलजी दत्तक आये। आपके हाथों से इस फर्म की बहुत तरक्की हुई। आप बड़े व्यापार कुशल और मेधावी व्यक्ति थे। आपका स्वर्गवास सम्वत् १९६२ में हो गया। आपके भी कोई पुत्र न होने से भैरोंदानजी आपके नाम पर दत्तक लिये गये। आपने भी फर्म की अच्छी उन्नति की। आप भी अपने पिता की भांति व्यापोर कुशल एवम् मिलनसार व्यक्ति थे। आपका भी स्वर्गवास सम्वत् १९९० में हो गया। आपका ध्यान धार्मिक बातों में बहुत रहा। आपके कानमलजी एवम् सोहनलालजी नामक दो पुत्र हैं। आजकल आप दोनो ही फर्म का संचालन करते हैं। आप भी उत्साही और मिलनसार सज्जन हैं। कानमलजी के नौरतनमलजी एवं जतनमलजी नामक दो पुत्र हैं। आपकी कलकत्ता में मुल्तानचन्द जुहारमल के नाम से फर्म है जहाँ ब्याज का काम होता है। इस फर्म पर मुनीम नेमचन्दजी सिंघी बिदासर वाले मुनीमात का काम करते हैं। आपके समय में फर्म की बहुत उन्नति हुई।

लाला छोटेलाल अबीरचन्द दूगड़, आगरा

इस खानदान के लोग श्वेताम्बर जैन मन्दिर आम्नाय को मानने वाले हैं। यह खानदान करीब



स्व० सेठ भैरोंदानजी दूगड (गुलतानमल जुहारमल), बीदासर.



सेठ कानमलजी दूगड़ (गुलतानमल जुहारमल) बीदासर.



बाबू सोहनलालजी दूगड़ (गुलतानमल जुहारमल) बीदासर.

दो तीन सौ वर्षों से आगरे ही में बसा हुआ है। इस खानदान में लाला छोटेलालजी एक मशहुर व्यक्ति हो गये है। आप ही ने इस फर्म को करीब ७० वर्ष पहिले स्थापित किया था। आपका स्वर्गवास सम्वत् १९४४ में हो गया। आपके चार पुत्र हुए जिनके नाम लाला अबीरचन्दजी, लाला कपूरचन्दजी, लाला गुलाबचन्दजी और लाला मिट्ठनलालजी था।

लाला अबीरचन्दजी का जन्म संवत् १९१६ में हुआ। आप इस खानदान में बड़े योग्य और प्रतिभाशाली पुरुष थे। आपका स्वर्गवास सम्वत् १९६५ में हुआ। आपके पुत्र लाला चांदमलजी का स्वर्गवास सम्वत् १९८५ में केवल ३२ वर्ष की उम्र में हो गया। आपके चितरंजनसिंहजी नामक एक पुत्र हैं।

लाला कपूरचन्दजी का जन्म सम्वत् १९२१ में हुआ। आपका भी स्वर्गवास हो गया। आपके दो पुत्र हुए मगर दोनों का कम उम्र में ही स्वर्गवास हो जाने से आपके नाम पर लाला किरोड़ीमलजी दत्तक लिये गये। लाला किरोड़ीमलजी का जन्म संवत् १९६० का है। आपके एक पुत्र हैं जिनका नाम जोरावरसिंहजी हैं।

लाला गुलाबचन्दजी का जन्म संवत् १९३० में हुआ। आपका स्वर्गवास संवत् १९८९ में हो गया। आपके पुत्र का देहान्त आपकी मौजूदगी में ही हो जाने से आपने अपने नाम पर लाला लक्खीमलजी को दत्तक लिए। लाला लक्खीमलजी का जन्म संवत् १९६३ का है। आपके श्री देवेन्द्रसिंहजी नामक एक पुत्र हैं।

लाला मिट्ठनलालजी का जन्म संवत् १९३३ का है। आप इस समय इस खानदान में सबसे प्रधान हैं। आपके दो पुत्र हैं जिनके नाम सूरजमलजी और जीतमलजी हैं। सूरजमलजी का जन्म संवत् १९५६ का है।

इस खानदान की तरफ से आगरे में उपाध्याय वीरविजय जैन श्वेताम्बर पाठशाला नामक एक पाठशाला छः हजार रुपये से खुलवाकर उसे पंचायत के सिपुर्द कर दिया है।

कोठारी वेरीसालसिंहजी दूगड, जोधपुर

आप का मूल निवास नामली (रतलाम) है। वहाँ आपका परिवार बहुत प्रतिष्ठा सम्पन्न माना जाता था। आपके पिताजी जव्हारसिंहजी दूगड़ रतलाम स्टेट के दीवान रहे थे। कोठारी वेरीसाल सिंहजी इस समय जोधपुर रियासत के ऑडिट विभाग में असिस्टेंट आडीटर हैं। आपने अपना निवास यहीं बना लिया है। आप बड़े शिक्षित तथा प्रतिष्ठित सज्जन हैं। खेद है कि समय पर आपके खानदान का परिचय गुम हो जाने के कारण हम विस्तृत नहीं देसके। यदि प्राप्त होसका तो इस ग्रन्थ के परिशिष्ट विभाग में विस्तृत परिचय देने की कोशिश करेंगे।

श्री मानमलजी दूगड़, जोधपुर

आपका परिवार जोधपुर में निवास करता है। आप कई वर्षों से जोधपुर स्टेट में हुकूमात करते हैं तथा इस समय भीनमाल आदि के हाकिम है। आप बड़े सज्जन, मिलनसार और लोकप्रिय महानुभाव हैं। आपके छोटे भ्राता चांदमलजी दूगड़ जोधपुर स्टेट के जालोर नामक स्थान की डिस्पेंसरी में डाक्टर हैं। आप भी बहुत लोकप्रिय हैं। आपका परिवार जोधपुर की ओसवाल समाज में प्रतिष्ठा रखता है।

लाला मोहरसिंहजी दूगड़ का खानदान, कपूरथला

लाला मोहरसिंहजी—इस खानदान के पूर्वज लाला मोहरसिंहजी जम्बू में निवास करते थे वहाँ से आप ने लाहौर और लुधियाना होते हुए जालंधर मे अपना निवास बनाया। जालंधर में आपने बहुत बड़ा नाम पाया था। आपके नाम से जालंधर में मोहरसिंह बाजार आबाद है। आपके खानदान का काबुल के शाही खानदान से तिजारती ताल्लुक रहा। जब शाहशुजा से महाराजा रणजीतसिंह ने कोहिनूर हीरा लिया था, उस सम्बन्ध की बात चीत तय करने वाले व्यक्तियों में यह कुटुम्ब भी शामिल था। लाला मोहरसिंहजी की होशियारी व अक्लमन्दी से प्रसन्न होकर कपूरथला के तृतीय महाराज फतहसिंहजी इनको बड़ी इज्जत के साथ जालंधर से अपनी राजधानी में लाये तथा आपके सिपुर्द स्टेट ट्रेझरी का काम किया। पंजाब के दरबार में आपको कुर्सी मिलती थी। आपके परिवार ने सिक्ख वार, अफ़गान वार, तीरा वार और ग़दर के समय बृटिश गवर्नमेंट को काफ़ी इम्दाद दी और इन युद्धों में आपका परिवार शामिल हुआ। इन सब सेवाओं का ख़याल करके इस खानदान को लॉर्ड सर जॉनलारेंस ने जालंधर और फीरोज़पुर डिस्ट्रिक्ट में बहुत सी लैंडेड और हाउस प्रापर्टी दी, जो इस समय तक इस परिवार के अधिकार में है। लाला मोहरसिंहजी के लाला जुहारमलजी, लाला निहालचन्दजी लाला, मुश्तहाकरायजी लाला, गंगारामजी तथा लाला बस्तीरामजी नामक ५ पुत्र हुए। इन भाइयों में लाला जुहारमलजी के पुत्र लाला नत्थूमलजी तथा लाला मुश्तहाकरायजी के लाला देवीसहायजी नामक पुत्र हुए। शेष तीन भाइयों के कोई औलाद नही हुई। ये पांचो भाई अपनी प्रापर्टी तथा बैङ्किग का काम काज देखते रहे। लाला निहालचन्दजी लाहोर प्रापर्टी का काम देखते थे तथा उनका अधिककर जीवन यहीं बीता।

लाला नत्थूमलजी का खानदान—लाला नत्थूमलजी का जन्म संवत् १९१२ में हुआ। आपने अपने हाथों से कई दीक्षा महोत्सव कराये, तथा साधु संगति और धार्मिक कामों में हजारों रुपये खर्च किये। आपके समय में भी रियासत के साथ आप का लेनदेन का सम्बन्ध रहा करता था। आपने व्यापार में लाखों रुपये कमाये। इस प्रकार प्रतिष्ठा पूर्वक जीवन बिताते हुए आप संवत् १९८४ में

स्वर्गवासी हुए। आपके लाला रतनचन्दजी, लाला त्रिभुवननाथजी, लाला पृथ्वीराजजी, लालादेसराजजी तथा लाला देवराजजी नामक ५ पुत्र विद्यमान है। इन बन्धुओं में लाला रतनचन्दजी अपने भाइयों से संवत् १९७९ में अलग होकर स्वतंत्र बैङ्किग का कारबार करते है।

लाला त्रिभुवननाथजी—आपका जन्म संवत् १९५८ मे हुआ। आपने बी० ए० तक शिक्षा पाई। आप पंजाब की स्था० वासी जैन कान्फ्रेंस के लम्बे समय तक जनरल सेक्रेटरी रहे। इस समय स्थानीय गर्ल स्कूल के प्रेसिडेंट और गौशाला के मन्त्री हैं। कपूरथला की कोई ऐसी इस्टीट्यूशन नहीं जिसमें आप इम्दाद न देते हों। आपने अपने पिताजी की यादगिरी में यहाँ की पुत्री पाठशाला में एक "नत्थूमल हाल" बनवाया है। इसी तरह लाहौर हास्पीटल मे एक कमरा बनवाया है। आपने अपने परिवार की लैंडेड प्रापर्टी में भी अच्छी तरक्की है। आपका खानदान पंजाब के ओसवाल खानदानों में नामी माना जाता है। आपके पुत्र जितेन्द्रनाथजी और राजेन्द्रनाथजी हैं।

लाला पृथ्वीराजजी—आपका जन्म संवत् १९६३ में हुआ। आपने सन् १९२६ में बी० ए० तथा सन् १९२८ में एल० एल० बी० की परीक्षा पास की और इसी साल से प्रेक्टिस करना शुरू कर दिया। इधर १ साल से आप कपूरथला स्टेट के पब्लिक प्रासीक्यूटर पद पर कार्य्य करते हैं। आप यहां के शिक्षित समाज में अच्छे प्रतिष्ठित हैं और सज्जन तथा मिलनसार व्यक्ति हैं। आपके रवीन्द्र नाथजी, प्रकाशनाथजी, प्रेमनाथजी तथा पदमनाथजी नामक ४ पुत्र है।

लाला देसराजजी—आपने सन् १९३० में बी० ए० पास किया। आप रणधीर कॉलेज कपूरथला में एफ० ए० के आर्ट विषय में प्रथम आये थे। इधर ३ सालों से आप लंदन में चार्टर्ड एण्ड अकाउंटेंसी का काम सीखते हैं। आप से छोटे भाई देवराजजी मेट्रिक पास कर कॉलेज में पढ़ते है।

इस परिवार की छांगामांगा (लाहौर) में बहुत सी नहरी जमीन है। इसके अलावा लुधियाना, फगुवाड़ा मण्डी, जालंधर बाजार और कपूरथला में बहुत सी हाउस प्रापर्टी है।

लाला देवीसहायजी का परिवार—लाला देवीसहायजी के पुत्र लाला बनारसीदासजी तथा लाला छज्जूमलजी हुए। लाला बनारसीदासजी विद्यमान है। आपके यहां बैङ्किग का कारबार होता है तथा कपूरथला में आपका खानदान भी मातबर समझा जाता है। आपके ४ पुत्र हैं। इनमें बड़े लाला माणकचन्दजी, फीरोजपुर की प्रापर्टी का काम देखते हैं। दूसरे चुन्नीलालजी कपूरथला के हेड ट्रेझरर हैं। रामरतनजी बजाजी का काम करते हैं तथा मदनगोपालजी खजाने के हेड क्लर्क हैं।

इसी तरह लाला छज्जूमलजी के पुत्र लाला रामनाथजी, लाला हंसराजजी तथा लाला दौलतराम

जी हुए। आपका कुटुम्ब फगुवाड़ा में निवास करता है। लाला हंसराजजी फगुवाड़ा के प्रतिष्ठित सज्जन हैं।

लाला गोपीचन्दजी दूगड़, एडवोकेट—अम्बालाशहर

आपका जन्म ईसवी सन् १८७८ में अम्बालाशहर (पंजाब) में हुआ। आप के पूर्वज केशरी (जिला अम्बाला) से आकर यहां बसे थे। अतः आपका वंश 'केशरी वाला' के नाम से प्रसिद्ध है। आपके पिताजी का नाम लाला गेंदामलजी था।

जब पचास वर्ष पहले जैन समाज में शिक्षा का अभाव था उस समय आपको बी० ए० तक की उच्च शिक्षा दिलाई गई। जगद्विख्यात स्वामी रामतीर्थजी से कालेज में आप गणित पढ़ा करते थे। ग्रेज्युएट होने के पश्चात् आपने वकालात की परीक्षा पास की और अम्बालाशहर में ही आप काम करने लगे। एक सुयोग्य वकील होते हुए भी आप प्रायः झूठे मुकदमे नहीं लिया करते थे। इसीलिये दूसरे वकील और न्यायाधीश आपकी बात पर पूरा २ विश्वास किया करते थे।

सार्वजनिक कार्य्यों में आप पूरा २ भाग लिया करते थे। हिन्दू सभा के आप मुख्य सदस्य थे। स्थानीय नागरी प्रचारिणी सभा, बाय स्काउट एसोसियेशन, बार रूम के आप कोषाध्यक्ष थे।

लाला गोपीचंदजी की सबसे बड़ी सेवा शिक्षा प्रचार की है। आप श्री आत्मानन्द जैन हाईस्कूल अम्बालाशहर के २५ वर्ष तक मैनेजर रहे। इस संस्था की नींव को सुदृढ़ करने के लिये आपने मद्रास प्रान्त तक भ्रमण करके धनराशि एकत्र की तथा समय २ पर आप यथाशक्ति आपने अपने पास से दिया और औरों से भी दिलाया। आप आत्मानन्द जैन महासभा पंजाब के सभापति थे। श्री हस्तिनापुर जैन श्वेताम्बर तीर्थ कमेटी के भी आप ही सभापति थे। श्री आत्मानन्द जैन गुरुकुल पंजाब (गुजरांवाला) के ट्रस्टी और कार्य्यकारिणी समिति के मुख्य सदस्य थे। आपके निरीक्षण और आपकी सहयोगिता से इन संस्थाओं ने अच्छी समाज सेवा की है और दिनों दिन उन्नति कर रही है। आप श्री आत्मानन्द जैन सभा अम्बालाशहर के प्रधान रहे हैं। स्कूलों में पढ़ाये जाने वाली इतिहास की पुस्तकों में जैन धर्म के विषय में जो कुछ अन्ड बन्ड लिखा जाता रहा है उसका निराकरण कराना एक सहज बात नहीं थी, परन्तु आपने बहुत परिश्रम से उसमें भी सफलता प्राप्त की। श्री आत्मानन्द जैन ट्रैक्ट सोसायटी ने आपके प्रधानत्व में १८ वर्ष तक जैन धर्म का जो प्रचार जैनियों तथा सर्वसाधारण में किया है, वह समाज से छिपा नहीं है।

उमर भर पाश्चात्य शिक्षा के वातावरण में रह कर भी आप अपने जैनधर्म एवम् जैन संस्कृति को न भूले। आपका स्वर्गवास तीन मास की बीमारी के पश्चात् १२ २-३४ को शिवरात्री के दिन होगया।



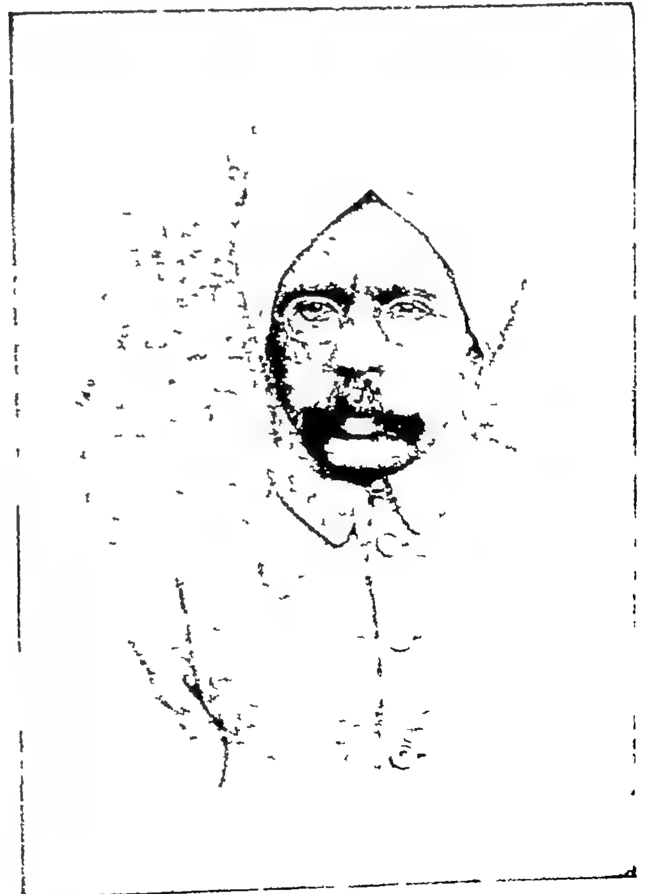
स्व० कोठारी जवाहरचन्दजी लेट दीवान रतलाम, नामली.



स्व० लाला परमानन्दजी बी. ए. एडवोकेट, कसूर.



कोठारी बरीसालसिंहजी दूगड़ बी. काम, जोधपुर.



स्व० बाबू गोपीचन्दजी दूगड़ एडवोकेट, अम्बाला.

लाला पन्नालालजी दूगड़, जोहरी, अमृतसर

इस खानदान के पूर्वज लाला उत्तमचन्दजी महाराजा रणजीतसिंहजी के कोर्ट ज्वेलर थे। तब से बराबर यह परिवार जवाहरात का व्यापार करता आ रहा है। आगे चलकर इस परिवार में लाला राधाकिशनजी जौहरी हुए। आपके बड़े भ्राता लाला जसवन्तरायजी और छोटे भ्राता लाला हुकुमचन्दजी तथा लाला हरनारायणदासजी भी जवाहरात का व्यवसाय करते थे। लाला राधाकिशनजी के पुत्र लाला पन्नालालजी हुए।

लाला पन्नालालजी नामांकित जौहरी थे। भारत के जौहरी समाज में आप सुपरिचित एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। पंजाब प्रान्त में आपका घर सबसे प्राचीन मन्दिर मार्गीय आम्नाय का पालने वाला है। आप सन् १९१४ में ऑल इण्डिया जैन कान्फ्रेंस मुलतान अधिवेशन के सभापति निर्वाचित हुए थे। अमृतसर मन्दिर की देख रेख आप ही के जिम्मे थी। सन् १९२७ में आपका तथा सन् १९२८ में आपके पुत्र रामरखामलजी का स्वर्गवास हुआ। इस समय रामरखामलजी जौहरी के पुत्र मोतीलालजी सराफी तथा जवाहरात का व्यापार करते है।

लाला पन्नालालजी अपने भाणेज लाला मोहनलालजी पाटनी को लुधियाने से २ साल की उमर में अपने यहाँ ले आये। इस समय लाला मोहनलालजी जैन बी० ए० एल० एल० बी० अमृतसर में अच्छी प्रतिष्ठा रखते हैं। आपका विस्तृत परिचय पाटनी गौत्र मे दिया गया है।

लाला गोरीशंकर परमानन्द जैन दूगड़, कसूर (पंजाब)

यह खानदान लम्बी मियाद से कसूर में निवास करता है। इस खानदान के पूर्वज लाला जमीताशाहजी और उनके पुत्र लाला वधावाशाहजी तथा जीवनशाहजी सराफ़ी व्यापार करते रहे। लाला वधावाशाहजी की लगन धर्मध्यान और जैन कौम की उन्नति में विशेष थी। आपका स्वर्गवास सन् १९०२ में हुआ। आपके लाला गौरीशंकरजी, लाला परमानन्दजी तथा लाला चुन्नीलालजी नामक ३ पुत्र हुए। इन सज्जनों में लाला गौरीशंकरजी और परमानन्दजी ने पंजाब की जैन समाज में बहुत नाम पाया। आप दोनों भाइयों का परस्पर बहुत मेल था। आप दोनों भाई क्रमशः सन् १९२३ और १९२७ में स्वर्गवासी हुए। आपके छोटे भाई चुन्नीलालजी पंजाब युनिवर्सिटी की मेट्रिक में सर्व प्रथम आये थे। सन् १९२८ में इनका स्वर्गवास हुआ।

लाला परमानन्दजी बी० ए०—आप कसूर हाईकोर्ट के एडवोकेट थे। और यहाँ के बड़े मोअज्जिज व्यक्ति माने जाते थे। आप अपनी अंतिम उमर तक कसूर म्यु० के मेम्बर रहे। आपने पंजाब

में स्थानकवासी जैन सभा के स्थापन में राय साहब लाला टेकचन्दजी के साथ प्रधान सहयोग लिया। आप उसके अम्बाला अधिवेशन के प्रेसिडेंट थे तथा जीवन भर वाइस प्रेसिडेंट रहे थे। लाहोर के अमर जैन होस्टल के बनवाने में आपने बहुत बड़ा परिश्रम उठाया। एवं स्वयं ने उसमें कमरे भी बनवाये। बनारस युनिवर्सिटी में आप पंजाब के जैन समाज की ओर से मेम्बर थे। आपके स्वर्गवास के समय कसूर की कोर्ट कचहरी, स्कूल, आदि बंध रक्खे गये थे और आपके कुटुम्बियों के पास आसपास के तमाम हिन्दुस्तानी व अंग्रेज़ गण्य मान्य सज्जनों ने दिलासा के पत्र आये थे। आपकी यादगार में आपके भतीजे ने १० हजार की लागत की एक बिल्डिंग स्थानीय जैन कन्या पाठशाला को बनवाकर दी।

इस समय इस परिवार में लाला गौरीशंकरजी के पुत्र लाला अमरनाथजी, लाला रघुनाथदासजी तथा लाला देवराजजी विद्यमान हैं। आप तीनों भाइयों का जन्म क्रमशः संवत् १९५३,५६ तथा १९५९ में हुआ है। लाला अमरनाथजी तथा रघुनाथदासजी सराफी तथा बैङ्किग व्यापार संभालते है तथा लाला देवराजजी कसूर के म्युनिसिपल कमिश्नर, ऑनरेरी मजिस्ट्रेट तथा मेम्बर डिस्ट्रिक्ट बोर्ड हैं। आपका परिवार कसूर में नामी माना जाता है।

लाला रघुनाथदासजी के पुत्र अजितप्रसादजी, मदनलालजी, जलंधरनाथजी तथा पुरुषोत्तमदासजी हैं। इसी प्रकार देवराजजी के पुत्र शीतलप्रसादजी, सुमतिप्रकाशजी, भूपेन्द्रकुमारजी और सतपालजी हैं।

लाला फग्गूमल मोतीराम दूगड़, लाहोर

इस खानदान में लाला हरजसरायजी के पुत्र फग्गूशाहजी हुए। लाला फग्गूशाहजी के पुत्र लाला दुनीचन्दजी और लाला मोतीरामजी हुए। इन दोनों भाइयों ने करीब ३०, ३५ वर्ष पूर्व लाहौर में एक दीक्षा महोत्सव कराया तथा इन्होंने एक जंजाघर नामक विशाल मकान बनवाकर धर्म कार्य्य के लिये दान दिया। लाला दुनीचंदजी लाहौर तथा पंजाब प्रान्त की जैन समाज में नामी आदमी थे। धर्म के कामों में आप दिलेरी के साथ खरच करते थे। आपका स्वर्गवास लगभग १९६५ में हुआ। लगभग २५।३० साल बाद आप दोनों भाइयों का कारबार अलग २ हो गया। इस समय लाला दुनीचंदजी के पुत्र लाला खेरातीलालजी, दुनीचंद खेरातीलाल के नाम से जनरल मरचेंट का व्यापार करते हैं।

लाला मोतीरामजी का जन्म संवत् १९२५ में हुआ। आप लाहौर की जैन समाज में बहुत इज्जत रखते हैं। आपके लाला विलायतीरामजी, लाला खजाँचीमलजी और लाला ज्ञानचन्दजी नामक ३ पुत्र हुए। इनमें विलायतीरामजी संवत् १९८१ में स्वर्गवासी हो गये।

लाला खजाँचीमलजी का जन्म संवत् १९५० में तथा ज्ञानचन्दजी का १९६२ में हुआ। आपको

दुकान पर सेदमीठा बाजार में रेशमी तथा सफेद कपड़ा और मनिहारी सामान का व्यापार होता है। आप स्थानकवासी आम्नाय के माननेवाले सज्जन हैं। लाला विलायतीरामजी के पुत्र लाला रतनचन्दजी हैं यह परिवार लाहौर में प्रतिष्ठित माना जाता है।

लाला विशनदास फग्गूमल जैन दूगड़, पसरूर (पंजाब)

इस परिवार के पूर्वज लाला पृथ्वीशाहजी के दिवानेशाहजी, भानेशाहजी, सुजानेशाहजी तथा बस्तीशाहजी नामक ४ पुत्र हुए। इनमें दिवानेशाहजी के परिवार में राय साहिब लाला उत्तमचन्दजी कुन्जीलालजी आदि सज्जन हैं। लाला भानेशाहजी के करमचन्दजी, ताराचन्दजी तथा धरमचन्द नामक ३ पुत्र हुए। इनमें लाला करमचन्दजी के दित्ताशाहजी, गोविंदशाहजी, हाकमशाहजी तथा नरपतशाहजी नामक ४ पुत्र हुए। तथा लाला ताराचंदजी के पुत्र सीतारामजी हुए। लाला गोविंदशाहजी का स्वर्गवास संवत् १९७० में हुआ। आपका खानदान आढ़त का रोजगार करता है। लाला गोविंदशाहजी के किशनदासजी, मोतीरामजी, पन्नालालजी, नंदलालजी, काशीरामजी तथा गोकुलचन्दजी नामक ६ पुत्र हुए। इनमें विशनदासजी ५० वर्ष पहिले और पन्नालालजी १२ साल पहले स्वर्गवासी हो गये हैं तथा काशीरामजी ने संवत् १९६० में सोहनलालजी महाराज से दीक्षा ग्रहण की। इस समय आप स्थानकवासी पंजाब सम्प्रदाय के युवराज पद पर हैं। शेष ३ भ्राता मौजूद हैं।

लाला विशनदासजी के पुत्र फग्गूमलजी, लाला मोतीरामजी के खेरातीलालजी तथा गोकुलचन्दजी के पुत्र मुनीलालजी हैं। लाला फग्गूमलजी का जन्म संवत् १९३८ में हुआ। आपके यहाँ फग्गूमल खेरातीलाल, तथा विशनदास मोतीरामजी के नाम से आढ़त का कारबार होता है। आप पसरूर की उदयचन्द जैन लायब्ररी, जैन सभा तथा हिन्दू सभा के सेक्रेटरी हैं और यहाँ के अच्छे इज्जतदार पुरुष हैं। आपके पुत्र चिरंजीलालजी खानगा डोकरा में व्यापार करते हैं तथा दूसरे शादीलालजी बी० ए० एल० एल० बी० ने होशियारपुर में ३ सालों तक प्रेक्टिस की तथा इस समय हंसराज शादीलाल जैन के नाम से १९ सैनागो स्ट्रीट कलकत्ता में जनरल मरचेंट्स का व्यापार करते हैं। लाला नंदलालजी, लाला गोकुलचन्दजी तथा लाला खेरातीलालजी पसरूर दुकान का काम देखते हैं। गोकुलचन्दजी के पुत्र मुन्नीलालजी पढ़ते हैं।

इसी तरह इस परिवार में लाला सीतारामजी के पुत्र लालचन्दजी अमृतसर में आढ़त का व्यापार करते हैं।

लाला मिनखीराम धनीराम दूगड़, कसूर

इस परिवार के सज्जन मंदिर मार्गीय आम्नाय के मानने वाले हैं। लाला मिनखीरामजी दूगड़ ने

इस परिवार में मनिहारी (बिसाती) का व्यापार आरम्भ किया। आपके भाई धनीरामजी के लाला दीनानाथजी लाला लालचन्दजी, बनारसीदासजी और कस्तूरीलालजी नामक ४ पुत्र हुए। आप सब भाई सज्जन व्यक्ति हैं तथा आपने अपने धंधे को उन्नति दी है। आपकी दुकान कसूर में अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है। लाला कस्तूरीमलजी ने श्री आत्मानन्द जैन गुरुकुल गुजरानवाला में शिक्षा पाई है तथा सन् १९३० में 'न्यायतीर्थ' की परीक्षा इन्दौर से पास की है। आप इस समय अपनी होयजरी फेक्टरी का संचालन करते हैं। इस परिवार में मिनखीराम धनीराम के नाम से जनरल मर्चेंटाइज का व्यापार होता है।

लाला खानचन्दजी दूगड़, रावलपिण्डी

इस परिवार की आर्थिक स्थिति लाला खानचन्दजी के पिता लाला जीवाशाह के समय तक साधारण थी। लाला जीवाशाहजी के लाला खानचंदजी, लाला खजानचंदजी, लाला ज्ञानचंदजी और लाला रामरिखामलजी नामक चार पुत्र हुए। इनमें से लाला खानचंदजी ने इस खानदान की दौलत और इज्जत को खूब बढ़ाया। इन्होंने कन्ट्राक्टिङ्ग बिजिनेस आरम्भ करके उसमें बहुत बड़ी कामयाबी हासिल की। आप श्री जैन सुमति मित्र मण्डल रावलपिण्डी के प्रथम सभापति रहे। जैन कन्या पाठशाला की स्थापना में भी आपने बहुत मदद दी। इसी प्रकार और भी पब्लिक कार्यों में आप सहयोग देते रहते थे। आपका देहान्त सन् १९ २ में हुआ। आपके लाला सागरचन्दजी, लाला भगतरामजी, लाला नौबतरामजी, लाला सांईदास तथा लाला चमनलालजी नामक पाँच पुत्र हुए। इस समय इस खानदान में लाला खानचन्द एण्ड सन्स के नाम से जनरल मर्चेण्टाइज का व्यापार होता है। लाला सागरचंदजी तथा लाला भगतरामजी बड़े धार्मिक और उत्साही सज्जन हैं। रावलपिण्डी में इस खानदान की अच्छी प्रतिष्ठा है। यह खानदान जैन श्वेताम्बर स्थानकवासी आम्नाय का उपासक है।

लाला के० सी० निहालचन्द जैन, रावलपिण्डी

इस खानदान के पूर्वज लाला गण्डामलजी पसरूर में रहते थे। लाला गण्डामलजी की पसरूर में बहुत इज्जत थी। इनके लाला बोगाशाहजी और लाला गुरुदित्ताशाहजी नामक दो पुत्र हुए। लाला गुरुदित्ताशाहजी के ११ पुत्र हुए। इनमें से सबसे छोटे लाला निहालचंदजी ने करीब २५ साल पहले रावलपिण्डी में आकर गोटा किनारी का कारबार शुरू किया। सन् १९२६ में हिन्दू मुसलमानों के दंगे के समय जब रावलपिण्डी में चारों ओर अग्निकाण्ड हो रहे थे तब इन्होंने फायर ब्रिगेड के कप्तान होकर जनता की बहुत सेवा की थी। आपको डाक्टरी और इंजीनियरिङ्ग का बहुत शौक था। आपका अन्तकाल संवत् १९८३ में हुआ। आपके बड़े भाई लाला भीमसेनजी और लाला खुशालचन्दजी का स्वर्गवास क्रमशः १९७२ और १९६७

में हुआ। लाला खुशालचन्दजी के चार पुत्र हुए जिनमें सबसे छोटे लाला मुलखराजजी जैन हिन्दी रत्न हैं। इस समय आप विद्यमान हैं। आप श्री जैन सुमति मित्र मण्डल के सेक्रेटरी और जैन पाठशाला के मैनेजर हैं। इसके पहले आप जैन यंग मेन्स एसोसिएशन के सेक्रेटरी थे। लाला भीमसेनजी के पुत्र लाला मगरमलजी हैं। ये दोनों भाई रावलपिण्डी में 'के० सी० निहालचन्द' के नाम से सराफी और जेवर का व्यापार करते हैं।

लाला पंजूशाह धर्मचन्द जैन दूगड़, नारोवाल (पंजाब)

नारोवाल की दूगड़ बिरादरी के पूर्वज लाला केशरीशाहजी सियालकोट डिस्ट्रिक्ट के चिट्ठीशेखाँ नामक स्थान से १५० साल पहले नारोवाल आये। इनके पौत्र वसीटेशाहजी के पुत्र सलदूशाहजी ने एक जैन मंदिर बनवाने का बीड़ा उठाया, और उसे तयार करवा कर उसकी प्रतिष्ठा संवत् १९१२ में की। इन वसीटेशाहजी के तीसरे भाई मुस्तइकशाहजी के पोलाशाहजी, गोकुलशाहजी, काशीरामजी, वल्लोमलजी तथा पालाशाहजी नामक पाँच पुत्र थे। इनमें सबसे छोटे पालाशाहजी थे। आप मामूली सराफी व्यापार करते हुए संवत् १९६० में स्वर्गवासी हो गये। आपके पुत्र लाला पंजूशाहजी का जन्म सम्वत् १९३५ में हुआ। लाला पंजूशाहजी ने अपने खानदान की इज्जत तथा अपने व्यापार को बहुत बढ़ाया। आपने २५ हजार रुपयों की लागत से नारोवाल स्टेशन पर एक सुंदर धर्मशाला बनवाई है। स्थानीय मंदिर आदि कार्यों में आप पूरी मदद देते हैं। आपके धरमचंदजी, गुलजारीलालजी, सरदारीलालजी, पूर्णचन्द्रजी, कपूरचंदजी, टेकचंदजी, रतनलालजी तथा शांतिलालजी नामक ८ पुत्र हैं। आपके यहाँ सराफी, बर्त्तन व आढ़त का काम होता है।

इसी परिवार में लाला वसीटाशाहजी के पौत्र लाला चुन्नीलालजी हैं। आपके पुत्र लाला जसवंतरायजी बी० ए० एल० एल० बी० अमृतसर में प्रेक्टिस करते हैं। तथा बाबूलालजी बी० ए० एल० एल० बी० नारोवाल में प्रेक्टिस करते हैं। आप दोनों सज्जनों का पंजाब के शिक्षित जैन समाज में अच्छा सम्मान है तथा कई संस्थाओं से आपका सम्बन्ध है।

सेठ चुन्नीलाल सुखराज दूगड, विल्लिपुरम् (मद्रास)

इस परिवार वाले मूल निवासी बगड़ी (मारवाड़) के हैं। आप जैन श्वेताम्बर स्थानकवासी आम्नाय को मानने वाले हैं। इस खानदान में से सेठ पूनमचन्दजी के पुत्र चुन्नीलालजी व्यवसाय के लिये सन १९०० में देश से चलकर नौरंगाबाद आये, और वहां की प्रसिद्ध फर्म, मेसर्स पूनमचन्द बख्तावर

मल, की दुकान पर मुनीम होगये। उस स्थान पर आपने बड़ी सच्चाई और ईमानदारी से काम किया और मालिकों में तथा जनता में अच्छी प्रतिष्ठा प्राप्त की। सन् १९१६ में स्वतंत्र दुकान स्थापित करने के विचार से ये मद्रास आये और विल्लीपुरम् में अपने बहनोई सेठ कुंदनमलजी सेठिया की भागीदारी में 'सेठ बख्तावरमल बच्छराज' के नाम से दुकान स्थापित की। सात वर्षों में आपने अपनी दुकान की स्थिति को मजबूत बना लिया। आपका स्वर्गवास संवत् १९८० में हुआ। आपने यहां की तामिल जनता में अच्छा सम्मान पाया। आपके सुखराजजी नामक एक पुत्र है। विल्लिपुरम् की जनता में सुखराजजी दूगड़ का बड़ा सम्मान है। आप अच्छे राष्ट्रीय कार्य्यकर्त्ता और खद्दर प्रचारक हैं। आप यहां की कांग्रेस के सेक्रेटरी भी रह चुके हैं। व्यावर जैन गुरुकुल आदि संस्थाओं को आप काफी सहायता पहुँचाते हैं। सेठ चन्दनमलजी के पुत्र नथमलजी बड़े योग्य और होनहार नवयुवक हैं। इन्होंने व्यावर गुरुकुल से न्यायतीर्थ, व्याकरणतीर्थ तथा सिद्धान्त तीर्थ की परिभाषाएँ पास कीं। विल्लीपुरम् में आप लोग मेसर्स बख्तावरमल बच्छराज के साझे में बैङ्किग का तथा नेहरू स्वदेशी स्टोअर के नाम से स्वदेशी कपड़े का व्यापार करते हैं। यहां के व्यापारिक समाज में यह फर्म प्रतिष्ठित है।

सेठ कपूरचन्द हंसराज दूगड़, न्यायडोंगरी

इस परिवार के पूर्वज हुकमीचन्दजी दूगड़ मारवाड़ के दूगोली नामक स्थान से कुचेरा में आकर बसे। इनके भवानीरामजी, हिम्मतरामजी, हीराचन्दजी, सिरदारमलजी, गुलाबचन्दजी, धनजी, सूरजमलजी और जोधराजजी नामक ८ पुत्र हुए। इनमें गुलाबचन्दजी, सूरजमलजी तथा जोधराजजी का परिवार वाले लगभग सौ सवासौ साल पहले न्यायडोंगरी आये तथा शेष ५ भाइयों का परिवार टाकली (चालीस गाँव) गया। सेठ गुलाबचन्दजी के पुत्र हंसराजजी तथा सूरजमलजी के पुत्र चन्दूलालजी हुए। इन दोनों भाइयों ने इस परिवार के व्यापार और सम्मान में उन्नति की। इन दोनों भाइयों ने व्यापार संवत् १९४० में शुरू किया। सेठ चन्दूलालजी का संवत् १९७८ में स्वर्गवास हुआ।

सेठ हंसराजजी का जन्म संवत् १९०८ में हुआ। आप विद्यमान हैं। आपके पुत्र नथमलजी, माणकचन्दजी, अमरचन्दजी तथा कपूरचन्दजी हैं। इसी तरह चंदूलालजी के पुत्र रतनचन्दजी और उत्तमचन्दजी हैं। आप सब बंधु किराना, कपास, कपड़ा, कृषि तथा साहुकारी लेने देन का काम काज करते हैं। यह परिवार न्यायडोंगरी में अच्छा प्रतिष्ठित माना जाता है। नथमलजी के पुत्र हरकचन्दजी तथा माणकचन्दजी के पुत्र मोतीलालजी भी व्यापारिक कामों में भाग लेते हैं। शेष सब भाइयों के भी संतानें हैं। यह परिवार स्थानकवासी आम्नाय का अनुयायी है।

चोपड़ा

चोपड़ा गौत्र की उत्पत्ति

विक्रमी संवत् ११५६ में जैनाचार्य्य जिनवल्लभसूरिजी मंडोवर नगर में पधारे। वहां के अधिपति नाहरराव पड़िहार ने जैनाचार्य से पुत्र प्राप्ति के लिए प्रार्थना की। आचार्य श्री के उपदेश से राजा के ४ पुत्र हुए। लेकिन राजा ने जैन धर्म अंगीकार नहीं किया। थोड़े समय बाद राजा नाहरराव पड़िहार के बड़े पुत्र कुक्कड़देव साँप का विष खाजाने से भयंकर रोग ग्रसित हो गये और सारे शरीर से दुर्गन्ध आने लगी। अनेकों चिकित्साएँ करने पर भी जब शांति नहीं मिली, उस समय राजा चतुर के दीवान गुणधरजी ने नाहरराव को बतलाया कि आपने जैनाचार्य के साथ धोखा किया है, इसी के प्रतिफल में यह आपत्ति आई है। फलतः राजा मुनिदेव की तलाश में गये, और सोजत के समीप उनसे भैंट की। राजा की प्रार्थना पर ध्यान देकर मुनिदेव मंडोवर आये और कुक्कड़देव के शरीर पर मक्खन चोपड़ने को कहा। इससे कुक्कड़ देव ने स्वास्थ्य लाभ किया। यह चमत्कार देख राजा अपने चारों पुत्रों सहित जैन धर्म से दीक्षित होगया। इस तरह औषधि चोपड़ने से इनकी गौत्र "चौपड़ा" प्रसिद्ध हुई और कुक्कड़ पुत्र के नाम से कुक्कड़ चोपड़ा विख्यात हुए। इसी तरह मंत्री गुणधरजी की संतानें गणधर चोपड़ा कहलाई।

नाहरदेव के पश्चात् उनकी पीढ़ी में दीपचन्दजी हुए। जैनाचार्य जिनकुशलसूरिजी के उपदेश से इन्होंने ओसवाल समाज में अपना सम्बन्ध किया। इनकी कई पीढ़ियों के बाद सोनपालजी के पौत्र ठाकुरसीजी हुए। ये बड़े शूर तथा बुद्धिमान पुरुष थे। जोधपुर के राव चूँडाजी ने इनके जिम्मे अपने कोठार का काम किया, तबसे ये चौपड़ा कोठारी कहलाये।

यह कहे बिना नहीं रहा जा सकता कि इस चोपड़ा परिवार ने समय २ पर अनेकों धार्मिक काम किये, अनेकों मदिरों का निर्माण कराया, और शास्त्र भंडार भरवाये, जिनका परिचय स्थान २ के शिलालेखों में मिलता है। इस परिवार के साः हेमराजजी, पूनाजी नामक व्यक्तियों ने संवत् १४९४ में जेसलमेर में सुप्रसिद्ध संभवनाथजी का मन्दिर तयार करवाया। इस विशाल मन्दिर के भूमि गृह में ताड़पत्र पर अंकित जेसलमेर का सुप्रसिद्ध जैन बृहद् ग्रंथ भण्डार मौजूद है। इस भण्डार के ग्रंथों की सूची "बड़ौदा सैंट्रल लायब्रेरी" ने प्रकाशित कराई है। इसी तरह संखलेचा साः खेता तथा चोपड़ा साः पाँचा ने जेसल्मेर में शांतिनाथजी तथा अष्टापदजी के मंदिर की प्रतिष्ठा संवत् १५३६ में कराई। इन दोनों मन्दिरों में लगभग

१ हजार प्रतिमाएँ हैं। इसी तरह के कई कार्य चोपड़ा गोत्र के सज्जनों ने किये। इनके सम्बन्ध में "जैन धातु प्रतिमा लेख संग्रह" नामक ग्रंथ में शिलालेख अंकित हैं।

गंगाशहर का चोपडा (कूकर) परिवार

यह खानदान प्रारम्भ में मारवाड़ के अन्तर्गत रहता था। वहाँ से इसके पूर्वज बीकानेर के दुस्सारण नामक स्थान पर आकर बसे। वहाँ पर इस खानदान में सेठ अमीचन्दजी हुए। ये दुस्सारण से उठकर संवत् १८०० के करीब बीकानेर रियासत के गुसाईंसर नामक स्थान में आकर रहने लगे। आपके दो पुत्र हुए जिनके नाम क्रमसे सेठ देवचन्दजी और सेठ वच्छराजजी था। सेठ देवचन्दजी के तीन पुत्र हुए जिनके नाम क्रमशः सेठ भौमराजजी, सेठ मेघराजजी और सेठ अखैचन्दजी था। इनमें से पहले सेठ भौमराजजी गुसाईंसर में ही स्वर्गवासी हो गये, दूसरे सेठ मेघराजजी गुसाईंसर से उठकर गंगाशहर (बीकानेर) में आकर बस गये और तीसरे अक्खैराजजी पंजाब के गेलाला नामक स्थान पर चले गये और वहीं उनका देहान्त हुआ।

सेठ मेघराजजी गुसाईंसर और गंगाशहर में ही रहे। इनकी आर्थिक स्थिति बहुत साधारण थी। फिर भी इनका हृदय बड़ा उदार और सहानुभूति पूर्ण था। अपनी शक्ति भर ये अच्छे और परोपकार सम्बन्धी कार्यों में सहायता देते रहते थे। आपका स्वर्गवास संवत् १९६३ के पौष मास में हो गया। आपके क्रमसे सेठ भैरोंदानजी, सेठ ईसरचदजी, सेठ तेजमलजी, सेठ पूरनचन्दजी, सेठ हंसराजजी और सेठ चुन्नीलालजी नामक छ: पुत्र हुए।

सेठ भैरोंदानजी—आपका जन्म संवत् १९३४ की आश्विन शुक्ला दशमी को हुआ। आप शुरू से ही बड़े प्रतिभाशाली और होनहार थे। आप केवल नौ वर्ष की उम्र में संवत् १९४३ में अपने काका मदनचन्दजी के साथ सिराजगंज गये और वहाँ सरदारशहर के टीकमचन्द मुकनचन्द की फर्म पर नौकरी की। मगर आपका भाग्य आप पर मुसकरा रहा था और आपकी प्रतिभा आपको शीघ्रता के साथ उन्नति की ओर खींचे लिये जा रही थी, जिसके फल स्वरूप इस नौकरी को छोड़कर आपने संवत् १९५३ में बंगाल की मशहूर फर्म हरिसिंह निहालचन्द की सिराजगंज वाली शाखा पर सर्विस करली। यहीं से आपके भाग्य ने पलटा खाना प्रारम्भ किया। संवत् १९५८ तक आप यहीं पर रहे। तदन्तर इसी फर्म के हेड आफिस कलकत्ता में आप चले आये। आपके आने के पश्चात् इस प्रसिद्ध फर्म की और भी जोरों से तरक्की होने लगी। आपकी तथा आपके भाइयों की कारगुजारी से मेसर्स हरिसिंह निहालचन्द के मालिक बहुत प्रसन्न रहते थे। इसके पश्चात् आपने डिवडिवी (रंगपुर) और भद्दंगामारी (रंगपुर) नामक जूट के केन्द्रों में भैरोंदान ईसरचन्द के नाम से अपनी स्वतन्त्र फर्में भी खोली और उनके द्वारा काफी द्रव्य उपार्जित किया।

इसके पश्चात् अपनी प्रतिभा और कारगुजारी से बढ़ते २ संवत् १९६३ के आषाढ़ मास में आप मेसर्स हरिसिंह निहालचन्द की फर्म में साझीदार हो गये। आपका स्वर्गवास सम्वत् १९८७ के आषाढ़ सुदी २ को हुआ।

सेठ भैरोंदानजी के सारे जीवन को देखने पर यह स्पष्ट मालूम हो जाता है कि आप उन कर्म-वीरों में से थे जो अपनी प्रतिभा और कर्मवीरता के बल से अपने पैरों पर खड़े होकर संसार की सब सम्पदाओं को प्राप्त कर लेते हैं। इन्होंने अत्यन्त साधारण स्थिति से ऊँचे उठकर अपने हाथों से लाखों रुपयों की दौलत को उपार्जित किया और इतना कर लेने पर भी आप पर धन-मद बिलकुल सवार नहीं हुआ। आप जीवन पर्यन्त अत्यन्त निरभिमान, सादे, उदार और धार्मिक वृत्तियों से परिपूर्ण रहे। बीकानेर स्टेट में आपका बहुत अच्छा सम्मान था। आपके बा० लूनकरनजी, बाबू मंगलचन्दजी, बाबू जसकरणजी और बाबू पानमलजी नामक चार पुत्र हुए हैं। आप चारों भाई बड़े सज्जन और मिलनसार हैं और अपने व्यापार का संचालन करते हैं। बाबू लूनकरणजी के पूनमचन्दजी और बाबू जसकरणजी के जवरीमलजी नामक एक २ पुत्र हैं।

सेठ ईसरचन्दजी चोपड़ा—आपका जन्म संवत् १९२९ के कार्तिक मास मे हुआ। आप भी केवल ग्यारह वर्ष की उम्र में संवत् १९५० के अन्तर्गत सिराजगंज गये और वहाँ पर काम सीखते रहे। फिर संवत् १९५८ तक दो तीन स्थानों पर नौकरी कर आप भी मेसर्स हरिसिंह निहालचन्द की फर्म पर आगये। आप भी अपने भाई सेठ भैरोंदानजी ही की तरह विलक्षण बुद्धि के व्यापारकुशल सज्जन हैं। सम्वत् १९६३ में उक्त फर्म में साझा हो जाने के पश्चात् इन दोनों भाइयो की कार्यकुशलता से इस फर्म ने बहुत वेग गामी गति से उन्नति की। इस समय सेठ ईसरचन्दजी सारे कुटुम्ब का, और सारे व्यापार का संगठित रूप से संचालन कर रहे हैं। आपकी उदारता, दानवीरता और धार्मिकवृत्ति भी बहुत बढ़ी चढ़ी है। आपको तथा आपके बड़े भ्राता को बीकानेर दरबार ने एक खास रुक्का प्रदान कर सम्मानित किया है। आपके इस समय तोलारामजी नामक एक पुत्र हैं जो अभी विद्याध्ययन कर रहे हैं।

सेठ तेजमलजी चोपड़ा—आपका जन्म सम्वत् १९४१ के पौष में हुआ। आप भी १३ वर्ष की आयु में सम्वत् १९५४ में सिराजगंज गये और वहाँ कुछ काम सीख कर अपनी डिबडिबी वाली फर्म पर जाकर उसका संचालन करने लगे। आप भी बड़े योग्य और मिलनसार व्यक्ति हैं। आप अधिकतर देशही में रहते हैं। आपके बा० आसकरणजी, बा० राजवरणजी, बा० दीपचन्दजी, बा० प्रेमचन्दजी और बा० पूसराजजी नामक पाँच पुत्र हैं। इनमें छोटे पूसराजजी अभी पढ़ते है और बड़े चारों व्यापार में भाग लेते हैं। बाबू आसकरणजी

के जेठमलजी, राजकरणजी के इन्द्रचन्दजी, दीपचन्दजी के जयचन्दलालजी और मोहनलालजी प्रेमचन्दजी तथा सोहनलालजी नामक पुत्र हैं।

सेठ पूरनचंदजी, हेमराजजी और चुन्नीलालजी चोपड़ा का खानदान

सेठ पूरनचंदजी का जन्म संवत् १९४६ में, सेठ हेमराजजी का १९५० में और सेठ चुन्नीलालजी का १९५३ में हुआ। खेद है कि इनमें से सेठ चुन्नीलालजी का स्वर्गवास बहुत कम उम्र में संवत् १९९० में होगया। आप सब भाई भी बड़े योग्य और सज्जन व्यक्ति हैं। आप सब लोग भी कलकत्ते में अपनी फर्म के व्यापार संचालन में भाग लेते हैं। सेठ पूरनचन्दजी के छगनमलजी, केसरीसिंहजी और हंसराजजी नामक तीन पुत्र हैं बाबू छगनमलजी के मांगीलालजी नामक एक पुत्र है।

सेठ हेमराजजी के तिलोकचन्दजीनामक एक पुत्र है। आप भी बड़े मिलनसार और योग्य सज्जन हैं। आपके रतनलालजी, मोतीलालजी और कन्हैयालालजी नामक तीन पुत्र है।

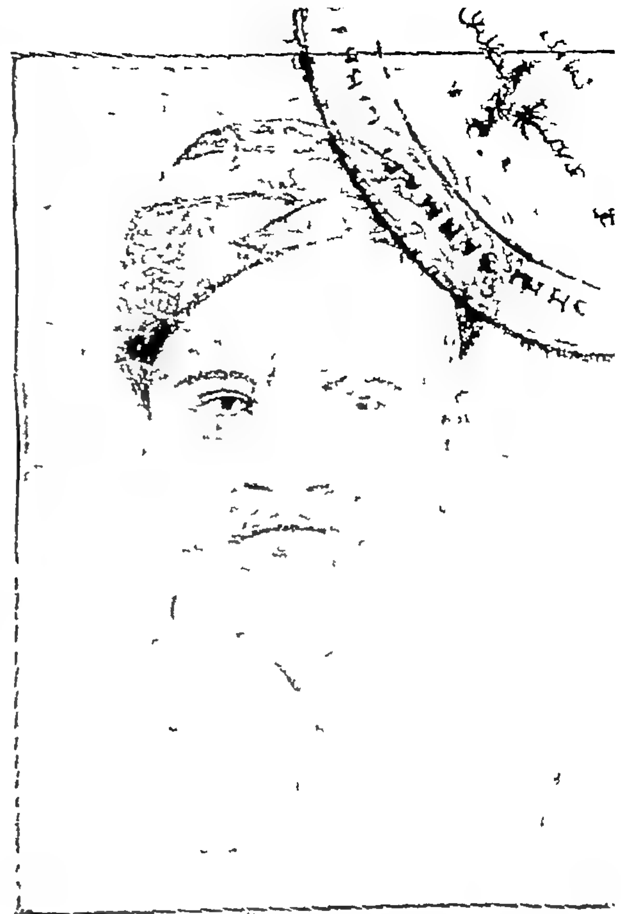
सेठ चुन्नीलालजीके नेमचन्दजो और धनराजजी नामक दो पुत्र है आप दोनों विद्याध्ययन करते हैं।

इस परिवार वालों का व्यापार संवत् १९६२ से १९९० तक मेसर्स हरिसिंह निहालचन्द के साझे में होता रहा। संवत् १९७१ में आप लोगों ने कलकत्ते में मेसर्स आसकरण लूणकरन के नाम से एकऔर फर्म खोली जो संवत् १९८४ तक चलती रही। इसके पश्चात् संवत् १९८५ में यह फर्म मेसर्स छगनमल तोलाराम के नाम से स्थापित हुई जो अभी चल रही है। इस फर्म पर जूट बेलिंग, शिपिंग, सेलिंग और कमीशन एजेन्सी का काम होता है। यह फर्म गंगानगर इण्डस्ट्रीज लिमिटेड की मैनेजिंग एजन्ट है। इस फर्म की शाखा कलकत्ता में मेसर्स चोपड़ा प्रोप्राइटीज एण्ड कम्पनी के नाम से है। इसके अण्डर में कलकत्ता काशीपुर में चौपड़ा बाजार के नाम से जूट के गोदाम, और बीकानेर रियासत के टीबी परगने में दो गाँव जमीदारी पर हैं इसके अतिरिक्त सिरसावाड़ी, सिरसागंज, पिंगना, भडंगामारी, फारबिसगंज, बनबन, रामनगर इत्यादि बंगाल के व्यापारिक केन्द्रों में इसकी शाखाएँ हैं। इनमें से रामनगर नामक ग्राम तो इसी फर्म के द्वारा जमीन खरीदकर बसाया गया है।

केवल व्यापारिक दृष्टि ही से नहीं धार्मिक और सार्वजनिक कार्य्यों में भी इस परिवार ने समय समय पर काफी भाग लिया है और हमेशा लेता रहता है। इस परिवार ने बीस हजार रुपया हिन्दू युनिवर्सिटी बनारस को तथा नौ हजार राजलदेसर गर्ल्स स्कूल में प्रदान किया है। गुसाईसर में करीब २० हजार की लागत से एक कुंआ बनवाया। आप लोगों का विचार गंगाशहर में एक चौपड़ा हाईस्कूल खोलने का है इसके लिए आपने करीब ७० हजार गज जमीन खरीद कर रक्खी है। इस स्कूल में लगभग



स्व० सेठ भैरोदानजी चौपड़ा, गंगाशहर.



सेठ ईसरचंदजी चौपड़ा, गंगाशहर.



स्व० सेठ घेवरचन्दजी चौपड़ा, सुजानगढ़.



सेठ दानचंदजी चौपड़ा, सुजानगढ़.

एक लाख रुपया खर्च होने का अनुमान है। गंगा शहर में इस परिवार की बड़ी २ आलीशान हवेलियां बनी हुई हैं।

सेठ घेवरचंद दानचंद चौपडा, सुजानगढ़

इस परिवार के वर्तमान मालिक जैनश्वेताम्बर तेरापंथी सम्प्रदाय के अनुयायी हैं। इनके पूर्वज शुरू शुरू में बीकानेर के निवासी थे। वहां वे लोग उस समय में राजकीय कार्य्य करते थे। वहाँ से घटना चक्र वश उनके वंशज चलकर आसोप नामक स्थान पर आ बसे जो कि वर्तमान में मारवाड़ स्टेट का एक ठिकाना है। कुछ समय तक ये लोग यहीं रहे। अन्त में संवत् १९०० के लगभग इस वंश के एक पुरुष जिनका नाम सेठ पूनमचन्दजी था चलकर डीडवाना (जोधपुर स्टेट) में आ बसे। यहां भी आप राज कार्य्य ही करते रहे। आपके चार पुत्र हुए जिनके नाम क्रमशः सेठ हीराचंदजी, सेठ उदयचन्दजी, सेठ घेवरचन्दजी एवम् सेठ मिलापचंदजी था।

घेवरचंदजी—उपरोक्त चारों भ्राताओं में आप का नाम विशेष उल्लेनीय है आप बड़े प्रतिभाशाली और कर्मवीर पुरुष थे। संवत् १९३५ में आपने शुरू २ में ग्वालंदो (बंगाल) में अपनी फर्म खोली। उस समय इस फर्म पर बहुत मामूली व्यापार होता था। मगर आप व्यापार कुशल सज्जन थे और उस समय बंगाल आसाम में जूट का व्यापार जोरों पर हो रहा था, अतएव कहना न होगा कि इस व्यापार में आपने बहुत द्रव्य उपार्जन किया। यहां तक कि साधारण स्थिति में होते हुए भी आप लखपतियों में गिने जाने लग गये। बंगाल के जूट के व्यापार का सम्बन्ध कलकत्ता में है अतएव आपने अपने व्यापार की विशेष उन्नति होने के लिये संवत् १९६३ में कलकत्ता में भी अपनी एक ब्रांच खोली और जूट का व्यापार प्रारम्भ किया। इस फर्म के द्वारा भी आपको बहुत लाभ हुआ। व्यापार के अतिरिक्त धार्मिकता की ओर भी आपकी अच्छी रुचि थी। आपके दानचन्दजी नामक एक पुत्र हुए। सेठ घेवरचन्दजी का स्वर्गवास संवत् १९८१ में होगया।

दानचंदजी—वर्तमान में आप ही इस परिवार में मुख्य व्यक्ति हैं। आप भी अपने पिताजी की तरह व्यापार चतुर पुरुष हैं। यहां की पंचायती एवम् थली की ओसवाल समाज में आप एक प्रतिष्ठित व्यक्ति माने जाते हैं। आप यहां के प्रायः सभी सार्वजनिक जीवन में सहयोग प्रदान करते रहते हैं। आपने हाल ही में अपने स्वर्गीय पिताजी की स्मृति में एक श्री घेवर पुस्तकालय स्थापित किया है जिस की शानदार इमारत ३००००) रुपया लगा कर आपने बनवादी है। इसके अतिरिक्त आपने अपने स्वर्गीय पिताजी की स्मृति में ईस्टर्न बंगाल रेल्वे के ग्वालदो की स्टेशन का नाम ग्वालंदो घेवर बाजार कर दिया है। उसी स्थान पर आपने पब्लिक के लिए एक अस्पताल बनवा कर

उसकी बिल्डिंग यूनियन बोर्ड को प्रदान करदी है। इसी प्रकार आप हमेशा धार्मिक, सामाजिक और पब्लिक कार्यों में सहायता प्रदान करते रहते हैं। आप एक मिलनसार, शिक्षित एवम् उच्च विचारों के सज्जन है। बीकानेर दरबार ने आपके कार्यों से प्रसन्न होकर आपको आनरेरी मजिस्ट्रेट के पद पर नियुक्त किया है। आपके इस समय ४ पुत्र हैं जिनके नाम क्रमशः विजयसिंहजी, पनेचन्दजी, श्रीचन्दजी, एवम् परतापचन्दजी हैं। आपका व्यापार कलकत्ता एवम् ग्वालंदो घेवर बाजार में जूट का होता है।

जोधपुर का मोदी खानदान

इस खानदान वाले वास्तव में गणधर चौपड़ा गौत्र के हैं मगर राज्य की ओर से 'मोदी, की उपाधि मिलने से यह खानदान "मोदी" के नाम से प्रसिद्ध है। इस खानदान का इतिहास भी उज्वल और उत्साह वर्द्धक है। कहना न होगा कि इसके पूर्वजों ने अपने उज्ज्वल कारनामों से इतिहास में अपना खास स्थान प्राप्त कर लिया है।

मोदी पीथाजी—इस खानदान का इतिहास उस समय से प्रारम्भ होता है जब संवत् १७३५ में जोधपुर के तत्कालीन महाराजा यशवन्तसिंहजी का स्वर्गवास हो गया था और कई राजनैतिक परिस्थितियों के वश होकर उनके पुत्र महाराज अजीतसिंहजी को छप्पन के पहाड़ों में छिपकर रहना पड़ा था। उस समय उपरोक्त खानदान के पूर्व पुरुष नाथाजी के पुत्र पीथाजी (पृथ्वीराजजी) जालौर में रहते थे। उस कठिन समय में एक वार पीथाजी जङ्गल में महाराजा अजितसिंहजी के साथियों से मिल गये, जिन्होंने उन्हें महाराजा अजितसिंहजी से मिलाया। कहना न होगा कि उस समय महाराजा अजितसिंहजी बहुत कठिन विपत्ति (विखे) में थे। उस विपत्ति के समय में पीथाजी ने उन्हें अन्न और धन की बहुत काफी सहायता पहुँचाई जिसकी वजह से उनका महाराजा से तथा उनके साथियों से—जिनमें वीरवर राठौड़ दुर्गादास, मुकुन्ददास मेड़तिया, गोपीनाथ आदि के नाम उल्लेखनीय हैं—इनका काफ़ी परिचय हो गया।

जब संवत् १७६३ में औरंगजेब का देहान्त हो गया और महाराजा अजितसिंहजी गद्दीनशीन हुए, तब उन्होंने पीथाजी को बुलाकर उनका बड़ा सत्कार किया और वंश परम्परा के लिए "मोदी" की उपाधि दी। इसके सिवा "सरकार की आण जठै थारो डाण" कहकर उनके लिए सायर महसूल की भी माफी दी।

पीथाजी के फत्ताजी (फतेचन्दजी) नामक एक छोटे भाई और थे। वे भी जालोर में रहते थे। महाराजा अजितसिंहजी की कृपा होने से पीथाजी के वंशज जोधपुर में आकर बस गये मगर फ़त्ताजी जालोर में ही रहे।



श्री शम्भूनाथजी मोदी बी. ए., सेशन जज्ज जोधपुर.



श्री इन्द्रनाथजी मोदी बी. ए., जोधपुर.



श्री आसकरणजी चोपड़ा (बालचन्द रामलाल) लोहावट.



रायसाहब डाक्टर रामजीदासजी जैन, मजीठा (पंजाब)

मोदी पीथाजी का खानदान

मोदी पीथाजी के मालचन्दजी और बालचन्दजी नामक दो पुत्र हुए। इनमें मालचन्दजी के पुत्र मोदी मूलचन्दजी संवत् १८७२ में सिंघवी इन्द्राजजी के साथ मीरखां के सिपाहियों द्वारा घायल हुए और उसीसे उनका देहान्त हुआ, उनका दाह संस्कार सिंघवी इन्द्राजजी के समीप ही किया गया।

मोदी दीनानाथजी—बालचन्दजी के चार पुत्र हुए—हरनाथजी, गोपीनाथजी, शिवनाथजी और लक्ष्मीनाथजी। हरनाथजी के पुत्र दीनानाथजी को महाराजा मानसिंहजी के समय जयपुर घेरे में सहयोग देने के उपलक्ष्य में एक गाँव पट्टे हुआ था। आप जयपुर के वकील भी बनाए गये थे। आपके प्राणनाथजी नवलनाथजी, मीठानाथजी, बैजनाथजी तथा चन्दननाथजी नामक ५ पुत्र हुए।

मोदी प्राणनाथजी—आप जोधपुर के हाकिम रहे तथा आपके पास एक गांव जागीर में था। इन्होंने खालसे के समय में कुछ दिनों तक दीवानगी का काम भी देखा था। बैजनाथजी के नाम पर जोधपुर और गोडवाड़ की एवं मीठानाथजी के शिव की हुकूमत रही।

मोदी सूरजनाथजी—नवलनाथजी सं० १९१५ के लगभग सिंधियों की लड़ाई में मेड़ते के पास काम आए। इनके दो पुत्र हुए, गुलाबनाथजी और अगरनाथजी। अगरनाथजी के पुत्र सूरजनाथजी हुए जिन्होंने महाराजा बख्तसिंहजी के समय में फ़ौज ले जाकर आलणियावास, गूलर, आसोप तथा आऊवा के बागी ठाकुरों को परास्त किया। इनका देहान्त १९५० में हुआ। आपके पुत्र सुजाननाथजी हुए जो अच्छे विद्वान व कट्टर-आर्य समाजी थे। वर्तमान में सुजाननाथजी के दो पुत्र हैं। सरदारनाथजी और सोभाग्यनाथजी।

मोदी सरदारनाथजी—आपने अल्पअवस्था में ही वकालात की और इस समय जोधपुर के योग्य वकीलों में आपकी गिनती है आप बड़े मिलनसार उदार तथा प्रतिष्ठित सज्जन हैं। जोधपुर के शिक्षित समाज में वजनदार व्यक्ति माने जाते हैं। सौभाग्यनाथजी पिताजी के स्वर्गवास होने के समय बहुत छोटे थे। आप परिश्रम पूर्वक विद्या प्राप्ति में सलग्न रहे। सन् १९२१ में आपने एल० एल० बी० की परीक्षा प्रथम श्रेणी में पास की और अभी आप जोधपुर स्टेट में वकालात करते हैं।

मोदी दीनानाथजी के छोटे पुत्र चन्दननाथजी के अमरनाथजी और अमृतनाथजी नामक पुत्र हुए। अमरनाथजी एवं उनके पुत्र फूलनाथजी भी राज्य की सर्विस करते रहे। फूलनाथजी का स्वर्गवास संवत् १९७७ में हुआ।

मोदी शम्भूनाथजी—मोदी फूलनाथजी के पुत्र शम्भूनाथजी और जुवरनाथजी हैं। शम्भूनाथजी का जन्म १९४३ में हुआ। आपने बी० ए० तक शिक्षा प्राप्त की है। आप सन् १९१९ से २६ तक कई स्थान

के हाकिम रहे। इसके बाद आप जोधपुर में सेशन जज्ज के पद पर नियुक्त हुए। वर्तमान समय में भी आप इसी पद पर काम कर रहे हैं। आप जोधपुर के शिक्षित समाज में तथा ओसवाल समाज में वजनदार तथा लोकप्रिय सज्जन हैं। आपके पुत्र मोदी इन्द्रनाथजी हैं।

मोदी इन्द्रनाथजी का जन्म संवत् १९६२ में हुआ। आपने बी० ए० एल० एल० बी० तक उच्च शिक्षा प्राप्त की। सन् १९२७ में आप महाराजा साहिब के प्राइवेट सेक्रेटरी के ऑफिस में ऑफिस सुपरिटेण्डेण्ट हुए। सन् १९३० से १९३३ तक आप स्टेट कॉन्सिल के मेम्बर इन वेटिंग के सेक्रेटरी रहे। आप बड़े कुशाग्र बुद्धि के नवयुवक हैं।

श्री जवरनाथजी मोदी ने भी उच्च शिक्षा पाई है। इस समय आप महकमे खास में नियुक्त हैं।

श्री दीनानाथजी के तृतीय पुत्र बैजनाथजी थे, जिनके पुत्र शार्दूलनाथजी जालोर और सांचोर के हाकिम रहे। शार्दूलनाथजी के चार पुत्र हुए—मिश्रीनाथजी, चतुरनाथजी, रूपनाथजी, और सोमनाथ जी। श्री रूपनाथजी के पुत्र श्रीनाथजी हैं जो टीचर्स ट्रेनिंग स्कूल में इन्स्ट्रक्टर हैं। आपको कविता बनाने की विशेष रुचि है। इनकी लिखी हुई दर्जनों पुस्तकें इस समय प्रचलित हैं।

श्री हरनाथजी के लघु भ्राता गोपीनाथजी के पौत्र भजवनाथजी हुए, जिनके पुत्र बदरीनाथजी—जो उमरकोट के हाकिम थे—सं० १८८४—८५ के लगभग उमरकोट के युद्ध में काम आये आप के प्रपौत्र वर्तमान में वृद्धनाथजी विद्यमान हैं जो स्टेट सर्विस में हैं। बदरीनाथजी के कनिष्ट भ्राता मोदी रामनाथजी सं० १८८४ के लगभग दौलतपुरे में हाकिम थे।

श्री हरनाथजी के सबसे छोटे भ्राता लक्ष्मीनाथजी थे जिनके वंशज वर्तमान में माणकचन्दजी हैं। आप स्टेट सर्विस में हैं।

यह परिवार जोधपुर की ओसवाल समाज में उत्तम प्रतिष्ठा रखता है तथा लगातार कई पीढ़ियों से जोधपुर स्टेट की सेवाएँ करता आ रहा है।

मोदी फत्ताजी का परिवार

मोदी फत्ताजी के जगन्नाथजी और जसवन्तजी नामक दो पुत्र हुए। मोदी जगन्नाथजी के ठाकुरसीजी तथा रूपचन्दजी नामक पुत्र हुए। इनमें से रूपचन्दजी के कोई संतान नहीं हुई। मोदी ठाकुरसीजी के मुकुन्दसी, रतनसी, सरदारसी और सावंतसी नामक ४ पुत्र हुए। इनमें मोदी रतनसीजी ने संवत् १८८५।८६ में मारवाड़ की सायरात का कंट्राक्ट किया, इसके एवज में उनको जोधपुर दरबार से सायरात की माफी का आर्डर मिला जो उनके पुत्र पदमसी तक पाला गया।

मोदी मुकुन्दसीजी के हेमसीजी, गुमानसीजी और राजसीजी नामक ३ पुत्र हुए और गुमानसी जी के मोकमसीजी, कुशलसीजी और अचलसीजी नामक पुत्र हुए इनमें से मोकमसीजी हेमसीजी के यहां तथा कुशलसीजी राजसीजी के यहां दत्तक गये। मोदी पदमसीजी के पुत्र महताबसीजी ने संवत् १९२५ में जालोर शहर की कोतवाली की। उनके बाद क्रमशः जोरावरसीजी शकुनसीजी व मदनसीजी हुए। वर्तमान में मोदी मदनसीजी बैङ्किगका कारबार करते हैं। मोदी अचलसीजी के पुत्र लालसीजी ने सायरात में सर्विस की, इस समय आप रिटायर्ड हैं, इनके पुत्र गणपतसीजी पढ़ते हैं। मोदी कुशलसीजी के पुत्र तेजसी जी मौजूद हैं। इनके पुत्र करणसीजी बैङ्किग व्यापार करते हैं।

मोदी सरदारसीजी के थानसीजी, भानसीजी और ज्ञानसीजी नामक तीन पुत्र हुए। ज्ञानसीजी के कुंदनसीजी और चिमनसीजी नामक पुत्र हुए। इनमें कुन्दनसीजी भानसीजी के नाम पर दत्तक गये। मोदी थानसीजी और चिमनसीजी के कोई संतान नहीं हुई। मोदी कुन्दनसीजी के पुत्र दीपसीजी संवत् १९८० में गुजरे। इनके नाम पर मोदी रघुनाथसीजी (पृथ्वीराजजी के खानदान में मोदी विश्वम्भरनाथजी के पुत्र) संवत १९७६ में दत्तक लिये गये। आपके यहां बैङ्किग का कारवार होता है। आप उत्साही युवक हैं। आपके उगमसी नामक पुत्र हैं।

मोदी खींवसीजी ,के हुकुमसीजी जेतसीजी और सुल्तानसीजी हुए। इनमें हुकुमसीजी के कोई संतान नहीं हुई। सुल्तानसीजी अभी विद्यमान हैं उनके पुत्र बादलसीजी निसंतान गुजर गये। जेतसीजी के बख्तावरसीजी और सुकनसीजी नामक २ पुत्र हुए। इनमें बख्तावरसीजी विद्यमान हैं, इनके यहां मोदी जबरनाथजी के पुत्र सूरतसीजी दत्तक आये हैं। सुकनसीजी जोरावरसीजी के नाम पर दत्तक गये हैं।

सेठ बालचन्द रामलाल चोपडा, रायपुर (सी० पी०)

इस परिवार के पूर्वज कुक्कड़ चोपड़ा महारावजी लोहावट से ४० मील दूर सेतरावा नामक स्थान में रहते थे। वहाँ से यह कुटुम्ब लोहावट आकर बसा। महारावजी के राजसीजी, पुरखाजी तथा गोमाजी नामक ३ पुत्र हुए।

सेठ रघुनाथदास बालचन्द—पुरखाजी के गुलाबचन्दजी, रघुनाथदासजी तथा बालचन्दजी नामक ३ पुत्र हुए। इन तीनों भाइयों ने अपने चचेरे भाई गेदमलजी के साथ लगभग १२५ साल पहिले व्यापार के लिये यात्रा की तथा नागपुर और उसके आसपास पारदी और महाराजगंज में अपनी दुकाने खोलीं। धीरे २ इन बन्धुओं का व्यापार रायपुर, धमतरी, राजनांद गाँव, कलकत्ता और बम्बई में फैल गया, और छत्तीसगढ़ प्रान्त में रघुनाथदास बालचन्द के नाम से यह फर्म नामी मानी जाने लगी। इन बन्धुओं में सेठ

बालचन्दजी बड़े प्रतिष्ठा सम्पन्न व्यक्ति हुए। आपके विश्वास से लोहावट, फलौदी, खिचंद आदि के कई ओसवाल गृहस्थों ने सी० पी० में अपना व्यापार जमाया। सेठ गुलाबचन्दजी के हीराचन्दजी, सेठ रघुनाथदासजी रतनलालजी, कँवरलालजी, तेजपालजी सेठ बालचंदजी के रामलालजी और गेंदमलजी के भीकमचंदजी नामक पुत्र हुए। इन बन्धुओं ने लोहावट-त्रिसनावास में संवत १९५७ में श्री चंदाप्रभु स्वामी का मंदिर व धर्मशाला बनवाई। अकाल में लोगों को मदद दी। संवत् १९५७ में इन सब भाइयों का कारबार अलग-अलग हुआ।

चोपड़ा रतनलालजी—आप उम्र भर मारवाड़ ही में रहे तथा आतिथ्य सत्कार में नामवरी पाते रहे। सम्वत् १९८९ में आपका स्वर्गवास हुआ। आपके कन्हैयालालजी, जमनालालजी, सोहनलालजी फूलचंदजी तथा भोमराजजी नामक ५ पुत्र विद्यमान हैं। इनमें जमनालालजी तेजमालजी के नाम पर दत्तक गये हैं।

चोपड़ा तेजमालजी—आप बड़े योग्य और कुशल व्यापारी थे। आपने तमाम दुकानों का काम बड़ी बुद्धिमत्ता पूर्वक सम्हाला। आपके नाम पर जमनालालजी दत्तक आये।

चोपड़ा रामलालजी—आपका जन्म सम्वत् १९२६ में हुआ। आप बड़े दयालु तथा धर्मात्मा पुरुष हो गये हैं। आपने राजनांदगांव में पांजरापोल को स्थापित किया। सम्वत् १९५६ तथा ६२ में मनुष्य तथा पशुओं को बहुत इमदाद पहुँचाई। इसी प्रकार के दिव्य गुणों से आपने विशेष नाम पाया। सम्वत् १९६४ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र चोपड़ा आसकरणजी विद्यमान हैं।

चोपड़ा जमनालालजी बी० ए० एल० एल० बी०—आपका जन्म सम्वत् १९५० में हुआ। सन् १९१७ में आपने एल० एल० बी० की डिगरी हासिल की तथा १९१८ से आप रायपुर में प्रेक्टिस करते हैं। आप यहाँ के प्रतिष्ठित वकील माने जाते हैं। आपकी रायपुर के शिक्षित समाज में अच्छी प्रतिष्ठा हैं।

चोपड़ा आसकरणजी—आपका जन्म संवत् १९५९ में हुआ। आपकी फर्म सेठ बालचंद रामलाल के नाम से व्यापार करती है, तथा रायपुर छत्तीसगढ़ प्रान्त की प्रसिद्ध फर्म मानी जाती है। शिक्षा की ओर आपकी अच्छी रुचि है। इस समय आप १ हजार रुपया सालाना ब्यावर गुरुकुल को सहायता देते हैं। इसके अलावा लोहावट में आपकी एक कन्या पाठशाला और होमियोपैथिक डिस्पेंसरी है। परदा प्रथा को आपने तोड़ने का प्रयत्न किया है।

इसी तरह इस परिवार में हीराचंदजी के पुत्र माणकलालजी, कँवरलालजी के पुत्र केसरीचंदजी, चंदनमलजी, सम्पतलालजी और प्रतापचंदजी हैं। कँवरलालजी के बड़े पुत्र चम्पालालजी का स्वर्गवास

हो गया है। आप बड़े शिक्षाप्रेमी सज्जन थे। गोमाजी के परिवार में कुंदनमलजी प्रभावशाली व्यक्ति थे। इस समय गोमाजी के परिवार में जालमचन्दजी, भोमराजजी, नेमीचंदजी, जुगराजजी, मूलचंदजी तथा जेठमलजी विद्यमान हैं। इसी तरह राजसीजी के परिवार में छोगमलजी, सतीदानजी, सुगनमलजी, गणेशमलजी और मेघराजजी हैं।

सेठ राजमल भँवरलाल चोपड़ा (कोठारी) बीकानेर

यह परिवार बीकानेर का निवासी है। इस परिवार में सेठ मूलचन्दजी कोठारी ने सिलहट में दुकान स्थापित की, तथा अपनी बुद्धिमत्ता के बलपर उसके व्यापार को बढ़ाया। आपका स्वर्गवास सिलहट में ही हुआ। आपके पुत्र सोभागमलजी के युवावस्था में स्वर्गवासी हो जाने से भैरोंदानजी बीकानेर चले आये।

सेठ भैरोंदानजी बीकानेर से पुनः कलकत्ता गये, तथा वहाँ सेठ जगन्नाथ मदनगोपाल मोहता तथा हस्तीमलजी बीकानेर वालों की फर्म पर कार्य करते रहे। इन दुकानों की आपने अच्छी उन्नति की। आपकी होशियारी और ईमानदारी से प्रसन्न होकर वृद्ध सेठ हस्तीमलजी ने आपको अपने पुत्र लखमीचन्दजी के साथ अपनी फर्म का भागीदार बनाया। आपने इस दुकान की बहुत उन्नति की। बीकानेर तथा कलकत्ता की ओसवाल समाज में आप अच्छे प्रतिष्ठित सज्जन थे। आपने कई धार्मिक कामों में सहायताएँ दीं। संवत् १९८९ में आपका स्वर्गवास हुआ। आपके पुत्र हीरालालजी तथा राजमलजी विद्यमान हैं। सेठ भैरोंदानजी के स्वर्गवासी हो जाने पर उनके पुत्रों का उपरोक्त "हस्तीमल लखमीचंद" फर्म से भाग अलग हो गया। तथा इस समय आप लोग मनोहरदास कटला, कलकत्ता में राजमल भँवरलाल के नाम से अपना स्वतन्त्र कारबार करते हैं। आपके यहाँ रेशमी कपड़े का इम्पोर्ट तथा थोक बिक्री का व्यापार होता है।

सेठ हीरालालजी के पुत्र भँवरलालजी, धरमचंदजी तथा उमरावसिंहजी और राजमलजी के गोपालचन्द्रजी नामक पुत्र हैं।

राय साहिब डाक्टर रामजीदासजी जैन, मजीठा (पंजाब)

इस परिवार के पूर्वज लाला काकूशाहजी चोपड़ा मजीठा में व्यापार करते थे। संवत् १९३७ में इनका स्वर्गवास हुआ। इनके गोविन्दरामजी, नत्थूरामजी, जिवंदामलजी, नथमलजी और विशनदासजी नामक ५ पुत्र हुए। इनमें जिवंदामलजी तथा नथमलजी अभी विद्यमान हैं। लाला गोविंदरामजी सराफी का व्यापार करते थे। इनके पुत्र लाला दौलतरामजी, लाला रामजीदासजी, तथा लाला बरकतरामजी हैं। आपका जन्म क्रमशः सम्वत् १९२७, ३३ तथा १९३५ में हुआ। इनसे छोटे केसरीचन्दजी बी० ए० प्लीडर थे। इनका सन् १९२४ में स्वर्गवास हुआ। इनके पुत्र कैलाशचन्द्रजी तथा प्रकाशचन्द्रजी हैं।

लाला दौलतरामजी—आप काश्मीर स्टेट में ओवरसियर और जयपुर स्टेट में सब डिविजनल आफ़िसर फारेस्ट रहे। इधर कई सालों से आप पी० डब्ल्यू० डी० नेपाल में सर्विस करते हैं। आपके पुत्र अमरचंदजी, ताराचंदजी तथा सरदारचंदजी पढ़ते हैं।

लाला रामजीदासजी—आप सन् १८९५ में डाक्टरी पास हुए तथा इसी साल गवर्नमेंट की ओर से जयपुर भेजे गये। वहाँ १९२६ तक आप मेयो हास्पिटल के हाउस सर्जन के पद पर कार्य करते रहे। सन् १९२६ में आपको स्टेट से पेंशन प्राप्त हुई। सन् १९२४ मे भारत सरकार ने आपको "राय साहिब" की पदवी इनायत की। सन् १९२९ से ४ साल तक आप ठाकुर साहब डूंडलौद के प्राइवेट डाक्टर और मेयो कालेज अजमेर में उनके कुमारों के गार्जियन रहे। इस समय आपने मजीठा में अपनी प्राइवेट डिस्पेंसरी खोली है। आप मजीठा की जनता में प्रिय व्यक्ति हैं तथा टेंपरेंस सोसायटी के प्रेसिडेण्ट हैं। आपके पुत्र प्यारेलालजी उत्साही नवयुवक हैं तथा महावीर दल के प्रधान हैं। आप जयपुर में जवाहरात का व्यापार करते हैं।

इसी तरह इस परिवार में नत्थूरामजी स्टेशन मास्टर थे। इनके चार पुत्र हैं जिनमें गणपतरामजी स्टेशन मास्टर, काशीरामजी सब इन्सपेक्टर पोलीस पंजाब, तीरथरामजी सब इन्सपेक्टर पोलीस जयपुर हैं। तथा चौथे लाला दीवानचन्दजी मजीठा में व्यापार करते हैं। लाला जिवंदामलजी के पुत्र गोपालदासजी सिंगापुर में मेसर्स नाहर एण्ड कम्पनी के मैनेजर हैं। तथा निहालचन्दजी तिजारत करते हैं। बाबू नन्दलालजी के पुत्र दुर्गादासजी ने सन् १९०७ में दीक्षा ली। इनका वर्तमान नाम मुनि दर्शनविजयजी है।

सेठ अगरचन्द घेवरचन्द चोपड़ा, अजमेर

सेठ घेवरचन्दजी चोपड़ा स्थानकवासी आम्नाय के मानने वाले सज्जन हैं। आप आरंभ में बहुत मामूली हालत में सर्विस करते थे। लगभग २० वर्ष पूर्व आपने कपड़े की दुकान की तथा इस व्यापार में आपने अपनी लायकी तथा परिश्रमशीलता से केवल कपड़े के व्यापार में अच्छी सम्पत्ति उपार्जित की। कपड़े के व्यापार में सम्पत्ति उपार्जित कर आपने अजमेर की प्रसिद्ध मम्बइयाँ परिवार की हवेली खरीद की। इस समय आपके यहाँ रेशमी कपड़ों का व्यापार होता है। आपकी दुकान से राजपूताने के कई रजवाड़े कपड़ा खरीदते हैं। आप अजमेर के ओसवाल समाज में अच्छी इज्जत रखते हैं तथा सज्जन पुरुष हैं। आपके २ पुत्र हैं।



गधइया परिवार (श्रीचंद गणेशदास गधइया) सरदार शहर
बैठे हुए —(१) सेठ विरदीचंदजी गधइया (२) सेठ गणेशदासजी गधइया।
खड़े हुए —(१) कुँ० नेमचंदजी S/o सेठ विरदीचंदजी गधइया (२) कुँ० उत्तमचंदजी S/o सेठ बिरदीचंदजी गधइया

गधैया

गधैया गौत्र की उत्पत्ति

ऐसा कहा जाता है कि चन्देरी नगर के राठौर वंशीय राजा खरहत्थसिंहजी ने खरतर गच्छाचार्य्य श्री जिनदत्तसूरि से जैन धर्म की दीक्षा ग्रहण की। आपके भैंसाशाह नामक एक नामांकित पुत्र हुए। इन भैंसाशाहजी के पांचवे पुत्र सेनहत्थ का लाड़ का नाम गद्दाशाहजी था। इन्हीं गद्दाशाहजी की सन्तानें आगे जाकर गधैया के नामसे मशहूर हुईं और धीरे २ यह नाम गौत्र के रूप में परिणत हो गया। तभी से गद्दाशाहजी के वंशज गधैया के नाम से मशहूर हैं।

सेठ जेठमल श्रीचन्दजी गधैया

संवत् १८९६ में सेठ जेठमलजी अपने काकाजी सेठ मानमलजी के साथ नौहर (बीकानेर स्टेट) से यहाँ आये। आपका जन्म संवत् १८८८ में नौहर ही में हुआ। आप सरदारशहर आये और अपना घर स्थापन किया उसी घर में आजतक आपके वंशज रहते आ रहे हैं। संवत् १९०७ में आप कूँच बिहार (बंगाल) में गये और वहाँ जाकर अपनी फर्म स्थापित की तथा ९ वर्ष तक लगातार वहीं रहकर आप संवत् १९१६ में वापस सरदारशहर आये। आपको वहाँ पहुँचने में ५॥ माह लगे थे। आपके श्रीचन्दजी नामक एक पुत्र हुए। इसी समय से आपको साधु-सेवाओं से बड़ा प्रेम हो गया और आपने हमेशा के लियें रात्रि भोजन करना बंद कर दिया। इसके कुछ समय पश्चात ही आपने केवल आठ द्रव्यों का भोजन करना शेष रक्खा था। रात्रि में आप कम्बल पर शयन करते थे। लिखने का मतलब यह है कि धनिक और श्रीमान् होते हुए भी आपने अपना जीवन त्यागमय बना लिया था। संवत् १९२४ में पत्नी के होते हुए भी आपने ब्रह्मचर्य्य व्रत धारण किया। आपका स्वर्गवास संवत् १९५२ के वैशाख में हो गया। आपका परिवार श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी संप्रदाय का अनुयायी है।

सेठ श्रीचन्दजी—आपका जन्म संवत् १९१९ में हुआ। संवत् १९३७ में व्यापार के लिये कलकत्ता गये और वहाँ जाकर अपनी फर्म पर, जो पहले ही संवत् १९२९ में स्थापित हो चुकी, कपड़े का व्यापार प्रारंभ किया। इस व्यापार में आपने अपनी बुद्धिमानी एवम् व्यापार कुशलता से लाखों रुपयों की सम्पत्ति उपार्जित की। यह कार्य्य आप संवत् १९६० तक करते रहे। इसके पश्चात् आप अपने व्यापार का भार अपने पुत्र सेठ गणेशदासजी एवम् सेठ बिरदीचन्दजी को सौंप कर व्यापार से अलग हो गये तथा

आपने अपना ध्यान धार्मिकता की ओर लगाया। आपने भी ब्रह्मचर्य्य व्रत धारण कर लिया और व्यापार से हाथ हटाकर, साधु सेवा में लगे। आपका स्वर्गवास संवत् १९८६ के वैशाख में हो गया।

सेठ गणेशदासजी और विरदीचन्दजी—आपका जन्म संवत् १९३६ का तथा सेठ विरदीचंदजी का संवत् १९३७ का है। आप दोनों ही भाई बड़े मिलनसार सरल प्रकृति और सज्जन वृत्ति के महानुभाव हैं। आप दोनों ही सज्जन व्यापार के निमित्त क्रमशः संवत् १९५० तथा सम्वत् १९५३ में कलकत्ता जाने लगे एवम् वहाँ कपड़े के व्यापार को आप लोगों ने विशेष उत्तेजन प्रदान किया। आप दोनों ही भाईयों ने अपने परिश्रम एवम् बुद्धिमानी से बहुत सम्पत्ति उपार्जित की। आप लोग यहाँ सरदारशहर में बहुत प्रतिष्ठित व्यक्ति माने जाते हैं। इतने प्रतिष्ठित और सम्पत्ति शाली होते हुए भी आप में अभिमान का लेश भी नहीं है। सेठ गणेशदासजी को सन् १९१६ में बंगाल गवर्नमेंट ने आसन प्रदान किया है इसी पकार आप सन् १९१७ में बीकानेर स्टेट के कौंसिल मेम्बर भी रहे। सेठ विरदीचन्दजी के इस समय नेमीचन्दजी और उत्तमचन्दजी नामक दो पुत्र हैं। आप लोग भी आज कल व्यापार के लिए कलकत्ता जाया करते हैं। आप लोग भी शांत एवम् मिलनसार और समझदार नवयुवक हैं।

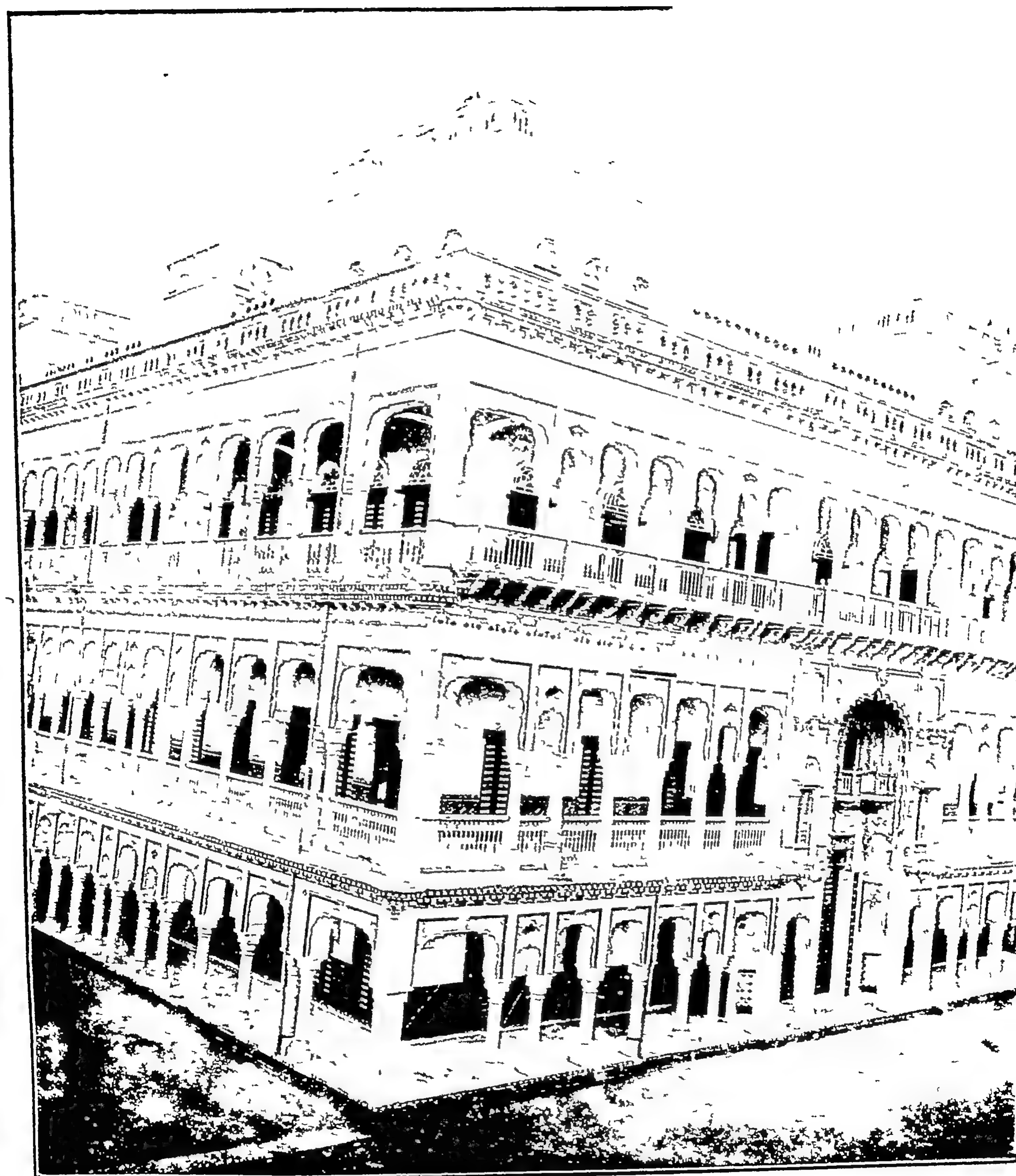
इस परिवार की सरदारशहर में बड़ी आलीशान हवेलियाँ बनी हुई हैं। आपका व्यापार कलकत्ता में ११३ क्रास स्ट्रीट मनोहरदास कटला में कपड़े का तथा बैंकिंग और हुँडी चिट्ठी का होता है। इसी फर्म की एक और यहाँ ब्रांच है जहाँ कोरा, मारकीन और धोती जोड़ों का व्यापार होता है। इस फर्म पर तार का पता "Gadhaiya" और "Kelagachha" है। टेलीफोन नं० ३२८८ बड़ा बजार है।

सेठ रामकरण हीरालाल जौहरी, नागपुर

इस खानदान के पूर्वजों का मूल निवासस्थान होशियारपुर (पंजाब) का है। वहाँ से सेठ रामकरणजी करीब १०० वर्ष पूर्व व्यापार निमित्त नागपुर आये और यहाँ पर आकर आपने व्यापार करना प्रारंभ किया। आप मंदिर आम्नाय के मानने वाले हैं।

सेठ रामकरणजी—आपने उक्त फर्म की स्थापना सं० १८९० में की। शुरू से ही आपने जवाहिरात का व्यापार चालू किया। आप बड़े साहसी तथा व्यापार कुशल व्यक्ति थे। आपके पश्चात् इस फर्म की विशेष उन्नति सेठ हीरालालजी के समय में हुई। आपने अपनी फर्म को बहुत उन्नत अवस्था में पहुँचा दिया। आपका स्वर्गवास सं० १९६५ में हुआ।

सेठहीरालालजी के तीन पुत्र हुए—मोतीलालजी माणकचन्दजी और केशरीचन्दजी ने माणकचन्दजी ने यांदा जिले में श्री भद्रवती (भाण्डक) तीर्थ में एक आदीश्वर स्वामी का मंदिर बनवाया। मोतीलालजी



गधइया भवन (श्रीचंद गणेशदास गधइया) सरदार शहर

का सं० १९६४ में, माणकचन्दजी का सं० १९७४ में तथा केशरीचन्दजी का स्वर्गवास संवत् १९८७ में हुआ। श्रीयुत माणकचन्दजी के जवाहरमलजी नामक एक पुत्र हुऐ मगर आपका भी देहान्त हो गया। आपके मानमलजी नामक पुत्र हुए। आपका देहान्त केवल १८ वर्ष की उम्र में सं० १९७७ में हो गया। आपके कोई पुत्र न होने से केशरीचन्दजी के छोटे पुत्र इन्द्रचन्दजी जिनका वर्तमान नाम महेन्द्रकुमारसिंहजी हैं दत्तक रक्खे गये।

इस समय इस फर्म के मालिक श्रीयुत केशरीचन्दजी के बड़े पुत्र पानमलजी, मानमलजी के पुत्र महेन्द्रकुमारजी तथा मंगलसिंहजी हैं। आपके यहाँ इस समय जवाहिरात का काम होता है। आपकी फर्म नागपुर में इतवारी बाजार में तथा सदर बाजार में है।

यह परिवार नागपुर की ओसवाल समाज में बहुत प्राचीन तथा प्रतिष्ठा सम्पन्न माना जाता है। जौहरी पानमलजी बड़े रईस तबियत के उदार पुरुष हैं। आपका परिवार कई पीढ़ियों से जवाहरात का व्यापार करता आ रहा है।

लाला नत्थूशाह मोतीशाह, सियालकोट (पंजाब)

यह परिवार गधैया गोत्रीय है तथा जैन श्वेताम्बर स्थानकवासी आम्नाय को पालन करने वाला है। यह खानदान बहुत लम्बे अर्से से सियालकोट में रहता है। लाला टिंडेशाहजी के पुत्र नारायणशाहजी सियालकोट के प्रसिद्ध बैंकर थे। आप राज घरानों के साथ बैङ्किग बिजिनेस करते थे। आपके लाला रामदयालजी, लाला साहबदयालजी तथा लाला सोनेशाहजी नामक ३ पुत्र हुए। लाला सोनेशाहजी के ला० देवीदित्ताशाहजी, ला० गंगाशाहजी, तथा ला० जेठूशाहजी नामक तीन पुत्र हुए। इनमें यह परिवार लाला जेठूशाहजी का है। आपके नत्थूशाहजी, मोतीशाहजी, खजांचीशाहजी तथा लखमीचन्दजी नामक चार पुत्र हुए।

लाला नत्थूशाहजी का जन्म संवत् १९३१ में हुआ। आप इस खानदान में बड़े हैं तथा सियालकोट की जैन बिरादरी में मोअज़्ज़िज पुरुष हैं। २० सालों तक आप यहां की जैनसभा के प्रेसिडेंट रहे।

लाला मोतीशाहजी का जन्म सं० १९३४ में हुआ। आप भी सियालकोट के प्रसिद्ध व्यक्ति हैं। सन् १९०८ से आप इस समय तक स्थानीय म्युनिसिपैलिटी के मेम्बर हैं। सन् १९१३ में आप सैण्ट्रल बैंक के केशिअर बने। इस समय आप उसकी स्थानीय ब्रांच के व्हाइस प्रेसिडेण्ट हैं। युद्ध के समय आपने गवर्नमेंट को रंगरूट भरती कराकर तथा रुपया दिलाकर काफी इमदाद पहुँचाई। आप यहां के

डिस्ट्रिक्ट दरबारी हैं। आपके लाला प्यारेलालजी, नगीनालालजी, जंगीलालजी, शादीलालजी तथा मनोहरलालजी नामक ५ पुत्र मौजूद हैं।

लाला प्यारेलालजी बैङ्किंग व्यापार सम्हालते हैं। लाला नगीनालालजी ने सन् १९२२ में बी० ए० तथा १९२४ में एल० एल० बी० पास किया। आप सियालकोट हिन्दू सभा के सेक्रेटरी हैं। आपके परिश्रम से यहाँ महावीर कन्या पाठशाला का स्थापन हुआ। आप शिक्षित तथा उत्साही सज्जन हैं तथा इस समय प्रेक्टिस करते हैं। लाला जंगीलालजी ने सन् १९२६ में एम० ए० तथा २८ में एल० एल० बी० की डिगरी हासिल की है। आप सबजजी की काम्पीटीशन परीक्षा में सेकण्ड आये। इस समय आप प्रेक्टिस करते हैं। इनसे छोटे शादीलाल जी जनरल मरचेंट हैं।

लाला गोपालदासजी—लाला खजांचीशाहजी के पुत्र हैं। आप बी० एस० सी० एम० बी० बी० एस० हैं। आपने सबसे पहिले अपनी डिस्पेंसरी में एक्सरे की मशीन लगाई है। आप सियालकोट के मशहूर डाक्टर हैं। आपके छोटे भाई चैनलालजी, चिमनलालजी तथा रोशनलालजी अलग २ तिजारत करते हैं।

लाला लखमीचन्दजी अपने बड़े भ्राता खजांचीशाहजी के साथ बैङ्किंग व्यापार करते हैं। इनके पुत्र पूरनचन्दजी तथा शामलालजी हैं।

लाला काशीराम देवीचंद गधैया का परिवार, सियालकोट

इस खानदान वाले श्री जैन श्वेताम्बर स्थानकवासी सम्प्रदाय को मानने वाले सज्जन हैं। आप लोगों का मूल निवासस्थान सियालकोट का ही है। इसका इतिहास लाला केशरशाहजी से प्रारम्भ होता है। लाला केशरशाहजी के गोविन्दशाहजी और गोविन्दशाहजी के जयदयालशाहजी नामक पुत्र हुए।

लाला जयदयालशाहजी बड़े धर्मात्मा पुरुष थे। आपने कपड़े के व्यवसाय में खूब सफलता प्राप्त की। आपका संवत् १९३४ में स्वर्गवास होगया है। आपके लाला पालाशाहजी, लालशाहजी, निहालशाहजी, रूपाशाहजी, वधावाशाहजी, मथुराशाहजी एवम् काशीशाहजी नामक सात पुत्र हुए। वर्तमान परिवार लाला काशीरामजी के वंश का है।

लाला काशीरामजी का जन्म संवत् १९११ में हुआ था। आप जैन सिद्धान्तों एवम् सूत्रों को खूब जानते थे। आप बड़े धर्मध्यानी सज्जन थे। आपको बसाती के कामों में काफी सफलता मिली। आपका स्वर्गवास संवत् १९८० में हुआ। आपके लाला लद्दूशाहजी, हंसराजजी, कुन्दनलालजी, देवीचन्दजी, नगीनालालजी एवम् जंगीलालजी नामक छः पुत्र हैं। आप सब भाइयों का जन्म, क्रमशः

संवत् १९४०, १९४५, १९४८, १९५१, १९५८ एवम् १९६२ में हुआ। इनमें लाला हंसराजजी संवत् १९८० में स्वर्गवासी होगये हैं। शेष भाइयों में केवल लाला देवीचन्दजी और जंगीलालजी को छोड़ कर सब अलग अलग अपना स्वतंत्र व्यापार करते हैं। देवीचन्दजी और जंगीलालजी मेसर्स काशीराम देवीचंद के नाम से सम्मिलित रूप से व्यवसाय करते है।

लाला मोतीलाल बनारसीदास, लाहौर

इस खानदान के पूर्वज लाला बूटेशाहजी अपने समय के नामी जौहरी होगये है। आप महाराजा रणजीतसिंहजी के कोर्ट ज्वेलर थे। आप लाहौर म्युनिसिपैलेटी के प्रथम मेम्बर थे। इनके वल्लोशाहजी, हरनारायणजी, विशनदासजो, तथा महाराजशाहजी नामक ४ पुत्र हुए।

लाला विशनदासजी के पुत्र बुलाखीशाहजी हुए। इनके पुत्र लाला हीरालालजी एड्वोकेट बी० ए० एल० एल० बी० लाहौर के प्रतिष्ठित वकील हैं तथा अमर जैन होस्टल और एस० एस० जैन सभा पंजाब के खास कार्य्य कर्त्ता हैं। इनसे छोटे भाई लाला मुन्शीलालजी बी० ए० एल० एल० बी० वकील थे इनका स्वर्गवास होगया है। इनके पुत्र मदनलालजी सर्विस करते हैं। हीरालालजी के पुत्र जवाहर लालजी ने इस साल बी० ए० की परीक्षा दी है।

लाला महाराजशाहजी के गंगारामजी तथा नत्थूमलजी नामक २ पुत्र हुए। इनमें गंगारामजी के पुत्र मोतीलालजी तथा पन्नालालजी हुए। लाला मोतीलालजी ने सन् १९०३ में संस्कृत पुस्तकों का व्यापार तथा प्रकाशन जोरों से किया। आपका स्वर्गवास सं० १९८६ में हो गया है। आप श्री आत्मानन्द जैन सभा पंजाब के गुजरांवाले के प्रथम अधिवेशन के सभापति थे। इस समय आपका लाहोर में मोतीलाल बनारसीदास के नाम से प्रेस है। आपके यहाँ से संस्कृत, हिन्दी तथा अंग्रेजी की लगभग २०० पुस्तकें निकली हैं। यह ग्रन्थालय पंजाब के पुस्तक व्यवसाइयों में अपना खास स्थान रखता है।

लाला मोतीलालीजी के पुत्र लाला सुन्दरलालजी गधैया विद्यमान हैं। आप शिक्षित तथा उन्नत विचारों के सज्जन हैं तथा ग्रन्थ प्रकाशन व विक्रय का कार्य्य भली भांति संचालित करते हैं।

इसी तरह इस परिवार में पन्नालालजी के पुत्र खजानचन्दजी तथा नत्थूसिंहजी के माणकचन्दजी हैं।

लाला गोपीचन्द किशोरीलाल जैन, अम्बाला

यह खानदान कई पुश्तों से अम्बाला में निवास कर रहा है। इस खानदान में लाला बहादुर मलजी के लाला चुन्नीलालजी, दुर्बलमलजी, तथा जयलालजी नाम के ३ पुत्र हुए। इनमें लाला राजारामजी

के निहालचन्दजी तथा भगवानप्रसादजी नामक २ पुत्र हुए। इनमें लाला निहालचन्दजी के लक्ष्मीचन्दजी, गोपीचन्दजी, अमीचन्दजी, संतरामजी तथा बनारसीदासजी नामक ५ पुत्र हुए।

लाला लक्ष्मीचन्दजी स्वर्गवासी हो गये हैं। आपकी ओर से जैन हाई स्कूल अम्बाला में प्रथम पास होने वाले छात्र को प्रति वर्ष १००) की थैली दी जाती है। आपके पुत्र ताराचन्दजी हुए इनके पुत्र निरंजनलालजी बी० ए० में पढ़ते हैं। लाला गोपीचन्दजी का जन्म संवत् १९२२ में हुआ। राज दरबार में आपका मान हैं। महकमा पोलीस से इन्हें इन्तजाम के कामों के लिये सार्टिफिकेट मिले हैं। आपके पुत्र किशोरीलालजी, अम्बाला हाई स्कूल के लिये डेपूटेशन लेकर मद्रास, बम्बई, हैदराबाद की ओर गये थे। आप अम्बाला में असेसर हैं। आप बड़े उत्साही सज्जन हैं। इनके पुत्र रतनचन्दजी हैं।

लाला संतरामजी श्री आत्मानन्द जैन सभा पंजाब के प्रधान हैं। आप पंजाब के मन्दिर मार्गीय जैन समाज में प्रतिष्ठित सज्जन हैं। आप अम्बाले के ऑनरेरी मजिस्ट्रेट, डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के मेम्बर डिस्ट्रिक्ट दरबारी और असेसर है। आपके पुत्र श्यामसुन्दरजी है। लाला बनारसीदासजी भी प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। आप के टेकचन्दजी चिम्मनलालजी, विजयकुमारजी तथा पवनकुमारजी नामक चार पुत्र हैं।

लाला नानकचन्द हेमराज गधैया, अम्बाला

यह परिवार श्वेताम्बर स्थानकवासी आम्नाय का मानने वाला है। इस खानदान में लाला जयदयालजी हुए। उनके पुत्र हीरालालजी और पौत्र नानकचन्दजी थे। लाला नानकचन्दजी का जन्म १८७९ में तथा स्वर्गवास संवत् १९६४ में हुआ। आपके लाला मिलखीरामजी, श्रीचंदजी तथा हेमराजजी नामक ३ पुत्र हुए।

लाला श्रीचन्दजी का जन्म संवत् १९२१ में हुआ। आपने कई धार्मिक पुस्तकें प्रकाशित करवा कर मुफ्त बँटवाई। आप प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। संवत् १९७४ में आप स्वर्गवासी हुए। इनके यहाँ कपड़े का व्यापार होता है। लाला शिवप्रसादजी के ओमप्रकाशजी, नत्थूरामजी, तथा पवनकुमारजी तथा लाला अमरनाथजी के जोगेन्द्रप्रसादजी, विमलकुमारजी व मोहनलालजी नामक ३ पुत्र हैं।

लाला श्रीचन्दजी के छोटे भ्राता हेमराजजी का जन्म १९४४ में हुआ। आप योग्य तथा धार्मिक व्यक्ति है। आप अम्बाला जैन युवक मण्डल के प्रेसिडेण्ट रहे। तथा लेन देन और हुंडी चिट्ठी का काम करते हैं।

लाला फग्गूशाह रतनशाह गधैया, जम्मू (काश्मीर)

लाला महूशाहजी स्यालकोट में रहते थे, तथा वहाँ के मालदार और इज्जतदार व्यापारी माने जाते थे। इनको महाराजा गुलाबसिंहजी काश्मीर ने बड़ी इज्जत के साथ व्यापार करने के लिये जम्मू



लाला फग्गूमलजी ओसवाल, जम्मू (काश्मीर)
(पेज नं० ४४५)



सेठ हसराजजी गुलाबचन्दजी दूगड़, न्यायडोंगरी.
(पेज नं० ४२६)



श्री० अम्बालालजी डोसी, उदयपुर
(पेज न० ४०२)



सेठ घेवरचन्दजी चोपड़ा, अजमेर
(पेज नं० ४३८)

बुलाया। इन्होंने जम्मू आकर सराफे का रोजगार शुरू किया। इनके ९ पुत्र हुए, जिनमें एक नरपतशाहजी थे। आपने जम्मू के व्यापारियों में अच्छी इज्जत हासिलकी थी।

लाला नरपतशाहजी के श्यामेशाहजी, नत्थूशाहजी तथा चेनेशाहजी नामक ३ पुत्र हुए। इन बन्धुओं में लाला श्यामेशाहजी महाराजा काशमीर की जनानी ड्योढ़ी में माल सप्लाय करने का काम करते थे और नत्थूशाहजी अपने बड़े भ्राता के साथ व्यापार में सहयोग देते थे। आपका स्वर्गवास संवत् १९४४ में हुआ। लाला चैनेशाहजी अपने दोनों भाइयों के पहले गुजर गये थे। लाला श्यामेशाहजी के ४ पुत्र हुए अभी इनमें कोई विद्यमान नहीं है।

लाला नत्थूशाह के लाला फग्गूशाहजी, बोगाशाहजी, नानकचन्दजी और पन्नालालजी नामक ४ पुत्र विद्यमान है। लाला फग्गूशाहजी का जन्म संवत् १९१९ में हुआ। आपके यहाँ सराफी का व्यापार होता है। आप जम्मू की जैन सभा के प्रेसिडेण्ट हैं और यहाँ की जैन बिरादरी के प्रतिष्ठित पुरुष हैं। आपके पुत्र रतनचन्दजी दुकान के व्यापार को सम्हालते हैं। इनके पुत्र हीरालालजी हैं। लाला पन्नालालजी के पुत्र दर्शनकुमारजी हैं।

लाला पंजाबरायजी का खानदान, मलेरकोटला (पंजाब)

इस खानदान के लोग श्री जैन श्वेताम्बर स्थानकवासी आम्नाय को मानने वाले हैं। इस खानदान में लाला पंजाबरायजी हुए। आप इस परिवार में बहुत मशहूर और नामी व्यक्ति हो गये हैं। आपके लाला शीलूमलजी एवं लाला बस्तीमलजी नामक दो पुत्र हुए।

लाला शीलूमलजी को गुजरे करीब ४० वर्ष हो गये हैं। आपके लाला कपूरचन्दजी, हमीरचंदजी एवम् लालजीमलजी नामक तीन पुत्र हुए। लाला कपूरचन्दजी को गुजरे करीब ३० वर्ष हो गये हैं। आपके घुम्बारामजी, मुंशीरामजी एवं चन्दनमलजी नामक तीन पुत्र हुए। लाला हमीरचन्दजी के लाला खैराती-लालजी नामक एक पुत्र हुए। लाला लालजीमलजी का जन्म संवत् १९१५ का है। आप इस समय विद्यमान हैं। आपने इस खानदान की इज्जत व दौलत को खूब बढ़ाया। आपकी यहाँ पर बहुत प्रतिष्ठा है। आपके एक पुत्र लाला हरिचंदजी हैं। आप बड़े सज्जन हैं। आप मलेरकोटला कौंसिल तथा म्यूनिसिपल के मेम्बर हैं। इसके अतिरिक्तयहाँ की कोर्ट के असेसर तथा मलेरकोटला जैन पंचायती के चौधरी भी हैं। यहाँ के अनाथालय के आप खजांची है। आपके इस समय दो पुत्र हैं जिनके नाम भगवानदासजी एवम् हुकुमचन्दजी हैं। इनमें भगवानदासजी का केवल २२ वर्ष की आयु में ही स्वर्गवास हो गया है। हुकुमचन्दजी का जन्म सम्वत् १९६५ का है। आपके इस समय राजकुमारजी एवं पवनकुमारजी नामक दो पुत्र है। आपके यहाँ पर गल्ला और कमीशन एजंसी को काम होता है।

कोचर

कोचर गौत्र की उत्पत्ति

कहते है कि राजा विक्रमादित्य और भोज के वंश में राजा महिपालजी नामक प्रसिद्ध राजा हुए। आपने तपेगच्छ के आचार्य्य महात्मा पोसालिया से जैन धर्म अंगीकार किया। आपके कोचरजी नामक पुत्र उत्पन्न हुए। कोचरजी बड़े वीर पराक्रमी तथा साहसी पुरुष थे। आपके नाम से आपकी संतानें कोचर कहलाई। कोचरजी के वंश में आगे जाकर जीयाजी रूपाजी आदि नामांकित व्यक्ति हुए जिनकी संतानें उनके नाम से जीयाणी रूपाणी कोचर आदि २ नामों से मशहूर हुई।

कोचर पनराजजी का खानदान, सोजत

इस खानदान के लोग पालनपुर से पुंगल, मंडोर, फलोधी तथा वहाँ से जोधपुर होते हुए महाराजा मानसिंहजी के समय में सोजत आये। इस परिवार में कोचरजी की नवी पीढ़ी में कुशालचंदजी हुए। इनके रूपचंदजी, सूरजमलजी, बहादुरमलजी तथा जीतमलजी नामक ४ पुत्र हुए। इन भ्राताओं में मेहता सूरजमलजी बहुत नामांकित पुरुष हुए।

कोचर मेहता सूरजमलजी—महाराज मानसिंहजी के समय में आप बड़े प्रभावशाली व्यक्ति थे। सं० १८६२ में आपको मारवाड़ राज्य की दीवानगी का सम्मान मिला। इसके अतिरिक्त कई रुक्के देकर दरबार ने आपको सम्मानित किया। मेहता सूरजमलजी, जीतमलजी, प्रेमचन्दजी (खुशालचन्दजी के भतीजे) तथा सुरतानमलजी (बहादुरमलजी के पुत्र) महाराजा मानसिंहजी के साथ जालोर घेरे में शामिल थे। मेहता सूरजमलजी अपने समय के बड़े प्रभावशाली व्यक्ति थे आपके बुधमलजी तथा मूलचन्दजी नामक २ पुत्र हुए।

मेहता बहादुरमलजी—आप भी बड़ी बहादुर प्रकृति के पुरुष थे। आप संवत् १८६६ की फागुन सुदी ९ के दिन भीनमाल की लड़ाई में युद्ध करते हुए काम आये। आपके मारेजाने की दिलासा के लिए महाराजा मानसिंहजी ने एक रुक्का इस परिवार को दिया था।

मेहता जीतमलजी—आप फलोधी और पाली के हाकिम रहे। आपने कई लड़ाइयों में युद्ध किया। संवत् १८६४ में आपको सोजत का सऊपुरा नामक गाँव जागीर मे मिला। आपके उम्मेदमलजी तथा सायरमलजी नामक २ पुत्र हुए।

मेहता बुधमलजी—आप भी बड़े प्रतिभाशाली पुरुष हुए। संवत् १८९८ की चैत वदी १४ को आपको जोधपुर की दीवानगी का ओहदा प्राप्त हुआ। आपके छोटे भाई मेहता मूलचन्दजी भी पर्वतसर आदि स्थानों पर हुकूमातें करते रहे।

मेहता उम्मेदमलजी जवाहरमलजी—आप दोनों बंधुओं को समय २ पर जोधपुर दरबार की ओर से कई सम्मान मिलते रहे। आपको सायर की माफी का रुक्का भी मिला था। आपके लिये जोधपुर दरबार ने निम्नलिखित एक रुक्का भेजा था,

मुता उम्मेदमल कस्य सुप्रसाद वांचजो तथा श्री वडा महाराज री सलामती में मुता सूरजमल के आजीविका मुलायजो थो जीण माफक थारो रेहसी इणमें फरक पाडां तो माने श्री इष्टदेव ने बडा माराजरी आण है। संवत् १९०० रा कातिक वदी ४

इन दोनों भाइयों का स्वर्गवास क्रमशः संवत् १९२१ तथा २४ में हो गया। मेहता उम्मेदमल जी के पुत्र शिवनाथमलजी परवतसर तथा सोजत के हाकिम हुए। आपका स्वर्गवास सं० १९५६ में हुआ। आपके पनराजजी तथा सावंतमलजी नामक २ पुत्र हुए।

मेहता पनराजजी—आपका जन्म संवत् १९२२ में हुआ। आप २० सालों तक राखी ठिकाने के वकील रहे। आप सोजत के मुत्सुद्दी समाज में समझदार तथा वयो वृद्ध सज्जन हैं। आपके ५ पुत्र हैं। जिनमें मेहता सहस मलजी बीकानेर स्टेट रेलवे में मुलाजिम हैं। आप दत्तक गये हैं। दूसरे मेहता सम्पतमलजी मारवाड़ राज्य में डाक्टर हैं। आप इस समय फलोधी में हैं। तीसरे मेहता किशनमलजी कलकत्ते में बिड़ला ब्रदर्स फर्म पर सर्विस करते हैं। तथा शेष २ बाघमलजी और विजयमलजी हैं। इसी तरह मेहता सांवतमलजी के पुत्र मेहता जगरूपमलजी बीकानेर स्टेट के आडिट विभाग में मुलाजिम हैं।

इसी तरह इस परिवार में मेहता बुधमलजी के पुत्र बख्तावरमलजी, चन्दनमलजी तथा भगनमलजी और मूलचन्दजी के पुत्र राजमलजी सरदारमलजी तथा जसराजजी कई स्थानों पर हुकूमातें करते रहे। बख्तावरमलजी के पुत्र रघुनाथमलजी भी संवत् १९२५ में सोजत के हाकिम थे अभी इनके पुत्र जतनमल जी बम्बई में व्यापार करते हैं।

यह परिवार सोजत के ओसवाल समाज में बहुत बड़ीप्रतिष्ठा रखता है। मेहता पनराजजी के पास अपने परिवार के सम्बन्ध में बहुत रुक्के तथा प्राचीन चित्रों का संग्रह है।

कोचर मेहता समरथरायजी का खानदान, जोधपुर

हम ऊपर कोचरजी का वर्णन कर चुके हैं। इनके पश्चात् पांचवी पीढ़ी में कोचर झांझणजी हुए। इनके समय में यह परिवार गुजरात तथा फलोधी में रहता था इनके पुत्र बेलाजी हुए।

कोचर मेहता बेलाजी—आपकी योग्यता से प्रसन्न होकर मोटा राजा उदयसिंहजी आपको जोधपुर लाये। संवत् १६६१ में आपके परिश्रम से जोधपुर दरबार सूरसिंहजी को बादशाह से मेड़ता परगना जागीर में मिला। इस चतुराई से प्रसन्न होकर दरबार ने संवत् १६६४ में आपको दीवानगी का सम्मान बख्शा और हाथी तथा सिरोपाव इनायत किया। आपने गुरां के टोना मारने से लुंकागच्छ की आम्नाय स्वीकार की। आपके काका पदोजी १६६२ में सीवाणे गढ़ की लड़ाई में बादशाह की फौज द्वारा मारे गये। आपकी बनवाई बावड़ी, वहां अब भी "भूतों का बेरा" के नाम से विद्यमान है।

मेहता बेलाजी के पुत्र जगन्नाथजी संवत् १६९२ में फलोदी के हाकिम थे। इनके पुत्र कल्याणदासजी के सांवलदासजी, गोपालदासजी और माधोदासजी नामक ३ पुत्र हुए।

मेहता सांवलदासजी—आप सीवाणे के हाकिम थे। आपको महाराजा अजितसिंहजी ने सम्वत् १७६९ में गुजरात के धंधूके परगने का मुन्तजिम बनाकर भेजा। ५ वर्ष तक आप वहाँ रहे।

मेहता गोपालदासजी—आप सीवाण, तोड़ा तथा जोधपुर परगने के हाकिम रहे। संवत् १७८१ में आपको २५००) की रेख का एक गांव जागीर में मिला तथा पालकी सिरोपाव इनायत हुआ। आपके गोयनदासजी तथा रामदानजी नामक २ पुत्र हुए। मेहता माधोदासजी भी हुकूमत करते थे।

मेहता रामदानजी—आप दोनों भाइयों ने भी अच्छी इज्जत पाई। रामदानजी सम्पत्तिशाली व्यक्ति हुए। आपको संवत् १८१२ में मेड़ते प्रगणे का सरसंडो नामक गांव जागीर में मिला था। इसी साल २ माह बाद ४०० बीघा जमीन और आपको इनायत हुई। जयपुर महाराज इनसे बड़े प्रसन्न थे। रामदानजी, राजकुमार जालिमसिंहजी के कामदार थे। इनके माईदासजी तथा मोहनदास जी नामक २ पुत्र हुए।

मेहता माईदासजी—आप जोधपुर, जयपुर के जमीन की हिस्सा रसी में सम्मिलित थे। आपको संवत् १८८२ में जयपुर दरबार से "पालड़ी" नामक गांव जागीर में मिला। जोधपुर दरबार ने भी मोहनसिंहजी को निंबोला गांव जागीर में दिया था। माईदासजी ने कुंभलगढ़ की गद्दी खाली कराई। दरबार ने आपको दुशाला सिरोपाव और घोड़ा इनायत किया। आपके पुत्र अगरचन्दजी, मानमलजी तथा किशनदासजी हुए।

मेहता अगरचन्दजी—आप १८६६ में नागोर किले तथा शहर के कोतवाल रहे। संवत् १८९४ में आपको जयपुर स्टेट मे "डोटका" नामक गांव जागीर में मिला। इसी साल मेजर फास्टर साहिब ने आपकी तैनाती में धाड़ेतियों को दबाने के लिये फौज भेजी। मेहता मानमलजी को ५००) सालियाना

रसौद मिलती थी। संवत् १८८२ में पालड़ी नामक गांव इनको जागीरी में मिला। जो इनके पुत्र विशनदासजी के नाम पर रहा।

मेहता अगरचन्दजी के अमोलकचन्दजी तथा वल्लभदासजी नामक पुत्र हुए। अमोलकचन्द जी के पास जयपुर का गांव जागीरी में था। इनके पुत्र जयसिंहदासजी उमरभर हाकिम रहे। इन्होंने बहुत अच्छा काम किया। आपको कर्नल "जेकब" से उत्तम प्रमाण पत्र मिले थे। आपके पुत्र जसराजजी तथा भगवानदासजी हुए। आपने मारोठ की सायर में, तथा जयपुर में जिलेवारी का काम किया था। पश्चात् आप घर का काम देखने लगे थे। आपके समरथराजजी तथा इमरतराजजी नामक २ पुत्र हुए। मेहता समरथराजजी हवाला विभाग से रिटायर्ड होने पर पोकरण ठाकुर के दुनाड़ा डिविजन में कामदार है। आपके पुत्र मेहता उम्मेदराजजी होशियार तथा मिलनसार युवक है। इमरतराजजी जयपुर में रहते हैं।

मेसर्स रायमल मगनमल कोचर मूथा, हिंगनघाट

इस खानदान के लोग स्थानकवासी जैन आम्नाय के मानने वाले सज्जन हैं। आपका मूल निवास स्थान हरसोरा (जोधपुर स्टेट) का है। संवत् १९१६ में पहले सेठ रायमलजी नागपुर आये और यहां पर आकर आपने कपड़ा, लेनदेन इत्यादि की दुकान खोली। सेठ रायमलजी का स्वर्गवास संवत् १९३६ में हुआ।

आपके पश्चात् आपके पुत्र मगनलालजी ने इस फर्म के काम को संचालित किया। आप संवत् १९७१ में स्वर्गवासी हुए। आप की मृत्यु के पश्चात् इस फर्म को आपके पुत्र चन्दनमलजी तथा धनराजजी ने संभाला। श्रीयुत चन्दनमलजी का जन्म संवत् १९१८ में हुआ है। आपने इस फर्म की बहुत उन्नति की। आप बड़े व्यापार कुशल, बुद्धिमान और दूरदर्शी पुरुष हैं। आप ही की वजह से इस समय यह फर्म सी० पी० की बहुत मातबर फर्मों में से एक मानी जाती हैं। हिंगनघाट जिले में इस फर्म की ओर से हजारों एकड़ भूमि में काश्तकारी की जाती है। चन्दनमलजी के मोतीलालजी नामक एक पुत्र हुए मगर आपका असमय में ही देहान्त होगया। आपके यहां पर पुखराजजी लोहावट (जोधपुर स्टेट) से दत्तक लाये गये। आपके भाई धनराजजी का स्वर्गवास संवत् १९८९ की बैशाख वदी ५ को हुआ। आप बड़े धार्मिक और परोपकारी पुरुष थे। आपके हाथों से प्रायः सभी धार्मिक कार्य्यों में सहायता मिलती रहती थी।

श्री पुखराजजी कोचर—आप बड़े देश भक्त. समाज सेवी, उदार एवम् लोकप्रिय युवक हैं। सी० पी० के ओसवाल नवयुवकों में आपका नाम बड़ा अग्रगण्य तथा सम्माननीय है। आप यहां की

म्युनिसिपल बोर्ड में सदस्य हैं। शिक्षा तथा दूसरे सार्वजनिक कार्य्यों में आप भाग लेते रहते हैं। भान्दक नामक स्थान में भद्रावती जैन गुरुकुल नामक जो संस्था खोली गई है उसके पास सभापति हैं। हिंगनघाट के जैन "महावीर मण्डल" के आप सभापति रहे हैं। कांग्रेस के कार्य्यों में भी आप बहुत दिलचस्पी से भाग लेते हैं। आप शुद्ध स्वदेशी वस्त्र धारण करते हैं। इतनी बड़ी फर्म के मालिक होने पर भी आप अत्यन्त निरभिमान और सादगी प्रिय सज्जन हैं। आपका जन्म संवत् १९५८ में हुआ है। आपके इस समय फूलचन्दजी नामक एक पुत्र हैं।

सेठ धनराजजी के नाम पर बंशीलालजी बीकानेर से दत्तक लाये गये हैं। आपका जन्म संवत् १९६५ की श्रावण सुदी १० को हुआ। आप भी बड़े विवेकशील नवयुवक हैं। इस समय आप स्थानीय महावीर मण्डल के सभापति तथा मोतीज्ञान भण्डार के व्यवस्थापक हैं। आप प्रायः सभी सार्वजनिक कामों में भाग लेते रहते है।

सेठ धीरजी चांदमल कोचर का खानदान, सिकन्दराबाद

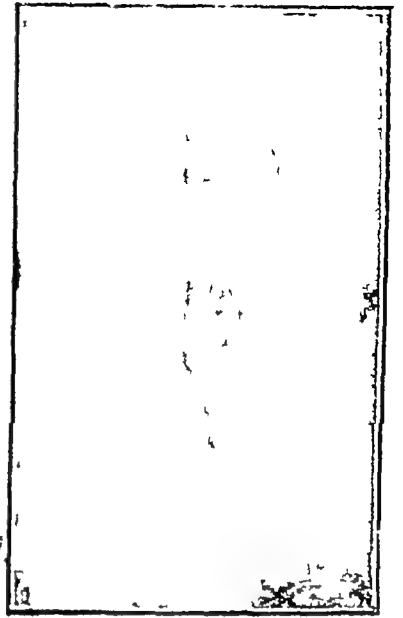
फलौदी के निवासी कोचर मूता (रुपाणी कोचर) शोभाचन्दजी के पुत्र धीरजी सं० १८९८ में फलौदी से हैदराबाद गये तथा वहाँ आपने लेनदेन शुरू किया। इस सिलसिले में आप फौजों के केम्पों के साथ २ काबुल और उस्मानिया तक की मुसाफिरी कर आये थे। आप बहुत बहादुर तथा साहसी पुरुष थे। आपने अपने पुत्र चांदमलजी का सं० १९२९ में सिंकदराबाद में सराफी की दुकान लगाई जिसका कारोबार चांदमलजी भली प्रकार चलाते रहे। श्रीयुत चांदमलजी का संवत् १९४९ में स्वर्गवास हुआ। इनके निःसंतान मरने पर सेठ धीरजमलजी ने चांदमलजी के नाम पर संवत् १९५५ में सूरजमलजी को दत्तक लिया। इस प्रकार श्री सूरजमलजी अपने पितामह के साथ दुकान का कार्य भार सम्हालने लगे। धीरजमलजी का स्वर्गवास संवत् १९५७ में हो गया।

धीरजमलजी के पश्चाप् सेठ सूरजमलजी ने इस दुकान के कारबार तथा इज्जत को बहुत बढ़ाया। आपकी दुकान सिंकदाबाद में (दक्षिण) मार्गेज तथा बैङ्किग का व्यापार करती है तथा वहां के व्यापारिक समाज में अच्छी मातवर मानी जाती है। इसी प्रकार फलौदी में भी आपका घर मातवर समझा जाता है।

सेठ सूरजमलजी ने व्यापार की तरक्की के साथ दान धर्म के कार्यों की ओर भी अच्छा लक्ष्य रक्खा। आपकी ओर से पाँवा पुरीजी में एक धर्मशाला बनवाई गई है। इसी प्रकार कुंडलजी, कुल पाकजी आदि स्थानों में भी आपने कोठरियाँ बनवाई हैं। मद्रास पांजरापोल, शांतिनाथजी का देरासर



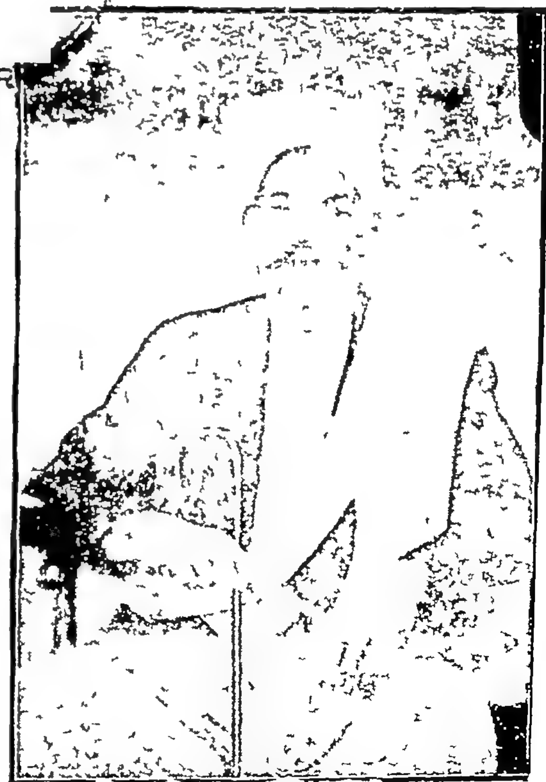
स्व० सेठ भैरूंजी कोचर फलौदी



स्व० सेठ चांदमलजी कोचर फलौदी



सेठ सूरजमलजी कोचर, फलौदी.



बाबू कन्हैयालालजी कोचर (जेठमल कस्तूरचंद) बीकानेर.

फलौदी में एक २००००) बीस हजार रुपये में मकान खरीद कर जैन साधु साध्वियों के ठहराने के लिये सुपुर्द कर दिया है। सेठ सूरजमलजी समझदार तथा धार्मिक व्यक्ति हैं। आपके पुत्र पूनमचन्दजी का जन्म संवत् १९५७ तथा प्रतापचन्दजी का जन्म संवत् १९६९ में हुआ। इनमें प्रतापचन्दजी का स्वर्गवास अभी थोड़े महीने पूर्व हुआ है। आप बड़े होनहार थे। पूनमचन्दजी योग्य हैं तथा अपने कारवार को भली प्रकार चलाते हैं।

सेठ माणकलाल अमरचंद कोचर का खानदान, फलौदी

कोचरजी के पुत्र जीयाजी के वंशज "जीयाजी" कोचर कहलाते हैं। जीयाजी के पश्चात् क्रमशः मेघराजजी, पचानदासजी, मेहकरणदासजी तथा दौलतरामजी हुए।

कोचर दौलतरामजी के पुत्र कुशलचन्दजी और जोरावरमलजी थे इनमें कुशलचन्दजी के पुत्र प्रतापचन्दजी तथा जोरावरमलजी के पुत्र भोलारामजी हुए। कोचर प्रतापचन्दजी के मोतीलालजी विशनचन्दजी तथा रतनलालजी और भोलारामजी के माणकलालजी नामक पुत्र हुए।

कोचर भोलारामजी—आपने अपने भतीजे मोतीलालजी के साथ मुल्तान (सिंध) फलौदी, अहमदपुर (सिंध) तथा हैदराबाद (दक्षिण) में अपनी दुकानें खोलीं, उस समय इन दुकानों पर जोरों का धंधा चलता था। इन दोनों सज्जनों का कारवार संवत् १९१६ के लगभग अलग २ होगया आपने राणीसर तालाब में एक नेस्टा (अधिक पानी खाली करने का रास्ता) बंधवाया।

कोचर मोतीलालजी—आपका जन्म संवत् १९५७ में हुआ। आपने जसवन्तसराय उर्फ मोतीसराय नामक एक सराय फलोदी में बनवाई। १९५४ में बम्बई में दुकान खोली। संवत् १९७३ में इनका शरीरान्त हुआ। इस समय आपके पुत्र मिश्रीलालजी व लक्ष्मीलालजी विद्यमान हैं। लक्ष्मीलालजी के पुत्र बक्तावरमलजी हैं।

कोचर माणकलालजी—आपका जन्म संवत् १९३८ में हुआ। संवत् १९६१ में हैदराबाद (दक्षिण) में दुकान स्थापित की। आपके समय में भावलपुर, मुल्तान, पाली हैदराबाद और फलौदी में कारवार होता था। संवत् १९६२ में आप श्री शांतिनाथजी तथा चिंतामणिजी के मन्दिर के व्यवस्थापक (खजांची) बनाये गये। यह कार्य्य भार आज तक आपके पुत्र, अमरचन्दजी सम्हाल रहे हैं। इन संस्थाओं का कार्य्य आपने अच्छी तरह से किया। आपके द्वारा खोली गई कन्या पाठशाल १३। १४ साल तक काम करती रही। आपका स्वर्गवास संवत् १९७६ में हुआ

कोचर अमरचंदजी—आपका जन्म संवत् १९६८ में हुआ। आप सुशील नवयुवक हैं। तथा शिक्षा की ओर आपकी विशेष अभिरुचि है। इधर ३ सालों से आप फलौदी म्यु० कमेटी के मेम्बर हैं, स्थानीय जैन श्वेताम्बर कन्या पाठशाला का प्रबन्ध आपके जिम्मे है। आपने राणीसर तालाव के पास एक जैन मन्दिर और दादावाड़ी बनवाने के लिये एक विशाल कम्पाउण्ड में चार दीवारी बनवाई है। इस समय आपके यहां "दौलतराम जोरावरवल" के नाम से फलौदी में सराफे का व्यापार तथा "भोलाराम माणकलाल" के नाम से हुसमतगंज-रेसिडेन्सी-हैदराबाद (दक्षिण) में वैङ्किग और मारगेज का व्यवसाय होता है। हैदरावाद तथा फलौदी के व्यापारिक समाज में आपकी फर्म प्रतिष्ठित मानी जाती है।

सेठ मदनचन्द रूपचन्द कोचर का खानदान, हैदराबाद

इस खानदान का मूल निवासस्थान बीकानेर का है। करीब १०० वर्ष पूर्व सेठ मदनचन्दजी पैदल मार्ग द्वारा हैदराबाद आये थे। आप बीकानेर राज्य में कामदार रहे। तदनंतर संवत् १८८४ में आपका नाम साहुकारी लिस्ट में लिखा गया। तभी से आपका व्यापारिक जीवन आरम्भ हुआ। आपके पुत्र बदनमलजी आपकी मौजूदगी में ही स्वर्गवासी हो गये थे। एतदर्थ आपके यहाँ सेठ रूपचन्दजी बीकानेर से दत्तक लाये गये।

सेठ रूपचन्दजी कोचर—आप बड़े लोकप्रिय सज्जन थे। कानून की आपको अच्छी जानकारी थी। कुलपाक तीर्थ के जीर्णोद्धार करने वाले ४ सज्जनों में से एक आप भी थे। आपही के हाथों से हैदराबाद में मेसर्स मदनचन्द रूपचन्द नामक फर्म की नीव पड़ी थी। आपने अपनी फर्म के व्यवसाय को खूब चमकाया। आप संवत् १९६६ में स्वर्गवासी हुए। आपके नाम पर आपके भतीजे श्री मेघराजजी कोचर संवत् १९६६ में गोद लिये गये।

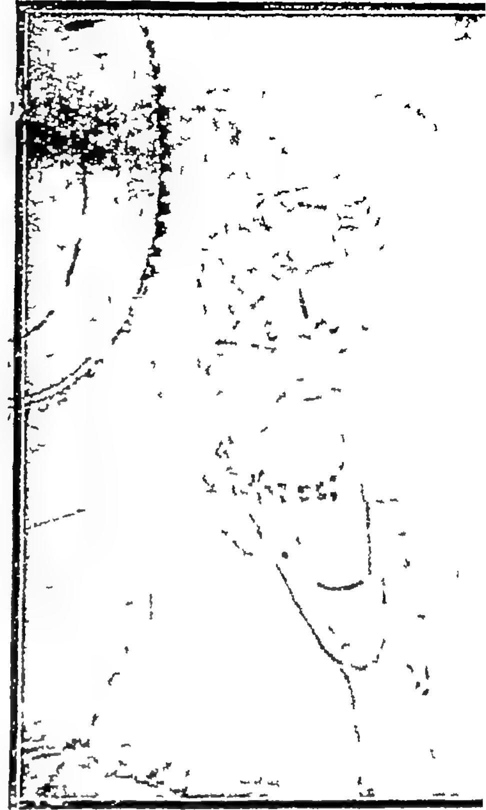
मेघराजजी कोचर—आप ही वर्तमान में इस फर्म के मालिक हैं। आप शिक्षित एवम् उन्नत विचारों के सज्जन हैं। आप मारवाड़ी मण्डल के अध्यक्ष हैं तथा हैदराबाद की मारवाड़ी समाज के नवयुवकों द्वारा होने वाले कार्यों में आप सहयोग देते रहते हैं। आप श्वेताम्बर जैन समाज के मंदिर आम्नाय को मानने वाले सज्जन हैं। आपकी फर्म हैदराबाद रेसीडेन्सी में बैंकिंग तथा जवाहरात का व्यवसाय करती है।

सेठ मगनमल पूनमचन्द कानूगा, फलौदी

इस परिवार का मूल निवासस्थान फलौदी (मारवाड़) का है। आप जैन श्वेताम्बर समाज के मन्दिर आम्नाय को मानने वाले सज्जन हैं। जोधपुर रियासत की ओर से आपको 'कानूगो' की पदवी मिली है।



स्व० सेठ रूपचंदजी कोचर (मदनचंद रूपचंद) हैदराबाद.



सेठ मेघराजजी कोचर (मदनचंद रूपचंद) हैदरा



सेठ बिशनलालजी कानूगो (मगनमल पूनमचन्द)
टिंडीवरम् (मद्रास)



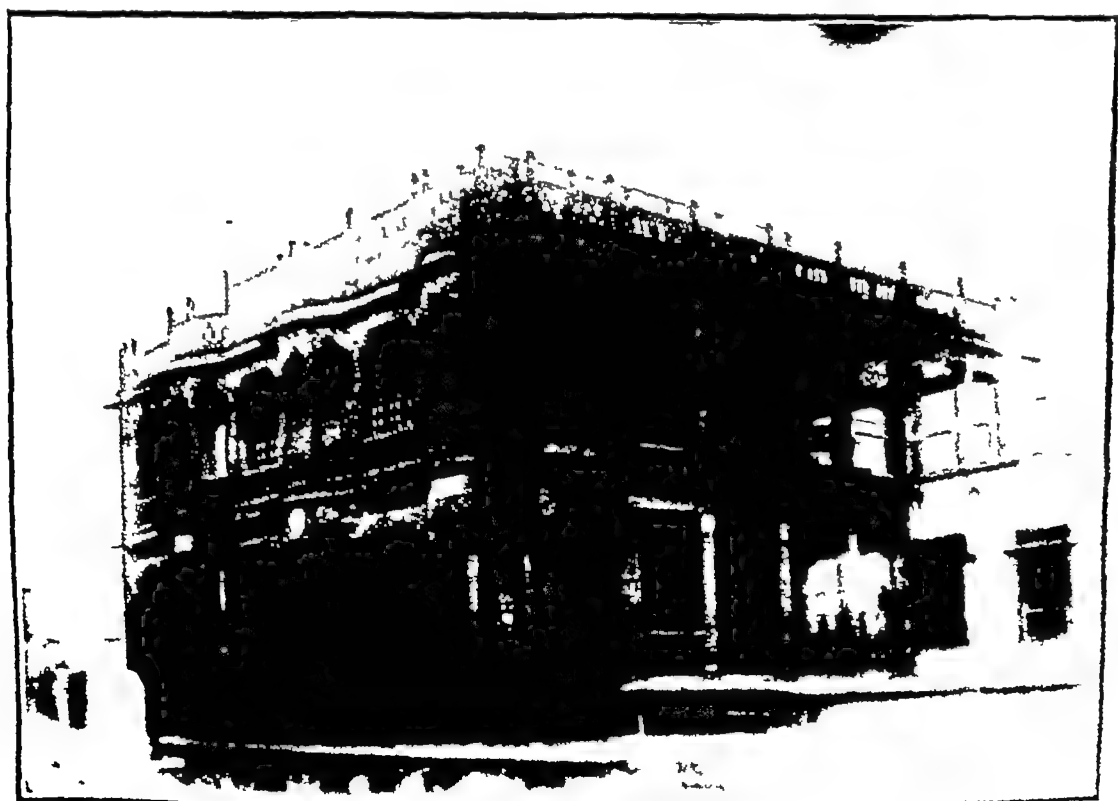
सेठ [illegible]
[illegible]



श्री पुखराजजी कोचर, हिंगनघाट.



श्री अमरचंदजी कोचर (भोलाराम माणिकलाल) फलोदी.



अमर-भवन फलौदी.

इस परिवार में सेठ माणिकचन्दजी हुए। आपके दो पुत्र हुए जिनके नाम छोगामलजी और हजारीमलजी थे। सेठ हजारीमलजी साहसी तथा होशियार पुरुष थे। आप देश से संवत् १९३० में व्यापार के निमित्त हैदराबाद आये। यहाँ पर आपने बहुत रुपया कमाया। आपका स्वर्गवास १९३८ में हुआ। आपके मगनमलजी नामक एक पुत्र हुए।

सेठ मगनमलजी—आपका जन्म संवत् १९११ में हुआ था। आपने मेसर्स धीरजी चांदमल के यहाँ सिकन्दराबाद में सर्विस की। आप संवत् १९६३ में स्वर्गवासी हुए। आपके पूनमचन्दजी, समरथमलजी, उदैराजजी, विशनलालजी, सोहनराजजी, जेठमलजी और गजराजजी नामक ७ पुत्र हुए। जिनमें सोहनराजजी तथा जेठमलजी का अल्पायु में स्वर्गवास हो गया। सोहनराजजी के नाम पर गजराजजी दत्तक गये हैं।

सेठ पूनमचन्दजी—आप सेठ खुशालचन्दजी गोलेछा के यहाँ मुनीम थे। उनके यहाँ २० साल नौकरी करने के बाद संवत् १९६६ में मगनमल पूनमचन्द के नाम से टिंडिवरम् में एक फर्म स्थापित की इसके बाद सेठ खुशालचन्दजी के साझे में टिंडिवरम् तथा पनरोटी में फर्में स्थापित कीं। ये करीब १५ वर्षों तक बराबर साझे में चलती रही। इसके बाद आपने टिण्डिवरम्, पनरोटी, और मायावरम् में अपनी घरू दुकानें खोलीं। पूनमचन्दजी बड़े धार्मिक और परोपकारी पुरुष थे। जीवदया के लिये पर्यूषण पर्व में आप प्रति वर्ष सैकड़ों रुपया खर्च करते थे। आपने फलौदी में दो स्वामिवत्सल और एक उजवणा बड़े ठाट बाट से किया जिसमें करीब १५०००) खर्च हुए होंगे। आपका स्वर्गवास संवत् १९८९ की माह बदी २ को एकाएक हो गया।

समरथलालजी का जन्म संवत् १९३४ में हुआ। आपने मद्रास में संवत् १९५० में मेसर्स मगनमल पूनमचन्द के नाम से फर्म स्थापित की। आपके दो पुत्र हुए जिनके नाम चम्पालालजी तथा विजैलालजी हैं। चम्पालालजी का जन्म संवत १९६६ का तथा विजैलालजी का सम्वत् १९६९ का है। इनमें से चम्पालालजी पूनमचन्दजी के यहाँ पर दत्तक गये हैं। उदैराजजी का जन्म सम्वत् १९३९ का है। शुरू २ में आपने श्री सेठ खुशालचन्दजी के यहाँ सर्विस की। दुकान करने के बाद आपने भी सर्विस छोड़ दी। आपके दो पुत्र हैं जिनके नाम लालचन्दजी और केशरीलालजी हैं। लालचन्दजी का जन्म सम्वत् १९६६ का तथा केशरीलालजी का संवत् १९७२ का है।

विशनराजजी का जन्म सम्वत् १९४४ का है। आप भी अपने भाइयों के साथ व्यापार करते हैं। आपके तीन पुत्र हैं जिनके नाम गुलाबचन्दजी, मंगलचन्दजी तथा उम्मैदमलजी हैं। इनमें से

गुलाबचन्दजी सम्वत् १९७८ में १५ वर्ष की उम्र में ही स्वर्गवासी हुए। इस समय आपके पुत्र मंगलचन्दजी हैं। इनका जन्म सम्वत् १९७७ का है।

गजराजजी का जन्म सम्वत् १९५७ का है। आप भी बड़े योग्य सज्जन हैं। आपके एक पुत्र हैं जिनका नाम जालिमचन्दजी है। इनका सम्वत १९८२ का जन्म है। यह परिवार पनरोटी, फलौदी आदि स्थानों में अच्छा प्रतिष्ठित माना जाता है।

मेहता राजमल रोशनलाल कोचर का खानदान, कलकत्ता

इस खानदान के पूर्वज बहुत समय से ही बीकानेर में रहते आ रहे हैं। आप लोगों ने बीकानेर स्टेट की समय २ पर सेवाएँ की हैं। इस खानदान में मेहता जेठमलजी कोचर हुए। आपके मानमलजी नामक एक पुत्र हुए। आपने भादरा तथा सुजानगढ़ की हुकूमात की व डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट भी रहे। राज्य में आपका सम्मान था। आपका सम्वत १९७२ में स्वर्गवास हो गया। आपके लूणकरनजी, हीरालालजी, हजारीमलजी तथा मंगलचन्दजी नामक चार पुत्र हुए।

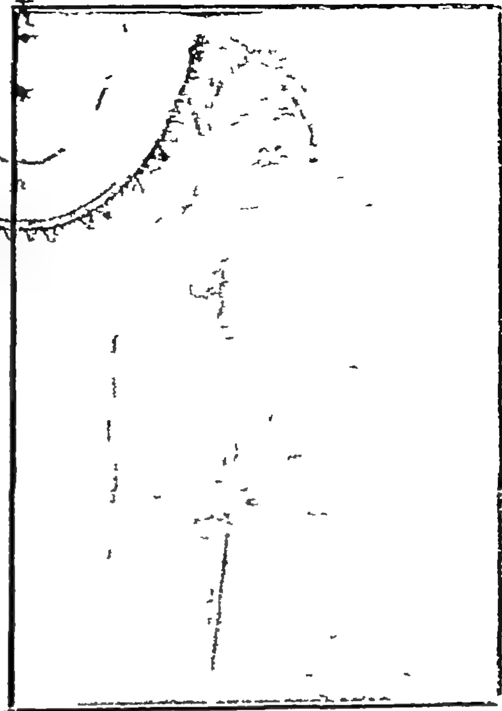
मेहता लूणकरनजी का परिवार—मेहता लूणकरनजी कानून के अच्छे जानकार तथा कार्यकुशल सज्जन थे। आप बीकानेर राज्य में नायब तहसीलदार, नाजिम आदि पदों पर सं० १९८७ तक काम करते रहे। तदनंतर स्टेट से पेंशन प्राप्त कर आप बीकानेर में धार्मिक जीवन बिता रहे हैं। आपके राजमलजी, जीवनमलजी, सुन्दरमलजी, रोशनलालजी एवं मोहनलालजी नामक पाँच पुत्र विद्यमान हैं। मेहता राजमलजी बड़े व्यापार कुशल व्यक्ति हैं आपने पहले पहल कृपाचंद उत्तमचंद के साझे में कलकत्ते में एक फर्म स्थापित की थी। बाद में सन् १९३० से नं० १६ क्रास स्ट्रीट कलकत्ता में अपनी एक स्वतन्त्र फर्म स्थापित की जिसपर जापान, विलायत आदि देशों से कपड़ा इम्पोर्ट होता है। आपकी फर्म पर देशी मीलों के कपड़े का भी कारबार होता है। जीवनमलजी ने कलकत्ता यूनीवर्सिटी से बी० कॉम प्रथम दर्जे में व सारी युनिवर्सिटी में द्वितीय नम्बर से पास किया। इस समय आप बी० एल० में पढ़ रहे हैं। आप बड़े सुधरे हुए विचारों के सज्जन हैं। सुन्दरलालजी मेट्रिक में तथा रोशनलालजी व मोहनलालजी भी पढ़ते हैं।

मेहता लूणकरनजी के भाई मेहता हीरालालजी तथा मंगलचंदजी बीकानेर स्टेट में सर्विस करते तथा हजारीमलजी कलकत्ते में व्यवसाय करते हैं।

श्री माणिकलालजी कोचर बी० ए० एल०एल० बी०, नरसिंहपुर

इस परिवार के पूर्वज कोचर ताराचन्दजी फलौदी में रहते थे। वहाँ से इनके पौत्र रावतमलजी तथा जेठमलजी सं० १८६३ में मुंजासर गये। मुंजासर से सेठ जेठमलजी के पुत्र इन्द्रचन्दजी, बाघमलजी





सेठ मगनमलजी कानूगो (मगनमल पूनमचन्द), टिडीवरम्. सेठ पूनमचन्दजी कानूगो (मगनमल पूनमचन्द) टिडीवरम्.



सेठ समरथमलजी कानूगो (मगनमल पूनमचन्द) टिडीवरम् (मद्रास).



सेठ [illegible] कानूगो ([illegible]) टिडीवरम् ([illegible])

तथा छजूमलजी कोचर नरसिंहगढ़ व्यापार के लिये आये। सं० १९०५ में रावतमलजी के पुत्र शिवजीरामजी भी यहाँ आये। रावतमलजी के सबसे छोटे पुत्र अमोलकचन्दजी थे। इनके पुत्र छोगमलजी का जन्म १९२५ में हुआ। आपके यहाँ मालगुजारी तथा दुकानदारी का काम होता है। इनके पुत्र सुगनराजजी तथा गोकुलचन्दजी हैं। इनमें गोकुलचन्दजी अपने काका तखतमलजी के नाम पर दत्तक गये हैं।

माणिकलालजी कोचर बी० ए० एल० एल० बी०—आपके पितामह कोचर इन्द्रसिंहजी तथा पिता नाहरमलजी नरसिंहगढ़ मे व्यापार करते थे। नाहरमलजी का स्वर्गवास सं० १९८३ में हुआ। आपके करणीदानजी, पेमराजजी, माणिकलालजी तथा हेमराजजी नामक ४ पुत्र हुए। इनमें कोचर माणिकलालजी का जन्म सं० १९३८ में हुआ। सन् १९०३ में आपने बी० ए० पास की। इसके पश्चात् आप जबलपुर, नरसिंहपुर और होशंगाबाद के हाई स्कूलों मे अध्यापक रहे। सन् १९०९ में आपने एल०एल० बी० की डिगरी हासिल की। तथा तबसे आप नरसिंहगढ़ में वकालात करते हैं।

कोचर माणकलालजी सी० पी० के प्रतिष्ठित सज्जन हैं। आप ओसवाल सम्मेलन मालेगांव, यंगमेंस ओसवाल एसोसिएसन जोधपुर तथा सी० पी० प्रान्तीय ओसवाल सम्मेलन यवतमाल के सभापति रहे थे। १९२०-२१ के असहयोग आन्दोलन के समय आपने अपनी प्रेक्टिस से इस्तीफा दे दिया था। आप कॉंग्रेस के सेक्रेटरी तथा म्युनिसिपल प्रेसिडेंट रह चुके हैं। वर्तमान में आप डिस्ट्रिक्ट कौंसिल के मेम्बर लोकल कोआपरेटिव बैंक के प्रेसिडेण्ट, पी० डबल्यू० डी० स्कूल बोर्ड के प्रेसिडेण्ट, सी०पी० बरार प्राविंशियल बैंक नागपुर के डायरेक्टर, और उसके मेनेजिंग बोर्ड के मेम्बर हैं। इसी तरह आप नर्दन इन्सटिट्यूट के भी चेयरमैन रहे हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि आप सी० पी० के नामांकित सज्जन हैं। आपके पुत्र विजयसिंहजी १६ साल के हैं। तथा नरसिंहपुर हाई स्कूल में पढ़ते हैं।

सेठ मूलचन्द घीसूलाल कोचर का खानदान, बेलगांव (महाराष्ट्र)

यह परिवार मूल निवासी सोजत का है। वहाँ से सेठ मगनीरामजी के पुत्र मूलचन्दजी, हेमराजजी तथा मुलतानचन्द्रजी सवत् १९३०।३२ में बेलगाँव आये। तथा मूलचन्द हेमराज के नाम से व्यापार आरम्भ किया। इन तीनों भाइयों ने इस दुकान के व्यापार तथा सम्मान को बढ़ाया। संवत् १९४७ में सेठ हेमराजजी का तथा संवत् १९५२ में शेष दोनों भाइयों का कारबार अलग-अलग हो गया।

सेठ मूलचन्दजी का परिवार—कोचर मेहता मूलचन्दजी दुकान की उन्नति मे भाग लेते हुए संवत् १९५९ में स्वर्गवासी हुए। इस समय दुकान के मालिक आपके पुत्र घीसूलालजी हैं। घीसूलालजी

का जन्म सम्वत् १९४२ में हुआ। आपके यहाँ बेलगाँव (महाराष्ट्र) में मूलचंद घीसूलाल के नाम से कपड़े का थोक व्यापार होता है। यह दुकान ओसवाल पोरवाल समाज की मुकादम है। घीसूलालजी का धरम ध्यान में अच्छा मन है। इनके बड़े पुत्र जीवराजजी व्यापारिक काम देखते हैं। तथा इनसे छोटे उगमराजजी और विशनराजजी हैं।

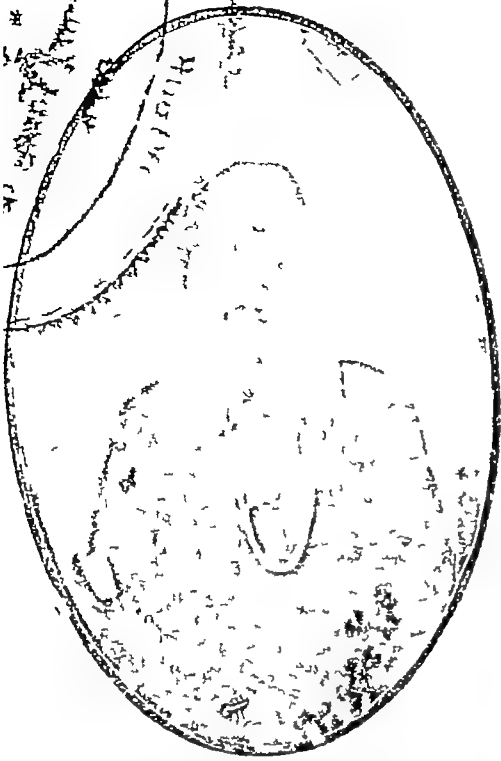
सेठ हेमराजजी का परिवार—सेठ हेमराजजी का स्वर्गवास संवत् १९६९ में हुआ। इनके पुत्र पनराजजी का जन्म १९४० में हुआ। आपके यहाँ बेलगाँव में कपड़े का व्यापार हेमराज पनराज के नाम से होता है। इनके पुत्र सोहनराजजी तथा दौलतराजजी हैं।

सेठ मुलतानमलजी का परिवार—आपका स्वर्गवास संवत् १९६९ में हुआ। आपके पुत्र हरकमलजी का जन्म १९४५ में हुआ। आपकी दुकान बेलगाँव तथा सोजत में अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है। आपने बेनियन एण्ड कं० की कपड़े की एजेन्सी हुबली में ली है। आपके पुत्र लालचन्दजी १७ साल के हैं। तथा दुकान के काम काज में भाग लेते हैं। इनसे छोटे सूरजमलजी तथा चुन्नीलालजी हैं। इस दुकान की शाखायें हुबली तथा सोजत में हैं।

सेठ मूलचन्द घीसूलाल दुकान के १५ सालों से मुनीम सिंघवी मोतीलालजी (मूलचंदोत) सोजत निवासी हैं। आपका खानदान भी सोजत में नामांकित माना जाता है। सेठ हरकमलजी की दुकान के भागीदार घीसालालजी सियाटिया सोजत निवासी हैं। आपके पिताजी संवत् १९५३ से यहाँ काम करते थे।

सेठ सुजानमल चांदमल कोचर, त्रिचनापल्ली

यह परिवार फलोधी का निवासी है। सेठ बेनचंदजी कोचर फलोधी में रहते थे। इनके पुत्र रामचंदजी थे। हरिचन्दजी के पुत्र सुजानमलजी देश से व्यापार के निमित्त बंगलोर आये। तथा आईदान रामचंद के यहाँ मुनीमात करते रहे। इसके पश्चात् आप पल्टन के साथ त्रिचनापल्ली आये। उस समय सेठ आनंदरामजी पारख, रावतमलजी के यहाँ थे। इन दोनों सज्जनों ने मिलकर पल्टन के साथ तथा सर्व साधारण के साथ देनलेन का धंधा शुरू किया। आप 'रेजिमेंटल बैंकर्स' के नाम से बोले जाते थे। आप दोनों सज्जनों ने व्यापार में सम्पत्ति उपार्जित कर त्रिचनापल्ली में अपनी उत्तम प्रतिष्ठा स्थापित की। कई अंग्रेज आफीसरों से आपका अच्छा मेल था। संवत् १९७४ में सेठ सुजानमलजी कोचर स्वर्गवासी हुए। तथा संवत् १९८० में आपका व्यापार सेठ आनंदरामजी पारख से अलग हुआ। आपके चांदमलजी तथा अमरचंदजी नामक २ पुत्र हैं। चांदमलजी का जन्म सन् १९०६ में तथा अमरचन्दजी का १९१६ में हुआ।



मेहता लूनकरणजी कोचर, बीकानेर



कुंवर राजमलजी कोचर, बीकानेर



कुँवर जीवनमलजी कोचर, बीकानेर.



सेठ कस्तूरचंदजी कोचर (जेठमल कस्तूरचंद) बीकानेर.

कोचर मेहता चाँदमलजी फलोधी म्युनिसिपैलेटी के मेम्बर हैं। तथा शिक्षित व समझदार सज्जन हैं। त्रिचनापल्ली पांजरापोल को आपने २१००) दान दिये हैं। इसी तरह जीवदया प्रचारक संस्था में भी सहायता देते रहते हैं। फलोधी तथा त्रिचनापल्ली में आपकी अच्छी प्रतिष्ठा है। आपके यहाँ व्याज का व्यापार होता है।

सेठ जेठमल कस्तूरचन्द कोचर का खानदान, बीकानेर।

इस खानदान का मूल निवास स्थान बीकानेर का है। आप लोग श्री जैन श्वेताम्बर मन्दिर मार्गीय सज्जन हैं। इस खानदान के पूर्व पुरुष सेठ जेठमलजी का सं० १९३३ में स्वर्गवास हो गया। आपके कस्तूरचन्दजी नामक एक पुत्र हुए।

सेठ कस्तूरचंदजी का जन्म सं० १९३१ का है। आप पहले पहल सं० १९४५ में कलकत्ता आये और यहाँ पर आपने दलाली की। आप साहसी, होशियार, कठिन परिश्रमी तथा सीदे सादे पुरुष हैं। आपने संवत् १९४८ में जेठमल कस्तूरचन्द के नाम से ३९ क्लाइव स्ट्रीट में अपनी फर्म स्थापित की, जो आज तक चल रही और जिसका काम आप ही योग्यतापूर्वक सम्हाल रहे हैं। आपके कन्हैयालालजी नामक एक पुत्र हैं। आपका जन्म सं० १९५६ का है। आप भी इस समय फर्म के काम में सहयोग लेते हैं। आप मिलनसार नवयुवक हैं।

सेठ शिवचन्दजी रोशनलालजी कोचर का खानदान, बीकानेर।

इस खानदान के लोग श्वेताम्बर जैन मन्दिर आम्नाय को मानने वाले हैं। इस खानदान का मूल निवास स्थान बीकानेर का है। अमृतसर में इस दुकान को स्थापित हुए करीब पचास वर्ष हो गये। इस खानदान में सेठ करणीदानजी हुए। करणीदानजी के पुत्र बिरदीचन्दजी और विरदीचन्दजी के पुत्र श्रीचन्दजी हुए। श्रीचन्दजी का जन्म संवत् १८९८ में हुआ। आपके सेठ शिवचन्दजी, छगनमलजी और सोहनलालजी नामक तीन पुत्र हुए,।

सेठ शिवचन्दजी का जन्म सम्वत् १९१७ में हुआ। आप बड़े व्यापार कुशल और बुद्धिमान व्यक्ति थे। आपने ही अपने हाथों से अमृतसर में अपनी दुकान कायम की। आपका स्वर्गवास सम्वत् १९७४ में हुआ। आपके तीन पुत्र हुए। रोशनलालजी, बृजलालजी और सुन्दरलालजी। इनमें लाला रोशनलालजी का जन्म सम्वत् १९५१ में हुआ। आपके दो पुत्र हैं अनन्तलालजी और अभयकुमारजी। ला० रोशनलालजी ही इस समय अपनी दुकान संचालन करते हैं। बृजलालजी का जन्म सम्वत् १९६४ में हुआ। आप भी

दुकान का कारोबार करते हैं। सुन्दरलालजी का जन्म सम्वत् १९६६ में हुआ। आप भी दुकान का कारोबार करते हैं। इस दुकान पर पश्मीने और आढ़त का काम करते हैं। तार का पता "बीकानेरी" है।

सेठ पदमचन्द सम्पतलाल कोचर, फलौदी

इस परिवार के पूर्वजों का मूल निवासस्थान फलौदी (मारवाड़) का है। आप श्री जैन श्वेताम्बर मंदिर आम्नाय को मानने वाले सज्जन हैं। इस कुटुम्ब में सब से प्रथम सेठ जीवणचन्दजी हुए। सेठ जीवनचन्दजी के पश्चात् क्रमशः उत्तमचन्दजी, मलूकचन्दजी," मायाचन्दजी, सिरदारमलजी तथा कुन्दनमलजी नामक पुत्र हुए। सेठ कुन्दनमलजी के सेठ पदमचंदजी नामक पुत्र हुए।

सेठ परमचन्दजी का जन्म संवत् १९३३ में हुआ। आप बड़े व्यापार कुशल, बड़े ईमानदार धार्मिक तथा समझदार सज्जन हैं। शुरू २ में कई वर्षों तक आप बरार में रहे। पश्चात् संवत् १९६० में अहमदाबाद में मेसर्स सरदारमल पाबूदान गोलेछा फलोदी वालों के पार्टनर शिप में कपड़े की कमीशन एजन्सी का काम प्रारम्भ किया। अहमदाबाद में आपकी दुकान प्रतिष्ठित मानी जाती है। आप उदार धार्मिक और सदाचारी सज्जन हैं। जो ओसवाल भाई अहमदाबाद आते हैं। उनकी अच्छी खातिर करते हैं। और आपने हजारों रुपये धार्मिक कामों में खर्च किये हैं तथा तीर्थयात्रा प्रायः हर साल किया करते हैं। आपकी दुकान की अहमदाबाद के मिल आदि व्यापारिक क्षेत्रों में—अच्छी ख्याति है। आपके सम्पतलालजी नामक एक पुत्र हैं। आप व्यापारिक कार्यों में बहुत होशियार हैं। इनके भी तीन पुत्र हैं।

सेठ उदयचन्द गुलाबचंद-कोचर का परिवार, कटंगी

इस खानदान का मूल निवसस्थान नागौर (मारवाड़) है। इस परिवार में कोचर उदयचंदजी हुए। आप देश से व्यापार के निमित्त कटंगी गये और वहाँ पर कपड़ा सोना, चांदी, आदि का व्यवसाय शुरू किया। आपका सं० १९७४ में स्वर्गवास हुआ। आपके गुलाबचंदजी, नेमीचन्दजी व भभूतमलजी नामक तीन पुत्र हुए। इनमें गुलाबचन्दजी सं० १९८४ में तथा भभूतमलजी सं० १९७४ में गुजरे।

वर्तमान में इस खानदान में नेमीचंदजी व गुलाबचंदजी के पुत्र फूलचंदजी, लूनकरणजी तथा खुशालचंदजी विद्यमान हैं। आपकी कटंगी व बालाघाट की फर्मों पर कपड़ा व साहुकारी का काम होता है। बालाघाट की दुकान पर फूलचंदजी काम देखते हैं।

सेठ गुलराजजी फौजराजजी कानूगा का खानदान, फलौदी

इस कुटुम्ब का मूल निवास स्थान फलौदी (मारवाड़) है। इस परिवार में सेठ सूरजमलजी हुए। आपके अनराजजी, गुलराजजी, सलहराजजी तथा फौजराजजी नामक चार पुत्र हुए। इनमें अन-



स्वर्गीय सेठ रेखचन्दजी, भावक.



स्वर्गीय सेठ मगनमलजी, भावक.



सेठ मगलचन्दजी भावक, मद्रास.



कुंवर शिवचन्दजी भावक, मद्रास

राजजी, गुलराजजी तथा फौजराजजी सम्वत् १९४० में मद्रास आये और यहाँ पर सराफी का धन्धा चालू किया। सेठ अनराजजी का सं० १९६७ में तथा सेठ सलहराजजी का संवत् १९८३ में स्वर्गवास हुआ। सलहराजजी फलोदी में कानूगो का काम करते थे। वर्तमान में इस खानदान में सेठ गुलराजजी, फौजराजजी तथा गुलराजजी के पुत्र सम्पतलालजी व राणूलालजी और अनराजजी के पुत्र कंवरलालजी मौजूद हैं। आपके यहाँ पर मद्रास में चाँदी, सोना व ब्याज का काम होता है। यह परिवार लगभग २०० वर्षों से कानूगी का कार्य करता आ रहा है। फलौदी के कानूगो खानदानों को समय समय पर कई लागें मिलती रही हैं।

झावक

झावक गौत्र की उत्पत्ति—ऐसा कहा जाता है कि राठौड़ वंशीय राव चूँड़ाजी के वंश में राजा झुम्बद, झाबुआ (मालवा) में राज्य करते थे। संवत् १५७५ में खरतर गच्छा चार्य्य श्री जिनभद्र सूरि के उपदेश से इन्होंने जैनधर्म और ओसवंश को अङ्गीकार किया। इन्हीं के वंशज आगे चल कर झावक, झामड़, और झुँबक कहलाये।

झावक फूलचन्दजी का खानदान, फलौदी।

उपरोक्त झावक वंश में सेठ जबरसिंहजी हुए जो पहले जैसलमेर में रहते थे और पश्चात् आप फलौदी में आकर बस गये। इनके पौत्र धरमचन्दजी हुए। धरमचन्दजी के पुत्र जीवराजजी और मानमलजी बड़े नामाङ्कित पुरुष हुए। आप फलौदी की ओसवाल जाति में सर्व प्रथम चौधरी हुए। इन्हीं के नाम से आज भी यह खानदान "जिया माना का परिवार" के नाम से प्रसिद्ध है। धर्मचन्दजी के तीसरे पुत्र अखैचन्दजी के परिवार वाले मड़िया झावक कहलाते हैं। झावक जीवराजजी के पश्चात् क्रमशः भासकरणजी और भागचन्दजी हुए। भागचन्दजी के पुत्र अचलदासजी हुए।

अचलदासजी झावक—आप इस खानदान में अच्छे प्रतापी हुए। आपने जाति सेवा में बहुत अच्छा भाग लिया था। दरबार ने आपको कई सनदें इनायत की थीं। पर वानों से मालूम होता है, कि आप १७५० से १७८७ तक विद्यमान थे। आपके अबीरचन्दजी और गुलाबचन्दजी नामक दो पुत्र हुए। अबीरचन्दजी भी फलौदी के ओसवाल और माहेश्वरी समाज में प्रधान व्यक्ति थे। आपके उदयचन्दजी नामक एक पुत्र और साहू कुँवर नामक एक पुत्री हुई। साहुकुँवर सुप्रसिद्ध ड्ढा तिलोकसीजी की पत्नी, तथा पदमसीजी, धरमसीजी, अमरसीजी, टीकमसीजी आदि की माता थीं। झावक उदयचन्दजी के कपूरचन्दजी, और रायसिंहजी नामक दो पुत्र हुए। इनमें से कपूचन्दजी के वंश में झावक मंगलचन्दजी हैं जिनका परिचय आगे दिया जा रहा है। तथा रायसिंहजी के परिवार में झावक फूलचन्दजी एवं नेमीचन्दजी हैं।

झावक रायसिंहजी—आप अपने समय के अच्छे समझदार, पतिभाशाली और प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। इन्हें जोधपुर दरबार से निम्नलिखित एक परवाना प्राप्त हुआ था।

"अपरञ्च उठारा ओसवालां री चौधर झावकां री है सो झावक जिया माना रा परवार रा सदा माफक किया जावे है तिणरो परवाणो सम्वत् १७३६ रा साल रो इणा कने हाजर है। सो इणोरी सदामंदरी मरजाद में कोइ उजर खोट कोर जिण कने रु० २७००) श्री

दरवार में मेरे सु हमें ई दुर्णारी चौधर है ने मरजाद है जिण माफक राखियो कीजो ने कोई ठजर खोट कर मरजाद मेटे तो आगे परवानो हुआ जीण मुजव कीजो श्री हुजूर रो हुकुम छै दूजा मादव सुदी १२ संवत १८८...

मेघराजजी भावक—रायसिंहजी के पुत्र मेघराजजी का जन्म संवत् १८८० में हुआ। आप सम्वत् १९०७ में बीकानेर में डड्ढा अमरसीजी की फर्म के चीफ एजेण्ट नियुक्त हुए। कहना न होगा कि ढड्ढा खानदान इनका रिश्तेदार था और अमरसीजी इनके दादा उदयचन्दजी के भानजे थे। भावक मेघराजजी के साथ सेठ अमरसी सुजानमल के मालिकों का व्यवहार बड़ा प्रेमपूर्ण और प्रतिष्ठित था। भावक मेघराजजी सम्वत् १९१७ में इस खानदान की हैदराबाद वाली दुकान पर गये और अपने बड़े भाई भावक केशरीचन्दजी के मातहती में रहकर सब कारोबार करते रहे। आप साहुकारी लाइन में होशियार एवं अनुभवी पुरुष थे। फलोदी की जनता में आप आदरणीय व्यक्ति माने जाते थे सं० १९२५ में आपका देहान्त हो गया। आपके बाघमलजी, बदनमलजी, नथमलजी और सुगनमलजी नामक चार पुत्र हुए। सं० १९१८ से ६५ तक इनकी एक दुकान "मेघराज बाघमल" के नाम से हैदराबाद में व्यापार करती रही।

भावक बाघमलजी—आपका जन्म संवत् १९०९ मे हुआ। आप समझदार एवं अमीराना तबियत के पुरुष थे। संवत् १९४१ में आपका स्वर्ग वास हुआ। आपकी धर्मपत्नी ने आपके बाद जीवन भर प्रत्येक मास में ८ उपवास किये। और लगातार ३१, २५ दिनों तक भी कई उपवास किये। आपके कोई संतान नहीं थी। अतः आपने अपने यहाँ पर पर भावक नथमलजी के बड़े पुत्र बच्छराजजी को दत्तक लिया।

भावक बच्छराजजी—आपका जन्म १९३२ में एवं संवत् १९६८ में समाधि मरण हुआ। आपकी मद्रास में घर दुकान होते हुए भी सेठ चांदमलजी डड्ढा के आग्रह से उनकी हैदराबाद दुकान के आप १० साल तक चीफ एजंट रहे। आप बुद्धिमान् एवं कार्य्य कुशल व्यक्ति थे। आपके पुत्र नेमीचन्दजी भावक का जन्म संवत् १९५२ मे हुआ।

भावक नेमीचन्दजी—आप बड़े प्रभावशाली जाति सुधारक और सज्जन व्यक्ति हैं। सम्वत् १९८० से ८२ तक फलोदी की जाति में जो सुधार हुए उनमें आपका प्रधान हाथ था। मद्रास के चायना बाजार में आपकी ज्वेलरी और रडीमेड सिल्वर की बड़ी प्रतिष्ठित और प्रमाणिक दुकान है। आपके पुत्र वजीरचन्दजी बड़े होनहार हैं। ये अभी बालक हैं। सेठ फूलचन्दजी भावक के कोई संतान नहीं है, अतः उन्होंने अपने भतीजे सेठ नेमीचन्दजी एवं उनके पुत्र वजीरचन्दजी को अपनी सम्पत्ति का मालिक कायम किया है। श्रीयुत फूलचन्दजी भावक अच्छे प्रभावशाली व्यक्ति हैं। जैन समाज के बड़े २ आचार्यों एवं धनिकों मे आपका बहुत परिचय है। आपके यहाँ एक मूल्यवान पुस्तकालय है। जिनमें लगभग ८०० ग्रन्थ हैं। इनमें कल्पसूत्र नामक ग्रन्थ ताड़ पत्र पर लिखा है और वह सम्वत् १४०० के लगभग का है। इसके अलावा ओरट चायना का भी आपके पास संग्रह है। आपके सुप्रयत्न से फलोदी में एक कन्या पाठशाला स्थापित हुई। इसी तरह हैदराबाद की जीवदया समिति में भी आपने प्रधान भाग लिया था। आप १९८५ तक हैदराबाद में मुख्त्यार की हैसियत से सेठ "अमरसी सुजानमल" फर्म पर काम करते रहे। बाद दो सालों तक सेठ चांदमलजी की सेवा में रहे। आपका विस्तृत परिचय नीचे दिया गया है।



श्री फूलचन्दजी झाबक, फलौदी



श्री नेमीचन्दजी झाबक, मद्रास.





कुं० वजीरचन्द S/o नेमीचंदजी झाबक, मद्रास.



बदनमलजी—बदनमलजी का जन्म १९११ में और मृत्यु १९५९ में हुई। इनके लक्ष्मीलालजी लूणकरणजी और मानमलजी नामक तीन पुत्र हुए। इनमें लक्ष्मीलालजी का स्वर्गवास हो चुका है।

नथमलजी—आपका जन्म सम्वत् १९१५ में तथा मृत्यु सं० १९४४ में हुई। आप बड़े धर्मात्मा थे आपका देहान्त समाधि मरण से हुआ। इनके बच्छराजजी और फूलचन्दजी नामक दो पुत्र हुए, इनमें से बच्छराजजी, बाघमलजी के दत्तक चले गये। आपकी माता बड़ी धर्मात्मा थीं इन्होंने संवत् १९४४ से १९८२ तक लगातार इकांतरे उपवास किये थे। तथा ३७ वर्ष तक दूध और शक्कर का भी त्याग किया था। आपने श्री शीतलनाथजी के मन्दिर में श्री पार्श्वनाथ स्वामी की एक प्रतिमा स्थापित करवाई थी। इसी प्रकार श्री नेमीचन्दजी की माता ने भी उक्त देरासर में एक महावीर स्वामी की स्वर्ण प्रतिमा प्रतिष्ठित की थी।

झाबक फूलचन्दजी—आपका जन्म संवत् १९२७ में हुआ। आप बड़े बुद्धिमान और प्रभावशाली व्यक्ति हैं। फलौदी, हैदराबाद, मद्रास, गोडवाड़ आदि के ओसवाल समाज में आपका बड़ा प्रभाव है इतिहास, ज्योतिष, काव्य, संस्कृत ग्रंथ, आगम, पुराण इत्यादि विषयों में आपका अच्छा ज्ञान है। जाति बिरादरी के झगड़ों को निपटाने में आपको बडा यश प्राप्त है। कई बड़े २ गम्भीर झगड़ों के अवसर पर दोनों पार्टियाँ आपको समदर्शी समझकर अपना पंच मुकर्रर कर देती है और ऐसे झगड़ों को आप बड़ी बुद्धिमानी से निपटा देते हैं। संवत् १९७९ में बीकानेर के बाईस सम्प्रदाय और मन्दिर आम्नाय के झगड़े को आपने कुशलतापूर्वक निपटाया। इसी प्रकार फलौदी, खीचन्द, हैदराबाद, मद्रास आदि की धड़े बंदियों को भी आपने कई दफे मिटाया। आप फलौदी के ओसवाल नवयुवक मण्डल के प्रेसिडन्ट है। संवत् १९७३ में जब फलौदी में म्युनिसिपेल्टी कायम हुई तब आपने गरीब आदमियों की तरफ का सब टैक्स अपने पास से भर दिया था। इससे जनता आपसे बड़ी खुश हुई थी। इस समय आपको मान पत्र भी मिला था। इस प्रकार प्रत्येक शुभ कार्य में आपका बड़ा भाग रहता है।

संवत् १९६८ में आपको बीकानेर के सेठ चाँदमलजी ढड्ढा ने अपना चीफ एजेण्ट बनाया। शुरू में आप उनकी बीकानेर और बेगूँ दुकान पर और फिर हैदराबाद दुकान पर रहे। आपने बड़ी ईमानदारी और चतुराई से इस कार्य को किया। संवत् १९८५ में आप वहाँ से अलग हो गये।

सुगनमलजी—इनका जन्म संवत् १९१८ और मृत्यु सं० १९७२ में जोधपुर में हुई थी, यह बुद्धिमान् सुशील तथा साहुकारी लाइन के अच्छे जानकार थे, इनके ३ पुत्र हुए।

अनराजजी—इनका जन्म १९४४ में मृत्यु १९७५ में हुई। इनके एक पुत्र दीपचन्दजी हैं। उनकी उम्र १५ साल की है। दूसरे गुलराजजी, का १७ वर्ष की उम्र में ही देहान्त हो गया। झावक सोहनराजजी,

की उम्र इस वक्त ४२ साल की है। इनके ५ पुत्र रामलालजी, पेमचंदजी, सम्पतलालजी, हेमचंदजी आदि हैं। यह खानदान शुरू से अब तक श्री जैन श्वेताम्बर संवेगी (मूर्ति पूजक) है।

झावक कपूरचंदजी का खानदान

(मंगलचंदजी शिवचंदजी झावक मद्रास)

रायसिंहजी के बड़े भाई झावक कपूरचन्दजी का उल्लेख ऊपर आ चुका है। आप संवत् १८६४ में अमरसीजी ढड्ढा की फर्म पर बीकानेर चले गये। उसके पश्चात् संवत् १८६८ में आप उनकी तरफ से हैदराबाद गये। वहां अमरसी सुजानमल फर्म को स्थापित किया। करीब १५ वर्ष रह कर आपने उस फर्म की बहुत तरक्की की। आप बड़े बुद्धिमान और प्रतिभाशाली थे। संवत् १८८४ में आप का देहान्त होगया। इनके केशरीचन्दजी और करणीदानजी नामक दो पुत्र हुए। केसरीचंदजी का जन्म संवत् १८६६ में और मृत्यु संवत् १९२२ में हुई। इन्होंने संवत् १९०७ तक सेठ सुजानमलजी के ढड्ढा के चीफ़ एजेण्ट का काम किया। संवत् १९०७ में आप हैदराबाद में उक्त सेठजी की दुकान पर गये और वहां पर १५ बरस रहे। इस समय में आपने इस फर्म की अच्छी उन्नति की। हैदराबाद के मारवाड़ी समाज और राजदरबार में आपकी अच्छी इज्जत थी। आप बड़े बुद्धिमान सुशील और उदार सज्जन थे। आपके रेखचंदजी और मगनमलजी नामक दो पुत्र हुए। रेखचंदजी का जन्म संवत् १९०१ में और मृत्यु संवत् १९३७ में हुई। संवत् १९२५ तक आप बीकानेर में उदयमलजी के पास रहे और पश्चात् उनकी हैदराबाद दुकान पर चीफ एजण्ट होकर गये। आप भी योग्य, बुद्धिमान और उदार व्यक्ति थे। इनके एक पुत्र कानमलजी हुए जो केवल १६ वर्ष की उम्र में स्वर्गवासी होगये।

झावक मगनमलजी—आपका जन्म संवत् १९०४ में और मृत्यु १९६२ में हुई। संवत् १९३७ तक ये बीकानेर में सेठ उदैमलजी के यहाँ चीफ एजण्ट रहे। संवत् १९२९ में उदैमलजी ढड्ढा का देहान्त होजाने से तथा सेठ चांदमलजीकी उम्र केवल ३ वर्ष की होने से उनका सब काम आपको सम्हालना पड़ा। पश्चात् १९३७ से १९६२ तक आप मेसर्स अमरसी सुजानमल की हैदराबाद दुकान पर काम करते रहे। आप बड़े व्यापार कुशल और बुद्धिमान व्यक्ति थे, उर्दू फ़ारसी के आप अच्छे जानकर थे। दुकान के मालिक आपकी बड़ी प्रतिष्ठा और इज्जत करते थे। आपके मंगलचन्दजी नामक एक पुत्र हुए।

झावक मंगलचंदजी—आपका जन्म संवत् १९३२ के भाद्रपद में हुआ। आप बड़े बुद्धिमान, सुशील और परोपकारी व्यक्ति हैं। मद्रास के ओसवाल समाज में आपकी बड़ी प्रतिष्ठा है। पंचायती के सब काम आपकी दुकान पर होते हैं। आपका हृदय बड़ा कोमल है। और परोपकार के कार्य्यों

में आप कॉफ़ी द्रव्य खर्च करते रहते हैं। आपकी एक दुकान मद्रास में केशरीचंद मगनमल के नाम से १९२२ में स्थापित हुई। जिस पर बैङ्किग का काम होता है। दूसरी पटना में मंगलचंद शिवचंद के नाम से संवत् १९६३ में स्थापित हुई इसकी एक शाखा मुकामा में भी है। पटियाला स्टेट के मोरमड़ी नामक स्थान मे राठी वंशीलालजी के साझे में आपकी एक जिनिंग फैक्टरी भी चल रही है। आप बड़े सत्यप्रिय है।

कुँवर शिवचंदजी—सेठ मंगलचन्दजी के पुत्र कुँवर शिवचन्दजी का जन्म १९५९ में हुआ। आपने मैट्रिक तक शिक्षा प्राप्त की। आप योग्य उत्साही और प्रतिभाशाली नवयुवक हैं। आप जतनलालजी के साझे में मेसर्स शिवचन्द जतनलाल के नाम से कपड़े का व्यापार करते हैं।

सेठ कपूरचन्दजी के पुत्र करनीदानजी थे इनका जन्म सं० १८९८ और मृत्यु सं० १९३५ में हैदराबाद में हुई थी। यह बुद्धिमान् तथा साहुकारी लाइन में हुशियार थे, आप जवाहरात का व्योपार करते थे, और उस जमाने में जवाहरत के अच्छे परिक्षक माने जाते थे यह देसर्णोक (बीकानेर) से फलौदी आ गये थे इनके पुत्र पन्नालालजी हुए सं० १९४१ में इनका देहान्त हुआ। इनके पुत्र जवारमलजी थे। इनका देहान्त संवत् १९६५ में हुआ। इनके ३ पुत्र समीरमलजी, सुखलालजी, और मूलचन्दजी हैं, जो खगड़िया (मुँगेर) में हस्तीमल, सुखलाल के नाव से दुकान चलती है, उसमें पार्टनर हैं।

यह खानदान शुरू से आज तक श्वेताम्बर जैन, मूर्त्ति पूजक है।

झाबक लूणकरणजी का खानदान, फलोदी

झाबक झाबरसिंहजी के कई पीढ़ियों बाद जीवराजजी, मानमलजी व अखेचन्दजी हुए, जीवराजजी मानमलजी का परिवार तो जीवा माना का परिवार और अखेचंदजी का परिवार मढ़िया झाबक कहाया। अखेचन्दजी की कई पीढ़ियों बाद सरूपचन्दजी और उनके पुत्र कस्तूरचन्दजी हुए। झाबक कस्तूरचन्दजी के रामदानजी और चुन्नीलालजी नामक २ पुत्र हुए, इनमें रामदानजी ने संवत् १९२२ में फलौदी में कपड़ा तथा लेनदेन की दुकान खोली जो इस समय भली प्रकार कामकर रही है। संवत् १९६८ में इनका अंतकाल हुआ। झाबक चुन्नीलालजी के कोई सन्तान नहीं हुई। झाबक रामदानजी के नवलमलजी हीरचंदजी तथा तेजमलजी नामक ३ पुत्र हुए। इनमें से तेजमलजी, झाबकों की दूसरी फली में झाबक पीरदानजी के नाम पर दत्तक गये।

झाबक नवलमलजी का अंत काल संवत १९५५ में हो गया इनके पुत्र लूणकरणजी तथा जीवणचंदजी हुए, इनमें से जीवनचन्दजी, हीरचंदजी के नाम पर दत्तक गये। झाबक लूणकरणजी के चम्पालालजी और गुमानमलजी नामक पुत्र हैं, जिनमें चम्पालाजी, तेजमलजी के नाम पर दत्तक गये हैं। जीवणचन्द

जी के पुत्र भँवरमलजी, अखेराजजी, मानमलजी तथा कंवरलालजी और चम्पालालजी के पुत्र कंवरलालजी और मदनचंदजी हैं।



गोलेछा

गोलेछा गौत्र की उत्पत्ति

कहा जाता है कि चंदेरी नगर में खरहत्थसिंह नामक राठोड़ राजा राज करता था। एक बार मुसल्मानों की फौज ने इनके पुत्रों को घायल कर दिया। उस समय दादा जिनदत्तसूरिजी ने उन्हें जीवन दान दिया। इस प्रकार संवत् ११९२ में राजा ने जैन धर्म अंगीकार किया। इनके दूसरे पुत्र भैंसाशाह बड़े प्रतापी व्यक्ति हुए। भैंसाशाह के पुत्र गेलोजी तथा उनके पुत्र बच्छराजजी थे। बच्छराजजी को लोग गेल-यच्छा (यानी गेलाजी के बच्छराज) नाम से पुकारते थे। यह अपभ्रंश गोलेछा में परिवर्तित हो गया। और इस प्रकार बच्छराजजी की संतानें गोलेछा नाम से सम्बोधित हुईं।

गोलेछा नथमलजी का खानदान, जयपुर

यह परिवार खिचंद का निवासी है। वहाँ से सेठ छगनलालजी गोलेछा व्यापार के लिये जयपुर आये। इनके पुत्र गोलेछा भेरूमलजी जयपुर स्टेट के ३० सालों तक खजांची रहे। संवत् १९३५ में आपका स्वर्गवास हुआ। आपके पुत्र नथमलजी तथा गुहारमलजी हुए।

गोलेछा नथमलजी—आपका जन्म संवत् १९०४ में हुआ। संवत् १९३५ में आप स्टेट ट्रेझरर बनाये गये। २ साल बाद यह कार्य्य इनके छोटे भ्राता के जिम्मे हुआ। और गोलेछा नथमलजी को जयपुर स्टेट के दीवान का पद प्राप्त हुआ। संवत् १९५८ तक गोलेछा नथमलजी ने इस सम्माननीय पद पर कार्य्य किया। आप पर महाराजा सवाई रामसिंहजी तथा माधोसिंहजी की पूरी महरबानी थी। ओसवाल जाति के आप नामांकित व्यक्ति थे। आपका स्वर्गवास संवत् १९६० की चैत बदी ९ को हुआ। आपके छोटे भाई गुहारमलजी १९५० में गुजर गये। उनके बाद उनके पुत्र सागरमलजी संवत् १९७८ तक स्टेट ट्रेझरर रहे।

गोलेछा नथमलजी के इन्द्रमलजी, हजारीमलजी, सोभागमलजी, सिरेमलजी तथा नौरतनमलजी नामक ५ पुत्र हुए। इनमें सिरेमलजी अपने बड़े भाई इन्द्रमलजी के नाम पर दत्तक गये। इन सब भाइयों का कुटुम्ब संवत् १९६१ में अलग २ हुआ। वर्तमान में इस खानदान में गोलेछा सोभागमलजी तथा हजारीमलजी के पुत्र घीसालालजी और सिरेमलजी के पुत्र सरदारमलजी विद्यमान हैं। इनके यहाँ लेनदेन का व्यवहार होता है। गोलेछा सोभागमलजी के ३ पुत्र हैं।

सेठ नथमलजी गोलेछा गवालियर वालों का खानदान

यह परिवार मूल निवासी खिचंद-फलौदी का है। वहाँ से सेठ धीरजमलजी गोलेछा लगभग १२५ वर्ष पहिले मथुरा होकर गवालियर गये। तथा वहाँ कपड़े का व्यापार आरम्भ किया। इनके तेजमलजी तथा जीतमलजी नामक २ पुत्र हुए।

जीतमलजी गोलेछा—आप बाल्यकाल से बड़े होनहार प्रतीत होते थे। अतएव आपने अपनी बुद्धिमत्ता से व्यापार में बहुत सम्पत्ति उपार्जित की। सेठ धीरजमलजी की राव राजा दिनकरराव के पिताजी राघोबा दादा के साथ गहरी मित्रता थी। धीरजमलजी के स्वर्गवासी होने पर जब दिनकरराव गवालियर राज्य के प्रधान हुए, तो उन्होंने गोलेछा जीतमलजी को तवरधार जिले का पातेदार बनाया। इस कार्य संचालन में जीतमलजी ने बहुत बुद्धिमानी से काम किया। इससे गवालियर दरबार ने प्रसन्न होकर गवालियर प्रान्त भर का इनको पोतेदार बनाया। इतना ही नहीं महाराजा जयाजीराव सिंधिया कई मामलों में इनकी सलाह लेते थे। तथा बहुत समय इनको अपने साथ रखते थे। अमझेरा तथा नीमच जिलों की सूबेदारी इनके पास बहुत दिनों तक रही। महाराजा ने प्रसन्न होकर इनको एक म्याना प्रदान किया था। आप संवत् १९२० से ४२ तक धौलपुर स्टेट के भी खजांची रहे। आपने सम्वत् १९२८ तथा ३२ में सम्मेद शिखर तथा पालीताना का संघ निकाला। संवत् १९४९ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके मृत्यु समय ८ हजार रुपया धर्मार्थ निकाले गये थे।

सेठ नथमलजी—आप गोलेछा जीतमलजी के पुत्र थे। आपका जन्म संवत् १९११ में हुआ था। आपने अपने पिताजी की मौजूदगी ही में राज्य के पातेदारी का तमाम काम सम्हाल लिया था। आपको गवालियर दरबार ने मीलिटरी ब्रिग्रेट तथा खानगी खाता और खासगी खजाने के काम भी इनायत किये।

इस कुटुम्ब का कई राज्यों में बड़ा भारी मान रहा है। दतिया राज्य के भी आप बैङ्कर रहे थे। और आपको इस राज से म्याना, छत्री, हलकारा आदि का सम्मान बख्शा गया था। इतना ही नहीं आप को उक्त राज से जमीन और घोड़ा भी भेंट में दिया गया था। नवाब साहब पालनपुर ने सन् १९०२ में

गवालियर में आपका अतिथ्य स्वीकार कर खिलत, कण्ठी, सर बंद, व पैरों में सोना बख्शा था। वर्तमान नवाब पालनपुर ने भी इन्हें सम्मान दिया, जम्मू, काश्मीर, करौली, चरखारी, पालीताना आदि के नरेशों ने भी आपको समय २ सम्मानों से विभूषित किया था।

इसके अतिरिक्त जैन श्वेताम्बर समाज में भी आपकी बड़ी प्रतिष्ठा थी। सन् १९०७ में आप पूना जैन कान्फ्रेंस के सभापति के आसन पर अधिष्ठित किये गये। इसी समय डेक्कन एजूकेशन सोसायटी ने भी आपको अपना आजीवन का फेलो बनाया। गवालियर की चेम्बर आफ कामर्स ने आपको अपना अध्यक्ष चुना। गोलेछा नथमलजी महाराजा माधवराव सिंधिया के बड़े प्रिय पात्र थे। महाराजा की नाबालिगी हालत में आपने उन्हे लाखों रुपया उधार दिया था। पिछले दिनों में नथमलजी को बड़ी आर्थिक हानि हुई और उनके दुश्मनों ने महाराजा को उनके खिलाफ कर दिया। इससे महाराजा ने नाराज़ होकर आपकी तमाम जमीदारी और स्टेट जप्त करली। इतना ही नहीं इनके ७० वर्ष के वृद्ध-शरीर को जेल में डाल दिया गया। वहीं कई वर्ष तक जेल यातना सहकर आपका शरीरान्त होगया। आपके पुत्र बाघमलजी हुए।

गोलेछा बाघमलजी—आपका जन्म संवत् १९३९ में हुआ। आपने १५ सालों तक अमझेरा में खजांची का काम किया। सन् १९१६ से १८ तक आप बोर्ड आफ कामर्स एण्ड इन्डस्ट्री के सलाहकार नियुक्त हुए। इसके बाद आप लश्कर नगर के आनरेरी मजिस्ट्रेट बनाये गये। इसके अलावा आप गवालियर की कई कम्पनियों के डायरेक्टर रहे। आपको सन् १९५२ में प्रिंस आफ वेल्स के सामने पेश होने का सम्मान भी मिला। आप जमीदार हितकारिणी सभा के सदस्य थे। सन् १९१७-१८ में आप सेंट जान एम्बुलेंस एसोसियेशन के अवैतनिक कौंसिलर बनाये गये। यह नियुक्ति स्वयं वाइसराय लार्ड चेम्सफोर्ड ने की थी। आप अपने पिताजी के साथ निमंत्रित होकर देहली दरबार में भी गये थे। आपको गवालियर राज्य की अदालत में उपस्थित होने की माफी है। गवालियर राज्य में आपको "राजमान राजे श्री सेठ" आदि सम्माननीय शब्दों से सम्बोधित किया जाता था। विवाह के अवसर पर इस परिवार को नगारा निशान खास बरदार तथा चांदी के होदे सहित हाथी, राज्य की ओर से मिलते थे। इस समय सेठ बाघमलजी जयपुर में निवास करते हैं। आप बड़े समझदार तथा विचारवान पुरुष हैं। पालनपुर दरबार से अब भी आपका पूर्ववत् प्रेम सम्बन्ध है।

गोलेछा राजमलजी जौहरी का खानदान, जयपुर

इस खानदान के पूर्व पुरुष गोलेछा रायमलजी तथा उनके पुत्र मुलतानचन्दजी बीकानेर में निवास करते थे। मुलतानचन्दजी के पुत्र माणकचन्दजी की बुद्धिमत्ता और कार्य्य दक्षता से प्रसन्न होकर

जयपुर के रेजिडेंट मि० लटल्ड साहिब ने अपनी सिफारिश द्वारा उन्हें जयपुर स्टेट का प्रधान बनाया। आपने इस पद पर कई प्रभावशाली काम किये। इनके भाई मिलापचन्दजी अजमेर में रहते थे। सेठ माणिकचन्दजी को बीकानेर स्टेट ने पांव में पहिनने को सोना बख्शा था।

माणिकचन्दजी के लक्ष्मीचन्दजी तथा मिलापचन्दजी के मोतीलालजी नामक पुत्र हुए। लक्ष्मीचन्दजी के मूलचन्दजी तथा नेमीचन्दजी हुए। इनमें से मूलचन्दजी, मोतीलालजी के नाम पर दत्तक गये। मूलचन्दजी के धनरूपमलजी तथा राजमलजी नामक पुत्र हुए। इनमे से राजमलजी, नेमीचन्दजी के बाल्यावस्था में ही स्वर्गवासी हो जाने से लक्ष्मीचन्दजी के नाम पर दत्तक आये। लक्ष्मीचन्दजी के बाद मूलचन्दजी ही सब कारवार देखते थे। गोलेछा मिलापचन्दजी के समय में इनका काम अजमेर में बहुत अच्छा चलता था। इनकी वहाँ पर हवेलियाँ, बगीचे, मकानात आदि थे। यह घर बड़ा मातवर माना जाता था। इनके बाद मिलापचन्दजी के पौत्र मूलचन्दजी जयपुर में रहने लगे। मूलचन्दजी का संवत् १९६४ में अंतकाल हुआ।

गोलेछा राजमलजी ने इस फर्म की बहुत उन्नति की। क्यूरियो, मीनाकारी तथा आइल और रंगकी एजन्सी के व्यवसायों से आपने काफी सम्पत्ति उपार्जित की तथा राजदरबार में भी सम्मानित हुए। आपको जयपुर-स्टेट की ओर से दरबार में कुर्सी तथा लवाजमा प्राप्त था। आपने दो वर्ष पूर्व दोसा (जयपुर) में "जयपुर मिनरल डेव्हलपमेंट सिंडीकेट" नाम का सोप स्टोन पाउडर बनाने का मिल करीब १॥—२ लाख की लागत से खोला है आप जयपुर म्युनिसीपेलिटी के भी मेम्बर रह चुके थे। इसके अतिरिक्त और भी समाज सुधार सम्बन्धी कार्य्यों में आप भाग लेते थे। आप का अंतकाल मिती माघ वदी २ संवत् १९८९ को हुआ।

गोलेछा राजमलजी के पुत्र सोहनमलजी तथा महताबचन्दजी विद्यमान हैं। धनरूपमल जी के बाघमलजी, सिरेमलजी, कानमलजी तथा विनयचन्दजी नामक चार पुत्र हुए। इनमें से सिरेमलजी का अन्तकाल होगया है। शेष सब सज्जन विद्यमान हैं।

गोलेछा सोहनलालजी का जन्म संवत् १९६३ में हुआ॥ आप बड़े शांत स्वभाव के सज्जन हैं। आपने अपने पिताजी की मृत्यु के पश्चात् दुकान के काम को बड़ी योग्यता से सम्हाला है। आप सुधारक विचारों के हैं तथा नवयुवक मण्डल के कोषाध्यक्ष हैं और अन्य सार्वजनिक संस्थाओं में भाग लेते हैं।

गोलेछा मुन्नीलालजी खुशालचन्दजी का खानदान, टिण्डीवरम् (मद्रास)

इस परिवार का मूल निवास स्थान बीकानेर शहर है। आप ओसवाल श्वेताम्बर जैन समाज

के कचराणी गोलेछा गौत्रीय मंदिर-मार्गीय आम्नाय के माननेवाले सज्जन हैं। सेठ गिरधरजी के पश्चात् क्रमशः भरजुनजी, मौजीरामजी तथा गोकुलजी हुए। गोलेछा गौकुलजी के वरदीचन्दजी तथा लखमीचन्दजी नामक दो पुत्र हुए, सेठ वरदीचन्दजी गोलेछा बीकानेर में निवास करते थे, तथा उस समय वहाँ आपका परिवार बहुत समृद्धिपूर्ण अवस्था में था, सेठ वरदीचन्दजी के बींजराजजी तथा मुन्नीलालजी नामक दो पुत्र हुए, इनमें बीजराजजी, सेठ लखमीचन्दजी गोलेछा के नाम पर दत्तक गये।

सेठ वरदीचन्दजी गोलेछा का परिवार

सेठ मुन्नीलालजी गोलेछा के कुशलचन्दजी, फतेचन्दजी तथा पन्नालालजी नामक ३ पुत्र हुए, आपके पुत्र सेठ खुशालचन्दजी अपने बाबा सेठ बींजराजी गोलेछा के पास बेंगलोर आये, तथा उन्हीं के पास कारोवार सीख कर होशियार हुए।

सेठ खुशालचन्दजी गोलेछा—आप बड़े कार्य चतुर तथा होशियार पुरुष थे। आपका जन्म संवत् १९१७ की काती सुदी १४ को बीकानेर में हुआ था। आपने बंगलोर में मुनीलाल खुशालचन्द के नाम से दुकान स्थापित की। धीरे २ इस फर्म की शाखाएँ तिरमिलगिरि, फरमकुंडा (सेंटथामस माउंट-मद्रास) आदि स्थानों पर जहाँ २ मिलिटरी केम्प रहे वहाँ वहाँ खोली गईं। आपकी योग्यता तथा होशियारी से प्रसन्न होकर कई अंग्रेज आफीसरों ने आपको उत्तम प्रमाण पत्र दिए। आपके छोटे भ्राता फतेचन्दजी, सेठ बींजराजजी के नाम पर दत्तक गये। तथा सबसे छोटे भ्राता सेठ पन्नालालजी बहुत समय आपके साथ व्यवसाय में सम्मिलित रहे तथा बाद सन् १९०९ में आप अलग हो गये तथा बंगलोर और तिरमिलगिरी में आपने अपनी स्वतन्त्र दुकान खोली। इस प्रकार प्रतिष्ठा पूर्वक जीवन बिताते हुए सेठ खुशालचंदजी गोलेछा का संवत् १९७७ में स्वर्गवास हुआ। आपके स्मरणार्थ आपके पुत्रों ने २० हजार रुपयों की रकम धर्मार्थ निकाली। इस रकम से टिण्डिवरम् में दी खुशालचन्द हॉयर एलिमेन्टरी इण्डिस्ट्रियल स्कूल नामक संस्था चल रही है। सेठ खुशालचन्दजी गोलेछा के ५ पुत्र हुए इनमें छगनमलजी, अमोलकचन्दजी तथा धर्मचन्दजी विद्यमान हैं। तथा मगनमलजी और मूलचंदजी का स्वर्गवास हो गया है। आप तीनों भ्राताओं की अलग २ स्वतन्त्र दुकानें हैं।

सेठ छगनलालजी गोलेछा—आपका जन्म संवत् १९५० में हुआ। आपकी दुकानें सेंटथामस माउंट (मद्रास) तथा टिंडिवरम् में "खुशालचंद छगनमल" के नाम से हैं। आपके पुत्र भँवरलालजी तथा उत्तमचन्दजी हैं।



स्व० सेठ खुशालचन्दजी गोलेछा, टिण्डिवरम् (मद्रास).

स्व० सेठ फतेचन्दजी गोलेछा, बंगलोर.



श्री सेठ अमोलकचन्दजी गोलेछा, तिरपापल्लूर (मद्रास).



श्री सेठ धरमचन्दजी गोलेछा, टिण्डिवरम् (मद्रास)

सेठ अमोलकचन्दजी गोलेछा—अपका जन्म संवत् १९५९ में हुआ। आपकी दुकाने "खुशालचन्द अमोलकचन्द" के नाम से पनरोटी, तिरपापल्लूर, गुडलूर, कुणजीवाड़ी तथा हैदराबाद के तिरमलगिरी नामक स्थान में हैं। आप बड़े सज्जन व्यक्ति हैं।

सेठ धरमचन्दजी गोलेछा—अपका जन्म संवत् १९६२ में हुआ। आप बड़े सज्जन तथा शिक्षाप्रेमी पुरुष हैं। आपकी दुकानें टिंडिवरम्, तिरिपापल्लूर तथा पदुमालियम् में हैं। इन दुकानों पर खुशालचन्द धरमचन्द के नाम से बेंकिंग कारबार होता है। आपने २० हजार रुपयों की रकम "सेठ धर्मचन्द गोलेछा साधारण फण्ड" के नाम से धर्मार्थ निकाली है, इस रकम का उपयोग साधु साध्वी, यात्रा, विद्यादान आदि कार्यों मे खर्च होता है। इस फण्ड की तरफ से एक गौशाला, टिंडिवरम् में बनवाई गई है। सेठ पन्नालालजी गोलेछा का स्वर्गवास संवत् १९८४ में हुआ। आपके पुत्र उदयराजजी, सोहनलालजी तथा अमरचन्दजी हैं। उदयराजजी के पुत्र गुलाबचन्दजी तथा सोहनलालजी के सोभागमलजी हैं।

सेठ लखमीचन्दजी गोलेछा का परिवार—सेठ लखमीचन्दजी ने अपने नाम पर अपने भतीजे बींजराजजी को दत्तक लिया। आप दोनों सज्जन देश से लगभग संवत् १९०० में नागपुर आये। तथा यहाँ सर्विस की। आपकी होशियारी से प्रसन्न होकर नागपुर दुकान के मालिकों ने इन पिता पुत्रों के जिम्मे एक तोफखाने का बेंकिंग व्यापार सोंपा, तथा पूँजी की सहायता दी। फलतः इन बंधुओं ने सिकंदराबाद तथा बलारी मे दुकानें खोलीं। तथा संवत् १९२७ में लखमीचन्द बींजराज के नाम से बंगलोर में भी दुकान की गई। सेठ बींजराजजी गोलेछा ने अपने मृत्यु के पूर्व एक बख्शिस नामा किया। जिसमें अपनी पत्नी को ५० हजार रुपया और अपने भतीजे खुशालचन्दजी को २३ हजार की रकम दी। इस प्रकार उदारता पूर्वक रकम विभाजित कर गोलेछा बींजराजजी का संवत् १९४२ में स्वर्गवास हुआ। आपके नाम पर मुन्नीलालजी के मझले पुत्र फतेचन्दजी दत्तक आये। आपकी वीरचन्द फतेचन्द के नाम से बंगलोर में प्रतिष्ठित फर्म थी। आपका स्वर्गवास सवत् १९५९ में ३८ साल की वय में हुआ। आपके स्मरणार्थ बंगलोर में एक छतरी बनवाई गई है। इन्होंने अपने जीवन में कई प्रतिष्ठा पूर्ण कार्य्य किये। आपके सालमचन्दजी तथा पेमराजजी नामक २ पुत्र हुए।

सेठ सालमचन्दजी—अपका जन्म संवत् १९४४ में हुआ। आपका व्यापार संवत् १९८४ तक बंगलोर में रहा। इस समय आप गुडलूर न्यू टाउन में निवास करते हैं। आपके छोटे भाई पेमराजजी की मृत्यु केवल १९ साल की आयु में १९६७ में हुई। इसी साल इन बंधुओं का कारबार अलग २ हुआ। इस समय पेमराजजी के पुत्र नेमीचन्दजी हैं।

गोलेछा हरदत्तजी का खानदान, फलोदी

इस खानदान का खास निवास फलोदी है। सेठ हरदत्तजी गोलेछा के ५ पुत्र हुए, कस्तूरचन्दजी, निहालचन्दजी, बनेचंदजी, कपूरचंदजी, तथा खूबचंदजी। इनमें से कपूरचंदजी के कोई संतान नहीं हुई। गोलेछा कस्तूरचन्दजी और निहालचन्दजी फलोदी से हैदराबाद (दक्षिण) गये, तथा वहां चादी सोना गिरवी और जवाहरात का कारबार आरंभ किया। कस्तूरमलजी का स्वर्गवास संवत् १९१५ में और निहालचन्दजी का संवत् १९२२ में हुआ। संवत् १९२२ मे इन दोनों भ्राताओं का कारबार अलग २ हो गया।

गोलेछा कस्तूरचन्दजी का परिवार—गोलेछा कस्तूरचन्दजी के हरकचंदजी तथा छोटमलजी नामक २ पुत्र हुए। इनके गोलेछा छोटमलजी के हीरालालजी, सुजानमलजी, बिशनचंदजी, हस्तीमलजी एवम् लक्ष्मीलालजी नामक पाँच पुत्र हुए। गोलेछा सुजानमलजी का स्वर्गवास सन्वत् १९३८ में हुआ। आपके पुत्र गोलेछा सोभामलजी वर्तमान हैं।

गोलेछा सोभागमलजी—आपका जन्म संवत् १९३१ में हुआ। संवत् १९६३ से आपने फलौदी के सार्वजनिक और सामाजिक कामों में सहयोग देना आरम्भ किया। आप बड़े विचारवान, हिम्मतवर और विरोधों की परवाह न कर मुस्तैदी से काम करने वाले व्यक्ति हैं। सम्वत् १९६३ में आपने फलौदी में जैन श्वेताम्बर मित्र मण्डल नाम की संस्था भी कायम की थी। सन् १९१५ से ३२ तक आप स्थानीय म्युनिसिपेलिटी के लगातार मेम्बर रहे। आपने फलौदी में, रेल, तार स्कूल, म्युनिसिपेलिटी आदि के स्थापन होने में उद्योग किया। इस समय आप स्थानीय पांजरापोल व सिंह सभा के ज्वाइण्ट सेक्रेटरी हैं, आपके दत्तक पुत्र भँवरमलजी ओसियां बोर्डिङ्ग में मैट्रिक का अध्ययन कर रहे हैं।

गोलेछा निहालचन्दजी पूनमचन्दजी का परिवार—सं० १९२२ में सेठ निहालचन्दजी के पुत्र पूनमचन्दजी अपना स्वतंत्र कार बार करने लगे। गोलेछा पूनमचंदजी के समय में धंधे को विशेष उन्नति मिली, इनका शरीरावसान संवत् १९३७ में हुआ। इनके पुत्र फूलचन्दजी गोलेछा हुए।

गोलेछा फूलचन्दजी—इनका जन्म संवत् १९२५ की कातिक वदी १० को हुआ। इन्होंने व्यापार की उन्नति के साथ २ बहुत बड़ी २ रकमें धार्मिक कार्यों और यात्राओं के अर्थ लगाकर अपनी मान व प्रतिष्ठा की विशेष वृद्धि की। संवत् १९४९ तथा ५८ में आपने जेसलमेर तथा सिद्धाचलजी के संघ में १० हजार रुपये खरच किये इसी तरह ५ हजार रुपया समोण सरण की रचना में लगाये। ६ सालों तक सिद्धाचलजी की ओली का आराधन किया। इसी तरह आपने फलोदी के रानीसर तालाब के पश्चिमी हिस्से का घाट बनवाया, फलोदी पांजरा पोल, ओसियाँ जीर्णोद्धार, कुलपाक तीर्थ (हैदराबाद) के जीर्णोद्धार, और वर्द्धमान जैन बोर्डिंग हाउस के स्थापन में बड़ी २ मददें दीं। इसी तरह अनेकों धार्मिक-कामों में आपने लग



स्व० सेठ फूलचन्दजी गोलेछा, फलोदी.



सेठ नेमीचन्दजी गोलेछा, फलोदी.



सेठ सोभागमलजी गोलेछा, फलोदी.



स्वर्गीय गुलावचन्दजी गोलेछा, फलोदी.

भग डेढ़ दो लाख रुपये लगाये। आप जैन श्वेताम्बर मित्र मंडल के प्रेसिडेंट थे। संवत् १९७२ में आपने 'निहालचन्द नेमीचन्द' के नाम से सोलापुर मे कपड़े व सराफे की दुकान खोली। इस प्रकार प्रतिष्ठा पूर्वक महत्वपूर्ण धार्मिक जीवन बिताते हुए संवत १९६९ की जेठ सुदी १४ को आपका स्वर्गवास हुआ। आपके गोलेछा नेमीचंदजी तथा गोलेछा गुलाबचंदजी नामक २ पुत्र हुए।

गोलेछा नेमीचन्दजी—आपका जन्म संवत् १९४७ में हुआ फलोदी के ओसवाल समाज में आप अच्छे प्रतिष्ठित व्यक्ति समझे जाते हैं आपके पुत्र मनोहरचन्दजी ने मेट्रिक तक अध्ययन किया है। आप उत्साही युवक हैं। तथा सोलापुर जैन यूथलीग के प्रेसिडेंट हैं। इनसे छोटे बस्तीचंदजी जोधपुर हॉई स्कूल में तथा मंगलचन्दजी फलोदी में पढ़ रहे हैं।

गोलेछा गुलाबचन्दजी—आपका जन्म संवत् १९५५ में हुआ था। आप बड़े विद्या प्रेमी तथा होनहार नवयुवक थे। आपने फलोदी में एक जैन लायब्रेरी का स्थापन भी किया था, दुर्भाग्यवश २३ वर्ष की अल्पायु में आपका शरीरावसान हो गया। आपके पुत्र हीराचन्दजी, तिलोकचंदजी एवं अनोपचन्दजी इस समय जोधपुर में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

सेठ जीवराज अगरचन्द गोलेछा, फलोदी

गोलेछा बहादुरचन्दजी के जीवराजजी बदनमलजी और सतीदानजी नामक ३ पुत्र हुए। इनमें जीवराजजी का जन्म लगभग संवत् १९११।१२ में हुआ।

गोलेछा जीवराजजी व्यवसाय के निमित्त फलौदी से बम्बई की ओर गये। संवत् १९४० के लगभग आपने बम्बई में दुकान खोली। संवत् १९५९ में आपका स्वर्गवास हुआ। आपके अगरचन्दजी, जोगराजजी, रतनचन्दजी और लालचन्दजी नामक ४ पुत्र हुए। इनमें से अगरचन्दजी का स्वर्गवास संवत् १९७५ में तथा लालचन्दजी का उसी साल आसोज सुदी ७ को (इन्फ्ल्युएन्ज़ा में) हुआ। गोलेछा अगरचन्दजी के पुत्र गुलाबचन्दजी हैं।

गोलेछा जोगराजजी का जन्म संवत् १९४६ में हुआ। आपके हाथों से दुकान के कारबार और इज्जत को तरक्की मिली। संवत् १९८८ की फागुन सुदी ३ के दिन आपने जैसलमेर का संघ निकाला। आपके छोटे भ्राता रतनचन्दजी का जन्म संवत् १९४८ में हुआ।

गोलेछा गुलाबचन्दजी, शिक्षाप्रेमी, शांतप्रकृति तथा उत्साही नवयुवक हैं। इधर २ सालों से आप फलौदी म्युनिसिपेलिटी के मेम्बर हैं। आपका कुटुम्ब फलौदी के ओसवाल समाज में अच्छा प्रतिष्ठित माना जाता है। इस परिवार की बम्बई में विट्ठलवाड़ी में जीवराज अगरचन्द के नाम से तथा ठटकसंड़ में जोगराज समरथमल के नाम से दुकानें हैं जिन पर बेङ्किग और कमीशन का काम होता है।

सेठ मूलचन्द सोभागमल गोलेछा, फलोदी

गोलेछा रामचन्द्रजी के कल्याणमलजी, इन्द्रचन्दजी, अमोलकचन्दजी, सरदारमलजी तथा चंदनमलजी नामक ५ पुत्र हुए। इनमें से गोलेछा इन्द्रचन्दजी ने संवत् १९१३।१४ में कारंजा (वरार) में जाकर दुकान स्थापित की। इन भ्राताओं का कार्य संवत् १९४७ तक सम्मिलित चलता रहा। गोलेछा चन्दनमलजी का स्वर्गवास सम्वत् १९५७ में हुआ।

गोलेछा चन्दनमलजी के मूलचंदजी, सोभागमलजी, पूनमचन्दजी और दीपचन्दजी नामक ४ पुत्र हुए। मूलचन्दजी का जन्म सम्वत् १९२७ में, सोभागमलजी का १९३८ में, पूनमचन्दजी का १९४३ में और दीपचंदजी का जन्म १९४७ में हुआ। आप लोगों का कारबार कारंजा (वरार) में रामचन्द्र चंदनमल के नाम से और बम्बई में मूलचंद सोभागमल के नाम से होता है। कारंजा में कपड़ा और वेङ्किग व्यापार के अलावा आपने कृषि और जमीदारी का कार्य भी बढ़ाया है। सम्वत् १९६४ में गोलेछा दीपचन्दजी का स्वर्गवास हो गया।

गोलेछा सोभागमलजी के प्रबोध से श्री पूसारामजी कारंजा वालों ने ओसियां बोर्डिङ्ग को ५ हजार रुपया नगद दिया तथा पूसारामजी के स्वर्गवासी होने के पश्चात् उनकी सारी सम्पत्ति बोर्डिङ्ग के लिये प्रदान करवाई। इसका मृत्यु-पत्र लिखा लिया है। इस समय सोभागमलजी के पुत्र कन्हैयालालजी तथा सम्पतलालजी और पूनमचन्दजी के पुत्र गुलाबचन्दजी हैं।

सेठ प्रतापचंद धनराज गोलेछा, फलोदी

फलोदी निवासी गोलेछा टीकमचंदजी के २ पुत्र हुए। उनके नाम क्रमशः हंसराजजी तथा बख्तावरचन्दजी गोलेछा थे। गोलेछा हंसराजजी का जन्म संवत् १८८७ में हुआ, तथा संवत् १९१८ में वे फलौदी से व्यवसाय निमित्त जबलपुर गये, और वहां हंसराज बख्तावरचन्द के नाम से बृटिश रेजिडेंट के साथ लेनदेन का कार्य्य आरम्भ किया। पीछे से इनके छोटे भ्राता बख्तावरचन्दजी भी जबलपुर गये, तथा इन दोनों भ्राताओं ने अपने धन्धे को वहाँ जमाया। गोलेछा हंसराजजी के प्रतापचंदजी तथा धनराजजी नामक २ पुत्र हुए, जिनमें से प्रतापचन्दजी, गोलेछा बख्तावरचन्दजी के नाम पर दत्तक गये। हंसराजजी का संवत् १९६० में तथा बख्तावरचन्दजी का उनके प्रथम स्वर्गवास हुआ।

गोलेछा प्रतापचन्दजी का जन्म संवत् १९२९ में तथा धनराजजी का संवत् १९३३ में हुआ। गोलेछा प्रतापचन्दजी फलोदी तथा जबलपुर के प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। इस समय आप जबलपुर सदर बाजार जैन मन्दिर के व्यवस्थापक हैं। आपके छोटे भ्राता धनराजजी गोलेछा जबलपुर कन्टून्मेन्ट बोर्ड के मेम्बर थे, उनका स्वर्गवास संवत १८८२ में हुआ।



सेठ प्रतापचन्दजी गोलेछा (प्रतापचन्द धनराज) फलौधी



स्व० सेठ धनराजजी गोलेछा (प्रतापचद धनराज) फलौधी



श्रीरतनचन्द्रजी गोलेछा S/o सेठ धनराजजी गोलेछा फलौधी



श्रीगुलावचन्दजी गोलेछा (जीवराज अगरचन्द फलौधी)

गोलेछा प्रतापचन्दजी के पुत्र सम्पतलालजी तथा मूलचन्दजी एवम् धनराजजी के पुत्र रतनचन्दजी एवं लालचन्दजी हैं। सम्पतलालजी का जन्म १९५० में रतनचन्दजी का जन्म संवत १९५९ में तथा मूलचन्दजी और लालचन्दजी का जन्म संवत् १९६४ में हुआ। आप सब भ्राता फर्म के व्यवसाय संचालन में सहयोग देते हैं। आपका कुटुम्ब मंदिर मार्गीय आम्नाय का मानने वाला है।

गोलेछा रतनचन्दजी सुशील, शांतिप्रिय एवं उन्नतिशील नवयुवक हैं, आपकी वक्तृत्व शक्ति अच्छी है। समाज संगठन की भावनाएँ आपके हृदय में जागृत हैं। जातीय सम्मेलनों में आप अक्सर सहयोग लेते रहते हैं।

गोलेछा बाघमलजी का खानदान, खिचंद

जोधपुर स्टेट के सेतरावा नामक स्थान से २५० वर्ष पूर्व आकर गोलेछा फतेचन्दजी ने अपना निवास खिचंद में बनाया। इनके दलीचन्दजी, मानरूपजी, सुखमलजी, रासोजी तथा रायचंदजी नामक ५ पुत्र हुए। इन्हीं पांचों भाइयों के लगभग ८० घर इस समय खिचंद में निवास करते हैं।

गोलेछा फतेचन्दजी के पश्चात् क्रमशः दलीचन्दजी, मूलचंदजी और नेतसीजी हुए। नेतसीजी के जयकरणदासजी तथा नवलचंदजी नामक २ पुत्र थे। नवलचंदजी का पंच पंचायती में अच्छा मान था। इनका ७४ साल की आयु में संवत् १९४८ में स्वर्गवास हुआ। गोलेछा जयकरणदासजी के जालमचंदजी, सागरचंदजी, रूपचंदजी तथा बाघमलजी नामक ४ पुत्र हुए। इन बंधुओं ने लगभग संवत् १९०० में हैदराबाद में दुकान खोली, और उसके २० साल पश्चात् मद्रास में व्यापार शुरू किया गया। इन भाइयों में गोलेछा बाघमलजी ज्यादा प्रतापी हुए।

गोलेछा बाघमलजी—आपका जन्म संवत् १८९७ में हुआ। आप बाल्यावस्था से ही अपने बड़े भ्राता जालमचन्दजी के साथ हैदराबाद गये। धीरे २ आपका बृटिश पल्टन के साथ लेनदेन शुरू हुआ। और आप फौज के साथ विजगापट्टम गये। आपने इस दुकान की इतनी उन्नति की, कि आस पास "बाघमल साहुकार" का नाम मशहूर हो गया। कई अंग्रेजों ने आपको सार्टफिकेट दिये थे। सं० १९५०—५१ के अकाल में आपने वहाँ गरीबों को काफी इमदाद पहुँचाई थी। इससे प्रसन्न होकर सन् १८९७ में महाराणी विक्टोरिया ने आपको सनद दी। आपकी जवाहरात में भी अच्छी निगाह थी जिससे राजा महाराजाओं व अंग्रेजों से आपका काफी व्यापारिक सम्बन्ध था। आपको गुप्त दान का शोक था। संवत् १९५४ में आप खिचंद आगये। यहाँ १९५६ में अकाल के समय लोगों को इमदाद दी। महाराजकुमार उम्मेदसिंहजी तथा कर्नल विंडहम ने खिचंद आकर आपकी मेहमानदारी मंजूर की। आपका स्वर्गवास संवत् १९७७ में हो गया।

गोलेछा जालमचंदजी का स्वर्गवास संवत् १९५६ में हुआ। इनके लादूरामजी तथा अगरचंद जी नामक २ पुत्र हुए। इनमें लादूरामजी, सेठ बाघमलजी के नाम पर दत्तक गये। आप दोनों सज्जनों का जन्म क्रमशः संवत् १९२६ तथा ३२ में हुआ। आपका "जयकरणदास बाघमल" के नाम से विजगापट्टम में बैङ्किग व्यापार होता है। वहां आपके चार गांव जागीरी के भी है। लादूरामजी के पुत्र सुखलाल जी और पन्नालालजी तथा अगरचंदजी के पुत्र भोमराजजी व्यापार में भाग लेते हैं। इसी तरह इस परिवार में सागरचंदजी के पौत्र विजयलालजी तथा प्रपौत्र चम्पालालजी, सागरमल सुजानमल के नाम से मेड्रोज स्ट्रीट मद्रास में बैङ्किग व्यापार करते हैं। तथा रूपचन्दजी के पौत्र माणकलालजी लक्ष्मीचन्दजी आदि रूपचन्द छोगमल के नाम से मद्रास में व्यापार करते हैं। यह परिवार खिचन्द तथा मद्रास प्रांत के ओसवाल समाज में प्रतिष्ठित माना जाता है।

गोलेछा रावतमलजी अगरचंदजी तेजमालजी का परिवार, खिचंद

हम ऊपर बतला चुके हैं कि गोलेछा फतेचन्दजी के ५ पुत्र थे। इनमें तीसरे सुखमलजी थे। इनके बाद क्रमशः चेताजी, पदमसीजी तथा इन्द्रचन्दजी हुए। गोलेछा इन्द्रचन्दजी के रावतमलजी, अगरचंदजी तथा तेजमालजी नामक ३ पुत्र हुए। गोलेछा रावतमलजी का जन्म संवत् १९१९ में हुआ। १२ साल की वय में ही आप अमरावती चले गये। वहां जाकर आपने नौकरी की। वहां से आप बम्बई गये और तथा वहाँ संवत् १९४४ में गुलराजजी कोठारी के भाग में गुलराज रावतमल के नाम से दुकान की। तथा १९४८ में रावतमल अगरचन्द के नाम से अपना घरू व्यापार आरम्भ किया। आप साधु स्वभाव के पुरुष थे। इस प्रकार मामूली स्थिति से अपनी फर्म के व्यापार को दृढ़ बनाकर आपका स्वर्गवास संवत् १९८२ में हुआ। आपके रतनलालजी, दीपचन्दजी, समरथमलजी, हस्तीमलजी, और धनराजजी नामक ५ पुत्र हैं। इनमें सेठ रतनलालजी का जन्म संवत् १९५० में हुआ। आप शिक्षित तथा प्रतिष्ठित सज्जन हैं। आपके यहां "रतनलाल समरथमल" के नाम से कालबादेवी रोड बम्बई में आढ़त का व्यापार होता है। यह फर्म संवत् १९७५ में खुली है।

सेठ अगरचन्दजी का जन्म संवत् १९२३ में तथा स्वर्गवास १९५८ में हुआ। आपके जेठमल जी तथा शंकरलालजी नामक २ पुत्र हुए। इनमें शंकरलालजी, सेठ तेजमलजी के नाम पर दत्तक गये हैं। और जेठमलजी १९ वर्ष की आयु में १९७१ में स्वर्गवासी हुए। सेठ तेजमलजी संवत् १९७५ में ३५ साल की आयु में स्वर्गवासी हुए। आपने व्यवसाय की उन्नति में काफी सहयोग दिया था। गोलेछा शंकरलालजी का जन्म संवत् १९५६ में हुआ। आप समझदार तथा शिक्षित सज्जन हैं। आप, जेठमलजी के पुत्र मानमलजी के साथ " अगरचन्द शंकरलाल " के नाम से मद्रास में बैङ्किग व्यापार करते।



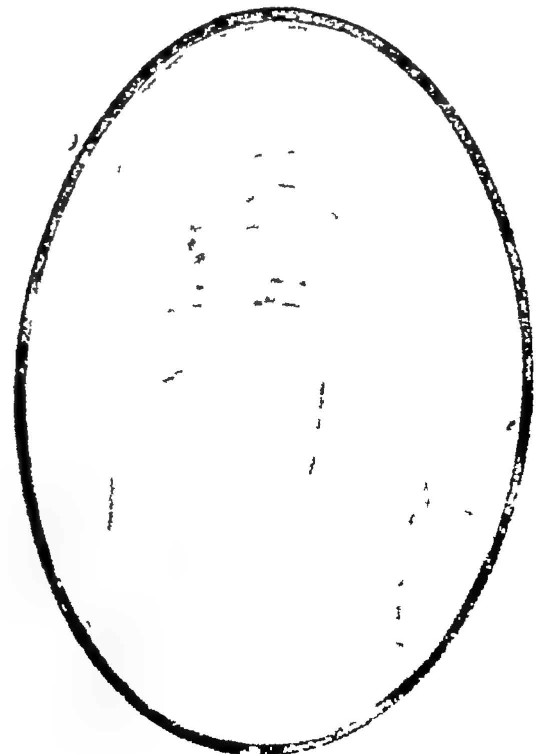
सेठ बाघमलजी गोलेछा, खिचंद (मारवाड़)



श्री सम्पतलालजी कोचर, फलोदी (पेज नं० ४५८



सेठ चौथमलजी सेठिया, सरदारशहर (पेज नं० ४८६)



सेठ मोहनलालजी बांठिया, हनुमानगढ़ (पेज नं० [illegible]८



स्व० सेठ सिद्धकरणजी गोलेछा, चांदा.



श्री सेठ किशनलालजी गोलेछा, पनरोटी (मद्रास).



श्री गुलाबचन्दजी गोलेछा (जीवराज अगरचन्द), फलोदी



श्री मेघराजजी गोलेछा, फलोदी.

इस परिवार की खिचन्द, फलोदी में अच्छी प्रतिष्ठा है। आप लोगों ने संवत् १९८० में एक लायब्रेरी स्थापित की है। जिसमें २ हजार ग्रन्थ हैं। इसी तरह एक जैन कन्यापाठशाला आपकी ओर से यहां चल रही है।

सेठ अमरचंद अगरचंद गोलेछा, चांदा

इस परिवार का मूल निवास स्थान बीकानेर है। आप श्वेताम्बर जैन समाज के मन्दिर मार्गीय आम्नाय के मानने वाले गोलेछा गौत्र के सज्जन हैं। देश से व्यापार के निमित्त सेठ अमरचंदजी गोलेछा, नागपुर आये, और वहां व्यवसाय शुरू किया, उस समय चांदा (उर्फ चांदपुर) के गौंड राजा का आगमन नागपुर में हुआ करता था, उस समय गौंड राजा ने सेठ अमरचन्दजी गोलेछा को प्रतिष्ठित व्यापारी समझ कर अपनी राजधानी में दुकान खोलने को कहा, फलतः सेठ अमरचन्दजी गोलेजा ने करीब ९० साल पहिले चांदा में गल्ले की खरीदी फरोख्ती तथा आढ़त की दुकान की। सेठ अमरचंदजी के पुत्र अगरचंदजी गोलेछा ने इस दुकान के व्यापार और सम्मान को विशेष बढ़ाया, आपके पुत्र गोलेछा सिद्धकरणजी का जन्म संवत् १९३३ की माघ बदी ऽऽ को हुआ। गोलेछा सिद्धकरणजी का धार्मिक जीवन विशेष प्रशंसनीय तथा उल्लेखनीय है। सी० पी० के सुप्रसिद्ध तीर्थ भांदक में मन्दिर तथा धर्मशाला का निर्माण करवाने में आपने बहुत सहायता पहुँचाई। भारत सरकार ने आपको सारे देश के लिये आर्मस एक्ट माफ किया था। इस प्रकार सी० पी० तथा बरार के ओसवाल समाज में नाम एवं यश प्राप्त कर संवत् १९८९ की भादवा वदी ८ को आपका स्वर्गवास समाधि-मरण से (पद्मासन लगाये हुए) हुआ। आपके पुत्र चैनकरणजी गोलेछा का जन्म संवत् १९६० में हुआ, आप अपने पिताजी के बाद भांदक तीर्थ कमेटी के प्रेसिडेंट हैं तथा सन् १९२७ से ३० तक चांदा म्यु० के मेम्बर रहे हैं। आपकी दुकान पर चांदा में ग्रेन शीड्स का व्यापार, लेनदेन, मालगुजारी तथा कमीशन का काम होता है। आपके बृटिश हद में २ तथा मुगलाई में ३ गाँम ज़मीदारी के हैं। चांदा में आपकी दुकान प्रधान मानी जाती है।

सुन्दरलालजी गोलेछा, बी० ए० एल० एल० बी०, बालाघाट

इस परिवार के पूर्वज सेठ उदयचंदजी तथा गुलाबचन्दजी बीकानेर से संवत् १८७५ में जबलपुर आये। यहाँ आकर इन भाइयों ने सराफी तथा कपड़े का व्यापार शुरू किया। इनके छोटे भ्राता गुलाबचन्दजी ने व्यापार में लाखों रुपये कमा कर इस परिवार की जमीदारी मकान बंगले आदि सम्पत्ति

में वृद्धि की। गोलेछा उदयचन्दजी के गोड़ीदासजी तथा गोलेछा कस्तूरचन्दजी के माधवलालजी नामक पुत्र हुए। इन दोनों बंधुओं का कारवार संवत् १९२२ में अलग २ हुआ। गोलेछा गोड़ीदासजी का जन्म संवत् १९०० में हुआ। आपने भी व्यापार में तथा इज्जत में अच्छी उन्नति हासिल की। जवलपुर के ओसवाल समाज में आपकी पहिली दुकान थी। आपको दरवारी का सम्मान प्राप्त था। आपका स्वर्गवास संवत् १९४६ में हुआ। आपके पुत्र झुनझुनलालजी का जन्म संवत् १९२८ में हुआ।

गोलेछा झुनझुनलालजी—आप जवलपुर के नामी रईस थे। आप २० सालों तक म्यु० मेम्बर रहे। इसी तरह डिस्ट्रिक्ट वोर्ड के मेम्बर तथा वाइस प्रेसिडेण्ट भी रहे। दरवारी सम्मान आपको भी प्राप्त था। सन् १९२८ के दिसम्बर मास में आप स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र सुन्दरलालजी का जन्म संवत् १९५६ में हुआ। आपने १९२० में बी. ए. तथा १९२१ में एल० एल० बी० की डिगरी हासिल की। इसके बाद आप ३ सालों तक जवलपुर में वकालत करते रहे। और इधर २ सालों से आप वालाघाट में वकालत करते हैं। आप वड़े सरल स्वभाव के मिलनसार सज्जन हैं। जवलपुर में आप का खानदान बहुत पुराना तथा प्रतिष्ठित माना जाता है।

सेठ जेठमल रामकरण गोलेछा, नागपूर

इस परिवार के पूर्वज सेठ हरकचंदजी गोलेछा अपने मूल निवास स्थान बीकानेर से संवत् १८९५ में कामठी आये। तथा यहाँ गुमाश्त गिरी और व्यापार किया। इनके पुत्र जेठमलजी का कंट्राक्टिंग लाइन में अच्छा अनुभव था। आपने संवत् १९१७ मे कामठी से ३ मील की दूरी पर केनहाल ब्रिज नामक विशाल ब्रिज वनाने का कंट्राक्ट लिया। आप नागपुर से जवलपुर तक मेल कार्ट दौड़ते थे। इसी प्रकार आपने आर्मी के ट्रेझरर तथा कंट्राक्टर का काम भी संचालित किया था। संवत् १९२८ में आपका स्वर्गवास हो गया। आपके पुत्र सेठ रामकरणजी गोलेछा ने संवत् १९३० में "जेठमल रामकरण" के नाम से दुकान स्थापित की। तथा आप सन् १८७२ में बंगाल बैंक के ट्रेझरर हुए। आप संवत् १९५६ में स्वर्गवासी हुए। आपके नाम पर सेठ मेघराजजी बीकानेर से दत्तक आये।

सेठ मेघराजजी गोलेछा का जन्म संवत् १९४९ में हुआ। आप संवत् १९६१ में इस फर्म पर दत्तक आये सन् १९२७ तक आपके पास इम्पीरियल बैंक की ट्रेझरर शिप रही। इसके बाद आपने नागपुर सिटी, सदर, मऊ छावनी तथा जयपुर, जोधपुर और साँभरलेक के पोस्ट की ट्रेझरी के ५ साल के लिये कंट्राक्ट लिये। जो इस समय भी आपके पास हैं। आपने अपने व्यापार को अच्छा बढ़ाया है। आपके ६ पुत्र हैं। जिनके नाम क्रमशः अभयराजजी, सिरेमलजी, उमरावमलजी, सिरदारमलजी, तथा रतनचन्दजी और विनयचन्द हैं। इनमें अभयराजजी व्यापार में भाग लेते हैं। इनकी आयु २० साल की है।

श्री गुमानचन्दजी गोलेछा का परिवार
(मेसर्स आसकरण-गणेशमल पनरोटी)

इस खानदान के मालिकों का मूल निवास स्थान फलौदी (मारवाड़) का है। आप श्वेताम्बर समाज के मन्दिर अम्नाय को माननेवाले हैं। इस परिवार में श्री दुलीचन्दजी हुए।

गोलेछा दुलीचन्दजी के पुत्र गुमानचन्दजी के बहादुरचन्दजी नामक पुत्र हुए। इनके तीन पुत्रों में से यह खानदान धनसुखदासजी का है। धनसुखदासजी के चार पुत्र हुए जिनके नाम दीपचन्दजी, रतनलालजी, लक्ष्मीलालजी और जमनालालजी था। आपका जन्म क्रमशः संवत् १९१५, १९१८, १९२४ तथा १९३२ में हुआ।

गोलेछा दीपचन्दजी बड़े सज्जन और योग्य पुरुष हैं। आप संवत् १९४५ में फलौदी से अमरावती गये और वहाँ से संवत् १९५४ में आप बम्बई चले गये और वहाँ पर दीपचन्दजी गोलेछा के नाम से कॉटन ब्रोकर्स के व्यवसाय को करने लगे। आपके केशरीचन्दजी और किशनलालजी नामक दो पुत्र हैं। इनमें से किशनलालजी रतनलालजी के नाम पर दत्तक गये हैं। रतनलालजी अजमेर में धनसुखदास रतनलाल नामक फर्म के मालिक थे। आपका संवत् १९३७ में अल्पायु में ही स्वर्गवास हो गया। केशरीचन्दजी का जन्म संवत् १९३४ का है। आप संवत् १९६३ से बम्बई स्वतन्त्र व्यापार करने लग गये हैं। आपसे संवत् १९८२ में स्वर्गवास हो गया। आपके पुत्र चम्पालालजी और पानमलजी अपना कार बार बम्बई में चला रहे हैं।

गोलेछा किशनलालजी का जन्म संवत् १९३७ का है। प्रारम्भ में आप दीपचन्दजी के साथ बम्बई में व्यापार करने लगे। तदनंतर संवत् १९६३ में आपने अलग होकर स्वतंत्र दुकान स्थापित की। संवत् १९८९ में आपने पनरोटी में आकर बैङ्किग का व्यवसाय चालू किया। आप बड़े सज्जन और योग्य पुरुष हैं। आप फलौदी में अपनी समाज में बड़े अग्रसर और मोअजीज व्यक्ति माने जाते हैं। आपके हृदय में बिरादरी की सेवा के भाव बहुत अधिक है। आपके इस समय तीन पुत्र है जिनके नाम आसकरणजी गणेशमलजी और जसराजजी हैं। आपकी फर्म का नाम पनरोटी में "आसकरण गणेशमल" पड़ता है।

जौहरी हमीरमलजी गोलेछा, जयपुर

इस परिवार के पूर्वज जौहरी जवाहरमलजी लगभग एक शताब्दी पूर्व बीकानेर से, जयपुर आये और सेठ सदासुखजी ढड्ढा के यहाँ सर्विस की। आपके पुत्र दुलीचन्दजी भी ढड्ढा फर्म पर मुनीमात

करते रहे। इन दोनों सज्जनों ने जयपुर के व्यापारिक समाज में अच्छा नाम पाया । सेठ दुलीचन्दजी का संवत् १९१० के जेठ मास में स्वर्गवास हो गया। आपके यहाँ सेठ हमीरमलजी बीकानेर से संवत् १९४९ में दत्तक आये। आप संवत् १९६९ से पन्ना का व्यापार करते हैं। यहाँ से पन्ना तय्यार करवा कर विदेशों में तथा भारत में भेजते हैं। इस व्यापार में आपने अच्छी सम्पत्ति व प्रतिष्ठा उपार्जित की है। इसके साथ २ धार्मिक कामों की ओर आपका बड़ा लक्ष है। एवं इस काम में आपने हजारों रुपये व्यय किये हैं। आप स्थानीय जैन श्राविकाश्रम तथा कन्या पाठशाला के कोषाध्यक्ष हैं। आप जयपुर के ओसवाल समाज में प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। आप मन्दिर मार्गीय आम्नाय के हैं। आपने अपने यहाँ दानमलजी गोलेछा के पुत्र मनोहरमलजी को दत्तक लिया है। आप भी कार बार में भाग लेते हैं।

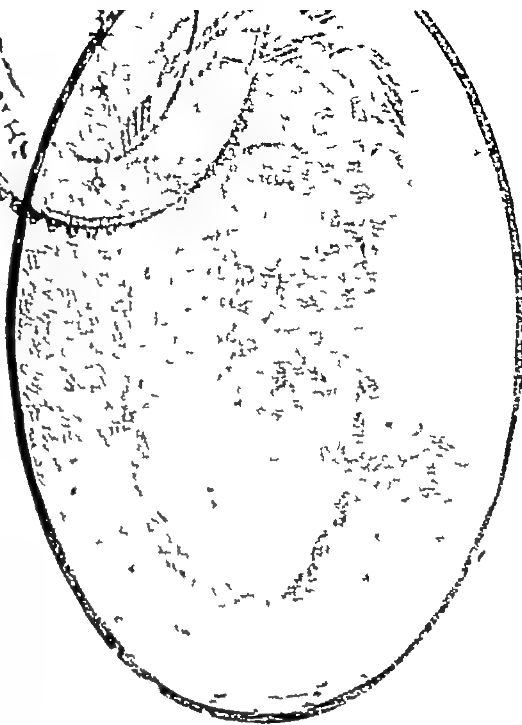
सेठ भैरोंदान पूनमचन्द गोलेछा, कलकत्ता

इस परिवार के पूर्व पुरुष तोल्यासर (बीकानेर) के निवासी थे। तोल्यासर में सेठ सुखलालजी तथा उदयचन्दजी हुए। आप दोनों भाई २ थे। आप लोगों ने वहाँ किराना एवम् कपड़े का थोक व्यापार किया। आप लोग बीकानेर भी अपना काम काज करते रहे। आपका स्वर्गवास हो गया। सेठ सुखलालजी के कोई पुत्र न था। सेठ उदयचन्दजी के दो पुत्र हुए जिनके नाम क्रमशः सेठ नेणचन्दजी एवम् सेठ सागरमलजी थे। आप दोनों भाई भी वहीं बीकानेर तथा तोल्यासर में व्यापार करते रहे। सेठ नेणचंदजी सेठ सुखलालजी के यहाँ दत्तक गये। आप लोगों का भी स्वर्गवास हो गया। सेठ नेणचन्दजी के एक पुत्र है जिनका नाम सेठ भैरोंदानजी है।

सेठ भैरोंदानजी—आपका जन्म सम्वत् १९३० में हुआ। आप केवल १५ वर्ष की अल्पायु में संवत् १९४५ में कलकत्ता व्यापार के लिये गये। तथा वहाँ आकर आपने पहले खेतसीदास तनसुखदास सरदार शहर वालों की फर्म में रोकड़ तथा अदालत वगैरह का काम किया। यह काम आप सम्वत् १९६९ तक करते रहे। इसमें आपने बहुत उन्नति की। आपकी ईमानदारी, होशियारी एवम् व्यापार संचालनता को देख कर मालिक लोग आप पर हमेशा प्रसन्न रहा करते थे। आप बड़े होशियार एवम् समझदार सज्जन हैं। आपने खेतसीदास तनसुखदास के यहाँ से काम छोड़ते ही अपनी निज की फर्म उपरोक्त नाम से गणेशभगत के कटले में स्थापित की। तथा वहाँ कपड़े का व्यापार प्रारम्भ किया। आप डायरेक्ट विलायत से पेचक मँगवाते थे तथा थोक व्यापारियों को बेचते थे। इस व्यापार में भी आपने अपनी व्यापार कुशलता का परिचय दिया एवम् बहुत ज्यादा उन्नति की। यह काम सन् १९३० तक करते रहे। इसके बाद आपने कपड़े का काम बन्द कर दिया। एवम् बंगाल के प्रसिद्ध



सेठ भैरोंदानजी गोलेछा (भैरोंदान पूनमचंद) बीकानेर.



कुँवर पूनमचंदजी S/o भैरोंदानजी गोलेछा



कुंवर घेवरचंदजी S/o भैरोंदानजी गोलेछा



जौहरी हमीरमलजी गोलेछा जयपुर.

जूट के व्यापार की ओर अपना ध्यान दिया। तथा सम्वत् १९८१ में आपने फारविसगंज (पूर्णिया) में अपनी एक ब्रांच खोली आप बाईस सम्प्रदाय के मानने वाले सज्जन हैं। आपके इस समय दो पुत्र हैं जिनके नाम क्रमशः पूनमचन्दजी एवम् घेवरचन्दजी हैं। आप दोनों भाई भी मिलनसार एवम् सज्जन व्यक्ति हैं। आप लोग भी व्यापार संचालन करते हैं। पूनमचन्दजी के सोहनलालजी एवम् सम्पतलालजी तथा घेवरचंदजी के अतनलालजी, माणकचन्दजी एवम् चम्पालालजी नामक तीन पुत्र हैं। आप सब अभी बालक हैं।

आपका व्यापार इस समय कलकत्ता में गणेशभगत कटला में जूट एवम् आढ़त का होता है। तथा फारविसगंज में पूनमचन्द घेवरचन्द के नाम से जूट का तथा आढ़त का व्यापार होता है।

श्री समरथमल मेघराज गोलेछा फलोदी

इस परिवार के पूर्वज गोलेछा हीराजी थे इनकी संतानें हीराणी कहलाई। गोलेछा हीराजी संवत् १७८७ में विद्यमान थे। उनके बाद क्रमशः भोपतसीजी, करमसीजी और मलूकचंदजी हुए। मलूकचन्दजी वजनदार व्यक्ति थे। उनके नाम पर जोधपुर राज से संवत् १७९३ में एक सनद हुई थी। इनके पुत्र सरूपचन्दजी हुए, तथा सरूपचन्दजी के शिवजीरामजी और बनेचंदजी नामक २ पुत्र हुए। शिवजीरामजी के थानमलजी, धनसुखदासजी तथा मालचन्दजी और बनेचन्दजी के उदयचन्दजी तथा सागरचंदजी नामक पुत्र हुए।

गोलेछा धनसुखदासजी की चिट्ठियों से पता चलता है कि संवत् १८६० में इनकी दुकानें उज्जैन और जालना में थीं। गोलेछा थानमलजी के पुत्र नवलचन्दजी और हजारीमलजी हुए। थानमलजी और नवलचन्दजी ने बनारस में दुकान की थी। नवलचन्दजी का संवत् १९५० में अंतकाल हुआ। नवलमलजी के पुत्र छोगमलजी और समरथमलजी हुए। छोगमलजी का अंतकाल १९७८ में हुआ। इस समय छोगमलजी के पुत्र गोलेछा मेघराजजी मौजूद हैं। इन्होंने हीराचन्द पूनमचन्द छल्लानी सिकन्दराबाद वालों की वरंगल दुकान पर मुनीमात की तथा संवत् १९७६ से ८२ तक निहालचन्द नेमीचन्द सोलापुर वालों की पार्टनरशिप में काम किया और इस समय १९८३ से सोलापुर में अपना कपड़े का घरू व्यापार करते हैं। गोलेछा समरथमलजी विद्यमान हैं। इन्होंने संवत् १९५५ से ८२ तक निहालचन्द पूनमचन्द हैदराबाद वालों की तथा १९८७ तक भोलाराम माणकलाल की मुनीमात की। आपके पौत्र घेवरचन्दजी का संवत् १९८८ में २० साल की अल्पायु में शरीरावसान हो गया है और दूसरे आसकरणजी मौजूद हैं।

इसी प्रकार मालचन्दजी, उदयचन्दजी तथा सागरचन्दजी के परिवार में क्रमशः नेमीचन्दजी भागचन्दजी व कँवरलालजी विद्यमान हैं।

सेठ सूरजमल सम्पतलाल गोलेछा, फलोदी

फलोदी निवासी सेठ कपूरचन्दजी गोलेछा के पौत्र सेठ सूरजमलजी (वीरचन्दजी के पुत्र) ने बहुत समय तक बम्बई में कॉटन ब्रोकरशिप का कार्य किया। सम्वत् १९६९ में आपका स्वर्गवास हुआ। आपके सम्पतलालजी, नेमीचन्दजी तथा पेमराजजी नामक ३ पुत्र विद्यमान हैं। इन बन्धुओं में पेमराजजी संवत् १९८४ में नीलगिरी आये। तथा सेठ मूलचन्द जेठमल नामक फर्म की भागीदारी में सम्मिलित हुए। आप समझदार सज्जन हैं। आपके पुत्र जेठमलजी, भँवरलालजी, गुलाबचन्दजी तथा अनोपचन्दजी पढ़ते हैं। सेठ सम्पतलालजी तथा नेमीचन्दजी बम्बई में व्यापार करते हैं। सम्पतलालजी के पुत्र सोहनराजजी उत्साही युवक हैं। तथा समाज सुधार के कामों में दिलचस्पी रखते हैं।

नाग सेठिया

नाग सेठिया गौत्र की उत्पत्ति

ऐसा कहा जाता है कि नाग सेठिया गौत्र की उत्पत्ति सोलंकी राजपूतों से हुई है। मथुरा नगर का राजा नर वाहन सोलंकी ,को किन्ही जैनाचार्य्य ने प्रतिबोध देकर जैनी बनाया। तदुपरांत नेणा नगर में जो वर्त्तमान में गोड़वाड़ प्रान्त के अन्दर नाणावेड़ा के नाम से प्रसिद्ध है उक्त नरवाहनजी को लाकर संवत् १००१ के लग भग भट्टारक श्री धनेश्वर—सूरिजी ने जैन धर्म का प्रतिबोध किया। उस समय बारह राजा विद्यमान थे,जिनसे जुदे बारह गौत्रों (ठाकुर, हंस, वग, लक्कड़, कवाड़िया, सोलंकी सेठिया, धर्म, पचलोढ़ा, तोलेसरा और रिखब) की स्थापना हुई। इसी समय सोलंकी सेठिया गौत्र भी स्थापित हुआ।

यह भी किम्बदत्ति है कि संवत् १४७२ के करीब उथमण गाँव में इस सोलंकी सेठिया वंश में सेठ अर्जुनजी हुए। आपके घर पर एक समय तेले के पारने के दिन जल्दी चूल्हा सिलगाया गया। चूल्हे में नागदेव बैठे हुए थे उन पर अग्नि पड़ी जिससे वे क्रुद्ध हुए। ठीक उसी समय उनकी पुत्र वधू दूध लेकर आ रहीं थी। आपनें नागदेव को अग्नि से सन्तप्त देख कर दूध डाल कर आग को शांत किया। यह देखकर नागदेव आपसे बहुत प्रसन्न हुए और शुभ आशीर्वाद दिया। इसी समय से "नाग सेठिया" गौत्र की उत्पत्ति हुई। और तभी से इस गौत्र में नागदेव की पूजा जारी की गई। कहते हैं की उसी समय से लड़की के व्याह के समय नाग और नागणी को फूल पहराने की प्रथा चालू हुई जो आजतक पाली जाती है। यह गौत्र तीन तरह के पुकारी जाती है। (१) सोलंकी सेटिया (२) नागदा सोलंकी सेठिया (३) नाग सेठिया।


श्री सेठ कन्हैयालालजी सेठिया, मद्रास.


श्री सेठ आसकरणजी सेठिया, मद्रास.


श्री स्व० मोहनलालजी सेठिया, मद्रास.


श्री सेठ जसवन्तमलजी सेठिया, मद्रास

अर्जुन की कई पीढ़ियों के पश्चात् सेठ उदाजी और इनके पुत्र मौंडणजी हुए। आप लोग पहले सजनपुर बगड़ी में रहते थे और संवत् १७०७ की बैसाख सुद ७ को आपने बगड़ी से बलूंदा आकर निवास कर दिया। तभी से इस परिवार वाले बलूँदे में रहते हैं। इनके वंशज तिलोकचन्दजी के वंश में मगराजजी हुए जिनके पुत्र गुलाबचन्दजी से इस परिवार का इतिहास आरम्भ होता है।

सेठ बख्तावरमल मोहनलाल-नाग सेठिया, मद्रास

सेठिया गुलाबचन्दजी के वंशज बलूदे में रहते हैं। आप ओसवाल जैन श्वेताम्बर समाज की तेरापंथी आम्नाय को माननेवाले हैं। सेठ गुलाबचन्दजी संवत् १८७५ के लगभग बलूंदे से पैदल रास्ते द्वारा जालना आये और वहाँ पर अपनी फर्म स्थापित की। इस फर्म पर आप बड़ी सफलता के साथ सराफी का कारबार चलाते रहे। आपके दो पुत्र हुए जिनके नाम अमरचन्दजी तथा गम्भीरमलजी थे।

गम्भीरमलजी—आप सन् १८४७ में अंग्रेजी पलटन के साथ पैदल रास्ते से मद्रास आये। कहते हैं कि इस मुसाफिरी में आपको तीन वर्ष लगे। इस घटना से आपकी जबर्दस्त हिम्मत का पता लग सकता है। श्रीयुत गम्भीरमलजी ने मद्रास में आकर गम्भीरमल एण्ड को० के नाम से १५० स्टॉडस रोड (पट्टलम सूला) में अपनी फर्म स्थापित की। प्रारम्भ से ही आपने इस फर्मपर बैङ्किंग का व्यापार शुरू किया था। आप बड़े साहसी, व्यापार कुशल और दूरदर्शी पुरुष थे। आपने अपनी बुद्धिमानी से इस फर्म को बहुत तरक्की दी। आपका स्वर्गवास संवत् १९४६ में हुआ। आपने अपने समय में अनेक जाति भाइयों को मद्रास प्रान्त में लाकर बसाया। आपके तीन पुत्र हुए जिनके नाम चौथमलजी, बख्तावरमलजी तथा शुभकरणजी था। गम्भीरमलजी के पश्चात् इस फर्म के कारभार को आप तीनों भाइयों ने सम्हाला। आप तीनों भाइयों का जन्म क्रमशः संवत् १९१२, १९१८ तथा १९२३ में हुआ था।

बख्तावरमलजी—आप इस खानदान में बड़े प्रतापी पुरुष हो गये हैं। मद्रास की जनता में आप राजा सावकार के नाम से प्रसिद्ध थे। आप अपने जाति भाइयों को बहुत मदद पहुँचाते रहते थे। उस समय मद्रास में मारवाड़ियों की इनी गिनी दुकानें थी अतः मारवाड़ से शुरू में जो कोई भी व्यक्ति मद्रास की तरफ जाते तो उन्हें आप बड़े प्रेम से अपने यहाँ ठहराते और धंधे लगवाते थे। आपने कई लोगों को सहायता और सहानुभूति देकर मद्रास में जमाया। आपका स्वर्गवास संवत् १९५६ में हुआ। के चार पुत्र हुए जिनके नाम शिवलालजी, मोहनलालजी, मग्गूलालजी तथा केवलचन्दजी था। सेठिया शुभकरणजी के दो पुत्र हुए जिनके नाम क्रमशः कन्हैयालालजी और आसकरणजी था। बहुत समय तक सब भाई साथ में व्यापार करते रहे फिर संवत् १९६६ के आषाढ़ सुदी १२ को इस फर्म की तीन स्वतंत्र शाखाऐं—बख्तावरमल मोहनलाल, शुभकरण कन्हैयालाल, तथा शुभकरण आसकरण के नाम से हो गई।

मोहनलालजी सेठिया—अपका जन्म संवत् १९४१ की मगसर वदी ४ को हुआ। आप भी अच्छे प्रतिष्ठित पुरुष हुए। आपका स्वर्गवास संवत् १९७१ की आषाढ़ सुदी ५ को हुआ। आपके स्वर्गवास के समय आपके ज्येष्ठ पुत्र श्री जसवन्तमलजी की वय बहुत थोड़ी थी अतः उस समय इस फर्म के सारे कार-

बार को आपकी मातेश्वरी ने सम्हाला। सेठिया शुभकरणजी के पुत्र कन्हैयालालजी का जन्म संवत् १९४४ तथा आसकरणजी का संवत् १९४९ का है। सेठिया मोहनलालजी के दो पुत्र हुए जिनके नाम जसवन्तमलजी तथा सोहनमलजी था। इनमें से सेठिया जसवन्तमलजी के छोटे भ्राता सोहनमलजी का पोष सुदी २ संवत् १९८८ को स्वर्गवास हो गया। इस समय उपरोक्त फर्म के मालिक सेठ जसवन्तमलजी हैं।

जसवन्तमलजी सेठिया—आपका जन्म पौष सुद ६ संवत् १९६५ में हुआ। आप बड़े सज्जन, उच्च विचारों के तथा उदार हृदय के व्यक्ति हैं। इस कम उम्र में ही आपने फर्म के काम को बहुत अच्छीतरह से सम्हाल लिया है। आपका विद्या प्रेम बहुत ही सराहनीय है। आपने पट्टालम सूला में दी जैन मोहन स्कूल के नामसे एक स्कूल अपनी ओरसे कायमकर रक्खा है। आप प्रायः सभी सार्वजनिक, परोपकारी तथा धार्मिक कार्य्यों में सहायता देते रहते हैं। यहाँ यह लिखना आवश्यक है कि आप ओसर मोसर आदि सामाजिक कुरीतियों के बहुत खिलाफ़ हैं। आप इस समय मेसर्स बख्तावरमल मोहनलाल के मालिक हैं। आपकी दुकान पट्टालम सूला में सब से बड़ी तथा मद्रास की खास २ दुकानों में गिनी जाती है।

सेठिया शुभकरणजी के पुत्र आसकरणजी का जन्म संवत् १९४९ की जेठ सुदी ५ का है। आपके दो पुत्र हैं जिनके नाम क्रमशः नेमकरणजी तथा सज्जनकरणजी हैं। आप इस समय मेसर्स शुभकरण आसकरण के मालिक हैं।

सेठ हजारीमल केवलचन्द (नाग) सेठिया, मुदरान्तकम् (मद्रास)

इस परिवार का पूर्व इतिहास सेठ बख्तावरमलजी मोहनलालजी के परिचय में दिया गया है। इस परिवार मे सेठ कपूरचन्दजी के पुत्र मुगदासजी तथा पौत्र गिरधारीमलजी हुए। सेठ गिरधारीमलजी के हिम्मतरामजी तथा जगरूपमलजी नामक २ पुत्र हुए। इन दोनों का स्वर्गवास संवत् १९२५ तथा ५० में हुआ। हिम्मतरामजी को बलूंदे ठाकुर ने "नगर सेठ" की पदवी दी थी।

देश से व्यापार के लिये सेठ हिम्मतरामजी तथा जगरूपमलजी संवत् १८७४ में जालना आये। तथा पल्टन के साथ लेनदेन का कार्य आरम्भ किया। हिम्मतरामजी के पुत्र हजारीमलजी हुए। इनका स्वर्गवास १९५३ में ५२ साल की आयु में हुआ। आपके हीरालालजी, जसराजजी, केवलचंदजी, तथा माणिकचन्दजी नामक ४ पुत्र हुए। इनमें माणकचन्दजी, जगरूपमलजी के नाम पर दत्तक गये। इस समय जगरूपमलजी का परिवार जालने में जगरूपमल मगनीराम तथा जगरूपमल माणिकचन्द के नाम से व्यापार करता है। मगनीरामजी के पुत्र मोहनलालजी तथा माणकचन्दजी के पुत्र सुगनचन्दजी हैं।

सेठ केवलचन्दजी का जन्म सं० १९४६ में हुआ। आप १९६६ में मदुरान्तकम् आये। तथा यहां सराफी व्यापार चालू किया। आप से बड़े भाई हीरालालजी तथा जसराजजी का जन्म क्रमशः १९२६ तथा १९४३ में हुआ। इस परिवार का मदुरान्तकम् में जे० माणिकचन्द तथा हजारीमल केवल के नाम से त्रिविकोल्लूर में जसराज पुखराज तथा माणिकचन्द सुगनचन्द के नाम से और बलूंदे में हीरालाल जसराज के नाम से व्यापार होता है। हीरालालजी के पुत्र कनकमलजी तथा पुखराजजी, और सेठ जसराजजी के पुत्र रिखबचंदजी तथा सूरजकरणजी हैं। यह परिवार बलूंदा में अच्छी प्रतिष्ठा रखता हैं।



सेठिया, बीकानेर.



सेठ भैरोदानजी सेठिया, बीकानेर.





पारमार्थिक संस्था-भवन (अगरचंद भैरोदान) बीकानेर.

सेठिया

सेठिया गौत्र की उत्पत्ति

ऐसा कहा जाता कि पाली नगर के पास ग्राम में रांका और बांका नामक दो राजपूत कृषि कार्य्य से अपना गुजारा करते हुए रहते थे। आचार्य्य श्री जिन वल्लभसूरि के उपदेश से इन्होंने जैन धर्म अङ्गीकार किया। इन्ही में से रांका से सेठी और बांका से सेठिया गौत्र की उत्पत्ति हुई। इन्हीं की संतानों से गोरा, देक, काला बोक आदि गौत्रों की उत्पत्ति हुई।

सेठ अगरचंद भैरोंदान सेठिया, बीकानेर

अब हम पाठकों के सामने एक ऐसे दिव्य व्यक्ति का चरित्र उपस्थित करते हैं; जिसने अपने जीवन के द्वारा व्यापारी समाज के सम्मुख सफलता और सद् व्यय का एक बहुत बड़ा आदर्श उपस्थित किया है। जिसने व्यापारी जगत् में अपने पैरों पर खड़े होकर लाखों रुपयों की सम्पत्ति उपार्जित की है। यही नहीं मगर उसका सुन्दर सदुपयोग भी किया है। यह महानुभाव श्रीभेरूँदानजी सेठिया हैं।

सेठ भैरोंदानजी—आपका जन्म संवत् १९२३ में हुआ। आपके २ बड़े एवम् एक छोटे भाई और थे। जिनके नाम क्रमशः सेठ प्रतापमलजी, अगरचन्दजी, और हजारीमलजी थे। जब आप केवल ८ वर्ष के थे तब ही आपके भाइयों ने आपको अलग कर दिया। इस समय आपके पास उतनी ही सम्पत्ति थी जितना कि आपको देना था। अतएव बड़ी कठिन परिस्थिति का अनुभव कर आपने ५००) सालियाना में ७ वर्ष तक बम्बई में नौकरी की। मगर इससे आपको संतोष न हुआ। आप कर्मवीर व्यक्ति थे। शीघ्र ही आपने बम्बई को छोड़ कर कलकत्ता प्रस्थान किया। वहाँ जाकर आपने हनुमतराम भैरोंदान के नाम से साझे में रंग का व्यापार करने के लिये फर्म खोली। साथ ही मनिहारी का व्यापार भी करने लगे। देवयोग से यह व्यापार चमक उठा, एवम् इसमें आपने बहुत सफलता प्राप्त की। इसके बाद ही आपके भाई अगरचन्दजी फिर से आपके साथ शामिल हो गये और आप लोगों का व्यापार ए० बी० सेठिया एण्ड को० के नाम से चलने लगा। रंग की विशेष उन्नति होते देखकर आपने एक रंग का कारखाना दी सेठिया केमिकल वर्क्स के नाम से खोला। यह भारत में पहला ही रंग का कारखाना था। इसके पश्चात् आपका व्यापार वायु-वेग से उन्नति पाने लगा। आपकी बम्बई, मद्रास, कानपुर, देहली अमृतसर, करांची और अहमदाबाद में फर्में स्थापित होगईं। यही नहीं बल्कि आपने जापान में भी अपनी फर्म स्थापित की। मगर कुछ वर्षों पश्चात् बीमारी के कारण कलकत्ता और जापान के सिवा सब स्थानों से आपने अपना व्यवसाय उठा लिया। संवत् १९७१ में आपके भाई अगरचन्दजी का साझा आपसे अलग हो गया।

आपका धार्मिक जीवन भी बड़ा सराहनीय है। आपने अभी तक लाखों रुपये सार्वजनिक कार्यों में खर्च किये हैं। आपकी ओर से इस समय निम्नलिखित संस्थाएँ चल रही हैं। (१)

सेठिया जैन स्कूल, (२) सेठिया जैन श्राविका पाठशाला (३) सेठिया जैन संस्कृत प्राकृत विद्यालय (४) सेठिया जैन बोर्डिंग हाउस (५) सेठिया जैन शास्त्र भंडार (६) सेठिया जैन विद्यालय (७) सेठिया जैन श्राविकाश्रम (८) सेठिया जैन प्रिंटिंग प्रेस आदि। उपरोक्त संस्थाओं के खर्च की व्यवस्था के लिये आपने कलकत्ते के चीना बाजार के मकान नं० १६०। १६१ की दुकानें, क्रास स्ट्रीट के नं० ३, ५, ७, ९, १९ के मकान तथा मोहनदास स्ट्रीट के १२३, १२५ नम्बर के मकान की भी रजिस्ट्री करवा दी है। इसके अतिरिक्त आपके भाई और आपकी ओर से बीकानेर में संस्थाओं के लिये २ मकान दिये गये हैं जिनमें संस्थाओं का कार्य्य संचालन होरहा हैं। इन सब संस्थाओं का सारा कार्य आप ही देखते हैं। आप अखिल भारत वर्षीय श्री जैन श्वेताम्बर स्थानकवासी कान्फ्रेंस के सभापति रहे थे। इस समय आप म्युनिसिपल मेम्बर, साधु मार्गीय जैन हितकारिणी सभा के प्रेसिडेण्ट और स्थानकवासी जैन ट्रेनिंग कालेज के सभापति हैं। आपके इस समय पांच पुत्र हैं जिनके नाम क्रमशः जेठमलजी, पानमलजी, जुगराजजी और ज्ञानपालजी हैं आपने अपने सब पुत्रों को अलग २ कर दिया है।

कुँवर जेठमलजी—आप बड़े मिलनसार और सज्जन व्यक्ति हैं। आपका ध्यान भी परोपकार की ओर विशेष रहता है। आप उपरोक्त संस्थाओं के ट्रस्टी हैं। आपने भी अपने हिस्से से ३०।हजार रुपये नक़द और कलकत्ता के कैनिंग स्ट्रीट वाले मकान नं० १११ और ११५ और जंकशनलेन का मकान नं० ६ संस्थाओं को दान स्वरूप प्रदान किये हैं। जिनका व्याज एवम् किराये की करीव २० हजार रुपया सालाना आय संस्थाओं को मिलती है।

सेठ साहब के शेष पुत्रों में से प्रथम दो व्यवसाय करते हैं और छोटे दो विद्याध्ययन करते हैं। श्रीलहरचंदजीने भी एक प्रिंटिंग प्रेस संस्थाओं को दान में प्रदान किया है। आप सब भाइयों का अलग अलग रूप से भिन्न भिन्न प्रकार का व्यवसाय होता है। आपकी फर्म बीकानेर में अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है।

सेठ खुशालचंदजी सेठिया का परिवार ,सरदारशहर

इस परिवार के लोग संवत् १८९६ में सरदारशहर में आकर बसे। इसके पूर्व पुरुष सेठ खुशालचन्दजी के कालूरामजी, टोडरमलजी, दुरंगदासजी, श्रीचन्दजी और आईदानजी नामक पांच पुत्र हुए। इनमें कालूरामजी, श्रीचन्दजी व आईदानजी नामक तीनों भाइयों ने संवत् १८७८ में पैदल रास्ते से सफर करके रंगपुर, कूच बिहार आदि स्थानों पर अपनी दुकानें खोलीं और कपड़े का व्यापार करने लगे। इसके पश्चात् आपने अमृतसर, बक्षीहाट, भडंगामारी, बलरामपुर, चोलाखाना यक्षाद्वार आदि स्थानों पर भी अपनी फर्मे स्थापित कर व्यापार में अद्भुत सफलता प्राप्त की। संवत् १९५० तक आप तीनों भाइयों का स्वर्गवास होगया और उसी साल आईदानजी के पुत्र मंगलचन्दजी इस फर्म से अलग होगये।

सेठ कालूरामजी का परिवार—सेठ कालूरामजी के तीन पुत्र हुए। जिनके नाम क्रमशः सेठ भीखणचंदजी, सेठ नथमलजी और सेठ नारायणचन्दजी हैं। इनमें से सेठ नथमलजी अपने चाचा सेठ श्रीचन्दजी के पुत्र न होने के कारण वहां दत्तक चले गये। शेष दोनों भाई भी अलग २ होगये एवम्



सेठ भीकमचन्दजी सेठिया, सरदारशहर,



सेठ दुलीचन्दजी सेठिया, सरदारशहर.



बाबू भींवराजजी सेटिया, सरदारशहर.



सेठ रावतमलजी सेटिया, सरदारशहर.

अपना अपना स्वतंत्र व्यापार करने लगे। सेठ भीखणचन्दजी के तीन पुत्र हुए शोभाचन्दजी, दुलीचन्दजी और भीमराजजी। इनमेंसे प्रथम शोभारामजी अलग होगये एवम् अपना स्वतंत्र व्यापार कलकत्ता में मेसर्स शोभाचद सुमेरमल के नाम से करने लगे। आपका स्वर्गवास होगया है। आप मिलनसार व्यक्ति थे। आपके सुमेरमलजी एवम् तनसुखरायजी नामक दो पुत्र हैं। आप लोग भी सज्जन एवम् मिलनसार हैं। दूसरे पुत्र दुलिचन्दजी सेठ नथमलजी के पुत्र न होने से वहाँ दत्तक चले गये। अतएव अब तीसरे पुत्र भीमराजजी ही इस समय अपनी फर्म मेसर्स कालूराम नथमल ताराचन्द दत्त स्ट्रीट का संचालन करते हैं। इसमें नथमलजी के दत्तक पुत्र सेठ दुलिचन्दजी का भी साझा है।

सेठ नारायणचन्दजी इस समय विद्यमान हैं आपकी वय इस समय ६४ वर्ष की है। आपकी फर्म इस समय कलकत्ता में मेसर्स कालूराम शुभकरन के नाम से चल रही है तथा मुगलहाट में भी आपकी एक फर्म है जहाँ पाट का व्यापार होता है। आपके दीपचन्दजी नामक एक पुत्र हैं। आपही आजकल फर्म के व्यापार का संचालन करते हैं। आप योग्य और मिलनसार सज्जन हैं। आपके चार पुत्र हैं जिनमें तीन के नाम क्रमशः शुभकरणजी, जसकरणजी, और रिधकरनजी हैं। बड़े पुत्र व्यापार में सहयोग लेते हैं। सेठ टोडरमलजी के कोई संतान न हुई। दुरंगदासजी के परिवार में उनके पुत्र जेठमलजी और किशनचन्दजी हुए। इस समय किशनचन्दजी के पुत्र नेमचन्दजी, मुगलहाट में किशनचन्द मंगतमल के नाम से व्यापार कर रहे हैं।

सेठ श्रीचंदजी का परिवार—आपके कोई पुत्र न होने से आपने नथमलजी को दत्तक लिया। मगर आपका केवल २२ वर्ष की युवावस्था ही में संवत् १९४४ में स्वर्गवास होगया। नथमलजी का राज में अच्छा सम्मान था। आपके भी कोई पुत्र न होने से दुलिचंदजी आपके नाम पर दत्तक आये। आपका जन्म संवत् १९३७ का है। आप पढ़े लिखे, उत्साही, और चतुर पुरुष हैं। आपने अपने स्वर्गीय पिताजी के स्मारक स्वरूप सरदारशाहर में एक दातव्य औषधालय स्थापित किया है। यहाँ यही एक सबसे बड़ा औषधालय है। इसमे करीब ५०, ६०, हजार रुपया लगाया गया था। इसके अतिरिक्त इसके साथही एक जैन पुस्तकालय भी है। बाबू दुलिचन्दजी कुंचबिहार में करीब ९ वर्ष तक वहाँ की कौंसिल के मेम्बर रहे। इसके अतिरिक्त बीकानेर हाईकोर्ट ने सर्व प्रथम आपको सरदारशहर में आनरेरी मजिस्ट्रेट नियुक्त किया। लिखने का मतलब यह है कि आपका यहाँ राज्य एवम् समाज मे अच्छा सम्मान है। आपका व्यापार कूंचबिहार तथा कलकत्ता में मेसर्स कालूराम नथमल के नाम से होता है। जिसमें आपके भाई भींवराजजी का साझा है यह हम ऊपर लिख ही चुके हैं। इसके अतिरिक्त आपके पुत्रों के नाम से कलकत्ता के ताराचन्द दत्त स्ट्रीट में मेसर्स श्रीचंद मोहनलाल के नाम से जूट का व्यापार होता है। आपके दो पुत्र हैं जिनका नाम चम्पालालजी और मोहनलालजी है। कलकत्ते की ताराचन्द दत्त स्ट्रीट वाली बिल्डिंग इन्हीं पुत्रों के नाम से खरीदी हुई है।

सेठ आईदानजी का परिवार—आपके एक मात्र पुत्र सेठ मंगलचन्दजी हुए। आपका जन्म संवत् १९२२ का है। जब कि आपकी अवस्था १५ वर्ष की थी उसी समय आप व्यापार के लिये अपनी फर्म पर कूंच बिहार गये। आपके पिताजी के द्वारा निर्मित की हुई धर्मशाला संवत् १९५४ में भूकम्प के

कारण गिरगई एवम् नष्ट होगई थी। अतएव आपने फिर से उसका निर्माण करवाया। दरबार ने आप को भिन्न २ समयों पर किर्च, बन्दूक, पिस्तौल वगैरह प्रदान कर आपका सम्मान बढ़ाया था। सन् १९०४ में आपको वहां दरबार में फर्स्ट क्लास सीट मिली। इसके पश्चात् फिर सन् १९२५ में आपके सम्मान को विशेष रूप से प्रदर्शन करने के लिये आपको पैरों में सोने का लंगर तथा आसासोटा प्रदान किया। आपके कोई पुत्र न होने से आपके नाम पर बा० जयचन्दलालजी दत्तक लिये गये हैं। आप एक उत्साही युवक हैं। आपको आयुर्वेद का बड़ा शौक है। आपके प्रयत्न से यहाँ एक नवयुवक मंडल स्थापित है आपके एक पुत्र है जिनका नाम भँवरलालजी है। आपकी फर्म पर कूचविहार में जूट का व्यापार होता है। इस परिवार वालों को कूचविहार स्टेट और बीकानेर स्टेट से समय २ कई खास रुक्के प्राप्त हुए हैं।

सेठ ताराचन्दजी सेठिया का परिवार, सरदारशाह

सेठ ताराचन्दजी करीब ८० वर्ष पूर्व तोल्यासर से सरदार शहर में आकर बसे थे। आपका गौत्र सेठिया है। जिस समय आप यहाँ आये आपकी बहुत ही साधारण स्थिति थी। आपका स्वभाव बड़ा तेज एवम् आत्माभिमानी था। आप गरीबों के बड़े पुष्ट पोषक थे। यहाँ तक कि हमेशा आपका तन मन उनके लिये प्रस्तुत रहता था। इसी कारण से आप यहाँ की जनता के माननीय थे। आपका स्वर्गवास १९४० में हुआ। आपके चुन्नीलालजी नामक एक पुत्र हुए। आप बड़े बुद्धिमान और समझदार व्यक्ति थे। अपका स्वर्गवास संवत् १९५३ में हो गया। आपके चार पुत्र सेठ पूरनचन्दजी, रावतमलजी, कालूरामजी और चौथमलजी हैं। सेठ पूनमचन्दजी के पुत्र दीपचन्दजी और लक्ष्मीचन्दजी आजकल पूनमचन्द जीवनमल के नाम से ३५ आर्मेनियन स्ट्रीट में अलग व्यवसाय करते हैं।

सेठ रावतमलजी बड़े व्यापार चतुर और प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति हैं। संवत् १९५३ में जब कि आपकी आयु केवल १३ वर्ष की थी, आप कलकत्ता व्यापार के लिये गये। एवम् धीरे २ आपने अपनी व्यापार चातुरी से बहुत सी सम्पत्ति उपार्जित की। आपने अपनी सम्पत्ति का एक नियम बना लिया था उससे ज्यादा पैदा करना आप नहीं चाहते थे, अतएव नियमित सम्पत्ति के पैदा होते ही सब कारबार अपने छोटे भाइयों को १९८३ में देकर आप आजकल सरदार शहर ही में रहते हैं। आप तेरापंथी संप्रदाय के अनुयायी हैं।

सेठ कालूरामजी एवम् चौथमलजी दोनों ही भाई वर्तमान में रामलाल जसकरन के नाम से आर्मेनियम स्ट्रीट में कपड़े का तथा जूट और कमीशन का तथा चौथमल रामलाल के नाम से सूतापट्टी ४६ में कपड़े का व्यापार करते हैं। सेठ कालूरामजी के रामलालजी, मदनचंदजी, संतोषचन्दजी और सूरजमल जी तथा चौथमलजी के जसकरनजी, फतेचंदजी, करनीदानजी एवम् रतनलालजी नामक पुत्र हैं।

सेठ चिमनीराम हुलासचंद सेठिया

इस परिवार के पुरुष तोल्यासर से सरदारशहर आये। पहले इस परिवार की स्थिति साधारण



सेठ चिमनीराम हुलासचंद सेठिया कलकत्ता

मध्य में—सेठ चौथमलजी सेठिया। ऊपर—(१) बावू चिमनीरामजी सेठिया (२) बावू हुलासचंदजी सेठिया

थी सेठ चौथमलजी देश से चलकर व्यापार के लिये बङ्गाल के धूब्री जिले में गये और वहां पूरनचन्द हुकुमचन्द संचेती के यहां नौकरी की। आपके संतान न होने से आपके नाम पर आपके भतीजे आसकरणजी दत्तक लिये गये। चौथमलजी के भाई सेठ चिमनीरामजी कलकत्ते में हरिसिंह सन्तोषचन्द की दुकान पर नौकरी करते रहे। नौकरी से कुछ सम्पत्ति जोड़कर आपने लोगों के साझे में हुलासचन्द आसकरण के नाम से कपड़े का व्यापार शुरू किया। इस समय आप इसी नाम से अपना स्वतन्त्र व्यापार करते हैं। संवत् १९७३ से व्यापार का भार अपने पुत्र हुलासचन्दजी को देकर आप रिटायर्ड लाइफ व्यतीत कर रहे हैं। आप सरदारशहर में रहते हैं।

सेठ आसकरणजी और हुलासचन्दजी कलकत्ते में अपनी फर्म का योग्यता पूर्वक संचालन कर रहे है। आपकी दुकान १८८ सूता पट्टी में है।

मेसर्स गुलावचंद धनराज सेठिया रिणी

इस खानदान के लोग रिणी में बहुत समय से रहते हैं। इनमें सेठ रामदयालजी के चार पुत्र हुए इनमें से उपरोक्त वंश सेठ गुलाबचन्दजी का है।

सेठ गुलाबचन्दजी का जन्म संवत् १९१२ में हुआ। आप देश से व्यापार के लिये बंगाल गये और वहां मैमनसिंह में दुधोरियों के यहां सर्विस की। आपके रावतमलजी, धनराजजी, हीरालाल जी और हुकुमचन्दजी नामक चार पुत्र हुए। सेठ रावतमलजी का जन्म सं० १९१७ में हुआ। आप १९४९ में कलकत्ता गये और अपने भाई धनराजजी के साथ रावतमल धनराज के नाम से व्यापर शुरू किया इसके पश्चात् आप दोनों भाई अलग अलग होगये। सेठ रावतमलजी का स्वर्गवास १९६७ में होगया। इनके मोहनलालजी और हनुमानमलजी नामक २ पुत्र हुए।

सेठ धनराजजी ने अपने भाई से अलग होकर भूरामल धनराज के नाम से व्यापार आरम्भ किया फिर सं० १९६६ से ये गुलाबचन्द धनराज के नाम से व्यापार करने लगे। इस समय आप के यहां इसी नाम से व्यापार होता है। आपके इस समय मंगलचन्दजी, बुधचन्दजी, चम्पालालजी और ताराचंदजी नामक चार पुत्र हैं।

सेठ रावतमलजी के पुत्र सोहनलालजी भी फर्म के पार्टनर हैं। आप बड़े योग्य हैं। हनुमानमलजी दलाली का काम करते हैं। इस फर्म का १२ नारमल लोहिया लेन कलकत्ता में बड़े स्केल पर देशी कपड़े का व्यापार होता है और हरगोला (बङ्गाल) में इसकी शाखा जूट का व्यापार करती है।

सुजानगढ़ का सेठिया परिवार

इस खानदान का इतिहास सेठ शोभाचन्दजी को प्रारम्भ होना है। उनके पुत्र किशनचन्दजी हुकुमचन्दजी, बींजराजजी, देवचन्दजी, और चौथमलजी हुए, इनमें से यह खानदान सेठ चौथमलजी का है। सेठ चौथमलजी का जन्म १९२२ में हुआ, पहले आप खेती बाड़ी के द्वारा अपनी गुजर करते थे कुछ

समय पश्चात् आप अपने भाई बिंजराजजी के पास दिनाजपुर चले गये। दैवयोग से इसी समय दिनाजपुर में चाड़वास वाले चोरड़ियों की मनिहारी की दुकान में आग लग गई, और उसका जला हुआ गोदाम आपने बहुत सस्ते दामों में खरीद लिया। इस व्यापार में आपको बहुत बड़ा लाभ हुआ और आपकी स्थिति बहुत अच्छी जम गई। इस प्रकार अपने परिवार की स्थिति जमाकर सेठ चौथमलजी १९७४ में और सेठ बींजराजजी १९६८ में स्वर्गवासी हुए। आप दोनों भाई बड़े व्यापार कुशल और धार्मिक व्यक्ति थे। सेठ चौथमलजी के हीरालालजी, लादूरामजी, कुन्दनमलजी एवम् मानिकचन्दजी नामक चार पुत्र हुए। इनमें हीरालालजी बाल्यावस्था में ही स्वर्गवासी होगये शेष तीनों भाई इस समय व्यापार का संचालन कर रहे हैं। कुन्दनमलजी और माणकचन्दजी बड़े देशभक्त सज्जन हैं।

सेठ प्रेमचंद धरमचंद सेठी, मुलतान (पंजाब)

इस कुटुम्ब का मूल निवास बीकानेर है। वहाँ से १५० साल पूर्व सेठ आत्मारामजी सेठी मुलतान (पंजाब) गये और वहाँ जवाहरात का व्यापार शुरू किया। आपके पुत्र प्रेमचन्दजी सेठी के समय में मुलतान दीवान के महलों में जवाहरात की चोरी होगई, और उसका झूठा इलजाम प्रेमचंदजी पर लगा, इससे इन्होंने जवाहरात का व्यापार बन्द करके हाथी दांत का धन्धा शुरू किया। उसके पश्चात् आपने कपड़े का कारवार भी आरम्भ किया। इस व्यापार में आपने विशेष सम्पत्ति उपार्जित की। आपके धरमचन्दजी तथा नथमलजी नामक २ पुत्र हुए।

सेठ धरमचंद सेठी का परिवार—सेठ धरमचन्दजी के पूनमचन्दजी तथा बलदेवप्रसादजी नामक दो पुत्र हुए। इन दोनों भाइयों की धार्मिक कामों की ओर बड़ी रुचि रही है। इन दोनों भाइयों ने संवत् १९७५ में मुलतान में एक विशाल जैन मन्दिर बनवाया। सेठी पूनमचन्दजी के पुत्र बाबुरामजी, तिलोकचन्दजी, सुगनचन्दजी तथा बंशीलालजी हैं। इन बंधुओं के यहाँ मुलतान में "धरमचन्द सुगनचन्द" के नाम से व्यापार होता है। सेठी बलदेवप्रसादजी के पुत्र तोलारामजी, कालूराम जी तथा खुशालचन्दजी हुए। इनमें खुशालचन्दजी की फर्म करांची में व्यापार करती है।

सेठी तोलारामजी ने संवत् १९८० में बम्बई में अपनी दुकान की शाखा तोलाराम भँवरलाल के नाम से खोली। तथा १९८१ में आपका स्वर्गवास हुआ। आपके पुत्र माणकचन्दजी भँवरलालजी तथा संपतलालजी विद्यमान हैं। आप तीनों नवयुवक समझदार व्यक्ति हैं। माणकचन्दजी का जन्म १९६२ में तथा भँवरीलालजी का १९६९ में हुआ। आपके यहाँ मुलतान में प्रेमचन्द धरमचन्द के नाम से कपड़े का व्यापार होता है। तथा यह दुकान बड़ी मातबर मानी जाती है।

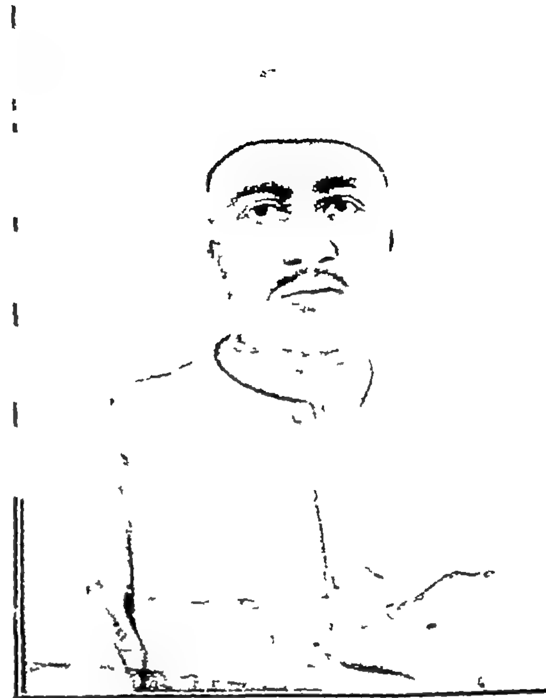
सेठ नथमलजी सेठी का परिवार—सेठी नथमलजी की वय ६२ साल की है। आपके पुत्र उत्तमचन्दजी, ठाकरदासजी तथा टीकमदासजी मुलतान में प्रेमचन्द नथमल के नाम से सराफी व्यापार करते हैं।

सेठ नथमल बख्तावरचन्द सेठी, नागपूर

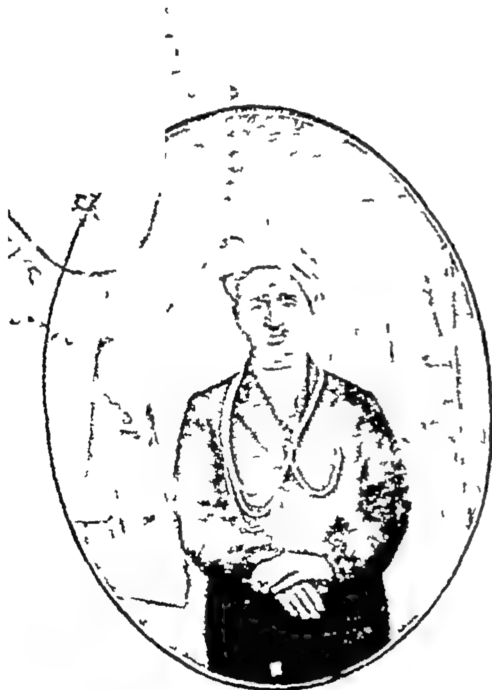
इस खानदान का मूल निवासस्थान बीकानेर है। आप ओसवाल जाति के सेठी गौत्रीय



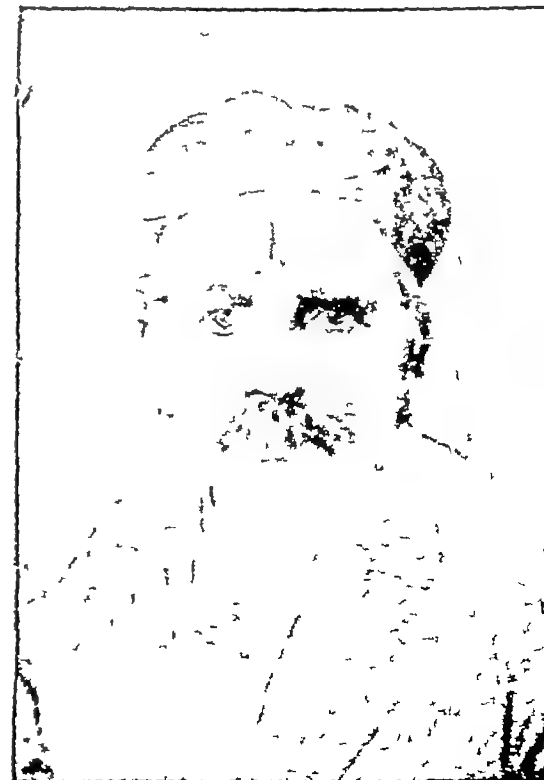
स्व० सेठ बीरादासजी रांका, मद्रास.



देशभक्त पूनमचन्दजी रांका, नागपुर.



सेठ छगनमलजी रांका, मद्रास.



सेठ हंसराजजी रांका, नासिक.

सज्जन हैं। आप श्वेताम्बर जैन आम्नाय के मानने वाले हैं। सेठ बख्तावरचन्दजी सेठी बीकानेर में बहुत प्रतापी व्यक्ति हुए हैं। आपने बीकानेर में सबसे पहले नगर भोजन करवाया जिसे ग्राम सारणी कहते हैं। बीकानेर राज्य में भी आपका बहुत प्रभाव था। धार्मिक कार्य्यों की तरफ भी आपका बहुत लक्ष्य था तथा इनमें आपने बहुत रुपये खर्च भी किये। आपने इस फर्म को नागपुर में १२५ वर्ष पूर्व स्थापित की थी। बख्तावरचन्दजी के पुत्र करणीदानजी हुए। आपने नागपुर के अन्तर्गत मारवाड़ी समाज में बहुत नाम कमाया। आपका यहाँ की मारवाड़ी समाज मे बहुत प्रभाव था। आपकी दुकान नागपुर में अभी तक बड़ी दुकान के नाम से मशहूर है। करणीदानजी के कोई पुत्र न होने से आपके यहाँ श्रीयुत् पूनमचन्दजी दत्तक आये। इस समय आपही इस फर्म के मालिक हैं। आपके इस समय एक पुत्र है जिनका नाम रतनलालजी है। इस समय इस फर्म पर कपड़े का व्यापार होता है।

श्री पूनमचंदजी रांका, नागपुर

श्रीयुत पूनमचन्दजी रांका, जामनेर (पूर्व खानदेश) तालुका के तोंडापुर नामक ग्राम निवासी छोगमलजी रांका के मझले पुत्र हैं आप संवत् १९६२ में नागपुर के रांका शंभूरामजी के ना पर दत्तक लाये गये। रांका शंभूरामजी संवत् १९२० में खींवसर (मारवाड़) से नागपुर आये आपने कपड़े की दुकान की तथा संवत् १९६७ में आप स्वर्गवासी हुए।

रांका पूनमचंदजी का जन्म संवत् १९५६ की मिती आषाढ़ सुदी ४ को तोंडापुर में हुआ आपका शिक्षण घर पर ही हुआ। संवत् १९७७ तक आप अपना घरू कपड़े का व्यापार देखते रहे जब संवत् १९७७ में नागपुर में राष्ट्रीय कांग्रेस का महा अधिवेशन हुआ, उसमें आप प्रतिनिधि के रूप सम्मिलित हुए और वहीं से आपके जीवन में सामाजिक सुधार और राष्ट्रीयता का अध्याय आरम्भ हुआ फलतः उसी समय आपने अपने समाज को जागृत करने के लिये सन् १९२० में "मारवाड़ी सेवा संघ नामक संस्था का स्थापन किया और आपने स्वयं उसके सभापति का स्थान संचालित किया। सन् १९२३ नागपुर के झंडा सत्याग्रह में आपने विशेष रूप से भाग लिया एवम् दिन दिन सामाजिक एवं राष्ट्रीय कार्य्यों में आप नूतन उत्साह से पैर बढ़ाते गये। आपकी धर्मपत्नी श्रीमती धनवती बाई रांका ने परदा प्रथा को तिलांजलि देकर, समाज की स्त्रियों के सम्मुख एक नूतन आदर्श रक्खा है, आप सार्वजनिक सभाओं में भाषण देती हैं तथा हर एक सार्वजनिक कामों में भाग लेती है। इस तरह सेठ पूनमचन्दजी रांका सन् १९३० तक राष्ट्रीय कार्य्यों में सहयोग लेते रहे। इसी समय आपने समाज सुधार के लिये ओसर मोसर विरोधक पार्टी भी स्थापित की। इसके भी आप प्रेसिडेंट रहे।

सन् १९३० से आपने अपने घरू कार्य्यों से सम्बन्ध छोड़कर अपना सब समय कांग्रेस की सेवा की ओर लगाना आरम्भ कर दिया तथा इसी साल तारीख ३१। ७। ३० को राष्ट्रीय महायुद्ध में सम्मिलित होने के उपलक्ष में आप गिरफ्तार किये गये। दोनों बार आपको ऊँचा क्लास दिया गया। लेकिन जेल में आपने दूसरे राजबन्दियों के साथ A.B.C. इस प्रकार तीन प्रकार के व्यवहार देखकर गवर्नमेंट से सबके साथ एक समान व्यवहार करने की प्रार्थना की लेकिन जब आपकी प्रार्थना पर कुछ ध्यान नहीं दिया गया तो

आपने उपवास आरम्भ कर दिया और इस प्रकार निरन्तर ७२ दिनों तक आपने उपवास की तपस्या ता० ९ । ३ । ३१ को गांधी-इरविन-पेक्ट के समझौते के मुताबिक तमाम राजवन्दी छोड़ गये, इस दिन उपवास की हालत में आप भी जेल से मुक्त कर दिये गये ।

इसी प्रकार ९ । १ । ३२ को सत्याग्रह आन्दोलन में सम्मिलित होने के उपलक्ष में आ १० हजार रुपया दण्ड तथा ३ साल ७॥ मास की सजा हुई जो पीछे से घटा कर, १५००) दण्ड के सा साल की करदी गई । इस वार भी आपने गवर्नमेंट से एकसा व्यवहार करने की प्रार्थना की ले फिर भी कोई ध्यान नहीं दिया गया अतः आपने पुनः पूर्ववत् उपवास आरम्भ कर दिया जब लगातार दिनों तक उपवास करते हुए आप बहुत अशक्त होगये तब ता० ४ । ५ । ३३ को सी० पी० गवर्नं आपको स्वयं रिहा कर दिया । बाहर आने पर आपको ज्ञात हुआ कि आपके किसी मित्र ने आपकी से १५००) भर दिये हैं वे रुपये आपने उन्हें सधन्यवाद लौटा दिये ।

इस प्रकार आपका त्याग और तपस्या का पवित्र जीवन ओसवाल समाज के लिये अभि और गौरव का द्योतक है तथा सम्पत्ति के मद में चूर वासनाओं के कीट समाज के नवयुवकों के नवीन मार्ग दर्शक हैं । अभी आपने देश के हितार्थ घी तथा शकर का त्याग कर रक्खा है । इस र आप नागपुर नगर कांग्रेस कमेटी के प्रेसिडेण्ट हैं । आपके छोटे भ्राता भासकरणजी ने भी परदा प्रथा का किया है । आपका विवाह बहुत ही सुधरी प्रथा से हुआ था । आपकी धर्मपत्नी सन् १९३० ४॥ मास के लिये जेल गई थीं इस समय आप सेठ पूनमचन्दजी की कपड़े की दुकान का काम देखते हैं

श्री सौभागमलजी सेठिया (रांका) का खानदान, मद्रास

इस खानदान का खास निवासस्थान नागौर का है । आप लोग रांका सेठिया गौत्रीय ओस श्वेताम्बर जैन समाज के मंदिर आम्नाय को मानने वाले सज्जन हैं । आपके परिवार में श्रीयुत पारस जी सेठिया हुए । आप करीब पचास वर्ष प्रथम नागौर से हैदराबाद आये । यहाँ आपने अनाज का व्या शुरू किया, आपके एक पुत्र हुए जिनका नाम सौभागमलजी था ।

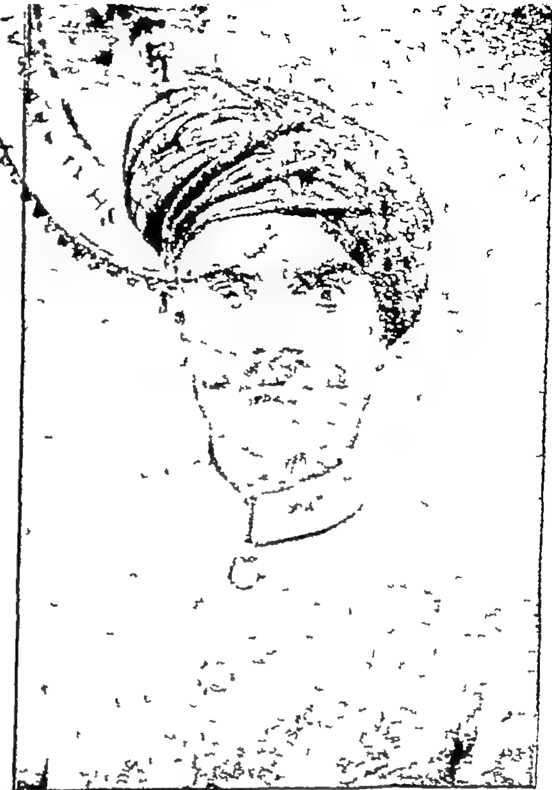
श्री सौभागमलजी सेठिया का जन्म संवत् १९२० में हुआ । आप भी हैदराबाद में अनाज व्यापार करते रहे । उसके पश्चात् सं० १९१७ में आप मद्रास आये और यहाँ पर बैङ्किंग का व्यवस किया । इस फर्म के व्यवसाय में आपको अच्छी सफलता मिली । आपका संवत् १९७६ में स्वर्गवास गया । आप के दो पुत्र हुए जिनके नाम सेठ उम्मेदमलजी तथा धीरजमलजी हैं ।

सेठ उम्मैदमलजी का जन्म संवत् १९४६ में तथा धीरजमलजी का संवत् १९४९ में हुअ आप दोनों भाई बड़े होशियार तथा व्यापार दक्ष पुरुष हैं । आप के हाथों से इस फर्म की बहुत उ हुई । संवत् १९८० तक आप दोनों शामिल व्यापार करते रहे । इसके पश्चात् दोनों अलग २ हो और सेठ उम्मैदमलजी ने मेसर्स सौभागमल उम्मैदमल के नाम से कागज का व्यवसाय तथा धीरजमल ने मेसर्स सौभागमल धीरजमल के नाम से बैङ्किंग का व्यवसाय करना शुरू कर दिया ।

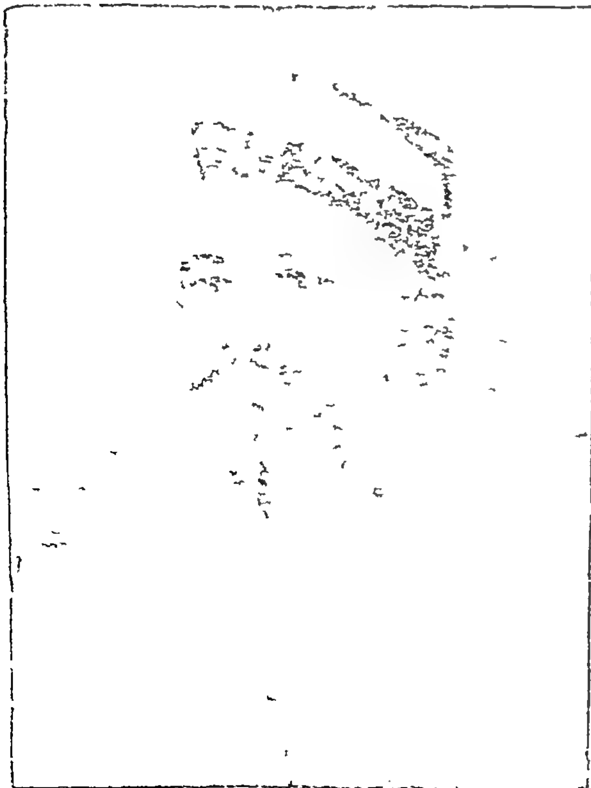
सेठ उम्मैदमलजी के तीन पुत्र हैं जिनके पानमलजी, भंवरलालजी तथा छोटमलजी हैं । इ



सेठ धीरजमलजी सेठिया, मद्रास.



सेठ केवलचन्दजी सेठिया (हजारीमल केवलचन्द) मदुरान्तकम्



स्वर्गीय सेठ चन्नीगजी (चन्नीगजी सूरजमलजी) सादड़ी



श्री मगुलालजी सेठिया (बख्तावरमल मोहनलाल) मद्रास

से श्री पानमलजी अपने पिताजी के साथ कागज के व्यवसाय में काम करते हैं तथा शेष दो बच्चे पढ़ते हैं। सेठ धीरजमलजी के दो पुत्र हैं जिनके नाम क्रम से भीखमचन्दजी तथा मूलचन्दजी हैं।

इन दोनों भाइयों की ओर से धार्मिक, सार्वजनिक तथा परोपकार के कामों में काफी सहायता दी जाती है।

सेठ फौजमल बोरीदास रांका, मद्रास

इस परिवार का मूल निवास-स्थान बगड़ी-सज्जनपुर (मारवाड़) है। वहाँ से सेठ फौजमल जी रांका लगभग संवत् १९२८ में सेण्ट थाम्स् माउण्ट (मद्रास) में आये और लेनदेन का कारबार शुरू किया तथा अल्पकाल में ही आपने अपनी सम्पत्ति की आशातीत उन्नति की। सेंट थाम्स् माउण्ट दुकान के अलावा संवत् १९४५ में आपने चिन्ताद्रिपेठ-मद्रास में भी एक सराफी दुकान खोली। आपके पुत्र सेठ बोरीदासजी रांका शिक्षित और सुयोग्य व्यक्ति थे। आप में अपने पिताजी के सब गुण मौजूद थे। आप संवत् १९६६ में स्वर्गवासी हुए। आपके सामने ही आपके पौत्र जीवराजजी तथा अमोलकचन्दजी राँका का अल्पवय में संवत् १९५६ के पहिले शरीरावसान हो गया था। अपनी दुकान की प्रतिष्ठा को बढ़ाते हुए सेठ फौजमलजी राँका संवत् १९७२ में स्वर्गवासी हुए। सेठ फोजमलजी राँका के कोई सन्तान न रहने से आपने श्री छगनमलजी राँका को गोद लिया।

सेठ छगनमलजी राँका का जन्म संवत् १९४८ में हुआ। मद्रास और बगड़ी के ओसवाल समाज में आपकी अच्छी प्रतिष्ठा है आपने अनेक धार्मिक तथा सामाजिक कार्यों में प्रशंसनीय भाग लिया है।

सेठ छगनमलजी ने अपनी माता की आज्ञानुसार बगड़ी में अमरे बकरों की रक्षा के लिए एक बाड़ा खोला है, जिसमें ३०० बकरों का पालन होता है बगड़ी की श्मशान भूमि में एक धर्मशाला की बड़ी कमी थी अत एव आपने उक्त स्थान पर धर्मशाला बनवा कर जनता के लिये सुविधा की है। बगड़ी स्टेशन पर भी आपने एक विशाल धर्मशाला बनवाई है। बगड़ी में अछूत बालकों के सहायतार्थ आपने एक छोटी सी पाठशाला भी खोल रक्खी है। इसके सिवाय आपने श्री जैन पाठशाला बगड़ी, शान्ति पाठशाला पाली, जैन गुरुकुल ब्यावर, जैन ज्ञान पाठशाला उदयपुर को समय समय पर अच्छी आर्थिक सहायता दी है। आप के पुत्र धीरजमलजी १२ साल के तथा रेखचन्दजी १० साल के हैं। ये दोनों बालक होनहार प्रतीत होते हैं तथा शुद्ध खद्दर धारण करते हैं। छोटी वय में इन्होंने कई भाषाओं का ज्ञान प्राप्त कर लिया है।

इस समय इस परिवार का मद्रास के सेठ थामस माउण्ट तथा चिंताद्रि पैट नामक स्थान पर ब्याज का धंधा होता है। यह दुकान यहाँ अच्छी प्रतिष्ठित समझी जाती है।

सेठ सूरजमल हंसराज, रांका (सेठिया) नाशिक

इस परिवार का मूल निवास बीज वाड़ा (जोधपुर के पास) है। आप स्थानक वासी आम्नाय के मानने वाले सज्जन हैं। सेठ सूरजमलजी राँका ८० साल पहिले देश से नाशिक जिले के सिंदे नामक

स्थान में आये। आपके पुत्र बालारामजी और उनके पुत्र देवीचन्दजी तथा जसराजजी सिंदिया में रहते हैं। तथा रतनचन्दजी के पुत्र नैनसुखजी, माणकलालजी व धनराजजी नाशिक में किराने का व्यापार करते हैं।

सिंदिया से सेठ हंसराजजी राँका शके १८२८ में नाशिक आये तथा यहाँ किराने का काम शुरू किया, आपने इस व्यापार में काफी उन्नति प्राप्त कर फर्म की प्रतिष्ठा व इज्जत को बढ़ाया। आपका जन्म संवत् १९३१ में हुआ आपके पूनमचंदजी, चुन्नीलालजी, मोहनलालजी और फतेचंदजी नामक ४ पुत्र हैं। पूनमचन्दजी स्थानीय म्युनिसिपैलेटी के मेम्बर हैं। चुन्नीलालजी एम० ए० फाइनल और एल० एल० बी० में अध्ययन कर रहे हैं। मोहनलालजी ने मैट्रिक तक शिक्षा पाई है, तथा फतेचन्दजी मैट्रिक में पढ़ रहे हैं। चुन्नीलालजी राँका ओसवाल जैन बोर्डिंग नाशिक के सेक्रेटरी हैं, इसी तरह आप नाशिक जिला ओसवाल सभाके अधिवेशन के सेक्रेटरी थे। मोहनलालजी को राष्ट्रीय कार्मों में भाग लेने के उपलक्ष में सन् १९१२ में ३ मास की जेल हुई थी। यह परिवार नाशिक व आसपास के ओसवाल समाज में अच्छी प्रतिष्ठा रखता है।

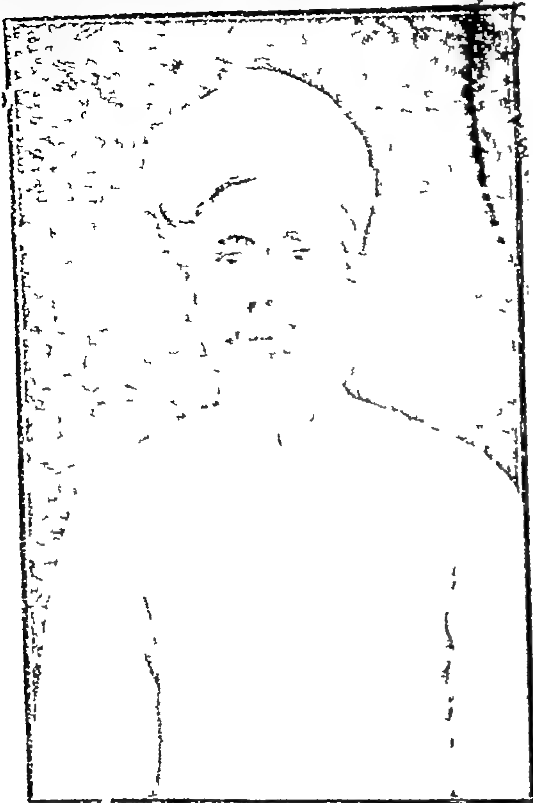
सेठ पूनमचन्द श्रीचन्द रांका, पूना

इस परिवार का मूल निवास स्थान राणी (गोडवाड़) है राणी से सेठ पूरनचन्दजी रांका ६० साल पहिले पूना आये। थोड़े समय तक आपने रामचन्द हिम्मतमल की भागीदारी में व्यापार किया। पश्चात् अपने साले सादडी (गोडवाड़) निवासी सेठ चत्रींगजी की भागीदारी में पूना कैम्प में संवत् १९४४ में दुकान की। इस दुकान ने अंग्रेज लोगों से लेन देन का व्यापार शुरू किया आपने इस व्यापार में बहुत सम्पत्ति कमाकर अपने मकानात दुकानें बंगले आदि बनवाये। इस समय ४६ मालकम टैंक रोड पर पूनमचन्द श्रीचन्द के नाम से इस दुकान पर बैङ्किग तथा प्रापर्टी के किराये का कार्य्य होता है। यहाँ की दुकानों में यह दुकान प्रतिष्ठित मानी जाती है। सेठ पूनमचंदजी के पुत्र कुंदनमलजी तथा चंदनमलजी इस समय सादड़ी में रहते हैं।

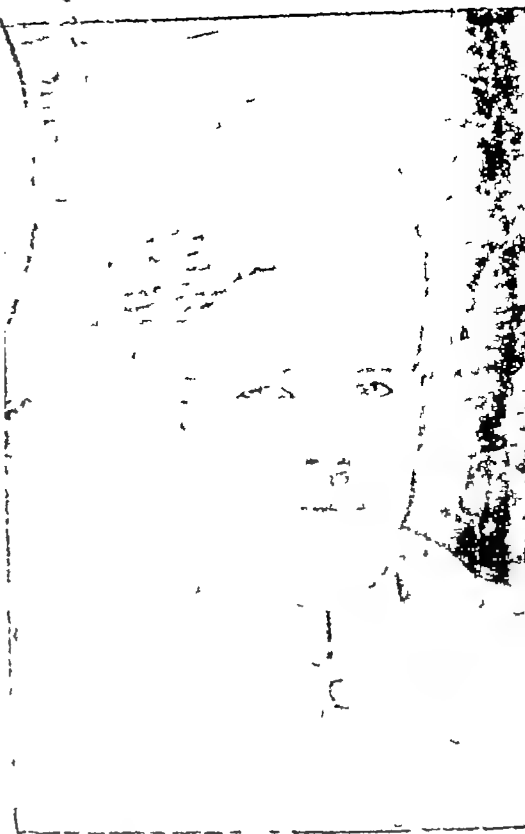
सेठ चत्रींगजी का परिवार—आपने १८ सालों तक सेठ रामचन्द हिम्मतमल पूना वालों की दुकान पर नौकरी की। तदनंतर अपने बहनोई के साझे में पूना में दुकान की। उस दुकान के व्यापार को आपने बहुत बढ़ाया। चतरींगजी सेठ ने सादडी में कई धार्मिक काम किये। आपका जन्म संवत् १९१७ में हुआ। आपने राणकपुरजी के मेले में ७ हजार आबूजी आदि के संघ में ३५०१) तथा न्यात के नोरे में ३१००) लगाये। आपके पुत्र केसरीमलजी का जन्म संवत् १९४४ में हुआ। आप इस समय व्यापार का संचालन करते हैं। केशरीमलजी के पुत्र सागरमलजी तथा जावंतराजजी हैं। सागरमलजी होशियार युवक हैं। आप व्यापार में भाग लेते हैं। यह परिवार लुंका गच्छ का अनुयायी है।

सेठ कीरतमल पन्नालाल रांका, चिंचवड़ (पूना)

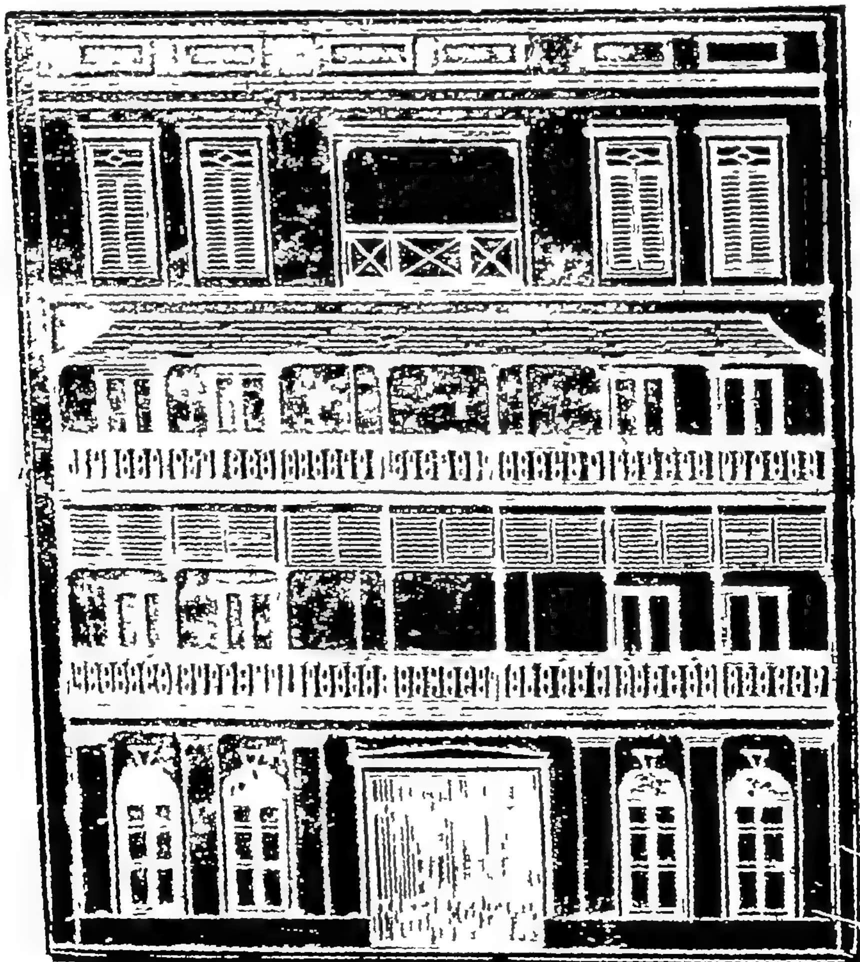
इस परिवार का मूल निवास स्थान भावी (जोधपुर) है। वहाँ से लगभग १०० साल पहिले सेठ तेजमलजी रांका के पुत्र सेठ कीरतमलजी रांका चिंचवड़ आये तथा कपड़ा व अनाज का व्यापार शुरू किया। आपके पन्नालालजी, निहालचंदजी तथा मूलचन्दजी नामक ३ पुत्र हुए। इनमें सेठ पन्नालालजी रांका चिंचवड के अग्रगण्य थे। आप स्थानीय फतेचन्द जैन विद्यालय के प्रथम सभापति थे। इस संस्था की



बाबू सोहनलालजी बाठिया, भीनासर.



बाबू चम्पालालजी बाठिया, भीनासर.



बाबू सोहनलालजी बाठिया बिल्डिंग कलकत्ता.

आपने अच्छी सेवा की। संवत् १९८७ की सावण सुदी ११ को आप स्वर्गवासी हुए। आपके छोटे भाई क्रमशः १९५५ तथा ७२ में स्वर्गवासी हुए।

वर्तमान में सेठ पन्नालालजी रांका के पुत्र हीरालालजी, पूनमचन्दजी तथा वंशीलालजी और निहालचन्दजी रांका के पुत्र लादूरामजी विद्यमान हैं। सेठ हीरालालजी का जन्म संवत् १९५२ में हुआ। आप चिंचवड़ विद्यालय की प्रबंधक कमेटी के मेम्बर और ग्राम पंचायत के प्रधान हैं। आप स्थानक वासी आम्नाय के मानने वाले हैं तथा यहाँ के ओसवाल समाज में प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। आपके यहाँ कीरतमल पन्नालाल के नाम से अनाज का व्यापार होता है।

बांठिया

बांठिया गौत्र की उत्पत्ति

ऐसा कहा जाता है कि संवत् ११६७ में रणथम्भोर के राजा लालसिंह पवार को उसके सात पुत्रों सहित आचार्य्य श्री जिनवल्लभसूरि ने जैन धर्म का प्रतिबोध दिया। उसके बड़े पुत्र का नाम वंठयोद्धार था, इन्हींके वंशज बांठिया कहलाये। इस वंश में संवत् १५०० के लगभग बादशाह हुमायूँ के समय में चिमनसिंहजी बांठिया नामक बड़े प्रसिद्ध और धनवान व्यक्ति हुए। इन्होंने लाखों रुपये लगाकर कई जैन मन्दिरों का उद्धार करवाया और शत्रुंजयका एक विशाल संघ निकाला जिसमें प्रति आदमी एक अकबरी मुहर लहाण में बांटी।

सेठ मौजीरामजी बाँठिया का खानदान भीनासर

इस परिवार के लोग करीब संवत् १९१० में भिनासर में आकर बसे।

सेठ मौजीरामजी इस परिवार में सब से अधिक प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति हुए। आप ही ने लगभग ७५ वर्ष पूर्व कलकत्ता जाकर अपने और अपने छोटे भाई सेठ प्रेमराजजी के नाम से फर्म स्थापित की। आपने अपनी व्यापारिक कुशलता से फर्म की अच्छी उन्नति की। आपका स्वर्गवास सम्वत् १९४१ में हो गया। आप मन्दिर मार्गी जैनी थे—आप बड़े धर्म परायण थे। आपके सेठ पन्नालालजी नामक पुत्र हुए।

सेठ पन्नालालजी—आप सरल और शान्ति प्रकृति के पुरुष थे। व्यापार में आप विशेष दिलचस्पी न रखते थे और अधिकतर अपने देश में ही रहा करते थे। आपके ३ पुत्र हुए सेठ सालिमचन्दजी, हमीरमलजी, और किशनचन्दजी। सेठ किशनचन्दजी कई वर्ष हुए इस फर्म से अलग हो गये हैं। इनमें से सेठ हमीरमलजी बड़े प्रतिभाशाली पुरुष थे। आपकी बुद्धिमत्ता से फर्म ने उत्तररोत्तर उन्नति की। आपका जन्म सं० १९१९ में हुआ था। आप बाईस सम्प्रदाय के जैनी थे और धर्म में आपकी बड़ी निष्टा थी, आपने अपने जीवन काल में बहुत सा रुपया सत्कार्यों में व्यय किया। यही नहीं बल्कि एक मोटी रक़म ५१०००) रु० की एक मुश्त पुण्य खाते निकाल कर अलग फण्ड स्थापित किया और उसमें से समय २ पर अच्छे २ सार्वजनिक कार्यों में व्यय करते रहे। अभी भी इस फण्ड से एक कन्या पाठशाला सुचारुरूप से चल रही है, उसकी देख रेख सेठ सोहनलालजी और चम्पा-

लालजी करते हैं। सेठजी बड़े उदार, दयालु, शान्त-स्वभाव तथा धर्म-परायण थे। आपका स्वर्गवास फाल्गुन बदी १२ सम्वत् १९८५ को हो गया। आपके तीन पुत्र हुए जिनके नाम क्रमशः सेठ कनीरामजी, (जो इनके बड़े भाई सेठ सालिमचन्दजी के दत्तक हैं) सोहनलालजी, और चम्पालालजी हैं। आजकल आप तीनों भाई अलग २ हो गये हैं और अपना २ व्यापार स्वतन्त्र रूप से करते हैं।

इस परिवार की ओर से सभी सार्वजनिक कार्य्यों में सहायता प्रदान की जाती है। आपकी ओर से साधुमार्गी श्री श्वेस्था० जैन हितकारिणी संस्था में १९१११) रुपये प्रदान किये हैं। इसके अतिरिक्त भीनासर स्कूल की वर्तमान बिल्डिङ्ग भी इस परिवार तथा से० बहादुरमलजी बाँठिया द्वारा बनाई गई है इसी परिवार की विशेष सहायता से गंगाशहर से भीनासर तक पक्की सड़क बनाई गई थी। इसी प्रकार गाँव की प्रत्येक संस्था पिंजरापोल वगैरः में भी आपकी ओर से अच्छी सहायता दी जाती है।

बीकानेर गवर्नमेंट में भी आप लोगों का अच्छा मान है। एच० एच० महाराजा साहिब बहादुर बीकानेर की ओर से एक ख़ास रुक्का सेठ हमीरमलजी कनीरामजी के नाम से मिला हुआ है।

सेठ कनीरामजी—आप बड़े साधु प्रकृति के मिलनसार सज्जन हैं। आपका व्यापार पहिले सेठ मौजीरामजी पन्नालालजी के नाम से सम्मिलित रूप में होता था पर कई वर्षों से कलकत्ते में से० सालिमचन्दजी कनीरामजी के नाम से स्वतन्त्र रूप में चलानी एवम् जूट का होता है।

इस फर्म की भी भिन्न २ नामों से ताम्बाहार (धुवड़ी) मनमुख (सिलहट) सोनातोला (बुगड़ा) नामक स्थानों पर और भी शाखायें हैं। इसके अतिरिक्त दिल्ली में इंडोयूरोपियन मैशीनरी कम्पनी के नाम से प्रिंटिंग मशीन एवम् प्रिंटिंग सम्बन्धी सब प्रकार के सामान का व्यापार होता है। इस विषय का बहुत बड़ा स्टाक आपके यहाँ हमेशा मौजूद रहता है। इसकी लाहौर, कलकत्ता, बम्बई में ब्रांचें हैं इसके और भी हिस्सेदार हैं। आपके तीन पुत्र हैं जिनके नाम क्रमशः श्रीयुत तोलारामजी, रामलालजी, और भैरोंदानजी हैं। सेठजी के इस समय एक पौत्र भी है जिसका नाम दौलतरामजी है। आपका बीकानेर स्टेट में अच्छा मान सम्मान है। महाराजा साहिब बहादुर बीकानेर की ओर से आपको कैफियत मिली हुई है। आप सामयिक समाज सुधार के भी बड़े प्रेमी हैं।

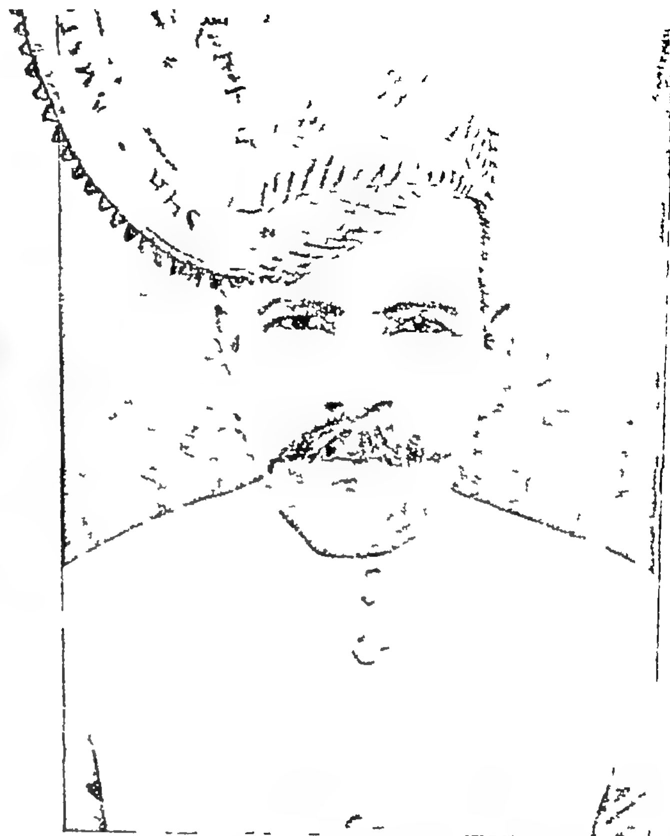
सेठ सोहनलालजी—आप भी पहले शामिल में ही व्यवसाय करते थे, मगर तीन वर्षों से पृथक ही आप अपना स्वतन्त्र व्यापार करते हैं।

आपका कलकत्ते में मेसर्स मौजीराम पन्नालाल के नाम से ४५ आर्मीनियन स्ट्रीट में छाते का बड़े स्केल पर व्यापार होता है तथा हमीरमल सोहनलाल के नाम से १० कैनिंग स्ट्रीट में कपड़े की चालानी का काम होता है। आपकी एक ब्रांच चटगांव में भी है। आपके २ पुत्र हैं जिनके नाम क्रमशः सम्पतलालजी एवम् इन्द्रकुमारजी हैं।

सेठ चम्पालालजी—आप भी आजकल स्वतन्त्र व्यापार कर रहे हैं। आपका व्यापार कलकत्ता में मेसर्स हमीरमलजी चम्पालाल के नाम से नं० २ राजा उडमंट स्ट्रीट में होता है। इस फर्म की शाखाएँ कई स्थानों में हैं जहाँ पर जूट की खरीदी का काम होता है। कलकत्ता में आपका जूट मारकेट में अच्छा नाम है। आपके बेलिङ्ग भी पास कराया हुआ है और आप बड़े मिलनसार, उत्साही, विद्याप्रेमी तथा उदार हृदय हैं।



सेठ कनीरामजी बांठिया, भीनासर



सेठ बहादुरमलजी बांठिया, भीनासर.



सेठ तोलारामजी S/o कनीरामजी बांठिया, भीनासर.



सेठ बहादुरमलजी बांठिया के पुत्र भीनासर.

सेठ पेमराज हजारीमल बाँठिया, भीना र

इस फर्म के मालिकों का मूलनिवास स्थान भीनासर (बीकानेर) में है। आप ओसवाल जाति के स्थानकवासी जैन सम्प्रदाय के सज्जन हैं। कलकत्ते में इस फर्म की स्थापना करीब ८५ वर्ष पहले मौजीराम प्रेमराज के नाम से हुई थी, आप दोनों सहोदर भ्राता थे। उसके पश्चात् सेठ प्रेमराजजी के पुत्र सेठ हजारीमलजी मंगलचन्दजी ने उपरोक्त फर्म से पृथक होकर सं० १९३९ में प्रेमराज हजारीमलके नाम से फर्म की स्थापना की। आपके उद्योग से इस दुकान की अच्छी उन्नति हुई। हजारीमलजी का जन्म सं० १९१३ में और स्वर्गवास सं० १९६९ में हुआ। मंगलचन्दजी का जन्म सं० १९२० में हुआ— आपका देहावसान सं० १९५० में अल्पावस्था में ही हो गया। आप बड़े उदार, तथा सदाचारी, पुरुष थे। इनके श्री रिखबचन्दजी दत्तक लिये गये थे। आपका जन्म १९२७ में और स्वर्गवास सं० १९६३ में हुआ था।

इस समय सेठ रिखबचन्दजी के पुत्र श्रीयुत बहादुरमलजी हैं। आप बड़े योग्य, तथा उदार पुरुष हैं। आपके इस समय तीन पुत्र हैं जिनके नाम क्रमशः श्रीयुक्त तोलारामजी श्यामलालजी और बन्शीलालजी हैं। फर्म का कार्य आपकी तथा आपके बड़े पुत्र की देख भाल में सुचारुरूप से चल रहा है।

इस खानदान की दान-धर्म और सार्वजनिक कार्य्यों की ओर बड़ी रुचि रही है। श्री हजारीमलजी ने अपने जीवन काल ही में एक लाख इकतालीस हजार रुपये का दान किया था जिससे इस समय कई संस्थाओं को सहायता मिल रही है। इसके पहले भी आप अनेकों बार अपनी दानवीरता का परिचय समय २ पर देते रहे हैं। आपकी ओर से भीनासर में एक जैन श्वेताम्बर औषधालय भी चल रहा है। इसके अतिरिक्त यहाँ की पिञ्जरापोल की बिल्डिङ्ग भी आप ही के द्वारा प्रदान की है तथा ओसवाल पञ्चायती के मकान की भूमि भी आपने ही प्रदान की है।

इसके अतिरिक्त यहाँ के व्यवहारिक स्कूल की बिल्डिङ्ग भी मौजीराम पन्नालाल की फर्म के मालिक सेठ हमीरमलजी, कनीरामजी की और आपकी ओर से ही प्रदान की गई है और आपने रु० १९१११) साधुमार्गी जैन हितकारिणी संस्था में दान दिया है।

सेठ बिरदीचन्दजी बांठिया का परिवार, बीकानेर

इस परिवार के लोग बाईस सम्प्रदाय के मानने वाले हैं। इसमें सर्व प्रथम सेठ साहबसिंगजी हुए। आपके पुत्र फूलचन्दजी बीकानेर ही में रहकर व्यापार करते रहे। आपके पुत्र जोरावरमलजी और तिलोकचन्दजी हुए। इनमें से तिलोकचन्दजी का परिवार प्रतापगढ़ चला गया। जिसका परिचय प्रतापगढ़ के बांठिया परिवार के नाम से दिया जा रहा है। सेठ जोरावरमलजी बीकानेर से व्यापार के निमित्त मद्रास गये और वहाँ अंग्रेजों के साथ बैंकिंग व्यापार प्रारंभ किया। इसमें आपको अच्छी सफलता रही। वहीं आपका स्वर्गवास हो गया। आपके बिरदीचन्दजी और लखमीचन्दजी नामक दो पुत्र हुए। लखमीचन्दजी का अल्पायु ही में स्वर्गवास हो गया।

सेठ बिरदीचन्दजी पहले पहल कलकत्ता आये और अपने पुत्र किशनमलजी के साथ बिरदीचन्द

बदनमल के नाम से फर्म स्थापित की। कुछ समय पश्चात् आपके दूसरे पुत्र बदनमलजी भी इसमें शामिल हो गये। आपके व्यवसाय में उतरते ही फर्म की दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति होने लगी। संवत् १९७४ में बिरदी चन्दजी का स्वर्गवास हो गया। आप बड़े धार्मिक प्रवृति के पुरुष थे। आपका समाज में बड़ा आदर, सत्कार था। आपके स्वर्गवास के १० वर्ष पश्चात् आपके दोनों पुत्र अलग २ हो गये। संवत् १९८७ में किशनमलजी का स्वर्गवास हो गया।

इस समय किशनमलजी के पुत्र नथमलजी, मेसर्स बिरदीचँद नथमल के नाम से मनोहरदास कटला में कपड़े का व्यापार करते हैं। आप सज्जन पुरुष हैं। सेठ बदनमलजी भी मनोहरदास के कटले में बिरदीचन्द बदनमल के नाम से कपड़े का व्यापार करते हैं। आपकी प्रकृति भी विशेष कर साधु सेवा और धर्म-ध्यान की ओर रहती है। बीकानेर की ओसवाल समाज में आप अच्छे प्रतिष्ठित व्यक्ति माने जाते हैं। व्यापार में तो आपने बहुत ज्यादा उन्नति की है।

प्रतापगढ़ का बांठिया परिवार

इस परिवार के प्रथम पुरुष सेठ खूबचन्दजी और सेठ सबलसिंहजी दोनों भाई बीकानेर से प्रताप गढ़ नामक स्थान पर आये। यहां आकर खूबचंदजी तत्कालीन फर्म मेसर्स गणेशदास किशनाजी के यहाँ मुनीम हो गये। आपका स्वर्गवास हो जाने पर सेठ सबलसिंहजी ने यहाँ की महारानी (राजा दलपतसिंहजी की पत्नी) के साझे में बैंकिंग का व्यापार प्रारम्भ किया। इसमें आपको अच्छी सफलता रही। इसी कारण से तत्कालीन महाराजा साहब के और आपके बीच में बहुत घनिष्ठता होगई। आप बड़े कर्मवीर चतुर और वीर व्यक्ति थे। महाराजा आपका अच्छा सम्मान करते थे। कहा जाता है कि जब २ महाराजा देवलिया रहते थे तब २ प्रतापगढ़ का सारा शासन भार आप पर और भोजराजजी दागड़िया तथा आपाजी पंडित पर छोड़ जाते थे। संवत् १९१४ के गदर के समय में आपने अपनी बुद्धिमानी और होशियारी से बागियों से राज्य की रक्षा की थी, जिससे महाराजा बहुत खुश हुए और इसके उपलक्ष्य में आपको एक प्रशंसा सूचक परवाना इनायत किया। आपका स्वर्गवास होगया। आपके सौभागमलजी बिरदीचन्दजी नामक दो पुत्र हुए। सेठ खूबचन्दजी के पुत्र का नाम लखमीचन्दजी था।

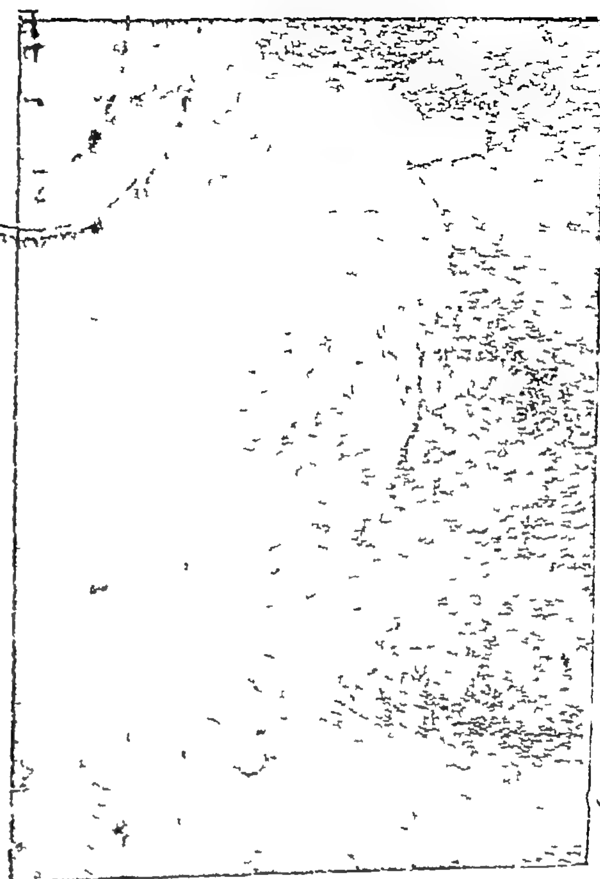
सेठ लखमीचंदजी के पुत्र गुमानमलजी हुए। आपके यहाँ दानमलजी दत्तक आये। दानमलजी के धरमचन्दजी नामक पुत्र हैं। सेठ सौभागमलजी के वंश में आपके पौत्र मिश्रीमलजी और रूपचन्दजी हैं। रूपचन्दजी के पुत्र का नाम कंचनमलजी हैं। आप सब लोग प्रतापगढ़ में निवास करते हैं।

सेठ बिरदीचन्दजी अपने जीवनभर तक स्टेट के इजारे का काम करते रहे। आपके सुजानमलजी और चन्दनमलजी नामक दो पुत्र हुए। इनमें चन्दनमलजी का स्वर्गवास हो गया है।

बांठिया मुंशी सुजानमलजी—आप बड़े योग्य, प्रतिभा सम्पन्न और कारगुजार व्यक्ति हैं। आपका अध्ययन अंग्रेजी और फारसी में हुआ। आप उन व्यक्तियों में से हैं जिन्होंने अपने पैरों पर खड़े होकर आशातीत उन्नति की है। प्रारंभ में आप साधारण काम पर नौकर हुए और क्रमशः अपनी योग्यता, बुद्धिमानी और होशियारी से कई जगह कामदार और दीवान रहे। आपका तत्कालीन पोलिटिकल आफिसरों से बहुत मेल



सेठ चांदमलजी बांठिया (बीजराज जोरावरमल), कलकत्ता.



लाला संतरामजी जैन (संतराम मंगलराम) अमृतसर.



कु० पूनमचंदजी बांठिया S/o चांदमलजी बांठिया.



सेठ नथमलजी बांठिया (विरधीचंद नथमल) कलकत्ता

रहा। उन्होंने आपको कई प्रशंसा पत्र प्रदान किये हैं। आपको पिपलोदा ठिकाने से बक्षाऊ जागीर मिली हुई है तथा प्रतापगढ़ स्टेट से पेंशन मिल रही है। इस समय आप सीतामऊ में शांतिलाभ कर रहे हैं। आपका धार्मिक जीवन भी अच्छा है। उधर ओसवाल समाज में भी आप प्रतिष्ठित और सम्माननीय व्यक्ति माने जाते हैं। आपके जसवंतसिंहजी नामक एक पुत्र हैं। आप इस समय सीतामऊ स्टेट में नायब दीवान हैं। आपकी पढ़ाई B. A. तक हुई है। आपके शेरसिंहजी, सवाईसिंहजी, समरथसिंहजी और बिमलसिंहजी नामक चार पुत्र हैं। आप सब लोग स्थानकवासी संप्रदाय के अनुयायी हैं।

सेठ भागचन्दजी बांठिया का परिवार, जयपुर

इस परिवार के पूर्वजों का मूल निवास स्थान बीकानेर था। वहां से शुरू होते हुए करीब १०० वर्ष पूर्व सेठ भागचन्दजी जयपुर आये। यहां आकर आपने जवाहरात का व्यापार प्रारम्भ किया। इसमें आपको अच्छी सफलता रही। यहां की स्टेट में भी आपका बहुत सम्मन था। आपको यहां सेठ की पदवी मिली हुई थी। आपका स्वर्गवास होगया। आपके छोगमलजी और बींजराजजी नामक दो पुत्र हुए।

सेठ छोगमलजी—आप बड़े प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति थे। आप जीवन भर तक सरकारी नौकरी करते रहे। आप उस समय में जयपुर स्टेट के कस्टम-विभाग के सबसे बड़े आफिसर थे। आपके यहां सूरजमलजी दत्तक आये। आपका भी स्वर्गवास होगया। इस समय आपके दत्तक पुत्र मोतीलालजी विद्यमान हैं और छोगमल सूरजमल के नाम से जयपुर ही में लेन देन का व्यापार करते हैं। आपके पुत्र का नाम पन्नालालजी हैं।

सेठ बींजराजजी—आप व्यापार के निमित्त कलकत्ता गये और व्याज का काम करने लगे। आप संवत् १९५० में बङ्गाल बैंक की सिराजगंज और जलपाईगुड़ी नामक स्थानों के खजांची नियुक्त हुए। आप का स्वर्गवास होगया। आपके जोरावरमलजी, सूरजमलजी, कस्तूरचन्दजी, सौभागमलजी और चांदमलजी नामक पाँच पुत्र हुए। इनमें से जोरावरमलजी का स्वर्गवास हो गया। उनके अमरचन्दजी और उत्तमचन्दजी नामक दो पुत्र हैं। सूरजमलजी दत्तक चले गये। कस्तूरचन्दजी जयपुर में मौजूद हैं। सौभागमलजी का तथा आपके पुत्र हीरालालजी दोनों का स्वर्गवास होगया।

सेठ चांदमलजी—आपके समय में यह फर्म पटना, चटगांव, अकियाब आदि स्थानों पर इम्पीरियल बैंक की खजांची नियुक्त हुई। इसके अतिरिक्त आपने बांठिया एण्ड कम्पनी के नाम से विलायत में भी चांदी सोने का काम करने के लिये फर्म खोली। इस समय आपका व्यापार कलकत्ता, जलपाईगुड़ी और चटगांव में हो रहा है। यह फर्म चाय बागान की मैनेजिंग एजन्ट है। चटगाँव में आपकी जमींदारी भी है। इस समय आपकी फर्म पर बींजराज जोरावरमल के नाम से व्यापार होता है। अन्यत्र बुलियन कम्पनी लि० के नाम से आप व्यापार करते हैं। आपके पूनमचन्दजी और पदमचन्दजी नामक २ पुत्र हैं। इनमें से बड़े व्यापार में सहयोग लेते हैं।

श्री मगनमलजी बांठिया का परिवार, अजमेर

इस परिवार के सेठ मगनमलजी ने कई बड़े २ ठिकानों पर मुनीमात की सर्विस की। आपके इस समय चार पुत्र विद्यमान हैं जिनके नाम क्रमश. बा० मानकमलजी, कस्तूरमलजी, कल्याणमलजी और इन्द्रमलजी हैं।

माणकमलजी बांठिया—आपका अध्ययन मेट्रिक तक हुआ। आप करीब २० वर्षों से रेल्वे में सर्विस कर रहे हैं। आप मिलनसार सज्जन हैं।

कस्तूरमलजी बांठिया—आपका जन्म संवत् १९५१ का है। आपने बी० काम करने के पश्चात् बिड़ला ब्रादर्स लिमिटेड कलकत्ता के यहाँ सर्विस की। यहां आपकी होशियारी और बुद्धिमानी से फर्म के मालिक बहुत प्रसन्न रहे। यहां तक कि आपको उन्होंने अपनी लण्डन फर्म दी ईस्ट इण्डिया प्रोड्यूज कम्पनी लिमिटेड के मैनेजर बनाकर भेजे। इस फर्म पर भी आपने बहुत सफलता के साथ काम किया। वहां आप इण्डियन चेम्बर आफ कामर्स के वाइस प्रेसिडेण्ट तथा आर्य भवन के सेक्रेटरी रहे थे। आप विलायत सकुटुम्ब गये थे। आजकल आप अजमेर में बांठिया एण्ड कम्पनी के नाम से बुक सेलिंग का व्यवसाय करते हैं। आपको व्यापारिक विषयों का अच्छा ज्ञान है। आपने इस विषय पर 'बहीखाता' 'मुनीमी' इत्यादि पुस्तकें भी लिखी हैं। आप मिलनसार और सरल व्यक्ति हैं।

कल्याणमलजी बांठिया—आप ने बी० एस० सी० तक शिक्षा प्राप्त की। आप कोटे के सेठ समीरमलजी बांठिया के यहां दत्तक चले गये। कोटा स्टेट में आप कई स्थानों पर नाजिम रहे। इस समय आप इन्द्रगढ़ ठिकाने के कामदार हैं। आपभी मिलनसार और सज्जन व्यक्ति है।

इन्द्रमलजी बांठिया—आप इस समय अपने बड़े भ्राता कस्तूरमलजी के साथ व्यापार में सहयोग प्रदान करते हैं।

सेठ बख्तावरमल जीवनमल बांठिया, सुजानगढ़

इस परिवार के लोग बांठड़ी नामक स्थान के निवासी थे। वहाँ से करीब १०० वर्ष पूर्व सुजानगढ़ में आये। इन्हीं में सेठ बींजराजजी हुए। आपने पहले पहले बंगाल में जाकर शेरपुरा (मैमनसिंह) में साधारण दुकानदारी का काम प्रारम्भ किया। पश्चात् सफलता मिलने पर और भी शाखाएँ स्थापित कीं। इन सब फर्मों में आपको अच्छा लाभ रहा। आप तेरापन्थी सम्प्रदाय के अनुयायी थे। आपका स्वर्गवास होगया। आपके रूपचन्दजी, बख्तावरमलजी और हजारीमलजी नामक तीन पुत्र हुए। संवत् १९६४ तक इन सबके शामिल में व्यापार होता रहा पश्चात् फर्म बन्द हो गई और आप लोग अलग अलग स्वतन्त्र रूप से व्यापार करने लगे। रूपचन्दजी का स्वर्गवास होगया हजारीमलजी के कोई पुत्र नहीं है। बख्तावरमलजी का स्वर्गवास भी हो गया। आपके जीवनमलजी नामक एक पुत्र है।

बाबू जीवनमलजी—आपने प्रारंभ में कपड़े की दलाली का काम प्रारंभ किया। पश्चात् बेगराजजी चोरड़िया बिदासर वालों के साझे में कलकत्ता में मोतीलाल सोहनलाल के नाम से व्यापार प्रारम्भ किया। एक वर्ष पश्चात् इसी नाम को बदलकर आपने जीवनमल सोहनलाल कर दिया। सोहनलाल

जी, बेगराजजी के पुत्र हैं। इस समय इस फर्म पर नम्बर ४ दहीहट्टा में चलानी का काम होता है। इसके अतिरिक्त इस फर्म की खुलना, लालमनीरहार, और मैमनसिंह में भिन्न २ नामों की फर्मे हैं जहां पर कपड़े का व्यापार होता है। मैमनसिंह में आपकी चार और ब्रांचें हैं। उन पर भी कपड़ा एवम् लकड़ी का व्यापार होता है।

सेठ शोभाचन्दजी बांठिया का परिवार, पनरोठी

इस फर्म के मालिकों का मूलनिवास स्थान नागौर का है। आप ओसवाल जाति के बांठिया गौत्रीय जैन श्वेताम्बर मंदिर आम्नाय को मानने वाले सज्जन हैं।

श्री शोभाचन्दजी का जन्म संवत् १९३० का था। आप बड़े साहसी और कर्मवीर पुरुष थे। आप संवत् १९५० में पहले पहल नागौर से गुलेचगढ़ गये और वहां अपना फर्म स्थापित किया। वहाँ से संवत् १९७४ में पनरोटी आये और यहां आकर शोभाचन्द सुगनचन्द के नाम से अपना फर्म स्थापित किया। संवत् १९८८ में आपका स्वर्गवास होगया।

आपके एक पुत्र हैं जिनका नाम सुगनमलजी हैं। आपका जन्म संवत् १९५२ का है। आप इस समय पनरोटी में बैङ्किग का व्यापार करते हैं। आपके तीन पुत्र हैं जिनके नाम भँवरलालजी, जवेरीलालजी और मगनराजजी हैं। श्री सुगनमलजी ने संवत् १९८९ में कोलर में मेसर्स सुगनमल जवरीमल के नाम से बैङ्किग व्यवसाय की दुकान खोली है।

श्रीयुत् शोभाचन्दजी बड़े धार्मिक और योग्य पुरुष थे। आपकी ओर से पनरोटी में सदाव्रत चालू है। शोभाचन्दजी का स्वर्गवास होने पर आपके पुत्र सुगनचन्दजी ने ५०००) धार्मिक कार्यों में लगाये। इसी प्रकार आपने ओशियां की धर्मशाला में एक कमरा बनवाया और पनरोटी की स्मशान भूमि में एक धर्मशाला बनवाई।

नाहटा

सेठ पूनमचंद औंकारदास नाहटा, भुसावल

इस परिवार का मूल निवास जेतारण (जोधपुर) है। देश से सेठ हंसराजजी नाहटा लगभग १२५ साल पहले व्यापार के निमित्त बामणोद (भुसावल) आये। आपके पुत्र अमरचन्दजी नाहटा के हाथों से इस दुकान की काफ़ी तरक्की हुई। आपका संवत् १९५९ में स्वर्गवास हुआ। आपके ताराचन्दजी तथा औंकारदासजी नामक दो पुत्र हुए इनमें ताराचन्द जी का संवत् १९५९ में स्वर्गवास होगया। आपके पुत्र उदयचन्दजी विद्यमान हैं।

औंकारदासजी नाहटा—आप अमरचन्दजी नाहटा के पुत्र थे। आपने भुसावल तथा आसपास के ओसवाल समाज में उत्तम प्रतिष्ठा प्राप्त की। आपके पुत्र सेठ पूनमचन्दजी नाहटा विद्यमान हैं।

पूनमचंदजी नाहटा—आप शिक्षा प्रेमी तथा सुधार प्रिय सज्जन हैं। लगभग १२ सालों से आप ओसवाल शिक्षण संस्था के महा मन्त्री हैं। यह संस्था ओसवाल युवकों को उच्च शिक्षा प्राप्त करने में आर्थिक सहायता देती है। इस संस्था का तमाम संचालन आप ही के जिम्मे है। आप भुसावल म्युनिसिपैलिटी के वाइस प्रेसिडेंट भी रहे हैं। जातीय सुधार के कामों में आप बड़े उत्साह से भाग लेते हैं। आप खानदेश तथा वरार के शिक्षित ओसवाल सज्जनों में वजनदार तथा अग्रगण्य व्यक्ति हैं। आप के यहां पूनमचन्द नारायणदास के नाम से कृषि तथा साहुकारी लेनदेन का काम होता है।

इस प्रकार सेठ उदयचन्दजी नाहटा के जवरीलालजी, मंसुखलालजी तथा सरूपचन्दजी नामक ३ पुत्र हैं। इनमें जंवरीलालजी नाहटा एडवोकेट धूलिया में प्रेक्टिस करते हैं।

सेठ चांदमल भोजराज नाहटा, मोमासर

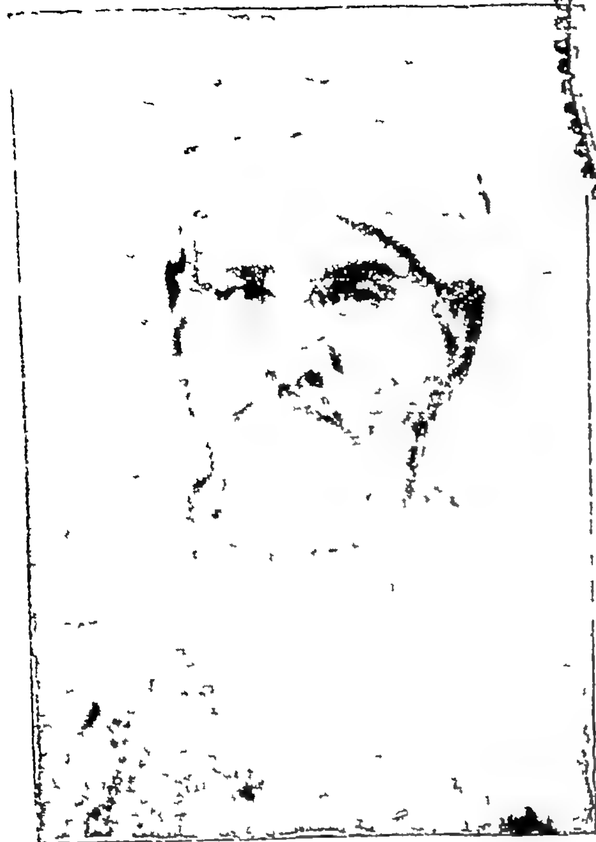
इस परिवार के पूर्व पुरुष सेठ वीरभानजी करीब १०० वर्ष पूर्व तोल्यासर को छोड़कर मोमासर नामक स्थान पर आकर बसे। आपके ६ पुत्र हुए, जिनके नाम क्रमशः हुकमचन्दजी, छोगमलजी, गुलाबचन्दजी, चौथमलजी, केशरीचन्दजी और शेरमलजी था। जिनका परिवार इस समय अलग २ व्यापार कर रहा है। यह फर्म सेठ गुलाबचन्दजी के परिवार की है।

सेठ गुलाबचन्दजी—आपने कलकत्ता आते ही पहले मोमासर निवासी सतीदास उम्मेदमल के यहां नौकरी की। पश्चात् आप महासिंह राय मेघराज बहादुर के यहां रहे। इसके पश्चात् आपने अपनी स्वतन्त्र फर्म स्थापित की। आप बड़े योग्य, व्यापार चतुर और प्रतिभावान व्यक्ति थे। आप के हाथों से फर्म की बहुत उन्नति हुई। आपका स्वर्गवास संवत् १९८७ में होगया। आपके कर्मचन्दजी नामक एक पुत्र हुए।

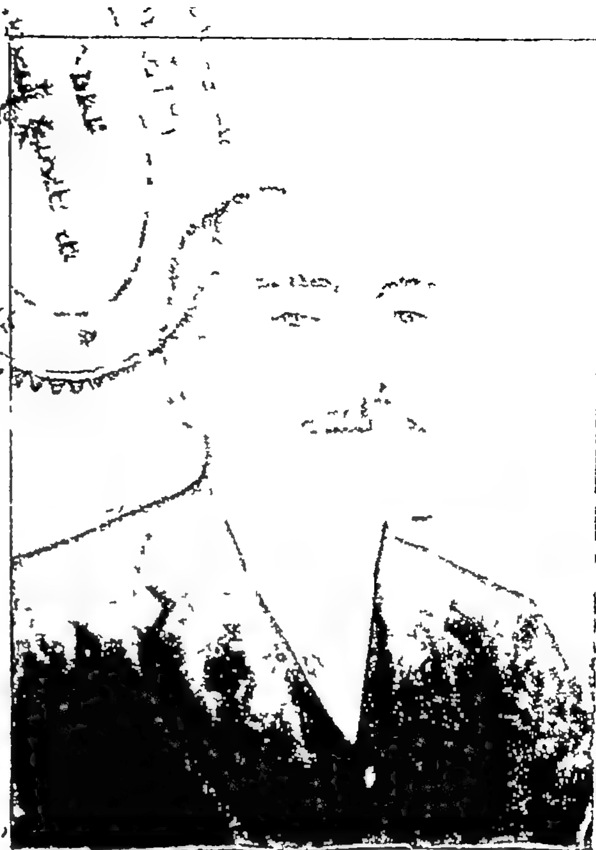
सेठ करमचंदजी—आपका जन्म संवत् १९३८ का है। आप भी अपने पिताजी के साथ व्यापार कार्य्य करते रहे। आपने अपनी एक और फर्म नबाबगंज में खोली और जूट का व्यापार प्रारम्भ किया। इसके अतिरिक्त आपने शोराक मिल, न्यू शोरोक मिल, सूरतमिल, स्टेंडर्ड मिल, चायना मिल, मफतलाल आईलमिल, अंबिका मिल आदि कई मिलों की दलाली और सोल ब्रोकरी का काम किया। इस व्यवसाय में आपको बहुत सफलता रही। आपका स्वर्गवास आपके पिताजी के चार रोज पश्चात् ही होगया। इस समय आपके आसकरनजी चांदमलजी और पनेचन्दजी नामक तीन पुत्र हैं। आप तीनों भ्राता शिक्षित, मिलनसार और सज्जन व्यक्ति हैं। आप बड़ी होशियारी से अपनी फर्म का संचालन कार्य्य कर रहे हैं। आप श्वेताम्बर तेरापंथी संप्रदाय के अनुयायी हैं।

सेठ आसकरणजी के हनुतमलजी, बच्छराजजी, मगराजजी और दौलतरामजी नामक पुत्र हैं। चांदमलजी के पुत्रों का नाम अमिचन्दजी और शुभकरनजी हैं। आप सब लोग अभी पढ़ रहे हैं।

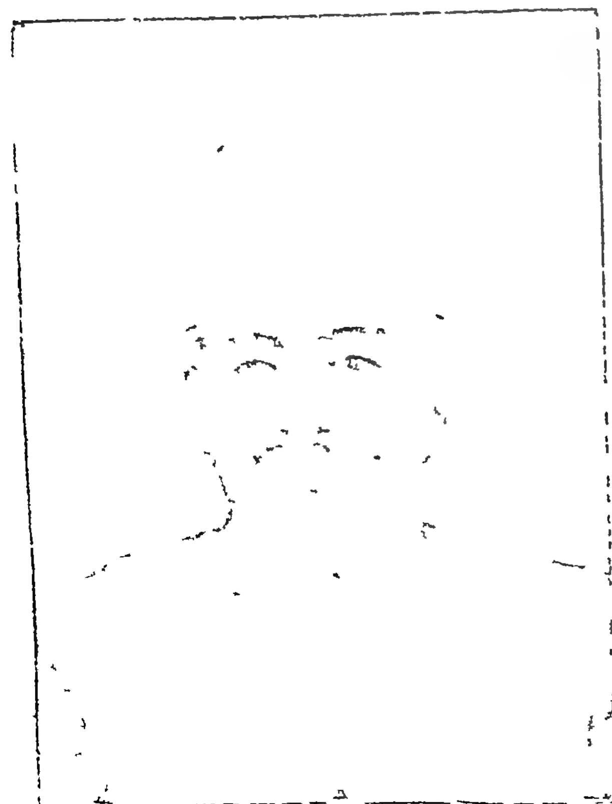
इस फर्म का व्यापार कलकत्ता में उपरोक्त नाम से नं० ४ राजा उडमण्ड स्ट्रीट में होता है। इसकी ब्रांच नबाबगंज में है। जहां जूट और कमीशन का काम होता है। मोमासर में यह परिवार बहुत प्रतिष्ठित माना जाता है।



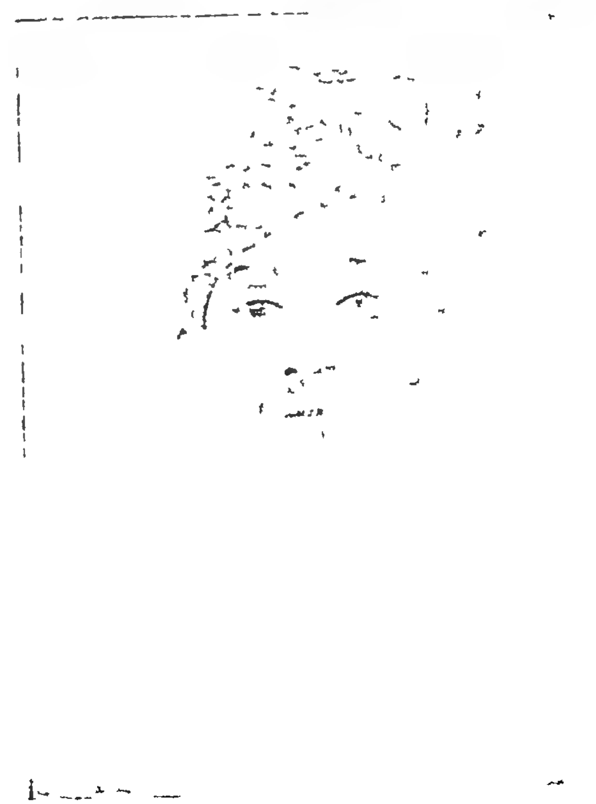
सेठ गुलाबचन्दजी नाहटा (चांदमल भोजराज) मोमासर.



सेठ करमचदजी नाहटा (चांदमल भोजराज) मोमासर



सेठ आसकरणजी नाहटा (चांदमल भोजराज) मोमासर.



सेठ चांदमलजी नाहटा (चांदमल भोजराज) मोमासर

सेठ मुल्तानचंद चौथमल नाहटा, छापर

इस परिवार के पुरुष सेठ खड़गसिहजी के पुत्र हुकमचन्दजी और मानमलजी के पुत्र जोरावरमल जी और मुल्तानचन्दजी करीब ८० वर्ष पूर्व चाड़वास नामक स्थान से छापर में आये। इस समय आप लोगों की बहुत साधारण स्थिति थी। आप लोग पहले पहल बंगाल प्रांत के ग्वालपाड़ा नामक स्थान पर गये एवम् हुकमचन्द मुल्तानचन्द के नाम से अपनी फर्म स्थापित की। इसमें जब अच्छी सफलता रही तब आपने इसी नाम से कलकत्ता में भी अपनी एक ब्रांच खोली। इन दोनों फर्मों से आपको अच्छा लाभ हुआ। संवत् १९५९ में आप लोग अलग २ होगये। इसी समय से हुकुमचन्दजी के वंशज अपना अलग व्यापार कर रहे हैं। सेठ जोरावरमलजी का तथा सेठ मुल्तानचन्दजी का स्वर्गवास हो गया। सेठ जोरावरमलजी के २ पुत्र हुए जिनके नाम सेठ चौथमलजी और तखतमलजी था। इनमें से तखतमलजी सेठ मुल्तानचन्दजी के नाम पर दत्तक रहे। आप दोनों भाइयों ने भी फर्म का योग्यता पूर्वक संचालन किया। इसी समय से इस फर्म पर उपरोक्त नाम पड़ रहा है। आप दोनों भाई बड़े प्रतिभा संपन्न थे। आपने पान बाज़ार, श्यामपुर, कुईमारी औा डंडरू नगर आदि स्थानों पर भिन्न २ नामों से अपनी शाखाएँ स्थापित कीं। सेठ चौथमलजी का स्वर्गवास होगया। आपके पृथ्वीराजजी, बरदीचन्दजी और कुन्दनमलजी नामक तीन पुत्र हैं। सेठ तखतमलजी इस समय विद्यमान हैं। आपके इस समय ६ पुत्र हैं जिनके नाम मन्नालालजी, पदमचन्दजी, मोतीलालजी वगैरह हैं। आप सब लोग व्यापार संचालन में भाग लेते हैं। आप लोगों ने मऊनाट मंजन में एक और ब्रांच खोली हैं। जहां स्थानीय बने हुए कपड़े का व्यापार होता है। आप लोग मिलनसार और सज्जन हैं। बाबू मोतीलालजी बी० ए० में अध्ययन कर रहे हैं। आप करीब तीन साल से ओसवाल नवयुवक के ज्वाइंट सम्पादक हैं। आप कवि भी हैं।

आप लोगों का उपरोक्त स्थानों पर भिन्न भिन्न नामों से बैङ्किङ्ग, जूट और कपड़े का व्यापार होता है। आप लोग तेरापन्थी श्वेताम्बर जैन संप्रदाय के अनुयायी है।

सेठ उदयचन्दजी राजरूपजी नाहटा, बीकानेर,

इस परिवार के पूर्व पुरुषों का मूल निवास स्थान कानसर नामक ग्रॉम था। वहाँ से ये लोग जलालसर होते हुए डाडूँसर नामक स्थान पर आये। यहाँ से फिर सेठ जैतरूपजी के पुत्र उदयचन्दजी, राजरूपजी, देवचन्दजी और बुधमलजी करीब ५० वर्ष पूर्व बीकानेर आकर बसे।

सेठ उदयचन्दजी का परिवार—सेठ उदयचन्दजी इस परिवार में नामांकित व्यक्ति हुए। संवत् १९०० के करीब आप ग्वालपाड़ा (बंगाल) नामक स्थान पर गये एवम् वहाँ अपनी एक फर्म स्थापित की। इसमें आपको बहुत सफलता रही। आपने संवत् १९०५ में यहाँ एक जैन मन्दिर भी श्री संघ की ओर से बनवाया। तथा उसमें अच्छी सहायता भी प्रदान की। आपके पुत्र न होने से आपके नाम पर दानमलजी दत्तक लिये गये। आप विशेष कर देश ही में रहे। आप निः संतान स्वर्गवासी हो गये अतएव आपके नाम पर मेघराजजी दत्तक आये। आजकल आप ही इस फर्म का संचालन करते हैं। आप मिलनसार व्यक्ति हैं। आपके केसरीचन्दजी और बसंतीलालजी नामक दो पुत्र हैं।

सेठ राजरूपजी देवचन्दजी का परिवार—आप दोनों भाई बीकानेर में व्यवसाय करते रहे। आप लोगों का स्वर्गवास होगया। सेठ राजरूपजी के तीन पुत्र लखमीचन्दजी, दानमलजी और शंकरदासजी हुए। दानमलजी दत्तक चले गये। सेठ लखमीचन्दजी ग्वालपाड़ा का काम काज देखते रहे। आजकल आपके भँवरलालजी नामक एक पुत्र हैं। आप पढ़े लिखे सज्जन हैं। सेठ शंकरदानजी इस समय विद्यमान हैं। आपने अपने समय में फर्म की और भी शाखाएँ खोलकर उन्नति की। आपके इस समय भैरोंदानजी, अभयराजजी, सुमेराजजी, मेघराजजी और अगरचन्दजी नामक पुत्र हैं इनमें मेघराजजी दत्तक चले गये हैं। शेष सब लोग व्यवसाय का संचालन करते हैं। सेठ भैरोंदानजी के पुत्र का नाम भँवरलालजी हैं।

श्री अगरचन्दजी तथा भँवरलालजी को इतिहास का काफ़ी शौक है। आपने अपनी निज की एक लायब्रेरी खोलरखी है। जिसमें १००० के करीब हस्त लिखित ग्रंथ हैं। साथ ही आप लोगों ने अभय ग्रंथ माला के नाम से एक सिरीज निकालना भी प्रारम्भ की है।

इस परिवार का व्यापार इस समय कलकत्ता, बोलपुर सिलहट वग़ैरह २ स्थानों पर होता है।

सरदार शहर का नाहटा परिवार

उपरोक्त नाहटा परिवार के पूर्व पुरुष सेठ हुकुमचन्दजी लाडनू से सरदार शहर में आकर बसे आपके सूरजमलजी हीरालालजी, बुधमलजी और चाँदमलजी नामक चार पुत्र हुए।

सेठ बुधमलजी—आप बड़े प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति थे। संवत् १९१० में आपने कलकत्ता में सूरजमल बुधमल के नाम से अपनी फ़र्म स्थापित की। इसके पश्चात् आप सब भाई अलग २ हो गये। उसके पश्चात् संवत् १९२६ में दो भाइयों की सूरजमल चाँदमल के नाम से और दो की हीरालाल बुधमल के नाम से कपड़े की दुकानें स्थापित हुईं। इन चारों भाइयों का स्वर्गवास हो गया है और इनके वंशज इस समय अलग-अलग अपना कार बार करते हैं।

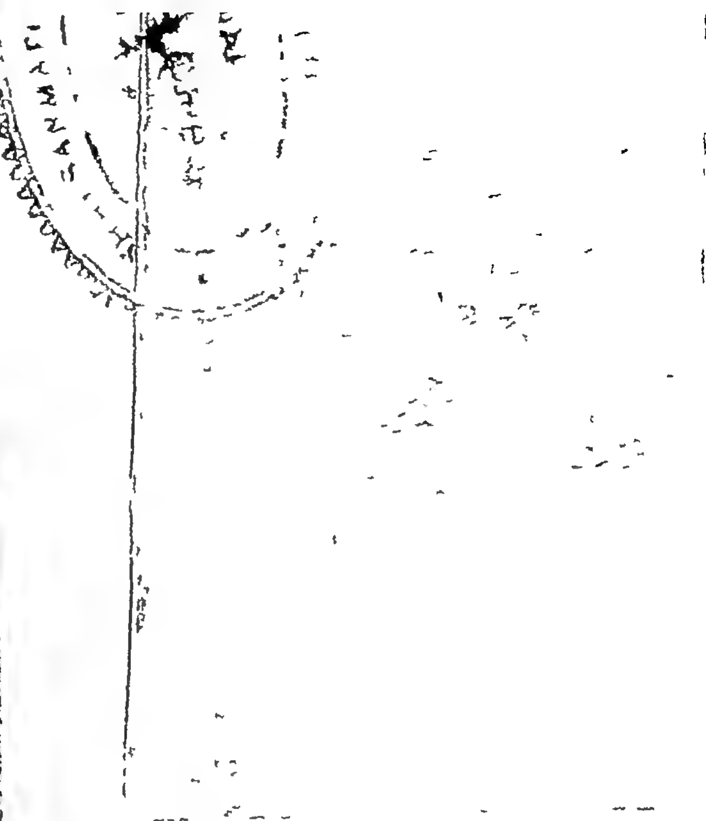
सेठ सूरजमलजी का फ़र्म इस समय "सूरजमल धनराज" के नाम से चल रहा है। सेठ सूरजमलजी धनराजजी तथा धनराजजी के पुत्र शोभाचन्दजी स्वर्गवास हो गया है। शोभाचन्दजी के पुत्र वृद्धिचन्दजी वर्त्तमान में इस फ़र्म के मालिक हैं। आपके यहाँ १० आॅर्मेनियन स्ट्रीट में बैङ्किग कारबार होता है आपके एक पुत्र है जिनका नाम जीवनमलजी है।

सेठ हीरालालजी के भैरोंदानजी चुन्नीलालजी और जुहारमलजी नामक तीन पुत्र हुए। आप लोग हीरालाल भैरोंदान के नाम से कपड़े का व्यापार करते रहे इन तीनों भाइयों का स्वर्गवास हो चुका है।

सेठ भैरोंदानजी के पुत्र बालचन्दजी इस समय लाइफ़ और फ़ायर इन्स्यूरेंस की दलाली करते हैं। आप पूर्वीय और पश्चात्य दर्शनशास्त्रों के अच्छे जानकार हैं। लेखनकला में भी आप दक्ष हैं। आपके पुत्र का नाम पूनमचन्दजी है। सेठ चुन्नीलालजी के करणीदानजी और करणीदानजी के छगनमलजी नामक पुत्र हैं। जुहारमलजी के पुत्र मोतीलालजी हैं आप पाट की दलाली करते हैं। पाट के व्यापारियों में आपका अच्छा सम्मान है। आपके पूसराजजी और शुभकरणजी नामक दो पुत्र हैं।



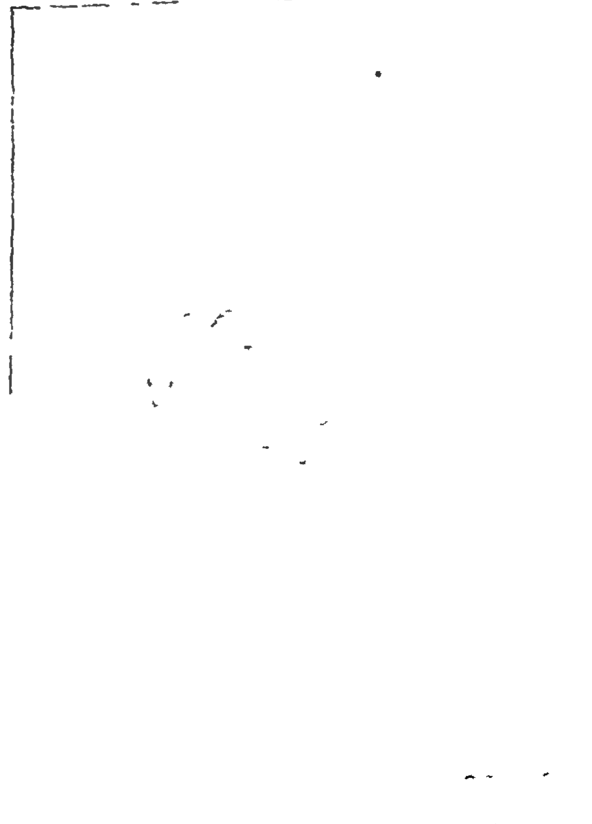
बाबू चम्पालालजी नाहटा (नाहटा परिवार) सरदारशहर.



बाबू चन्दनमलजी नाहटा (नाहटा परिवार) [illegible]



बाबू माणकचन्दजी नाहटा (नाहटा परिवार) सरदारशहर.



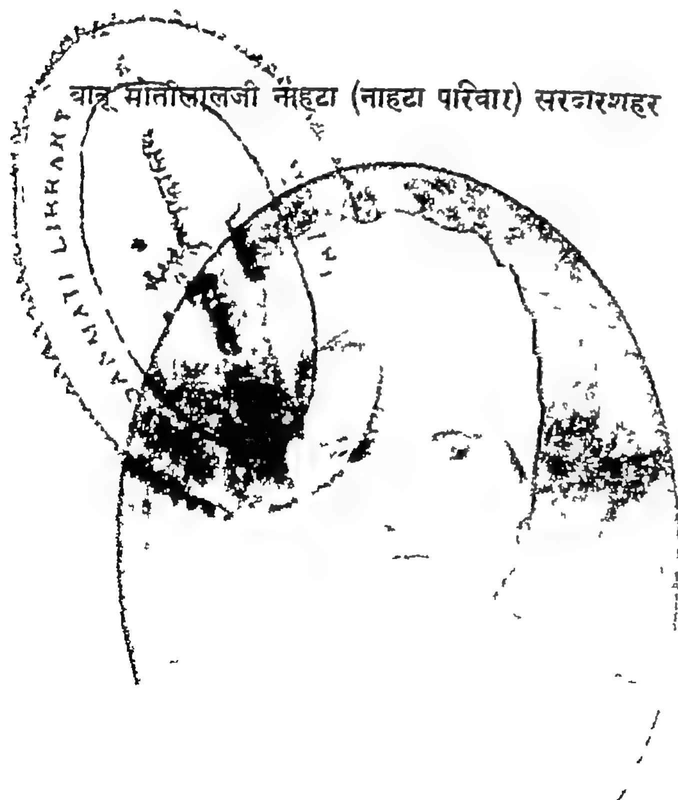
[illegible]



बाबू मोतीलालजी नाहटा (नाहटा परिवार) सरदारशहर



बाबू बालचंदजी नाहटा (नाहटा परिवार) सरदारशहर



बाबू भंवरमलजी नाहटा (नाहटा परिवार) सरदारशहर



कुँवर तोलारामजी नाहटा (लखमीचंद तोलाराम) राजगढ़

सेठ बुधमलजी ने अपने भाइयों से अलग होकर संवत् १९५४ में बुधमल नथमलके नाम से अपना फर्म स्थापित किया। इस पर कपड़े और बैङ्किंग का काम होता था आपके हाथों से इस फर्म की बहुत उन्नति हुई। आप बड़े योग्य और व्यापार कुशल सज्जन थे। आपका स्वर्गवास सं० १९४६ में हुआ। आपके नथमलजी उदयचन्दजी और जयचन्दजी नामक तीन पुत्र हुए। इनमें से उदयचन्दजी अपने काका चाँदमलजी के यहाँ दत्तक चले गये।

नथमलजी तथा जयचन्दजी दोनों भाईपहले 'बुधमल नथमल' के नाम से शामिलात में कारबार करते रहे। पश्चात् सं० १९८२ में अलग २ हो गये और अलग २ नाम से अपना व्यापार करने लगे।

नथमलजी ने अपने शामलात वाले फर्म की बहुत तरक्की की। आपका स्थानीय पंच-पंचायती में बहुत नाम था। आजकल आप देश ही में विशेष रूप से रहते हैं। आपके पुत्र नेमीचन्दजी फर्म का कार्य संचालन करते हैं इस समय आपका फर्म 'नेमीचन्द धर्मचन्द' के नाम से ८ पोर्च्युगीजचर्च स्ट्रीट में चल रहा है। नेमीचन्दजी बड़े सज्जन, मिलनसार एवं खुश मिजाज व्यक्ति हैं। आपके पुत्र का नाम धर्मचन्दजी है। नथमलजी के छोटे पुत्र मानमलजी हैं। आपने सं० १९८४ में अपना अलग फर्म 'बुधमल मानमल' के नाम से स्थापित किया था।

जयचन्दलालजी—आप पहले अपने बड़े भाई नथमलजी के साथ शामलात वाले फर्म में व्यापार करते रहे। पश्चात् जब आप अलग हुए तब 'बुधमल जयचन्दलाल' के नाम से व्यापार करने लगे जो अब भी हो रहा है। आप भी अच्छे मिलनसार एवं सज्जन व्यक्ति थे। आपका ध्यान धार्मिकता की तरफ विशेष रहता था। आपका स्वर्गवास अभी हाल में ही सं० १९९० में हो गया। आपके चम्पालालजी चन्दनमलजी और मानिकचन्दजी नामक तीन पुत्र हैं। चम्पालालजी और चन्दनमलजी तो अपने पिता के स्थापित किए फर्म का कार्य संचालन करते हैं और मानिकचन्दजी अभी बालक हैं। आपके फर्म में इस समय कपड़े व पाट का व्यापार होता है।

चम्पालालजी—आप बड़े उत्साही, मिलनसार एवं होशियार व्यक्ति हैं। आपने होमियोपैथिक चिकित्सा-विज्ञान का अच्छा अभ्यास किया है और बाकायदा अध्ययन कर एच० एम० बी० पास किया है। आप रोगियों का इलाज बड़ी तत्परता व प्रेम से बिना मूल्य लिए करते हैं।

सेठ चाँदमलजीने भी पूर्वोक्त फर्म से अलग होकर अपना स्वतंत्र कपड़े का व्यापार 'चाँदमल उदयचन्द' के नाम से शुरू किया था। आपका स्वर्गवास होने पर आपके दत्तक पुत्र उदयचन्दजी ने उक्त फर्म की अच्छी उन्नति की। आपके समय में कपड़े व ब्याज का काम होता रहा। आपका छोटी उमर में ही स्वर्गवास हो गया। आपके तीन पुत्र हुए जिनके नाम क्रमशः सँसकरणजी कन्हैयालालजी और मूलचन्दजी हैं। आप तीनों भाई सम्मिलित रूप से इस समय नं० ११३ मनोहरदास के कटरे में कपड़े का व्यापार करते हैं। आपकी वर्तमान फर्म का नाम—'उदयचन्द बच्छराज' है। आप शिष्ट, सभ्य और विनम्र स्वभाव के एवं मिलनसार हैं। सँसकरनजी सामाजिकता और पंच-पंचायती में विशेष भाग लेते हैं। आपके पुत्र का नाम बच्छराजजी और मूलचन्दजी के पुत्र का नाम मोहनलालजी है। आप सब लोग (नाहटा परिवार) तेरापंथी श्वेताम्बर जैन धर्म के माननेवाले हैं।

सेठ लखमीचन्द तोलाराम नाहटा, राजगढ़

इस परिवार के सेठ ताराचन्दजी, उदयचन्दजी, छतीदासजी और पनेचन्दजी नामक चार भाई संम्वत् १९१८ में कचोर नामक स्थान से राजगढ़ आये। इसके पूर्व ही आप लोगों का व्यापार ग्वालपाड़ा नामक स्थान में होरहा था। संवत् १९५० तक यह फर्म चलता रहा। पश्चात् सब लोग अलग २ हो गये।

सेठ ताराचन्दजी के हरकचंदजी एवम् गुलाबचन्दजी नामक दो पुत्र हुए। इनमें से गुलाबचन्दजी, उदयचन्दजी के यहाँ दत्तक रहे। हरकचन्दजी के इस समय शिवलालजी, नेतमलजी और पूरनमलजी नामक तीन पुत्र हैं जो हरकचन्द पूरनमल के नाम से कलकत्ता में व्यापार कर रहे हैं। सेठ गुलाबचन्दजी के पुत्र जेसराजजी, धनराजजी और तिलोकचन्दजी अन्य २ स्थानों पर व्यापार करते हैं। सेठ पनेचन्दजी के पुत्र खुमानचंदजी हुए। आपके चार पुत्र हैं जिनके नाम क्रमशः नथमलजी, सूरजमलजी, तेजकरनजी और हंसराजजी हैं। आप लोगों का व्यापार भी हरकचंद पूरनचन्द के साझे में होता है। इसके अतिरिक्त मूँगापट्टी में भी सूरजमल जैचन्दलाल के नाम से इनका कपड़े का काम होता है। नथमलजी के पुत्र का नाम जयचन्दलालजी है।

सेठ छतीदासजी के पुत्र लखमीचन्दजी हुए। आपने भी कलकत्ते के अन्तर्गत साझे में कपड़े का व्यापार किया। इसमें आपको अच्छी सफलता रही। आजकल आप व्याज का काम करते हैं। आपके तोलारामजी नामक एक पुत्र हैं। आजकल आपही व्यवसाय का संचालन करते हैं। आपके यहाँ लखमीचन्द तोलाराम के नाम से व्यापार होता है।

श्री सूरजमलजी नाहटा, इन्दौर

इस परिवार के पुरुष सेठ डूंगरसीजी, फतेचंदजी, जीवनमलजी और खुशालचन्दजी बीकानेर, पाली आदि स्थानों पर होते हुए उदयपुर आये। यहाँ आकर आप लोगों ने कपड़े का व्यापार किया। इसमें अच्छी सफलता रही। कुछ समय पश्चात् खुशालचंदजी के पुत्र चन्दनमलजी किसी कारणवश इन्दौर चले आये। इनके पाँच पुत्रों में से श्री सूरजमलजी और सरदारमलजी शेष रहे। कुछ समय पश्चात् सरदारमलजी का भी स्वर्गवास हो गया।

नाहटा सूरजमलजी इस समय विद्यमान हैं। आप बड़े मिलनसार एवम् धुन के पक्के आदमी हैं। पब्लिक कार्यों में आपका हमेशा सहयोग बना रहता है। विद्या की ओर भी आपका अच्छा लक्ष्य है। आप इस समय ग्यारह पंचों की दुकान पर काम करते हैं। आप इस समय ग्यारह पंचों की कमेटी के कार्यकारी मंडल के सेक्रेटरी हैं।

सेठ हीरालाल बालाराम नाहटा, धूलिया

इस परिवार का मूल निवास लहेरा बावड़ी (मारवाड़) है। आप स्थानकवासी आम्नाय के मानने वाले हैं। देश से लगभग १०० साल पहिले सेठ रतनचंदजी नाहटा के पुत्र दलपतजी और उदयचन्दजी नाहटा मालेगाँव ताल्लुके के बोभनगाँव नामक स्थान में आये और वहाँ से धूलिया आकर आपने



स्वर्गीय सेठ पूनमचंदजी छल्लानी, सिकदराबाद (दक्षिण).



श्री सेठ लक्ष्मीचंदजी छल्लाँनी (हीराचंद पूनमचद) सिकदराबाद.

दुकान की। नाहटा दलपतजी के पुत्र नंदरामजी और बालारामजी हुए। इनमें बालारामजी, उदयचंदजी के नाम पर दत्तक गये। सेठ नंदरामजी ने इस दुकान के व्यापार तथा सम्मान को विशेष बढ़ाया, आपके पुत्र पन्नालालजी तथा बालारामजी के पुत्र हीरालालजी और नथमलजी हुए। इनमें नथमलजी पन्नालालजी के नाम पर दत्तक गये।

सेठ हीरालालजी नाहटा प्रतिष्ठित सज्जन हैं। आपका जन्म सवत् १९१३ की सावण सुदी १२ को हुआ है। आपकी दुकान यहाँ के ओसवाल समाज में प्राचीन मानी जाती है। आपके पुत्र मोतीलालजी, कन्हैयालालजी व मोहनलालजी हुए, इनमें मोतीलालजी का शरीरान्त १९७६ में हो गया, अतः इनके नाम पर मोहनलालजी को दत्तक दिया है। नाहटा कन्हैयालालजी, नथमलजी के नाम पर दत्तक दिये गये हैं। इस परिवार में लेन देन, कृषि और साहुकारी कामकाज होता है।

छल्लानी

मेसर्स हीराचन्द पूनमचन्द छल्लानी सिकन्दराबाद

इस खानदान के वंशज ओसवाल जाति के छल्लानी गौत्रीय सज्जन हैं। आप मन्दिर आम्नाय के उपासक हैं। आपका मूल निवास स्थान नागौर (मारवाड़) का है। इस फर्म की स्थापना सिकन्दराबाद में करीब ८०-९० वर्ष पूर्व हुई। सबसे पहले सेठ हीराचंदजी छल्लानी नागौर से यहाँ पर आये। शुरू में आपने यहाँ पर सर्विस की। उसके पश्चात् दी० ब० रामगोपालजी मालानी के साझे में आपने कपड़े का व्यापार प्रारम्भ किया। करीमनगर की दुकान भी आप ही के समय में खोली गई। सेठ हीराचन्दजी का स्वर्गवास संवत् १९५० के करीब हुआ।

आपके पश्चात् आपके दत्तक पुत्र श्री० पूनमचन्दजी छल्लानी ने इस फर्म के कार्य को सम्हाला। आप बड़े योग्य और व्यापार-दूरदर्शी पुरुष थे। आपके हाथों से इस फर्म के व्यवसाय, सम्मान एवम् प्रतिष्ठा में बहुत वृद्धि हुई। आपने वरंगल, पेद्दापल्ली तथा मंथनी में दुकानें स्थापित कर रुई और एरंडी का व्यापार शुरू किया। पेद्दापल्ली में आपने जीनिंग फेक्टरी और राइस मिल भी खोली।

व्यवसायिक कार्यों के अतिरिक्त धार्मिक कार्यों में भी आपके हाथ से एक बड़ा स्मरणीय कार्य हुआ। हैदराबाद के समीप कुल्पाकजी तीर्थ के श्वेताम्बर जैन मन्दिर के जीर्णोद्धार में आपने बहुत परिश्रम उठाया। एवम् अपनी ओर से भी आपने इस कार्य में बहुत सहायता दी। उक्त मन्दिर की इमारत आदि बनवाने में हैदराबाद के चार प्रतिष्ठित सज्जनों में आपने भी प्रधान रूप से कार्य किया था। आपका स्वर्गवास सम्वत् १९७४ के भादों वदी ८ को हुआ। आपके यहाँ श्री लक्ष्मीचंदजी छल्लानी संवत् १९७२ में दत्तक लाये गये।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ लक्ष्मीचन्दजी छल्लानी हैं। आपका जन्म संवत् १९६४ में हुआ। आप बड़े शिक्षित, शान्तप्रकृति और विनयशील नवयुवक हैं। इस छोटी उम्र में ही फर्म के व्यापार

का आप बड़ी तत्परता से संचालन करते हैं। कुल्पाकजी तीर्थ की ख्याति वृद्धि करने में आपके पिताजी की तरह आप भी सचेष्ट हैं। यह फर्म यहाँ के व्यापारिक समाज में बहुत प्रतिष्ठित है।

पीरचन्दजी छल्लाणी का परिवार कोलार गोल्डफील्ड

इस खानदान वाले जैतारण के रहने वाले हैं। आप स्थानकवासी आम्नाय को मानने वाले हैं। इस खानदान में छल्लानी पीरचंदजी हुए जिनके सूरजमलजी, गुलाबचंदजी, घेवरचंदजी और प्रतापमलजी नामक चार पुत्र हुए। श्री सूरजमलजी का संवत् १९२१ में जन्म हुआ। आपका धर्मध्यान की तरफ काफी लक्ष्य था। आप बड़े साहसी और व्यापारकुशल भी थे। आपने सबसे पहले संवत् १९४४ में बंगलोर में मेसर्स शम्भूमल गंगाराम के पार्टनरशिप में चार साल तक व्यवसाय किया। तदनंतर आपने बंगलोर कैण्ट के सूलाबाजार में सूरजमल गुलाबचन्द के नाम से एक स्वतन्त्र फर्म स्थापित की। आपका सम्वत् १९७९ में स्वर्गवास हुआ। आपके दो पुत्र हुए जिनके नाम कन्हैयालालजी और माणकचन्दजी हैं। कन्हैयालालजी के अमरचंदजी और लखमीचन्दजी नामक दो पुत्र तथा अमरचंदजी के भँवरलालजी नामक एक पुत्र है। माणकचंदजी के पुखराजजी तथा रिखबचंदजी नामक दो पुत्र और पुखराजजी के हरकचन्दजी नामक एक पुत्र हैं। कन्हैयालालजी, कन्हैयालाल, अमरचंद के नाम से तथा माणकचन्दजी, माणकचन्द पुखराज के नाम से कोलार गोल्ड फील्ड में और माणकचन्द रिखबचन्द के नाम से मैसूर में व्यवसाय करते हैं।

गुलाबचन्दजी का जन्म संवत् १९३८ का है। आपके सुगनमलजी नामक एक पुत्र हैं जिनका जन्म सं० १९७० में हुआ। घेवरचंदजी का जन्म सं० १९४० में हुआ। आपने सबसे पहले सं० १९५५ में कोलार गोल्ड फील्ड में एक फर्म स्थापित की। तदनन्तर सोने की खदान के पास कोलार गोल्ड फील्ड में तीन फर्मे और स्थापित की जो वर्तमान में भी बड़ी सफलता के साथ चल रही हैं। आपके तीन पुत्र हुए जिनके नाम बख्तावरमलजी, किशनलालजी तथा मोहनलालजी हैं। इनमें से बख्तावरमलजी के चम्पालालजी और पन्नालालजी नामक दो पुत्र हैं। सेठ प्रतापमलजी का जन्म संवत् १९४५ का है। आपका धर्मध्यान में अच्छा लक्ष्य है। आपके एक पुत्र हैं जिनका नाम भीकमचंदजी है। आपकी ओर से कोलार गोल्ड फील्ड में प्रतापमल भीकमचन्द के नाम से एक स्वतन्त्र दुकान है।

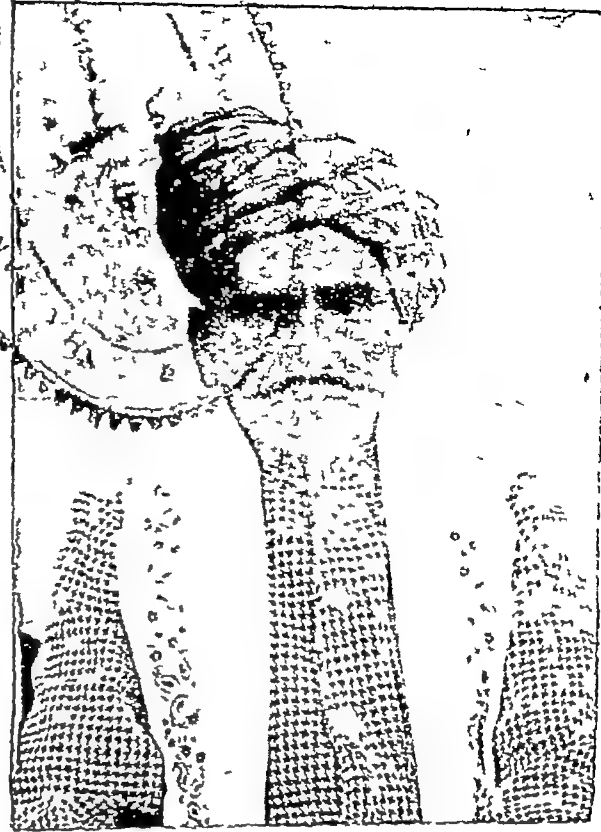
बोहरा

सेठ अचलसिंहजी का परिवार, आगरा

भारतवर्ष के विभिन्न प्रान्तों में मारवाड़ी समाज के जो कतिपय शिक्षित, उन्नत विचारों के, जाति सुधारक, देश सेवक और समाज सुधारक व्यक्ति नजर आते हैं, उनमें सेठ अचलसिंहजी का नाम पीछे नहीं रह सकता। ये बोहरा गौत्रीय सज्जन हैं। आपके पूर्व पुरुष सेठ सवाईरामजी थे। सेठ सवाईरामजी के कोई पुत्र न होने से उन्होंने श्री पीतमलजी चोरड़िया को दत्तक लिये।



देशभक्त सेठ अचलसिंहजी, आगरा.



सेठ प्रेमराजजी बोहरा, विल्लीपुरम् (मद्रास).



सेठ सूरजमलजी बोहरा, राबर्टसन् पेठ.



श्री गणपतराजजी बोहरा विल्लीपुरम् (मद्रास).

सेठ पीतमलजी चोरडिया — जिस समय आप यहाँ दत्तक आये उस समय इस खानदान की साधारण स्थिति थी। आपने अपनी व्यापार कुशलता से धौलपुर नामक स्थान पर अपनी फर्म स्थापित कर लाखों रुपये उपार्जित किये। आप बड़े साहसी और अग्रसोची व्यक्ति थे। धौलपुर रियासत में आपका अच्छा सम्मान था। वहाँ से आपको 'सेठ' की पदवी भी प्राप्त थी। आपका स्वर्गवास सन् १९०० में हो गया। आप बड़े उदार एवम् दानी सज्जन थे। आपके तीन पुत्र हुए, जिनके नाम क्रमशः जसवंतसिंहजी, बलवंतरायजी और अचलसिंहजी हैं।

सेठ जसवन्तमलजी और बलवन्तरायजी—आप दोनों भाई भी व्यापार कुशल सज्जन थे। आपने अपने समय में फर्म की अच्छी उन्नति की। आप लोग मिलनसार और सज्जन व्यक्ति थे। सेठ जसवंतमलजी २८ वर्ष तक आगरा म्युनिसिपल के सदस्य रहे। इसके अतिरिक्त आप स्थानीय आनरेरी मजिस्ट्रेट भी रहे। आपको इमारतें बनवाने का बड़ा शौक था। यही कारण है आपने आगरा में लाखों रुपयों की इमारतें बनवाईं। उनमें से पीतम मार्केट तथा जसवंत होस्टल विशेष प्रसिद्ध हैं। आप दोनों भाइयों का स्वर्गवास होगया।

सेठ अचलसिंहजी—आपके दोनों भाइयों के स्वर्गवासी हो जाने के पश्चात् फर्म संचालन का सारा भार आप पर आ पड़ा। आरंभ से ही आप तीक्ष्ण बुद्धिवाले सज्जन थे। अपने भाइयों की विद्यमानता ही में आप देशसेवा एवम् समाज सेवा की ओर झुक गये थे। इतना ही नहीं इस ओर झुककर आपने इसमें काफी दिलचस्पी से काम किया। बचपन से ही आपका जीवन सभा सोसायटियों में व्यतीत होता रहा है। प्रारम्भ में आपने एथलेटिक क्लब और एक पब्लिक लायब्रेरी की स्थापना की। इसके बाद आपने कई संस्थाओं में योग प्रदान किया। सन् १९२० में आपने मृतप्रायः आगरा व्यापार समिति का पुनर्संगठन किया और आप उसके आनरेरी सेक्रेटरी बनाये गये। आपके मित्र श्रीचंदजी दौनेरिया ने जो बीमा कंपनी स्थापित की उसके आप चेअरमेन हैं। आपही के प्रयत्न से आगरा में पीपल्स बैंक की शाखा स्थापित हुई। इसके भी आप प्रेसिडेण्ट और डायरेक्टर बनाए गये। इसके पश्चात् आप कांग्रेस कमेटी के पदाधिकारी, आगरा म्युनिसिपल बोर्ड के मेम्बर और यू० पी० कौंसिल में स्वराज्य पार्टी की ओर से मेम्बर निर्वाचित हुए थे। असहयोग आन्दोलन में आप कई बार जेलयात्रा कर आये हैं। आपने समय २ पर कई बार हजारों रुपये एकत्रित कर सार्वजनिक कार्यों में खर्च किये हैं। आप यू० पी० के सम्माननीय देशभक्त और आगरा के प्रमुख नेता हैं। आपका कई सार्वजनिक संस्थाओं से सम्बन्ध है। आपकी ओर से इस समय एक जैन छात्रालय चल रहा है। स्त्री शिक्षा के लिए भी आपने योग्य व्यवस्था की है। इसी प्रकार अचल-सेवा-संघ इत्यादि कई संघ स्थापित कर आपने आगरे के सार्वजनिक जीवन में एक ताज़गी की लहर पैदा कर दी है।

जब आगरे में हिन्दू-मुसलिम दंगा हो गया था। उस समय इन लोगों की चोट को सहन करते हुए भी आपने शांति स्थापन की पूरी २ कोशिश की थी। जब सन् १९२५ में अति वर्षा के कारण आगरा तहसील में बाढ़ आ गई थी उस समय भी आपने जनता की रक्षा के लिये काफ़ी पयत्न किया तथा धन, वस्त्र की सहायता पहुँचाई। लिखने का मतलब यह है कि आपका जीवन प्रारम्भ से अभी तक सार्वजनिक सेवा,

देश सेवा, जाति सेवा एवम् समाज सुधार की ओर रहा है। आप आगरे के एक गण्यमान्य नेता हैं। इस समय आप अखिल भारतवर्षीय स्थानकवासी ओसवाल नवयुवक कांफ्रेन्स के प्रेसिडेण्ट हैं।

सेठ बुधमल कालूराम बोहरा, (रतनपुरा) लोणार

यह परिवार बड़ू का निवासी है। लगभग १०० साल पहिले सेठ सलजी बोहरा के पुत्र बुधमलजी, हमीरमलजी तथा गम्भीरमलजी लोणार आये तथा लेन देन का व्यवसाय आरम्भ किया। सेठ बुधमलजी ने अच्छा नाम व सम्मान पाया। संवत् १९५३ में आप स्वर्गवासी हुए। स्थानीय मन्दिर की नीव डालने वाले ४ व्यक्तियों में से एक आप भी थे। आपके कालूरामजी, बिरदीचंदजी, खुशालचन्दजी तथा गुलाबचंदजी नामक ४ पुत्र हुए, जिनमें खुशालचन्दजी मौजूद हैं।

बोहरा कालूरामजी ने आसपास की पंच पंचायती में बहुत इज्जत पाई। संवत् १९७९ में बड़ू ठाकुर साहब लोनार आये तब आपको "सेठ" की पदवी दी। संवत् १९८३ में आप स्वर्गवासी हुए। बोहरा गम्भीरमलजी के पुत्र देवकरणजी और पौत्र तेजभालजी हुए, इन्होंने भी अपने समाज में अच्छी प्रतिष्ठा पाई। तेजमलजी संवत् १९७९ में स्वर्गवासी हुए। आपकी दुकान यहाँ के व्यापारियों में प्रतिष्ठित मानी जाती है।

वर्तमान में इस परिवार में सेठ खुशालचन्दजी और उनके पुत्र हेमराजजी, गेंदूलालजी, पन्नालालजी तथा बरदीचंदजी के पुत्र वंशीलालजी, कन्हैयालालजी एवम् तेजमलजी के पुत्र कतरूमलजी विद्यमान हैं। इनमें हेमराजजी, कालूरामजी के नाम पर और कन्हैयालालजी, गुलाबचन्दजी के नाम पर दत्तक गये हैं। सेठ खुशालचन्दजी आसपास के ओसवाल समाज में प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। यह परिवार बरदीचन्द खुशालचन्द और तेजभाल कतरूलाल बोहरा के नाम से सराफी, साहुकारी, कृषि तथा कपास का व्यापार करता है। इसी तरह इस परिवार मे हमीरमलजी के पौत्र नंदलालजी हीरडव में कारबार करते हैं।

सेठ पेमराज गणपतराज बोहरा, बिल्लीपुरम् (मद्रास)

इस कुटुम्ब का मूल निवास मारवाड़ में जेतारण के पास पीपलिया नामक ग्राम का है। इस परिवार के पूर्वज सेठ उदयचन्दजी के पश्चात् क्रमशः खूबचन्दजी, बच्छराजजी और साहबचन्दजी हुए। साहबचन्दजी इस परिवार में नामी व्यक्ति हुए। जेतारण के आसपास इनका लाखों रुपयों का लेन देन था। संवत् १९३९ में इनका ४१ साल की उमर में स्वर्गवास हुआ। आप बड़े स्वाभिमानी व प्रतिष्ठित पुरुष थे। आपके पुत्र मगराजजी का जन्म १९२२ में तथा केसरीचन्दजी का १९२५ में हुआ। तथा शरीरान्त क्रमशः संवत् १९७४ तथा १९७३ में हुआ। केसरीमलजी के पेमराजजी तथा हीरालालजी नामक २ पुत्र हुए, जिनमें पेमराजजी, मगराजजी के नाम पर दत्तक आये। हीरालालजी १९६६ में स्वर्गवासी हो गये।

बोहरा पेमराजजी मद्रास होते हुए संवत् १९७२ में बिल्लीपुरम् आये और व्याज का काम शुरू किया। आपके हाथों से ही व्यापार को तरक्की मिली। आप सुधरे हुए विचारों के धर्मप्रेमी सज्जन हैं।

आप अपनी आय में से दो आना रुपया धर्म और ज्ञान के खर्तों में लगाते हैं। प्रेमाश्रम पिपलिया को आपने बड़ी सहायता दी। आपके पुत्र गणपतराजजी, मोहनलालजी और सम्पतराजजी हैं। इनमें गणपतराजजी व्यापार में भाग लेते हैं। आपकी वय २० साल की है।

सेठ रघुनाथमल रिधकरण बोहरा बम्बई

सेठ रघुनाथमलजी रतनपुरा-बोहरा जोधां की पालड़ी (नागोर) से कुचेरा तथा वहां से जोधपुर आये वहीं उनका स्वर्गवास हुआ। आपके पुत्र रिधकरणजी का जन्म संवत् १९३२ में हुआ। आप संवत् १९४४ में देश से हैदराबाद सिकराबाद गये। तथा वहाँ से बम्बई आकर नौकरी की। पीछे से आपने कपड़े की दलाली का काम किया। इस प्रकार अनुभव प्राप्त कर आपने आढ़त का कारबार शुरू किया। तथा अपने अनुभव तथा होशियारी के बल पर काफी उन्नति की। बम्बई के मारवाड़ी आढ़तियों में आपकी अच्छी प्रतिष्ठा है। आप इधर १४ सालों से नेटिव्ह मरचेंट एसोशियेसन बम्बई के सेक्रेटरी हैं। आपके यहाँ रघुनाथमल रिधकरण के नाम से विट्ठलवाड़ी बम्बई में आढ़त का काम होता है। आप मन्दिर मार्गीय आम्नाय के मानने वाले हैं।

श्री मूलचंदजी बोहरा, अजमेर

अजमेर के ओसवाल समाज में जो लोग समाज सेवा के कार्य्य में उत्साह पूर्वक भाग लेते हैं उनमें श्री मूलचन्दजी बोहरा का नाम विशेष उल्लेखनीय है। कई जातीय और सामाजिक संस्थाओं से आपका सम्बन्ध है, गत वर्ष ओसवाल—सम्मेलन के प्रथम अधिवेशन करने के सम्बन्ध में जो सभा हुई थी उसके सभापति आप ही थे। आप सामाजिक विषयों पर गम्भीरता से विचार करते हैं। बम्बई की एक संस्था ने "ओसवाल जाति की उन्नति" पर निबन्ध लिखने के लिये कुछ पुरस्कार की घोषणा की थी उसमें सबसे प्रथम पुरस्कार आपको अपने निबन्ध के लिये मिला था। सार्वजनिक कार्य्यों में भी अपनी परिस्थिति के अनुसार आप भाग लेते रहते हैं।

चोरड़िया

चोरड़िया गौत्र की उत्पत्ति

कहा जाता है कि चंदेरी नगर के राजा खरहत्तसिंह राठोर को जैनाचार्य्य जिनदत्तसूरिजी ने संवत् ११९२ में जैनधर्म से दीक्षित किया। इनके बड़े पुत्र अम्बदेवजी ने चोरों को पकड़ा व उनके बेड़ियें डालीं। इससे चोर बेड़िये या चोरों से भिड़िये कहलाये। आगे चलकर यही नाम अपभ्रंश होते हुए "चोरड़िया" नाम से प्रसिद्ध हुआ।

शाहपुरा (मेवाड़) का चोरड़िया खानदान

यह खानदान पहिले चित्तौड़गढ़ में निवास करता था। वहाँ से चोरड़िया डूंगरसिंहजी संवत् १७४५ में शाहपुरा आये। इनके वेणीदासजी तथा फतेचन्द जी नामक २ पुत्र हुए। इनमें वेणीदासजी शाहपुरा स्टेट के कामदार थे। इनको संवत् १८०३ की सावण सुदी १५ को मांडलगढ़ का शिवपुरी नामक गाव जागीर में मिला था। इनके नारायणदासजी, खुशालचन्दजी, वरदभानजी, लखमीचन्दजी तथा शिवदासजी नामक ५ पुत्र हुए। इन बंधुओं में चोरड़िया खुशालचन्दजी महाराजा के साथ उज्जैन के युद्ध में तथा विरदभानजी मेड़ते की लड़ाई में काम आये।

नारायणदासजी चोरडिया का परिवार—शाह नारायणदासजी चोरड़िया बड़े प्रतापी व्यक्ति हुए। जब शाहपुरा अधिपति महाराजा उम्मेदसिंहजी मेवाड़ की तरफ से मरहठों से युद्ध करते हुए उज्जैन में काम आये। उस समय उनके पुत्र रणसिंहजी को आपने गद्दी पर बिठाया। इसके उपलक्ष में महाराजा रणसिंहजी ने नारायणदासजी को निम्न लिखित परवाना दिया।

> सिद्धश्री महाराजाधिराज श्री रणसिंहजी बचनात सहा नारायणदासजी दसे सुप्रसाद बंच्या अप्रंच थें म्हाका श्याम धरमी छो सो रणसिंहजी का बेटा पोता पीढी दरपीढ़ी पाटवी ने सपूत कपूत ने थाल में सू आखी में सूं आदी देर अरोगसी थांकी राह मुरजाद श्री महाराज वादी जी सुं सवाई रियां करसी ......संवत् १८२६ का वैशाख सुदी।

कहने का तात्पर्य्य यह कि मेहता नारायणदासजी अपने समय के नामांकित व्यक्ति थे। आपके जयचन्दजी तथा वदनजी नामक २ पुत्र हुए। इन दोनों सज्जनों के अजीतमलजी तथा चतुर्भुजजी नामक दो पुत्र हुए। इन दोनों भाइयों को महाराजा अमरसिंहजी ने संवत् १८५८ में कई गांव जागीरी में दिये, साथ ही उदयपुर महाराणाजी ने भी खास रुक्के और बैठक देकर इनको सम्मानित किया। अजीतमलजी के पश्चात् क्रमशः खुशालचन्दजी, रघुनाथसिंहजी मुलतानचन्दजी तथा छगनमलजी हुए। ये बंधु भी रियासत की सेवा करते रहे। चोरड़िया छगनलालजी का स्वर्गवास छोटी वय में सवत् १९५७ में हुआ। आपके नाम पर चन्नणमलजी के पुत्र अमरसिंहजी चोरड़िया दत्तक आये हैं।

अमरसिंहजी चोरड़िया—आपका जन्म संवत् १९४० में हुआ बहुत समय तक आप राजाधिराज सर नाहरसिंहजी के प्राइवेट सेक्रेटरी रहे। आप समझदार तथा प्रतिष्ठित सज्जन हैं। तथा इस समय राज्य में सर्विस करते हैं। आपके पुत्र नाथूसिंहजी हैं। इसी तरह इस परिवार में चतुरभुजजी के पौत्र (चन्नणमलजी के पुत्र) सरदारसिंहजी तथा अखेसिंहजी अजमेर में रेलवे विभाग में सर्विस करते हैं।

शाह बरधमानजी चोरडिया का परिवार—हम ऊपर लिख चुके हैं कि शाह वर्द्धमानजी चोरड़िया मेड़ते में बहादुरी पूर्वक युद्ध करते हुए मारे गये थे। इनके पश्चात् की पीढियों ने भी कई शाहपुरा राज्य की सेवाएँ की इस परिवार में चोरड़िया जोरावरमलजी शाहपुरा स्टेट के दीवान रहे। समय २ पर इस परिवार को शाहपुरा दरबार से सम्मान एवं ख़ास रुक्के भी प्राप्त होते रहे है।



प्रोफेसर श्यामसुन्दरलालजी चोरड़िया एम ए, उदयपुर,



सेठ मोहनमलजी चोरड़िया, (अगरचन्द मानमल) मद्रा



श्री अमरसिंहजी चोरड़िया शाहपुरा (मेवाड़)



बाबू दयालचन्दजी जौहरी आगरा

चोरड़िया जोरावरमलजी—आप शाहपुरा स्टेट के दीवान थे। आपके गोवर्द्धनलालजी तथा फूलचन्दजी नामक दो पुत्र हुए। गोवर्द्धनलालजी शाहपुरा में उच्चपद पर कार्य्य करते थे। तथा डावला नामक एक गाँव भी आपको जागीरी में मिला था। लग भग ५० साल पहिले आप यहाँ से उदयपुर चले गये। आपके किशनसिंहजी तथा मोतीसिंहजी नामक २ पुत्र हुए। मोतीसिंहजी का जन्म संवत् १९२९ में हुआ। आप उदयपुर स्टेट में सर्विस करते रहे और इस समय वहीं निवास करते हैं। आपके श्यामसुंदरलालजी तथा हीरालालजी नामक पुत्र हुए। इनमें हीरालालजी का सन् १९१७ में स्वर्गवास हो गया।

श्यामसुन्दरलालजी चोरडिया एम० ए०—आपका जन्म सन् १८९८ में हुआ। आपने म्योर सैण्ट्रल कॉलेज इलाहबाद से सन् १९२२ में एम० ए० की डिगरी हासिल की। इस समय अंग्रेज़ी विषय में आप सारी युनिवर्सिटी में प्रथम आये थे। तत्पश्चात् आप सन् १९२३ में महाराणा इंटर मिजियेट कालेज उदयपुर के प्रोफेसर हुए और इसके कुछ ही दिनों बाद आपकी प्रतिभा की कद्र करके प्राविंशियल सर्विस में सी० पी० एजूकेशन डिपार्टमेंट ने आपको मोरिस कॉलेज नागपूर में अंग्रेज़ी का प्रोफेसर निर्वाचित कर सम्मानित किया। आप अंग्रेज़ी साहित्य के उच्चकोटि के लेखक हैं। कई अंग्रेज़ी साहित्य रसज्ञों ने आपकी रचनाओं की प्रशंसा की है।

उदयपुर के महाराणा साहब आपकी बड़ी कद्र करते हैं, उन्होंने आपको जून १९२३ में दरबार में बैठक बख्शी है। इस समय आप नागपुर युनिवर्सिटी बोर्ड के मेम्बर, फेकिल्टी आफ आर्टस के मेम्बर, एवं एक्झामिनेशन बोर्ड के मेम्बर हैं। कई बार आप बी० ए० एम० ए० और इंटर के एक्झामिनर रहे हैं। आपके पुत्र कुंजबिहारीजी मेट्रिक में तथा रोशनलालजी विद्या भवन में पढ़ते हैं।

कुमारी दिनेश नदिनी—आप श्यामसुन्दरलालजी चोरड़िया की कन्या हैं। आपने नागपुर में मैट्रिक तक अध्ययन किया। हिन्दी साहित्य में आपकी बड़ी रुचि है। हिन्दी के गण्य मान्य पत्रों में आपकी गम्भीर भावों से परिपूरित गद्य काव्य एवम् हृदय स्पर्शी पद्यावली प्रकाशित होती रहती हैं।

गोपालसिंहजी चोरडिया—आप बहुत समय तक शाहपुरा अधिपति राजाधिराज नाहरसिंहजी के प्रायवेट सेक्रेटरी रहे। तथा कलक्टरी में ट्रेझरी आफिसर रहे इस समय आप मेवाड़ के कानोड़ ठिकाने के कामदार हैं आपका परिवार शाहपुरा में ऊँचे दरजे की प्रतिष्ठा रखता है। शाहपुरा दरबार ने समय २ पर कई आपको सम्मान दिये हैं। आपकी आयु इस समय ६० साल की है। आपके पुत्र रघुनाथसिंहजी तथा रणजीतसिंहजी हैं।

रघुनाथसिंहजी चोरडिया—आपका जन्म संवत् १९५३ में हुआ। सन् १९२१ में आप बी० ए० पास हुए। सन् १९२२ में आप शाहपुरा कुमार उम्मेदसिंहजी के प्रायवेट सेक्रेटरी निर्वाचित हुए। इसपद के साथ साथ कई भिन्न २ उच्च पदों पर काम करते हुए इस समय आप डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट तथा फाइनेन्स मेम्बर के पद पर हैं। आपको दरबार ने तिलक के समय जागीर बख्शी है। आपके पुत्र वीरेन्द्रकुमारजी तथा सुरेन्द्रकुमारजी हैं। आपके छोटे भ्राता रणजीतसिंहजी स्माल कॉज कोर्ट में सर्विस करते हैं।

इसी तरह इस परिवार में श्री गणेशलालजी उदयपुर में निवास करते हैं। आपने बी० ए० तक शिक्षण पाया है। फूलचन्दजी वयोवृद्ध सज्जन हैं तथा शाहपुरा में रहते हैं। तथा उदयसिंहजी के पुत्र मोहनसिंहजी शाहपुरा स्कूल में सर्विस करते हैं।

रामपुरिया

रामपुरिया नाम की स्थापना

इस परिवार के सज्जनों का मूल गौत्र चोरड़िया है। जिसका विवरण ऊपर दिया जा चुका है। इस परिवार के पूर्व पुरुष रामपुरा (इन्दौर स्टेट) नामक स्थान में निवास करते थे। वहां इस वंश में क्रमशः मेहराजजी, लालचन्दजी, नथमलजी, हीराचन्दजी, हरध्यानसिंहजी, और खींवसीजी हुए। खींवसीजी के तीन पुत्र हुए जिनके नाम क्रमशः मानसिंहजी, बुधसिंहजी और जगरूपजी था। जगरूपजी के चार पुत्र हुए, जीवराजजी, राजरूपजी, जसरूपजी और प्रेमराजजी। इनमें से जीवराजजी के ६ पुत्र हुए, जिनके नाम क्रमशः शिवराजजी, शेरसिंहजी, विजयराजजी, भींवराजजी, गुणोजी और सुल्तानजी था। इनमें से शेरसिंहजी के भेरोंदानजी नामक पुत्र हुए, शेष निःसन्तान रहे।

सेठ भेरोंदान के चार पुत्र हुए, जिनके नाम क्रमशः सेठ जालमचन्दजी, आलमचन्दजी, केवलचंद जी, और गम्भीरमलजी था। इनमें से जालमचन्दजी का वंश आज भी रामपुरा में निवास कर रहा है। आलमचन्दजी के लिये कहा जाता है कि रामपुरे के चंद्रावतों की एक कन्या का विवाह बीकानेर के महाराजा के साथ हुआ, उसी समय आप बाईजी के कामदार बनाकर बीकानेर भेजे गये। आपके साथ में आपके वंशज आये जिनका खानदान बीकानेर में निवास कर रहा है। आलमचन्दजी को बीकानेर दरबार ने राज्य में काम पर नियुक्त किया। जिसे आज तक आपके खानदान वाले करते आ रहे हैं। रामपुर से आने के कारण ही आप लोगों के वंशज रामपुरिया कहलाये। और जिस स्थान पर आप लोग काम करते थे वह दफ्तर आप ही के नाम से 'दफ्तर रामपुरिया' कहलाता चला आ रहा है।

सुजानगढ़ का रामपुरिया परिवार

सेठ आलमचन्दजी के चार पुत्र हुए, जिनके नाम क्रमश: बिरदीचन्दजी, गणेशदासजी, चुन्नीलाल जी और चौथमलजी था। आप चारों भाई करीब १०० वर्ष पूर्व बीकानेर छोड़कर सुजानगढ़ नामक स्थान पर चले आये। आप लोगों ने मिलकर संवत् १९१२ में मेसर्स चुन्नीलाल चौथमल के नाम से कलकत्ता में फर्म स्थापित की। इनमें आपको अच्छी सफलता रही। संवत् १९५० के पूर्व केवल चौथमलजी को छोड़ कर शेष भाई स्वर्गवासी होगये। इसके पश्चात् ही आपके वंशज अलग होगये और अपना स्वतंत्र व्यापार करने लगे।



स्व० सेठ हमीरमलजी रामपुरिया, सुजानगढ़.



सेठ चुन्नीलालजी रामपुरिया, सुजानगढ़.



सेठ कन्हैयालालजी रामपुरिया, सुजानगढ़.



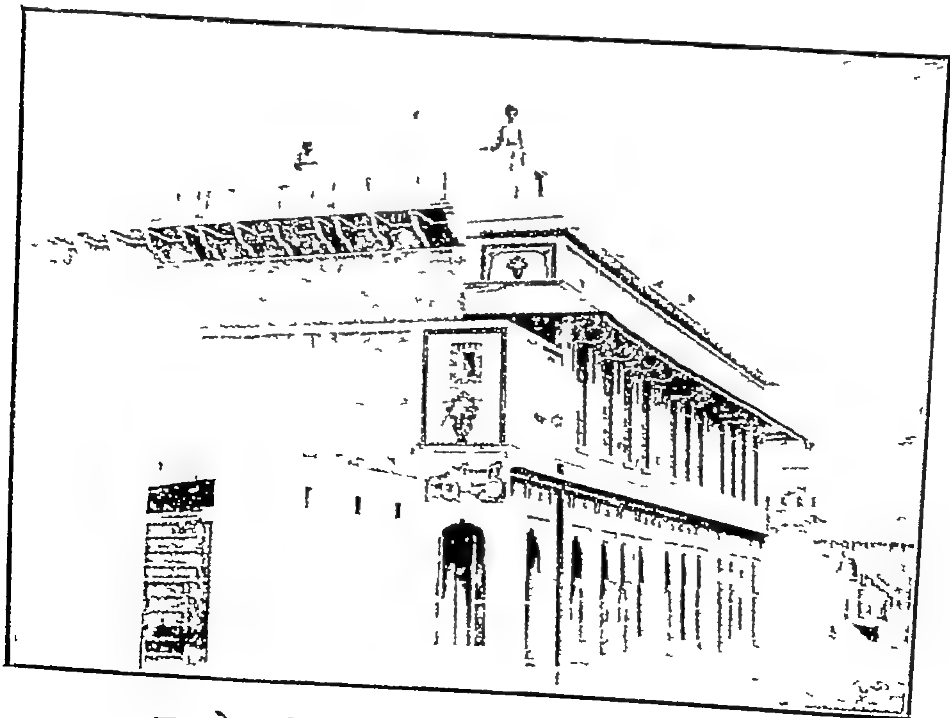
कुँवर शुभकरणजी दस्साणी, सुजानगढ़.



स्व० बंसीलालजी रामपुरिया B/o कन्हैयालालजी रामपुरिया.



कुँ० जयचन्दलालजी
S/o कन्हैयालालजी रामपुरिया, सुजानगढ़



स्व० सेठ हमीरमलजी रामपुरिया का मकान, सुजानगढ़.

सेठ बिरदीचंदजी का परिवार—सेठ बिरदीचन्दजी के सूरजमलजी, सदासुखजी, और तोलारामजी नामक पुत्र हुए। आप लोगों का स्वर्गवास होगया। सेठ सूरजमलजी के पूनमचन्दजी, हुलासचंदजी, थानमलजी, सुखलालजी और रिधकरनजी नामक पुत्र हैं। इसी प्रकार सेठ सदासुखजी के शोभाचन्दजी तथा सेठ तोलारामजी के सेठ हनुमानमलजी नामक पुत्र हैं। सेठ पूनमचन्दजी के चार पुत्र हैं जिनके नाम लूनकरनजी, खेवरचन्दजी, तिलोकचन्दजी और श्रीचन्दजी हैं। इनमें से अंतिम दो ग्रेज्युएट हैं। इसी प्रकार और २ भाइयों के भी पुत्र हैं।

सेठ गणेशदासजी का परिवार—आपके मेघराजजी नामक पुत्र हुए। आपने बीदासर के रास्ते में एक धर्मशाला तथा कुँवा बनवाया। आपके कोई पुत्र न होने से थानमलजी दत्तक आये। आप ही इस परिवार में बड़े व्यक्ति हैं।

सेठ चुन्नीलालजी का परिवार—सेठ चुन्नीलालजी बड़े प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति थे। आपने व्यापार में लाखों रुपया पैदा किया। आपके हमीरमलजी तथा हजारीमलजी नामक दो पुत्र हुए। हमीरमलजी अपने चाचा सेठ चौथमलजी के यहां दत्तक चले गये। वर्तमान में इस परिवार में हजारीमलजी ही प्रधान व्यक्ति हैं। आप यहां की म्युनिसिपेलिटी के मेम्बर हैं। आपने भी व्यापार में लाखों रुपया पैदा किया। इस समय आप कलकत्ता में अपनी निज की कोठी ढाका पट्टी में चुन्नीलल हजारीमल के नाम से जूट का व्यापार करते हैं। आपके कोई पुत्र नहीं है। अतएव आपने अपने दोहित्र शुभकरनजी दस्साणी को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया है।

सेठ चौथमलजी का परिवार—सेठ चौथमलजी के पुत्र न होने से हमीरमलजी दत्तक आये यह हम ऊपर लिख चुके हैं। हमीरमलजी बड़े व्यापार कुशल और राजपूती ढंग के व्यक्ति थे। आपके भी जब कोई पुत्र न हुआ और आप स्वर्गवासी होगये तब सेठ पूनमचन्दजी के पुत्र सूरजमलजी दत्तक लिये गये, मगर आपसी झगड़ों के कारण आपके स्थान पर बीकानेर से कन्हैयालालजी दत्तक आये। वर्तमान में आपही इस परिवार के संचालन कर्त्ता हैं। आप बड़े मिलनसार और व्यवहार कुशल तथा सज्जन व्यक्ति हैं। आपके यहां अभ्रक का व्यापार होता है। आपकी फर्म कोडरमा में है। आपने कोडरमा तथा गिरिडिह में कई अभ्रक की खदाने खरीद की हैं। आजकल आपका व्यापार कोडरमा में कन्हैयालाल रामपुरिया के नाम से हो रहा है। आपके यहां तार का पता 'kanya' है। आपके दो पुत्र हैं जिनके नाम क्रमशः जयचंदलालजी और सुमेरमलजी हैं। आपके भाई बंसीलालजी बीकानेर ही रहते थे। आप बड़े होनहार थे। मगर बहुत कम वय ही में आपका स्वर्गवास होगया।

सेठ हजारीमल हीरालाल रामपुरिया, बीकानेर

यह हम ऊपर लिख ही चुके हैं कि इनके पूर्वज रामपुरा नामक स्थान से आये। इन्हीं में आगे चलकर सेठ जोरावरमलजी हुए। आपकी बहुत साधारण स्थिति थी। आपके तीन पुत्र हुए जिनके नाम क्रमशः सेठ बहादुरमलजी, हजारीलालजी और हीरालालजी हैं।

सेठ बहादुरमलजी—आप बड़े मेधावी और व्यापार चतुर पुरुष थे। आपने केवल १२ वर्ष की आयु में व्यापार के निमित्त कलकत्ता प्रस्थान किया। आपको व्यवसाय के लिये कलकत्ता जाते समय रास्ते

में सैकड़ों आपत्तियों का सामना करना पड़ा, मगर फिर भी आप विचलित न हुए। यहाँ आकर आपने मेसर्स चैनरूप सम्पतराम दूगड़ के यहाँ ८) मासिक पर गुमास्तागिरी की। सात वर्ष के पश्चात् आप अपनी कार्य चतुरता और व्यापारिक बुद्धिमानी से इस फर्म के मुनीम हो गये। सन् १८८३ में आपने अपने भाइयों को हजारीमल हीरालाल के नाम से एक फर्म स्थापित करवा दी और उसपर कपड़े का व्यव्यावसाय प्रारम्भ किया। इस व्यापार में आप लोगों को बहुत सफलता प्राप्त हुई। कुछ समय पश्चात् सेठ बहादुरमलजी भी मुनीमात का काम छोड़कर इस फर्म के व्यापार में सहयोग देने लगे। बहुत ही शीघ्रता और तेजी के साथ इस फर्म की उन्नति होने लगी यहाँ तक कि वर्तमान में यह फर्म बीकानेर और बीकानेर स्टेट के धन कुबेरों में समझी जाती है। इस फर्म का कलकत्ता के इम्पोर्टरों में बहुत ऊँचा स्थान है। सेठ बहादुरमलजी के लिए बंगाल, बिहार और उड़ीसा के इनसाइक्लोपीडिया में इस प्रकार लिखा है—
"He is one of the fine products of the business world, having imbibed sound business instincts, copled with courtesy to strangers and religious faith in Jainism."
आपही ने अपने जीवनकाल में बहुत सम्पत्ति उपार्जन कर एक कॉटन मिल खरीदा था जो वर्तमान में रामपुरिया कॉटन मिल के नाम से प्रसिद्ध है। आपका यह मिल आज भी घरू है। आपके जसकरणजी नामक पुत्र हुए।

सेठ जसकरणजी—आप बड़े मेधावी और व्यापार चतुर पुरुष थे। आपने भी अपने व्यापार की विशेष उन्नति की। इतना ही नहीं वलिक आपने मेनचेस्टर तथा लण्डन में भी अपनी फर्मे स्थापित कर अपने व्यवसाय को बढ़ाया। चूँकि इन फर्मों का काम आपही देखते थे अतः ये सब फर्मे आपकी मृत्यु के बाद उठा दी गईं। बीकानेर दरबार में आपका बहुत सम्मान था। वर्तमान में आपके सेठ भँवरलालजी नामक एक पुत्र हैं। भँवरलालजी बड़े योग्य तथा मिलनसार सज्जन हैं। आपही रामपुरिया काटन मिल के सारे कारबार को बड़ी योग्यता से संचालित कर रहे हैं।

सेठ हजारीमलजी—आप भी बड़े कार्य-कुशल और व्यापार में बड़े चतुर सज्जन थे। आपने भी अपनी फर्मों का बड़ी योग्यता और बुद्धिमानी से संचालन किया। आपका स्वर्गवास संवत् १९६५ में होगया। आपके दो पुत्र विद्यमान हैं जिनके नाम शिखरचन्दजी और नथमलजी हैं।

बा० शिखरचन्दजी—आपका जन्म संवत् १९५० का है। आप बहुत साधारण प्रकृति के और धर्म पर बहुत श्रद्धा रखने वाले सज्जन हैं। आपके तीन पुत्र हैं जिनके नाम क्रमशः घेवरचन्दजी, कँवरलालजी एवम् शांतिलालजी हैं। घेवरचन्दजी दुकान के काम में सहयोग देते हैं तथा शेष दो बच्चे हैं।

बाबू नथमलजी—आपका जन्म संवत् १९५६ में हुआ। आप बड़े मिलनसार और योग्य सज्जन हैं। आप फर्म के काम में विशेष रूप से सहयोग देते हैं। आपको कपड़े के व्यापार का अच्छा अनुभव है। आपने जापान से डायरेक्ट कपड़े को इम्पोर्ट करने का कारबार शुरू किया जिसमें आपको बहुत सफलता मिली। आपका व्यापार की तरफ बहुत लक्ष्य है। मिल के काम को भी आप देखते हैं। आपके पुत्र सम्पतलालजी अभी पढ़ते हैं।

सेठ हीरालालजी—आप सेठ बहादुरमलजी के तीसरे भाई और वर्तमान में इस परिवार में सबसे वृद्ध सज्जन हैं। आप फर्म के सारे कारबार का संचालन करते हैं। आपके बाबू सौभागमलजी नामक एक पुत्र है तथा बाबू सौभागमलजी के जयचन्दलालजी, रतनलालजी आदि पुत्र हैं।

आप लोगों का कलकत्ता में "रामपुरिया काटन मिल" के नाम से एक प्राइवेट मिल है, जिसमें ८०० लूम्स काम करते हैं। इसके अतिरिक्त आपकी फर्म पर विलायत और जापान के कपड़े का इम्पोर्ट बहुत बड़े परिमाण में होता है। कलकत्ते में आपकी बहुतसी बड़ी २ बिल्डिंग्ज़ किराये के लिये बनी हुई हैं। इसी प्रकार आपकी बीकानेर की हवेलियाँ भी दर्शनीय है।

सेठ मेघराज तिलोकचन्द रामपुरिया, बीकानेर

ऊपर हम सेठ जीवराजजी के ६ पुत्रों में भींवराजजी का नाम लिख चुके हैं। इन भींवराजजी के सेठ पेमराजजी और जेठमलजी नामक दो पुत्र हुए। जेठमलजी के पाँच पुत्रों में से पदमचंदजी भी एक थे। पदमचन्दजी के चुन्नीलालजी और करनीदानजी नामक दो पुत्र हुए। सेठ चुन्नीलालजी के कोई संतान नहीं हुई। सेठ करनीदानजी ने बम्बई में अपना व्यापार स्थापित किया था। आपके मेघराजजी नामक एक पुत्र हुए।

सेठ मेघराजजी ने कलकत्ता में आकर नौकरी की। आपके उदयचंदजी और अमोलकचंदजी नामक दो पुत्र हुए। अमोलकचंदजी, सेठ लखमीचन्दजी के यहाँ दत्तक चले गये। सेठ उदयचंदजी इस परिवार में विशेष व्यक्ति हैं। आपने अपनी बहुत साधारण स्थिति को बहुत अच्छी स्थिति में रख दिया। प्रारम्भ में आपने कई स्थानों पर साझे में फर्म स्थापित की। अन्त में संवत् १९८७ से आप उपरोक्त नाम से व्यापार कर रहे हैं। आपका व्यापार शुरू से ही देशी कपड़े का रहा है। इस व्यापार में आपने हजारों रुपये पैदा किये हैं। आपके धार्मिक विचार अच्छे हैं। आपका बीकानेर के मन्दिर सम्प्रदायियों में बहुत अच्छा सम्मान है। आपने कई धार्मिक कार्यों में अच्छी सहायता पहुँचाई है। इस समय आपके मोहनलालजी और जेठमलजी नामक दो पुत्र हैं। आप लोग भी सज्जन और मिलनसार है। आपका कपड़े का व्यापार इस समय १५८ क्रास स्ट्रीट में होता है।

सेठ अगरचन्द मानमल चोरड़िया, मद्रास

इस फर्म के मालिकों का निवास स्थान कुचेरा (जोधपुर-स्टेट) का है। आप स्थानकवासी आम्नाय को मानने वाले सज्जन हैं। देश से पैदल मार्ग द्वारा सेठ अगरचन्दजी सन् १८४७ में जालना होते हुए मद्रास आये।

सेठ अगरचन्दजी—आरम्भ में आप सन् १८८० तक रेजिमेंटल बैङ्कर्स का काम करते रहे। यहाँ के व्यापारिक समाज में एवम् आफीसरों में आप बड़े आदरणीय समझे जाते थे। मारवाड़ी समाज पर आपकी बड़ी मदद रहा करती थी। आपके कोई पुत्र न था अतः आपने अपनी मृत्यु के समय अपनी फर्म का उत्तराधिकारी अपने बड़े भ्राता सेठ चतुर्भुजजी के पुत्र सेठ मानमलजी को बनाया आपने ७० हजार रुपयों

का दान किया था जिसका "अगरचन्द ट्रस्ट" के नाम से एक ट्रस्ट बना हुआ है। इस रकम का व्याज शुभ कार्यों में लगाया जाता है। इस प्रकार प्रतिष्ठापूर्ण जीवन बिताते हुए सन् १८९१ में आप स्वर्गवासी हुए।

सेठ मानमलजी—आप बड़े उग्रबुद्धि के सज्जन थे। यही कारण था कि केवल १९ वर्ष की अल्पायु में ही आप नांवा (कुचामण रोड) में हाकिम बना दिये गये थे। आपको होनहार समझ सेठ अगरचन्दजी ने विल में अपनी फर्म का उत्तराधिकारी बनाया था। लेकिन केवल २८ वर्ष की अवस्था में ही सन् १८९५ में आप बम्बई में स्वर्गवासी हुए। आपके यहाँ सेठ सोहनमलजी (जोधपुर के साह मिश्रीमलजी के द्वितीय पुत्र) सन् १८९६ में दत्तक लाये गये। आपने २५ हजार रुपयों की रकम दान की। तथा मद्रास पांजरापोल और जोधपुर पाठशाला को भी समय २ पर मदद पहुँचाई। व्यापारिक समाज में आपकी बड़ी प्रतिष्ठा थी। आपका सन् १९१५ में स्वर्गवास होगया। आपके यहाँ नोखा (मारवाड़) से सेठ मोहनमलजी (सिरेमलजी चोरड़िया के दूसरे पुत्र) सन् १९१८ में दत्तक आये।

सेठ मोहनमलजी—आप ही वर्तमान में इस फर्म के मालिक हैं। आपके हाथों से इस फर्म की विशेष उन्नति हुई है। आपके दो पुत्र हैं जो अभी बालक हैं और विद्याध्ययन कर रहे हैं। यह फर्म यहाँ के व्यापारिक समाज में बहुत पुरानी तथा प्रतिष्ठित मानी जाती है। मद्रास प्रान्त में आपके सात आठ गाँव जमीदारी के हैं। मद्रास की ओसवाल समाज में इस कुटुम्ब की अच्छी प्रतिष्ठा है। इस समय आपके यहाँ "अगरचन्द मानमल" के नाम से साहुकार पेठ मद्रास में बैङ्किग तथा प्रापर्टी पर रुपया देने का काम होता है। आपकी दुकान मद्रास के ओसवाल समाज में प्रधान धनिक हैं।

आगरे का चोरड़िया खानदान

लगभग १५० वर्षों से यह परिवार आगरे में निवास करता है। यहाँ लाला सरूपचन्दजी चोरड़िया ने डेढ़सो साल पूर्व सच्चे गोटे किनारी का व्यापार आरम्भ किया। आपके पुत्र पन्नालालजी तथा पौत्र रामलालजी भी गोटे का मामूली व्यापार करते रहे। लाला रामजीलालका संवत् १९१५ में स्वर्गवास हुआ। आपके गुलाबचन्दजी, छुट्टनलालजी, चिमनलालजी तथा लखमीचन्दजी नामक ४ पुत्र हुए।

लाला गुलाबचन्दजी चोरड़ियाँ का परिवार—आप अपने भ्राता लखमीचन्दजी के साथ गोटे का व्यापार करते थे। तथा इस व्यापार में आपने बहुत उन्नति की। आप अपने इस लम्बे परिवार में सबसे बड़े तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। संवत् १९८३ में आपका स्वर्गवास हुआ। आपके कपूरचन्दजी, चांदमलजी, दयालचन्दजी, मिट्ठनलालजी तथा निहालचन्दजी नामक ५ पुत्र हुए। इनमें लाला मिट्ठनलालजी को छोड़कर शेष सब विद्यमान हैं। लाला कपूरचन्दजी जवाहरात का व्यापार करते हैं।

लाला चांदमलजी—आपका जन्म संवत् १९३० में हुआ। आपने बी० ए० एल० एल० बी० तक शिक्षण प्राप्त किया। पश्चात् १२ सालों तक वकालत की। आप देश भक्त महानुभाव हैं। देश की पुकार सुनकर आप वकालत छोड़कर कांग्रेस की सेवाओं में प्रविष्ट हुए। सन् १९२१ में आप आगरा कांग्रेस के प्रेसिडेंट थे। आपने राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लेने के उपलक्ष में कारागृह वास भी किया है। आप बड़े सरल, शांत एवम् निरभिमानी सज्जन हैं।

लाला दयालचंदजी जौहरी—आपका जन्म संवत् १९२९ में हुआ। आपने १९ साल की वय में ही जवाहरात का व्यापार शुरू किया। २५ वर्ष की आयु में आपकी धर्मपत्नी का स्वर्गवास होगया, ऐसे समय आपने विवाह न कर और नवीन उच्च आदर्श उपस्थित किया। लार्ड हार्डिंज, ड्यूक आफ केनाट, क्वीन "मेरी" आदि से आपको सार्टीफिकेट प्राप्त हुए। इधर ३२ सालों से आप सार्वजनिक सेवाएँ करते हैं। आपने अपने जीवन में लगभग २ लाख रुपया भिन्न २ संस्थाओं के लिये इकट्ठा किया। इसमें २० हजार रुपया अपनी तरफ से दिये। इस समय आप लगभग २० प्रतिष्ठित संस्थाओं की कार्य वाहक समिति के मेम्बर प्रेसिडेंट आदि हैं। रोशन मुहल्ला आगरा के वीर विजय वाचनालय, धर्मशाला और मन्दिर के आप मैनेजर हैं। आप दीर्घ अनुभवी और नवयुवकों के समान उत्साह रखने वाले महानुभाव हैं। आपके छोटे भ्राता लाला निहालचन्दजी, लाला मुन्नालालजी के साथ, "गुलाबचन्द लखमीचन्द" के नाम से गोटे का व्यापार करते हैं।

लाला छुट्टनलालजी जौहरी का परिवार—आप नामी जौहरी होगये है। महाराजा पटियाला धौलपुर और रामपुर के आप खास जौहरी थे। राजा महाराजा रईस और विदेशी यात्रियों को जवाहरात तथा क्यूरियो सिटी का माल बेंच कर आपने अच्छी प्रतिष्ठा प्राप्त की थी। संवत् १९६३ में आपका स्वर्गवास हुआ। आपके मुन्नालालजी तथा हरकचन्दजी नामक २ पुत्र हुए। इनमें मुन्नालालजी विद्यमान हैं, तथा गोटे का व्यापार करते हैं।

लाला चिमनलालजी तथा लखमीचंदजी का परिवार—लाला चिमनलालजी आगरा सिटी के टेलीग्राफ ऑफिस में हेड सिगनलर थे। इनके पुत्र बाबूलालजी तथा ज्योतिप्रसादजी पेट्रोल एजंट हैं। इसी तरह लखमीचन्दजी के पुत्र माणकचन्दजी, मोहनलालजी तथा छन्नूलालजी जवाहरात का काम करते हैं।

यह एक विस्तृत तथा प्रतिष्ठित परिवार है। इस परिवार में पहले जमींदारी का काम भी होता था। इस परिवार ने आगरा रोशन मोहल्ला के श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ के मन्दिर में पच्चीकारी आदि में तथा पाठशाला वगैरा में करीब ३० हजार रुपये लगाये। लगभग ५०। ६० सालों से उक्त मन्दिर की व्यवस्था इस परिवार के जिम्मे हैं।

लाला इन्द्रचंद माणिकचन्द का खानदान, लखनऊ

इस खानदान के लोग श्वेताम्बर जैन मन्दिर आम्नाय को मानने वाले सज्जन हैं। यह खानदान करीब डेढ़सौ वर्षों से लखनऊ में ही निवास करता है। इस खानदान में लाला हीरालालजी तक के इतिहास का पता चलता है। लाला हीरालालजी के पश्चात् क्रमशः लाला जौहरीमलजी, लाला रज्जूमलजी, और उनके पश्चात् लाला इन्द्रचन्दजी हुए। आपका जन्म संवत् १९०९ का और स्वर्गवास संवत् १९५७ में हुआ। आपके पुत्र लाला मानिकचन्दजी इस खानदान में बड़े बुद्धिमान और दूरदर्शी व्यक्ति हैं। आपका जन्म संमत् १९३५ में हुआ। आपने अपनी बुद्धिमानी से इस फर्म के व्यवसाय को खूब बढ़ाया। आपके इस समय दो पुत्र हैं जिनके नाम नानकचन्दजी और ज्ञानचन्दजी हैं। मानकचन्दजी का जन्म संवत् १९५९ का और ज्ञानचन्दजी का जन्म संवत् १९६१ का है।

आप दोनों भाई बड़े बुद्धिमान और सज्जन है। लाला नानकचन्दजी के एक पुत्र है जिसका नाम जयचन्दजी है।

इस खानदान का पुश्तैनी व्यवसाय जेवाहरात का है। तब से अभी तक जवाहरात का काम बराबर चला आ रहा है। इसके सिवाय लाला मानिकचन्दजी ने यहां पर केमिस्ट और ड्रागिस्ट का व्यापार शुरू किया जो बहुत सफलता से चल रहा है। जिसकी दो ब्रांचे लखनऊ में और एक बाराबंकी में है। लखनऊ के ओसवाल समाज में वह खानदान बहुत अग्रसर तथा प्रतिष्ठित है।

सेठ मांगीलाल धनरूपमल चोरड़िया, निलीकुपम् (मद्रास)

इस परिवार के पूर्वज चोरड़िया चतुर्भुजजी के पुत्र रिखबदासजी मारवाड़ के चाड़वास (डीडवाणा के पास) नामक स्थान में रहते थे। वहाँ से आप टोंक होते हुए संवत् १९०० में नीमच (मालवा) आये। तथा यहाँ लेनदेन का व्यापार आरम्भ किया। आपके चाँदमलजी, मानमलजी, हेमराजजी तथा खेमराजजी नामक ४ पुत्र हुए। इनमें सेठ चांदमलजी के पुत्र सुगनचन्दजी तथा श्यामलालजी हुए। सुगनचंदजी का स्वर्गवास संवत् १९५२ में ५१ वर्ष की उम्र में हुआ। सेठ सुगनचंदजी के पुत्र मांगीलालजी और बिहारीलालजी तथा श्यामलालजी के पुत्र लूणकरणजी हुए।

सेठ मांगीलालजी का जन्म संवत् १९३९ में हुआ। आप संवत् १९५८ में नीमच से नागौर आये, तथा वहाँ अपना निवास स्थान बनाया। वहाँ से एक साल बाद रवाना होकर आप हैदराबाद आये तथा सेठ खुशालचन्दजी गोलेछा की फर्म पर २० सालों तक मुनीम रहे, तथा फिर भागीदारी में निलीकुपम् में दुकान की। इधर सन् १९२७ से आप अपना स्वतन्त्र व्यापार करते हैं। आप समझदार तथा होशियार सज्जन हैं। धन्धे को आपही ने जमाया है। आपके छोटे भाई बिहारीलालजी लश्कर वालों की ओर से शिवपुरी तथा भांडेर खजानों में मुनीम हैं। सेठ मांगीलालजी के पुत्र सुपारसमलजी का जन्म १९५८ में हुआ। इनसे छोटे सजनमलजी हैं। सुपारसमलजी तमाम काम बडी उत्तमता से सम्हालते हैं। आपके पुत्र धनरूपमलजी हैं। इस दुकान की एक शाखा कलपुरची (मद्रास) में एम० सजनलाल चोरड़िया के नाम से हैं। इन दोनों दुकानों पर व्याज का काम होता है।

चोरड़िया श्यामलालजी के पुत्र लूणकरणजी तथा केसरीमलजी हुए। ये बन्धु नीमच में रहते हैं केशरीचन्दजी, मानमलजी के पुत्र नंदलालजी के नाम पर दत्तक गये हैं। इसी तरह इस परिवार में सेठ चाँदमलजी के तीसरे भ्राता हेमराजजी के पुत्र नथमलजी चोरड़िया हैं। आपका विस्तृत परिचय अन्यत्र दिया गया है।

श्री नथमलजी चोरड़िया, नीमच

आपके परिवार का विस्तृत परिचय सेठ माँगीलाल धनरूपमल नामक फर्म के परिचय में दे चुके हैं। सेठ रिखबदासजी चोरड़िया के तीसरे पुत्र सेठ हेमराजजी थे। आपके पुत्र नथमलजी हुए। श्री नथमलजी स्थानकवासी समाज के गण्य मान्य सज्जन हैं। आपने अपने व्यापार कौशल तथा कार्य कुशलता से



श्री मन्नालालजी चोरड़िया, भानपुरा.



स्व० लाला गुलाबचन्दजी चोरडिया, आगर



सेठ मांगीलालजी चोरड़िया, निलिकुंपम् (मद्रास).



सेठ उदयचन्दजी रामपुरिया, बीकानेर.



रायसाहब सेठ रावतमलज
वरोरा (चांदा)

सम्पत्ति उपार्जित कर समाज में अपनी प्रतिष्ठा स्थापित की है। आप मशहूर सार्वजनिक कार्यकर्ता हैं। स्थानकवासी कान्फ्रेन्स, खादीप्रचार तथा अछूत आन्दोलन में आपने बहुतसा हिस्सा लिया है। आपने राष्ट्रीय कार्यों में सहयोग लेने के उपलक्ष में कारागृह वास भी किया था। आप अजमेर कांग्रेस के सभापति भी रहे थे। इस समय आप ऑल इण्डिया स्थानकवासी कान्फ्रेंस के जनरल सेक्रेटरी हैं। आपने अजमेर साधु सम्मेलन के समय अपनी ७० हजार की प्रापर्टी का दान, सार्वजनिक कामों में लगाने के लिये घोषित किया है। आपके पुत्र माधोसिंहजी चोरड़िया का अल्प वय में स्वर्गवास हो गया। आप बड़े होनहार थे। इस समय आपके पुत्र सोभागसिंहजी तथा फतेसिंहजी विद्यमान हैं। फतेसिंहजी बनारस युनिवर्सिटी में पढ़ते हैं।

सेठ सुगनमल पाबूदान चोरड़िया, कुन्नूर (नीलगिरी)

सेठ मेहरचन्दजी के छोटे पुत्र जसराजजी ने संवत् १९५२ में पली से आकर अपना निवास फलौदी में किया। संवत् १९५७ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके कुन्दनमलजी, सुगनमलजी, पाबूदानजी, अलसीदासजी तथा बख्तावरमलजी नामक ५ पुत्र हुए। इनमें सुगनमलजी, पाबूदानजी और अलसीदासजी मौजूद हैं। सेठ कुन्दनमलजी, मुन्नीलाल खुशालचन्द हैदराबाद वालों की दुकानों पर मुनीम थे। इनका संवत् १९५६ में स्वर्गवास हुआ। सुगनमलजी भी अपने भ्राता के साथ उन दुकानों पर मुख्त्यारी करते रहे। पश्चात् इन सब भाइयों ने कुन्नूर (नीलगिरी) में दुकान खोली। संवत् १९७४ में इन बन्धुओं का कारबार अलग २ हो गया।

सेठ सुगनमलजी का जन्म १९३२ में हुआ। इस समय आपके पुत्र मूलचन्दजी, गुलराजजी, किशनलालजी, दौलतरामजी तथा उदयराजजी हैं। आपके यहाँ सुगनमल गुलराज के नाम से कुन्नूर में बेङ्किग कारबार होता है। सेठ पाबूदानजी का जन्म संवत् १९३९ में हुआ। आपने १९५८ में अलसीदास एण्ड ब्रदर्स के नाम से कुन्नूर में बेंकिंग व्यापार शुरू किया। तथा व्यापार को आपने तरक्की दी है। इधर १ वर्ष से आपने जसराज पाबूदान के नाम से कपड़े का अपना स्वतन्त्र व्यापार आरम्भ किया है। आपके पुत्र रतनलालजी, मेघराजजी तथा गुलाबचन्दजी हैं। आप बन्धुओं में से बड़े २ व्यापार में भाग लेते हैं। सेठ अलसीदासजी के पुत्र कँवरलालजी तथा सुखलालजी हैं। इनके यहां अहमदाबाद में कपड़े का व्यापार होता है। यह परिवार फलौदी में अच्छी प्रतिष्ठा रखता है।

सेठ गुलाबचन्दजी चोरड़िया का परिवार, भानपुरा

इस परिवार वाले सज्जनों का मूल निवास स्थान मेड़ता था। वहाँ से करीब १२५ वर्ष पूर्व सेठ उम्मेदमलजी भानपुरा (इन्दौर) नामक स्थान पर आये। यहाँ आकर आपने साधारण व्यापार प्रारम्भ किया। इसमें आपको अच्छी सफलता मिली। आपके दो पुत्र हुए, जिनके नाम सेठ अमोलकचन्दजी और केसरीचंदजी था। अमोलकचन्दजी के तीन पुत्र हुए। जिनके नाम क्रमशः सेठ गुलाबचंदजी, फूलचन्दजी और रूपचन्दजी था। सेठ अमोलकचन्दजी ने अपने पुत्रों के साथ व्यापार में अच्छी सफलता प्राप्त की। आपका स्वर्गवास हो गया। पश्चात् आपके तीनों पुत्र अलग २ हो गये।

सेठ गुलाबचन्दजी का परिवार—सेठ गुलाबचन्दजी ने व्यापार में बहुत उन्नति की। आपने स्थानीय भलवाड़ा मन्दिर के ऊपर सोने के कलश चढ़वाने में २१००) की मदद दी। आपका स्वर्गवास हो गया। आपके इस समय धनराजजी और प्रेमराजजी नामक दो पुत्र विद्यमान हैं। आजकल आप दोनों ही अलग २ रूप से व्यापार करते हैं। सेठ धनराजजी वृद्ध पुरुष हैं। आपके मन्नालालजी नामक एक पुत्र हैं। आप भी मिलनसार उत्साही एवम् नवीन विचारों के युवक हैं। आपके लालचन्द, प्रसन्नचन्द, विमलचन्द और नरेशचन्द्रजी नामक चार पुत्र हैं। सेठ प्रेमराजजी के हरकचन्दजी और सन्तोषचन्दजी नामक दो पुत्र हैं। यह परिवार भानपुरा में प्रतिष्ठित समझा जाता है।

सेठ पन्नालाल हजारीमल चोरड़िया, मनमाड

यह परिवार धनेरिया (मेड़ता के पास) का निवासी है। वहां से सेठ खूबचंदजी चोरड़िया के पुत्र सेठ जीतमलजी चोरड़िया लगभग १०० साल पूर्व मनमाड के समीप घोटाना नामक स्थान में आये। और यहां लेन देन का धंधा शुरू किया। इनके हजारीमलजी तथा मगनीरामजी नामक पुत्र हुए। सेठ हजारीमलजी ने मनमाड में दुकान खोली आपका स्वर्गवास संवत् १९४९ में तथा मगनीराम जी का १९३६ में हुआ। सेठ हजारीमलजी के पन्नालालजी राजमलजी तथा सेठ मगनीरामजी के पूनमचन्दजी और सरूपचन्दजी नामक २ पुत्र हुए। इन भाइयों में सेठ पन्नालाजजी चोरड़िया ने इस कुटुम्ब के व्यापार और सम्मान को विशेष बढ़ाया। आप चारों भाइयों का कारबार संवत् १९५० में अलग २ हुआ। सेठ राजमलजी का स्वर्गवास संवत् १९४८ में तथा पन्नालालजी का संवत् १९७८ में हुआ। सेठ पन्नालालजी के नाम पर राजमलजी के पुत्र खींवराजजी दत्तक आये।

वर्तमान में इस परिवार में सेठ खींवसीराजजी तथा मूलचन्दजी के पुत्र ताराचन्दजी विद्यमान हैं। सेठ खींवराजजी का जन्म १९५९ में हुआ। आपके यहां "पन्नालाल हजारीमल" के नाम से साहुकारी लेन-देन का काम होता है। आपका परिवार आस पास के व मनमाड के ओसवाल समाज में अच्छी प्रतिष्ठा रखता है। आपके पुत्र अमोलकचन्दजी, माणकचन्दजी और मोतीचन्दजी हैं। यह परिवार स्थानक-वासी आम्नाय मानता है।

चौधरी पीरचंद सूरजमल चोरड़िया, बुरहानपुर

इस परिवार का मूल निवास पीपाड़ (जोधपुर स्टेट) में है। देश से लगभग ६५ साल पहिले सेठ सूरजमलजी चोरड़िया इच्छापुर (बुरहानपुर से १२ मील) आये। आपके हाथों से धंधे की नींव जमीं संवत् १९३१ में आपका शरीरान्त हुआ। आपके पुत्र पीरचन्दजी का जन्म संवत् १९३२ में हुआ। श्री पीरचन्दजी ने संवत् १९७८ में बुरहानपुर में दुकान की यहां आप इच्छापुर वालों के नाम से बोले जाते हैं। पीरचन्दजी चौधरी शिक्षित सज्जन हैं। यह चौधरी परिवार पीपाड़ में नामांकित माना जाता है और वहां मोतीरामजी वालों के नाम से मशहूर है, इस परिवार के पुरुषों ने जोधपुर स्टेट में आफीसरी, हाकिमी आदि के कई काम किये हैं। इच्छापुर में इस परिवार के ५ घर हैं।

पीरचन्दजी चौधरी के ५ पुत्र हैं जिनके नाम क्रमशः बंशीलालजी, मोहनलालजी, रतनलालजी हस्तीमलजी तथा माणकलालजी हैं। इन भाइयों में बंशीलालजी ने एफ० ए० तक तथा रतनलालजी और हस्तीमलजी ने मेट्रिक तक शिक्षा पाई है। बंशीलालजी, हरीनगर श्युगर मिल बिहार में असिस्टेंट मैनेजर हैं। इस परिवार के यहां इच्छापुर तथा बुरहानपुर में कृषि जमीदारी तथा लेनदेन का काम काज होता है।

सेठ लखमीचन्द चौथमल चोरड़िया, गंगाशहर

इस परिवार के पूर्व पुरुष जैतपुर के निवासी थे। वहां से सेठ पदमचन्दजी के पुत्र मायाचंद जी और हरिसिंहजी यहां गंगाशहर आये। मायाचन्दजी का परिवार अलग रहता है। यह परिवार हरिसिंहजी का है। सेठ हरिसिंहजी के छोगमलजी एवम् दानमलजी नामक पुत्र हुए। सेठ दानमलजी इस समय विद्यमान हैं। आपके गंगारामजी और बनेचन्दजी नामक दो पुत्र हुए हैं।

सेठ छोगमलजी का जन्म संवत् १९१५ का है। आपने अपने जीवन में साधारण रोजगार किया। आपका स्वर्गवास संवत् १९८२ में होगया। आपके खूबचन्दजी, लखमीचन्दजी, शेरमलजी, चौथमलजी और रावतमलजी नामक पांच पुत्र हुए। इनमें से प्रथम तीन स्वर्गवासी होचुके हैं। आप सब भाइयों ने मिलकर सोलंगा (बंगाल) में अपनी फर्म स्थापित की। इसमें आपको अच्छी सफलता मिली। अतएव उत्साहित होकर आप लोगों ने सिरसागंज में भी आपनी एक ब्रांच खोली। इसके बाद आपकी एक फर्म कलकत्ता में भी हुई। कलकत्ता का पता ४६ स्ट्रांड रोड है।

वर्तमान में इस फर्म के संचालक सेठ चौथमलजी, रावतमलजी खूबचन्दजी के पुत्र सोहनलालजी और शेरमलजी के पुत्र आसकरनजी हैं। आप लोग योग्यता-पूर्वक फर्म का संचालन कर रहे हैं। चौथमलजी के हाथों से फर्म की बहुत उन्नत हुई।

सेठ रामलाल रावतमल चोरड़िया, बरोरा (सी० पी०)

यह परिवार रूपनगर (किशनगढ़-स्टेट) का निवासी है। देश से सेठ भोमसिंहजी के पुत्र रामलालजी तथा रावतमलजी लगभग ८० साल पहिले बरोरा आये। तथा बुद्धिमत्ता पूर्वक व्यापार करके लगभग १० लाख रुपयों की सम्पत्ति इन बन्धुओं ने कमाई। व्यापार की उन्नति के साथ आपने धार्मिक कामों की ओर भी काफी लक्ष दिया। आपने बरोरा के जैन मन्दिर व विट्ठलमन्दिर के बनवाने में सहायताएँ दीं, तथा परिश्रम उठाया। सरकार में भी दोनों भाइयों का अच्छा सम्मान था। सेठ रामलालजी का संवत् १९६५ में स्वर्गवास हो गया। आपके बाद सेठ रावतमलजी ने तमाम काम सम्हाला। सेठ रावतमल जी सन् १९११ में बरोरा के ऑननेरी मजिस्ट्रेट थे। सन् १९२१ में आपको भारत सरकार ने "रायसाहिब" की पदवी से सम्मानित किया था। संवत् १९८२ में आपका स्वर्गवास हुआ।

सेठ रामलालजी के पुत्र सुखलालजी तथा मॉंगू लालजी हुए, इनमें मॉंगूलालजी, सेठ रावतमल जी के नाम पर दत्तक गये। इनका संवत् १९८५ में स्वर्गवास हुआ। इनके मदनलालजी, भीकमचन्दजी, माणकचन्दजी और मोहनलालजी नामक ४ पुत्र हैं। आपके यहाँ रावतमल मांगूलाल के नाम से व्यापार

होता है। सेठ सुखलालजी १९४६ में स्वर्गवासी हुए। इनके पुत्र धर्मचन्दजी १९७४ में तथा ... १९६३ में गुजरे। वर्तमान में धर्मचन्दजी के पुत्र शंकरलालजी तथा सुगनचन्दजी के पुत्र नंदलालजी चोरडिया हैं। आपके यहाँ "रामलाल सुखलाल" के नाम से व्यापार होता है। आपके ४ गांव माल गुजारी के हैं सेठ नंदलालजी प्रतिष्ठित सज्जन हैं। धर्मध्यान में आपका अच्छा लक्ष है। आपने एक धर्म... भी बनवाई है।

सेठ रतनचन्द दौलतराम चोरड़िया, वाघली (खानदेश)

यह परिवार कुचेरा (जोधपुर) का निवासी है। देश से लगभग १२५ वर्ष पहिले सेठ लच्छीरामजी चोरड़िया व्यापार के निमित्त वाघली (खानदेश) आये। तथा दुकान स्थापित की। संवत् १९१८ में ७२ साल की वय में आप स्वर्गवासी हुए। आपके नाम पर दौलतरामजी चोरड़िया दत्तक लिये गये। इनका भी संवत् १९३९ में स्वर्गवास हो गया। इस समय आपके पुत्र रतनचन्दजी मौजूद हैं। सेठ रतनचन्दजी स्थानकवासी ओसवाल कान्फ्रेस के प्रान्तीय सेक्रेटरी हैं। आपका जन्म संवत् १९३१ में हुआ। आपका परिवार आसपास के ओसवाल समाज में नामांकित माना जाता है। आपके राजमलजी, चांदमलजी तथा मानमलजी नामक तीन पुत्र हैं। राजमलजी की आयु ३० साल की है।

सेठ जेठमल सूरजमल चोरड़िया, वाघली (खानदेश)

इस परिवार का मूल निवास तींवरी (मारवाड़) है। देश से लगभग ७५ साल पहिले सेठ रूपचन्दजी चोरड़िया व्यापार के लिये वाघली (खानदेश) आये। इनके पुत्र सूरजमलजी चोरड़िया हुए। आपका ६० साल की वय में संवत् १९७५ में स्वर्गवास हुआ। आपके पुत्र जेठमलजी मोजूद हैं।

चोरड़िया जेठमलजी का धर्म के कार्मो में अच्छा लक्ष है। आपने बड़ी सरल प्रकृति के निरभिमानी व्यक्ति हैं। आपके यहाँ सराफी काम काज होता है। आप श्वेताम्बर स्थानक वासी आम्नाय के मानने वाले सज्जन हैं। वाघली के जैन समाज में आपकी उत्तम प्रतिष्ठा है।

बोरड़—बरड़

बोरड़ या बरड़ गौत्र की उत्पत्ति

आंवागढ़ में राव बोरड़ नामक परमार राजा राज करते थे। इनको खरतरगच्छाचार्य दादा जिनदत्तसूरिजी ने संवत् ११७५ में जैन धर्म से दीक्षित किया तथा उन्हें सकुटुम्ब जैन बनाया। राव बोरड़ की संतानें बोरड़ तथा बरड़ कहलाईं।



लाला रतनचन्दजी बरड़, अमृतसर.



लाला हरजसरायजी बरड़ B. A, अमृतसर.



ला.ला [illegible] बरड़ अमृतसर



श्री [illegible]लजी बरड़, अमृतसर.

लाला रतनचंद हरजसराय बरड़, अमृतसर

इस खानदान के लोग पहिले गुजराज (पंजाब) में रहते थे। उसके पश्चात् यह खानदान सम्बड़ियाल (स्यालकोट) मे आकर बसा। वहाँ से लाला गण्डामलजी के पुत्र लाला सोहनलालजी अपना व्यापार जमाने अमृतसर में आये। तब से यह खानदान अमृतसर में बसा हुआ है।

लाला सोहनलालजी—आपने अमृतसर में आकर जवाहरात का ज्ञान प्राप्त किया। जवाहरात का काम सीख कर आपने मूंगा का व्यापार शुरू किया इस व्यापार में आप साधारणतया अपना काम करते रहे। आप उन भाग्यवानों में से थे जो अपनी पांचवी पुश्त को अपने सामने देख लेते हैं। केवल ४० सालकी आयु में ही कारोबार से मन खींच कर आपने धर्म ध्यान में अपना मन लगाया। आप जैन सिद्धान्त के अच्छे विद्वान थे। आपका स्वर्गवास सन् १९०५ में हुआ। आपके लाला उत्तमचन्दजी तथा तथा लाला हाकमरायजी नामक २ पुत्र हुए। यह परिवार स्थानकवासी आम्नाय का मानने वाला है।

लाला उत्तमचंन्दजी—आप बड़े प्रेमपूर्ण हृदय के तथा उदार स्वभाव के व्यक्ति थे। अमृतसर की बिरादरी तथा व्यापारिक समाज मे आपकी बड़ी साख तथा व्यापारिक प्रतिष्ठा थी। आपका स्वर्गवास सन् १९०५ में अपने पिताजी के १ मास पूर्व होगया था। आपके छोटे भ्राता लाला हाकमरायजी का स्वर्गवास भी सन् १९०४ में होगया। और इसके थोड़े समय पहिले लाला हाकमरायजी का खानदान आपसे अलग होगया था। लाला उत्तमचन्दजी के लाला जगन्नाथजी नामक १ पुत्र हुए।

लाला जगन्नाथजी—आप शुरू २ असली मूंगे का तथा उसके बाद नकली मूंगे का व्यापार करने लगे। उसके बाद आप व्यापर से तटस्थ होकर धर्म ध्यान की ओर लग गये। आप पंजाब जैन सभा तथा लोकल सभा के जीवन पर्यंत मेम्बर रहे। इन सभाओं द्वारा पास होने प्रस्तावों को सबसे पहिले व्यवहारिक रूप आपने ही दिया। आपका स्वर्गवास सन् १९२० में हुआ। आपके लाला रतनचंद जी, लाला हरजसरायजी तथा लाला हंसराजजी नामक ३ पुत्र हुए।

लाला रतनचंदजी—आपका जन्म संवत् १९४५ में हुआ। आपके हाथों से इस खानदान के व्यापार, व्यवसाय और आर्थिक स्थिति को बहुत उन्नति मिली। आप बड़े व्यापार कुशल और बुद्धिमान व्यक्ति हैं व्यापारिक मामलों में आपका मस्तिष्क बहुत उन्नत है। सामाजिक तथा धार्मिक कामों में भी आपकी अच्छी रुचि है। आप पंजाब स्थानकवासी जैन सभा के वाइस प्रेसीडेण्ट रह चुके हैं। अजमेर साधु सम्मेलन की एक्जीक्यूटिव कमेटी के भी आप मेम्बर थे। अमृतसर के लेस फीता एसोसिएसन के भी आप प्रेसिडेण्ट रह चुके हैं। आपके प्रेसिडेण्ट शिप में अमृतसर में इस व्यापार ने बहुत उन्नति की है। धार्मिक व सामाजिक सुधारों के क्षेत्र में आप हमेशा अग्रगण्य रहते हैं। आपकी बड़ी कन्या कुमारी शकुंतला ने हाल ही में "हिन्दी रत्न" की परीक्षा पास की है। आपके बाबू शादीलालजी, सुरेन्द्रनाथजी सुमति प्रकाश, जगत्भूषण, व देशभूषण नामक ५ पुत्र हैं। उनमें बाबू शादीलालजी, फर्म के व्यापार में मदद देते हैं। आपका जन्म संवत् १९६४ में हुआ। आपके ४ पुत्र हैं। बाबू सुरेन्द्रनाथजी इस समय इंटर में पढ़ रहे हैं। तथा २ स्कूल में अध्ययन कर रहे हैं।

लाला हरजसरायजी—आपका जन्म संवत् १९५४ का है। सन् १९१९ में आपने बी० ए०

की परीक्षा पास की—आप बड़े प्रतिभाशाली व्यापार निपुण तथा नवीन स्प्रिट के व्यक्ति हैं। आपके जीवन का बहुत सा समय पब्लिक सेवाओं में व्यतीत होता है। खानदान के व्यापार में प्रविष्ट होकर आपने अपने बड़े भ्राता लाला रतनचन्दजी के काम में बहुत हाथ बंटाया है। आपने जापान से डायरेक्टर इम्पोर्ट का व्यापार शुरू किया। आप यहां की "को एज्यूकेशन" की आदर्श संस्था श्री रामाश्रम हाई स्कूल के सेक्रेटरी हैं। इसके अलावा आप अमृतसर की लोकल जैन सभा, और बॉयस्काउट सेवा समिति के सेक्रेटरी हैं। लाहौर के हिन्दी साहित्य मण्डल लिमिटेड के बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स के आप चेअरमैन हैं। आपके विचार बड़े मंझे हुए हैं। आपके इस समय ६ पुत्र हैं उनमें लाला अमरचंदजी इन्टरमिजिएट में तथा लाला भूपेन्द्रनाथजी मेट्रिक में पढ़ रहे हैं।

लाला हंसराजजी—आपका जन्म संवत् १९५६ का है। सन् १९१५ में आपने मेट्रिक पास करके व्यापारिक लाइन में प्रवेश किया। आपकी व्यापारिक दृष्टि बहुत बारीक है।

लाला नंदलालजी—लाला गंडामलजी के पौत्र लाला नन्दलालजी बड़े धार्मिक तथा तपस्वी पुरुष हैं। आपके जीवन का अधिकांश समय धार्मिक कामों में ही व्यय होता है। गृहस्थावस्था में रहते हुए भी आपने एक साथ इकतीस इकतीस उपवास किये। छोटी अवस्था में ही आपकी पत्नी का स्वर्गवास होगया था, तब से आप ब्रह्मचर्य्य व्रत धारण किये हैं।

इस समय इस परिवार में सोने के थोक एक्सपोर्ट का व्यापार होता है। अमृतसर के सोने के व्यापारियों में यह फर्म वजनदार मानी जाती है। इस फर्म की यहाँ पर चार शाखाएँ हैं। जिन पर बैङ्किग, सोना, चांदी, होयजरी तथा जनरल मर्चेंटाइज् एवं इम्पोर्टिंग बिजिनेस होता है। इस खानदान ने पंजाब प्रांत में ओसवाल समाज के दस्सा तथा बीसा फिरकों में शादी विवाह होने में बहुत लीडिंग पार्ट लिया है।

लाला श्रद्धामल नत्थूमल बरड़, अमृतसर

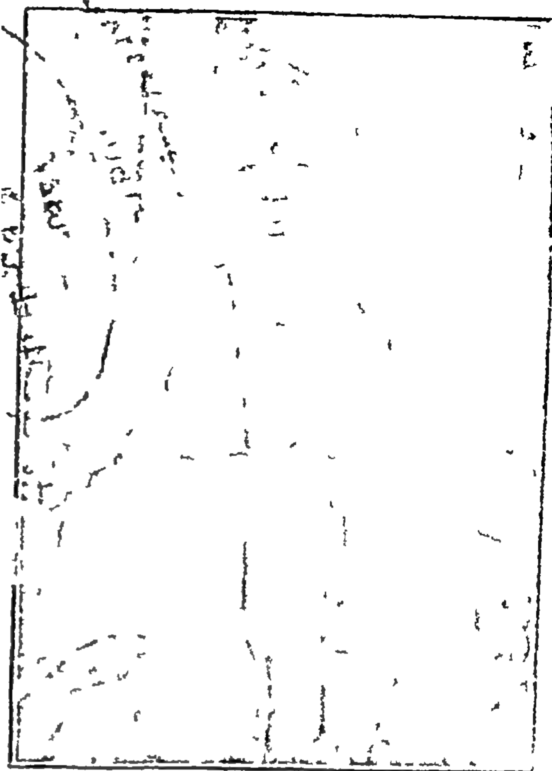
इस खानदान में लाला नन्दलालजी के पुत्र लाला राजूमलजी और उनके पुत्र लाला हरजसरायजी हुए। लाला हरजसरायजी के पुत्र लाला श्रद्धामलजी हुए।

लाला श्रद्धामलजी—आपका जन्म सम्वत् १८८० में हुआ। आप बड़े विद्वान और जैन सूत्रों के जानकार थे। शुरू २ में आपने अमृतसर में शालों की दूकान खोली और उसकी एक ब्रांच कलकत्ते में भी स्थापित की। जिस समय आपने कलकत्ते में दूकान खोली उस समय रेलवे लाइन नहीं खुली थी। अतएव आपको टमटम, छकड़ा आदि सवारियों पर कलकत्ता जाना पड़ा था। आपके छः पुत्र हुए जिनके नाम क्रमशः हरनारायणजी, निहालचन्दजी, खुशालचन्दजी, गंगाविशनजी, राधाकिशनजी और शालिग्रामजी था।

लाला निहालचन्दजी—आपका जन्म सम्वत् १८९९ में हुआ आप भी बड़े धार्मिक पुरुष थे। आपका स्वर्गवास सम्वत् १९५९ में हुआ। आपके लाला नत्थुमलजी, लक्खीरामजी और लालचन्दजी नामक तीन पुत्र हुए।



मेहता सरदारचन्दजी खींवसरा, जोधपुर.
(परिचय पेज नं० ५७६)



मेहता उम्मेदचन्दजी खींवसरा, जोधपुर
(परिचय पेज नं० ५७६)



लाला नत्थुमलजी—आपका जन्म संवत् १९२६ में हुआ। आप इस खानदान में बड़े नामी और प्रसिद्ध पुरुष हैं। आप जैन साधुओं की सेवा बहुत उत्साह व प्रसन्नता से करते हैं। जाति सेवा में भी आप बहुत भाग लेते हैं। पंजाब की सुप्रसिद्ध स्थानकवासी जैन सभा के करीब दस बारह साल तक प्रेसिडेण्ट रहे। इसी प्रकार आल इण्डिया स्थानकवासी कान्फ्रेन्स के भी आप करीब २० साल तक स्थानीय सेक्रेटरी रहे। इस समय भी आप अमृतसर की लोकल जैन सभा के प्रेसिडेण्ट हैं। आप उन पाँच व्यक्तियों में से एक हैं जिन्होंने पंजाब के जैन समाज में सबसे पहिले नवजीवन फूँका। आपके इस समय तीन पुत्र हैं। जिनके नाम लाला उमरावसिंहजी, लाला जमनादासजी, लाला शोरीलालजी हैं। आप तीनों भाई बड़े बुद्धिमान और योग्य हैं और अपने व्यापारिक काम को करते हैं। लाला उमरावसिंहजी की शादी जम्बू के सुप्रसिद्ध दीवान बहादुर विशनदासजी की कन्या से हुई। इनके दो पुत्र हैं जिनके नाम मनोहरलाल और सुभाषचन्द्र हैं। लाला जमनादासजी के सुरेन्द्रकुमार और सुमेरकुमार और शोरीलालजी के सत्येन्द्रकुमार नामक पुत्र हैं।

लाला लालचन्दजी का जन्म संवत् १९४१ का है। आप भी इस समय दुकान का काम करते हैं लाला हरनारायणजी के पुत्र लाला हंसराजजी हुए। हंसराजजी के पुत्र धरमसागरजी इस समय एफ० ए० में पढ़ते हैं।

लाला गंगाविशनजी के पुत्र लाला मथुरादासजी का स्वर्गवास सन् १९१३ में हुआ। आपके पुत्र बृजलालजी और रामलालजी हैं। बृजलालजी कमीशन एजन्सी का काम करते हैं। आपके रतनसागर, मोतीसागर और स्वर्णसागर नामक तीन पुत्र हैं। रतनसागर एफ० ए० में पढ़ते हैं। रामलालजी लखनऊ और मसूरी में फैन्सी सिल्क और गुड्स का व्यापार करते हैं।

लाला बदरीशाह सोहनलाल बरड़, गुजरानवाला

इस खानदान के पूर्वज लाला पल्लेशाहजी और उनके पुत्र टेकचंदजी पपनखा (गुजरानवाला) रहते थे। वहाँ से टेकचन्दजी के पुत्र लाला दरबारीलालजी सन् १७९० में गुजरानवाला आये। आप जवाहरात का व्यापार करते थे। आपके पुत्र विशनदासजी तथा पौत्र देवीदत्ताशाहजी तथा हाकमशाहजी हुए। लाला हाकमशाहजी ने सराफी धंधे में ज्यादा उन्नति की। धर्म के कामों में आपका ज्यादा लक्ष था। संवत् १९६७ में आपका स्वर्गवास हुआ। आपके महताबशाहजी, सोहनलालजी, बदरीशाहजी, शंकरदासजी, चुन्नीलालजी, जमीताशाहजी तथा बेलीरामजी नामक ७ पुत्र हुए। ये सब भ्राता अपने पिताजी की विद्यमानता में ही संवत् १९५२ में अलग २ हो गये थे। इन भाइयों में लाला महताबशाहजी का स्वर्गवास संवत् १९५७ में लाला बदरीशाहजी का १९६७ में तथा जमीताशाहजी का १९७८ में हुआ।

इस समय इस विस्तृत परिवार में लाला सोहनलालजी सबसे बड़े हैं। आपका जन्म संवत् १९१५ में हुआ। आपका परिवार यहाँ के व्यापारिक समाज में अच्छी प्रतिष्ठा रखता है। आपने व्यापार में सम्पत्ति कमाकर अपने खानदान की प्रतिष्ठा को काफी बढ़ाया है। आपके भाई बदरीशाहजी ने आपके साथ में "बदरीशाह सोहनलाल" के नाम से सम्वत् १९४७ में आढ़त का व्यापार शुरू किया, तथा इस काम में भी अच्छी उन्नति की है। इस खानदान की स्थावर जंगम सम्पत्ति यहाँ काफी तादाद में है। लगभग १ हजार बीघा जमीन आपके पास है। इस परिवार का ११ दुकानों पर सराफी व्यापार होता है।

लाला महताबशाहजी के बधावामलजी, दीवानचन्दजी, ज्ञानचन्दजी तथा सरदारीमलजी नामक ४ पुत्र हुए। इनमें लाला सरदारीमलजी मौजूद हैं। आपके पुत्र रामलभायामलजी हैं। बधावामलजी के पुत्र प्यारेलालजी तथा रामलालजी हैं। दीवानचन्दजी के पुत्र खजांचीलालजी और ज्ञानचन्दजी के पुत्र कस्तूरीलालजी सराफी का काम काज करते हैं। लाला सोहनलालजी के जसवंतरामजी, अमीचन्दजी, मुल्कराजजी बी० ए० तथा कुञ्जलालजी नामक ४ पुत्र हुए। लाला कुंजलालजी धार्मिक विचारों के व्यक्ति थे। आपका तथा आपके बड़े भ्राता अमीचन्दजी का स्वर्गवास हो गया है। लाला मुल्कराजजी ने सन् १९२२ में बी० ए० पास किया। आप समझदार तथा शिक्षित सज्जन हैं। स्थानीय ब्रदरहुड के आप जीवित कार्यकर्ता हैं।

लाला बदरीशाहजी के दत्तक पुत्र मोतीशाहजी हैं तथा दूसरे शादीलालजी हैं। शादीलालजी ने मैट्रिक तक शिक्षा पाई है। तथा सुशील व होनहार व्यक्ति हैं। लाला शंकरदासजी के पुत्र मुंशीलालजी, बनारसीदासजी, हजारीलालजी तथा विलायतीरामजी हैं। इसी तरह लाला चुन्नीलालजी के देसराजजी, रतनचन्दजी, प्यारेलालजी, बाबूलालजी, जंगेरीलालजी तथा रोशनलालजी नामक ६ पुत्र तथा लाला जमीतराजजी के मुनीलालजी, छोटेलालजी, चिरंजीलालजी तथा बेलीरामजी के हंसराजजी, जयगोपालजी, नगीनचन्दजी व चन्दनमलजी नामक पुत्र मौजूद हैं।

यह परिवार श्वेताम्बर जैन स्थानकवासी आम्नाय का मानने वाला है। शादीलाल मुलखराज के नाम से इस परिवार का गुजरानवाला (पंजाब) में आढ़त का व्यापार होता है।

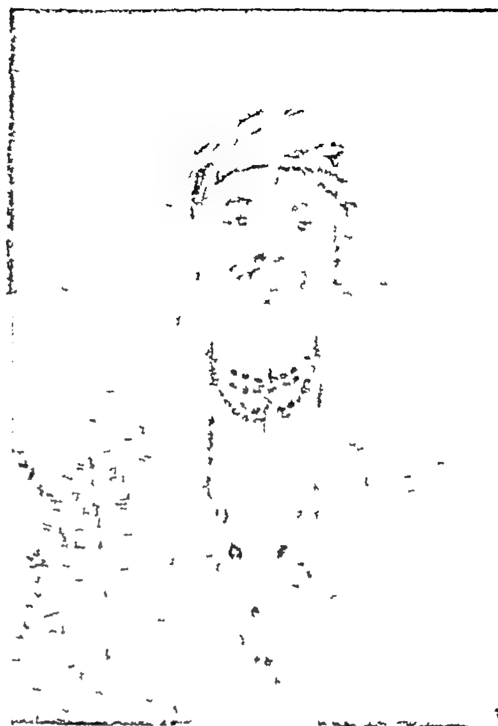
सेठ धर्मसी माणकचन्द बोरड, सुजानगढ़

इस परिवार के पूर्व पुरुष सेठ धर्मसीजी करीब १०० वर्ष पूर्व देशनोक नामक स्थान से चलकर सुजानगढ़ आये। आपके चार पुत्र सेठ माणकचंदजी, चुन्नीलालजी, उत्तमचन्दजी वगैरह हुए। इनमें से माणकचन्दजी बड़े नामांकित और व्यापारकुशल सज्जन थे। आप लोगों का स्वर्गवास हो गया। इनमें से केवल सेठ चुन्नीलालजी के मोतीलालजी और भूरामलजी नामक दो पुत्र हुए। आप लोगों का यहाँ की पंच पंचायती में अच्छा नाम था। व्यापार में भी आपने बहुत तरक्की की। आप दोनों का भी स्वर्गवास हो गया। सेठ भूरामलजी के लाभचन्दजी और झूंतालालजी नामक पुत्र हुए। लाभचन्दजी का स्वर्गवास हो गया।

इस समय झूंतालालजी ही इस परिवार के व्यापार का संचालन करते हैं। आपने कलकत्ता में भी अपनी एक ब्रांच स्थापित कर उस पर कपड़े का व्यापार प्रारम्भ किया। इसमें आपको बहुत सफलता रही। आप यहाँ की म्युनिसिपैलेटी के मेम्बर रह चुके हैं। आपके पन्नालालजी नामक एक पुत्र हैं। आप भी मिलनसार और सज्जन व्यक्ति हैं। आपके जैनसुखजी, पृथ्वीराजजी और चम्पालालजी नामक तीन पुत्र हैं। इस समय आपका व्यापार सुजानगढ़, कलकत्ता, सरभोग (आसाम) इत्यादि स्थानों पर भिन्न २ नामों से जूट, कपड़ा, बेकिंग और सोना चाँदी का काम होता है। आप लोग तेरापंथी सम्प्रदाय के मानने वाले सज्जन हैं



धरमसी माणकचन्द बोरड़, सुजानगढ़.



शाह धनरूपमलजी हरकावत, अजमेर.



श्री पन्नालालजी बोरड़ (धरमसी माणकचन्द), [illegible]



सेठ [illegible] धाड़ीवाल, रायपुर. (C. P.)

खींवसरा

खींवसरा गौत्र की उत्पत्ति

उज्जैन के पवाँर राजा खीमजी एक बार भाटी राजपूतों से हार गये, तब इनको जैनाचार्य जिनेश्वरसूरिजी ने शत्रु वशीकरण मंत्र दिया। इससे शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर इन्होंने खींवसर नामक गाँव बसाया। कुछ समय तक इनका सम्बन्ध राजपूतों से रहा। पश्चात् इनके पौत्र भीमजी को दादा जिनदत्तसूरिजी ने ओसवाल जाति में मिलाया। कहीं २ खींवजी के वंशज शंकरदासजी को जैन बनाये जाने की बात पाई जाती है। खींवसर में रहने के कारण यह परिवार खींवसरा कहलाया।

सेठ हजारीमल बनराज मूथा, मद्रास

इस परिवार ने खींवसर से बीकानेर, नागौर आदि स्थानों में होते हुए जोधपुर में अपना निवास बनाया। यहाँ आने के बाद खींवसरा नाथाजी के पुत्र अभयराजजी तथा पौत्र अमीचन्दजी राज्य के कार्य करते रहे, अतएव इन्हें "मूथा" की पदवी मिली। अमीचन्दजी के पुत्र सीमलजी तथा मानोजी प्रतिष्ठित व्यक्ति हुए। इन बन्धुओं को जोधपुर महाराज अभयसिंहजी ने संवत् १८०० मे चौकड़ी गाँव में एक बेरा तथा १२५ बीघा जमीन जागीर में दी। इसी तरह मानाजी को संवत् १८०९ की फागुन सुदी ३ के दिन महाराजा रामसिंहजी ने १ बेरा और २० बीघा जमीन जागीरी में इनायत की। थोड़े समय बाद मानाजी नाराज होकर पूना चले गये। तब महाराजा जोधपुर ने रुक्का भेजकर इनको वापस बुलाया उस समय रीयां से बलूंदा ठाकुर इनको अपना "पगड़ी बदल भाई" बनाकर बलूंदे ले गये। तब से यह परिवार बलूंदा में निवास कर रहा है। मूथा सीमलजी के परिवार में इस समय मूथा गणेशमलजी चिंगनपैठ में, मूथा फतेराजजी तथा धरमराजजी बंगलोर में और चम्पालालजी जालना में व्यापार करते हैं।

मूथा मानोजी के मालजी, सिरदारमलजी तथा धीरजी नामक ३ पुत्र हुए। इनमें सिरदारमलजी के परिवार में सेठ गंगारामजी हैं तथा धीरजी के परिवार में विजयराजजी और तेजराजजी मूथा हैं। मूथा धीरजी के बाद उदयचन्दजी तथा उनके पुत्र हंसराजजी खींवसरा हुए। सेठ हंसराजजी के हजारीमलजी तथा बख्तावरमलजी नामक २ पुत्र हुए।

सेठ हजारीमलजी मूथा—आप संवत् १९०७ में बलूंदे से पैदल राह चलकर जालना आये। वहाँ से संवत् १९१२ में बंगलोर आये और वहाँ दुकान स्थापित की। आप बड़े प्रतापी तथा साहसी पुरुष हुए। बंगलोर के बाद आपने संवत् १९२५ में मद्रास में अपनी दुकान खोली। तथा इस फर्म के व्यापार में आपने उत्तम सफलता प्राप्त की। संवत् १९४० में आपका स्वर्गवास हुआ। आपके बनराजजी तथा चन्दनमलजी नामक दो पुत्र हुए। सेठ बनराजजी मूथा का जन्म संवत् १९२७ में हुआ।

आपका स्वर्गवास २७ वर्ष की आयु में हुआ। आपने भी इस फर्म के व्यापार को बढ़ाया। आपके पर सेठ विजेराजजी दत्तक आये।

सेठ विजेराजजी मूथा— आपका जन्म संवत् १९४७ में हुआ। आपही इस समय इस ५ के मालिक हैं। आपने इस दुकान के व्यापार की अच्छी तरक्की की है। आप स्थानकवासी सम्प्रदाय के अनुयायी है। आपके पुत्र सज्जनराजजी १५ साल के तथा मदनराजजी ९ साल के हैं। आपके बंगलोर, मद्रास, चिदम्बरम्, त्रिरतुराई पुंडो, वरधाचलम् तथा सीयाली में बेंकिंग व्यापार होता है। इन सब स्थानों पर यह फर्म प्रतिष्ठित मानी जाती है। सेठ गंगारामजी की और आपकी ओर से बलूंदे में एक जैन स्कूल और बोर्डिंग हाउस चल रहा है। इसमें आप २ हजार रुपया वार्षिक मदद देते हैं। इसी तरह वहाँ एक अमर बकरों का ठाण है। सेंटथामस माउण्ट में आपने एक मकान स्कूल को दिया है, तथा मद्रास स्थानक, सरदार हाई स्कूल जोधपुर तथा हुक्मीचंद जैन मण्डल उदयपुर में भी अच्छी सहायताएँ दी हैं। इस परिवार को जोधपुर स्टेट की तरफ से ब्याह शादी के अवसर पर नगारा निशान मिलता है।

सेठ बख्तावरमल रूपराज मूथा, बंगलोर

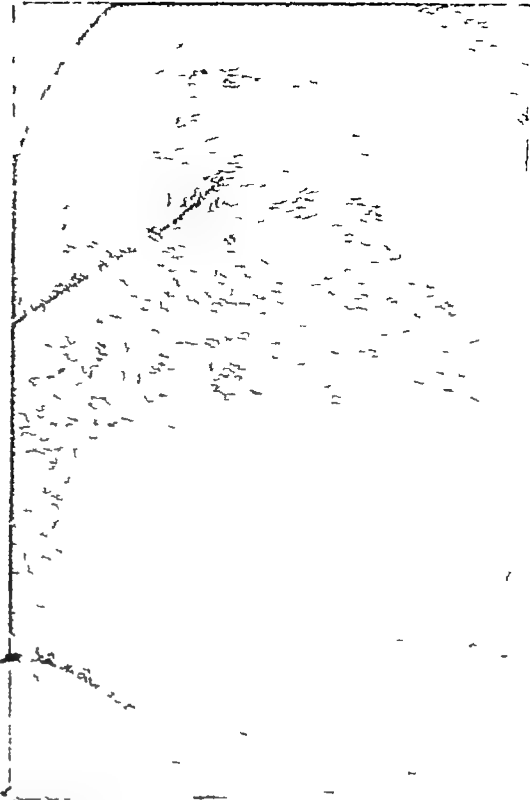
हम ऊपर लिख चुके हैं कि सेठ हंसराजजी खींवसरा के द्वितीय पुत्र सेठ बख्तावरमलजी थे। आप बलूंदे से बंगलोर आये तथा यहाँ व्यापार स्थापित किया। आपने अपने ओसवाल बन्धुओं को मदद देकर बसाया, आपके समय यहाँ मारवाड़ियों की २।४ ही दुकानें थीं। आप बड़े प्रतिष्ठित पुरुष हो गये हैं। आपके रूपराजजी तथा कुन्दनमलजी नामक दो पुत्र हुए। आप दोनों भाइयों का स्वर्गवास अल्प वय में ही हो गया। आपके कोई सन्तान न होने से मूथा कुन्दनमलजी के नाम पर चिंगनपैठ निवासी मूथा गणेशमलजी के पुत्र तेजराजजी को दत्तक लिया। आपका जन्म सम्वत् १९५२ में हुआ। आपकी दुकान बंगलोर में अच्छी प्रतिष्ठित तथा पुरानी मानी जाती है। आपके पुत्र सोहनराजजी, मोहनराजजी तथा पारसमलजी हैं।

सेठ शम्भूमल गंगाराम मूथा, बंगलोर

इस परिवार के पूर्वज बलूंदा निवासी मूथा मानाजी का परिचय हम ऊपर दे चुके हैं। इनके बाद क्रमशः सिरदारमलजी, उत्तमाजी तथा बुधमलजी हुए। बुधमलजी के नाम पर (सींमलजी के प्रपौत्र मूथा चौथमलजी के पुत्र) शम्भूमलजी दत्तक आये। मूथा शम्भूमलजी सम्वत् १९३४ में बंगलोर आये। तथा बंगलोर केंट में दुकान स्थापित कर आपने आपनी व्यापार दूरदर्शिता से बहुत सम्पत्ति उपार्जित की। आप का सम्वत् १९७२ में स्वर्गवास हुआ। आपके नाम पर मूथा गंगारामजी सम्वत् १९५९ में दत्तक आये। आप ही इस समय इस दुकान के मालिक हैं। आपने २० हजार के फंड से देश में एक पाठशाला खोली है तथा २ हजार रुपया प्रति वर्ष इस पाठशाला के अर्थ आप व्यय करते हैं। आपने अपने नामपर छगनमलजी को दत्तक लिया है। इनका जन्म सम्वत् १९१९ में हुआ। यह दुकान बंगलोर के ओसवाल समाज में सबसे धनिक मानी जाती है। बंगलोर के अलावा मद्रास प्रान्त में इस दुकान की और भी शाखाएँ हैं।



स्व० मूथा गंगारामजी खींवसरा (शंभूमल गंगाराम), बंगलोर.



सेठ डोडीरामजी खींवसरा (डोडीराम दलीचन्द), पूना





खींवसरा सरदारचंदजी उम्मेदचंदजी का खानदान, जोधपूर

इस परिवार के पूर्वज खींवसरा राणाजी संवत् १६६० में जोधपुर आये तथा यहां अपना निवास बनाया। इनकी छठी पीढ़ी में खींवसरा भींवराजजी हुए। आपने जोधपुर स्टेट में कई काम किये। आपके पुत्र दौलतरामजी तथा पौत्र मुकुन्दचन्दजी हुए। खींवसरा मुकुन्दचन्दजी स्टेट सर्विस के साथ २ बोहरगत का व्यापार भी करते थे। आपकी आर्थिक स्थिति बड़ी उन्नति पर थी। कागे में आपने श्री मुकुन्द बिहारीजी का मन्दिर बनवाया। इनको स्टेट से कैफियत और मुहर प्राप्त थी। संवत् १९२९ में आपका स्वर्गवास हुआ। आपके पुत्र खींवसरा सरदारचंदजी तथा उम्मेदचंदजी नामांकित व्यक्ति हुए।

खींवसरा सरदारचन्दजी जेतारण आदि के हाकिम थे। संवत् १९६९ में आपका स्वर्गवास हुआ। आपके छोटे भ्राता उम्मेदचंदजी जोधपुर स्टेट की जांच पड़ताल कमेटी के मेम्बर थे। संवत् १९७७ में आपका स्वर्गवास हुआ। आप दोनों बंधु सरकारी नौकरी के अलावा अपने बोहरगत के व्यापार को चलाते रहे। सरदारचन्दजी के पुत्र सज्जनचन्दजी एवम् वल्लभचन्दजी तथा उम्मेदचन्दजी के पुत्र किशनचन्दजी तथा बलवन्तचन्दजी हैं। इनके किशनचन्दजी का स्वर्गवास होगया है। इनके पुत्र मेघचन्दजी हैं। इन बंधुओं में इस समय बलवन्तचन्दजी तथा मेघचन्दजी महकमा खास जोधपुर में सर्विस करते हैं। तथा सज्जनचन्दजी बोहरगत का व्यापार करते हैं। आप सज्जन व्यक्ति हैं। आप को भी स्टेट से मुहर छाप प्राप्त है। आप लोग जोधपुर के ओसवाल समाज में प्रतिष्ठित माने जाते हैं।

सेठ धोंडीराम दलीचन्द खींवसरा, पूना

इस परिवार का मूल निवास नाटसर (जोधपुर स्टेट) में है। वहाँ से सेठ जोधराजजी तथा उनके पुत्र मूलचन्दजी मूथा लगभग ८० साल पूर्व पूना जिला के मुखई नामक गांव में आये। आप संवत् १९२० के लगभग स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र गुलाबचन्दजी का संवत् १९६१ में तथा शिवराजजी का संवत् १९५९ में स्वर्गवास हुआ। सेठ गुलाबचन्दजी परिंचे (पूना) में व्यापार करते थे। आपके धोंडीरामजी, हीराचन्दजी, दलीचन्दजी तथा शिवराजजी के शंकरलालजी नामक पुत्र हुए।

सेठ धोंडी रामजी खींवसरा—आपका जन्म शके १८११ में हुआ। आपके हाथों से व्यापार की विशेष उन्नति हुई। आरम्भ से ही समाज सुधार की भावनाएं आपके मन में बलवती थीं। आपने सन् १९०८ में जैनोन्नति नामक पत्र निकला। सन् १९११ में पूना में एक जैन बोर्डिंग स्थापित करवाया। जिसका रूपान्तर इस समय स्था० जैन बोर्डिंग है। ज्ञान मण्डल स्थापित कर छात्रों को स्कालरशिप दिलवाने की व्यवस्था की। औसर मौसर आदि के विरुद्ध आवाज उठाई। संवत् १९७४ में परिंचे नामक खेड़े को आपने उपर्युक्त न समझ कर आप अपने बन्धुओं के साथ पूना चले आये। तथा यहाँ जरी और रंगीन कपड़े का व्यापार स्थापित कर अपने दोनों छोटे बन्धुओं के सहयोग से इसमें बहुत सफलता प्राप्त की। आपकी कन्या श्री नंदूबाई ओसवाल का विवाह, आपने समाज की कुछ भी परवाह न कर बहुत सादगी से किया। आपके आचरणों का अनुकरण पूना के जैन युवकों में नवजीवन का संचार करता है।

इधर २ साल पूर्व आपने हीराचन्द दलीचन्द के नाम से बम्बई में आढ़त का व्यापार शुरू किया है। दौलीरामजी के पुत्र माणिकलालजी, मोतीलालजी व्यापार में भाग लेते हैं। तथा हीराचन्दजी के पुत्र बदरीलालजी, कांतिलालजी तथा दलीचन्दजी के पुत्र बंशीलालजी, कन्हैयालालजी और चन्द्रकांतजी पढ़ते हैं। सेठ शिवराजजी के पुत्र शंकरलालजी इनकमटेक्स का कार्य करते हैं।

सेठ हंसराज दीपचंद खींवसरा, मद्रास

इस परिवार का निवास डे (नागौर के पास) है। इस परिवार में सेठ नगराजजी के पुत्र हंसराजजी का जन्म संवत् १९०७ में हुआ। आप उद्योगी व धार्मिक प्रवृत्ति के पुरुष थे। आप संवत् १९२९ में मद्रास आये। तथा सेठ अगरचन्द मानचन्द के यहाँ सर्विस की। और फिर मारवाड़ चले गये। तथा वहाँ संवत् १९७३ में स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र भीमराजजी तथा दीपचंदजी हुए। इनमें भीमराजजी २८ साल की उम्र में १९५९ में स्वर्गवासी हुए।

सेठ दीपचन्दजी विद्यमान हैं। आपका जन्म संवत् १९३७ में हुआ। संवत् १९७४ में आपने मद्रास के बैङ्किग तथा ज्वेलरी का व्यापार स्थापित किया। तथा अपनी होशियारी और बुद्धिमानी से इस व्यापार में बहुत सफलता प्राप्त की है। इस समय मद्रास में आपकी दुकान बहुत प्रतिष्ठित मानी जाती है। दीपचन्दजी खींवसरा का समाज की उन्नति की ओर अच्छा लक्ष्य है। आपने मद्रास में स्थानक बनवाने में मदद दी है। तथा इस समय आप मद्रास स्थानकवासी स्कूल के सेक्रेटरी हैं। आप के नाम पर हुक्मीचन्दजी दत्तक आये हैं।

सेठ कनीराम गुलाबचन्द खींवसरा, धूलिया

इस परिवार के पूर्वज जेठमलजी और उनके भाई वेणीदासजी नारसर ठाकुर के कामदार थे। वहाँ से यह परिवार बड़लू (मारवाड़) आया। तहाँ वहाँ से लगभग १५० साल पूर्व जेठमलजी के पुत्र कनीरामजी और तिलोकचंदजी नालोद (धूलिया के पास) आये। और वेणीदासजी का परिवार साई खेड़ा (नाशिक) गया। सेठ कनीरामजी के पुत्र गुलाबचंदजी तथा प्रतापमलजी और तिलोकचन्दजी के हुकमीचंदजी हुए। इनमें सेठ गुलाबचंदजी और प्रतापचन्दजी का व्यापार धूलिया में स्थापित हुआ। इन दोनों भाइयों का व्यापार संवत् १९३१ में अलग २ हुआ। तथा सेठ हुकमीचन्दजी के पुत्र कस्तूरचन्दजी फकीरचन्दजी और चौथमलजी नालोद में व्यापार करते रहे। फकीरचंदजी प्रतिष्ठित पुरुष हुए। इनका तथा गुलाबचन्दजी का संवत् १९४२ में स्वर्गवास हुआ। खींवसरा गुलाबचन्दजी के नाम पर जोगीलालजी बड़लू से, तथा प्रतापमलजी के नाम पर तुलसीरामजी नालोद से दत्तक आये।

खींवसरा जोगीलालजी का जन्म संवत् १९३६ में हुआ। आप सेठ वेणीदासजी के प्रपौत्र हैं। धूलिया में आपकी दुकान सब से प्राचीन मानी जाती है। आप प्रतिष्ठित तथा समझदार व्यक्ति हैं। आपके पुत्र टीकमचन्दजी, जवरीमलजी तथा सोभागमलजी हैं। आपके यहाँ सराफी व्यापार होता है। खींवसरा तुलसीरामजी के पुत्र रूपचन्दजी, तुलसीराम रूपचन्द के नाम से धूलिया में व्यापार करते हैं। तथा शेष ३ भ्राता छोटे हैं। यह परिवार मंदिर मार्गीय आम्नाय का मानने वाला है।

सेठ नेमीचन्द हेमराज खींवसरा, लोनार (बरार)

इस परिवार का मूल निवास बड़ी पादू (मेड़ते के पास) है। वहाँ से सेठ गंभीरमलजी के पुत्र नेमीचंदजी संवत् १९४० में लोनार आये तथा देवकरण चांदमल बोहरा की दुकान पर सर्विस की। पीछे से इनके छोटे भ्राता पेमराजजी आनंदरूपजी, नंदलालजी, देवीचन्दजी तथा चंदूलालजी लोनार आये तथा इन भाइयों ने सम्मिलित रूप में व्यापार आरंभ किया। सेठ पेमराजजी तथा देवीचन्दजी विद्यमान हैं। इनके यहाँ "देवीचंद प्रेमराज" के नाम से व्यापार होता है। देवीचन्दजी के पुत्र उत्तमचंदजी हैं।

सेठ अनंदरूपजी का स्वर्गवास संवत् १९७५ में हुआ। आपके पुत्र हेमराजजी का जन्म संवत् १९५८ में हुआ। आपने स्वर्गीय सेठ मोतीलालजी संचेती की निगरानी में हिन्दू मुस्लिम दंगे को व दंगाइयों के आंदोलन को शांत करने में बहुत परिश्रम किया। आप जातीय कुरीतियों को मिटाने में तथा शुद्धि संगठन में प्रयत्नशील रहते हैं। आपके यहाँ "नेमीचन्द हेमराज" के नाम से कपड़े का व्यापार होता है।

नौलखा

नौलखा परिवार अजीमगंज

सबसे प्रथम सन् १७५० ई० में इस परिवार के पूर्व पुरुष बाबू गोपालचन्दजी नोलखा अजीमगंज आये, आप बड़े व्यापार दक्ष थे। अतः थोड़े ही समय में अच्छी उन्नति करली आपने अपने भतीजे बाबू जयस्वरूपचन्दजी को दत्तक लिया और बाबू जय स्वरूपचन्दजी ने बाबू हरकचन्दजी को दत्तक लिया।

हरकचन्दजी नोलखा—आप सन् १८५७ में अपने पिता से अलग हो गये और अपने नाम से स्वतन्त्र व्यवसाय आरम्भ किया तथा अल्पकाल ही में इसमें अच्छी उन्नति करली। आपने कलकत्ता लुधियान साहेबगंज, पुर्णियां, मुर्लीगंज, महाराजगंज और नवाबगंज में अपनी फर्में खोली। बैंकिंग व्यवसाय के साथ ही जमीदारी खरीदने में भी आपने पूंजी लगाई। फलतः आपकी जमीदारी मुर्शिदाबाद, वीरभूमि और पूर्णिया जिले में हो गई। आपका स्वर्गवास सन् १८७४ ई० में हुआ। आपके तीन पुत्र हुए जिनमें बूलचन्दजी नोलखा और दानचन्दजी नोलखा का स्वर्गवास सन् १८४७ में हुआ। आपके तीसरे पुत्र बाबू गुलाबचन्दजी नोलखा थे।

गुलाबचन्दजी नोलखा—आपने व्यवसाय और स्टेट को अधिक बढ़ाया। आप मुर्शिदाबाद की लाल बाग बेंच के १० वर्ष तक ऑनरेरी मजिस्ट्रेट रहे। आपने सन् १८८५ के अकाल में अपनी प्रजा का कर माफ कर दिया और तीन महीने तक दो हजार प्रपीड़ितों को भोजन देते रहे। आपने अजीमगंज का प्रसिद्ध "राजे विला" नामक उद्यान बनवाया। आप बहुत ही लोक प्रिय सहृदय सज्जन थे। आपका स्वर्गवास सन् १८९६ ई० के जून मास में हुआ। आपके पुत्र बाबू धनपतसिंह जी भी उदार और सहृदय सज्जन थे।

धनपतसिंहजी नोलखा—आपने बंगाल सरकार को १५ हजार की रकम अजीमगंज में गुलाब

चन्द नौलखा अस्पताल भवन के लिये दिये। इसी प्रकार २५ हजार की रकम आपने कलकत्ते के शम्भूनाथ हास्पिटल में सर्जिकल वार्ड बनाने के लिये दिये। सरकार ने आपके कार्य्यों के सम्मान स्वरूप आपको सन् १९१० में "राय बहादुर" की पदवी प्रदान की। इतना ही नहीं सरकार ने आपको कलंगी के रूप में खिल्लत दे आपका आदर किया। आपका स्वर्गवास संवत् १९७० में हुआ। आपके दो पुत्र थे जिनके नाम बाबू आनन्दसिंह नौलखा और बाबू इन्द्रचन्द्रजी नौलखा थे। आप दोनों ही क्रमशः सन् १९०४ और सन् १९०८ में निसन्तान स्वर्गवासी हुए। अतएव आपके नाम पर बाबू निर्मलकुमारसिंहजी नौलखा सुजानगढ़ से दत्तक आये।

निर्मलकुमारसिंहजी नोलखा—आपने १९७६ में स्टेट का कार भार सम्हाला। आप बहुत होनहार राष्ट्रीय विचारों के शिक्षित नवयुवक हैं। आपको शुद्ध खद्दर से बड़ा स्नेह है। आप जैन श्वेताम्बर सभा अजीमगंज, जियागंज एडवर्ड कोरोनेशन स्कूल के व्हाइस प्रेसिडेण्ट और अजीमगंज के म्युनिसिपल कमीश्नर हैं। १९१६ में आपकी ओर से यहां एक बालिका विद्यालय खोला गया है। इसके अलावा आप बंगाल लैंड होल्डर्स एसोसियेशन, कलकत्ता क्लब, ब्रिटिश इण्डिया अशोसिएसन आदि संस्थाओं के भी मेम्बर हैं। हाल ही में आपने जैन श्वेताम्बर अधिवेशन अहमदाबाद के सभापति का स्थान आपने सुशोभित किया था। शिक्षा एवम् सामाजिक प्रतिष्ठा के साथ धार्मिक कामों की ओर भी आपका अच्छा लक्ष्य है। संवत् १९८२ में महात्मा गांधीजी अजीमगंज आये थे उस समय आपने १० हजार रुपया उनकी सेवा में भेंट किया था उसी साल जैनाचार्य्य ज्ञानसागरजी महाराज को भी ज्ञान भंडार में १० हजार रुपया दिया था। श्री पावापुरीजी में गांव के जैन श्वेताम्बर मन्दिर के जीर्णोद्धार में २० हजार रुपया लगाया। आपको पुरातत्व विषयों से भी बहुत स्नेह है। आपने अपने बगीचे में पुरानी वस्तुओं का एक संग्रह कर रखा है। इस समय आपके चरित्र कुमार सिंहजी नामक एक पुत्र हैं। आपकी बहुत से स्थानों पर जमींदारी है। तथा कलकत्ता अजीमगंज, और बढ़िया, अकबरपुर, फबाद गोला इत्यादि स्थानों पर बैंकिंग, पाट और गल्ले का व्यापार होता है।

नौलखा परिवार, सीतामऊ

कहा जाता है कि जब महाराजा रतनसिंहजी इधर मालवे में आये तब इस खानदान वाले भी साथ थे। उनकी पत्नी यहां रतलाम में सती हुई, जिनके स्मारक रूप में आज भी चबूतरा बना हुआ है। और आज भी इस परिवार के लोग अपने यहां होने वाले शुभ कार्य्यों पर पूजा करने के लिये वहां जाया करते हैं। यहीं से करीब १२५ वर्ष पूर्व सेठ धन्नाजी के पुत्र हरीरामजी सीतामऊ आये। यहां आकर आपने स्टेट के खजाने का काम किया। आपके बड़े पुत्र हरलालजी आजीवन स्टेट के हाउस होल्ड आफिसर तथा छोटे पुत्र छब्बालालजी हाकिम रहे। स्टेट में आपका अच्छा सम्मान था।

सेठ हरलालजी के जैतसिंहजी और रामलालजी नामक दो पुत्र हुए। आप लोग भी स्टेट में सर्विस करते रहे। जैतसिंहजी के नन्दलालजी, खुमानसिंहजी और लालसिंहजी नामक तीन पुत्र हुए। इनमें लालसिंहजी, रामलालजी के नाम पर दत्तक रहे। प्रथम दो भाइयों का स्वर्गवास होगया। इस समय नंदलालजी के बख्तावरसिंहजी और किशोरसिंहजी नामक पुत्र विद्यमान हैं।

श्री लालसिंहजी ने पहले पहल दरबार पेशी का काम किया। पश्चात् तहसीलदार रहे। इस समय आप स्टेट के रेव्हेन्यू आफिसर हैं। आप मिलनसार शिक्षित एवम् सज्जन व्यक्ति हैं। आपके प्रतापसिंहजी, कुबेरसिंह, हिम्मतसिंहजी, प्रहलादसिंहजी, गिरिशकुमारजी और सुमतिकुमारजी नामक ६ पुत्र हैं। बाबू प्रतापसिंहजी एम० ए० एल० एल० बी० और बाबू कुबेरसिंहजी बी० ए० हैं। आप दोनों भाई सज्जन और नवीन विचारों के हैं। आप मन्दिर संप्रदाय के मानने वाले हैं। सेठ छब्बालालजी के पुत्र धूलसिंहजी नाहरगढ़ नामक परगने के इजारे का काम करते रहे। इनके ४ पुत्रों में से दो का स्वर्गवास होगया। शेष में एक लखपतसिंहजी आगरे में तहसीलदार हैं। तथा दूसरे विशनसिंहजी सीतामऊ स्टेट में सर्विस करते हैं।

धाड़ीवाल

धाड़ीवाल गौत्र की उत्पत्ति

महाजन वंश मुक्तावली में लिखा है कि विभंम पाटन नगर में ठेठूजी नामक एक उरभी वंशीय राजपूत रहते थे। ये इधर उधर धाड़े मारकर अपनी आजीविका चलाते थे। एक बार का प्रसंग है कि डहड़ खीची राजपूत अपनी लड़की का डोला लेकर शिसोदिया राणा रणधीर के पास जा रहा था। रास्ते में ठेठूजी ने इसे लूट लिया और इसकी लड़की बदन कुँवर को अपने साथ ले आया। इस बदन कुँवर से सोहड़ नामक एक पुत्र हुआ। इसे संवत् ११६९ में श्री जिनदत्त सूरिजी ने जैन धर्म का प्रतिबोध देकर जैन धर्मावलम्बी बनाया। इसकी माँ धाड़े से लाई गई थी, अतएव इसका धाड़ेवा गौत्र स्थापित हुआ। कालान्तर में यही धाड़ीवाल के नाम से पुकारा जाने लगा।

सेठ मुल्तानचंद हीरचंद धाड़ीवाल, रायपुर

यह परिवार बगडी (मारवाड़) का निवासी है। वहाँ से सेठ सरदारमलजी के बड़े पुत्र मुलतानचंदजी संवत् १९२४ में औरंगाबाद गये। वहाँ से आप संवत् १९२८ में अमरावती होते हुए जबलपुर गये तथा वहाँ रेजिमेंट के साथ कपड़े का व्यापार शुरू किया। जबलपुर से आप अपने छोटे भ्राता हीरचंद जी को लेकर पल्टन के साथ संवत् १९३५ में रायपुर (सी० पी०) आये। इन दोनों भ्राताओं ने कपड़ा आदि के व्यापार में लाखों रुपयों की सम्पत्ति उपार्जित की। सेठ मुलतानमलजी का संवत् १९७६ में स्वर्गवास हुआ। तथा सेठ हीरचंदजी मौजूद हैं। आपका जन्म संवत् १९१९ में हुआ।

वर्तमान में मुलतानचंदजी के पुत्र लखमीचन्दजी तथा हीरचंदजी के पुत्र नथमलजी तथा उत्तमचंद तमाम कारबार सम्हालते हैं। आपका जन्म क्रमशः संवत् १९५४ सं० १९५२ तथा १९६० में हुआ। आपकी दुकान रायपुर की प्रधान धनिक फर्म है। आपके यहाँ सराफी, बेङ्किग व पुलगांव मिल की एजंसी का काम होता है। बगड़ी में इस परिवार ने एक जैन महावीर पाठशाला खोल रक्खी है। इसमें १२५ छात्र पढ़ते

हैं। इस पाठशाला को आपने १५ हजार की लागत की एक बिल्डिंग भी दी है। यह परिवार बगड़ी में अच्छी प्रतिष्ठा रखता है। नथमलजी के पुत्र सम्पतराजजी तथा केसरीचंदजी और हुकमचन्दजी के पुत्र सुगनचन्दजी हैं।

सेठ फतेमल अजितसिंह धाड़ीवाल, भीलवाड़ा

सोहड़जी की ३५ वीं पुश्त में मेघोजी नामक व्यक्ति हुए। इनके देवराजजी और हंसराजजी नामक दो पुत्र थे। इनमें से सेठ हंसराजजी गुजरात प्रांत छोड़कर सांगानेर नामक स्थान पर आये। यहाँ आपके दौलतरामजी और सूरजमलजी नामक दो पुत्र हुए। अपने पिता के स्वर्गवासी हो जाने पर आप दोनों भाई अलग हो गये। इनमें दौलतरामजी भीलवाड़ा तथा सूरजमलजी सरवाड़ नामक स्थान पर चले गये। सेठ दौलतरामजी के गंभीरमलजी और नथमलजी नामक दो पुत्र हुए। सेठ गंभीरमलजी बड़े व्यापार कुशल व्यक्ति थे। आपने व्यापार में लाखों रुपये पैदा किये। आपकी उस समय जावद, शाहपुरा, कंजेड़ा आदि कई स्थानों पर शाखाएँ थीं। सेठ नथमलजी भीलवाड़ा जिले के हाकिम हो गये थे। आपकी यहाँ बहुत प्रतिष्ठा थी। आपके नाम पर तिंवरी से नवलमलजी दत्तक आये। सेठ गंभीरमलजी के भी कोई पुत्र न था, अतएव आपके नामपर सर वाड से कल्याणमलजी दत्तक आये। आप लोगों ने भी अपने व्यवसाय की अच्छी तरक्की की। संवत् १९२२ में फिर आप लोग अलग २ हो गये।

सेठ कल्याणमलजी के तीन पुत्र हुए जिनके नाम क्रमशः फतेमलजी, जवानमलजी और इन्द्रमल जी हैं। इनमें से फतेमलजी अपने चाचा नवलमलजी के नाम पर दत्तक रहे। जवानमलजी का स्वर्गवास हो गया। इन्द्रमलजी अपने पुराने आसामी देनलेन के व्यवसाय का संचालन कर रहे हैं। आपके रिषभचंदजी और पार्श्वचन्दजी नामक २ पुत्र हैं। प्रथम बी० ए० में पढ़ रहे हैं। सेठ फतेमलजी इस समय अपने पुराने व्यवसाय का संचालन कर रहे हैं। यहाँ की ओसवाल पंचायती में आपका बहुत सम्मान है। आपके द्वारा कई फैसले किये जाते हैं। आपके अजीतमलजी नामक एक पुत्र हैं। आप अभी विद्याध्ययन कर रहे हैं। अजीतमलजी के भँवरलालजी नामक एक पुत्र हैं।

श्री शिवचंदजी धाड़ीवाल, अजमेर

शिवचन्दजी धाड़ीवाल—आपका जन्म सम्वत् १९२३ में अजमेर में हुआ। सम्वत् १९४४ से आप २८ सालों तक बीकानेर स्टेट में डिप्टी सुपरिन्टेन्डेण्ट बन्दोवस्त, अफसर कहतसाली, रेलवे इन्सपेक्टर और कई जिलों के हाकिम रहे। आपको उर्दू और फारसी का अच्छा ज्ञान है। आपके गोपीचन्दजी तथा हीरा· चन्दजी नामक २ पुत्र हुए। शिवचन्दजी के छोटे भ्राता हरकचन्दजी एल० एम० एस० कई स्थानों पर मेडिकल आफीसर रहे। सम्वत् १९७२ में उनका स्वर्गवास हुआ। उनके नाम पर हरीचन्दजी दत्तक गये।

गोपीचन्दजी धाड़ीवाल—आपका जन्म संवत् १९५२ में हुआ। आपने इलाहाबाद युनिवर्सिटी से बी० एस० सी० एल० एल० बी० की डिगरी हासिल की। फिर २ साल अजमेर में वकालत करने के बाद आप मेसर्स बिड़ला ब्रदर्स लिमिटेड के जूट डि० में नियुक्त हुए। और इस समय आप इस फर्म के असिस्टेंट

मैनेजर हैं। आप बड़े शान्त, अनुभवी तथा मिलनसार सज्जन हैं। सन् १९३० में आप बिड़ला ब्रदर्स की तरफ से ईस्ट इण्डिया प्रोड्यूज के डायरेक्टर होकर विलायत गये थे। आपके पुत्र फतहचन्दजी पढ़ते हैं तथा हेमचन्द्रजी अजमेर में रहते हैं। धाड़ीवाल हरीचन्दजी का जन्म सम्वत् १९५६ में हुआ। आपने बी, कॉम तक अध्ययन किया। कुछ दिन जयाजीराव मिल्स में सर्विस की, तथा इस समय अजमेर में रहते हैं। यह परिवार अजमेर के ओसवाल समाज में उत्तम प्रतिष्ठा रखता है। इस परिवार में धाड़ीवाल दीपचन्दजी के पुत्र लक्ष्मीचन्दजी धाड़ीवाल एम० ए० एल० एल० बी० प्रोफेसर होल्कर कॉलेज इन्दौर हैं।

सेठ मुलतानमल शेषमल धाड़ीवाल का परिवार, कोलार गोल्ड फील्ड

इस परिवार के मालिकों का मूल निवास स्थान बगड़ी (जोधपुर-स्टेट) का है। आप ओसवाल जैन श्वेताम्बर समाज के बाइस सम्प्रदाय को मानने वाले सज्जन हैं। इस परिवार में सेठ मुलतानमलजी संवत् १९४६ में बंगलोर आये और यहाँ आकर आपने मेसर्स आईदान रामचन्द्र के यहाँ दो साल तक सर्विस की। इसके दो वर्ष बाद आपने बंगलोर में लेन देन की दुकान स्थापित की। सम्वत् १९५७ के लगभग श्री मुलतानमलजी ने कोलार गोल्ड फील्ड के अण्डरसन पेठ में एक लेन देन की धर्म स्थापित की जो आज तक बड़ी अच्छी तरह से चल रही है। आपका सम्वत् १९३० में जन्म हुआ है। आप बड़े साहसी तथा व्यापारकुशल सज्जन हैं। आपका धर्म ध्यान में अच्छा लक्ष्य है। करीब २ सालों से इस फर्म में से मेसर्स आइदान रामचन्द्र का भाग निकल गया है। आपके इस समय तीन पुत्र हैं जिनके नाम श्रीशेषमलजी, अमोलकचन्दजी तथा केवलचन्दजी हैं। आप तीनों भाइयों का जन्म क्रमशः सम्वत् १९६५, १९७१ तथा १९७३ का है। आप तीनों ही बड़े योग्य और नवीन विचारों के सज्जन हैं। श्री केवलचन्दजी इस समय मेट्रिक में पढ़ रहे हैं।

इस परिवार की मुलतानमल शेषमल के नाम से अण्डरसनपेठ में तथा मुलतानमल मिश्रीलाल के नाम से रेलामेठम् अर्कोनम् में बैंकिंग का व्यवसाय होता है। यह फर्म यहाँ मातबर मानी जाती है।

हरखावत

हरखावत गौत्र की उत्पत्ति

संवत् ९१२ में पँवार राजा माधवदेव को भट्टारक भावदेवसूरिजी ने प्रतिबोध देकर जैन धर्म अंगीकार करवाया। संवत् १३४० में इस परिवार के पामेचा साः रतनजी ने शाही फौज के साथ कुवाड़ियों से लड़ाई की इसलिए इनकी गौत्र "कुवाड़" हुई। संवत् १६४४ में इस परिवार में हरखाजी हुए। इनकी संतानें "हरखावत" कहलाईं। इन्होंने सिरोही, जोधपुर तथा जालोर में मंदिर बनवाये, शत्रुंजय का संघ निकाला। इनके पुत्र विमलशाहजी मेड़ते के सम्पत्तिशाली साहुकार थे। आपको बादशाह ने "शाह" की पदवी दी। इनके कुशलसिंहजी तथा सगतसिंहजी नामक २ पुत्र हुए।

हरखावत कुशलसिंहजी का परिवार, इन्दौर

हरखावत कुशलसिंहजी अच्छे प्रतिष्ठित व्यक्ति हुए। आपके परतापसिंहजी, कल्याणसिंहजी, परथीसिंहजी, विनयसिंहजी, बहादुरसिंहजी तथा केसरीसिंहजी नामक ६ पुत्र हुए। इनमें सम्वत् १८७९ में बहादुरमलजी की धर्मपत्नी उनके साथ सती हुई। संवत् १८२३ में इस परिवार को १ गाँव जागीर में मिला। उस सम्बन्ध में इनको निम्न परवाना मिला था।

सिंघवी फतेचन्द लिखावंत प्रगणे मेडतारा गांवरा माचारणरी वीसणी तर्फे हवेली रा चोधरिया लोकादिसे—तथा गाव सा. परतापमल, कल्याणमल कुशलमल विमलदास रे पट्टे हुआ छे सु संवत १८२४ रा साख सावण था अमलदीजो दाण जमा खदी वगेरा बाब दरबाँररा छे रेख १००१ इनायत खालसा री संवत १८२३ आषाढ़ वदी ७

उपरोक्त ग्राम अभी तक इस परिवार के अधिकार में चला आता है। हरखावत प्रतापमलजी के पुत्र उम्मेदमलजी, बख्तावरमलजी, हिन्दूमलजी, ईसरीदासजी तथा जगरूपमलजी हुए। इनमें ईसरीदासजी के नाम पर जगरूपमलजी के छोटे पुत्र मगनमलजी दत्तक आये। मगनमलजी के पुत्र सरदारमलजी केथूली (इन्दौर-स्टेट) में रहते थे। तथा भानपुरा आदि की सायरों के इजारे का काम करते थे। तथा मालदार साहुकार थे। इनके पुत्र सिरेमलजी भी भानपुरा में एक प्रतिष्ठित पुरुष हो गये हैं। यहाँ की जनता आपका बहुत सम्मान करती थी। आप आजन्म कस्टम इन्सपेक्टर रहे। वर्तमान में आपके पुत्र शिवराजमलजी इन्दौर स्टेट के गरोठ परगने में सब इक्साइज इन्सपेक्टर हैं। आप बड़े मिलनसार तथा समझदार युवक हैं।

हरखावत सगतसिंहजी का परिवार, अजमेर

शाह सगतसिंहजी के पश्चात् क्रमशः शिवदासजी, निहालचन्दजी, बरदीचंदजी तथा प्रभूदानजी हुए। संवत् १९११ में शाह प्रभूदानजी जोधपुर दरबार की ओर से अजमेर दरबार में खलीता लेकर गये थे। संवत् १९१४ के गदर में आप रावजी राजमलजी लोढ़ा के साथ फौज लेकर आउवा तथा आसोप की बागी फौजों को दबाने के लिये गये थे। जब राजमलजी वहाँ काम आगये तब आप फौज को वापस लेकर जोधपुर आये। तथा वहीं आपका स्वर्गवास हुआ। आपके पुत्र पूसमलजी संवत् १९२७ में स्वर्गवासी हुए इनके पुत्र शाह हमीरमलजी विद्यमान हैं। आपका जन्म संवत् १९२२ में हुआ। आपने ३० सालों तक अजमेर रेलवे के ऑडिट ऑफिस में सर्विस की। सन् १९१६ में आप रिटायर्ड हुए। आपके पुत्र कुँवर धनरूपमलजी का जन्म १९४२ में हुआ। आपने संवत् १९६१ में कपड़े तथा गोटे का व्यापार किया। तथा इस समय जवाहरात का व्यापार करते हैं। आप अजमेर के प्रतिष्ठित जौहरी माने जाते हैं। आपके पास क्यूरियो तथा जवाहरातका अच्छा संग्रह है।

सेठ मनीरामजी देवीचन्दजी हरखावत, सीतामऊ

करीब १२५ वर्ष पूर्व इस परिवार के पूर्व पुरुष सेठ कपूरचन्दजी रतलाम से सीतामऊ आये। यहाँ आकर आपने व्यापार में अच्छी सफलता प्राप्त की। आपके मनीरामजी नामक एक पुत्र हुए।

हजारीमलजी था। फतेचन्दजी का कम वय में ही स्वर्गवास होगया। शेष तीनों भाइयों के हाथों से इस की अच्छी तरक्की हुई। मगर संवत् १९४२ के बाद ही आप लोग अलग २ होगये और स्वतन्त्र से अपना २ व्यापार करने लगे।

सेठ बापूलालजी बड़ी सरल प्रकृति के पुरुष थे। यहां की जनता में आपका अच्छा स थी। आप का स्वर्गवास संवत् १९८४ में होगया। आपके छगनलालजी, सौभागमलजी, चांदमलजी और लालचंदजी नामक पांच पुत्र हैं। इनमें से सेठ कनकमलजी अपने चाचा सेठ जी के यहां दत्तक गये हैं। शेष चारों भाई शामलात में श्रीचन्द बापूलाल के नाम से व्यापार कर रहे हैं। आप लोग मिलनसार सज्जन हैं। आज भी गांव की चौधरायत आप ही के पास है।

सेठ कस्तूरचन्दजी भी योग्य सज्जन थे। आप आजीवन व्याज का काम करते रहे। आपके कोई पुत्र न होने से आपके नाम पर सूरजमलजी दत्तक लिये गये हैं। वर्तमान में आप श्रीचंद कस्तूरचन्द के नाम से व्यापार करते हैं। आपके इन्दौरीलालजी नामक एक पुत्र हैं।

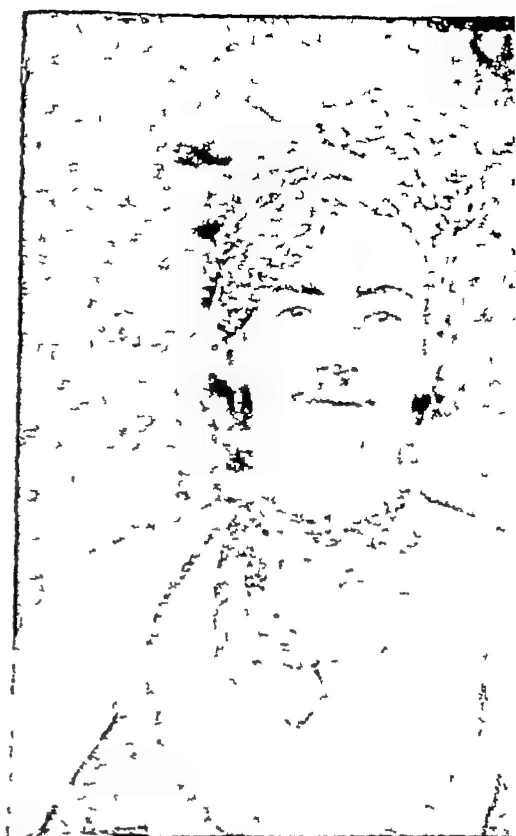
सेठ हजारीमलजी ने अपने भाइयों से अलग होकर व्यापार में बहुत तरक्की की। आप चतुर व्यापारी थे। आपने अफीम के वायदे के व्यवसाय में लाखों रुपये की सम्पत्ति उपार्जित की। आपका स्वभाव बड़ा आनन्दमय और मिलनसार था। आपके यहां सेठ कनकमलजी दत्तक आये। वर्तमान में आप श्रीचंद हजारीमलजी के नाम से व्याज का काम करते हैं। आप परोपकारी, शिक्षित और सज्जन व्यक्ति हैं। आपने हजारों लाखों रुपया सार्वजनिक कार्य्यों में खर्च किया है। आपकी ओर से एक कन्या पाठशाला, प्रसूतिगृह, पब्लिक लायब्रेरी इत्यादि संस्थाएँ चल रही हैं। इन सबका खर्च आप ही उठाते हैं। इसके अतिरिक्त आपने लोगों की सुविधा के लिये स्थानीय स्मशानघाट को पक्का बनवा दिया है। मन्दिर में आपने ७०००) की एक चांदी की वेदी भेंट की है। आपके पिताजी के नाम पर आपने नगर चौरासी की उसमें डेढ़ लाख रुपया खर्च किया। इसी प्रकार आपके पुत्र जन्म पर ५० हजार रुपया खर्च हुआ। लिखने का मतलब यह है कि आपने अपने हाथों से लाखों रुपया खर्च किया। आपके इस समय अभयकुमारजी नामक एक पुत्र है। बड़नगर में यह परिवार बहुत प्रतिष्ठित माना जाता है।

सेठ ऊँकारजी लालचन्दजी नांदेचा (खेत पालिया), मुल्थान (मालवा)

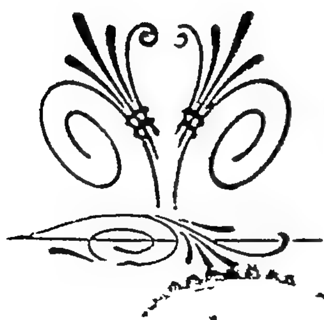
इस परिवार वालों का वास्तविक गौत्र नांदेचा है, मगर बहुत वर्ष पूर्व इस खानदान के पुरुष खेताजी पर एक बार क्षेत्रपालजी बहुत प्रसन्न हुए थे अतएव तब ही से ये लोग खेतपालिया कहलाने लगे। इसके बाद करीब २५० वर्ष पूर्व इस परिवार के लोग मालवा प्रांत में आकर वसे। सेठ गुमानजी के पिताजी ने मुल्थान में अफीम का व्यापार करना प्रारम्भ किया। इसमें उन्हें अच्छी सफलता मिली आपके बाद सेठ गुमानजी ने फर्म का संचालन किया। आप दबंग व्यक्ति थे। आपका व्यापार मोधिये लोगों से होता था, अतएव यह परिवार मोधिया वाले के नाम से प्रसिद्ध है। आपके ओंकारजी नामक एक पुत्र हुए।



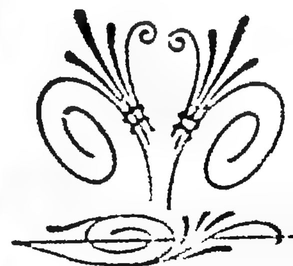
सेठ सरूपचंदजी नांदेचा, खाचरोद.



सेठ प्रतापचन्दजी नांदेचा, खाचरोद.







सेठ हीरालालजी नांदेचा खाचरोद.

सेठ ओंकारजी ने इस फर्म के व्यवसाय में बहुत उन्नति की। आपके पुत्र लालचन्दजी भी बड़े योग्य पुरुष थे। आपने भी काफी उन्नति कर फर्म की वृद्धि की। आप दोनों का स्वर्गवास होगया। जिस समय सेठ लालचन्दजी का स्वर्गवास हुआ उस समय आपके पुत्र स्वरूपचन्दजी नाबालिग थे। अतएव फर्म का संचालन रामाजी बोरा नामक एक व्यक्ति ने किया। आप भी आपके एक रिश्तेदार थे।

सेठ स्वरूपचन्दजी इस परिवार में खास व्यक्ति हुए। आपने मुल्थान स्टेट के खजांची का काम किया। आपके समय में ही इस फर्म पर काछी बड़ौदा, रुनिजा, पचलाना, बावनगढ़, दौतरिया कानौगा, कठौड़िया इत्यादि ठिकानों का काम शुरू हुआ। प्रायः इन सभी ठिकानों में आपका अच्छा सम्मान था। इनके द्वारा आपको समय २ पर कई प्रशंसा सूचक रुक्के भी प्राप्त हुए थे। धार स्टेट से आपको 'सेठ' की पदवी मिलीथी। मुल्थान ठिकाने से आपको जागीर और बैठक का सम्मान मिला हुआ था। जो इस समय भी इस परिवार वालों के पास है। मुल्थान के अलावा आपने खाचरोद में भी अपनी एक फर्म स्थापित की, जो इस समय सुचारु रूप से चल रही है। लिखने का मतलब यह है कि आप इस खानदान में बड़े प्रभाविक और प्रतिष्ठित व्यक्ति हुए। आपका स्वर्गवास हो गया। आपके चार पुत्र हुए, जिनके नाम पन्नालालजी, प्रतापमलजी, गेंदालालजी और कन्हैयालालजी था। इनमें से अंतिम तीनों का स्वर्गवास आपकी मौजूदगी ही में होगया था। आपके स्वर्गवास होने के पश्चात् ही आपके चौथे पुत्र का भी स्वर्गवास होगया। इनमें से केवल सेठ प्रतापमलजी के हीरालालजी नामक एक पुत्र हुए। जिस समय आप लोगों का स्वर्गवास हुआ उस समय हीरालालजी नाबालिग थे। अतएव फर्म का संचालन स्वरूपचन्दजी के भानजे सेठ इन्द्रमलजी ने देखा। जो इस समय भी बराबर देख रहे हैं। आप भी बड़े व्यापार कुशल और मेधावी सज्जन हैं। आपके द्वारा इस फर्म की बहुत उन्नति हुई है।

सेठ हीरालालजी संवत् १९७८ से व्यापार में लगे। आपके सामाजिक विचार बड़े ऊँचे है। धार्मिक एवम् सार्वजनिक कार्य्यों की ओर भी आपका बहुत ध्यान है। आपने अपने दादाजी के स्मारक स्वरूप उनके निकाले हुए दान से एक जैन स्वरूप पाठशाला स्थापित कर रखी है। जिसमें इस समय ७० विद्यार्थी विद्याध्ययन कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त आपने यहां एक प्राइवेट लायब्रेरी भी स्थापित कर रखी हैं जिससे यहां की जनता लाभ उठा सकती है। स्थानीय श्री० श्वेताम्बर साधुमार्गीय जैन हितेच्छु मण्डल की ओर से यहाँ एक विद्यालय स्थापित है उसमें भी आप २००) माहवार खर्च के लिये प्रदान करते हैं। इसी प्रकार और भी कई सार्वजनिक कार्य्यों में आपकी ओर से सहायता प्रदान की जाती है, आप मिलनसार, सज्जन और उत्साही व्यक्ति हैं। आपको साहुकारों की दरबारी बैठक में प्रथम स्थान मिला हुआ है आप परगना बोर्ड के भी मेम्बर हैं। आपका व्यापार इस समय मुल्थान और खाचरोद में बैङ्किग और आसामी लेन देन का हो रहा है।

सेठ ओंकारजी ने इस फर्म के व्यवसाय में बहुत उन्नति की। आपके पुत्र लालचन्दजी भी बड़े योग्य पुरुष थे। आपने भी काफी उन्नति कर फर्म की वृद्धि की। आप दोनों का स्वर्गवास होगया। जिस समय सेठ लालचन्दजी का स्वर्गवास हुआ उस समय आपके पुत्र स्वरूपचन्दजी नाबालिग थे। अतएव फर्म का संचालन रामाजी बोरा नामक एक व्यक्ति ने किया। आप भी आपके एक रिश्तेदार थे।

सेठ स्वरूपचन्दजी इस परिवार में खास व्यक्ति हुए। आपने मुल्थान स्टेट के खजांची का काम किया। आपके समय में ही इस फर्म पर काछी बड़ौदा, रूनिजा, पचलाना, बावनगढ़, दौतरिया कानौगा, कठौड़िया इत्यादि ठिकानों का काम शुरू हुआ। प्रायः इन सभी ठिकानों में आपका अच्छा सम्मान था। इनके द्वारा आपको समय २ पर कई प्रशंसा सूचक रुक्के भी प्राप्त हुए थे। धार स्टेट से आपको 'सेठ' की पदवी मिलीथी। मुल्थान ठिकाने से आपको जागीर और बैठक का सम्मान मिला हुआ था। जो इस समय भी इस परिवार वालों के पास है। मुल्थान के अलावा आपने खाचरोद में भी अपनी एक फर्म स्थापित की, जो इस समय सुचारु रूप से चल रही है। लिखने का मतलब यह है कि आप इस खानदान में बड़े प्रभाविक और प्रतिष्ठित व्यक्ति हुए। आपका स्वर्गवास हो गया। आपके चार पुत्र हुए, जिनके नाम पन्नालालजी, प्रतापमलजी, गेंदालालजी और कन्हैयालालजी था। इनमें से अंतिम तीनों का स्वर्गवास आपकी मौजूदगी ही में होगया था। आपके स्वर्गवास होने के पश्चात् ही आपके चौथे पुत्र का भी स्वर्गवास होगया। इनमें से केवल सेठ प्रतापमलजी के हीरालालजी नामक एक पुत्र हुए। जिस समय आप लोगों का स्वर्गवास हुआ उस समय हीरालालजी नाबालिग थे। अतएव फर्म का संचालन स्वरूपचन्दजी के भानजे सेठ इन्द्रमलजी ने देखा। जो इस समय भी बराबर देख रहे हैं। आप भी बड़े व्यापार कुशल और मेधावी सज्जन है। आपके द्वारा इस फर्म की बहुत उन्नति हुई है।

सेठ हीरालालजी संवत् १९७८ से व्यापार में लगे। आपके सामाजिक विचार बड़े ऊँचे हैं। धार्मिक एवम् सार्वजनिक कार्य्यों की ओर भी आपका बहुत ध्यान है। आपने अपने दादाजी के स्मारक स्वरूप उनके निकाले हुए दान से एक जैन स्वरूप पाठशाला स्थापित कर रखी है। जिसमें इस समय ७० विद्यार्थी विद्याध्ययन कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त आपने यहां एक प्राइवेट लायब्रेरी भी स्थापित कर रखी हैं जिससे यहां की जनता लाभ उठा सकती है। स्थानीय श्री० श्वेताम्बर साधुमार्गीय जैन हितेच्छु मण्डल की ओर से यहाँ एक विद्यालय स्थापित है उसमें भी आप २००) माहवार खर्च के लिये प्रदान करते हैं। इसी प्रकार और भी कई सार्वजनिक कार्य्यों में आपकी ओर से सहायता प्रदान की जाती है, आप मिलनसार, सज्जन और उत्साही व्यक्ति हैं। आपको साहुकारों की दरबारी बैठक में प्रथम स्थान मिला हुआ है आप परगना बोर्ड के भी मेम्बर हैं। आपका व्यापार इस समय मुल्थान और खाचरोद में बैङ्किंग और आसामी लेन देन का हो रहा है।

छाजेड़

छाजेड़ गौत्र की उत्पत्ति—ऐसी किम्वदन्ति है कि सवीयाणगढ़ नामक स्थान में राठोड़ राजपूत धांधल रामदेव के पुत्र काजल निवास करते थे। इन्हें चमत्कारों पर विश्वास नहीं था। अतएव ये हमेशा इसी खोज में रहते थे एक बार उन्हें श्री जिनचन्द्रसूरि ने इन्हें चमत्कार बतलाया कहा जाता है कि उन्होंने इन्हें ऐसा वासक्षेप चूर्ण दिया कि जो दीपमालिका की रात्रि में जहाँ डाला जाय वह स्थान सोने का होजाय। इन्होंने चूर्ण प्राप्त कर मन्दिर उपाश्रय और अपने घर के छज्जों पर डाल कर सूरिजी की परीक्षा करनी चाही। कहना न होगा कि सुबह सब छज्जे सोने के हो गये। यह चमत्कार देखकर काजल ने जैन धर्म स्वीकार कर लिया। तब ही से इनके वंशज छज्जे से छजेहड़ कहलाये। आगे चल कर यही नाम छाजेड़ रूप में बदल गया।

रायबहादुर सेठ लखमीचन्दजी छाजेड़ का खानदान, किशनगढ़

इस परिवार के पूर्व पुरुष सेठ कल्याणमलजी छाजेड़ सन् १८४८ में व्यापार के लिए अपने निवासस्थान किशनगढ़ से झांसी गये और जाकर दमोह तहसील के खजांची हुए। वहाँ के कप्तान डी० रास आपको अपने साथ पंजाब ले गये तथा सन् १८४९ में लय्या कमिश्नरी का खजांची बनाया। आप वहाँ के दरबारी तथा म्यु० मेम्बर थे। लय्या कमिश्नरी के टूट जाने पर आप सन् १८६० में देरा-इस्माइलखाँ के खजांची हुए। सन् १८७७ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र लखमीचन्दजी तथा रामचन्दजी हुए।

रा० ब० सेठ लखमीचन्दजी छाजेड़—आप देहरागाजीखाँ के म्यु० मेम्बर थे। पिताजी के गुजरने पर आप देहराइस्माईलखाँ कमिश्नरी के खजांची बनाये गये साथ ही सब जिलों के म्युनिसिपल ट्रेझरर भी आप निर्वाचित हुए। आप इक्कीस सालों तक वहाँ ऑनरेरी मजिस्ट्रेट रहे। किशनगढ़ स्टेट ने आपको दरबारी बैठक और "शाह" की पदवी दी। किशनगढ़ स्टेट ने आपको सन् १९०२ में देहलीदरबार में भेजा। १९०१ में फ्रांटियर में मासूद ब्लॉकेट शुरू हुई, उसमें आपने बहुत इमदाद दी। १९०६ में आपको "राय-साहिब" का खिताब मिला तथा सन १९११ में देहलीदरबार के समय आप "रायबहादुर" के सम्मान से विभूपित किये गये। सन १९१२ में आपका स्वर्गवास हुआ। आपके छोटे भ्राता रामचन्द्रजी देहरा-गाजीखाँ के ट्रेझरर रहे। अभी उनके पुत्र हीराचन्दजी इस खजाने का काम देखते हैं। सेठ लखमीचन्दजी ने किशनगढ़ स्टेशन पर एक धर्मशाला बनवाई। आपके गोपीचन्दजी तथा अमरचन्दजी नामक दो पुत्र हैं।

रायसाहब गोपीचन्दजी—आपका जन्म संवत् १९४७ में हुआ। आप अपने पिताजी के स्थान पर देराइस्माईलखाँ, गाजीखाँ, बन्नू और मियांवाली के खजांची हुए। वहाँ के आप दरबारी थे। १५ सालों तक देहरा इस्माईलखाँ में आप ऑनरेरी मजिस्ट्रेट रहे। वायसराय ने आपको सन् १९१७ में सेंट जॉनएम्बुलेंस का ऑनरेरी कौंसिलर बनाया। सन् १९२१ में आप शाही दरबारी बनाये गये। तथा इसके २ साल बाद आपको रायसाहिब का खिताब इनायत हुआ। इसी तरह आप वहाँ की कई सरकारी



रायबहादुर स्व० लक्ष्मीचन्दजी छाजेड़, किशनगढ़.



सेठ कस्तूरचन्दजी छाजेड़, म





सभा सोसायटियों व डिपार्टमेंटों के मेम्बर रहे। आपको किशनगढ़ स्टेट ने भी शाह की पदवी तथा दरबारी बैठक दी थी। आपके छोटे भ्राता अमरचन्दजी तमाम कामों में आपका साथ देते रहे। आप दोनों बन्धु इस समय किशनगढ़ में रहते हैं। गोपीचंदजी के पुत्र बालचन्दजी, सुगनचन्दजी, पेमचन्दजी तथा गुलाबचन्दजी हैं। अमरचन्दजी के पुत्र घेवरचन्दजी मेट्रिक पास हैं।

श्री प्रतापमलजी छाजेड़, जोधपुर

प्रतापमलजी छाजेड़ उन व्यक्तियों में हैं, जो अपनी बुद्धिमत्ता एवं परिश्रम के बलपर साधारण स्थिति से उन्नति कर समाज में एक वजनदार स्थान प्राप्त करते हैं। आपके पिताजी पचपदरा में नमक का व्यापार करते थे उनका संवत् १९७२ में स्वर्गवास हुआ। इनके प्रतापमलजी, मीठालालजी तथा मिश्रीमलजी नामक ३ पुत्र हुए।

प्रतापमलजी छाजेड़—आपका जन्म संवत् १९४४ में हुआ। आप सन् १९०२ में पचपदरा साल्ट डि० की हुकूमत में अहलकार हुए। वहाँ से १९१३ में जोधपुर आये तथा इसके एक साल बाद मारवाड़ की वकीली परीक्षा में प्रथम श्रेणी में सर्वप्रथम उत्तीर्ण हुए। तबसे आप जोधपुर में प्रेक्टिस करते हैं, तथा यहाँ के प्रसिद्ध वकील माने जाते हैं। आपको स्थानीय बार एसोसिएशन ने अपना प्रधान चुनकर सम्मानित किया है। जोधपुर के हिन्दू मुसलमानों के बकरों के सम्बन्ध के झगड़े में तथा दोनों कौमों के तालाब के झगड़ों में स्टेट कौंसिल ने इन्हें झगड़ा निपटाने वाले सदस्यों में निर्वाचित किया था। हाई कोर्ट की वकालत के सिवाय आप कई प्रसिद्ध ठिकानों के वकील भी हैं। आप जोधपुर राजकुमारी (बाईजीलाल) के विवाह के समय कोटा दरबार के कैम्प के प्रबन्धक मुकर्रर हुए थे। हरएक अच्छे कामों में आप सहायताएँ देते रहते हैं। जोधपुर के ओसवाल समाज में तथा शिक्षित समाज में आपकी उत्तम प्रतिष्ठा है। आपके पुत्र सोहनलालजी पढ़ते हैं। आपके भाई मीठालालजी "हजारीमल प्रतापमल" के नाम से आढ़त का व्यापार करते हैं तथा उनसे छोटे मिश्रीलालजी छाजेड़ जोधपुर के सेकंड क्लास वकील हैं।

श्री सरदारमलजी छाजेड़, शाहपुरा

इस परिवार का मूल निवासस्थान जयपुर स्टेट के मालपुरा नामक स्थान में है। वहाँ से छाजेड़ करमचदजी तथा उनके पुत्र कल्याणमलजी व्यापार के लिये मालवे की ओर जा रहे थे तब उन्हें तत्कालीन शाहपुराधीश महाराजा उम्मेदसिंहजी ने अपने यहाँ रोक लिया। तबसे यह परिवार शाहपुरा ही में निवास करता है। कल्याणमलजी के पुत्र बखतमलजी तथा पौत्र जोरावरमलजी शाहपुरा के ऑनरेरी कामदार थे। जोरावरमलजी को राजाधिराज अमरसिंहजी ने देनेपेटे उदयपुर दरबार के यहाँ ओल में रक्खा था। शाहपुरा दरबार की नाराजी हो जाने से आप अपनी जागीर तथा जायदाद छोड़कर सरवाड़ चले गये थे, वहाँ से पुनः विश्वास दिला कर आप बुलवाये गये। इनके पुत्र नथमलजी तथा पौत्र चांदमलजी हुए। छाजेड़ चांदमलजी ने महाराजा लछमणसिंहजी तथा नाहरसिंहजी के समय में ७ वर्षों तक कामदारी की। आपने उदयपुर स्टेट से कोशिश करके तलवार बंधाई की रकम वापस ली। आपके तेजमलजी, सगतमलजी

तथा राजमलजी नामक ३ पुत्र हुए। तेजमलजी ५० सालों तक मेवाड़ में हाकिम तथा मुंसरीम रहे। संवत् १९७२ में इनका शरीरान्त हुआ। इसी तरह सगतमलजी तथा राजमलजी भी शाहपुरा स्टेट में तहसीलदारी आदि सर्विस करते हुए क्रमशः संवत् १९५७ तथा १९८६ में गुजरे। सगतमलजी के पुत्र सरदारमलजी विद्यमान हैं। आपका जन्म १९४३ में हुआ। आप अठारह सालों तक दीवानी हाकिम तथा बाउंडरी आफीसर और सुपरिटेन्डेन्ट जेल रहे। वर्तमान में आप बाउंडरी अफीसर हैं। आपके खानदान को "जींकारा" प्राप्त हैं आपके पुत्र मोनमलजी मेसर्स बिड़ला ब्रदर्स की अपरगंज श्यूगर मिल सिहोरा में श्यूगर केमिस्ट हैं। शाहपुरा में यह परिवार बहुत प्रतिष्ठित माना जाता है।

सेठ बालचन्दजी छाजेड़, इन्दौर

सेठ बालचन्दजी छाजेड़ इन्दौर में बड़े प्रतिष्ठित और नामांकित व्यक्ति हो गये हैं। आपके पिता सेठ मोतीचन्दजी जावरा में रहते थे। वहीं आपका जन्म हुआ। आपके २ भाई और थे जिनका नाम गंभीरमलजी और जीतमलजी है। इनमें से सेठ गम्भीरमलजी इन्दौर के सेठ नथमलजी के यहाँ दत्तक आये। आपके साथ २ आपके भाई भी इन्दौर आगये। सेठ गम्भीरमलजी का युवावस्था ही में देहान्त होजाने के कारण मेसर्स नथमल गम्भीरमल फर्म का संचालन आपने ही किया। आपने हजारों लाखों रुपयों की सम्पत्ति उपार्जित की। इतना ही नहीं बल्कि उसका सदुपयोग भी किया। आपने तिलक स्वराज्य फण्ड, पिपल्स सोसायटी इत्यादि संस्थाओं को बहुत द्रव्य प्रदान किया। करीब २००००) हजार रुपया लगाकर इन्दौर में भी आपने श्री आदिनाथजी का एक सुन्दर मन्दिर बनवाया। जबकि इन्दौर में जोरों का इन्फ्लुएन्जा चला था उस समय आपने ८, १० प्राइवेट औषधालय खोलकर जनता की सेवा की थी। इसमें आपने करीब १००००) रुपया खर्च किया। इसी प्रकार आपने करीब १०००००) से यहाँ एक "सुन्दरबाई ओसवाल महिलाश्रम" के नाम से एक संस्था स्थापित की। इसमें इस समय १२५ लड़कियाँ तथा स्त्रियाँ धार्मिक और व्यवहारिक शिक्षा प्राप्त कर रही हैं। आपका स्वर्गवास हो गया है। इस समय आपके भाई जीतमलजी विद्यमान हैं। इनके चार पुत्र हैं। बड़े पुत्र श्री सिरेमलजी छाजेड़ बी० ए० एल० एल० बी० हैं और इन्दौर में वकालत करते हैं। आप उत्साही और मिलनसार नवयुवक हैं।

डागा

डागा गौत्र की उत्पत्ति

कहा जाता है कि कि संवत् १३८१ में गोड़वाड़ प्रांत के नागोल नामक स्थान में डूँगरसिंह नामक एक पराक्रमी और वीर राजपूत रहता था। यह चौहान वंशीय था। किसी कारण वश इसने श्री जिन कुशल सूरि द्वारा जैन धर्म का प्रतिबोध पाया। डूँगरसीजी के नाम से इसके वंशज डागा कहलाये। आगे चलकर इसी वंश में राजाजी और पूजाजी नामक व्यक्ति हुए। उनके नाम से इस गौत्र में राजाणी और पूँजाणी नामक शाखाएं हुई इनके वंशज जेसलमेर जाकर रहने लगे। इससे ये लोग जेसलमेरी डागा कहलाये।



श्रीयुत प्रतापमलजी छाजेड़ वकील, जोधपुर.



स्व० सेठ माणकचन्दजी डागा (शेरसिंह माणकचन्द) बेतूल



श्री सेठ जसकरणजी डागा रायपुर



सेठ हस्तमल लखमीचंद डागा बीकानेर

कई वर्ष पूर्व इस परिवार के व्यक्ति जेसलमेर से बीकानेर में आकर बस गये। आगे चलकर इस खानदान में क्रमशः सुजानपालजी एवम् अमरचन्दजी हुए। अमरचंदजी के दो पुत्र हुए जिनके नाम सेठ रूपचन्दजी एवम् सेठ खूबचन्दजी था। सेठ खूबचन्दजी के परिवार के लोग आज कल अपना स्वतंत्र व्यापार करते हैं। उपरोक्त वर्तमान फर्म सेठ रूपचन्दजी के वंश की है। सेठ रूपचंदजी अपना व्यवसाय बीकानेर ही में करते रहे। आपके चन्दनमलजी नामक पुत्र हुए। आप बड़े होशियार व्यक्ति थे। आपने अमृतसर में शाल दुशाले के व्यापार में बहुत सफलता प्राप्त की। आपका स्वर्गवास हो गया। आपके हस्तमलजी नामक एक पुत्र हुए।

सेठ हस्तमलजी—आप संवत् १९२५ के करीब पहले पहल व्यापार के निमित्त कलकत्ता गये। पश्चात् १९३२ में आपने सेठ अमोलकचन्दजी पारख के साझे में फर्म स्थापित कर उस पर रेशमी कपड़े का व्यापार प्रारंभ किया। यह फर्म संवत् १९५० तक अमोलकचंद लखमीचंद के नाम से चलती रही। कुछ वर्षों के पश्चात् पारखों से आपका साझा अलग हो गया। इसी समय से आपकी फर्म पर हस्तमल लखमीचन्द नाम पड़ने लगा। सेठ हस्तमलजी बड़े बुद्धिमान्, मेधावी एवम् व्यापार चतुर पुरुष थे। आपके ही कठिन परिश्रम का कारण है कि आज यह फर्म बहुत उन्नतावस्था में चल रही है। संवत् १९७२ के मिगसर में आपका बीकानेर में स्वर्गवास हो गया। आपके लखमीचंदजी नामक पुत्र थे।

सेठ लखमीचन्दजी—आपका जन्म संवत् १९१७ का था। आपभी अपने पिताजी की तरह बड़े बुद्धिमान एवम व्यापार चतुर पुरुष थे। अपने पिताजी की मौजूदगी ही में आप फर्म का संचालन कार्य्य करने लग गये थे। इस फर्म में बीकानेर निवासी सेठ भैरोंदानजी चोपड़ा कोठारी का संवत् १९६७ से ही साझा प्रारंभ हो गया था जो अभी एक साल से अलग हो गया है। इस समय सेठ भैरोंदानजी के पुत्र अपना अलग व्यापार करते हैं। सेठ लखमीचन्दजी बड़े कर्मण्य व्यक्ति थे। आपने संवत् १९६९ में अपनी फर्म पर जापान, जर्मनी आदि विदेशी स्थानों के रेशमी तथा सिल्की कपड़े का डायरेक्ट इम्पोर्ट करना प्रारंभ किया। संवत् १९७५ में आपने जसकरनजी सिद्धकरनजी के साझे में यहीं मनोहरदास स्ट्रीट नं० ३ में अपनी एक और फर्म खोली तथा इस पर भी वही सिल्क तथा रेशम का व्यापार प्रारंभ किया। संवत् १९७९ में बम्बई में झकरिया मसजिद के पास आपने मेसर्स हस्तमल लखमीचंद के नाम से यही उपरोक्त व्यापार करने के लिये फर्म खोली। इसके २ वर्ष पश्चात् अर्थात् संवत् के १९८१ मिगसर में आपने देहली में केसरीचंद माणकचन्द के नाम से अपनी एक और ब्रांच खोली। इस पर रेशमी कपड़े का व्यापार प्रारंभ हुआ। ये सब फर्मे आपके जीवन काल तक चलती रहीं। संवत् १९८२ के चैत्र में आपका स्वर्गवास हो गया। पश्चात् उपरोक्त देहली एवम बम्बई वाली फर्मं उठाली गई। सेठ लखमीचंदजी बड़े प्रतिभा सम्पन्नव्यक्ति थे। बीकानेर की पंचायती में आपका खास स्थान था। आपके केसरीचन्दजी एवम माणकचन्दजी नामक दो पुत्र हुए। खेद है कि बा० केसरीचन्दजी का युवावस्था ही में स्वर्गवास हो गया। आप एक होनहार नवयुवक थे।

वर्तमान में इस फर्म के संचालक सेठ लखमीचन्दजी के द्वितीय पुत्र बा० माणकचन्दजी हैं।

आपका जन्म संवत् १९७१ के कार्तिक में हुआ। आप बड़ी योग्यता एवम बुद्धिमानी से फर्म के सारे कार्य का संचालन कर रहे हैं। आप नवीन विचारों के शिक्षित सज्जन हैं। यह परिवार बाईस संप्रदाय का अनुयायी है।

सेठ हरकचंदजी मंगलचंदजी डागा सरदार शहर

सेठ सांवतरामजी के पुत्र पनेचन्दजी घड़सीसर नामक स्थान से चल कर सरदार शहर में आकर बसे। आप डागा गौत्र के सज्जन हैं। यहाँ से फिर आप कलकत्ता गये एवम वहां दलाली का काम प्रारंभ किया। इसके पश्चात् आपने कपड़े की दुकान खोली। आपका स्वर्गवास हो गया। आपके तीन पुत्र उदयचन्दजी, छोगमलजी और चौथमलजी हुए।

उदयचन्दजी के पुत्र कालूरामजी हुए। आपका भी स्वर्गवास हो गया। आपके पुत्र बुधमलजी यहीं रहते हैं। चौथमलजी के पुत्र हनुमानमलजी पहले कलकत्ते में कपड़े का व्यापार करते रहे। आज कल किशनगंज (पूर्णियाँ) में पाटका व्यापार करते हैं। आपके पुत्र विरदीचन्दजी और रामलालजी दलाली करते हैं।

सेठ छोगमलजी के शुहारमलजी, उमचन्दजी और हरकचन्दजी तीन पुत्र हुए। जिनमें से प्रथम दो निःसन्तान स्वर्गवासी हो गये। सेठ छोगमलजी की मृत्यु के समय उनके पुत्र हरकचन्दजी की उम्र केवल १४ वर्ष की थी इस छोटी उम्र में ही आपने बड़ी होशियारी से कटपीस का व्यापार आरंभ किया। इसमें आपको बहुत लाभ हुआ। आपने अपने हाथों से लाखों रुपये कमाये। इसके पश्चात् विशेष रूप से आप देश ही में रहे। आपका स्वर्गवास हो गया। आप भी जैन श्वेताम्बर तेरापंथी संप्रदाय के अनुयायी थे। आपके मंगलचन्दजी नामक एक पुत्र हैं।

सेठ मंगलचन्दजी समझदार, शिक्षित और मिलन सार व्यक्ति हैं। आपके धार्मिक विचार ऊंचे हैं। आजकल आप नं० २ राजा उडमंड स्ट्रीट कलकत्ता में जूट, कटपीस तथा बैंकिंग का काम कर रहे हैं। तथा मंगलचंद डागा के नाम से फारबिसगंज (पूर्णियां) में जूट का व्यापार करते हैं। आपके नथमलजी, चम्पालालजी, सुमेरमलजी, और चम्पालालजी नामक पुत्र हैं। नथमलजी व्यापार में सहयोग देते हैं।

सेठ रतनचन्दजी हरकचंदजी डागा का परिवार, सरदार शहर

करीब ९० वर्ष पूर्व जब कि सरदार शहर बसा इस परिवार के पुरुष सेठ लछमनसिंहजी के पुत्र दानमलजी, कनीरामजी और जीतमलजी तीनों ही भाई घड़सीसर नामक स्थान से चल कर सरदार शहर में आकर बसे। आप तीनों ही भाई संवत् १९०० के करीब नौगाँव (आसाम) नामक स्थान पर गये और फर्म स्थापित कर जूट एवम् दुकानदारी का काम प्रारम्भ किया। इस समय इस फर्म का नाम दानमल कनीराम रक्खा था जो आगे चलकर कनीराम हरकचन्द हो गया। इस फर्म में आप लोगों को अच्छी सफलता रही। आप लोगों का स्वर्गवास हो गया। सेठ कनीरामजी के हरकचन्दजी, और दानमलजी के रतनचन्दजी नामक पुत्र हुए। जीतमलजी के कोई पुत्र न होने से उनके नाम पर हरकचन्दजी दत्तक रहे।

सेठ हरकचन्दजी और रतनचन्दजी भी योग्य निकले। आपने भी फर्म की बहुत उन्नति की तथा अपनी एक शाखा मेसर्स हरकचन्द नथमल के नाम से कलकत्ता में खोली। जिसका नाम आजकल हरकचन्द रावतमल पड़ता है। इस पर जूट, कपड़ा तथा चलानी का काम होता है। आप दोनों भाई अलग हो गये तथा आप लोगों का स्वर्गवास भी हो गया।

सेठ रतनचन्दजी के नथमलजी नामक पुत्र हुए। आपका स्वर्गवास हो गया। आपके चम्पालालजी, और दीपचन्दजी दो पुत्र हैं। सेठ हरकचन्दजी के रावतमलजी एवम् पूनमचन्दजी नामक पुत्र हैं। आजकल उपरोक्त फर्म के मालिक आप ही हैं। आप दोनों भाई मिलनसार और सज्जन व्यक्ति हैं। आप लोगों का कलकत्ता के अलावा सालडांगा नामक स्थान पर भी रावतमल मोतीलाल के नाम से जूट का व्यापार होता है। आप तेरापंथी जैन श्वेताम्बर संप्रदाय के हैं।

रावतमलजी के बुधमलजी, मन्नालालजी और माणकचन्दजी तथा पूनमचन्दजी के मोतीलालजी नामक पुत्र हैं।

सेठ शेरसिंह माणकचन्द डागा, बेतूल

इस परिवार का मूल निवास बीकानेर है। देश से सेठ शेरसिंहजी डागा संवत् १८९९ में बदनूर आये, तथा हुकुमराज मगनराज नामक दुकान पर मुनीम हुए। मुनीमात करते हुए सेठ शेरसिंहजी ने माल गुजारी जमाई और अपना घरू व्यापार भी चालू किया। दरबार में इनको कुर्सी प्राप्त थी संवत् १९२९ में डागा शेरसिंहजी का स्वर्गवास हुआ, आपके पुत्र माणकचन्दजी डागा का जन्म संवत् १९१० में हुआ। आपने १०।४० गांव जमीदारी के खरीद किये, आप भी यहाँ के राजदरबार व जनता में अच्छी इज्जत रखते थे, आपने अपनी मृत्यु के समय अपनी कन्या सौ० भीखीबाई को लगभग १ लाख रुपयों की सम्पत्ति प्रदान की। इनके स्वर्गवासी होने के बाद इनकी धर्म पत्नी ने ५ हजार की लागत से मेन डिस्पेंसरी में अपने पति के स्मारक में उनके नाम से १ वार्ड बनवाया, संवत् १९७० में डागा माणकचंदजी का स्वर्गवास हुआ, आपके नाम पर कस्तूरचन्दजी डागा बीकानेर से दत्तक लाये गये।

डागा कस्तूरचन्दजी का जन्म संवत् १९५५ में हुआ आपका कुटुम्ब भी बेतूल जिले का प्रतिष्ठित तथा मातवर कुटुम्ब है, आपके यहाँ बेतूल में शेरसिंह माणकचंद डागा के नाम से जमीदारी तथा सराफी व्यवहार होता है डागा कस्तूरचन्दजी के पुत्र हरकचंदजी १० साल के हैं।

सेठ भवानीदास अर्जुनदास, डागा रायपुर

लगभग १०० साल पूर्व बीकानेर से डागा भैरोंदानजी के पुत्र भवानीदासजी रायपुर आये और यहाँ उन्होंने कपड़ा तम्बाकू व घी का व्यापार शुरू किया। डागा भवानीदासजी के जावंतमलजी तथा अर्जुनदास जी नामक २ पुत्र हुए।

लगभग संवत् १९०० से भवानीदासजी के पुत्र भवानीदास अर्जुनदास तथा भवानीदास जावंतमल के नाम से व्यवसाय करते हैं। सेठ अर्जुनदासजी डागा रायपुर के प्रतिष्ठित व्यक्ति थे आपका

संवत् १९४२।४३ में शरीरान्त हुआ, आपके नाम पर आपके चचेरे भ्राता हमीरमलजी के पुत्र गंभीरमलजी दत्तक आये। डागा गंभीरमलजी धार्मिक वृत्ति के पुरुष थे संवत् १९५८ की कुँवार सुदी ४ को आपका शरीरान्त हुआ।

डागा गंभीरमलजी के यहाँ सरदार शहर से संवत् १९६२ की बैशाख सुदी २ को डागा जसकरण जी दत्तक लाये गये। डागा जसकरणजी का जन्म संवत् १९५५ की मगसर सुदी ५ को हुआ। डागा जसकरणजी के ख्यालीरामजी, छगनमलजी व कुशलचन्दजी नामक ३ भ्राता विद्यमान हैं जो कलकत्ते में ख्यालीराम डागा व कुशलचन्द माणिकचन्द के नाम से अपना स्वतंत्र कारबार करते हैं।

डागा जसकरणजी ने एफ० ए० तक शिक्षा प्राप्त की है। सामाजिक तथा देश सेवा के कार्यों की ओर आपकी खास रुचि है स्थानीय दादावाड़ी को नवीन बनाने में व उसकी प्रतिष्ठा में आपने बहुत परिश्रम उठाया इसके उपलक्ष में यहाँ के ओसवाल समाज ने अभिनंदन पत्र देकर आपका स्वागत किया। आपने मारवाड़ी छात्र सहायक समिति नामक संस्था को १ हजार रुपयों की सहायता दी है तथा इस समय आप उसके मंत्री हैं, इसी तरह और भी सामाजिक और सार्वजनिक कामों में आप दिलचस्पी लेते रहते हैं। आपके पुत्र सम्पतलालजी पढ़ते हैं। आपके यहाँ भवानीदास अर्जुनदास के नाम से रायपुर में बैङ्किग तथा बर्तनों का थोक व्यापार और अर्जुनदास गंभीरमल के नाम से राजिम में बर्तन तयार कराने का काम होता है। रायपुर की प्रतिष्ठित फर्मों में आपकी दुकान मानी जाती है।

सेठ भीकमचन्द डागा, अमरावती

इस परिवार का मूल निवास स्थान बीकानेर हैं। वहाँ से लगभग १२५ साल पूर्व सेठ हमीरमल जी डागा अमरावती आये तथा यहाँ नौकरी की। इसके बाद आपने किराने का व्यापार किया। आपके पुत्र लखमीचन्दजी, हैदराबाद वाले सेठ पूरनमल प्रेमसुखदास गनेड़ीवाला के यहाँ मुनीम रहे। संवत १९२८ में आपका स्वर्गवास हुआ। उस समय आपके पुत्र भीकमचन्दजी चार वर्ष के थे आपने होशियार होकर जवाहरात का व्यापार आरम्भ किया तथा इस व्यापार में अच्छी सम्पत्ति उपार्जित की। आप अमरावती के ओसवाल समाज में समझदार तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं तथा यहाँ की पंचपंचायती व धार्मिक कामों में प्रधान भाग लेते हैं। आपके पुत्र रतनचन्दजी की वय १९ साल की है। इस समय आपके यहाँ जवाहरात, कृषि तथा सराफी का व्यापार होता है।

सेठ तेजमल टीकमचन्द डागा, रायपुर

इस परिवार के पूर्वज डागा तखतमलजी अपने मूल निवास बीकानेर से लगभग ८० साल पहिले रायपुर आये और कपड़े का व्यवसाय शुरू किया, आपके पुत्र चन्दनमलजी ने व्यवसाय को उन्नति दी। सेठ चन्दनमलजी के पुत्र तेजमलजी संवत् १९६२ की कातिक वदी ११ को ३९ साल की आयु में स्वर्गवासी हुए। वर्तमान में इस दुकान के मालिक सेठ तेजमलजी डागा के पुत्र टीकमचन्दजी डागा हैं। आपका जन्म संवत् १९५४ में हुआ है। आप रायपुर के व्यापारिक समाज में अच्छी प्रतिष्ठा रखते हैं, तथा चांदी सोना और सराफी का व्यापार करते हैं।

पारख

पारख गौत्र की उत्पत्ति—बारहवीं शताब्दी के अंतिम समय में चंदेरी नगरी में राठौर खरहत्थ-सिंह राज्य करते थे। इनके चार पुत्र अम्बदेव, निम्बदेव, भैंसासाह और आसपाल हुए। इन चारों पुत्रों के परिवार से बहुत से गौत्रों की स्थापना हुई, जिसका अलग २ परिचय स्थान २ पर दिया गया है। भैंसाशाह मांडवगढ़ में एक प्रसिद्ध व्यक्ति हो गये हैं। इन्होंने शत्रुंजय का एक बहुत बड़ा संघ निकाला था, तथा वहाँ का जीर्णोद्वार करवाया था। इनके चौथे पुत्र पासूजी को आहड़नगर के राजा चन्द्रसेन ने अपना जौहरी नियुक्त किया था। वहीं एक बार हीरे की सच्ची परीक्षा करने के कारण राजा द्वारा पारखी की पदवी मिली। आगे चलकर यही पदवी पारख गौत्र के रूप में परिणत हो गई।

लाला दिलेरामजी जौहरी (लाहौरी) का खानदान, देहली

इस खानदान के मूल पुरुष लाला दिलेरामजी हैं। आप देहली के ही निवासी हैं। आपका परिवार यहाँ लाहोरी के नाम से मशहूर हैं। आप श्वेताम्बर जैन स्थानकवासी आम्नाय के मानने वाले हैं।

लाला दिलेरामजी—आप पंजाब के सुप्रसिद्ध महाराजा रणजीतसिंहजी के खास जौहरी थे। देहली में आप बड़े नामांकित पुरुष हो गये हैं। आपके पुत्र लाला दुलीचन्दजी तथा लाला सरूपचन्दजी हुए। लाला दुलीचन्दजी बादशाह अकबर (द्वितीय) के खास जौहरी थे। आपके हुलासरायजी, गुलाब-चन्दजी, मानसिंहजी तथा थानसिंहजी नामक ४ पुत्र हुए।

लाला हुलासरायजी जौहरी का परिवार—आपके लाला ईसरचंदजी नामक पुत्र हुए। ईसरचंदजी के लाला जगन्नाथजी, लाला प्यारेलालजी तथा लाला रोशनलालजी नामक ३ पुत्र हुए। लाला जगन्नाथजी नामांकित व्यक्ति हुए। आप राय बद्रीदासजी जौहरी के शागिर्द थे। आपने कलकत्ते में भी अपनी एक फर्म खोली थी। आपका स्वर्गवास ५० सालकी आयु में संवत् १९५१ में हुआ। आपके पुत्र लाला पूरनचंदजी का जन्म संवत् १९२७ मे हुआ। आपने उस समय बी० ए० परीक्षा पास की थी, जिस समय सारे ओसवाल समाज में एक दो ही ग्रेजुएट होंगे। आप भी जवाहरात का व्यापार करते रहे। आपका स्वर्गवास संवत् १९५२ में हुआ। आपके नाम पर लाला रतनलालजी जोधपुर से संवत् १९५६ में दत्तक लाये गये। आपका जन्म संवत् १९४८ में हुआ। आपकी नाबालगी में आपकी दादीजी तथा लाला प्यारेलालजी व रोशनलालजी काम देखते रहे। इन दोनों सज्जनों का स्वर्गवास क्रमशः १९५६ तथा संवत् १९६४ में हो गया है। अब इनकी कोई संतान विद्यमान नहीं हैं।

लाला रतनलालजी बड़े योग्य तथा मिलनसार व्यक्ति हैं। आपके इस समय इन्द्रचन्द्रजी, हरिचन्द्रजी, ताराचन्दजी तथा कुशलचंदजी नामक ४ पुत्र हैं। आपका परिवार देहली के ओसवाल समाज में अच्छा प्रतिष्ठित माना जाना जाता है। आपके यहाँ "लाला पूरनचन्द रतनलाल" के नाम से गली हीरानंद देहली में जवाहरात का व्यापार होता है।

लाला मानसिंहजी मोतीलालजी जौहरी का परिवार—लाला मानसिंहजी के पुत्र लाला मोतीरामजी हुए। आपका स्वर्गवास ७० वर्ष की आयु में संवत् १९६० में हुआ। आप भी देहली के अच्छे जौहरी थे।

आपके लाला शादीरामजी, मुन्नालालजी तथा उमरावसिंहजी नामक ३ पुत्र हुए। लाला शादीरामजी बड़े योग्य तथा समझदार पुरुष थे। जाति बिरादरी में आपकी अच्छी प्रतिष्ठा थी। आपका स्वर्गवास ४२ साल की आयु में संवत् १९६४ में हुआ। आपके पुत्र लाला पन्नालाल जी का जन्म १९४७ में कुंदनमलजी का १९५१ में तथा कुज्जूमलजी का १९५७ में हुआ तीनों भ्राता जवाहरात का व्यापार करते हैं। लाला मोतीरामजी के द्वतीय पुत्र मुन्नालालजी छोटी वय में स्वर्गवासी हुए तथा इनके छोटे भाई लाला उमरावसिंह जी संवत् १०८४ में स्वर्गवासी हुए। इनके जंगलीमलजी का जन्म संवत् १९२९ का है। आपके पुत्र फतेसिंहजी तथा कुन्दनमलजी के पुत्र कांतिकुमारजी हैं। देहली के ओसवाल समाज में यह खानदान पुराना तथा प्रतिष्ठित माना जाता है।

सेठ फौजमल आनन्दराम पारख, त्रिचनापल्ली

इस परिवार का मूल निवास पांचला (तींवरी के पास) मारवाड़ है। इस परिवार के पूर्वज सेठ भेरूदानजी पारख के फौजमलजी तथा जेठमलजी नामक दो पुत्र हुए। इनमें सेठ फौजमलजी के आनंदरामजी और मगनीरामजी नामक २ पुत्र हुए।

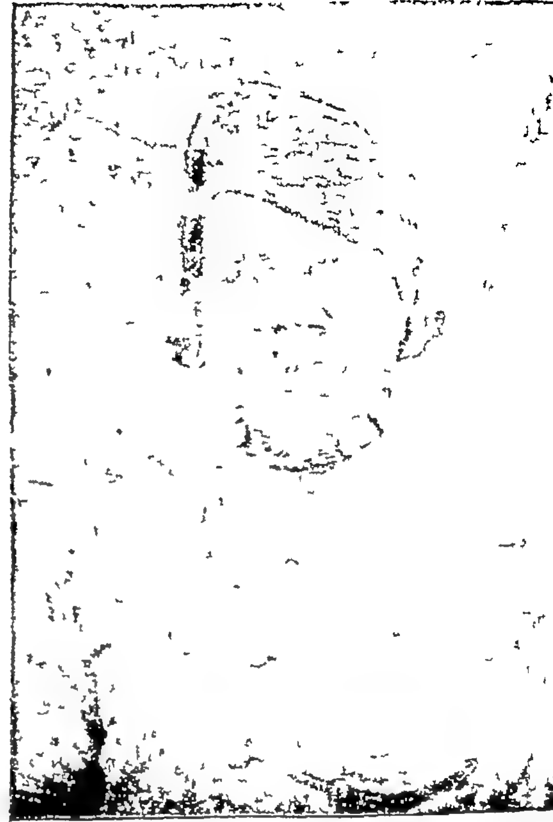
सेठ आनन्दरामजी पारख का जन्म संवत् १९२५ में हुआ। सत्रह वर्ष की आयु में आप पल्टन के साथ रेजिमेंटल बैंकिंग का व्यापार करते हुए त्रिचनापल्ली आये। यहाँ आकर आपने थोड़े समय तक सेठ रावतमलजी पारख के यहाँ सर्विस की। पश्चात् आपने सुजानमल कोचर की भागीदारी में "आनन्दमल सुजानमल" के नाम से बैंकिंग व्यापार चालू किया। एक साल बाद इस फर्म में अखैचन्दजी पारख भी सम्मिलित हुए, एवम् इन तीनों सज्जनों ने अंग्रेजी फौजों के साथ जोरों से ५ दुकानों पर मनीलेंडिंग बिजिनेस चालू किया। आप पल्टन के खजाने के बेंकिंग बिजिनेस को सम्हालते थे। इसलिए रेजिमेंटल बैंकर्स के नाम से बोले जाते थे। इन सज्जनों ने अच्छी सम्पत्ति कमाई और अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाई। संवत् १९८० में सुजानमलजी के पुत्रों ने तथा १९८५ में अखेचन्दजी के पुत्रों ने अपना भाग अलग कर लिया। सन् १९२६ में सेठ आनन्दरामजी पारख स्वर्गवासी हुए। आपने त्रिचनापल्ली पांजरापोल को ५०००) की सहायता दी है। इस समय आपके पुत्र मूलचन्दजी ११ साल के तथा खेतमलजी ९ साल के हैं। इनकी नाबालगी में फर्म का प्रबन्ध ५ मेम्बरों की कमेटी के जिम्मे है। यह परिवार स्थानकवासी आम्नाय मानता है तथा लगभग २० सालों से फलोदी में निवास करता है। वहाँ भी फौजमल आनन्दराम के नाम से आपके यहाँ बेंकिंग व्यापार होता है। यह फर्म त्रिचनापल्ली के मारवाड़ी समाज में सबसे ज्यादा धनिक फर्म है।

सेठ जेठमल अखेचंद पारख, त्रिचनापल्ली

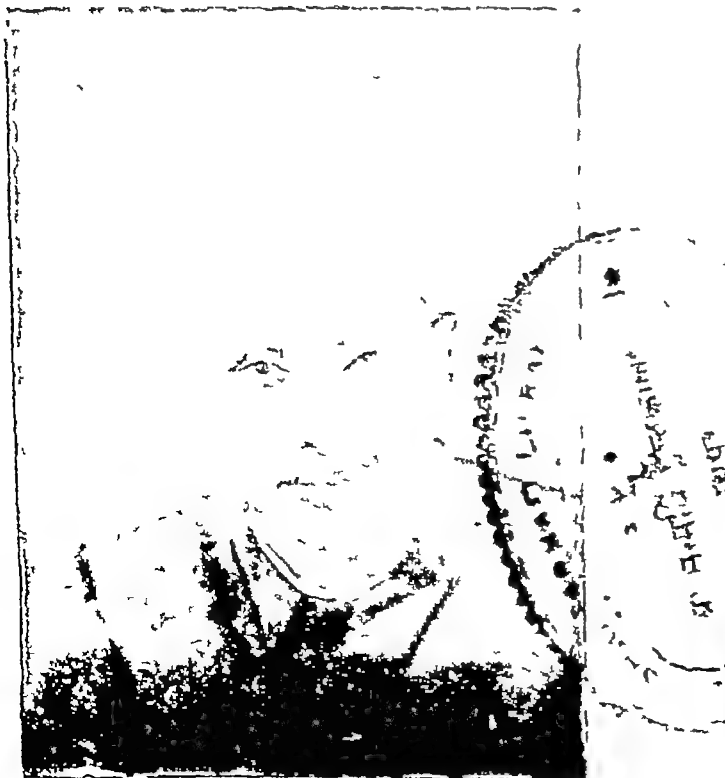
ऊपर सेठ आनन्दरामजी के परिचय में लिखा जा चुका है कि पांचला (मारवाड़) निवासी सेठ भेरुदानजी के फौजमलजी तथा जेठमलजी नामक २ पुत्र थे। इनमें सेठ जेठमलजी के अखेचन्दजी, धूलमलजी, अचलदासजी तथा रावतमलजी नामक ४ पुत्र हुए। इनमें सेठ धूलचन्दजी तथा अचलदासजी विद्यमान हैं। सेठ अखेचन्दजी सेठ आनन्दरामजी के साथ व्यापार करते रहे। संवत् १९७४ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र फूलचन्दजी ने संवत् १९८५ में सेठ आनन्दरामजी पारख से अपना व्यव-



सेठ रतनचंदजी पारख, रायपुर (सी पी.)



स्व० सेठ आनंदरामजी पारख, त्रिचनापल्ली.



सेठ भीकमचंदजी पारख (भीकमचंद रतनचंद) नासिक



स्व० सेठ [illegible]चंदजी पारख त्रिचनापल्ली.

साथ अलग किया। आपका जन्म संवत् १९७० में हुआ। इस समय आप अपने काका अचलदास जी के पुत्र रूपचन्दजी उदयराजजी तथा जुगराजजी, के साथ त्रिचनापल्ली में "अचलदास फूलचन्द" के नाम से व्यापार करते हैं। सेठ अचलदासजी का वय ४५ साल की है।

सेठ धूलमलजी का जन्म १९४२ में हुआ। आपके लालचन्दजी, मोतीलालजी, कंवरीलालजी, इन्द्रचन्द्रजी, राजमल, मोहनलाल आदि ८ पुत्र है। आप के यहां जेठ "धूलचन्द लालचन्द" के नाम से बैंङ्किग व्यापार होता है। सेठ रावतमलजी का स्वर्गवास २५ साल की अल्पायु में होगया। आपके कोई संतान नहीं है। यह परिवार त्रिचनापल्ली तथा फलोदी में अच्छी प्रतिष्ठा रखता है। संवत् १९७८ से आपने फलोदी में अपना निवास बना लिया है। यह परिवार स्थानकवासी आम्नाय को मानने वाला है।

सेठ हजारीमल भीकचंद पारख, त्रिचनापल्ली

यह कुटुम्ब लोहावट (मारवाड़) का निवासी है। इस परिवार के पूर्वज पारख फतेचन्दजी के रावतमलजी, रिढ़मलजी, जयसिंहदासजी, शिवजीरामजी, वख्तावरमलजी, मुकुन्दचन्दजी तथा मगनीरामजी नामक ७ पुत्र हुए। इनमें सेठ शिवजीरामजी लगभग सौ साल पूर्व देश से आकर बलारी, हैदराबाद, कामठी आदि स्थानों में रेजिमेंटल बैंकर्स का काम करते रहे, यहाँ से लगभग ७५ साल पहिले आप त्रिचनापल्ली आये। इन्होंने अपनी उमर में लगभग ५० सालों तक रेजिमेंटल बैंकर्स का काम किया। आपके साथ व्यापार में रिढ़मलजी के पुत्र रावतमलजी और रतनलालजी, जयसिंहदासजी के पुत्र चुन्नीलाल जी तथा आपके पुत्र चांदनमलजी और हजारीमलजी भी सम्मिलित रूप में "शिवजीराम चंदनमल" के नाम से व्यापार करते थे। सेठ शिवजीरामजी पारख के स्वर्गवासी होजाने के बाद उनके पुत्र चांदनमलजी तथा हजारीमलजी ने बेलगाँव (महाराष्ट्र) में दुकान खोली, तथा संवत् १९६१ तक दोनों बंधुओं का सम्मिलित व्यापार होता रहा। सेठ चांदनमलजी की आयु ८० साल की है, और आप लोहावट में रहते हैं। आपके पुत्र सुगनचन्दजी का संवत् १९६८ में स्वर्गवास होगया है।

सेठ हजारीमलजी पारख अपने जीवन के अंतिम पंद्रह साल देश में धार्मिक जीवन बिताते हुए संवत् १९७६ में स्वर्गवासी हुए। आपके भीकमचन्दजी तथा खेतमलजी नामक २ पुत्र हुए। आप दोनों भाइयों ने सन् १९१६ में त्रिचनापल्ली में दुकान खोली। इस समय आपके यहां ३ दुकानों पर सराफी का व्यापार होता है। सेठ भीकमचन्दजी का जन्म संवत् १९४९ में हुआ। आपके पुत्र मैनसुखजी भी व्यापार में भाग लेते हैं। खेतमलजी के पुत्र [illegible] तथा [illegible] बालक हैं। खेतमलजी का धार्मिक कामों की ओर ज्यादा लक्ष है। यह परिवार मन्दिर मार्गीय आम्नाय का है।

सेठ रावतमल जोगराज पारख, त्रिचनापल्ली

इस परिवार का मूल निवास लोहावट (मारवाड़) है। हम ऊपर लिख चुके हैं कि सेठ फतेचन्दजी के ७ पुत्र थे। इनमें द्वितीय तथा तृतीय पुत्र रिढ़मल और जयसिंहदासजी के पुत्र

परिवार का सम्बन्ध है। सेठ रिद्मलजी के पुत्र रावतमलजी तथा रतनलालजी और जयसिंहदासजी के पुत्र चुन्नीलालजी हुए सेठ चुन्नीलालजी संवत् १९४५ में स्वर्गवासी हुए। सेठ रावतमलजी बड़े साहसी पुरुष थे। देश से आप मद्रास आये, और वहाँ रेजिमेंटल बैंकर्स का काम करते रहे। वहाँ से आप फोजों के साथ बैंकिंग व्यापार करते हुए बलारी, कामठी आदि स्थानों में होते हुए लगभग संवत् १९२५ में त्रिचनापल्ली आये। और यहीं अपनी स्थाई दुकान स्थापित करली। आपने इस कुटुम्ब की खूब प्रतिष्ठा बढ़ाई। सवत् १९७३ में आपका स्वर्गवास हुआ। आपके दो साल बाद आपके छोटे भाई रतनलालजी गुजरे। सेठ रावतमलजी के इन्द्रचन्दजी, जोगराजजी तथा कँवरलालजी नामक ३ पुत्र हैं। इनमें जोगराजजी सेठ चुन्नीलालजी के नाम पर दत्तक गये। आपका जन्म संवत् १९४८ में हुआ। आप "रावतमल जोगराज" के नाम से येढ़तरू बाजार त्रिचनापल्ली में बैंकिंग व्यापार करते हैं। तथा यहां के ओसवाल समाज में अच्छे प्रतिष्ठित माने जाते हैं। धार्मिक कार्मों की ओर भी आपका अच्छा लक्ष है। आपके पुत्र चम्पालालजी २० साल के हैं। तथा व्यापार में भाग लेते हैं।

सेट इन्द्रचन्दजी के यहां "इन्द्रचन्द सम्पतलाल" के नाम से त्रिचनापल्ली में व्यापार होता है। इन्द्रचन्दजी धर्म के जानकार व्यक्ति हैं। आपका जन्म संवत् १९३२ में हुआ। आपके पुत्र सम्पतलाल जी ३० साल के हैं। कँवरलालजी वहुत समय तक जोगराजजी के साथ व्यापार करते रहे। आप इस समय लोहावट में रहते हैं। रतनलालजी के पुत्र मिश्रीलालजी हैं। यह परिवार मंदिर आम्नाय का है।

सेठ हजारीमल कँवरीलाल पाराख, लोहावट (मारवाड़)

यह परिवार लगभग दो शताब्दि से लोहावट में निवास करता है। इस परिवार के पूर्वज मुलतानचन्दजी पारख के हजारीमलजी तथा रतनलालजी नामक २ पुत्र हुए। इन दोनों भाइयों का जन्म क्रमशः संवत् १९१४ तथा संवत् १९२१ में हुआ। संवत् १९३२ में इन बंधुओं ने धमतरी में दुकान की। संवत् १९६२ में सेठ हजारीमलजी ने बम्बई में दुकान की। इसके १० साल बाद इन दोनों भाइयों का कारबार अलग २ होगया।

सेठ हजारीमलजी का परिवार—सेठ हजारीमलजी ने इन दुकान के व्यापार तथा सम्मान को विशेष बढ़ाया। संवत् १९८४ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके शिवराजजी, कँवरलालजी, रेखचन्दजी, मंसुखदासजी, तथा विजयलालजी नामक ५ हुए। इनमें सेठ शिवराजजी का स्वर्गवास संवत् १९६९ में तथा कँवरलालजी का संवत् १९७८ में हुआ। शेष बंधु विद्यमान हैं। इन बंधुओं के यहाँ "हजारीमल कँवरलाल" के नाम से विट्ठलवाड़ी बम्बई में आढ़त का व्यापार होता है। इस दुकान के व्यापार की सेठ शिवराजजी ने उन्नति की। उनके पश्चात् पारख रेखचन्दजी ने कारोबार बढ़ाया। यह परिवार लोहावट में अच्छी प्रतिष्ठा रखता है। सेठ शिवराजजी के पुत्र दूदमलजी कन्हैयालालजी, सेठ रेखचंदजी के पाबूदानजी, सोहनराजजी, सेठ मंसुखदासजी के नेमीचन्दजी तथा राणूलालजी और विजयलालजी के जमनालालजी तथा पुखराजजी हैं। यह परिवार मन्दिर मार्गीय आम्नाय मानता है।

सेठ रतनलालजीका परिवार—सेठ रतनलालजी के पेमराजजी, कुंदनलालजी, सतीदानजी,

चंपालालजी, तथा जुगराजजी नामक ५ पुत्र हुए। इनमें पेमराजजी १९९२ में तथा कुन्दनमलजी १९९३ में स्वर्गवासी हो गये हैं। शेष विद्यमान हैं। इस परिवार की धमतरी, तथा जगदलपुर में दुकाने हैं।

सेठ मोतीलाल हीरालाल पारख, सिंगरनी कालरी (निजाम)

इस परिवार का मूल निवास लोहावट (मारवाड़) है। इस परिवार के पूर्वज सेठ रामचन्द्रजी के सुजानमलजी, महासिंहदासजी, सालमचन्दजी तथा मुलतानचन्दजी नामक ४ पुत्र हुए। इनमें सेठ महासिंहदासजी पारख के पूनमचन्दजी, मोतीलालजी मोहनलालजी व करनीदानजी नामक ४ पुत्र हुए। इनमें सेठ मोतीलालजी अपने पुत्र हीरालालजी को साथ लेकर संवत् १९५५ में सिंगरनी कॉलेरी आये, तथा सराफी और आढ़त का कार्य चालू किया। सेठ मोतीलालजी ने इस दुकान के व्यापार को बढ़ाया। आपका स्वर्गवास सम्वत् १९७६ में हुआ। आपके हीरालालजी, चांदमलजी, रेखचन्दजी, कुन्दनमलजी और सुखलालजी नामक ५ पुत्र हुए। जिनमें चांदमलजी संवत् १९७८ में स्वर्गवासी हो गये। यह परिवार मंदिर मार्गीय आम्नाय का मानने वाला है।

सेठ हीरालालजी का जन्म संवत् १९४० में हुआ। आप सयाने तथा समझदार व्यक्ति हैं। आपके पुत्र नेमीचन्दजी स्वर्गवासी हो गये हैं। सेठ रेखचन्दजी का जन्म संवत् १९५० में हुआ। आपके पुत्र जेठमलजी २३ साल के हैं। आप व्यापार में भाग लेते हैं। इनके पुत्र अनोपचन्दजी हैं। सेठ कुन्दनमलजी का जन्म १९५६ में हुआ। आपके कँवरलालजी, चम्पालालजी तथा खेतमलजी नामक ३ पुत्र हैं। इसी तरह सुखलालजी के पुत्र भेरोंलालजी हैं। यह परिवार लोहावट के ओसवाल समाज में नामांकित कुटुम्ब माना जाता है। आपके यहाँ सिंगरनी कॉलेरी तथा बेल्लमपल्ली (निजाम) में बेकिंग व्यापार होता है।

सेठ अमरचन्द रतनचंद पारख, किशनगढ़

इस परिवार के पूर्वज सेठ माणकचन्दजी के पुत्र कुशालचन्दजी लगभग एक सौ वर्ष पूर्व बीकानेर से किशनगढ़ आये। आपको दरबार ने इज्जत के साथ किशनगढ़ में बसाया, तथा व्यापार के लिए रियायतें दीं। आपके पुत्र पूनमचन्दजी पारख हुए।

सेठ पूनमचन्दजी पारख—आप बड़े नामांकित व्यक्ति हुए। आपने व्यवसाय की बहुत उन्नति की, तथा बाहर कई दुकानें खोलीं। आप गरीबों की अन्न वस्त्र से विशेप सहायता करते थे। आप गुप्तदानी थे। इसी तरह की विशेषताओं के कारण आप राज्य, जनता एवं अपने समाज में सम्माननीय व्यक्ति हुए। आपके पुत्र पारख अमरचंदजी विद्यमान हैं।

सेठ अमरचन्दजी पारख किशनगढ़ के ओसवाल समाज में तथा व्यापारिक समाज में अच्छी प्रतिष्ठा रखते हैं। राज्य में आपको दरबार के समय कुर्सी प्राप्त है। आपके यहाँ बैंकिंग व्यापार होता है। आपके रतनचन्दजी, लक्ष्मीचंदजी तथा उमरावचन्दजी नामक तीन पुत्र हैं। इन सज्जनों में श्री रतनचन्दजी ने सन् १९३३ में बी० ए० पास किया है, तथा इस समय आप इलाहाबाद में एल० एल० बी० का अध्ययन कर रहे हैं। आप बड़े सज्जन व समझदार व्यक्ति हैं। आपके छोटे भ्राता लखमीचन्दजी मेट्रिक में तथा उमरावचन्दजी छठी क्लास में पढते हैं।

इस परिवार में सेठ माणकचन्दजी के छोटे भ्राता जसरूपजी के पुत्र हरखचन्दजी नामांकित व्यक्ति हुए, तथा इस समय उनके पुत्र सेठ अगरचन्दजी विद्यमान हैं। आप भी किशनगढ़ के ओसवाल समाज में वजनदार व्यक्ति हैं।

सेठ जेठमल रतनचन्द पारख, रायपुर

इस परिवार के पूर्वज सेठ रावतमलजी पारख एक शताब्दि पूर्व अपने मूल निवासस्थान बीकानेर से रायपुर आये। यह परिवार मन्दिर मार्गीय आम्नाय का माननेवाला है। सेठ रावतमलजी के बड़े पुत्र आसकरणजी निसंतान स्वर्गवासी हुए, तथा छोटे भ्राता जेठमलजी ने अपने परिवार की जमीदारी तथा कृषि के काम को विशेष बढ़ाया, और समाज में अपनी प्रतिष्ठा स्थापित की। संवत् १९३९ में आपका स्वर्गवास हुआ। आपके पुत्र रतनचन्दजी हुए।

सेठ रतनचन्दजी पारख—आपका जन्म सम्वत् १९३६ में हुआ। धार्मिक कार्मों की ओर आपकी अच्छी रुचि है। अपने पिताजी के बाद आपने जमीदारी तथा कृषि के कार्य को बढ़ाया है। रायपुर के ओसवाल समाज के आप प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। आपके धर्मचन्दजी, कर्मचन्दजी, कस्तूरचन्दजी और प्रेमचन्दजी नामक ४ पुत्र हुए। धर्मचन्दजी का जन्म संवत् १९६४ में हुआ। इन भाइयों में कर्मचंदजी का संवत् १९८७ में १९ साल की वय में स्वर्गवास हो गया। आप बड़े होनहार थे। आप एफ० ए० सेकंड ईयर में पढ़ते थे। छात्रों को मदद देने की ओर आपकी विशेष रुचि थी। आपने अपनी प्राइवेट लायब्रेरी में डेढ़ हजार ग्रंथों का संग्रह किया था। आपके स्मारक में आपके पिताजी भी छात्रों को सहायता देते रहते हैं। सेठ रतनचन्दजी के शेष पुत्र धर्मचन्दजी, कस्तूरचंदजी तथा प्रेमचंदजी पढ़ते हैं।

सेठ भीकमचन्द रामचन्द पारख, नाशिक

इस परिवार का मूल निवास तींवरी (जोधपुर स्टेट) है। इस परिवार के पूर्वज सेठ मोतीरामजी पारख लगभग १५० साल पहिले देश से नाशिक के समीप मखमलाबाद नामक स्थान पर आये। आपके पुत्र पारख किशनीरामजी और पौत्र पारख रामचन्द्रजी हुए। आप लोग मखमलाबाद में ही व्यापार करते रहे। सेठ रामचन्द्रजी पारख का स्वर्गवास संवत् १९५१ में हुआ। आपके पुत्र सेठ भीकमचंदजी तथा छगनमलजी पारख हुए।

सेठ भीकमचन्दजी पारख—आपका जन्म संवत् १९४३ में हुआ। आपने नाशिक में कपड़े का व्यापार चालू किया। जातीय सुधार तथा धर्म ध्यान के कार्यों की ओर आपका अच्छा लक्ष्य है। आप नाशिक जिला ओसवाल परिषद् के सेक्रेटरी थे तथा उसके स्थाई सेक्रेटरी भी आप हैं। नाशिक के ओसवाल समाज में आप प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। आपके पुत्र लक्ष्मीचन्द्रजी अपनी "पारख ब्रदर्स" नामक कपड़े की दुकान का संचालन करते हैं तथा दूसरे पढ़ते हैं। यह परिवार स्थानकवासी आम्नाय का मानने वाला है।

पारख छगनमलजी का जन्म १९४८ में हुआ। आप नंदलाल भण्डारी मिल क्लाथशॉप कानपुर पर कार्य करते हैं। आपके पुत्र देवीचन्दजी व्यवसाय करते हैं तथा हस्तीमलजी छोटे हैं।

सेठ जुगराज केसरीमल पारख, येवला (नाशिक)

इस परिवार का मूल निवास तींवरी (जोधपुर स्टेट) है इस परिवार के पूर्वज .पारख लूमचंद जी के पुत्र भीमराजजी तथा दईचंदजी दोनों भाइयों ने मिलकर संवत् १९६० में येवले में कपड़े की दुकान की। इसके थोड़े समय के बाद दुकान की शाखा नांदगांव में खोली गई। आप दोनों भाइयों ने दुकान के व्यापार तथा सम्मान को तरक्की दी। तथा अपनी दुकान की शाखा बम्बई में भी खोली। आप दोनों सज्जनों का स्वर्गवास हो गया है।

वर्तमान में इस परिवार में सेठ भीमराजजी के पौत्र (कानमलजी के पुत्र) उदयचंदजी तथा खेतमलजी और दईचंदजी के पुत्र जुगराजजी विद्यमान हैं। सेठ भींवराजजी के पुत्र कानमलजी का स्वर्गवास संवत् १९७५ में हो गया है। इस समय सेठ जुगराजजी इस परिवार में बड़े हैं। आपका जन्म संवत् १९४५ में हुआ। इस समय आपके यहाँ भीजराज देवीचंद के नाम से बम्बई में, भींमराज कानमल के नाम से नांदगांव में तथा जुगराज केशरीमल के नाम से येवला में कपड़े की आढ़त आदि का व्यापार होता है। यह परिवार तींवरी, बम्बई, येवला आदि स्थानों में अच्छी प्रतिष्ठा रखता है। तथा मंदिर मार्गीय आम्नाय का मानने वाला है।

मुनीम फतेचंदजी पारख, उज्जैन

संवत् १८९२ में इस परिवार के प्रथम पुरुष सेठ फूलचन्दजी बीकानेर से बजरंगगढ़ नामक स्थान पर आये। यहाँ आकर आपने देनलेन का व्यापार शुरू किया। आपके पुत्र पूनमचन्दजी बड़े व्यापार कुशल और सज्जन व्यक्ति थे। आपने अपने व्यवसाय की उन्नति के साथ २ जमींदारी की खरीद की। आपका धार्मिकता की ओर भी अच्छा ध्यान था। आपका स्वर्गवास हो गया। इस समय आपके पुत्र सेठ फतेचन्दजी इन्दौर के प्रसिद्ध सेठ सर स्वरूपचन्द हुकमचन्द की उज्जैन दुकान पर मुनीम हैं। आपका स्वभाव मिलनसार है। यहाँ आपकी अच्छी प्रतिष्ठा है। आपने भी बहुत सी जमींदारी खरीद की हैं। बजरंगगढ़ के पंचायती बोर्ड के आप सरपंच रहे थे। उज्जैन की मंडी कमेटी के आप चौधरी रहे। इस समय आपके तीन पुत्र हैं, जिनके नाम हीराचन्दजी, रतनचन्दजी और इन्द्रचन्दजी हैं। आपकी पुत्री श्री नाथीबाई ने आचार्य्या प्रमोद श्री जी के उपदेश से जैन धर्म में साध्वीपन ले लिया है। इस समय उनका नाम राजेन्द्र श्री जी है।

सेठ अजीतमल माणकचन्द पारख, बीकानेर

इस परिवार के पूर्व पुरुष सेठ सुल्तानमलजी करीब १५० वर्ष पूर्व बीकानेर आकर बसे थे। आपके पुत्र सेठ अबीरचन्दजी ने आगरे में सेठियों की फर्म पर सर्विस की। आपके हमीरमलजी, सुगनमलजी सुमेरमलजी और चन्दनमलजी नामक चार पुत्र हुए। सेठ सुगनमलजी ने कलकत्ता आकर सेठ रिखलाल भीकिशन के यहाँ नौकरी की। आपका स्वर्गवास हो गया। आपके फतेचन्दजी और नेमीचन्दजी नामक दो पुत्र हुए। सेठ फतेचंदजी कुछ महाजनी का हिसाब किताब सीखकर बरोरा नामक स्थान पर चले आये।

यहाँ आपने कपड़े और गल्ले का काम करने के लिये फर्म स्थापित की। आपकी बुद्धिमानी से फर्म की बहुत तरक्की हुई। आपका स्वर्गवास हो गया। इसी प्रकार आपके भाई नेमीचन्दजी का भी स्वर्गवास हो गया। आपके पुत्र डालचन्दजी, बींजराजजी और विरदीचंदजी स्वतंत्र रूप से भोपाल में व्यापार करते हैं।

सेठ फतेचंदजी के आनंदचन्दजी, अजीतमलजी, लालजी तथा मालचन्दजी नामक चार पुत्र हैं। आजकल आप सब लोग स्वतंत्र रूप से व्यापार करते हैं। सेठ अजीतमलजी बीकानेर के खजांची प्रेमचंदजी माणकचंदजी के साझे में कलकत्ता में दुकान कर रहे हैं। आपकी फर्म पर कपडे का थोक व्यापार हो रहा है। आप मिलसार और उत्साही व्यक्ति हैं आपके पीरूदानजी नामक एक पुत्र है।

सेठ पन्नालाल सुगनचन्द पारख, चुरू

सेठ लालचन्दजी पारख के पूर्वजों का मूल निवास स्थान बीकानेर था। वहाँ से रिणी होते हुए चुरू नामक स्थान पर आकर बसे। चुरू में सेठ जोधमलजी हुए। जोधमलजी के चार पुत्रों से में मुकन्ददासजी और अनेचन्दजी के परिवार वाले शामलात में व्यापार करते हैं। मुकन्ददासजी के पश्चात् क्रमश उनके पुत्र गजराजजी, नवलचन्दजी, पन्नालालजी और सुगनचन्दजी हुए। सेठ अनेचंदजी के बाद क्रमशः घमंण्डीरामजी जवाहरमलजी और लालचन्दजी हुए। सेठ लालचन्दजी बड़े व्यापार कुशल और सज्जन व्यक्ति हैं। सेठ सुगनचन्दजी भी मिलनसार और योग्य सज्जन हैं। आजकल आप दोनों सज्जन मेसर्स पन्नालाल सुगनचन्द के नाम से क्रास स्ट्रीट कलकत्ता में थोक धोती जोड़ों का व्यापार करते हैं। यह फर्म सम्वत् १८९२ में स्थापित हुई थी। सेठ लालचन्दजी के जयचन्दलालजी नामी एक पुत्र हैं।

बरमेचा

बरमेचा गौत्र की उत्पत्ति—महाजन वंश मुक्तावली में लिखा है कि संवत् ११६७ में रणतभंवर के राजा लालसिंह को अपने सातों पुत्रों सहित मुनि श्री जिनवल्लभ सूरिजी ने जैनधर्म का प्रतिबोध देकर श्रावक बनाया। इन्हीं सातों पुत्रों के नाम से सात गौत्र की उत्पत्ति हुई। इनमें से बड़े पुत्र ब्रह्मदेव से बरमेचा गौत्र की स्थापना हुई।

सेठ साहबराम बरदीचंद बरमेचा, नाशिक

इस परिवार का मूल निवास जोधपुर के समीप दहीजर नामक स्थान है। यह परिवार जैन-स्थानकवासी आम्नाय का मानने वाला है। देश से व्यापार के निमित्त सेठ साहबरामजी बरमेचा लगभग संवत् १९०५ में नाशिक आये, तथा व्यापार आरम्भ किया। आपके मगनमलजी, छगनमलजी तथा बरदीचन्दजी नामक तीन पुत्र हुए। इन भाइयों में से सेठ बरदीचन्दजी बरमेचा ने सेठ चुन्नीलालजी नवलमलजी कूमठ के साथ साहबराम बरदीचन्द के नाम से किराने का व्यापार किया तथा इस दुकान के व्यापार तथा सम्मान को ज्यादा बढ़ाया। आप अपनी जाति के बड़े शुभचिंतक व्यक्ति थे। आप संवत्



सेठ अमरचंदजी पारख (अमरचंद रतनचंद) किशनगढ़.



सेठ चांदमलजी बरमेचा (साहबराम बरदीचन्द) नाशिक.



सेठ [illegible]



सेठ [illegible] (मूलचन्द [illegible]) किशनगढ़.

१९४७ में ओसवाल हितकारिणी सभा नाशिक के मंत्री थे। संवत् १९५८ में आपका स्वर्गवास हुआ। आपके शिवरामदासजी तथा चांदमलजी नामक दो पुत्र हुए। इनमे सेठ शिवरामदासजी संवत् १९५४ में स्वर्गवासी हुए।

सेठ चादमलजी—आपका जन्म संवत् १९४५ में हुआ। आप नाशिक के ओसवाल समाज में गण्यमान्य व्यक्ति हैं। धार्मिक कामों में आप विशेष भाग लेते हैं। आप ओसवाल बोर्डिङ्ग तथा नाशिक जिला ओसवाल सभा के खजांची हैं। तथा जातीय सुधार के कामों में भाग लेते रहते हैं। आप नाशिक जिला ओसवाल अधिवेशन की स्वागत कारिणी समिति के सभापति थे। इस समय आपके यहाँ "साहबराम बरदीचन्द" के नाम से बैंकिंग, हुंडीचिट्ठी तथा किराने का व्यापार होता है।

सेठ सुगनचन्द माणिकचंद वरमेचा, किशनगढ़

यह परिवार मूल निवासी मेड़ते का है। वहाँ से यह परिवार किशनगढ़ आया। यहाँ इस परिवार के पूर्वज सेठ कजोड़ीमलजी साधारण लेन-देन करते थे। इनके पुत्र कस्तूरचन्दजी का जन्म संवत् १९०३ में हुआ। आप संवत् १९३० में व्यापार के लिये दिनजापुर (बंगाल) गये, तथा वहाँ "कस्तूरचन्द फतेचन्द" के नाम से कपड़े का व्यापार चालू किया। आपने इस धंधे में काफी तरक्की और इज्जत पाई। धार्मिक कामों में आपकी अच्छी रुचि थी संवत् १९५९ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके फतेचन्दजी, सुगनचन्दजी, माणकचन्दजी, किशनचन्दजी तथा विशनचन्दजी नामक पाँच पुत्र हुए। इन भाइयों में सेठ फतेचन्दजी १९८५ में किशनचंदजी १९६६ में तथा विशनचंदजी १९८४ में स्वर्गवासी हुए। बरमेचा फतेचंदजी ने व्यापार में अच्छी सम्पत्ति उपार्जित की। सेठ सुगनचन्दजी का जन्म संवत् १९३७ में हुआ। आपके पुत्र दीपचन्दजी पढ़ते हैं।

सेठ माणकचन्दजी वरमेचा—आपका जन्म संवत् १९४० में हुआ। आप किशनगढ़ के प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। धार्मिक कामों में आप अच्छा सहयोग लेते हैं। स्थानीय ज्ञानसागर पाठशाला के आप प्रारम्भ से ही सेक्रेटरी हैं। आप साधु सम्मेलन अजमेर के समय अथितियों की भोजन व्यवस्था कमेटी के मेम्बर थे। आपके यहाँ दिनाजपुर (बंगाल) में "कस्तूरचन्द फतेचन्द" के नाम से पाट, कपड़ा तथा व्याज का काम होता है। आपके पुत्र अमरचन्दजी ने इण्टर तक अध्ययन किया है, इनसे छोटे भँवरलालजी हैं। इसी तरह विशनचन्दजी के पुत्र हुलाशचन्दजी तथा श्रीचन्दजी पढ़ते हैं।

गोठी

गोठी गोत्र की उत्पत्ति—कहा जाता है कि संवत् ११५२ में मेघा नामक एक व्यक्ति ने अणहिलपुर पट्टन के यवन राजा से पांच सौ मुहर देकर एक जैन प्रतिमा खरीदी, तथा गोड़वाड़ प्रदेश में सुंदर मंदिर निर्माण करवाकर दादा जिनदत्तसूरिजी से उसकी प्रतिष्ठा कराई। और श्रावक व्रत धारण किया। इनके गौढ़ी नामक एक पुत्र हुए। गुजरात के श्रावकों ने गोढ़ी को पार्श्वनाथ प्रतिमा पूजक समझ "गोठी" कहना शुरू किया। यह शब्द गोष्टी का अपभ्रंश है। आज भी गुजरात देश में देव पुजारियों को कहीं २ "गोठी" कहते हैं। आगे चल कर गौढ़ीजी की संतानें गोठी नाम से सम्बोधित हुई।

सेठ प्रतापमल लखमीचन्द गोठी, बतूलवालों का खानदान

इस परिवार का मूल निवास स्थान बावरा (जोधपुर स्टेट) में है। वहाँ लगभग एक शताब्दि पूर्व सेठ शेरसिंहजी गोठी के पुत्र सेठ प्रतापमलजी तथा साईदासजी बदनूर आये, तथा यहां से लेनदेन का व्यापार चालू किया।

सेठ प्रतापमलजी गोठी—आप बड़े व्यवसाय कुशल तथा दूरदर्शी पुरुष थे आपने व्यापार द्वारा उपार्जित की हुई सम्पत्ति से बेतूल जिले में संवत् १९३१ में सांकादही तथा जामझिरी और १९४० में बोयगाँव तथा ढोलन नामक ४ गाँव खरीद किये। आपको दरबार आदि सरकारी जलसों में कुर्सी प्राप्त होती थी। आप बेतूल के ऑनरेरी मजिस्ट्रेट थे। संवत् १९४६ में ६५ साल की आयु में आप स्वर्गवासी हुए। आपके छोटे भ्राता साईदासजी भी संवत् १९४० में स्वर्गवासी हुए। सेठ प्रतापमल जी के तिलोकचन्दजी तथा लखमीचन्दजी नामक २ पुत्र हुए। इनमें तिलोकचन्दजी का स्वर्गवास संवत् १९३१ में २९ साल की अल्पायु में होगया, अतः इनके उत्तराधिकारी सेठ लखमीचन्दजी के ज्येष्ठ पुत्र मिश्रीलालजी बनाये गये।

सेठ लखमीचन्दजी गोठी—आपका जन्म संवत् १९१५ में हुआ। आप इस परिवार में बहुत प्रतापी व्यक्ति हुए। आपने अपनी जमीदारी के बढ़ाने की ओर बहुत लक्ष दिया, तथा अपने हाथों से बेतूल तथा होशंगाबाद जिले में करीब १०० गांव जमीदारी के खरीद किये। सरकार ने आपको ऑनरेरी मजिस्ट्रेट का सम्मान दिया था। आपके लिये बृटिश इंडिया में आर्मस लाइसेंस माफ था। आपने अपने स्वर्गवासी होने के १० साल पूर्व अपने सातों पुत्रों के विभाग अलग अलग कर दिये थे। तथा २ गाँव पुण्यार्थ खाते निकाले। जिनकी आय इस समय सदाव्रत आदि धार्मिक कामों में लगाई जाती है। इसके अलावा प्रधान दुकान और ग्राहस्थ जीवन सम्मिलित चालू रहने की व्यवस्था करदी। आपकी इच्छानुसार आपके पुत्रों ने साठ सत्तर हजार रुपयों की लागत से इटारसी स्टेशन पर एक सुंदर धर्मशाला बनवाई। इस प्रकार प्रतिष्ठा पूर्वक जीवन बिताते हुए संवत् १९८१ की काती वदी १० को आप स्वर्गवासी हुए। आपके मिश्रीलालजी, मेघराजजी, धनराजजी, पनराजजी, केशरीचन्दजी, दीपचन्दजी तथा तथा फूलचन्दजी नामक ७ पुत्र हुए। इनमें धनराजजी स्वर्गवासी होगये।

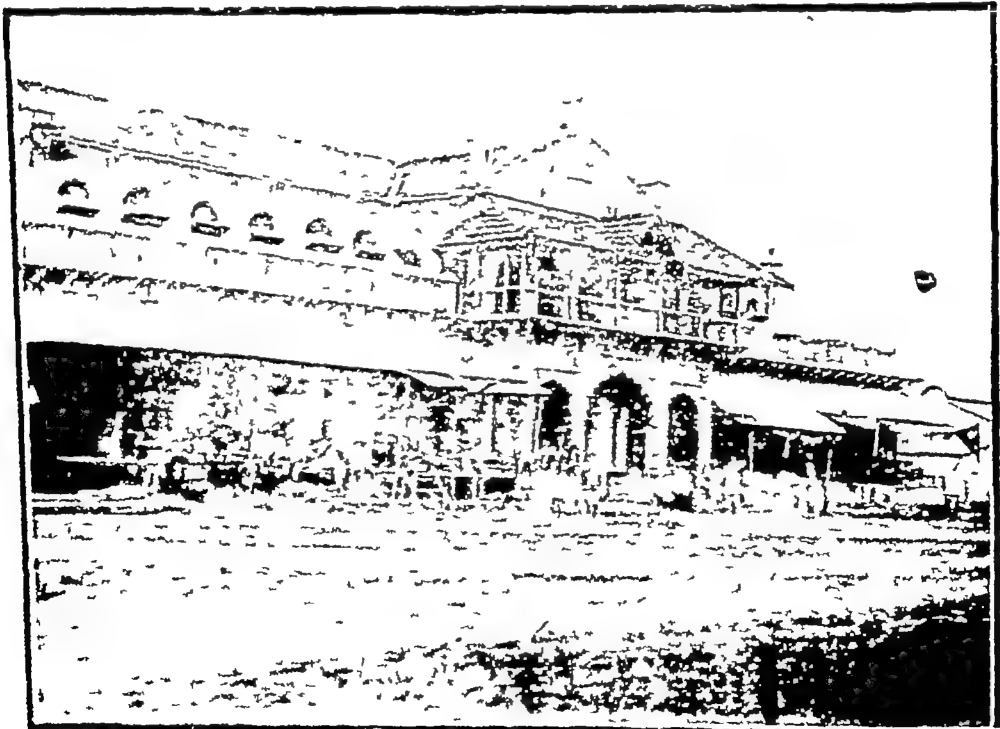
सेठ मिश्रीलालजी गोठी—आपका जन्म संवत् १९३९ में हुआ। आपही इस समय इस परिवार में सबसे बड़े हैं। आप बड़े शांत तथा समझदार सज्जन हैं। तथा तमाम जमींदारी, व्यापार और कुटुम्ब की सम्भाल बड़ी तत्परता से करते हैं। आपके पुत्र बदरीचन्दजी १६ साल के हैं, आप शुद्ध खादी धारण करते हैं। आप होनहार युवक हैं। तथा मेट्रिक में अध्ययन करते हैं। सेठ मेघराजजी गोठी का जन्म १९४३ में हुआ। यूरोपीय युद्ध के बाद आपने छिंदवाड़ा डिस्ट्रिक्ट में दो लाख रुपयों की लागत से कोयले की तीन खानें खरीदीं, तथा इस समय उनका संचालन करते हैं। आपके पुत्र अमरचन्दजी तथा प्रेमचन्दजी हैं। सेठ धनराजजी गोठी का जन्म संवत् १९४८ में तथा स्वर्गवास १९८४ में हुआ। आपके पुत्र गोकुलचन्दजी, नेमीचन्दजी, उत्तमचन्दजी तथा समीरमलजी हैं। सेठ पनराजजी का जन्म १९४८ में हुआ। आप सराफी दुकान का काम देखते हैं। आपके मूलचन्दजी तथा मोतीलाल



स्व० सेठ लखमीचंदजी गोठी बेतूल (प्रतापमल लखमीचंद)



सेठ मिश्रीमलजी गोठी (प्रतापमल लखमीचंद) बेतूल



धर्मशाला इटारसी (प्रतापमल लखमीचंद बेतूल)

जी नामक पुत्र हैं। सेठ केशरीचन्दजी गोठी का जन्म संवत् १९४९ में हुआ। आपने मेट्रिक तक शिक्षा पाई है, तथा जमीदारी और दुकानों का कार्य्य देखते हैं।

श्री दीपचन्दजी गोठी—आप सेठ लखमीचन्दजी गोठी के छठे पुत्र हैं। आपका जन्म संवत् १९५५ की दीपमालिका के दिन हुआ। नागपुर कांग्रेस से आपने राष्ट्रीय कार्यों में सहयोग देना आरंभ किया। आपके दयालु व अभिमान रहित स्वभाव के कारण बेतूल जिले की जनता आपसे दिनों दिन अधिकाधिक स्नेह करने लगी। आप जनता में सेवा समिति आदि का संगठन करते रहे। सन् १९२८ में आपने "गौंड" नामक जंगली जातियों से शराब मांस आदि छुड़वाने का ठोस कार्य्य आरंभ किया। सन् १९२७ में आपको डिस्ट्रिक्ट कौंसिल की मेम्बरशिप व एम० एल० सी० का सम्मान प्राप्त हुआ। थोड़े समय बाद आप कौंसिल से इस्तीफा देकर सत्याग्रह संग्राम में प्रविष्ठ हुए। सन् १९२९ में जंगल सत्याग्रह करने के उपलक्ष में आपको एक साल का कारावास तथा ५००) जुर्माने की सजा हुई। आप की गिरफ्तारी के समय आपके प्रेम के वशीभूत होकर २५। ३० हजार गौंड जनता उपस्थिति थी। आपके पीछे आपके परिवार से गवर्नमेंट ने सत्याग्रह शांत करने के लिये भेजी गई पुलिस के खर्चे के ३४००) वसूल किये। आप गांधी इरविन समझौता के अनुसार ७ मास ४ दिन की सजा भुगत कर ता० ९ मार्च १९३१ के दिन नागपूर जेल से छूटे। आपकी प्रथम पत्नी श्रीमती सुगनदेवीजी आपके जेल यात्रा के पश्चात् अत्यन्त त्यागमय जीवन विताने लगीं। जिससे उनका शरीर क्षीण होगया और रोगग्रसित होजाने के कारण उनका शरीरान्त ५ सितम्बर १९३१ में होगया इधर ३ सालों से गोठी दीपचन्दजी डिस्ट्रिक्ट कौंसिल के सेक्रेटरी तथा स्कूल बोर्ड के मेम्बर हैं। आपका प्रेमालु स्वभाव प्रशंसनीय है। इतनी बड़ी सम्पत्ति तथा सम्मान के स्वामी होते हुए भी आपको अभिमान छू तक नहीं गया है। आपके छोटे भ्राता फूलचन्दजी अपनी मालगुजारी का काम देखते हैं।

यह परिवार सी० पी० के ओसवाल समाज में बहुत बड़ी प्रतिष्ठा रखता है। इस समय लगभग १०० गांवों की जमीदारी इस कुटुम्ब के पास है। इस परिवार की मुख्य दुकान "सेठ प्रतापमल लखमीचन्द" के नाम से बेतूल में है। जिस पर जमीदारी, बेंकिंग तथा चांदी सोने का व्यापार होता है। इसके अलावा इस परिवार की भिन्न २ नामों से बेतूल इटारसी तथा जुनरदेव में दुकाने हैं।

सेठ बालचन्द गंभीरमल गोठी, परभणी (निजाम)

इस खानदान के मालिक मूल निवासी बिलाड़ा (जोधपुर-स्टेट) के हैं। आप मंदिर आम्नाय के सज्जन हैं। सब से पहले बिलाड़ा से सेठ बालचन्दजी गोठी करीब १२५ बरस पहले परभणी में आये। आपने यहाँ आकर के अपनी फर्म स्थापित की। आपको स्वर्गवासी हुए करीब ५० वर्ष हो गये होंगे। आपके पश्चात आपके पुत्र सेठ गम्भीरमलजी गोठी ने इस फर्म के काम को सम्हाला। आपके समय में भी फर्म की बराबर तरक्की होती रही आपका संवत् १९५६ में स्वर्गवास हुआ।

आपके पश्चात् आपके पुत्र सेठ मोहनलालजी गोठी ने इस फर्म के काम की बहुत तरक्की दी। आपका जन्म संवत् १९२५ में हुआ। आपने मकान, बगीचे वगैरा बहुत सी स्थावर संम्पत्ति बढ़ाई। पर-

भणी में आपकी देख रेख मे एक श्री पार्श्वनाथजी का बहुत विशाल और भव्य मंदिर बना है। इस समय आपकी दुकान पर बैंकिंग सोना चाँदी, कपड़ा खेतीवड़ी आदि व्यापार होता है। परभणी में यह फर्म बहुत प्रतिष्ठित हैं। सेठ मोहनलालजी बड़े उत्साही हैं। आपके इस समय एक पुत्र हैं जिनका नाम नेमीचंदजी है। आपका संवत् १९६५ का जन्म है।

श्री मनोहरमलजी गोठी, नाशिक

आपका परिवार महामन्दिर (जोधपुर) का निवासी है। इस परिवार के पूर्वज देश से व्यापार के लिये नाशिक जिले के घोटी नामक स्थान में आये। वहाँ सेठ मनीरामजी तथा उनके पुत्र लखमीचन्दजी आसामी लेन देन का काम करते रहे। सेठ लखमीचन्दजी संवत् १९७७ में स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र मनोहरमलजी हुए।

मनोहरमलजी गोठी—आपका जन्म संवत् १९५९ में हुआ। अपने पिताजी के स्वर्गवासी होने के बाद आप ११ सालों तक बम्बई में सर्विस करते रहे। जाति हित के कामों में आपकी बहुत रुचि है। आप बम्बई की ओसवाल मित्र मण्डल, नामक संस्था के सेक्रेटरी रहे। संवत् १९३२ से आपने नाशिक में "गोठी ब्रादर्स" के नाम से कपड़े का व्यापार स्थापित किया। आप इस समय नाशिक जिला ओसवाल सभा और जैन बोर्डिंग के सेक्रेटरी हैं। नाशिक जिले के उत्साही कार्य्य कर्त्ताओं तथा जाति हितैषी व्यक्तियों में आपका नाम अग्र गण्य है।

पूंगलिया

पूगलिया गौत्र की उत्पत्ति—कहा जाता है कि लोद्रपुर (जेसलमेर) के भाटी राजा रावल जेतसी के ९ वर्षीय पुत्र केलणदे को गलित कुष्ट की बिमारी हो गई थी। उस समय राजा के आग्रह से दादा जिनदत्त सूरिजी लोद्रपुर आये। तथा राजपुत्र को स्वस्थ्य किया। कुमार केलणदे ने साधुवृत्ति धारण करने की प्रार्थना की। तब गुरु ने उसका मुण्डन कराकर सम्यक्त युक्त बारह व्रत उच्चराये। दर्शन और दीक्षा की चाह रखने के कारण इनकी गौत्र राखेचाह (राखेचा) हुई। ये अपने निवास पूंगल से उठकर दूसरे स्थल पर बसे। इसलिये पूंगलिया राखेचा कहलाये। इस प्रकार पूङ्गलिया गौत्र की उत्पत्ति हुई।

सेठ ताराचन्दजी बीजराजजी पूंगलिया, डूंगरगढ़

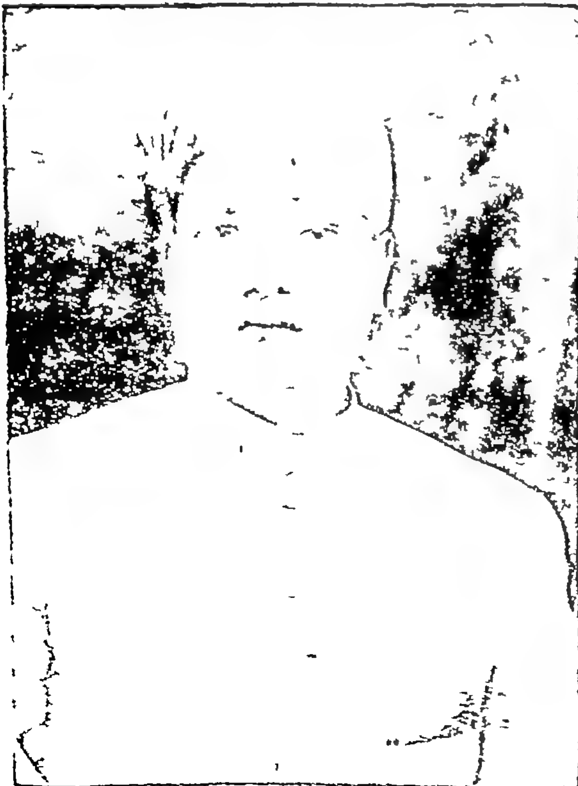
इस परिवार के लोग पूंगल से संमदसर नामक स्थान पर आये। वहाँ से फिर संवत् १९५२ में सेठ रावतमलजी श्री डूंगरगढ़ आये आप बड़े मेधावी और अनुभवी सज्जन थे। डूंगरगढ़ आने के पूर्व ही आपने पूरणी (भागलपुर) नामक स्थान पर अपनी फर्म पर गल्ले का व्यापार प्रारम्भ किया। इसके बाद सफलता मिलने पर क्रमशः साहबगंज और छत्तापुर में अपनी शाखाएँ खोलीं। संवत् १९५७ में आपका स्वर्गवास हो गया। आपके ताराचन्दजी और बीजराजजी नामक दो पुत्र हुए।



सेठ बीजराजजी पूगलिया, डूगरगढ़



सेठ जयचदलालजी पुंगलिया, डूंगरगढ़.



[illegible]



श्री [illegible] गोठी, नाशिक

सेठ ताराचन्दजी और बींजराजजी—आप दोनों भाइयों ने भी व्यापार में बहुत तरक्की की। एवम् अपने व्यापार को विस्तृत रूप से बढ़ाने के लिये फारबिसगंज, डोमार, मुरलीगंज और कलकत्ता आदि स्थानों पर अपनी शाखाएँ स्थापित कर जूट का व्यापार शुरू किया। इसमें आप लोगों को बहुत सफलता मिली। आप लोगों का यहाँ की जनता एवम् बीकानेर स्टेट में अच्छा सम्मान है। संवत् १९८५ में ताराचन्दजी का स्वर्गवास हो गया। आपके शेरमलजी, जयचन्दलालजी, बिरदीचन्दजी और जीवराजजी नामक चार पुत्र हुए। इनमें से शेरमलजी का स्वर्गवास हो गया। शेष बंधु व्यापार संचालन करते हैं। बाबू जयचन्दलालजी मिलनसार और उत्साही व्यक्ति हैं।

सेठ बींजराजजी के सात पुत्र हैं, जिनके नाम क्रमशः नेमीचन्दजी, मेघराजजी, धरमचन्दजी, माणकचन्दजी, रिधकरनजी, शुभकरनजी, और पूनमचन्दजी हैं। इनमें से प्रथम तीन व्यापार संचालन में योग देते हैं। शेष पढ़ते हैं। इस परिवार की डूंगरगढ़ में बहुत सी हवेलियां बनी हुई हैं। यह परिवार श्रीजैन तेरापंथी संप्रदाय का अनुयायी है।

सेठ गोकुलचंद कस्तूरचंद पूंगालिया, डूंगरगढ़

इस परिवार के लोगों का मूल निवास स्थान समंदसर ही था। वहाँ से संवत् १९४२ में सेठ अखयचन्दजी के पुत्र सेठ अर्जुनदासजी, शेरमलजी, गोकुलचन्दजी, तुलीचन्दजी और कालूरामजी श्रीडूंगरगढ़ आये। कुछ समय के पश्चात् ये सब भाई अलग २ हो गये। वर्तमान इतिहास सेठ गोकुलचन्दजी के वंश का है। सेठ गोकुलचन्दजी ही ने पहले पहल आसाम प्रान्त के गोलकगंज नामक स्थान पर जाकर जूट तथा गल्ले का व्यापार प्रारम्भ किया। आप बड़े प्रतिभावान् व्यक्ति थे। आपने फर्म की वहुत तरक्की की। कलकत्ता में भी आपने हस्तमल कस्तूरचन्द के नाम से फर्म स्थापित कर कपड़े का व्यापार प्रारम्भ किया। सम्वत् १९७२ में आपका स्वर्गवास हो गया। आपके हस्तमलजी, कस्तूरचन्दजी और वेगराजजी नामक तीन पुत्र हुए। आप लोग भी मिलनसार और व्यापार कुशल व्यक्ति थे। आप लोगों का स्वर्गवास हो गया। इस समय इस इस फर्म के मालिक सेठ कस्तूरचन्दजी के पुत्र बा० तोलारामजी हैं। आप उत्साही नवयुवक हैं। आपने भी गौरीपुर में अपनी एक ब्रांच खोलकर उसपर जूट का काम प्रारम्भ किया है। आपकी फर्म का बीकानेर स्टेट में अच्छा सम्मान है।

सेठ नेमीचंदजी सरदारमल पूंगालिया, नागपुर

इस परिवार का मूल निवास बीकानेर है। इस परिवार के पूर्वज सेठ दौलतरामजी पूङ्गलिया के कनीरामजी, भेरोंदानजी, सुगनचंदजी तथा जवाहरमलजी नामक ४ पुत्र हुए। इनमें से सेठ भेरोंदानजी ऊँट की सवारी से लगभग १०० वर्ष पूर्व नागपूर आये। थोड़े समय बाद आपके छोटे भाई जवाहरमलजी भी नागपूर आ गये। आपके मझले भ्राता सुगनचन्दजी पूङ्गलिया अमरावती में सेठ मोजीराम बलदेव की दुकान पर प्रधान मुनीम थे। तथा वहाँ वजनदार पुरुष माने जाते थे। सेठ भेरोंदानजी संवत् १९६० में

स्वर्गवासी हो गये। आपके हाथों से व्यापार को तरक्की मिली। आपके बड़े भ्राता सेठ कनीरामजी के लाभचन्दजी नामके पुत्र हुए। इनका स्वर्गवास संवत् १९७२ में हो गया। लाभचन्दजी पूङ्गलिया के नेमीचन्दजी तथा सरदारमलजी नामक २ पुत्र हुए। इनमें नेमीचन्दजी (सेठ जवाहरमलजी के पुत्र) छोगमलजी के नाम पर दत्तक गये। इनका स्वर्गवास संवत् १९७२ में हो गया।

सेठ सरदारमलजी पूंगलिया—आपका जन्म संवत् १९४४ में हुआ। आपका धार्मिक कामों की ओर बहुत बड़ा लक्ष है। आपने नागपुर स्थानक की बिल्डिंग बनवाने में सहायता दी, तथा बहुत परिश्रम उठाया। यहाँ आपने कई साधुओं के चातुर्मास कराये। केसरबाई के ४७ दिनों के संथारे का व्यय उठाया वृद्धि ऋषिजी की दीक्षा का खरच उठाया, नामली में स्थानक बनवाया। स्थानीय मंदिर के कलश चढ़वाने में ५ हजार रुपये दिये, इत्यादि कई धार्मिक काम किये। आप नागपुर के जैन समाज में नामांकित गृहस्थ हैं। आपके यहाँ नेमीचंद सरदारमल के नाम से सोना चांदी तथा सराफी व्यापार होता है।

सेठ केसरीमल पीरूदान पुंगलिया, चांदा

इस परिवार का मूल निवास स्थान खारा (बीकानेर स्टेट) है। वहाँ से संवत् १९३५। ४० के लगभग यह कुटुम्ब भिनासर (बीकानेर स्टेट) गया, तथा भिनासर से सेठ शिवजीरामजी के पुत्र लखमीचन्दजी पुङ्गलिया २० साल की उमर में चांदा आये, तथा उन्होंने अमरचन्दजी अगरचन्दजी गोलेछा की दुकान पर १९६४ तक मुनीमात की, आपके ६ छोटे भ्राता रावतमलजी, भेरूदानजी, मंगलचन्दजी, केशरीमलजी, पूनमचन्दजी तथा पीरूदानजी नाम के और थे, इन भाइयों में से भेरोंदानजी केशरीमल जी तथा पूनमचन्दजी के कोई संतान नहीं हैं। सेठ लखमीचन्दजी पुङ्गलिया मुनीमी करते रहे, तथा भेरूदानजी ने व्यापार शुरू किया। आपके बाद केसरीमलजी तथा पीरूमलजी काम काज चलाते रहे। संवत् १९६४ में लखमीचन्दजी ने अपना घरू चांदी सोने का व्यवसाय शुरू किया। संवत् १९८१ में इनका शरीरावसान हुआ।

सेठ रावतमलजी पुङ्गलिया के हमीरमलजी तथा राजमलजी नामक २ पुत्र हुए तथा हमीरमलजी के केवलचन्दजी तथा खेमचन्दजी नामक पुत्र हुए। इनमें सेठ राजमलजी, पीरूदानजी के नाम पर तथा केवलचंदजी, लखमीचन्दजी के नाम पर दत्तक गये। पुङ्गलिया मंगलचंदजी का शरीरान्त संवत् १९७८ में हुआ। इनके ३ पुत्र हुए दीपचन्दजी मूलचन्दजी तथा नेमीचन्दजी। इन भ्राताओं के यहाँ दीपचन्द पुङ्गलिया के नाम से चांदा में चांदी सोना व सराफी व्यापार होता है।

सेठ राजमलजी पूंगलिया—अपका जन्म संवत् १९४९ के में हुआ, आपने अपने व्यापार की उन्नति के साथ २ कृषि तथा मालगुजारी के काम को बढ़ाया आपके पास इस समय ४ गाँवों की जमीदारी है। आप चांदा के व्यापारिक समाज में अच्छी इज्जत रखते हैं संवत् १९३० से आप चांदा म्युनिसिपैलिटी के मेम्बर निर्वाचित हुए हैं, सार्वजनिक और लोकहित के कामों में आप सहायता देते रहते हैं। आपके मन्नालालजी, चुन्नीलालजी, उत्तमचन्दजी, रेखचन्दजी तथा गुलाबचन्द नामक ५ पुत्र हैं जिनमें मन्नालालजी की वय २० साल की है।

बैंगानी

बैंगानी परिवार की उत्पत्ति—कहा जाता है कि जैतपुर के चौहान राजा जैतसिंहजी के पुत्र वंगदेव अंधे हो गये थे। इनको जैनाचार्य्य से स्वास्थ लाभ हुआ। इससे उन्होंने श्रावक व्रत धारण कर जैन धर्म अंगीकार किया। इन्हीं वंगदेव की संतानें बैंगानी कहलाई।

बैंगानी परिवार लाड़नू

इस परिवार वाले सज्जनों का पूर्व निवास स्थान बीदासर था वहाँ से सेठ जीतमलजी किसी वश लाड़नू नामक स्थान पर आकर बसे। जिस समय आप यहाँ आये थे आपकी बहुत साधारण स्थिति थी। आपके केसरीचन्दजी और कस्तूरचन्दजी नामक दो पुत्र हुए। सेठ केसरीचन्दजी के तीन पुत्र हुए उनके नाम सेठ जीवनमलजी, इन्द्रचन्दजी और बालचन्दजी हैं। सेठ बालचन्दजी सुजानगढ़वासी सेठ गिरधारीमलजी के पुत्र सेठ छोगमलजी के यहाँ दत्तक चले गये। सुजानगढ़ में आपका अच्छा सम्मान है आपके आसकरणजी नामक एक पुत्र हैं।

सेठ जीवनमलजी—सेठ जीवनमलजी ने सम्वत् १९५७ में कलकत्ता जाकर अपनी फर्म सेठ जीवनमल चन्दनमल के नाम से स्थापित की और इस पर जूट का काम आरंभ किया गया। आपकी बुद्धिमानी और होशियारी से इस व्यापार में सफलता मिली यहाँ तक कि आपने लाखों रुपयों की सम्पत्ति उपार्जित की। कलकत्ते के जूट के व्यवसाइयों में आपका आसन बहुत ऊँचा था। वहाँ के व्यापारी लोग कहा करते थे। "आज तो ये भाव है और कल का भाव जीवनमल के हाथ है" व्यापार के अतिरिक्त आपका ध्यान दूसरे कामों की ओर भी बहुत रहा। आपके कार्यों से प्रसन्न होकर जोधपुर नरेश महाराजा सुमेरसिंहजी ने आपको मय आल ओलाद पैरों में सोना पहिनने का अधिकार बख्शा। इसके अतिरिक्त आपको और आपके पुत्रों को जोधपुर की कस्टम की माफी का परवाना भी मिला। इतना ही नहीं दरबार की ओर से पालकी, छड़ी और कोर्ट में हाजिर न होने का सन्मान भी आपको मिला था। आपका स्वर्गवास सम्वत् १९७४ में जयपुर में हुआ। जिस दिन आपका स्वर्गवास हुआ उस दिल कलकत्ते के जूट के बाजार में आपके प्रति शोक प्रकट करने के लिये हड़ताल मनाई गई थी। आपके पुत्र चन्दनमलजी, जवरीमलजी, हाथीमलजी, मोतीलालजी और सूरजमलजी हुए। सेठ मोतीलालजी का स्वर्गवास हो गया उनके पुत्र हनुमानमलजी विद्यमान हैं।

सेठ चन्दनमलजी—आपका जन्म सवत् १९३१ में हुआ आप व्यापार कुशल पुरुष हैं आपके छः पुत्र हैं जिनके नाम आसकरणजी, नवरतनमलजी, चम्पालालजी, पूनमचन्दजी, कानमलजी और गुलाबचन्दजी हैं। इनमें से आसकरणजी सुजानगढ़ निवासी सेठ बालचन्दजी के यहां दत्तक गये हैं।

सेठ जवरीमलजी—आपका जन्म सम्वत् १९३६ में हुआ। आपका ध्यान विशेष कर धार्मिकता की ओर रहा आपका स्वर्गवास सम्वत् १९९० में हो गया। आपके सागरमलजी नामक एक पुत्र हैं। बाबू सागरमलजी देशभक्त हैं।

सेठ हाथीमलजी—आप बचपन से ही बड़े कुशाग्र बुद्धि के सज्जन रहे। इस फर्म के व्यापार

में आपका बहुत बड़ा हाथ है। आपका हृदय वायदे के व्यापार के लिये बहुत खुला हुआ है। हजारों लाखों रुपयों की हार जीत करना आपके लिये बांयें हाथ का खेल है। जिस समय आपकी खरीदी और बिकवाली शुरू होती है उस समय प्रायः सारे बाजार की निगाहें आपकी ओर रहती हैं, यहां तक कि आपके कारण बाजार में कई बार बड़ी २ घटा बढ़ी हो जाती है आपके इस समय जसकरणजी नामक एक पुत्र है।

सेठ सूरजमलजी—आप मिलनसार और खुशमिजाज सज्जन हैं। आपको मकान बनाने का बहुत शौक है। आपने अपने डिजाइन द्वारा एक सुन्दर हवेली का निर्माण करवाया है। यह डिजाइन अच्छे २ इञ्जीनियरों के डिजाइन का मुकाबला करने में समर्थ हो सकता है। आपके रणजीतसिंह, धनपतसिंह और मोहनसिंह नामक तीन पुत्र हैं।

चंडालिया

जयकरणदासजी चण्डालिया का परिवार, सरदारशहर

इस परिवार वालों का पहले निवास स्थान सवाई (सरदार शहर से ३ मील) नामक स्थान था। मगर जब से सरदार शहर बसा उसी समय से इस परिवार के प्रथम व्यक्ति सेठ जयकरनदासजी यहां आये। इनके तीन पुत्र हुए जिनके नाम क्रम से सेठ उम्मेदमलजी सेठ जीतमलजी और सेठ इन्द्रचंद जी थे। इनमें से पथम एवम् तृतीय दोनों सज्जनों ने मिलकर कलकत्ता में अपनी फर्म स्थापित की। तथा कपड़े का व्यापार प्रारम्भ किया। आप लोगों को इसमें अच्छी सफलता प्राप्त हुई। सेठ उम्मेदमल जी धार्मिक व्यक्ति थे। आपका प्रायः सारा समय धार्मिक कार्य्यों ही में खर्च होता था। सेठ इन्द्रचन्द्र जी इस खानदान में बड़े प्रतिभा सम्पन्न और प्रतिष्ठित व्यक्ति हुए। आपने यहां की पंच पंचायती में कई नये कानून बनाये जो अभी भी सुचारू रूप से चल रहे हैं। आपने एक शनीश्चरजी का मन्दिर तथा कुवा भी बनवाया। सरदारशहर के बसाने में आपने बहुत कोशिश की। लिखना यह कि है आप उस समय के नामांकित व्यक्ति थे। आपका स्वर्गवास संवत् १९४३ में होगया।

सेठ उम्मेदमलजी के तीन पुत्र हुए जिनके नाम सेठ कोड़ामलजी सेठ छोगमलजी और सेठ पोकरमलजी हैं। तथा सेठ इन्द्रचन्दजी के पुत्र सेठ शोभाचन्दजी चंडालिया थे। इस समय आप लोगों का व्यापार कलकत्ता में मेसर्स शोभाचन्द कोड़ामल के नाम से होता था। संवत् १९७२ में फिर भाई २ अलग होगये। और अपना अपना व्यापार स्वतंत्र रूप से करने लगे। सेठ कोड़ामलजी तथा छोगमलजी यहां के प्रसिद्ध व्यक्ति हुए। आप लोगों ने व्यापार में भी अच्छी सफलता प्राप्त की। सेठ शोभाचंदजी भी अपने पिताजी की भांति बड़े नामांकित व्यक्ति हुए। आपका यहां की पंच पंचायती में बहुत भाग रहा। आपका सारा जीवन एक प्रकार से पब्लिक सेवाओं ही में व्यतीत हुआ। आप तीनों भाइयों का स्वर्गवास होगया। सेठ पोकरमलजी इस समय विद्यमान हैं आपकी अवस्था इस समय ७७ वर्ष के करीब है। अपने भाइयों से अलग होते ही आपने कलकत्ता में अपने पुत्रों के नाम से फर्म स्थापित करदी थी। जिस पर आज कपड़े का व्यापार हो रहा है।

सेठ पोकरमलजी चण्डालिया (बैठे हुए), सरदारशहर.
बाबू गणपतरायजी चण्डालिया, (खड़े हुए नं० १)
बाबू रामलालजी चण्डालिया, (खड़े हुए नं० २).
जौहरीमलजी चण्डालिया, (खड़े हुए नं० ३)



श्री जसकरणजी चण्डालिया, सरदारशहर.

सेठ कोढ़ामलजी के मूलचन्दजी नामक पुत्र हुए। मगर उनका स्वर्गवास होगया। वर्तमान में सेठ मूलचन्दजी के पुत्र मिलापचन्दजी, धनराजजी और मंगलचन्दजी हैं। सेठ छोगमलजी के पुत्र सेढ़मल जी, नेमचन्दजी, हुलासमलजी और जयचन्दलालजी हैं। सेठ पोकरमलजी के तीन पुत्र हैं जिनके नाम क्रमशः बा० गणपतरायजी, जवरीमलजी और रामलालजी हैं। आप तीनों ही भाई सज्जन एवं मिलनसार व्यक्ति हैं। और आजकल आप ही लोग अपनी फर्म का संचालन करते हैं। आपकी फर्म कलकत्ता के मनोहरदास कटला में कपड़े का व्यापार करती है। सेठ शोभाचन्दजी के पुत्र सेठ कालूरामजी हैं। आपका यहाँ की पच पंचायती में बहुत हाथ है। आप समझदार एवं बुद्धिमान व्यक्ति हैं। आप यहाँ के म्युनिसिपल मेम्बर हैं। आपके चार पुत्र हैं जिनका नाम क्रम से सुमेरमलजी, मोतीलालजी, पूनमचंद जी और दीपचन्दजी हैं।

सेठ शिवजीराम खूबचंद चंडालिया, सरदारशहर

यों तो इस परिवार वालों का मूल निवास स्थान किशनगढ़ नामक स्थान है मगर कई वर्ष पूर्व वहाँ से चल कर सवाई होते हुए यहाँ आये अतएव यहाँ सवाई वालों के नाम से प्रसिद्ध है। यहाँ आये आपको करीब ९५ वर्ष हुए। यहाँ आने वाले सज्जन सेठ गंगारामजी चण्डालिया थे। आपके चार पुत्र हुए सेठ दुर्जनदासजी, सेठ गुलावचन्दजी, सेठ आसकरनजी और सेठ कालूरामजी। आप चारों ही भाई अपना अलग २ व्यापार करने लगे। वर्तमान इतिहास सेठ कालूरामजी के वंश का है।

सेठ कालूरामजी ने कलकत्ता जाकर नौकरी की। आपके संवत् १९१२ में शिवजीरामजी तथा संवत् १९२२ में गजराजजी नामक दो पुत्र हुए। दोनों ही भाइयों ने मिलकर संवत् १९४२ में कलकत्ते में अपनी फर्म स्थापित की। तथा कपड़े का व्यापार प्रारम्भ किया। इस व्यापार में आप लोगों के परिश्रम से अच्छा लाभ रहा। सेठ शिवजीरामजी बड़े प्रतिभा सम्पन्न और व्यापार चतुर थे। आपकी सलाह बड़ी वजनदार मानी जाती थी। आप साधु प्रकृति के महानुभाव थे। आपका स्वर्गवास संवत् १९८८ में होगया। आपके स्वर्गवास होने के कुछ ही दिन पश्चात् इसी साल सेठ गजराजजी का भी स्वर्गवास होगया। आप दोनों भाई अपनी मौजूदावस्था ही में अलग २ होगये थे। सेठ शिवजीरामजी के कोई पुत्र न था। अतएव पाली के पास हिमावस नामक स्थान से बा० खूबचन्दजी को दत्तक लिया गया।

बा० खूबचन्दजी बड़े मिलनसार, उदार एवम् सहृदय व्यक्ति हैं। व्यापार में भी आपका अच्छा ध्यान है। आजकल आपका व्यापार संवत् १९७८ से ही बीकानेर के प्रसिद्ध सेठ भैरोंदानजी सेठिया के साझे में हो रहा है। जिस फर्म का नाम मेसर्स खूबचन्द जुगराज पड़ता है इस नाम से कपड़ा तथा आढ़त का व्यापार होता है। तथा मेसर्स जुगराज रिधकरण के नाम से ३९ आर्मेनियम स्ट्रीट में जूट का व्यापार होता है। इसके अतिरिक्त खूबचन्द पूनमचन्द के नाम से बीकानेर में ऊन का व्यापार होता है। सेठ भैरोंदानजी सेठिया के नाम से ऊन के प्रेस में आपका साझा है। जो बीकानेर में है।

आपके इस समय तीन पुत्र हैं जिनके नाम क्रमशः भंवरलालजी, पूनमचन्दजी और सिधकरनजी हैं। इनमें से भँवरलालजी व्यापार कार्य्य करते हैं। शेष दोनों पढ़ते हैं।

सेठ जसकरन सुजानमल चण्डालिया, सरदारशहर

इस परिवार के प्रथम व्यक्ति सेठ रायसिंहजी सवाई से यहाँ आकर बसे तथा साधारण दुकानदारी का काम प्रारम्भ किया। आपके दो पुत्र हुए जिनके नाम उदयचन्दजी और जैतरुपजी था। वर्तमान इतिहास जैतरूपजी के वंशजों का है। जैतरूपजी के चार पुत्र सेठ कस्तूरचन्दजी, ताराचन्द जी, छतमलजी और सूरजमलजी हुए। आप सब भाई अलग २ होगये एवम् अपना अपना व्यापार करने लगे। सेठ कस्तुरचन्दजी के मुकनचन्दजी नामक पुत्र हुए। आप सरदार शहर तथा कलकत्ता में व्यापार करते रहे। आपका स्वर्गवास संवत् १९६० में होगया। आपके जुहारमलजी एवम् जसकरनजी नामक दो पुत्र हुए। जुहारमलजी का केवल १५ वर्ष की उम्र में स्वर्गवास होगया।

वर्तमान में इस फर्म के संचालक सेठ जसकरनजी तथा आपके पुत्र कुं० सुजानमलजी हैं। इस फर्म की सारी उन्नति जसकरनजी ही के द्वारा हुई। आप पहले पहल संवत् १९६३ में कलकत्ता आये। यहां आकर आपने पहले रावतमल पन्नालाल बोरड़ के यहां सर्विस की। इसके पश्चात् आपका इसमें साझा होगया। फिर संवत् १९७७ की साल से आपने अपनी स्वतंत्र फर्म उपरोक्त नाम से शुरू की। और स्वदेशी कपड़े का व्यापार प्रारम्भ किया। पश्चात् संवत् १९८८ से आप सुजानमल चण्डालिया के नाम से व्यापार कर रहे हैं। आपकी गिद्दी कलकत्ता में ३७। ३८ आर्मेनियम स्ट्रीट में है। तथा सेलिंग शाप नार्मल लोहिया लेन में है। आपके सुजानमलजी नामक एक पुत्र हैं आप भी व्यापार में भाग लेते हैं। आप लोग प्रारम्भ से ही श्री जैन तेरा पन्थी संप्रदाय के अनुयायी हैं।

सेठ आनंदरूप कस्तूरचंद चंडालिया, जालना

इस खानदान के मालिक मूल निवासी गँठिया (जोधपुर स्टेट) के हैं। आप मन्दिर आम्नाय को मानने वाले सज्जन हैं। इस खानदान वाले करीब १५० वर्ष पहिले मारवाड़ से दक्षिण में आये। तथा ओसाई खेड़ा नामक गाँव में रहे। इन आने वालों में सेठ श्यामदासजी, दुरगदासजी तथा उदयचन्दजी ये तीनों भाई मुख्य थे। कुछ समय पश्चात् श्यामदासजी के परिवारवालों ने औरंगाबाद में और दुरगदास जी के परिवार वालों ने जालना में अपनी दुकानें खोलीं।

दुरगदासजी के पुत्र सेठ आनन्दरूपजी हुए। आप बड़े विद्वान और धर्मप्रेमी पुरुष थे। आपने अपने यहाँ सैकड़ों शास्त्रों का संग्रह किया जो अभी भी विद्यमान है। मुगलाई स्टेट में आप बड़े नामी हुए सेठ आनन्दरूपजी का स्वर्गवास संवत् १९१५ के करीब हुआ। आपके पश्चात् आपके पुत्र कस्तूरचन्दजी बहुत प्रख्यात हुए। निजाम स्टेट के अन्दर आपकी बहुत बड़ी इज्जत थी यहाँ तक कि बहुत दिनों तक केंटुन्मेंट की तरफ से आपके यहाँ सम्मान के लिये १२ जवान और एक हवलदार हमेशा २४ घंटा पहरा देते थे। आपकी तरफ से दान धर्म और परोपकार भी बहुत होता था। सेठ कस्तूरचन्दजी का संवत् १९३७ में स्वर्गवास हुआ। आपके कोई पुत्र न होने से केसरीचन्दजी ब्यावर से दत्तक लाये गये। इनका भी स्वर्गवास सन् १९१९ में हुआ। इस समय आपके पुत्र केवलचन्दजी विद्यमान हैं।



सेठ खूबचंदजी चण्डालिया, सरदारशहर.



कुं० भँवरलालजी चण्डालिया, सरदारशहर.







कठोतिया

कठोतिया गौत्र की उत्पत्ति—कठोतिया गौत्र का मूल गौत्र सोनी है। जिसका विवरण हम पहले दे चुके हैं। सोनी परिवार के सज्जन कठोति नामक ग्राम में वास करते थे और फिर वहीं से दूसरे गाँवों में गये। अतएव कठोती से कठोतिया कहलाने लगे।

कठोतिया परिवार, सुजानगढ़

सेठ परसरामजी के पुत्र सेवारामजी, ताराचन्दजी और रतनचन्दजी संवत् १८७९ में लाड़नू से सुजानगढ़ आये। जिस समय सुजानगढ़ बसा उस समय बीकानेर के तत्कालीन महाराजा रतनसिंहजी ने आपको शहर के बसाने वालों में आगेवान् समझकर बहुतसी जमीन मकानात एवम् दुकानें बनवाने के लिये जमीन फ्री प्रदान की। साथ ही कस्टम के आधे महसूल की माफी का परवाना मय खासरूक्के के प्रदान किया। रतनचन्दजी का परिवार वापस लाडनू चला गया। ताराचन्दजी के कोई सन्तान न थी। वर्तमान परिवार सेठ सेवारामजी के दूसरे पुत्र पदमचन्दजी का है। सेठ पदमचन्दजी के बीजराजजी और पूसामलजी नामक दो पुत्र हुए।

सेठ बींजराजजी और पूसामलजी दोनों भाई बड़े व्यापारी होशियार तथा कष्ट सहन करने वाले परिश्रमी व्यक्ति थे। आपने संवत् १९०८ में बंगाल प्रान्त में जाकर बोड़ागाड़ी नामक स्थान पर अपनी फर्म स्थापित की। इसके बाद आपने बोदामारा, डोमार और कलकत्ता में भी अपनी फर्में खोलीं। आप लोगों का स्वर्गवास हो गया।

आपके पश्चात् फर्म का कार्य सेठ बींजराज के पुत्र जेसराजजी और सेठ पूसालालजी के पुत्र बालचन्दजी ने सम्हाला। आप दोनों भाइयों के परिश्रम से भी फर्म की उन्नति हुई। सेठ बालचंदजी की यहाँ बहुत अच्छी प्रतिष्ठा थी। आप प्रभावशाली व्यक्ति थे। आपका स्वर्गवास हो गया। आपके गणेशमलजी, पूनमचन्दजी, मोहनलालजी और नथमलजी नामक चार पुत्र हैं। जेसराजजी के पुत्र का नाम लालचन्दजी हैं। आप सब लोग मिलनसार और उत्साही सज्जन हैं। आप लोग भी व्यापार का संचालन करते हैं। आप लोग श्वेताम्बर तेरापंथी सम्प्रदाय के अनुयायी हैं। आपको बीकानेर दरबार की ओर से छड़ी, चपरास और कैफियत की इज्जत प्राप्त है। सेठ जेसराजजी स्थानीय म्युनिसिपेलटी के वायस प्रेसिडेण्ट हैं। तथा मोहनलालजी आनरेरी मजिस्ट्रेट हैं। वर्तमान में आपका व्यापार, डोमार, हल्दीबाड़ी, फारबिसगंज, सिराजगंज और कलकत्ता में जूट, बैंकिंग और कमीशन का होता है। प्रायः सभी स्थानों पर आपकी स्थाई सम्पत्ति बनी हुई है।

भूतेड़िया

भूतेड़िया गौत्र की उत्पत्ति—ऐसा कहा जाता है कि संवत् १०७९ में जांगलदेश के सरसापट्टन नामक नगर में दुर्जनसिंह नामक एक राजा राज्य करता था। इसको भूतों के डर से मुक्त कर आचार्य श्री तरुणप्रभसूरिजी ने जैन धर्मावलम्बी बनाया। इन्हीं भूत ताड़िया से भूतेड़िया गौत्र की उत्पत्ति हुई।

सेठ गंगारामजी भूतेड़िया का परिवार, लाडनूं

इस परिवार के लोग बहुत समय से लाडनूं में ही रहते है। इस परिवार में सेठ गंगारामजी बड़े मशहूर व्यक्ति हुए। इन्होंने वर्द्धमान (बङ्गाल) में जाकर अपनी फर्म स्थापित की थी। इनके तिलोकचन्दजी, छोटूलालजी और चींजराजजी नामक तीन पुत्र हुए। आप लोगों ने व्यापार में बहुत तरक्की की। आप तीनों पीछे जाकर अलग २ हो गये, एवम् स्वतन्त्र व्यापार करने लगे।

सेठ तिलोकचन्दजी का परिवार—सेठ तिलोकचन्दजी के दूसरे पुत्र सेठ हजारीमलजी बड़े व्यापार कुशल व्यक्ति थे। आपने लाखों रुपयों की सम्पत्ति उपार्जित की। आप लाडनूं की पंच पंचायती में आगेवान थे। आपका स्वर्गवास हो गया। इस समय आपके जयकरनजी और मालचन्दजी नामक दो पुत्र हैं। दोनों ही गूंगे और बहरे हैं। आपका वर्द्धमान में गंगाराम तिलोकचन्द के नाम से व्यापार होता है।

सेठ हजारीमलजी के भाई सेठ मोहनलालजी के परिवार के लोग इस समय वर्द्धमान में तिलोकचन्द मोहनलाल और राजशाही में मोहनलाल जयचन्द के नाम से व्यापार कर रहे हैं।

सेठ छोटूलालजी का परिवार—आपके चार पुत्र सेठ हरकचन्दजी, जुहारमलजी, चांदमलजी और शोभाचंदजी हुए। सेठ जुहारमलजी बड़े व्यापार कुशल व्यक्ति थे। आपने कलकत्ता में मेसर्स छोटूलाल जुहारमल के नाम से फर्म स्थापित की। आपका संवत् १९८८ में स्वर्गवास हो गया। आपके सूरजमलजी और कुन्दनमलजी नामक दो पुत्र हुए। आप दोनों भाई अलग अलग रूप से व्यापार करने लगे। सेठ सूरजमलजी उपरोक्त फर्म के नाम से व्यापार करते है। आप धार्मिक व्यक्ति हैं। आपके इस समय पूनमचन्दजी, बुधमलजी और लालचन्दजी नामक तीन पुत्र हैं। आप तीनों भाई मिलनसार हैं। प्रथम दो व्यापार संचालन करते हैं। तीसरे पढ़ते हैं। इस फर्म का आफिस ३९ क्लाईव स्ट्रीट में है। इस पर व्याज बैंकिंग और जूट बेलिंग का व्यापार होता है।

सेठ चांदमलजी ने मेसर्स छोटूलाल चांदमल के नाम से कलकत्ता में फर्म स्थापित की। इसमें आपने अच्छा लाभ उठाया। आपका स्वास्थ्य खराब रहने से यह फर्म उठा दी गई। आप बड़े व्यापार चतुर और बुद्धिमान सज्जन थे। आपका स्वर्गवास हो गया। शेष जीवनमलजी और धनराजी इस समय विद्यमान हैं। आप दोनों भाई उत्साही और मिलनसार व्यक्ति हैं। इस समय आपकी फर्म मेसर्स गंगाराम छोटूलाल के नाम से वर्द्धमान में व्याज, हुंडी चिट्ठी और जमींदारी का काम कर रही है। आपकी ओर से लाडनूं की गौशाला में ४१००) प्रदान किये गये हैं। तथा एक धर्मशाला बनी हुई है। वर्द्धमान में २०० वर्षों से आपकी फर्म स्थापित है।

कांकरिया

सेठ संतोषचंद रिखबदास कांसटिया, भोपाल

इस खानदान के पूर्वज सेठ ऋषभदासजी कांसटिया मेड़ते में निवास करते थे। आप गरोठ होते हुए भास्टा (भोपाल स्टेट) आये और यहाँ १०-१५ साल रहकर फिर भोपाल में आपने अपना स्थाई



श्री जसराजजी कठौतिया, सुजानगढ़,



स्व० सेठ चादमलजी भूतोड़िया, लाडनू



स्व० सेठ बालचन्दजी कठौतिया, सुजानगढ़.



बोलामलजी S/o चांदमलजी भूतोड़िया, लाडनूं

निवास बनाया। आपका संवत् १९१६ में शरीरावसान हुआ, इसी साल मार्गशीर्ष बदी २ को आपके पुत्र गोड़ीदासजी का जन्म हुआ।

सेठ गोड़ीदासजी कासटिया—आपकी दिन चर्य्या का विशेषभाग धार्मिक विषय की चर्चा, प्रतिक्रमण व सामयिक करने में व्यतीत होता था। सम्पत्तिशाली होते हुए भी प्रतिदिन अपनी बिरादरी के बच्चों को आप धार्मिक शिक्षा देते थे, नियम पूर्वक प्रतिवर्ष आप जैन तीर्थों की यात्रा करने जाते थे। संवत् १९७९ में आपने एक उपाश्रय की लागत के २२०१) देकर उसे श्रीसंघ के अर्पण किया। सं० १९८३ में आपकी धर्मपत्नी श्रीमती मिश्रीबाई के स्वर्गवास के समय आपने ५ हजार रु० शुभ कार्य्यों में लगाने के निमित्त निकाले। आप मक्षी तीर्थ के सभासद् और श्वेताम्बर जैन पाठशाला के प्रेसिडेण्ट थे, आपकी धार्मिकता, न्यायशीलता और प्रामाणिकता के कारण ओसवाल समाज व अन्य समाजों में आपका अच्छा सम्मान था। इस प्रकार प्रतिष्ठामय जीवन बिताते हुए आप संवत् १९८६ की वैशाख सुदी ५ को स्वर्गवासी हुए। आपकी मोजूदगी में आपके पुत्र अमीचन्दजी कांसटिया ने १० हजार रुपयों का दान शुभ कार्य्यों के लिये किया।

सेठ अमीचन्दजी कासटिया—आपका जन्म संवत् १९३७ में हुआ। आपका बाल्य और यौवन काल पिताजी की देखरेख में गुजरा, अतः आपकी भी धार्मिक कामों की अच्छी रुचि है स्थानीय श्वेताम्बर जैन पाठशाला में आपकी ओर से एक धर्माध्यापक रहते हैं। आप ओसवाल समाज के सम्मानीय गृहस्थ एवम् भोपाल के प्रतिष्ठि व्यापारी हैं, आपकी फर्म पर "संतोषचन्द रिखबदास कांसटिया" के नाम से साहुकारी लेन-देन, हुंडी चिट्ठी, रहन व सराफी व्यापार होता है।

समदड़िया

समदड़िया गौत्र की उत्पत्ति—समदड़िया गौत्र की उत्पत्ति के सम्बन्ध में महाजन वंश मुक्तवली मे लिखा है कि पदमावती नगर के समीप सोढ़ा राजपूत समंदसी अपने आठ पुत्रों सहित बड़ी गरीबी हालत में रहता था। जैनाचार्य्य श्रीजिनवल्लभ सूरिजी के उपदेश से वह धार्मिक जीवन बिताने लगा। समंदसी को सेठ धन्नासा पोरवाल ने अपना सहधर्मी समझकर व्यापार में अपना भागीदार बनाया, तथा इनके आठों पुत्रों को व्यापार के लिए समुद्र पार भेजा। इन्होंने मोक्तिक, विद्रुम, अम्बर आदि के व्यापार में असंख्यात द्रव्य उपार्जित किया। समंदसी की संतान होने और समुद्र यात्रा करने से इनके वंशज समदरिया कहलाये। इस प्रकार समदड़िया गौत्र प्रसिद्ध हुआ।

समदड़िया मेहता सुकनमलजी मोहनमलजी का खानदान, जोधपुर

इस परिवार के पूर्वज समदोजी के पौत्र कोजूरामजी, जब राव जोधाजी ने जोधपुर बसाया, तब जोधपुर आये। इनको होशियार समझकर राव जोधाजी ने अपना दीवान बनाया। इनके प्रपौत्र मेहता समरथजी को राव मालदेवजी अपने साथ गुजरात ले गये थे। इनका पुत्र अकबर के साथ वाली लड़ाई में मारा

गया। इनके पौत्र भगवानदासजी, महाराजा जसवंतसिंहजी के साथ काबुल गये थे। भगवानदासजी के पौत्र गोकुलदासजी ने महाराजा अजीतसिंहजी की विखे के समय बहुत सेवा की। अतः इनको सांगासनी नामक ग्राम जागीरी में मिला। संवत् १७६९ में इनको महाराजा अजीतसिंहजी से दीवानगी का सम्मान इनायत हुआ। पुनः इन्होंने महाराजा अभयसिंहजी के समय में संवत् १७८१ में दीवानगी का कार्य किया। इनके प्रपौत्र खेमकरणजी मेड़ते के कोतवाल थे और महाराजा विजयसिंहजी के साथ नागोर के घेरे में सम्मिलित थे। इनके पुत्र मेहता मूलचंदजी तथा मीठालालजी महाराजा भीवसिंहजी तथा मानसिंहजी के समय में मारवाड़ में लम्बे समय तक कई परगनों के हाकिम तथा कोतवाल रहे। आप दोनों बंधुओं को सरकार ने बरसोंद देकर सम्मानित किया था।

मेहता मूलचन्दजी के पुत्र मोतीचन्दजी तथा पौत्र रामकरणजी हुए। मेहता रामकरणजी भी हुकूमातें करते रहे। इनके कानमलजी तथा चांदमलजी नामक २ पुत्र हुए। कानमलजी को एक हजार रुपया साल बरसोंद मिलती थी। मेहता चांदमलजी के बड़े पुत्र मानमलजी संवत् १९०२ में मेड़ते के कोतवाल हुए। इनके छोटे भ्राता जवाहरमलजी थे। मेहता जवाहरमलजी के सुकनमलजी तथा मोहनमलजी नामक २ पुत्र हैं। इनमें मेहता सुकनमलजी, मेहता मानमलजी के नाम पर दत्तक गये हैं। मेहता सुकनमलजी के पुत्र सोहनमलजी बी० ए० एल० एल० बी० में पढ़ रहे हैं।

सेठ भेरुबक्षजी समदरिया का परिवार, मद्रास

(सुखलालजी, बहादुरमलजी कानमलजी समदरिया)

इस खानदान के मालिक ओसवाल जाति के समन्दरिया गौत्रीय श्वेताम्बर जैन समाज के मन्दिर आम्नाय को मानने वाले सज्जन हैं। इस परिवार का मूल निवासस्थान नागौर का है। इस खानदान में भेरूबक्षजी समन्दरिया हुए। आप अपने जीवनकाल में नागौर में ही रहे, आप नागौर में बड़े धर्म्मात्मा पुरुष हो गये हैं। आपका जन्म संवत् १८९२ का था तथा स्वर्गवास संवत् १९४३ में हुआ।

आपके तीन हुए जिनके नाम क्रम से श्री सुखलालजी, बहादुरमलजी तथा कानमलजी हैं। श्री युत सुखलालजी का जन्म सम्वत् १९२३ में हुआ। आप बड़े प्रतिभाशाली और बुद्धिमान पुरुष हैं। आप संवत् १९४८ में मद्रास आये और यहाँ आकर आपने अपनी बैङ्किग की एक फर्म स्थापित की। आपकी बुद्धिमानी और दूरदर्शिता से आपकी फर्म खूब तरक्की करती गई यहाँ तक कि इस समय यहाँ की नामी फर्मों में से यह एक है। श्री सुखलालजी समन्दरिया अपनी जाति की विधवाओं को प्रतिमास बहुत सा रुपया सहायतार्थ देते हैं। मद्रास साहुकार पेठ के मन्दिर की प्रतिष्ठा आपने बहुत उद्योग से पैसा एकत्रित कर करवाई। एवं आपने भी उसमें काफी द्रव्य प्रदान किया है। मद्रास की दादावाड़ी जो पहले एक जङ्गल के रूप में थी, आपके ही प्रयत्न से वह अब बहुत ही रमणीक हो गई है। आपने अपने पास से या लोगों से इकट्ठा करके करीब साठ सत्तर हजार रुपया इसमें लगाया। सार्वजनिक तथा धार्मिक कामों में आप बहुत दिलचस्पी से भाग लेते हैं। पंचायती तथा जैन भाइयों के झगड़ों को निपटाने में आप अपने समय का बहुत सा भाग देते हैं। आपके इस समय नौ पुत्र हैं जिनके नाम क्रमशः डूँगरचंदजी



स्व० सेठ गौड़ीदासजी कांसटिया, भोपाल.



सेठ सुखलालजी समदरिया, मद्रास.





[illegible]लालजी समदरिया, मद्रास.

जीवनचन्दजी, मदनचन्दजी, केवलचन्दजी, सखरूपचन्दजी, लालचन्दजी, मोतीचन्दजी, पदमचन्दजी तथा प्रेमचन्दजी हैं ।

श्रीयुत बहादुरमलजी का जन्म संवत् १९३४ में हुआ। आप संवत् १९५१ में मद्रास आये और अपने बड़े भाई सुखलालजी के साथ २ व्यवसाय करने लगे आपके इस समय दो पुत्र हैं जिनके नाम सागरमलजी तथा समरथमलजी हैं।

श्री कानमलजी का जन्म संवत् १९४१ में हुआ। आप संवत् १९५५ में मद्रास आये। आपके इस समय चार पुत्र हैं जिनके नाम सरदारमलजी, लक्ष्मीमलजी, कृपाचन्दजी और प्रकाशमलजी हैं।

इस समय आप तीनों भाइयों की स्वतंत्र तीन दुकाने मद्रास में हैं। आप तीनों भाइयों की तरफ से नागौर स्टेशन पर एक धर्मशाला बनी है। इसी के अन्दर एक मंदिर भी बनवाया गया है।

मुनीम भंवरलालजी समदरिया मेहता, उज्जैन

इस परिवार के सज्जनों का मूल निवासस्थान मेड़ता (जोधपुर) का था। वहीं से सेठ मेहकरन जी अपने पुत्र शिवकरनजी और पूसकरनजी के साथ उज्जैन आये। यहाँ आपने दस्तकारी का काम प्रारंभ किया। शिवकरनजी के कोई संतान नहीं हुई। पूसकरनजी के कस्तूरचन्दजी और उनके सीतारामजी धूलचन्दजी घेवरमलजी और रतनलालजी नामक चार पुत्र हुए।

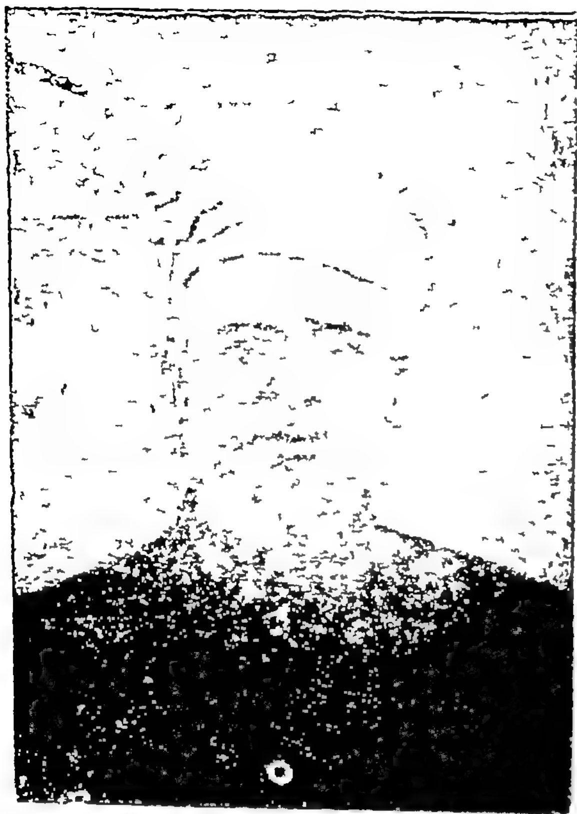
सीतारामजी बड़े समझदार वयोवृद्ध पुरुष हैं। आजकल आप मन्नालाल भागीरथ की उज्जैन फर्म पर केशियर हैं शेष तीनों भाई इन्दौर ही में व्योपार करते हैं। सीतारामजी के पाँच पुत्र हैं जिनके नाम क्रमशः भंवरलालजी, पन्नालालजी, हीरालालजी, माणकलालजी और चांदमलजी हैं। भँवरलालजी, रा० ब० सेठ तिलोकचन्द कल्याणमल की उज्जैन वाली फर्म पर मुनीम हैं आपके नरेन्द्रकुमारसिंहजी नामक एक पुत्र हैं।

खांटेड़

श्री कनीरामजी खांटेड़ का परिवार बगड़ी

(सेठ सागरमल चुन्नीलाल ट्रिवल्लूर)

इस परिवार के मालिकों का मूल निवासस्थान बगड़ी (मारवाड़) का है। आप श्वेताम्बर जैन समाज के मन्दिर आम्नाय को मानने वाले खांटेड़ गौत्रीय सज्जन हैं। इस परिवार में श्री कनीरामजी हुए जिनके दो पुत्र मगनीरामजी तथा माणिकचन्दजी हुए। सेठ मगनीरामजी के दो पुत्र हुए जिनके नाम श्रीयुत हंसराजजी और मुलतानमलजी था।



सेठ सागरमलजी खांटेड़ (हंसराज सागरमल) ट्रिवल्लूर,



सेठ चुन्नीलालजी खांटेड़ (हंसराज सागरमल) ट्रिवल्लूर.



सेठ गुलाबचन्दजी खाटेड़, कांजीवरम् (मद्रास)

वैशाख सुदी ५ को इस मन्दिर की प्रतिष्ठा हुई जिसमें ध्वजादण्ड और कलश चढ़ाने में आपके पैंतीस हजार रुपये खर्च हुए। धर्म प्रेम ही की तरह आपका विद्याप्रेम भी सराहनीय है। शिवपुरी बोर्डिङ्ग, जोधपुर सरदार स्कूल, ओशियां बोर्डिंग हाउस, ब्यावर जैन गुरुकुल इत्यादि संस्थाओं में आपने हजारों रुपयों की मदद पहुँचाई। आपने ओशियां गुरुकुल के १३५ छात्रों तथा उनके अध्यापकों को ५ हजार रुपये व्यय करके श्री शत्रुंजयजी तथा आबूजी की यात्रा कराई और स्वयं आप साथ गये। अपने जीवन में आपने अभी तक करीब डेढ़ लाख रुपया दान धर्म में खर्च किया। बगड़ी के जैन समाज में यह खानदान बहुत ही अग्रगण्य और दानवीर है।

सेठ गुलाबचन्दजी खांटेड़—आपका जन्म संवत् १९५१ में हुआ। आप भी बड़े सज्जन उदार तथा नवीन विचारों के सज्जन हैं। आपके हृदय में देश-प्रेम बहुत हैं। आप शुद्ध खादी के वस्त्र धारण करते हैं। आपकी दुकान कंजीवरम् (मद्रास) में हंसराज गुलाबचंद खांटेड़ के नाम से बैंकिंग का व्यापार करती है तथा अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है। आपके सात पुत्र हैं जिनके नाम अभैराजजी, सम्पतराजजी अमृतराजजी, सोहनराजजी, सुदर्शनमलजी, रणजीतमलजी, तथा पृथ्वीराजजी हैं।

श्रीयुत गणेशमलजी का जन्म संवत् १९५९ का है। आप भी बड़े योग्य धर्मप्रेमी तथा अपटूडेट विचारों के सज्जन हैं। आपके सामाजिक विचार बहुत सुधरे हुए हैं। आपके दो पुत्र है जिनके नाम श्री मिट्ठूलालजी तथा जवाहिरलालजी हैं। सेठ मुलतानमलजी के जसवंतराजजी तथा मानमलजी नामक दो पुत्र हुए आपका जन्म संवत् १९४५ में तथा संवत् १९५१ में हुआ। आप दोनों भ्राताओं का कारबार अलग २ होता है। सेठ जसवन्तराजजी पुनमलि (मद्रास) में मुलतानमल जावंतराज के नाम से बैंकिंग व्यापार करते हैं। आपके मांगीलालजी, विजयराजजी तथा मदनलालजी नामक तीन पुत्र है। इसी प्रकार सेठ मानमलजी खांटेड़ का पुनमलि में मुलतानमल मानमल के नाम से कारबार होता है आपके पारसमलजी, शांतिलालजी तथा नेमीचन्दजी नामक तीन पुत्र हैं। यह कुटुम्ब भी पुनमलि में अच्छा प्रतिष्ठित माना जाता है।

सेठ लखमीचंद पूनमचंद खांटेड़, बाली (गोड़वाड़)

इस परिवार के पूर्वज खांगड़ी जागीरदार के कामदार थे, वहाँ के ठाकुर से अनबन हो जाने के कारण इन्होंने संवत् १९०५ के लगभग अपना निवास बाली में बनाया। यहां से सेठ मनरूपजी संवत् १९३० में पूना गये, तथा यहाँ सर्विस की। वहाँ से आप मोरा बन्दर (बम्बई के पास) गये, तथा यहाँ दुकान की। जब बृटिश सरकार ने यहाँ आंगरे सरदार की मिल्कियत नीलाम की, उस समय आपने एक पारसी गृहस्थ की मदद से उसे खरीदा, इसमें आपको बहुत लाभ हुआ। आपके छोटे भाई रूपजी भी व्यापार में सहयोग देते थे। सेठ मनरूपजी के टेकचन्दजी तथा रूपजी के बुधमलजी नामक पुत्र हुए। सेठ टेकचन्दजी नामांकित व्यक्ति हुए। आपने बाली में कुआ तथा अवाला बनवाया। आपके पुत्र पूनमचन्दजी तथा बुधमलजी के पुत्र लक्ष्मीचन्दजी हुए। सेठ टेकचन्दजी संवत् १९४८ में स्वर्गवासी हुए।

सेठ पूनमचन्दजी तथा लक्ष्मीचन्दजी—आपने संवत् १९५२ में केसरियाजी का एक बड़ा संघ निकाला, इसमें आपने ६० हजार रुपये व्यय किये। संवत् १९५४ में मारवाड़ में अनाज महंगा हुआ, तब इन भाइयों ने अनाज खरीद कर पौने मूल्य में गरीब जनता को बिक्री किया, इस सेवा के उपलक्ष्य में जोधपुर दरबार महाराजा सरदारसिंहजी ने सिरोपाव, कड़ा, दुशाला आदि इनायत किया। इन बन्धुओं ने बहुत से कुए खुदवाये, आप बन्धु बाली के नामांकित व्यक्ति हुए। आपका खानदान यहाँ "सेठ" के नाम से पुकारा जाता है। आप दोनों बन्धु क्रमशः संवत् १९७३ तथा १९७६ में स्वर्गवासी हुए। सेठ पूनमचन्दजी के पुखराजजी, भागचन्दजी, रतनचन्दजी तथा सन्तोषचन्दजी नामक चार पुत्र हुए तथा सेठ लखमीचन्दजी के कपूरचन्दजी, केसरीचन्दजी तथा बख्तावरचन्दजी नामक तीन पुत्र हुए। इनमें केसरीचन्दजी तथा भागन्दचजी स्वर्गवासी हो गये हैं। शेष सब विद्यमान हैं। आप बन्धुओं का "लखमीचन्द पूनमचन्द" के नाम से मोरा बन्दर में जमीदारी तथा बैंकिंग का कारवार होता है। पुखराजजी मोरा बन्दर की म्युनिसिपल कमेटी के मेम्बर हैं तथा सन्तोषचन्दजी ने गत वर्ष बी० एस० सी० का इम्तिहान दिया है। आप गोड़वाड़ के प्रथम बी० एस० सी० हैं। यह परिवार गोड़वाड़ के ओसवाल समाज में नामांकित माना जाता है।

मम्बइया

मम्बइया परिवार, अजमेर

हालांकि मम्बइया परिवार का आज अजमेर शहर में कुछ भी कारवार नहीं है, लेकिन उनके द्वारा बनाई हुई लाखों रुपयों की लागत की हवेलियां, नोहरे, हजारों रुपयों की बनी हुई दादाबाड़ी में छतरियां इनके गत गौरव का पता दे रही है। संवत् १९२९ में लगभग उनका काम कमजोर हुआ, उसके पूर्व १२०-१२५ वर्षों से वे अजमेर शहर के नामी गरामी करोड़पति श्रीमन्त माने जाते थे। उनका बैंकिंग व्यवहार अजमेर में मूलचन्द धनरूपमल के नाम से और बाहर अनोपचन्द मूलचन्द के नाम से चलता था। अजमेर, रतलाम, बदनोर, उज्जैन, छबड़ा, बम्बई कलकत्ता, टोंक, झालरापाटन, जयपुर, कोटा वगैरह स्थानों में आपकी दुकानें थीं। इस परिवार के आगमन, व्यवसाय के आरम्भ, उन्नति व सार्वजनिक कामों का सिलसिलेवार कुछ भी वृत्त मालूम नहीं होता है। कहा जाता है कि संवत् १८६५ में इनका आगमन अजमेर हुआ और मरहठा सरदारों व फौजों के साथ सम्बन्ध रखने से इनका अभ्युदय हुआ। मम्बइया अनोपचन्दजी के पुत्र मूलचन्दजी के समय में व्यवसाय का आरम्भ होना माना जाता है। मूलचन्दजी के पुत्र धनरूपमलजी के समय में इनके व्यापार और जाहोजलाली की बहुत उन्नति हुई। अजमेर में पूज्य दादा जिनदत्तसूरिजी की समाधि दादाबाड़ी में इस परिवार की छतरियाँ बनी हुई हैं। अजमेर की धर्म संस्थाओं के प्रबन्ध का भार भी आप ही के जिम्मे था।

मम्बइया धनरूपमलजी के पुत्र बाघमलजी हुए और बाघमलजी के नाम पर राजमलजी दत्तक आये। राजमलजी और उनके पुत्र हिम्मतमलजी के समय में इनका काम कमजोर हुआ। हिम्मतमलजी



बाबू गोविन्दचंदजी सुचिन्ती, बिहारशरीफ़.



बाबू धन्नूलालजी सुचिन्ती, बिहारशरीफ.



रायसाहब लक्ष्मीचंदजी सुचिन्ती, बिहारशरीफ.



बाबू केशरीचंदजी सुचिन्ती, बिहारशरीफ.

का विवाह यहाँ के लोढ़ा परिवार में हुआ था। राजमलजी तक कोटा अथवा पाटन में उनकी १५००) सालियाना की जागीर थी। सम्भवया राजमलजी संवत् १९६० तक अजमेर रहे यहाँ से किशनगढ़ गये। राजमलजी का लगभग १० साल पूर्व शरीरावसान हुआ। हिम्मतमलजी के नाम पर प्रतापमलजी दत्तक आये। इस समय इस परिवार के कोई व्यक्ति छीपा-बड़ौद में निवास करते हैं, इनका वहाँ जागीरी का एक गाँव भी था, वह राजमलजी तक रहा। जब उनकी हवेलियां बिकीं तब जबलपुर वालों ने व लोढ़ों ने ली, आज भी भिन्न २ व्यक्तियों के ताबे में उनकी इमारतें व नोहरे उनके नामकी याद दिला रही हैं।

सचेती, सुचिन्ती

सुचिन्ती गौत्र की उत्पत्ति—कहते हैं कि देहली के सोनीगरा चौहान राजा के पुत्र बोहित्थ कुमार को सांप ने डस लिया, जिससे उनकी मृत्यु हो गई। जब उसके शव को दाह संस्कार के लिये ले गये, तो राह में जैनाचार्य्य श्री वर्द्धमान सुरिजी अपने पांचसौ शिष्यों के साथ तपस्या कर रहे थे। आचार्य्य ने राजा की प्रार्थना से उसके कुमार को सचेत किया, इससे राजा ने जैन धर्म स्वीकार किया। इनके पुत्र को संवत् १०२६ में जैनाचार्य ने सचेत किया, इसलिये आगे चलकर उनके वंशज वाले सचेती या सुचिंती नाम से विख्यात हुए।

बिहार का सुचिन्ती परिवार

इस परिवार के लोगों का मूल निवासस्थान बीकानेर का है आप मन्दिर आम्नाय के उपासक हैं। इस परिवार में बाबू महताबचंदजी हुए, आपके कोई सन्तान न होने से आपके नाम पर मनेर निवासी मालकश गौत्रीय बाबू रतनचन्दजी को दत्तक लिया गया। बाबू रतनचंदजी के हीरानन्दजी और गोविन्दचन्दजी नामक दो पुत्र हुए। इनमें बाबू गोविन्दचन्दजी बड़े नामाङ्कित और प्रतापी व्यक्ति हुए। आपके हाथों में इस खानदान के व्यापार और जमीदारी की बहुत तरक्की हुई, आपका धर्म प्रेम भी बहुत बढ़ा चढ़ा था। संवत् १९६५ की अगहन सुदी १४ को अपने मकान पर राज गिरी के केस के सम्बन्ध में गवाह देते २ अचानक हार्टफेल से आपका देहान्त हो गया। आपके बाबू धन्नूलालजी, रा० सा० बाबू लक्ष्मीचंदजी और बाबू केशरीचंदजी नामक तीनपुत्र हुए।

बा० धन्नूलालजी—आपका जन्म संवत् १९४० में हुआ। आप श्री पांवापुरी, कुण्डलपुर, गुणावा बिहार आदि स्थानों के श्वे० जैन मन्दिरों के मैनेजर हैं। पांवापुरी के जल मन्दिर का जीर्णोद्धार और वहाँ के तालाब का पक्कोद्धार भी आप ही के समय में हुआ। इसके सिवाय पांवापुरी के गाँव मन्दिर का विस्तार अनेकानेक धर्मशालाओं का निर्माण आप ही के समय में हुआ। आपके मैनेजर शिप में इस तीर्थ की रोनक में बड़ी वृद्धि हुई। आपके बाबू जवाहरलालजी और ज्ञानचन्दजी नामक दो पुत्र हैं। बाबू जवाहरलालजी के विमलचन्दजी और शान्तिचन्दजी नामक दो पुत्र हैं।

रा० सा० बाबू लक्ष्मीचन्दजी—आपका जन्म संवत् १९४४ में हुआ। आप बिहार के ऑनरेरी

मजिस्ट्रेट, लोकलबोर्ड के चेअरमेन और डिस्ट्रिक्टबोर्ड के मेम्बर हैं। गवर्नमेण्ट से १९३० में आपको राय साहब की उपाधि प्राप्त हुई। आपके इस समय छः पुत्र हैं। आपके प्रथम पुत्र बाबू इन्द्रचन्दजी बी० ए० बी० एल० हैं। आप यहां पर वकालात करते हैं। इनसे छोटे बाबू विजयचन्दजी, श्रीचन्दजी प्रेमचन्दजी और हरकचन्दजी हैं। बाबू इन्द्रचन्दजी के दो पुत्र हैं। जिनमें बड़े का नाम रिखवचन्दजी हैं।

बाबू केशरीचन्दजी—आपका जन्म संवत् १९४६ में हुआ। आपके इस समय दो पुत्र हैं जिनके नाम क्रम से बाबू सौभागचन्दजी और कपूरचन्दजी हैं। बिहार शरीफ में यह परिवार बहुत प्रसिद्ध और प्रतिष्ठित हैं। यहाँ पर आपकी बहुत बड़ी जमींदारी है।

सेठ गुलाबचन्द हीराचन्द सचेती, अजमेर

इस परिवार का मूल निवास स्थान मेड़ता (जोधपुर स्टेट) में है। इस परिवार के पूर्वज सेठ जयचंदजी तथा उनके पुत्र अभयराजजी और पौत्र लक्ष्मीचंदजी वहीं निवास करते रहे। सेठ लक्ष्मीचंद जी के रूपचंदजी तथा वृद्धिचन्दजी नामक २ पुत्र हुए। वहाँ से सेठ रूपचन्दजी व्यापार के लिये अजमेर तथा वृद्धिचन्द गवालियर गये।

सेठ वृद्धिचन्दजी सचेती—आपकी योग्यता से प्रसन्न होकर गवालियर स्टेट ने आपको अपनी ट्रेझरी का खजांची बनाया। सन् १८५७ के गदर में आपने खजाने की ईमानदारी पूर्वक रक्षा की। संवत् १९१५ में आपने गवालियर से श्री सिद्धाचलजी का संघ निकाला। संवत् १९२४ में आपने खजांची के पद से इस्तीफा दिया। इस कार्य्य के साथ २ आप अपना साहुकारी व्यापार भी करते थे। आपकी राज दरबार तथा व्यापारिक वर्ग में अच्छी प्रतिष्ठा थी। आपने गवालियर मंदिर में संगमरमर के अष्टापदजी व नंदेश्वरजी बनवाये, आपने फलोदी पार्श्वनाथ नामक प्रसिद्ध तीर्थ में मंदिर के चारों ओर विशाल परकोटा बनवाया। आपके नाम पर गुलाबचन्दजी सचेती उदयपुर से दत्तक लाये गये।

सेठ गुलाबचन्दजी सचेती—आप अपने पिताजी के साथ तमाम धार्मिक कामों में सहयोग देते रहे। संवत् १९४३ में आपका स्वर्गवास हुआ। आपके पुत्र सेठ हीराचन्दजी सचेती हुए।

सेठ हीराचन्दजी सचेती—आपके पिताजी ने संभवनाथजी व आदीश्वर के मंदिर का व दादावाड़ी वगेरा का प्रबंध भार अपने ऊपर लिया। तब से आप लोग इन संस्थाओं के कार्य्य को भली प्रकार संचालित कर रहे हैं। आप इस समय ओसवाल हाई स्कूल के प्रेसिडेंट हैं। इसके स्थापन में आपका उत्तम सहयोग रहा है। स्थानीय ओसवाल औषधालय के भी आप प्रेसिडेंट हैं। इसके अलावा आप श्वे० जै० कान्फ्रेंस के अजमेर मेरवाड़ा प्रान्त के सेक्रेटरी तथा स्टेंडिंग कमेटी के मेम्बर हैं। संवत् १९६४ में आपने अजमेर स्टेशन के सम्मुख एक सराय बनवाई है, इस समय आपके ५ पुत्र हैं जिनके नाम बाबू रतनचन्दजी जतनचन्दजी, दौलतचन्दजी, कुशलचन्दजी, और इन्द्रचन्दजी हैं। आप सब बंधु सुशील, विनम्र तथा अपने पिता के पूर्ण आज्ञाधारक हैं। सचेती रतनचन्दजी का जन्म संवत् १९६५ में हुआ। आप फर्म के बेङ्किग व्यापार को सम्हालते हैं। आपसे छोटे जतनचन्दजी का जन्म १९६९ में हुआ। आपने गत वर्ष आगरे से बी० कॉम की परीक्षा पास की है। बाबू रतनचन्दजी के नजरचन्द्र तथा इन्द्रचन्द्र नामक २ पुत्र हैं।



स्व० सेठ बिरदीचन्दजी सचेती, अजमेर



स्व० सेठ गुलाबचन्दजी सचेती, अजमेर.



सेठ हीराचंदजी सचेती, अजमेर.



सेठ केवलचन्दजी सचेती, नीमाज.



स्व० सेठ मोतीलालजी सचेती, लोणार (वरार)



मेहता विजयसिंहजी खजाची, अमीन भानपुरा (पेज न० १९६)



सेठ हेमराजजी सचेती, लोणार (वरार)



लाला रतनचंदजी जैन, अम्बाला सिटी.

सेठ हणुतमल मोतीलाल संचेती, लोणार

यह परिवार बवायचा (किशनगढ़ के समीप) का निवासी है। इस परिवार के पूर्वज सेठ रघुनाथमलजी लगभग संवत् १९०५ में व्यापार के लिये लोनार आये। आपके हणुतमलजी, हीरालालजी तथा चुन्नीलालजी नामक ३ पुत्र हुए। संवत् १९५३ के करीब इन तीनों भाइयों का व्यापार अलग अलग हुआ।

सेठ हणुतमलजी का परिवार—आपका स्वर्गवास संवत् १९३७ में होगया। आपके मोतीलाल जी तथा पूनमचन्दजी नामक दो पुत्र हुए, इनमें पूनमचन्दजी, हीरालालजी के नाम पर दत्तक गये।

सेठ मोतीलालजी संचेती—आप इस परिवार में बहुत प्रतापी पुरुष हुए। आपका जन्म संवत् १९२७ में हुआ। आप आस पास की पंचायती में नामांकित पुरुष तथा लोनार की जनता के प्रिय व्यक्ति थे। संवत् १९८७ में बुलढाना डिस्ट्रिक्ट के कुलमी मुसलमान तथा मरहठा लोगों ने मिल कर मारवाड़ी जाति के विरुद्ध विद्रोह उठाया। तथा उन्होंने २७ गांवों में मारवाड़ियों के घर लूटे, बहियें जला दीं, तथा घरों में आग लगा दी। इस प्रकार उनका दल उत्तरोत्तर बढ़ता गया। जब इस दल ने बढ़ते २ मारवाड़ियों की सबसे बढ़ी और धनिक बस्ती लोनार को लूटने का नोटिस निकाला। तब लोनार की मारवाड़ी जनता ने बुलढाना डिस्ट्रिक्ट के कमिश्नर व आफीसरों से अपने बचाव की प्रार्थना की। लेकिन उनकी ओर से जल्दी कोई उचित प्रबन्ध न होते देख सेठ मोतीलालजी संचेती ने सब लोगों को अपनी रक्षा स्वयं करने के लिये उत्साहित किया, आपने ३०० सशस्त्र व्यक्ति अपने मोहल्लों की रक्षार्थ तयार किये, तथा तमाम पुरुष एवं स्त्रियों को हिम्मत पूर्वक हमले का मुस्तेदी से सामना करने के लिये ढाडस बंधाया। जब ता० २३। १२। ३८ को लूटने वाली जनता का दल लोनार के समीप पहुँचा, तो उन्हें पता लगा कि इन लोगों ने पक्का जाप्ता कर रक्खा है, जिससे वे लोग वापस होगये, पीछे से सरकार की भी मदद पहुँच गई जिससे यह बढ़ती हुई अग्नि, जो सारे बरार में फैलने वाली थी, यहीं शांत होगई।

लोनार के "धारा" नामक अविराम जलप्रपात पर हिन्दू स्त्रियों तथा पुरुषों के स्नानादि धा कृत्यों में जब मुस्लिम जनता अनुचित हस्तक्षेप करने लगी, उस समय आपने ३ वर्षों तक अपने व्यय से धारा नामक स्थान पर योग्य अधिकार पाने के लिए लड़ाई लड़ी। इसी बीच बाजे का मामला खड़ा हुआ। इन तमाम बातों से चन्द मुसलमानों ने आप पर हमला किया, जिससे आपके सिरमें २१ घाव लगे। उस समय हजारों आदमी आपके प्रति हमदर्दी तथा प्रेम प्रदर्शित करने के लिये अस्पताल में एकत्रित होगये, तथा उन्होंने दंगा करने की ठानली। लेकिन आपने उन्हें सांत्वना देकर रोका। इस प्रकार जब हिन्दू मुसलमानों की यह आपसी रंजिश बहुत बढ़ गई, तब सरकार ने बीच में पड़ कर 'धारा' तथा बाजे के प्रश्न को सुलझाया। दंगे के बाद सवा साल तक सेठ मोतीलालजी बीमार रहे। और मिती अषाढ़ बदी ८ संवत् १९८९ को इस नरवीर का स्वर्गवास हुआ। आपके सम्मान स्वरूप लोनार का बाजार बन्द रक्खा गया था। महाराष्ट्र, प्रजापत्र व केशरी नामक पत्रों ने आपके स्वर्गवास के समाचार लम्बे कालमों में प्रकाशित किये थे। सेठ मोतीलालजी लोनार के तमाम सार्वजनिक कामों में उदारता पूर्वक भाग लेते थे। आपने 'धार' के समीप एक धर्मशाला बनवाई। स्थानीय अठवाड़े बाजार में

दो तीन हजार रुपये खर्च कर पानी के पम्प लगाये, राममन्दिर तथा धारातीर्थ में बहुतसी सहायताएं दी। आप शिवपुर जैनतीर्थ की व्यवस्थापक कमेटी के मेम्बर थे। इसी तरह के प्रतिष्ठापूर्ण कार्य्य आजीवन करते रहे। आपने ही लोनार में सर्व प्रथम जिनिंग फेक्टरी खोली आपके अखेचन्दजी, उत्तमचन्दजी, लखमीचन्दजी, तथा गेंदचन्दजी नामक ४ पुत्र विद्यमान हैं। इस समय आप चारों ही भाई फर्म के व्यापार का उत्तमता से संचालन कर रहे हैं। आपका परिवार लोनार तथा आस पास के ओसवाल समाज में नामांकित माना जाता है।

सेठ अखेचंदजी—आपका जन्म संवत् १९५० में हुआ। आपके यहाँ "हणुतमल मोतीलाल के नाम से बैङ्किंग, सराफी, कपड़ा का व्यापार तथा जिनिंग फेक्टरी का कार्य्य होता है। लोनार में आपकी दुकान मातवर है। सेठ उत्तमचन्दजी का जन्म संवत् १९६१ में लखमीचन्दजी का जन्म संवत् १९६५ में तथा गेंदचन्दजी का जन्म सवत् १९६८ में हुआ। गेंदचन्दजी ने एफ० ए० तक शिक्षा पाई। आपने हनुमान व्यायाम शाला का स्थापन किया। आप उत्साही युवक हैं। सेट अखेचन्दजी के पुत्र नथमल जी तथा रतनचन्दजी पढ़ते हैं। और उत्तमचन्दजी के पुत्र मदनचन्दजी बालक हैं।

सेठ पूनमचन्दजी संचेती का स्वर्गवास अपने बड़े भ्राता मोतीलालजी के ८ मास बाद हुआ आपके पुत्र माणकचन्दजी का जन्म संवत् १९५६ में हुआ। आप "हीरालाल पूनमचन्द" के नाम से व्यापार करते हैं। आपके कपूरचन्दजी, तेजमल तथा पारसमल नामक ३ पुत्र हैं। सेठ चुन्नीलालजी के पुत्र त्रिवकमलजी विद्यमान हैं। आपके पुत्र खुशालचन्दजी ने दंगे के समय दंगाइयों को पकड़वाने में पुलिस को बहुत इमदाद दी थी। आपके छोटे भाई गणेशलालजी, मिश्रीलालजी तथा चम्पालालजी हैं।

सेठ थानमल चंदनमल संचेती, चिगंनपेठ (मद्रास)

इस परिवार के मालिकों का मूल निवास स्थान डूंडला (मारवाड़) का है। आप श्वेताम्बर जैन समाज के बाइस सम्प्रदाय को मानने वाले सज्जन हैं। सबसे पहिले इस परिवार के सेठ शेषमलजी "मेसर्स पूनमचन्द श्रीचन्द" के साझे में पूना में व्यापार करते थे। आप संवत् १९७६ की जेठ सुदी १ को स्वर्गवासी हुए। आपके चार भाई और थे जिनके नाम भीकमचन्दजी, प्रतापमलजी, थानमलजी तथा जेवंतराजजी थे। सेठ शेषमलजी के स्वर्गवास होजाने के बाद संवत् १९६० में थानमलजी ने चिंगनपेठ में "शेषमल थानमल" के नाम से दुकान स्थापित की। श्री शेषमलजी के पन्नालालजी, घेवरचन्दजी तथा मिश्रीमलजी नामक तीन पुत्र हुए जिनमें से मिश्रीमलजी, भीकमचन्दजी के यहाँ दत्तक रख दिये गये। प्रतापमलजी के हीराचन्दजी तथा हस्तीमलजी नामक दो पुत्र हुए। हीराचन्दजी के भंवरीलालजी तथा रिखबचन्द्रजी नामक दो पुत्र हुए। संवत् १९९८ में शेषमलजी तथा थानमलजी दोनों भाई अलग २ हो गये। शेषमलजी के पुत्र पन्नालालजी "मेसर्स शेषमल पन्नालाल" के नाम से अलग स्वतंत्र दुकान कांजीवरम् में करते हैं।

सेठ थानमलजी की फर्म इस समय चिंगनपेठ में है। आप बड़े सज्जन हैं। तथा अपने जाति भाइयों का अच्छा सत्कार करते रहते हैं। आपकी यहां की पंच पंचापतियों की अच्छी प्रतिष्ठा है।

बाबू जवाहरलालजी सचेती, बिहारशरीफ़.

सेठ इन्द्रचन्दजी सचेती, मोमासर.

सेठ गोविन्दरामजी सचेती (सुगनमल गोविन्दराम) मोमासर

यह फर्म चिगंनपेठ में मातबर और प्रतिष्ठित मानी जाती है । आपके पुत्र चन्दनमलजी बाल्यकाल में ही स्वर्गवासी होगये। इस फर्म की ओर से दान धर्म और सार्वजनिक कामों में सहायताएँ दी जाती है।

सेठ बालचन्दजी संचेती का परिवार, मोमासर

करीब २५० वर्ष पूर्व इस परिवार के पूर्व पुरुष डिगरस नामक स्थान से चलकर मोमासर नामक स्थान पर आये। आगे चलकर इनके वंश में कुंभराजजी हुए। कुंभराजजी के रघुनाथजी, ताजसिंहजी, शेरसिंहजी, नथमलजी और सतीदासजी नामक पाँच पुत्र हुए। आप भाइयों ने सम्वत् १९०८ में मेसर्स सतीदास उम्मेदमल के नाम से कलकत्ते में फर्म स्थापित किया। आप लोगों की व्यापार कुशलता से फर्म चल निकली और पूर्णिया, इस्लामपुर, पटनागोला आदि स्थानों पर आपकी शाखाएँ कायम हो गई। संवत् १९५१ में आप सब भाई अलग २ हो गये।

सेठ नथमलजी के पुत्र बालचन्दजी ने अलग होते ही बालचन्द्र इन्द्रचन्द्र के नाम से व्यापार करना प्रारम्भ किया। इसमें आपको बहुत सफलता हुई। आपका मोमासर की पंच पंचायती में अच्छा सम्मान था। आपके इन्द्रचन्दजी, डायमलजी, सुगनमलजी और हीरालालजी नामक चार पुत्र हैं। आजकल आप चारों भाई अलग २ हो गये हैं।

सेठ इन्द्रचन्द्रजी "बालचन्द इन्द्रचन्द" के नाम से व्यापार करते हैं। आप बुद्धिमान् एवम् समझदार सज्जन हैं। आपके हाथों से इस फर्म की और भी तरक्की हुई है। आप धर्म में बड़े पक्के हैं। आपके इस समय डालचन्दजी और पूनमचन्दजी नामक दो पुत्र हैं। सेठ डायमलजी और सुगनमलजी दोनों भाई भी बड़े योग्य थे मगर आपका थोड़ी ही उम्र में स्वर्गवास हो गया। डायमलजी के कोई पुत्र न था और सुगनमलजी के गोविन्दरामजी एवं केवलचन्दजी नामक दो पुत्र हैं। गोविन्दरामजी सेठ डायमलजी के यहाँ दत्तक गये हैं। वर्तमान में आप दोनों ही भाई सुगनमल गोविन्दराम के नाम से चलानी, जूट और जमीदारी का काम करते हैं। आपकी दुकान का पता ४२ आर्मीनियन स्ट्रीट है। आप लोगों ने मोमासर में अंग्रेजी स्कूल के लिये मकान बनवाकर सरकार को दिया है। यह परिवार जैन तेरापंथी सम्प्रदाय का अनुयायी है।

सेठ रूपचन्द छगनीराम संचेती, वैजापुर (निजाम)

इस परिवार का मूल निवास डाबरा (जोधपुर स्टेट) है। आप स्थानकवासी आम्नाय के सज्जन हैं। देश से लगभग १७५ वर्ष पूर्व इस परिवार के पूर्वज व्यापार के लिये निजाम स्टेट के वैजापुर नामक स्थान में आये। यहाँ आने के बाद तीसरी पीढ़ी में सेठ जयरामजी संचेती हुए। आपके हाथों से इस परिवार के व्यापार तथा सम्मान को बहुत तरक्की मिली। आपने आसपास के ओसवाल समाज में अच्छा नाम पाया।

सेठ जयरामदासजी के धनीरामजी, बच्छराजजी तथा किशनदासजी नामक ३ पुत्र हुए। इन तीनों भाइयों का व्यापार शके १७९९ में अलग २ हुआ। सेठ छगनीरामजी ने अपने पिताजी के बाद

व्यापार को जादा बढ़ाया। आपका शके १८१७ में ७२ साल की आयु में स्वर्गवास हुआ। आपके पुत्र रूपचन्दजी संचेती का जन्म शके १८१२ में हुआ। आपने अपनी फर्म पर बागायत के कार्य को बहुत बढ़ाया है। इस समय आपके बगीचे में २ हजार झाड़ मोसुमी के और २ हजार झाड़ संतरे के हैं। इसके अलावा १ हजार झाड़ नीबू, अंजीर और अनार के हैं। इस प्रकार आपने नवीन कार्य का साहसपूर्वक स्थापन कर अपने समाज के सम्मुख नूतन आदर्श रक्खा है। आपके बगीचे के फल हैदराबाद तथा बम्बई भेजे जाते हैं। आपके यहाँ ३ हजार एकड़ भूमि में कृषि होती है। आप बड़े मिलनसार तथा सरल स्वभाव के व्यक्ति हैं। औरंगाबाद जिले में आप सबसे बड़े कृषि तथा बागायात का काम करने वाले सज्जन हैं।

सेठ बच्छराजजी का स्वर्गवास शके १८१० में हुआ। आपके भीकचन्दजी तथा जेठमलजी नामक पुत्र हुए। आप दोनों बन्धुओं के क्रमशः फकीरचन्दजी तथा माणकचन्दजी नामक पुत्र हैं। इनके यहाँ कृषि तथा बागायात का व्यापार होता है। इसी प्रकार सेठ किशनदासजी शके १८२९ में स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र पूनमचन्दजी तथा दलीपचन्दजी हुए। इनके यहाँ कृषि का कार्य होता है। सेठ पूनमचन्दजी के पुत्र उत्तमचन्दजी, लक्खीचन्दजी तथा पेमराजजी हैं।

सेठ भागचन्द जोगजी संचेती, लोनार

यह परिवार बवायचा (मारवाड़) का निवासी है। वहाँ से इस परिवार के पूर्वज सेठ जोगजी ८०।९० साल पूर्व लोनार आये। आप श्वेताम्बर जैन स्थानकवासी आम्नाय के मानने वाले सज्जन थे। आपका संवत् १९४८ में स्वर्गवास हुआ। आपके भागचन्दजी, रतनचन्दजी तथा खुशालचन्दजी नामक ३ पुत्र हुए। इनमें सेठ भागचन्दजी विद्यमान हैं।

सेठ भागचन्दजी संचेती का जन्म संवत् १९३४ में हुआ। आप लोनार के ओसवाल समाज में प्रतिष्ठित व हिम्मत बहादुर सज्जन हैं। आपने रुई के व्यापार में बहुत सम्पत्ति कमाई तथा व्यय की। आपके पुत्र पुखराजजी तथा भीकमचन्दजी हैं। पुखराजजी की वय १९ साल की है। आपके यहाँ "भागचन्द रतनचन्द" के नाम से, साहुकारी, रुई तथा कृषि का काम होता है। सेठ रतनचन्दजी के पुत्र नथमल जी १२ साल के हैं। यह परिवार लोनार तथा आसपास के ओसवाल समाज में प्रतिष्ठित समझा जाता है।

भंसाली

भंसाली गौत्र की उत्पत्ति—संवत् ११९६ में लोद्रपुर पट्टन में यादव कुल भाटी सगर नामक राजा राज करते थे। उनके कुलधर, श्रीधर तथा राजधर नामक ३ पुत्र थे। राजा सगर ने जैनाचार्य्य जिनदत्तसूरिजी के उपदेश से अपने बड़े पुत्र कुलधर को तो राज्य का स्वामी बनाया, तथा शेष २ को जैन धर्म अंगीकार कराया। इन बंधुओं ने चिंतामणि पार्श्वनाथजी का एक मंदिर बनवा कर जैनाचार्य्य से उसकी प्रतिष्ठा करवाई। भंडार की, साल में रहने के कारण इनकी गौत्र "भंडसाली" हुई। आगे चलकर इन्हीं श्रीधरजी की अठारवीं पीढ़ी में भसाली थाहरूशाह नामक एक बहुत प्रतापी पुरुष हुए।

भंसाली थाहरूशाह—लोद्रवा मंदिर के "शतदल पद्मयंत्र" नामक शिला लेख से, तथा भारत सरकार द्वारा प्रकाशित एपी ग्राफिया इण्डिका नामक ग्रंथ से थाहरूशाह के सम्बन्ध का निम्न वृत्त ज्ञात होता है कि—

"प्राचीन काल में राजा सगर के पुत्र श्रीधर तथा राजधर ने जैन धर्म से दीक्षित होकर लोद्रपुर पट्टन में श्री चिंतामणि पार्श्वनाथजी का मंदिर बनवाया। राजा श्रीधर ने जो जैन मंदिर बनवाया था, वह प्राचीन मंदिर महम्मदगोरी के हमले के कारण लोद्रवा के साथ नष्ट हो गया। अतः संवत् १६७५ में जेसलमेर निवासी भणसाली गौत्रीय सेठ थाहरूशाह ने उसका जीर्णोद्धार कराया और अपने वास स्थान में भी देरासर बनवाकर शास्त्र भंडार संग्रह किया। सेठ थाहरूशाह ने लोद्रवे के मंदिर की प्रतिष्ठा के थोड़े समय बाद एक संघ निकाला, और शत्रुंजय तीर्थ की यात्रा करके सिद्धाचलजी में खरतराचार्य श्री जिनराज सूरिजी से सवत् १६८१ में २४ तीर्थंकरों के १४५२ गणधरों की पादुका वहाँ की खरतर वशी में प्रतिष्ठित कराई थी।"

थाहरूशाह के सम्पत्ति शाली होने के सम्बन्ध में निम्न लोकोक्ति मशहूर है कि थाहरूशाह लोद्रवे में घी का व्यापार करते थे। एक दिन रूपासिया ग्राम की रहने वाली एक स्त्री चित्रावेल की एंडुर पर रखकर लोद्रवा में घी बेंचने आई। थाहरूशाह ने उसका घी खरीदा और तोलने के लिये उसकी मटकी से घी निकालने लगे, जब घी निकालते २ उन्हे देर हो गई और मटकी खाली नहीं हुई तो उन्हे बड़ा आश्चर्य हुआ और उन्होंने यह सब करामात एडुंरी की समझ इसे ले लिया। उस एंडुरी के प्रभाव से थाहरूसाह के पास असंख्यात द्रव्य हो गया। जिससे उन्होंने अनेकों धार्मिक काम किये। इस समय इनके परिवार में कोई विद्यमान नहीं हैं।

भंसाली मेहता किशनराजजी (उर्फ मिनखराजजी) का खानदान, जोधपुर

इस खानदान के पूर्वज भंसाली वीसाजी जेसलमेर के दीवान थे। ये राव चूंडाजी के समय में जेसलमेर से जोधपुर आये इन्होंने बीसेलाव तालाव बनवाया। इसके बाद नाडोजी, अखेमलजी तथा वेरीसालजी हुए। वेरीसालजी बालसमंद पर युद्ध करते हुए मारे गये। इनकी धर्मपत्नी इनके साथ सती हुई। तबसे जोधपुर के भंसाली अपने बच्चों का वहाँ मुंडन कराते हैं। इन वेरीसालजी की चौथी पीढ़ी में जगन्नाथजी हुए। इनके ३ पुत्र हुए जिनके नाम भंसाली मेहता तेजसी, रायसी, तथा श्रीचंदजी थे। इनमें भंसाली रायसी के पांचवी पीढ़ी में बोहरीदासजी हुए। इनके सादूलमलजी, सुलतानमलजी तथा सुलतानमलजी नामक ३ पुत्र हुए।

भंसाली सुलतानमलजी लेनदेन का काम करते थे। इनके सावंतमलजी, सुखराजजी, कुशलराज जी तथा जुगराजजी नामक ४ पुत्र हुए। भंसाली कुशलराजजी संवत् १९६६ में स्वर्गवासी हुए। आपके छगनराजजी, माणकराजजी, कपूरराजजी, सम्पतराजजी, सुकनराजजी, विशनराजजी तथा किशनराजजी (उर्फ मिनखराजजी) नामक छ पुत्र हुए। इनमें से भंसाली छगनमलजी सावंतमलजी के नाम पर दत्तक गये। इनके पुत्र उम्मेदराजजी तथा पौत्र मगराजजी भंसाली हैं। भंसाली कपूरराजजी कलकत्ते में दलाली करते थे। आप इनके पुत्र सबलराजजी आवकारी विभाग में हैं। सम्पतराजजी के पुत्र कनकराजजी कलकत्ते

में सर्विस करते हैं। भंसाली सुकनराजजी सबइन्स्पेक्टर पोलिस थे, इनका स्वर्गवास हो गया है। भंसाली विशनदासजी पोलीस विभाग में थे। अभी आप रिटायर हैं।

भंसाली किशनराजजी (उर्फ मिनखराजजी)—आपका जन्म संवत् १९२६ में हुआ। आप सन् १८९७ से मारवाड़ राज की सर्विस में प्रविष्ट हुए। तथा महाराजा सरदारसिंहजी के समय प्राइवेट सेक्रेटरी आफिस में क्लार्क हुए। पश्चात् आप संवत् १९६२ में पोलिस कान्स्टेवल हुए, एवं इस विभाग में अपनी होशियारी से बराबर तरक्की पाते गये सन् १९१२ से १४ सालों तक आप पब्लिक प्रासी क्यूटर रहे। तथा सन् १९२६ से आप सुपरिन्टेन्डेन्ट पोलीस के पद पर कार्य्य करते हैं। आपके होशियारी पूर्ण कामों की एवज में जोधपुर दरबार तथा कई उच्च पदाधिकारियों ने आपको सर्टिफिकेट दिये हैं। आपके ४ पुत्र हैं जिनमें बड़े जवरराजजी बी० ए० एल० एल० बी जोधपुर में वकालात करते हैं, कुंदनराजजी ने बी० ए० तक शिक्षा पाई है। इनसे छोटे रतनराजजी व चंदनराजजी हैं।

भंसाली रतनराजजी कुशलराजजी का खानदान, जोधपुर

ऊपर लिख आये हैं कि इस परिवार के पूर्वज भंसाली जगन्नाथजी के तीसरे पुत्र श्रीचंदजी थे। इनके ५ पाँच पुत्र हुए, जिनमें मंझले पुत्र माणकचंदजी थे। इनके नाम पर मूलचन्दजी तथा उनके नाम पर वच्छराजजी दत्तक आये। इनका स्वर्गवास संवत् १९०५ में हुआ। वच्छराजजी के पुत्र फतहराजजी तक इस परिवार के पास सोजत परगने का खांभल गांव पट्टे था। फतहराजजी ने अपने पूर्वजों की एकत्रित की हुई सम्पति को खूब खर्च किया। संवत् १९५२ में इनका स्वर्गवास हुआ। इनके उदयराजी उम्मेदराजजी तथा पेमराजजी नामक ३ पुत्र हुए।

भंसाली उदयराजजी नागोर के मुसरफ तथा महाराणीजी (चव्हाणजी) जोधपुर के कामदार थे। संवत् १९६४ में इनका स्वर्गवास हुआ। इनके पुत्र फौजराजजी के पुत्र किशनराजजी, मोहनराजजी सोहनराजजी तथा उगमराजजी हैं।

भंसाली उम्मेदराजजी भी राज्य की नौकरी करते रहे, इनका स्वर्गवास संवत् १९६९ में हो गया। इनके जोधराजजी, रतनराजजी, देवराजजी, रूपराजजी तथा करणराजजी नामक पाँच पुत्र हुए। इनमें रूपराजजी के पुत्र कुशलराजजी, रतनराजजी के नाम पर दत्तक आये हैं। भंसाली रतनराजजी का जन्म संवत् १९२० हुआ था। आप लगभग १२ साल तक खजाने के नायब दरोगा, बारह साल तक सब इन्स्पेक्टर पोलिस तथा दस साल तक कोर्ट आफ वार्डस् के अकाउण्टेण्ट रहे। सन् १९२८ में रिटायर्ड हुए तथा फिर विलाड़ा तथा भँवराणी ठिकाने में २ साल तक मैनेजर रहे। इधर कुछ मास पूर्व आपका स्वर्गवास हो गया है। आपके पुत्र कुशलराजजी आडिट आफिस जोधपुर में सर्विस हैं। इसी तरह करणराजजी के पुत्र मुकुन्दराजजी भी आडिट आफिस में सर्विस करते हैं।

भंसाली पेमराजजी का स्वर्गवास संवत् १९५७ में हुआ। आपके पौत्र भेरूराजजी डाक्टर हैं तथा सुकनराजजी ट्रिब्यूट इन्स्पेक्टर हैं।



सेठ प्रतापमलजी भनसाली, डूँगरगढ



सेठ गोविन्दरामजी भनसाली, बीकानेर.





भंसाली मेहता अर्जुनराजजी का खानदान, जोधपुर

इस परिवार के पूर्वज भंसाली वोहरीदासजी, जोधपुर में लेन देन का व्यापार करते थे। आपके सादूलमलजी, मुलतानमलजी तथा मुलतानमलजी नामक तीन पुत्र हुए, भंसाली मेहता मुलतानमलजी सम्पत्तिशाली साहुकार थे, तथा महाराजा मानसिंहजी के समय में सायरात के इजोर का काम करते थे। स्टेट को भी आपके द्वारा रकमें उधार दी जाया करती थी। सेठ मुलतानमलजी के गजराजजी, नगराजजी और बुधराजजी नामक तीन पुत्र हुए। नगराजजी भी सायरातों के इजारे का काम करते रहे। संवत् १९४१ में आपका स्वर्गवास हुआ। गजराजजी के पुत्र दौलतराजजी तथा सज्जनराजजी ज्युडिशियल विभाग में सर्विस करते रहे। इस समय इनके पुत्र कानराजजी व मानराजजी हैं।

मेहता नगराजजी के पुत्र खींवराजजी तथा भींवराजजी हुए। खींवराजजी २८ साल से ज्युडिशियल क्लर्क हैं। भींवराजजी हैदराबाद में व्यापार करते थे। आप संवत् १९६० में स्वर्गवासी हुए। सेठ खींवराजजी के पुत्र अर्जुनराजजी व किशोरमलजी हैं। मेहता अर्जुनराजजी का जन्म संवत् १९६१ में हुआ। आपने सन् १९२५ में बी० ए० पास किया। सन् १९२६ से आप रेलवे आडिट आफिस में सर्विस करते हैं, तथा इस समय इन्स्पेक्टर आप अकाउण्टेण्ट हैं। भंसाली किशोरमलजी की वय २५ साल की है, आपने सन् १९३० में बी० एस० सी० एल० एल० बी० की परीक्षा पास की है। सन् १९३१ से आप "मेहता एण्ड कम्पनी" के नाम से जोधपुर में इंजनियरिंग तथा कंट्राक्टिंग का काम करते हैं।

सेठ प्रतापमल गोविन्दराम भंसाली, कलकत्ता

इस परिवार वाले सज्जन मारवाड़ से बीकानेर राज्य के रायसर नामक स्थान पर आये। यहाँ कुछ समय तक निवास कर यहाँ से रानीसर नामक स्थान में जाकर रहने लगे। इस परिवार में सेठ तेजमलजी हुए। आपके दो पुत्र हुए जिनके नाम क्रमशः सेठ रतनचन्दजी एवम् सेठ पूर्णचन्दजी था।

सेठ रतनचन्दजी के तीन पुत्र हुए। जिनके नाम क्रमशः सेठ पदमचन्दजी, सेठ देवचंदजी एवम् सेठ कस्तूरचन्दजी था। सेठ पूरणचन्दजी के प्रतापमलजी एवम् मूलचन्दजी नामक दो पुत्र हुए। सेठ पदमचन्दजी का बाल्यकाल ही में स्वर्गवास हो गया।

सेठ देवचन्दजी—प्रारम्भ में आप देश से सिराजगंज के पास 'एलंगी' नामक स्थान पर गये। वहाँ जाकर आपने कपड़े का व्यवसाय शुरू किया। इस फर्म में आपने अपनी होशियारी एवम् बुद्धिमानी से अच्छी सफलता प्राप्त की। मगर दैव दुर्योग से इस फर्म में आग लग गई और आपकी की हुई सारी महनत पर पानी फिर गया। इसके पश्चात् आप अपने सारे जीवन भर नौकरी ही करते रहे। आपका स्वर्गवास संवत् १९६५ में हो गया। आपके गोविन्दरामजी नामक एक पुत्र हुए।

सेठ गोविन्दरामजी—आपका जन्म संवत् १९२५ में हुआ। आजकल आपका परिवार बीकानेर का निवासी है। आप बाईस संप्रदाय के अनुयायी हैं। प्रारम्भ में आपने सर्विस की। आप बड़े व्यापार चतुर पुरुष हैं। नौकरी से आपकी तबियत उकता गई एवम् आपके दिल में स्वतन्त्र व्यवसाय करने की इच्छा हुई। अतएव आपने संवत् १९५६ में यह सर्विस छोड़ दी तथा हनुमतराम तुलसीराम के साझे में

फर्म स्थापित की। यह साझा संवत् १९६३ तक चलता रहा। इसके वाद इसी साल आपने अपनी निज की फर्म मेसर्स प्रतापमल गोविन्दराम के नाम से की। तब से आप इसी नाम से अपना व्यवसाय कर रहे हैं। आपका जीवन, बड़ा सादा जीवन है। विद्या से आपको बड़ा प्रेम है। करीब तीन साल पूर्व आपने बीकानेर में गोलछों की गवाड़ में श्री गोविन्द सार्वजनिक पुस्तकालय की स्थापना की। जहाँ सब प्रबन्ध आपकी ओर से हो रहा है। आपके बा० भीखनचन्दजी नामक एक पुत्र हैं। आप उत्साही नवयुवक हैं आजकल आप फर्म के कार्य्य में सहयोग दे रहे हैं।

सेठ प्रतापमलजी—आप इस फर्म के भागीदार हैं। आप श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सम्प्रदाय के मानने वाले हैं। प्रारम्भ में आपने भी नेलफ़ामारी में केसरीचन्द मोतीचन्द के यहाँ सर्विस की। कुछ वर्षों बाद उनकी नौकरी छोड़ दी एवम् अपने भतीजे सेठ गोविन्दरामजी के साथ प्रतापमल गोविन्दराम के फर्म में साझा कर लिया। जो इस समय भी है। आपके चार पुत्र हैं जिनके नाम क्रमशः हीरालालजी, आसकरनजी, सुगनचन्दजी एवम् जैसराजजी हैं। आप लोगों का आजकल देश में निवास स्थान श्री डूंगरगढ़ है।

हीरालालजी मैट्रिक पास हैं तथा जैसराजजो इण्टर मिजियेट कामर्स की स्टेडी कर रहे हैं। शेष सब भाई फर्म के कार्य में सहयोग देते हैं। सेठ प्रतापमलजी के भाई मूलचन्दजी का स्वर्गवास हो गया है। आपके जेठमलजी एवम् सुमेरमलजी नामक दो पुत्र हैं। जेठमलजी एफ० ए० पास करके डाक्टरी पढ़ रहे हैं। दूसरे दुकान का कार्य्य करते हैं। इस समय इस परिवार की कलकत्ता में भिन्न २ नामों से भिन्न २ व्यवसाय करने वाली ३ दुकानें चल रही हैं।

सेठ हनुतमल हरकचन्द भंसाली, छापर

इस परिवार के पूर्व पुरुष सेठ खेतसीजी ने करीब १०० वर्ष पूर्व छापर में आकर निवास किया। आपके हनुतमलजी, उमचन्दजी और हरकचन्दजी नामक तीन पुत्र हुए। इनमें से हनुतमलजी एवम् हरकचन्दजी का परिवार शामिल में व्यवसाय कर रहा है। सेठ हनुतमलजी करीब ६० वर्ष पूर्व घोड़ामारा गये एवम् वहाँ अपनी फर्म स्थापित की। आप दोनों भाई बड़े प्रतिभा सम्पन्न एवम् व्यापारिक व्यक्ति थे। आपके व्यापार संचालन की योग्यता से फर्म के काम में बहुत सफलता रही। आपने अपने व्यवसाय को विशेष रूप से बढ़ाने के लिये डोमार, कलकत्ता, इसरगंज, अनंतपुर उल्लीपुर, (रंगपुर) इत्यादि स्थानों पर भिन्न २ नामों से फर्मे स्थापित की। सेठ हनुतमलजी का स्वर्गवास हो गया। आप के इस समय बुधमलजी दत्तक-पुत्र हैं। आप ही फर्म का संचालन करते हैं। आपके भंवरलालजी नामक एक पुत्र हैं।

सेठ हरकचन्दजी इस समय विद्यमान हैं। आपके हाथों से भी फर्म की बहुत उन्नति हुई। इस समय आपने अवसर ग्रहण कर लिया है। आपका छापर की पंच पंचायती में अच्छा मान सम्मान है। आपके बुधमलजी, मालचन्दजी, डालचन्दजी, थानमलजी और माणकचन्दजी नामक पाँच पुत्र हैं। बड़े पुत्र आपके बड़े भाई हनुतमलजी के नामपर दत्तक गये। शेप अपने व्यापार का संचालन करते हैं। आप सब सज्जन और मिलनसार व्यक्ति हैं।

बम्ब

सेठ पन्नालाल नारमल बंब, भुसावल

इस कुटुम्ब के मालिकों का मूल निवास स्थान पीही (जोधपुर स्टेट) में है। लगभग १०० साल पूर्व सेठ नारमलजी बम्ब ने मारवाड़ से आकर इस दुकान का स्थापन किया। आपके पुत्र सेठ गुलाबचन्दजी व पन्नालालजी बम्ब हुए।

सेठ गुलाबचन्दजी बम्ब—आपके हाथों से व्यापार को विशेष उन्नति प्राप्त हुई। आप अपने स्वर्गवासी होने के समय १५। २० हजार रुपयों का दान कर गये थे। इस रकम में से ५। ६ हजार की लागत से पीही में एक धर्मशाला बनवाई गई है। आपका स्वर्गवास सन् १९२४ में हुआ। आपके भेरूलालजी तथा सरूपचन्दजी नामक दो पुत्र विद्यमान हैं।

सेठ पन्नालालजी बम्ब—आप सेठ नारमलजी के छोटे पुत्र हैं। तथा इस परिवार में बड़े हैं। आप के परिवार की गणना खानदेश, तथा बराड़ के नामी ओसवाल कुटुम्बों में है। इस परिवार ने श्री भूराबाई श्राविकाश्रम तथा पद्मावाई कन्या पाठशाला को सहायताएं दी हैं। यह परिवार स्थानकवासी आम्नाय का माननेवाला

श्री भेरूलालजी बम्ब—आप सेठ गुलाबचन्दजी के बड़े पुत्र हैं। आप शिक्षित तथा समझदार सज्जन हैं। तथा फर्म के व्यापार को बड़ी सफता से संचालित करते हैं। आप भुसावल म्युनिसिपेलिटी के ११ वर्षों तक मेम्बर रहे हैं। शिक्षा के कार्य्यों में दिलचस्पी से हिस्सा लेते हैं। आपके छोटे भ्राता सरूपचन्दजी आपके साथ व्यापार में भाग लेते हैं। आपके यहां गुलाबचन्द नारमल बम्ब के नाम से साहुकारी लेन देन तना कृषि का और पन्नालाल नारमल बम्ब के नाम में सराफी व्यापार होता है।

सेठ सरूपचंद भूरजी बम्ब, कोपरगांव (नाशिक)

इस परिवार का मूल निवास स्थान कुरडाया (अजमेर के पास) है। यह परिवार स्थानक वासी आम्नाय का है। मारवाड़ से सो वर्ष पूर्व सेठ दलीपचन्दजी के पुत्र नन्दरामजी पैदलरास्ते से कोपरगांव के पास मुरशदपुर नामक स्थान में आये। इनके पुत्र भूरजी भी यहीं व्यापार करते रहे। संवत् १९४० में इनका स्वर्गवास हुआ। आपके रामचन्दजी तथा सरूचपन्दजी नामक २ पुत्र हुए। इनमें सेठ रामचन्दजी येरण गांव (नाशिक) गये। संवत् १९७७ में आपका स्वर्गवास हुआ। इस समय आपके पुत्र रतनचंदजी तथा खुशालचन्दजी यरण गांव में व्यापार करने हैं।

सेठ सरूपचन्दजी बम्ब—आपका जन्म १९२८ में हुआ। आप संवत् १९४० में कोपरगांव आये। आपने व्यवसाय में चतुराई तथा हिम्मत पूर्वक द्रव्य उपार्जित कर अपने समाज में अच्छी प्रतिष्ठा प्राप्त की है। आपके यहाँ "सरूपचन्द भूरजी बम्ब" के नाम से आढ़त, साहुकारी तथा कृषि

का काम होता है। आपके पुत्र मोतीलालजी, हीरालालजी, पन्नालालजी तथा झूमरलालजी व्यापार में भाग लेते हैं, तथा फूलचन्दजी और मंसुखलालजी छोटे हैं। यह परिवार नाशिक जिले के ओसवाल समाज में अच्छी प्रतिष्ठा रखता है। मोतीलालजी बम्ब के ४ पुत्र हैं।

लाला निहालचन्द नन्दलाल बम्ब, लुधियाना

यह खानदान लगभग पांच सौ वर्षों से यहां निवास कर रहा है। इस परिवार के पूर्वज लाला सुक्खामलजी के लाला गुलाबामलजी बूंटामलजी, तथा भवानीमलजी नामक ३ पुत्र हुए। इनमें लाला गुलाबामलजी, के लाला निहालमलजी, नरायणमलजी, सावनमलजी तथा पंजाबरायजी नामक ४ पुत्र हुए। लाला निहालमलजी बड़े धर्मात्मा व्यक्ति थे। आप यहां की ओसवाल समाज में नामांकित व्यक्ति थे। संवत् १९४९ में आपका स्वर्गवास हुआ। आपके पुत्र नन्दलालजी तथा चन्दूलालजी थे।

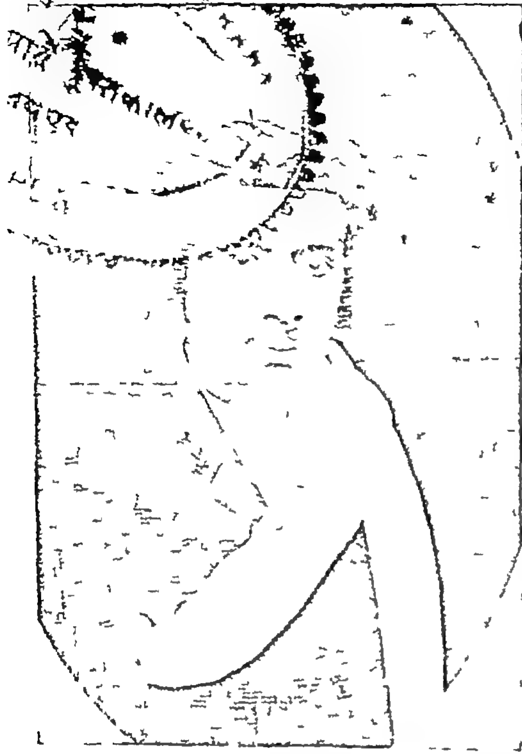
लाला नन्दलालजी लुधियाना के ओसवाल समाज में प्रतिष्ठित व्यक्ति थे, आपका संवत् १९८२ में स्वर्गवास हुआ। आपके लाला जगन्नाथजी, अमरनाथजी, मोहनलालजी तथा पन्नालालजी नामक ४ पुत्र हुए। इनमें लाला अमरनाथजी मौजूद हैं। इस समय आप अपनी "निहालचन्द नन्दलाल" नामक फर्म का संचालन करते हैं। आपका परिवार पुश्तहानपुश्त से चोधरायत का काम करता आ रहा है। आपके पुत्र मदनलालजी हैं।

लाला गुलाबामलजी के द्वितीय पुत्र लाला नारायणलालजी के पुत्र लाला खुशीरामजी बड़े मशहूर तथा धर्मात्मा व्यक्ति हुए। आपने यहां एक उपाश्रय भी बनवाया था।

लाला कालूमल शादीराम बम्ब, पटियाला

यह परिवार सौ वर्ष पूर्व दिल्ली से पटियाला आकर आबाद हुआ। इस परिवार में लाला कालूरामजी तथा कन्हैयालालजी नामक २ बंधु हुए। इनमें कन्हैयालालजी के शादीरामजी, गोंदीरामजी तथा राजारामजी नामक ३ पुत्र हुए। इनमें लाला शादीरामजी के लाला पानामलजी, सुचनरामजी तथा दौलतरामजी नामक पुत्र हुए। इस समय सुचनरामजी के पुत्र मंगतरामजी तथा तरसेपचन्दजी और दौलतरामजी के पुत्र संतलालजी विद्यमान हैं।

लाला गोंदीमलजी का जन्म संवत् १९१५ में हुआ था। आप पटियाला के ओसवाल समाज में प्रसिद्ध व्यक्ति थे। आप चौधरी भी रहे थे। संवत् १९७० में आप स्वर्गवासी हुए। आपके लाला चांदनरामजी, धर्मचन्दजी तथा मातूरामजी नामक ३ पुत्र हुए। इनमें लाला चांदनरामजी का संवत् १९७८ में स्वर्गवास हुआ। लाला धर्मचन्दजीका जन्म संवत् १९५० में हुआ। आप पटियाला के मशहूर चौधरी हैं, पटियाला दरबार ने आपको दुशाला इनायत किया। आपके यहां जनरल ठेकेदारी का काम होता है। आपके पुत्र कश्मीरीलाल तथा बीरूरामजी बालक हैं। लाला मातूरामजी की वय ३४ साल की है। आप जनरल मरचेंटाइज का व्यापार करते हैं। यह परिवार स्थानकवासी आम्नाय का मानने वालाहै।



सेठ पन्नालालजी वम्ब (पन्नालाल नारमल), भुसावल.



श्री कुन्दनमलजी फिरोदिया बी. ए. एल, एल. बी, अहमदनगर.



श्री युगलसिंहजी चौधरी एल. टी. एम. डॉक्टर, शाहपुरा.



सेठ चंदनमलजी पीतल्या (चंदनमल भगवानदास), अहमदनगर,

फिरोदिया

श्री उम्मेदमलजी फिरोदिया का खानदान, अहमदनगर

इस खानदान का मूल निवास स्थान पीपाड़ (मारवाड़) का है। आपकी आम्नाय श्वेताम्बर स्थानकवासी है। इस खानदान में श्री उम्मेदमलजी फिरोदिया सबसे पहले अहमदनगर जिलेमें आये। आपकी हिम्मत और बुद्धिमानी बहुत बढ़ी चढ़ी थी। यहां आकर आपने साहसपूर्वक पैसा प्राप्त किया और फिर मारवाड़ जाकर शादी की, वहाँ से फिर अहमदनगर आये और कपड़े की दुकान स्थापित की। आपके दो पुत्र हुए जिनके नाम खूबचन्दजी और बिशनदासजी थे। अपने पिताजी के पश्चात् आप दोनों भाई मनीलेण्डिग और कपड़े का व्यपार करते रहे। इनमें से फिरोदिया खूबचन्दजी का स्वर्गवास सन् १९०१ में और फिरोदिया बिशनदासजी का सन् १८९७ में होगया।

फिरोदिया बिसनदासजी के तीन पुत्र हुए जिनके नाम क्रमशः शोभाचन्दजी, माणिकचन्दजी और पन्नालालजी थे। आप तीनों भाई भी कपड़े और मनीलैण्डिङ्ग का व्यापार करते रहे। इनमें से शोभाचन्दजी का स्वर्गवास सन् १९११ में हुआ। आप बड़े धार्मिक, शांत प्रकृति वाले और मिलनसार पुरुष थे। आपके पुत्र कुन्दनमलजी फिरोदिया हुए।

कुन्दनमलजी फिरोदिया—आपका जन्म सन् १८९५ में हुआ। आपने सन् १९०७ में बी० ए० की और सन् १९१० में एल० एल० बी० की डिग्रियाँ प्राप्त कीं। आप सन् १९०८ में फर्ग्यूसन कालेज के दक्षिण-फेलो रहे। उस समय भारत में ओसवालों के इने गिने शिक्षित युवकों में से आप एक थे। आप बड़े शांत प्रकृति के, उदार, और समाज सुधारक पुरुष हैं। जैन जाति के सुधार और अभ्युदय की ओर आपका बहुत लक्ष्य है। अहमदनगर की पांजरापोल के आप सत्रह वर्षों से सेक्रेटरी हैं। आप यहां के व्यापारी एसोसियेशन के चेअरमेन, अहमदनगर के आयुर्वेद विद्यालय, अनाथ विद्यार्थी गृह और हाईस्कूल की मैनेजिंग कमेटी के मेम्बर हैं। सन् १९२६ में आप बम्बई की लेजिस्लेटिव कौंसिल में अहमदनगर स्वराज्य पार्टी की ओर से प्रतिनिधि चुने गये थे। इसी प्रकार राष्ट्रीय शिक्षण संस्था के चेअरमेन रहे थे। अहमदनगर कांग्रेस कमेटी के भी आप बहुत समय तक सेक्रेटरी रहे हैं। अहमदनगर के सेंट्रल बैङ्क के आप चअरमैन हैं। इसी प्रकार जैन कान्फ्रेंस, जैन बोर्डिंग पूना इत्यादि सार्वजनिक संस्थाओं से आपका बहुत घनिष्ट सम्बन्ध हैं। कहने का तात्पर्य्य यह है कि आप भारत के जैन समाज में गण्यमान्य व्यक्ति हैं। आपके तीन पुत्र हैं। जिनके नाम श्री नवलमलजी मोतीलालजी और हस्तीमलजी फिरोदिया हैं।

नवलमलजी फिरोदिया—आपका जन्म सन् १९१० में हुआ। आपने सन् १९३३ में बी० एस० सी० की परीक्षा पास की। आप बड़े देश भक्त और राष्ट्रीय विचारों के सज्जन हैं। सन् १९३० और सन् १९३२ के आन्दोलन में आपने कालेज छोड़ दिया। तथा आन्दोलन में भाग लेते हुए ९ मास

की जेल में गये। राष्ट्रीय की तरह सामाजिक स्प्रिट भी आपमें कूट २ कर भरी है। आपने अपने घर से परदा प्रथा का बहिष्कार कर दिया है। अहमदनगर के ओसवाल युवकों में आपका सार्वजनिक जीवन बहुत ही अग्रगण्य है। आपके छोटे भाई मोतीलालजी फिरोदिया का जन्म सन् १९१२ में हुआ। आप इस समय बी० ए० में पढ़ रहे हैं। आप बड़े योग्य और सज्जन हैं। आपसे छोटे भाई हस्तीमलजी हैं। इनकी वय १३ साल की है।

बोरदिया

सेठ अनोपचन्द गंभीरमल, बोरदिया उदयपुर।

इस परिवार के पूर्व पुरुष सेठ रखबदासजी नाथद्वारा से उदयपुर आये। आपने यहाँ महाराणा भीमसिंहजी के राजत्व काल में सम्वत् १८८० से १९०७ तक राज्य में सर्विस की। आपके जिम्मे कोठार का काम था। आपके कार्यों से प्रसन्न होकर महाराणा ने आपको परवाने भी बख्शे थे। आपके अम्बावजी अनोपचन्दजी, रूपचन्दजी और स्वरूपचन्दजी नामक चार पुत्र हुए। आप लोग अलग अलग हो गये एवम स्वतन्त्र रूप से व्यापार करना प्रारम्भ किया। सेठ अनोपचन्दजी व्यापारिक दिमाग के सज्जन थे। आपने अपनी फर्म की अच्छी उन्नति की। आपके गोकलचन्दजी और गम्भीरमलजी नामक दो पुत्र हुए। यह फर्म सेठ गम्भीरमलजी की है।

सेठ गम्भीरमलजी शांत स्वभाव के व्यापार चतुर पुरुष थे। आपके समय में भी फर्म की बहुत उन्नति हुई। आपका स्वर्गवास हो गया। इस समय आपके पुत्र सेठ फोजमलजी और सेठ जुहारमलजी दोनों भाई फर्म का संचालन करते हैं। आप लोग मिलनसार हैं। सेठ फौजमलजी के सुल्तानसिंहजी और जीवनसिंहजी नामक पुत्र हैं। सुल्तानसिंहजी योग्य और मिलनसार व्यक्ति हैं। आजकल आप ही फर्म का संचालन भी करते हैं। सेठ जुहारमलजी के मालचन्दजी, छोगालालजी, नेमीचन्दजी, चाँदमलजी और सूरजमलजी नामक पाँच पुत्र हैं। प्रथम दो व्यापार में योग देते हैं। तीसरे बी० ए० में पढ़ रहे हैं। इस समय आप लोग उपरोक्त नाम से बैंकिंग हुंडी चिट्ठी कपास वगैरह का अच्छा व्यापार करते हैं।

डाक्टर कुशलसिंहजी चौधरी, कोठियां (शाहपुरा) का खानदान

इस परिवार के पूर्वज मेवाड़ के हुरड़ा नामक ग्राम में रहते थे। वहाँ से महाराजा उम्मेदसिंहजी शाहपुराधिपति के राजत्वकाल में यह परिवार कोठियाँ आया। उस समय महाराजा के पौत्र कुँवर रणसिंहजी की सेवा चौधरी गजसिंहजी ने विशेष की। इससे प्रसन्न होकर राज्यासीन होने पर रणसिंहजी ने इनको कोठियाँ में कई सम्मान बख्शे। उसके अनुसार बसंत, होली, शीतलाअष्टमी, रक्षाबन्धन, दशहरा, व गणगोर के त्यौहारों पर गांव के पटेल पंच 'चौधरीजी' के मकान पर आते हैं, तथा सदा से बंधे हुए दस्तूरों का पालन करते हैं। होली के एहड़े में दमामी लोग क़िले में दरबार की पीढ़ियों के साथ चौधरीजी की पीढ़ियां गाते

हैं, तथा हरएक व्यक्ति विवाह में चौधरीजी की हवेली पर "राम राम" करने जाता हैं। इत्यादि सम्मान इस परिवार के प्राप्त हुए, इतना ही नही, इनके वंशजों को गर्जासिंहपुरा, जयसिंहपुरा, गणपतियापुरा, व टीटोड़ी गांव भी जागीरी में मिले थे। चौधरी गर्जसिंहजी को शाहपुरा दरबार ने बहुत से रुक्के बख्शे थे। इनके बच्छराजजी, अभयराजजी तथा उम्मेदराजजी नामक ३ पुत्र हुए। इनमें चौधरी बच्छराजजी ने शाहपुरा में प्रधानगी का कार्य किया। इनके तीसरे भाई चौधरी उम्मेदराजजी को उदयपुर दरबार ने अपने यहाँ बैठक बख्शी तथा हुरड़ा में जागीर इनायत की। चौधरी अभयराजजी के पौत्र अर्जुनसिंहजी ने शाहपुरा रियासत में बहुत खैरख्वाही के काम किये। आप कुंभलगढ़ की हुकूमत पर भी रहे। इनके पुत्र राजमलजी शाहपुरा में कामदार कोछोला तथा कौंसिल के मेम्बर रहे। आपको अपनी जाति की पंचायती ने "जी" का सम्मान दिया था।

चौधरी बच्छराजजी के पुत्र फतहराजजी हुए। इनके पुत्र स्योलालसिंहजी को भी शाहपुरा दरबार ने कई रुक्के इनायत किये थे। इनके कल्याणसिंहजी, जालमसिंहजी तथा रघुनाथसिंहजी नामक ३ पुत्र हुए। चौधरी कल्याणसिंहजी मारवाड़ परगने मे हुकूमतें करते रहे। आपको शाहपुरा दरबार महाराजा माधोसिंहजी ने जागीरी इनायत की। आपके नाम पर रघुनाथसिंहजी दत्तक आये। चौधरी रघुनाथसिंहजी ने महाराजा नाहरसिंहजी के समय कोटड़ी कोठियाँ की सरहद के फैसले में इमदाद दी इसलिये प्रसन्न होकर इनको जागीरी दी। इनके गम्भीरसिंहजी, किशोरसिंहजी, सगतसिंहजी तथा सवाईसिंहजी नामक ४ पुत्र हुए। इनमें चौधरी सगतसिंहजी कोठियाँ में निवास करते हैं। आपने महकमे कारखानेजात तथा आबकारी में सर्विस की। आपको जीकारे का सम्मान प्राप्त है। आपने नौरतनसिंहजी, लछमणसिंहजी तथा कुशलसिंहजी नामक ३ पुत्र हुए। इनमें कुशलसिंहजी विद्यमान हैं।

डाक्टर कुशलसिंहजी का जन्म सम्वत् १९५९ में हुआ। अजमेर से इंटरमिजिएट की परीक्षा पास कर आपने डाक्टरी का अध्ययन किया सन् १९२९ में एल० एम० ओ० की डिगरी प्राप्त की। इसके बाद एल० टी० एम० का डिप्लोमा भी प्राप्त किया। सन् १९३० से शाहपुरा स्टेट में स्टेट मेडिकल ओफीसर हैं। आपको वर्तमान महाराजा ने प्रसन्न होकर जागीरी बख्शी है, आपके कार्यों से पब्लिक बहुत खुश है। आपके भूपसिंह नामक एक पुत्र है। इस परिवार में चौधरी जालिमसिंहजी के पौत्र समर्थसिंहजी गरोठ (इन्दोर स्टेट) में रहते हैं। इनके पुत्र इन्द्रसिंहजी हैं।

वर्तमान में इस कुटुम्ब में समर्थसिंहजी, जोधसिंहजी, वल्लभसिंहजी, सुगनसिंहजी, चाँदसिंहजी, हमीरसिंहजी तथा मगनसिंहजी नामक व्यक्ति विद्यमान हैं। इनमें चौधरी वल्लभसिंहजी ने शाहपुरा स्टेट में कई स्थानों की तहसीलदारी व हाकिमी की। आपको शाहपुरा पंचायती ने "श्री" का सम्मान दिया है।

कीमती

सेठ जमनालाल रामलाल कीमती, हैदराबाद (दक्षिण)

इस खानदान का मूल निवास रामपुरा (इन्दौर स्टेट) है। यह परिवार स्थानकवासी आम्नाय का माननेवाला है। इस परिवार में सेठ रायसिंहजी धूपिया रामपुरे में प्रतिष्ठित व्यक्ति हो गये हैं, यह

खानदान पहले धूपिया परिवार के नाम से पहचाना जाता था। आगे चलकर इस परिवार में सेठ पन्ना॰ लालजी तथा बन्नालालजी कीमती हुए। इन भाइयों में सेठ पन्नालालजी का जन्म सम्वत् १९०१ में हुआ। रामपुरे से यह खानदान इंदौर तथा मंदसोर गया। तथा यहाँ से सेठ पन्नालालजी सम्वत् १९४८ में हैदराबाद आये। आप बड़े धर्मप्रेमी तथा साधुभक्त पुरुष थे। आपका स्वर्गवास सम्वत् १९७२ में हुआ। आपके जमनालालजी तथा रामलालजी नामक दो पुत्र हुए।

सेठ जमनालालजी रामलालजी कीमती—सेठ जमनालालजी का जन्म सम्वत् १९३५ में हुआ। आप दोनों भाइयों ने अपने पिताजी की मौजूदगी में ही हैदराबाद में जवाहरात आदि का व्यापार आरम्भ कर दिया था, तथा इस व्यापार में आप बंधुओं ने अच्छी सम्पत्ति उपर्जित की। हैदराबाद में कारोबार जमने पर आपने इंदोर में भी अपनी एक शाखा खोली। सेठ जमनालालजी कीमती के एक पुत्र सुखलालजी हुए थे, आप बड़े होनहार प्रतीत होते थे, लेकिन ३-४ साल की अल्पायु में इनका स्वर्गवास हो गया। इनके नाम पर मदनलालजी दत्तक लिये गये। रामलालजी कीमती ने रोशनलालजी कीमती को दत्तक लिया था, लेकिन इनका भी शरीरान्त हो गया। सेठ जमनालालजी कीमती ने अपना उत्तराधिकारी अपने छोटे भाई रामलालजी को बनाया है, तथा रामलालजी ने सम्पतलालजी को अपना दत्तक प्रगट किया है। सेठ जमनालालजी तथा रामलालजी ने सुखलालजी के स्मरणार्थ पचास हजार रुपया, तथा रामलालजी की पत्नी के स्वर्गवासी हो जाने पर १ लाख रुपया धार्मिक कामों के लिये निकाले जाने की घोषणा की है।

इस परिवार ने सेठ पन्नालालजी तथा सुखलालजी के स्मर्णार्थ रामपुरा में "जमनालाल रामलाल कीमती लायब्रेरी" का उदघाटन किया है। आपने हैदराबाद में एक धर्मशाला बनवाई। हैदराबाद की मारवाड़ी लायब्रेरी के लिये एक "कीमती भवन" बनवाया, इसी प्रकार यहाँ स्थानक के लिये एक मकान दिया। आप एक जैन ग्रन्थमाला प्रकाशित कर मुफ़्त वितरित करते हैं। इन्दोर में आपकी ओर से एक जैन कन्या पाठशाला चल रही है, तथा यहाँ भी शुभ कामों के लिये एक बिल्डिंग दी है। आपकी ओर से जैनेन्द्र गुरुकुल पंचकूला में एक जैन बोर्डिंग हाउस बनवाया गया है, इसी तरह मंदसौर में इन बंधुओं ने एक प्रसूति गृह बनवाया है। इसी तरह के धार्मिक तथा लोकोपकारी कार्यों में आप लोग भाग लेते रहते हैं। इस समय इन कीमती बंधुओं के यहाँ सुलतान बाजार रेसिडेंसी हैदराबाद मे जमनालाल रामलाल कीमती के नाम से बेंकिंग जवाहरात का व्यापार होता है। तथा यहाँ की प्रतिष्ठित फर्मों में यह फर्म मानी जाती है। हैदराबाद सिकरांबाद, इन्दौर आदि में आपके कई मकानात हैं। आपके यहां इन्दोर खजूरीबाजार में भी बैंकिंग व्यापार होता है।

पीतलिया

सेठ बदीचन्द बर्द्धमान पीतलिया, रतलाम

इस परिवार के बुजुर्गों का मूल निवास स्थान कुम्भलगढ़ (मेवाड़) है। वहाँ इस परिवार ने राज्य की अच्छी २ सेवाएँ की थीं। वहीं से इस परिवार के सज्जन सेठ बीराजी ताल (जावरा-स्टेट) नामक



स्व० सेठ अमरचन्दजी पातल्या, रतलाम.



सेठ जमनालालजी कीमती, हैदराबाद.





स्थान पर आये एवम् साधारण दुकानदारी का काम प्रारम्भ किया। सेठ बीराजी के पश्चात् सेठ माणकचंद जी और सेठ बिरदीचंदजी ने क्रमशः इस फर्म के कार्य्य का संचालन किया। आपका ताल की जनता में अच्छा सम्मान था। सेठ बिरदीचंदजी के अमरचंदजी, बच्छराजजी और सौभागमलजी नामक तीन पुत्र हुए। वर्तमान में आप तीनों ही भ्राताओं के वंशज क्रमशः रतलाम, जावरा और ताल में अलग २ अपना व्यवसाय कर रहे हैं।

सेठ अमरचन्दजी—आपने समत् १९११ में रतलाम में उपरोक्त नाम से फर्म खोली। साथ ही आपने अपनी बुद्धिमानी, मिलनसारी और कठिन परिश्रम से फर्म के व्यवसाय में अच्छी तरक्की प्राप्त की। आप का धार्मिक और जातीय प्रेम सराहनीय था। आपके द्वारा इन दोनों लाईनों में बहुत काम हुआ। स्थानकवासी जैन कांफ्रेन्स में आपका अपने समय में प्रधान हाथ रहता था। राज्य में भी आपका बहुत सम्मान था। रतलाम स्टेट से आपको 'सेठ' की उपाधिप्राप्त हुई थी। आप बड़े प्रतिभा सम्पन्न, कार्य्य कुशल और बुद्धिमान व्यक्ति थे। आपका स्वर्गवास हो गया। आपके वर्द्धमानजी नामक एक पुत्र हैं।

सेठ वर्द्धमानजी—आप बड़े मिलनसार एवम जाति सेवक सज्जन हैं। आपने भी जाति की सेवा में बहुत मदद पहुँचाई। आप अखिल भारतवर्षीय स्थानकवासी जैन कांफ्रेन्स के जनरल सेक्रेटरी रहे। रतलाम के जैन ट्रेनिंग कालेज के भी आप सेक्रेटरी थे। आपका स्थानकवासी समाज में अच्छा प्रभाव एवम सम्मान है। आपका व्यापार इस समय रतलाम एवम इन्दौर में हो रहा है।

सेठ भगवानदास चन्दनमल पीतलिया, अहमदनगर

इस खानदान वालों का खास निवासस्थान रींया (मारवाड़) में है। आप श्वेताम्बर जैन स्थानकवासी आम्नाय को माननेवाले हैं। रींया (मारवाड़) से करीब १५० वरस पहले सेठ भगवानदासजी के पिता पैदल रास्ते से चलकर अहमदनगर आये और यहाँ पर आकर अपनी फर्म स्थापित की। आपके पुत्र भगवानदासजी हुए। आपका स्वर्गवास केवल २५ वर्ष की उम्र में ही हो गया। आपके पश्चात आपकी धर्मपत्नी श्रीमती रम्भाबाई ने इस फर्म के काम को संचालित किया। इन्होंने साधु साध्वियों के ठहरने के लिये एक स्थानक बनवाया। भगवानदासजी के कोई सन्तान न होने से आपके यहाँ चन्दनमलजी को दत्तक लिया। चन्दनमलजी का जन्म सं० १९२९ में हुआ। आपके हाथों से इस फर्म की बहुत तरक्की हुई। आपका स्वर्गवास संवत् १९८८ में हो गया। आप बड़े धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। आपके स्वर्गवास के समय १५००) संस्थाओं को दान दिये गये। आपके पुत्र मोतीलालजी और झूमरलालजी हैं।

मोतीलालजी का जन्म संवत् १९६२ में हुआ। तथा झूमरलालजी का जन्म संवत् १९७१ में हुआ। मोतीलालजी सज्जन और योग्य व्यक्ति हैं। झूमरलालजी इस समय मैट्रिक में पढ़ रहे हैं। इस खानदान की दान धर्म और सार्वजनिक कार्य्यों की ओर भी बड़ी रुचि रही है।

जम्मड़

सेठ खेतसीदासजी जम्मड़ का परिवार, सरदारशहर

इस परिवार के लोग जम्मड़ गौत्र के सज्जन हैं। बहुत वर्षों से ये लोग तोल्यासर (बीकानेर) नामक स्थान पर रहते आ रहे थे। इस परिवार में सेठ उम्मेदमलजी हुए। आप तोल्यासर ही में रहे तथा साधारण लेन तथा खेती वाड़ी का काम करते रहे। आपके खेतसीदासजी नामक एक पुत्र हुए। आप तोल्यासर को छोड़कर, जब कि सरदार शहर बसा, व्यापार के निमित्त यहाँ आकर बस गये। यहाँ आने के १२ वर्ष पश्चात् याने संवत् १९०८ में यहीं के सेठ बींजराजजी दूगड़, सेठ गुलाबचन्दजी छाजेड़ और सेठ चौथमलजी आंचलिया के साथ २ कलकत्ता गये। तथा सब ने मिलकर वहाँ सेठ मौजीराम खेतसीदास के नाम से सामलात में अपनी एक फर्म स्थापित की। मालिकों की बुद्धिमानी एवम् व्यापार चातुरी से इस फर्म की दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति होने लगी। इसके पश्चात् संवत् १९२८ में सेठ बींजराजजी एवम सेठ खेतसीदासजी ने उपरोक्त फर्म से अलग होकर अपनी नई फर्म मेसर्स खेतसीदास तनसुखदास के नाम से खोली। यह फर्म भी ४० वर्ष तक चलती रही। इस परिवार की सारी उन्नति इसी फर्म से हुई। सेठ खेतसीदासजी का स्वर्गवास संवत् १९३६ में ही हो गया था। आपके २ पुत्र हुए। जिनके नाम क्रमशः सेठ कालूरामजी एवम् सेठ अनोपचंदजी (दूसरा नाम नानूरामजी) हैं।

सेठ कालूरामजी का जन्म संवत् १९१४ में हुआ। आपके छोटे भाई सेठ अनोपचंदजी थे। दोनों भाई बड़े प्रतिमा सम्पन्न और होशियार व्यक्ति थे। आप लोगों ने व्यापार में बहुत सम्पत्ति उपार्जित की। सामाजिक बातों पर भी आपका बहुत ध्यान था। पंच पंचायती के प्रायः सभी कार्यों में आप लोग सहयोग प्रदान किया करते थे। सेठ कालूरामजी बड़े स्पष्ट वक्ता और निर्भीक समाज सेवी थे। सेठ अनोपचन्दजी भी अपने भाई को सहयोग प्रदान करते रहते थे सेठ कालूरामजी का स्वर्गवास संवत् १९६८ में तथा सेठ अनोपचन्दजी का स्वर्गवास संवत् १९८२ में होगया। आप लोगों का स्वर्गवास होने के पूर्व ही सेठ बींजराजजी अलग हो चुके थे। सेठ कालूरामजी के तीन पुत्र हुए जिनके नाम क्रमशः सेठ मंगलचंदजी सेठ बिरदीचंदजी और सेठ शुभ करणजी हैं। सेठ अनोपचंदजी के कोई संतान न होने से सेठ बिरदीचंदजी दत्तक गये हैं। आप तीनों भाइयों का इस समय स्वतंत्र रूप से व्यापार हो रहा है। संवत् १९८६ तक आप लोग शामलात में व्यापार करते रहे।

सेठ मंगलचन्दजी की फर्म मेसर्स खेतसीदास मंगलचन्दजी के नाम से कलकत्ता के मनोहरदास कटला में चल रही है जहाँ कपड़ा एवम बैंकिंग का व्यापार होता है। सेठ मंगलचन्दजी मिलनसार एयम समझदार व्यक्ति हैं। आपके रिधकरनजी और चन्दनमलजी नामक २ पुत्र हैं।

सेठ बिरदीचन्दजी का जन्म संवत् १९४८ का है। आप मिलनसार एवम उत्साही सज्जन हैं। आपका ध्यान भी व्यापार की ओर अच्छा है। आपने अपने हाथ से ही कलकत्ता में एक कोठी खरीद की है। सरदार शहर में आपकी आलीशान हवेली बनी हुई है। आपकी फर्म कलकत्ता में ११२ क्रासस्ट्रीट में मेसर्स खेतसीदास मिलापचन्द के नाम से चल रही है। आपके मिलापचन्दजी नामक एक पुत्र हैं।



स्व० सेठ नानूरामजी जम्मड़, सरदारशहर.



सेठ बिरदीचन्दजी जम्मड़, सरदारशहर.



सेठ शुभकरणजी जम्मड़, सरदारशहर.



कुँवर मिलापचन्दजी S/o बिरदीचन्दजी जम्मड़, सरदारशहर.

बाबू शुभकरनजी का जन्म संवत् १९६५ का है। आप भी आजकल अपना स्वतंत्र व्यापार कलकत्ता में मनोहरदास कटला में मेसर्स खेतसीदास शुभकरन जम्मड़ के नाम से कर रहे हैं। आप भी मिलनसार एवम् सज्जन व्यक्ति हैं। आपकी भी सरदार शहर में एक सुन्दर हवेली बनी हुई है। यह परिवार श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी संप्रदाय का मानने वाला है।

नखत

मुकीम फूलचन्दजी नखत, कलकत्ता

इस परिवार के पूर्व व्यक्ति जैसलमेर रहते थे। वहाँ से सेठ जोरावरमलजी बंगला बस्ती (वर्तमान फैजाबाद यू० पी०) में आये। आपके पुत्र बख्तावरमलजी ने यहाँ कपड़े का व्यापार प्रारम्भ किया। आपने अपनी व्यापारिक प्रतिभा से इसमें अच्छी उन्नति की। धार्मिक क्षेत्र में भी आप कम न रहे। आपने यहाँ एक जैन मन्दिर बनवाया और श्री जिनकुशल सूरि महाराज की चरण पादुका स्थापित की। आपके कन्हैयालालजी, मुकुन्दीलालजी और किशनलालजी नामक तीन पुत्र हुए। आप लोगों का स्वर्गवास हो गया। सेठ कन्हैयालालजी के पुत्र बाबू फूलचन्दजी हुए।

फूलचन्दजी नखत—आप बड़े प्रतिभा सम्पन्न और तेज नजर के व्यक्ति थे। आप १४ वर्ष की अवस्था में कलकत्ता आये। यहाँ आपने जवाहरात का व्यापार शुरू किया। इसमें आपको आशातीत सफलता मिली। आपको संवत् १८८० में लार्ड रिपन ने कोर्ट ज्वेलर नियुक्त किया था। आप आजीवन कोर्ट ज्वेलर रहे। आपके सिखाये हुए बहुत से व्यक्ति नामी जौहरी कहलाये। आपका स्वर्गवास संवत् १९४१ में हो गया। आप बड़ी सरल प्रकृति के पुरुष थे। आपका स्थानीय पंच पंचायती में बहुत नाम था। आप अपने समय के नामी जौहरी और प्रतिष्ठित पुरुष थे। आपके कोई पुत्र न होने से आपके नाम पर बा० मोतीचन्दजी नाहटा ब्यावर से दत्तक आये।

मोतीचन्दजी नखत—आपने सर्व प्रथम सेठ लाभचन्दजी के साझे में "लाभचन्द मोतीचन्द" नाम से जवाहरात का व्यापार किया। आपकी इस व्यापार में अच्छी निगाह है अतएव आपने इसमें बहुत सफलता प्राप्त की। इस फर्म के द्वारा "लाभचन्द मोतीलाल फ्री जैन लिटररी और टेकनिकल स्कूल" खोला गया जिसमें आज केवल लिटररी की पढ़ाई होती है। आपने अपने पिताजी की इच्छानुसार उनके स्मारक में श्यामाबाई लेन में फूलचन्द मुकीम जैन धर्मशाला के नाम से एक बहुत सुन्दर धर्मशाला का निर्माण करवाया। इस धर्मशाला में बहुत अच्छा इन्तजाम है। आपने सम्मेद शिखरजी के मामले में भी और लोगों के साथ बहुत मदद की है। जाति हित की ओर आपका अच्छा ध्यान रहता है। सम्मेद शिखर के पहाड़ को खरीदने में जो रुपया आनन्दजी कल्याणजी की पेढ़ी से आया था उसे वापस करने के लिये ट्रस्ट कायम किया गया है। उसमें आपने १५०००) का कम्पनी का कागज उदारता पूर्वक प्रदान किया है। आप मिलनसार, समझदार और सज्जन व्यक्ति हैं। आपके इस समय फतेचंदजी

नामक एक पुत्र हैं। आपके बड़े पुत्र इन्द्रचन्दजी का स्वर्गवास हो गया, उनके सुरेन्द्रचन्दजी नामक पुत्र है। आप मन्दिरमार्गीय सज्जन हैं। आपके यहाँ जवाहरात का व्यापार होता है।

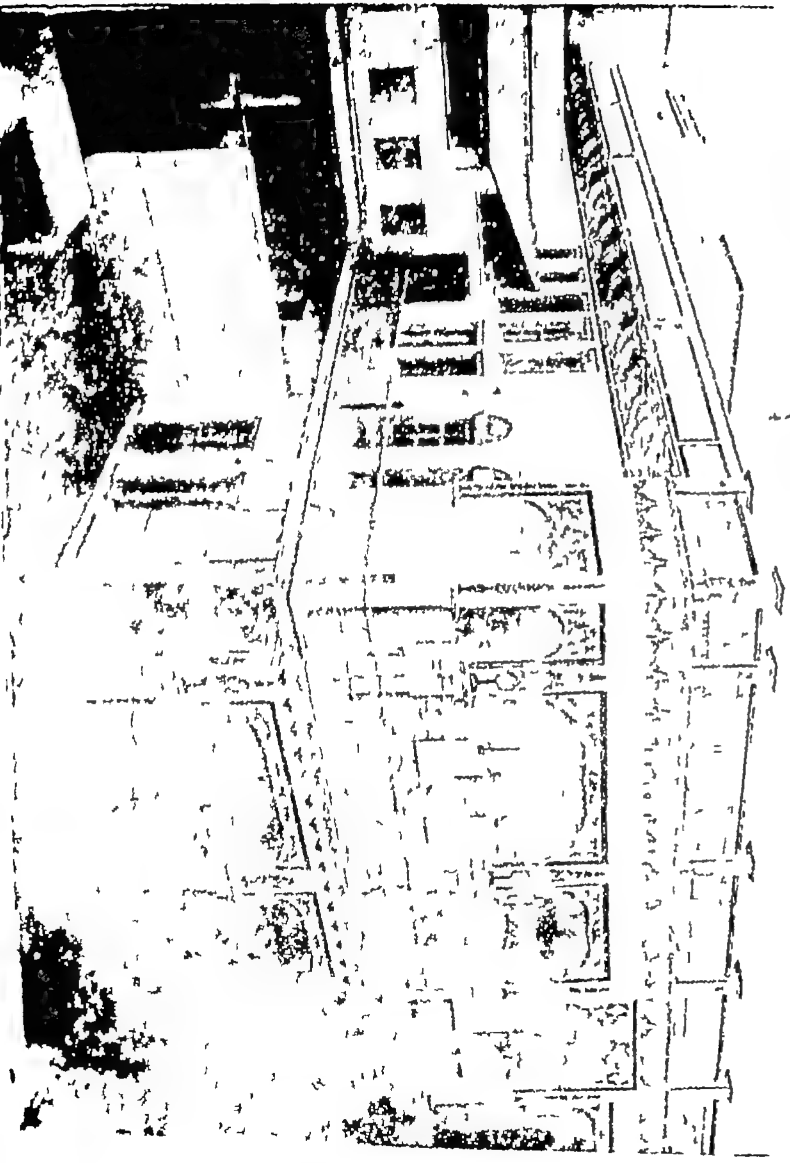
श्री आसकरणजी नखत, राजनांद गाँव

लगभग ७० साल पूर्व मारवाड़ के मियांसर नामक स्थान से आसकरणजी नखत राजनांदगांव आये। तथा व्यापार शुरू किया। धीरे २ आपकी राज्य में प्रतिष्ठा बढ़ी। राजनांदगाँव के महंत घासीदासजी, सेठ आसकरणजी नखत से बहुत प्रसन्न थे। तथा राज्य के महत्व के मामलों में सलाह लिया करते थे। नखतजीने राजनांदगांव के आदितवारी, बुधवारी, कामठीबाजार, वोहरा लेन आदि बाजार बसवाये। ओसवाल जाति को राजनांदगाँव में बसाने तथा उसे हर तरह से इमदाद देने में आपका पूर्ण लक्ष्य था। राजनांदगांव का व्यापारिक समाज आपके उपकारों का प्रेम पूर्वक स्मरण करता है। रियासत में आपकी बहुत बढ़ी प्रतिष्ठा थी। तथा राजा साहिब आपकी सलाहों की बहुत इज्जत करते थे। संवत् १९५२ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके दत्तक पुत्र लखमीचन्दजी भी संवत् १९७८ में गुजर गये। अब इस समय लखमीचन्दजी के पुत्र सूरजमलजी मौजूद हैं। इनकी वय १३ साल की है।

सेठ मयकरण मगनीराम नखत, (कुचेरिया) जालना

इस खानदान के लोगों का मूल निवासस्थान बड़ू (जोधपुर स्टेट) का है। आप श्वेताम्बर मन्दिर आम्नाय को मानने वाले सज्जन हैं। कुचेरे से उठने के कारण आपको कुचेरिया नाम से विशेष पुकारते हैं। इस खानदान के रघुनाथमलजी करीब सवा सौ वर्ष पहले मारवाड़ से दक्षिण में आये। आपने यहाँ आकर खेड़े में अपना व्यापार चलाया, तदन्तर इनके पुत्र मयकरणजी ने जालना में उक्त नाम से अपनी फर्म स्थापित की। आपका स्वर्गवास संवत् १९३५ में हो गया। आपके मगनीराजी और धनजी नामक दो भाई और थे। इनमें मगनीरामजी का स्वर्गवास संवत् १९१५ और धनजी का स्वर्गवास संवत् १९२२ में हो गया था। सेठ मयकरणजी और मगनीरामजी के निसंतान गुजरने पर सेठ मगनीरामजी के नामपर सूरजमलजी को दत्तक लिया। सेठ मयकरणजी के स्वर्गवासी होजाने पर सेठ सूरजमलजी ने फर्म के काम को सम्हाला। आपने इस फर्म की बहुत तरक्की की। आपका स्वर्गवास संवत् १९५६ में हुआ।

इस समय इस फर्म के मालिक श्री सेठ सूरजमलजी के पुत्र मोहनलालजी कुचेरिया हैं। आपका संवत् १९३६ में जन्म हुआ। आपके पुत्र न होने से आपनेकिशनलालजी को दत्तक लिया। इस खानदान की दानधर्म की ओर भी अच्छी रुचि रही है। यहाँ के मन्दिर की प्रतिष्ठा में आपने ५०००) सहायता के रूप में प्रदान किये थे। आपकी दुकान पर आढ़त, रूई, वगैरह का धंधा होता है।





श्री फूलचन्द मुकीम (नखत) धर्मशाला श्यामागली, कलकत्ता.

बाबू शुभकरनजी का जन्म संवत् १९६५ का है। आप भी आजकल अपना स्वतंत्र व्यापार कलकत्ता में मनोहरदास कटला मे मेसर्स खेतसीदास शुभकरन जम्मड़ के नाम से कर रहे हैं। आप भी मिलनसार एवम् सज्जन व्यक्ति हैं। आपकी भी सरदार शहर में एक सुन्दर हवेली बनी हुई है। यह परिवार श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी संप्रदाय का मानने वाला है।

नखत

मुकीम फूलचन्दजी नखत, कलकत्ता

इस परिवार के पूर्व व्यक्ति जैसलमेर रहते थे। वहाँ से सेठ जोरावरमलजी बंगला बस्ती (वर्तमान फैजाबाद यू० पी०) में आये। आपके पुत्र बख्तावरमलजी ने यहाँ कपड़े का व्यापार प्रारम्भ किया। आपने अपनी व्यापारिक प्रतिभा से इसमें अच्छी उन्नति की। धार्मिक क्षेत्र में भी आप कम न रहे। आपने यहाँ एक जैन मन्दिर बनवाया और श्री जिनकुशल सूरि महाराज की चरण पादुका स्थापित की। आपके कन्हैयालालजी, मुकुन्दीलालजी और किशनलालजी नामक तीन पुत्र हुए। आप लोगों का स्वर्गवास हो गया। सेठ कन्हैयालालजी के पुत्र बाबू फूलचन्दजी हुए।

फूलचन्दजी नखत—आप बड़े प्रतिभा सम्पन्न और तेज नजर के व्यक्ति थे। आप १४ वर्ष की अवस्था में कलकत्ता आये। यहाँ आपने जवाहरात का व्यापार शुरू किया। इसमें आपको आशातीत सफलता मिली। आपको संवत् १८८० में लार्ड रिपन ने कोर्ट ज्वेलर नियुक्त किया था। आप आजीवन कोर्ट ज्वेलर रहे। आपके सिखाये हुए बहुत से व्यक्ति नामी जौहरी कहलाये। आपका स्वर्गवास संवत् १९४१ में हो गया। आप बड़ी सरल प्रकृति के पुरुष थे। आपका स्थानीय पंच पंचायती में बहुत नाम था। आप अपने समय के नामी जौहरी और प्रतिष्ठित पुरुष थे। आपके कोई पुत्र न होने से आपके नाम पर बा० मोतीचन्दजी नाहटा ब्यावर से दत्तक आये।

मोतीचन्दजी नखत—आपने सर्व प्रथम सेठ लाभचन्दजी के साझे में "लाभचन्द मोतीचन्द" नाम से जवाहरात का व्यापार किया। आपकी इस व्यापार में अच्छी निगाह है अतएव आपने इसमें बहुत सफलता प्राप्त की। इस फर्म के द्वारा "लाभचन्द मोतीलाल फ्री जैन लिटररी और टेकनिकल स्कूल" खोला गया जिसमें आज केवल लिटररी की पढ़ाई होती है। आपने अपने पिताजी की इच्छानुसार उनके स्मारक में श्यामाबाई लेन में फूलचन्द मुकीम जैन धर्मशाला के नाम से एक बहुत सुन्दर धर्मशाला का निर्माण करवाया। इस धर्मशाला में बहुत अच्छा इन्तजाम है। आपने सम्मेद शिखरजी के मामले में भी और लोगों के साथ बहुत मदद की है। जाति हित की ओर आपका अच्छा ध्यान रहता है। सम्मेद शिखर के पहाड़ को खरीदने में जो रुपया आनन्दजी कल्याणजी की पेढ़ी से आया था उसे वापस करने के लिये ट्रस्ट कायम किया गया है। उसमें आपने १५०००) का कम्पनी का कागज उदारता पूर्वक प्रदान किया किया है। आप मिलनसार, समझदार और सज्जन व्यक्ति हैं। आपके इस समय फतेचंदजी

नामक एक पुत्र हैं। आपके बड़े पुत्र इन्द्रचन्दजी का स्वर्गवास हो गया, उनके सुरेन्द्रचन्दजी नामक पुत्र है आप मन्दिरमार्गीय सज्जन हैं। आपके यहाँ जवाहरात का व्यापार होता है।

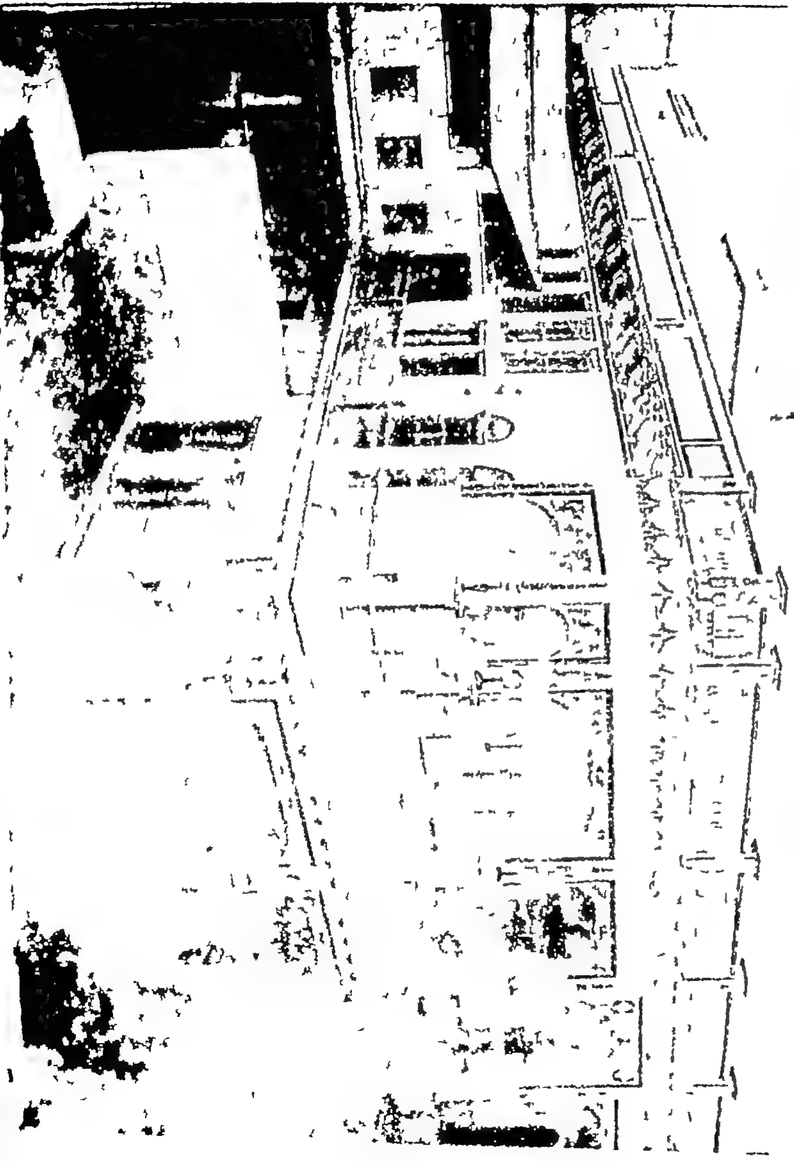
श्री आसकरणजी नखत, राजनांद गाँव

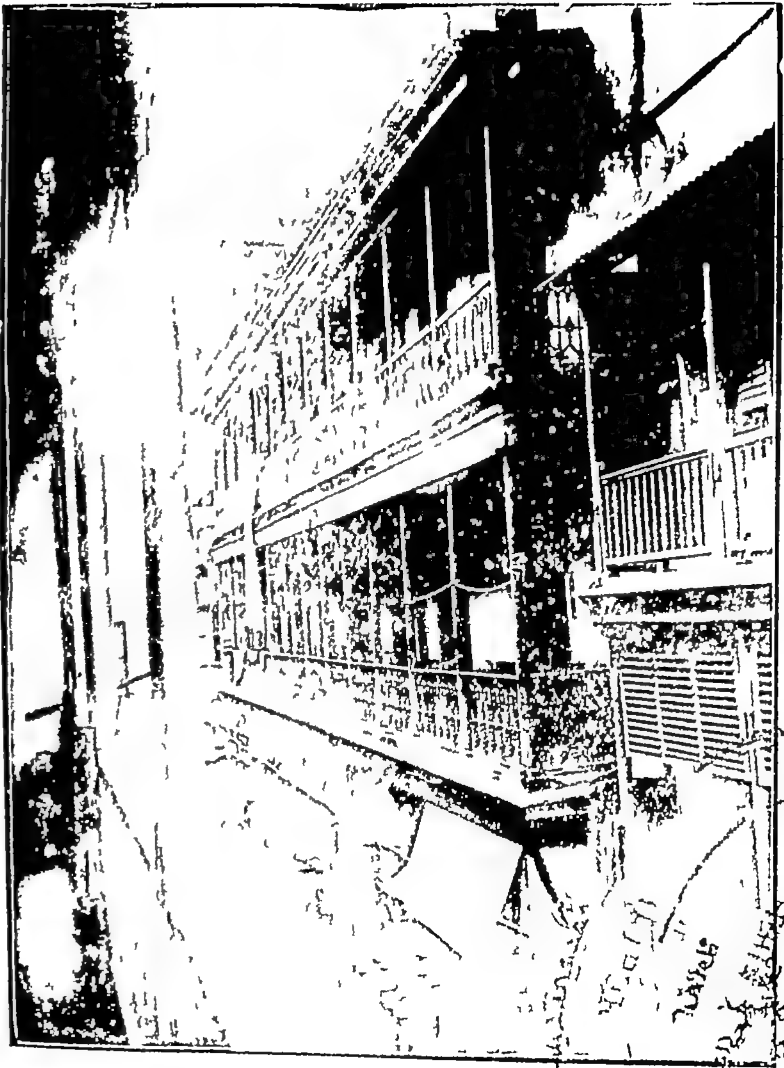
लगभग ७० साल पूर्व मारवाड़ के मियांसर नामक स्थान से आसकरणजी नखत राजनांदगांव आये। तथा व्यापार शुरू किया। धीरे २ आपकी राज्य में प्रतिष्ठा बढ़ी। राजनांदगाँव के महंत घासीदासजी, सेठ आसकरणजी नखत से बहुत प्रसन्न थे। तथा राज्य के महत्व के मामलों में सलाह लिया करते थे। नखतजीने राजनांदगांव के आदितवारी, बुधवारी, कामठीबाजार, बोहरा लेन आदि बाजार बसवाये। ओसवाल जाति को राजनांदगाँव में बसाने तथा उसे हर तरह से इमदाद देने में आपका पूर्ण लक्ष्य था। राजनांदगांव का व्यापारिक समाज आपके उपकारों का प्रेम पूर्वक स्मरण करता है। रियासत में आपकी बहुत बड़ी प्रतिष्ठा थी। तथा राजा साहिब आपकी सलाहों की बहुत इज्जत करते थे। संवत् १९५२ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके दत्तक पुत्र लखमीचन्दजी भी संवत् १९७८ में गुजर गये। अब इस समय लखमीचन्दजी के पुत्र सूरजमलजी मौजूद हैं। इनकी वय १३ साल की है।

सेठ मयकरण मगनीराम नखत, (कुचेरिया) जालना

इस खानदान के लोगों का मूल निवासस्थान बड़ू (जोधपुर स्टेट) का है। आप श्वेताम्बर मन्दिर आम्नाय को मानने वाले सज्जन हैं। कुचेरे से उठने के कारण आपको कुचेरिया नाम से विशेष पुकारते हैं। इस खानदान के रघुनाथमलजी करीब सवा सौ वर्ष पहले मारवाड़ से दक्षिण में आये। आपने यहाँ आकर खेड़े में अपना व्यापार चलाया, तदन्तर इनके पुत्र मयकरणजी ने जालना में उक्त नाम से अपनी फर्म स्थापित की। आपका स्वर्गवास संवत् १९३५ में हो गया। आपके मगनीराजी और धनजी नामक दो भाई और थे। इनमें मगनीरामजी का स्वर्गवास संवत् १९१५ और धनजी का स्वर्गवास संवत् १९२२ में हो गया था। सेठ मयकरणजी और मगनीरामजी के निसंतान गुजरने पर सेठ मगनीरामजी के नामपर सूरजमलजी को दत्तक लिया। सेठ मयकरणजी के स्वर्गवासी होजाने पर सेठ सूरजमलजी ने फर्म के काम को सम्हाला। आपने इस फर्म की बहुत तरक्की की। आपका स्वर्गवास संवत् १९५६ में हुआ।

इस समय इस फर्म के मालिक श्री सेठ सूरजमलजी के पुत्र मोहनलालजी कुचेरिया हैं। आपका संवत् १९३६ में जन्म हुआ। आपके पुत्र न होने से आपनेकिशनलालजी को दत्तक लिया। इस खानदान की दानधर्म की ओर भी अच्छी रुचि रही है। यहाँ के मन्दिर की प्रतिष्ठा में आपने ५०००) सहायता के रूप में प्रदान किये थे। आपकी दुकान पर आढ़त, रूई, वगैरह का धंधा होता है।





श्री फूलचन्द मुकीम (नखत) धर्मशाला श्यामागली, कलकत्ता.

लूंकड़

सेठ रेखचन्दजी लूंकड़, आगरा

इस खानदान का मूल निवास फलोदी (मारवाड़) है। संवत् १९०५ में फलोदी से सेठ सुल्तानमलजी लूंकड़ व्यापार के लिये आगरा आये, तथा सेठ लक्ष्मीचन्द गणेशदास के यहाँ मुनीमात का काम किया। संवत् १९२४ में सेठ सुल्तानचन्दजी के पुत्र रेखचन्दजी आगरा आये तथा अपने नाम से फर्म स्थापित की। और इसकी विशेष उन्नति भी आपके ही हाथों से हुई। आप बड़े व्यापार कुशल सज्जन थे। आप संवत् १९८६ में स्वर्गवासी हुए। इस समय आपके पुत्र नेमीचंदजी तथा फतहचन्दजी व्यापार का संचालन करते हैं। आप की फर्म "रेखचन्द लूंकड़" के नाम से बेलनगंज आगरा में व्यापार करती है। इस दुकान पर कई मिलों की सूत तथा कपड़े की एजन्सियां हैं। तथा इस व्यापार में आगरे में यह फर्म बहुत मातवर मानी जाती है। फलोदी में भी आपका परिवार प्रतिष्ठा सम्पन्न है।

सेठ सागरमल नथमल लूंकड़, जलगांव

इस परिवार का मूल निवास खेजड़ली (जोधपुर स्टेट) में है। यह परिवार स्थानकवासी आम्नाय का माननेवाला है। देश से सेठ सागरमलजी लूंकड़ जलगांव आये, तथा सेठ जीतमल तिलोकचन्द की भागीदारी में व्यापार आरम्भ किया है। आपने अपनी बुद्धिमत्ता एवं होशियारी से व्यापार में सम्पत्ति उपार्जित कर अपने परिवार की प्रतिष्ठा को बढ़ाया है। सेठ सागरमलजी ने जलगांव ओसवाल जैन बोर्डिंग हाउस को १५००) की सहायता दी है। इस संस्था के तथा स्थानीय पाँजरापोल के आप सेक्रेटरी हैं। जलगांव के व्यापारिक समाज में आप प्रतिष्ठित व्यापारी माने जाते हैं। आपका हैड आफिस "सागरमल नथमल" के नाम से जलगांव में है। आपने अपनी दुकान की शाखाएँ इन्दोर, खंडवा, तथा बुरहानपुर में भी स्थापित की हैं। इन सब दुकानों पर कपड़े तथा सूत का थोक व्यापार होता है। बुरहानपुर के ताप्ती मिल की एजंसी भी इस फर्म के पास है। इस समय सेठ सागरमलजी के पुत्र नथमलजी, पुखराजजी, मोहनलालजी तथा चन्दनमलजी हैं। ये चारों बंधु पढ़ते हैं।

सेठ प्रतापमल बुधमल लूंकड़, जलगांव

इस परिवार के पूर्वज मूल निवासी फलोदी के हैं। वहाँ से इस परिवार के पूर्वज सेठ महराजजी सम्वत् १६८१ में सीलारी (पीपाड़ से ५ मील) आये। इनकी छठी पीढ़ी में लूंकड़ गुमानजी हुए। इनके सरदारमलजी तथा मूलचन्दजी नामक दो पुत्र थे। सम्वत् १८६९ में सेठ सरदारमलजी पैदल मार्गद्वारा बाँकोड़ी (अहमद नगर) आये। पीछे से आपके छोटे भ्राता मूलचन्दजी के पुत्र मोहकमदासजी भी सम्वत् १८९६ में बाँकोड़ी आये। सेठ सरदारमलजी के पुत्र सेठ बुधमलजी लूंकड़ हुए। सेठ बुधमलजी के फौजमलजी, बहादुरमलजी, संतोषचन्दजी तथा प्रतापमलजी नामक ४ पुत्र हुए। इनमें से बाँकोड़ी से सेठ

संतोषचन्दजी सम्वत् १९३४ में तथा सेठ प्रतापमलजी १९४० में जलगांव आये, और यहाँ कपड़े का व्यापार आरम्भ किया। सम्वत् १९६२ में सेठ फोजमलजी स्वर्गवासी हुए। आपके छोटे भाई बहादुरमलजी के शिवराजजी तथा जुगराजजी नामक २ पुत्र हुए, इनमें जुगराजजी सेठ प्रतापमलजी लूंकड़ के नाम पर दत्तक गये।

सेठ शिवराजजी का जन्म सम्वत् १९४९ तथा जुगराजजी का १९५२ में हुआ। आप दोनों सज्जन "प्रतापमल बुधमल" के नाम से कपड़े का थोक व्यापार करते हैं, तथा जलगाँव के व्यापारिक समाज में प्रतिष्ठित व्यवसायी समझे जाते हैं। इन्दौर में भी आपने एक शाखा खोली है।

इसी तरह इस परिवार में सन्तोषचन्दजी के पौत्र (रिखबदासजी के पुत्र) भंवरीलालजी तथा बंशीलालजी हैं। तथा मोहकमदासजी के पौत्र कन्हैयालालजी आदि बांकोड़ी में व्यापार करते हैं।

सेठ रेखचन्द शिवराज लूंकड़ का खानदान, फलोदी

इस परिवार का मूल निवास फलोदी है। आप मन्दिर मार्गीय आम्नाय के माननेवाले हैं। इस परिवार में सेठ आलमचन्दजी के पुत्र गुलाबचन्दजी लूंकड़ फलोदी से पैदल चलकर व्यापार के लिये बड़ोदा गये तथा वहाँ फर्म स्थापित की। आपके पुत्र चुन्नीलालजी का जन्म सम्वत् १८९५ में हुआ। आपने अपने परिवार की प्रतिष्ठा को विशेष बढ़ाया। आप धार्मिक प्रवृति के पुरुष थे। आपका स्वर्गवास सम्वत् १९४४ में हुआ। आपके अनराजजी, चाँदमलजी, रेखचन्दजी, भोमराजजी तथा सुगनमलजी नामक ५ पुत्र हुए, इनमें सेठ अनराजजी का स्वर्गवास सम्वत् १९८५ में तथा चाँदमलजी का सम्वत् १९६५ में हुआ। सेठ चाँदमलजी के पुत्र माणकलालजी पनरोटी में अपना स्वतंत्र व्यापार करते हैं।

सेठ रेखचन्दजी लूंकड़ का जन्म सम्वत् १९२८ में हुआ। आप फलोदी के ओसवाल समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त व्यक्ति हैं। वृद्ध होते हुए भी आप ओसर मोसर आदि कुरीतियों के खिलाफ़ हैं। आपने संवत् १९५९ में बम्बई में "मूलचन्द सोभागमल" की भागीदारी में व्यापार शुरू किया तथा संवत् १९६६ में स्वतंत्र दुकान की। संवत् १९७२ में आपने पनरोटी (मद्रास) में अपनी दुकान स्थापित की। आपके बदनमलजी, जोगराजजी, शिवराजजी, सोहनराजजी तथा चम्पालालजी नामक पांच पुत्र हुए। इनमें बदनमलजी का स्वर्गवास अल्पवय में संवत् १९६४ में हो गया, और इनकी धर्मपत्नी ने दीक्षाग्रहण करली। लूंकड़ जोगराजजी ने पनरोटी में अपनी स्वतंत्र दुकान करली है तथा शेष तीन भाई अपने पिताजी के साथ व्यापार करते हैं। इस दुकान पर पनरोटी तथा मायावरम् में व्याज का काम होता है। लूंकड़ जोगराजजी के पुत्र मांगीलालजी, शिवराजजी के गजराजजी तथा पारसमलजी और सोहनराजजी, के केशरीमल हैं।

सेठ भोमराजजी के पुत्र फकीरचन्दजी हैं। आप पनरोटी तथा राजमनारकोडी में बैंकिंग व्यापार करते हैं, आपके पुत्र देवराजजी तथा जसराजजी हैं। सुगनमलजी के पुत्र नथमल तथा ताराचंद हैं।

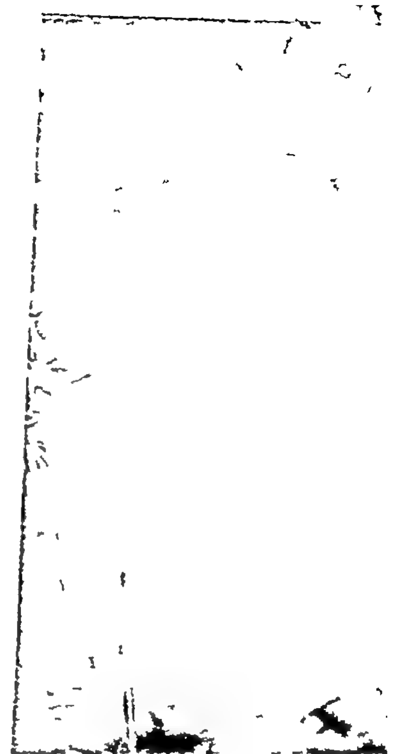
इस परिवार का व्रत उपवास व धार्मिक कार्यों की ओर बहुत बड़ा लक्ष है।

सेठ चन्नाजी डूंगरचंद, लूंकड़, बलारी

यह परिवार राखी (सीवाणा-मारवाड) का रहनेवाला है। इस परिवार के पूर्वज सेठ चन्नाजी



श्री सरदारमलजी छाजेड़, शाहपुरा-मेवाड़ (परिचय पेज ७४१ में)



बा० जोगराजजी [illegible]





लूंकद संवत् १९१६ में रायचूर आये, तथा वहाँ से बलारी आये और कपड़े का व्यापार शुरू किया। आप बड़े हिम्मतवर तथा व्यापार चतुर व्यक्ति थे। आपने अपने हाथों से ८-१० लाख रुपयों की सम्पत्ति कमाई। सम्वत् १९६० में आप स्वर्गवासी हुए। आपके भतीजे सेठ डूंगरचन्दजी भी आपके साथ व्यापार में मदद देते थे, उनका भी सम्वत् १९६५ के करीब स्वर्गवास हुआ। डूंगरचन्दजी के हजारीमलजी, बस्तीमलजी तथा मगनीरामजी हुए, इनमें हजारीलालजी, सेठ चन्नाजी के नाम पर दत्तक गये। इनका संवत् १९६५ में स्वर्गवास हुआ। तथा इनके पुत्र लच्छीरामजी सम्वत् १९८४ में स्वर्गवासी हो गये। सेठ बस्तीरामजी ने राखी के मन्दिर की प्रतिष्ठा कराई है। आप सम्वत् १९७५ में स्वर्गवासी हो गये।

वर्तमान समय में इस कुटुम्ब में बस्तीरामजी के पुत्र आईदानजी तथा लच्छीरामजी के पुत्र सम्पतराजजी हैं। आपकी दुकान चन्नाजी डूंगरचन्द के नाम से ब्याज का काम करती है। यह दुकान बलारी के ओसवाल पोरवाल फर्मों की मुकादम है। तथा बहुत मातवर मानी जाती है। इस दुकान के भागीदार सेठ आसूरामजी बागरेचा सिवाणा निवासी हैं। आपके परिवार में सेठ भोजाजी सीवाणे के नामांकित व्यक्ति थे, आपके पौत्र परशुरामजी संवत् १९४४ में बलारी आये, तथा कपड़े का व्यापार शुरू किया। संवत् १९६७ मे आप स्वर्गवासी हुए। आसूरामजी "आसूराम" बहादुरमल के नाम से कपड़े का घरू व्यापार करते हैं। आप समझदार तथा होशियार पुरुष हैं। आपके पुत्र बहादुरमलजी १५ साल के हैं।

सेठ मालचन्द पूनमचन्द लूँकड़, चिंचवड़ (पूना)

इस परिवार के मालिक खांगटा (पीपाड़ के पास) के निवासी हैं।। वहां से सेठ बरदीचन्दजी लूँकड़ संवत् १८८० में ताथवाड़ा (चिंचवड़ के पास) आये और यहाँ दुकान की। इनके मालचन्दजी तथा मगनीरामजी नामक २ पुत्र हुए। मालचन्दजी संवत् १९५० में चिचवड़ आये। संवत् १९६२ में आपका स्वर्गवास हुआ। सेठ मालचन्दजी के पूनमचन्दजी और भीकमचन्दजी तथा मगनीरामजी के गुलाबचन्दजी और कालूरामजी नामक पुत्र हुए। भीकमचन्दजी जातिउन्नति व धार्मिक कार्मों में सहयोग लेते रहे। संवत् १९७४ में आपका स्वर्गवास हुआ। इस समय इस परिवार में सेठ गुलाबचन्दजी लूँकड़ तथा सेठ पूनमचन्दजी के पुत्र रामचन्द्रजी, रघुनाथजी, गणेशमलजी तथा सूरजमलजी एवं कालूरामजी के पुत्र किशनदासजी विद्यमान हैं।

सेठ रामचन्द्रजी लूँकड़ शिक्षाप्रेमी सज्जन हैं। आप श्री फतेचन्द जैन विद्यालय चिंचवड़ के प्रेसीडेन्ट व खजानची है। आपके छोटे भ्राता व्यापार में भाग लेते हैं। आप चिंचवड़ के प्रतिष्ठित व्यापारी हैं। यह परिवार स्थानकवासी आम्नाय का मानने वाला है।

खजांची

सेठ प्रेमचन्द माणकचन्द खजांची, बीकानेर

इस परिवार वाले कांधलजी राजपूत पहले देवी कोट नामक स्थान में रहते थे वहाँ ये जैनी बने और बोहरगत का व्यापार करने लगे। ऐसा करने के कारण इनके वंशज कांवल बोहरा कहलाये। आगे

चलकर इसी परिवार के पुरुष जांजणजी जैसलमेर की राजकुमारी गंगा महाराणी के साथ करीब ३५० वर्ष पूर्व बीकानेर आये। आपके पुत्र रामसिंहजी को तत्कालीन बीकानेर महाराजा ने खजाने का काम इनायत किया। इसी समय से इस परिवारवाले खजांची कहलाते चले आ रहे हैं।

रामसिंहजी के पुत्र वेणीदासजी का परिवार ही इस समय बीकानेर में निवास कर रहा है। इसी परिवार में आगे चलकर सेठ उदयभानजी हुए। इनके कुशलसिंहजी और किशोरसिंहजी नामक दो पुत्र हुए। किशोरसिंहजी का परिवार नागोर चला गया। वेणीदासजी के बाद क्रमशः पीरराजजी, सुन्दर दासजी, तखतमलजी, मैनरूपजी, गेंदमलजी, हुए। गेंदमलजी के तीन पुत्र हुए आसकरनजी, धनसुखदासजी और मैनचंदजी। इनमें से धनसुखदासजी के बाद क्रमशः कस्तूरचंदजी, और हरकचन्दजी हुए। हरकचंद जी के चार पुत्र भमरचंदजी, आबड़दानजी, तेजकरनजी और सूरजमलजी हुए। वर्तमान फर्म सेठ तेजकरनजी के पुत्र सेठ प्रेमचंदजी की है।

सेठ प्रेमचंदजी यहाँ के स्टेट जौहरी हैं। आप मिलनसार व्यापार चतुर और धार्मिक पुरुष हैं। आपने अपकी एक ब्रांच कलकत्ता में भी जवाहरात का व्यापार करने में लिये खोली। इसके अतिरिक्त अजीतमल माणकचंद के नाम में साझे में भी एक कपड़े की फर्म खोल कर व्यापार की उन्नति की। आपने धार्मिक कार्यों में बहुत खर्च किया। आप कई जगह कई सभा सोसाइटियों के सभापति और मेम्बर रहे। आपको बीकानेर श्री संघ ने एक बहुत ही सुन्दर मानपत्र भेंट किया है। जिसमें आपकी उदारता, सहृदयता और धार्मिकता की तारीफ की गई हैं। आपके इस समय माणकचंदजी, मोतीचन्दजी और हीराचंदजी नामक तीन पुत्र हैं। माणकचन्दजी व्यापार में भाग लेते हैं।

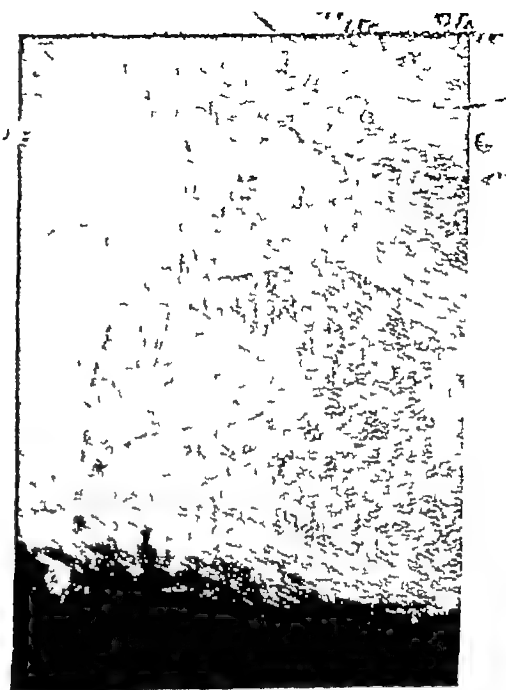
खजांची विजयसिंहजी का खानदान, भानपुरा

इस खानदान वाले सज्जनों का पहले निवास स्थान मारवाड़ था। इनकी उत्पत्ति चौहान राजपूतों से हुई। ऐसा कहा जाता है कि इस परिवार के पूर्व पुरुषों ने सम्राट अकबर के प्रांतिय खजाने का काम किया था। अतएव खजांची कहलाये। पश्चात् बादशाहत् की हेराफेरी से इस परिवार के पुरुष घूमते हुए महाराजा यशवंतराव प्रथम के राजत्व काल में रामपुरा भानपुरा चले आये।

इस परिवार में आगे चलकर तनसुखदासजी नामक एक बड़े बीर और प्रतिभासंपन्न व्यक्ति हुए। कहा जाता है कि महाराजा होल्कर की ओर से होने वाली गरासियों की लड़ाई में वे मारे गये। अतएव मुँडकटाई में महाराजा ने प्रसन्न होकर उनके वंशज के लिए रामपुरा भानपुरा जिले के झारड़ा, कंजार्डा और जमूणियां के कुल ग्रामों पर जमींदारी हक्क इनायत फरमाये। इसका मतलब यह कि इन स्थानों की सरकारी आमदनी पर २) सैकड़ा दामी के बतौर आपको मिलने लगा। इसके बाद संवत् १९०६ में १००० बीघा जमीन भी आपको जागीर स्वरूप प्रदान की। इसके अतिरिक्त भी आपको कई प्रकार के हक प्रदान किये। वर्तमान में आपके वंशजों को सरकार से इस जागीर के एवज में नगदी रुपये मिलते हैं। इस समय इस परिवार में खजाँची विजयसिंहजी हैं। आप इन्दौर स्टेट के निसरपुर नामक स्थान पर अमीन हैं। आप मिलनसार और सज्जन व्यक्ति हैं। जहां २ आप अमीन रहे वहां २ आप बड़े लोकप्रिय रहे। इस समय आपके अजीतसिंह और बलवन्तसिंह नामक दो पुत्र हैं।



सेठ रे[illegible]चंदजी लूंकड़, आगरा.



स्व० सेठ आसकरणजी नखत, राजनांदगांव.



[illegible]



कं० माणकचन्दजी खजांची (प्रेमचन्द माणकचन्द) बीकानेर.

कोचेटा

सेठ कुन्दनमल मगनमल कोचेटा, अचरापाकम् (मद्रास)

इस परिवार का मूल निवास जसवंताबाद (मेड़ते के पास) है। वहां से इस परिवार के पूर्वज सेठ रतनचन्दजी कोचेटा लगभग ७० साल पूर्व मुरार (गवालियर) गये, तथा व्यवहार स्थापित किया। आप बड़े साहसी पुरुष थे। आपने ही व्यापार तथा सम्मान को बढ़ाया। आपके चन्दनमल जी तथा कुन्दनमलजी नामक २ पुत्र हुए। कोचेटा चन्दनमलजी का जन्म संवत् १९१३ में हुआ। आप प्रथम मुरार में कंट्राक्टिङ्ग व्यापार करते थे, तथा फिर शिवपुरी में कपड़े का व्यापार चालू किया। आप संवत् १९७८ में तथा आपके पुत्र फतेमलजी संवत् १९८९ में स्वर्गवासी हुए। सेठ कुन्दनमलजी कोचेटा का जन्म संवत् १९१८ में हुआ। आप शिवपुरी में कपडे का व्यापार करते रहे। आप धार्मिक प्रवृति के पुरुष थे। संवत् १९५८ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र मगनमलजी कोचेटा हुऐ।

श्री मगनलालजी कोचेटा—आपका जन्म संवत् १९५६ में हुआ। आप मेट्रिक तक शिक्षण प्राप्त कर शिवपुरी में सार्वजनिक कामों में योग देने लगे। आप यहां के सरस्वती भवन के संचालक, जैन पाठशाला तथा सेवा समिति के सेक्रेटरी थे। वहां की जनता में आप प्रिय व्यक्ति थे। शिवपुरी से आप संवत् १९८० में मद्रास आये, तथा यहां आपने जैन सुधार लेखमाला प्रकाशित कर जैन जनता में ज्ञान प्रचार किया, इसी तरह एक जैन पाठशाला स्थापित करवाई। यहां से २ साल बाद आप अचरापाकम् (चिंगनपेठ) आये तथा यहां बैङ्किग व्यापार चालू किया। इस समय आपने भवाल (मारवाड़) में लोंकाशाह जैन विद्यालय का स्थापन किया है। आप जैन गुरुकुल व्यावर के मन्त्री और आत्म जागृति कार्य्यालय के सेक्रेटरी हैं। तथा मूथा जैन विद्यालय बलूंदा के सेक्रेटरी हैं। आप स्थानकवासी समाज के गण्य मान्य व्यक्तियों में हैं। और शिक्षा तथा समाजोन्नति के हरएक कार्य में बहुत बड़ा सहयोग लेते रहते हैं। आपके पुत्र आनन्दमलजी बालक हैं।

सेठ केशवलाल लालचंद कोचेटा, बोदवड़ (भुसावल)

इस फर्म का स्थापन सेठ रघुनाथदासजी ने अपने निवासस्थान पीपलाद (जोधपुर) से आकर एक शताब्दि पूर्व बोदवड़ में किया। आपका परिवार स्थानकवासी आम्नाय का मानने वाला है। आपका स्वर्गवास लगभग संवत् १९३० में हुआ। आपके लालचन्दजी तथा ताराचन्दजी नामक २ पुत्र हुए। आप दोनों भाइयों का जन्म क्रमशः संवत् १९२० तथा ३५ में हुआ।

सेठ लालचंदजी कोचेटा—आप बुद्धिमान तथा व्यापार चतुर पुरुष थे, आपने अपनी दुकान की शाखाएं अमलनेर, मलकापुर, खामगांव तथा अकोला में खोलीं और इन सब स्थानों पर जोरों से आढ़त का व्यापार कर अपनी दुकान की इज्जत व प्रतिष्ठा को बढ़ाया। संवत् १९८२ में आपका स्वर्गवास हुआ। आपके ३ साल पूर्व आपके छोटे भाई ताराचन्दजी निसंतान स्वर्गवासी हुए। सेठ लालचन्दजी के मूलचन्दजी, मोतीलालजी, हीरालालजी, माणकचन्दजी तथा सोभागचन्दजी नामक पाँच पुत्र हुए।

कोचेटा मोतीलालजी—आपका जन्म संवत् १९४८ में हुआ। आप धार्मिक प्रवृत्ति के पुरुष हैं। आपने कई वर्षों तक मलकापुर गोरक्षण संस्था का काम देखा। आप ही के परिश्रम से संवत् १९८२ में मलकापुर में स्थानकवासी सभा का अधिवेशन हुआ, इसकी स्वागत कारिणी के सभापति आप थे। आपने संवत् १९८९ में तमाम सांसारिक कार्यों से निवृत होकर दीक्षा गृहण की।

आप के शेष चारों भ्राता अपनी बोदवड़, खामगाँव, अकोला, अमलनेर तथा मलकापुर दुकानों का संचालन करते हैं। बरार व खानदेश में यह परिवार अच्छी प्रतिष्ठा रखता है। सेठ मूलचन्दजी के पुत्र रतनचन्दजी, भागचन्दजी, भाऊलालजी तथा चम्पालालजी व्यापार में सहयोग लेते हैं। मोतीलालजी के रामलालजी, रिखबदासजी तथा भीमलालजी और हीरालालजी के कान्तिलालजी, मगनमलजी, अजितनाथजी व धरमचन्दजी नामक चार पुत्र हैं। कान्तिलालजी ने कांग्रेस आंदोलन में सहयोग लेने के उपलक्ष्य में तीन मास के लिये कारावास प्राप्त किया है।

सेठ मानमल चांदमल कोचेटा, भुसावल

यह परिवार पर्वतसर (मारवाड़) का निवासी है। इस परिवार के पूर्वज सेठ मानमलजी, चाँदमलजी तथा ब्रजलालजी नामक तीन भ्राता व्यापार के लिये भुसावल आये तथा लेनदेन का व्यापार शुरू किया। इन्हीं भाइयों के हाथों से व्यापार को तरक्की मिली। इन तीनों सज्जनों का स्वर्गवास क्रमशः १९८२, ७७ तथा सं० १९७४ में हुआ। कोचेटा ब्रजलालजी के पन्नालालजी व केसरीचन्दजी नामक २ पुत्र हुए। इनमें केसरीचन्दजी, मानमलजी के नाम पर दत्तक गये। सेठ पन्नालालजी का स्वर्गवास सं० १९७१ में हो गया। इनके पुत्र कन्हैयालालजी, चाँदमलजी के नाम पर दत्तक गये। सेठ पन्नालालजी के बाद इस दुकान के व्यापार को केसरीचन्दजी तथा कन्हैयालालजी ने ज्यादा बढ़ाया। आपके यहाँ बोदवड़, फैजपुर, व भुसावल के खेती, आढ़त व लेन-देन का व्यापार होता है। तथा आस पास के ओसवाल समाज में अच्छी प्रतिष्ठा रखते हैं। सेठ चाँदमलजी ने बोदवड़ में एक उपाश्रय बनवाया है। इसी तरह अमलनेर के स्थानक में भी आपने सहायता दी। अमलनेर में आपके कई मकानात हैं।

श्री कहैंयालालजी कोचेटा, वणी (बरार)

यह परिवार वड्डू (जोधपुर स्टेट) का निवासी है। वहाँ से इस परिवार के पूर्वज सेठ हजारीमलजी कोटेचा लगभ ५० वर्ष पूर्व वणी के पास नांदेपेरा नामक स्थान में आये। आपका स्वर्गवास संवत् १९८० में हुआ। आपने संवत् १९५० के लगभग वणी में सेठ रायमल मगनमल की भागीदारी में हीरालाल हजारीमल के नाम से व्यापार शुरू किया तथा इस व्यापार में अच्छी सम्पति तथा प्रतिष्ठा पाई। आपके पुत्र कन्हैयालालजी विद्यमान हैं।

सेठ कन्हैयालालजी कोचेटा की उम्र ४० साल की है। आप इधर दो सालों से "हीरालाल हजारीमल" नामक फर्म से अलग हो कर "मूलचन्द लोनकरण" के नाम से कपड़ा तथा सराफी का अपना स्वतन्त्र व्यापार करते हैं। आप तेरा पंथी आम्नाय के मानने वाले सज्जन हैं, तथा शास्त्रों की अच्छी जान-

कारी रखते हैं। वणी के ओसवाल समाज में आपका परिवार नामाङ्कित समझा जाता है। आपके पुत्र लोणकरणजी तथा मूलचन्दजी हैं।

सेठ पन्नालाल ताराचंद कोटेचा, वणी (वरार)

इस परिवार का निवास बडू (मारवाड़) है। देश से सेठ ताराचन्दजी कोटेचा लगभग ३० साल पूर्व नांदेपेरा आये, तथा वहाँ से वणी आकर सेठ "हीरालाल हजारीमल" फर्म पर कार्य किया। इधर आप १० सालों से कपड़ा तथा सराफी का अपना घरू व्यापार करते हैं। आपका जन्म संवत् १९३५ में हुआ। आप वणी के ओसवाल समाज में प्रतिष्ठित सज्जन हैं। तथा मिलनसार एवं समझदार व्यक्ति हैं। आपके पुत्र बालचन्दजी कोटेचा का जन्म सं० १९५९ में हुआ। आप भी तत्परता से व्यापार में भाग लेते हैं तथा उत्साही युवक हैं।

सेठ ताराचन्दजी के भतीजे कालूरामजी कोटेचा सेठ "हीरालाल हजारीमल" नामक फर्म के १० साल से भागीदार हैं। आपका जन्म संवत् १९५२ में हुआ है। आप होशियार तथा सज्जन व्यक्ति हैं।

सांढ

सांढ गौत्र की उत्पत्ति—कहा जाता है कि संवत् ११७५ में सिद्धपुर पाटण में जगदेव नामक एक राजपूत सरदार निवास करता था। इसके सूरजी, संखजी, साँवलजी, सामदेवजी आदि ७ पुत्र हुए। इनको आचार्य हेमसूरिजी ने जैन धर्म का प्रतिबोध दिया। सांवलजी का बड़ा पुत्र बड़ा मोटा ताजा था अतः इनको पाटण के राजा सिद्धराज ने "संड मुसंड" कहा। फिर इन्होंने राजा के मस्त सांढ को पछाड़ा, इससे इनकी पदवी सांढ हो गई और आगे चलकर यह सांढ गौत्र हो गई। इसी तरह जगदेव के अन्य पुत्रों से सुखाणी, सालेचा, पुनमियाँ आदि शाखाएँ हुई।

सांढ तेजराजजी का खानदान, जोधपुर

इस परिवार के पूर्वज सांढ भगोतीदासजी मेड़ते में रहते थे। इनके पौत्र शोभाचन्दजी (निहालचन्दजी के पुत्र) ने जोधपुर में आकर अपना निवास बनाया। इनके पुत्र खींवराजजी हुए। विक्रम की अठारहवीं शताब्दि के मध्य काल में इस परिवार का व्यापार बहुत उन्नति पर था। महाराजा बख्तसिंहजी के समय जोधपुर राज्य से इस खानदान का लेन-देन का बहुत सम्बन्ध था। स्टेट के बाइसों परगनों में इनकी दुकाने थीं। इन दुकानों के लिये जोधपुर महाराज बख्तसिंहजी विजयसिंजी तथा मानसिंहजी ने इस परिवार को कस्टम की माफ़ी के परवाने बख्शे, तथा अनेकों रुक्के देकर इस खानदान के गौरव को बढ़ाया।

सांढ खींवराजजी, सिंघवी इन्द्रराजजी के साथ एक युद्ध में गये थे। इसी तरह डीडवाने की

फौज में भण्डारी प्रतापमलजी के साथ और बलूंदे के पास झगड़े में सिंघी गुलराजजी के साथ साँढ खींवराजजी गये थे। इन युद्धों में सम्मिलित होने के लिए इनको रतनपुरा का ढीवड़ा और एक बावड़ी इनायत हुई थी। संवत् १८९७ में आपका स्वर्गवास हुआ। आपके पुत्र शिवराजजी तथा पौत्र तेजराजजी भी रियासत के साथ लाखों रुपयों का लेन-देन करते रहे। आप लोग जोधपुर के प्रधान सम्पतिशाली साहुकार थे। साँढ तेजराजजी जोधपुर में दानी तथा प्रसिद्ध व्यक्ति हो गये हैं। आपका स्वर्गवास १९४८ में हुआ। आपके पुत्र रङ्गराजजी तथा मोहनराजजी हुए। सेठ रङ्गराजजी १९५८ में स्वर्गवासी हुए। तथा सेठ मोहनराजजी विद्यमान हैं। आपका जन्म संवत् १९३८ में हुआ। आपके समय में इस फर्म का व्यापार फैल हो गया। तथा इस समय आप जोधपुर में निवास करते हैं। रंगराजजी के नाम पर अमृतराजजी दत्तक हैं।

सेठ केवलचन्द मानमल सांढ, बीकानेर

अठारहवीं शताब्दी में इस परिवार के पूर्व पुरुष सेठ सतीदानजी मेड़ता से बीकानेर आये। आपके हुकुमचन्दजी और हुकुमचन्दजी के केवलचन्दजी नामक पुत्र हुए। आपने सम्वत् १८९० में उपरोक्त नाम से गोटाकिनारी की फर्म स्थापित की।। इसमें आपको बहुत सफलता रही। आप मन्दिर संप्रदाय के सज्जन थे। आपके पाँच पुत्र हुए जिनके नाम सदासुखजी, मानमलजी, इन्द्रचन्दजी, सूरजमलजी और प्रेमसुखजी था। आप सब लोगों का परिवार स्वतन्त्र रुप से व्यापार कर रहा है। सेठ मानमलजी बड़े प्रतिभावान व्यक्ति थे। आपने दिल्ली में अपनी एक फर्म स्थापित की थी और आप ऊँटों द्वारा वहाँ माल भेजते थे। इसमें आपको अच्छी सफलता रही। आपके धार्मिक विचार अच्छे थे। आपका स्वर्गवास हो गया। आपके केसरीचन्दजी नामक पुत्र हुए।

वर्तमान में सेठ केशरीचन्दजी ही व्यापार का संचालन कर रहे हैं। आपके हाथों से इस फर्म के व्यापार की ओर भी तरक्की हुई। आपने दिल्ली के अलावा कलकत्ता में भी यही काम करने के लिये फर्म खोली। इस प्रकार इस समय आपकी तीन फर्मे चल रही हैं। आप मन्दिर मार्गीय व्यक्ति हैं। आपका स्वभाव मिलनसार और उदार है। आपने स्थायी सम्पत्ति बढ़ाने की ओर भी काफी ध्यान रखा। बीकानेर में कोट दरवाजे के पास वाला कटला आपही का है। इसमें करीब १॥ लाख रुपया खर्च हुआ। इस समय आपके कोई पुत्र नहीं है।

भाभू

भाभू गौत्र की उत्पत्ती—कहा जाता है कि रतनपुर के राजा ने माहेश्वरी वैश्य समाज के राठी गौत्रीय भाभूजी नामक पुरुष को अपना खजांची मुकर्रर किया। जब राजा रतनसिंहजी को सांप ने डसा, और जैनाचार्य्य जिनदत्तसूरि ने उन्हें जीवनदान दिया। तब राजा अपने मन्त्री, खजाची आदि सहित जैनधर्म अंगीकार किया। इस प्रकार खजाची भाभूजी की संताने "भाभू" नाम से सम्बोधित हुई।

लाला जगतूमलजी भाभू का खानदान, अम्बाला

यह परिवार मन्दिर मार्गीय आम्नाय का मानने वाला है। आप मूल निवासी धनोर के हैं, अत एव धनोरिया नाम से मशहूर हुए। इस खानदान में लाला सुचनमलजी के लाला जेठूमलजी, लाला भगवानदासजी, लाला जगतूमलजी तथा लाला रलियारामजी नामक ४ पुत्र हुए।

लाला जगतूमलजी—आपका जन्म सन् १८७६ में हुआ था। अम्बाला की "आत्मानन्द जैनगंज" नामक सुप्रसिद्ध बिल्डिंग आपही के सतत परिश्रम से बनकर तयार हुई। आप यहाँ की स्कूल कमेटी के प्रधान थे। आपने अम्बाला की लोकल संस्थाओं तथा पंजाब की जैन संस्थाओं को काफी इमदाद दी। अपनी मृत्यु समय में आपने करीब तेरह हजार रुपयों का दान किया। इस प्रकार प्रतिष्ठापूर्वक जीवन बिता कर सन् १९२६ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके स्मारक में यहाँ एक "जगतूमल जैन औषधालय" स्थापित है। इसमे हजारों रोगी लाभ उठाते हैं। आपके ४ पुत्र हैं जिनमें लाला सदासुखरायजी, लाला मुन्नीलालजी के साथ और लाला नेमदासजी बी० ए०, लाला रतनचंदजी के साथ व्यापार करते हैं।

लाला नेमीदासजी—आपका जन्म संवत् १९६१ में हुआ। आपने सन् १९२६ में बी० ए० पास किया। आप आत्मानन्द जैन सभा पंजाब के ऑनरेरी सेक्रेटरी व जैन हाई स्कूल अम्बाला की कमेटी के मेम्बर हैं। इसके अलावा आप गुजरानवाला गुरुकुल की कमेटी के मेम्बर, अम्बाला चेम्बर ऑफ कामर्स के डायरेक्टर, शक्ति एन्श्यूरेन्स कम्पनी के डायरेक्टर, जैन रीडिंग रूम अम्बाला के प्रेसिडेण्ट, जगतूमल औषधालय के मैनेजर तथा हस्तिनापुर तीर्थ कमेटी के मेम्बर हैं। कहने का तात्पर्य यह कि आप प्रतिभाशाली व विचारक युवक हैं। लाला सदासुखरायजी के पुत्र केसरदासजी, मुन्नीलालजी के पुत्र ओमप्रकाशजी, विमल-प्रकाशजी, चमनलालजी तथा धर्मचन्दजी और रतनचन्दजी के पुत्र फीरोजचन्दजी हैं।

लाला दौलतरामजी भाभू का खानदान, अम्बाला

यह खानदान मन्दिर आम्नाय का उपासक है। इस खानदान में लाला फग्गूमलजी के लाला दौलतरामजी, बख्तावरमलजी, बुलाकामलजी तथा शादीरामजी नामक ४ पुत्र हुए।

लाला दौलतरामजी—आपका जन्म संवत् १९१५ में हुआ था। आप बड़े नामी और प्रसिद्ध पुरुष हुए। आपने ही पहले आत्मारामजी महाराज के उपदेश को स्वीकार किया था। आपने अपने जीवन के अंतिम १० साल हस्तिनापुर तीर्थ की सेवा में लगाये, तथा उसकी बहुत उन्नति की। इस काम में आपने हजारों रुपये अपने पास से लगाये। संवत् १९८१ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके गोपीचंदजी, मुकुन्दीलालजी, ताराचंदजी, हरिचन्दजी, इन्द्रसेनजी नामक ५ पुत्र हुए।

लाला गोपीचन्दजी—आपका जन्म संवत् १९४२ में हुआ। आपने गवर्नमेंट की सर्विस व बंबई में व्यापार कर सम्पत्ति उपार्जित की। आपने अपने पुत्रों को उच्च शिक्षा दिलाने का काफी लक्ष दिया है। आप श्री आत्मानन्द जैन हाई स्कूल की मैनेजिंग कमेटी के सदस्य तथा आत्मानंद जैन सभा के मन्त्री हैं। आपके ५ पुत्र हैं। जिनके नाम बाबू रिखबदासजी, ज्ञानदासजी, सागरचन्दजी, सुमेरचन्द तथा राजकुमार जी हैं। लाला रिखबदासजी ने सन् १९२४ में बी० ए० तथा १९२६ में एल० एल० बी० की डिगरी

हासिल की। आप प्रतिभाशाली युवक हैं तथा आत्मानन्द जैन हाई स्कूल कमेटी के मेम्बर हैं। आपके छोटे बन्धु बाबू ज्ञानदासजी ने सन् १९२८ में बी० ए० सन् १९३० में एम० एस० सी० तथा १९३३ में एल० एल० बी० की डिगरी प्राप्त की। आपका स्कूली जीवन बहुत प्रतिभापूर्ण रहा है। आप एफ० ए० तथा एल० एल० बी की परीक्षाओं में सारी पंजाब युनिवर्सिटी में प्रथम आये। इसके लिये आपको गोल्ड तथा सिलवर मेडल भी मिले। आप आत्मानन्द जैन हाई स्कूल के ओल्ड बॉयज एसोसिएशन के प्रेसिडेंट हैं। और भी आपका जीवन बहुत अनुकरणीय है। आपके छोटे बंधु बाबू सागरचन्दजी बी० ए० के अंतिम वर्ष में अध्ययन कर रहे हैं। आपका भी स्कूली जीवन बहुत उज्वल है। कई विषयों में आप युनिवर्सिटी में प्रथम रहे हैं। आपकी योग्यताओं का सम्मान गवर्नमेंट ने सर्टिफिकेट देकर किया था। इनसे छोटे सुमेरचन्दजी, गुजरानवाला गुरुकुल में पढ़ते हैं।

लाला हरिचन्दजी यहाँ के पंच हैं। आपके टेकचन्दजी तथा दीवानचन्दजी नामक २ पुत्र हैं। इसी प्रकार लाला मुकुन्दीलालजी के पुत्र वीरचन्दजी तथा इन्द्रसेनजी के पुत्र प्रेमचन्दजी हैं।

लाला मसानियामल आलूमल भाभू, अम्बाला

इस खानदान का मूल निवास स्थान थनौर है। इस खानदान में लाला बहादुरमलजी के पुत्र मसानियामलजी हुए। इनका संवत् १९४० में स्वर्गवास हुआ। आपके पुत्र आलूमलजी संवत् १९६४ में स्वर्गवासी हुए। आलूमलजी के लाला छज्जूमलजी लाला धर्मचन्दजी तथा लाला संतलालजी नामक तीन पुत्र हुए।

लाला छज्जूमलजी भाभू—आपका जन्म संवत् १९१४ में हुआ। आप अम्बाला के प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। तथा अम्बाला स्थानकवासी समाज के चौधरी हैं। गवर्नमेंट की ओर से भी आप बाजार चौधरी रहे हैं। इसी प्रकार स्थानीय गौशाला के भी आनरेरी सुपरिण्टेण्डेण्ट रहे हैं। आपने अपने नाम पर अपने भतीजे लक्ष्मीचन्दजी को दत्तक लिया। बाबू लक्ष्मीचन्दजी स्थानकवासी समाज के मुख्य व्यक्ति हैं। आपकी वय ५० साल की है। आपके पुत्र रामलालजी, चिरंजीलालजी, जयगोपालजी, विमलप्रसादजी तथा जुगलकिशोरजी हैं। इनमें लाला रामलालजी तथा चिरंजीलालजी उत्साही युवक हैं, तथा स्थानकवासी सभा और जैन युवक मंडल के कामों में अग्रगण्य रहते हैं। आपके यहाँ "मसानियामल आलूमल" के नाम से बैंकिंग, बजाजी, ज्वेलरी तथा सराफी व्यापार होता है।

लाला संतलालजी—आप बड़े धर्मात्मा तथा समाज सेवी पुरुष थे। संवत् १९६२ में ४० साल की उम्र में आपका स्वर्गवास हुआ। आपके बाबूरामजी तथा प्यारेलालजी नामक २ पुत्र हुए। लाला बाबूलाल जी का जन्म संवत् १९४८ में हुआ। आप अम्बाला स्थानकवासी पंचायत के सेक्रेटरी तथा गवर्नमेंट की ओर से असेसर हैं। पंजाब स्था० जैन कान्फ्रेंस के सेक्रेटरी भी आप रहे थे। इस समय उसकी प्रबन्धक कमेटी के मेम्बर हैं। आपके पुत्र टेकचन्दजी तथा पारसदासजी हैं। आपके यहाँ सूत दरी तथा बैङ्किग व्यापार होता है। लाला प्यारेलालजी भी यही व्यापार करते हैं। इनके पुत्र रोशनलालजी, अमरकुमारजी तथा श्यामसुन्दरजी हैं।

लाला बाबूलाल बंसीलाल भाभू, का खानदान, होशियारपुर

इस खानदान के लोग श्वेताम्बर जैन स्थानकवासी आम्नाय को मानने वाले हैं। इस खानदान के पूर्वज पहले टाण्डा (पंजाब) में रहते थे। वहाँ से लाला किशनचंदजी होशियारपुर आये। आपके लाला फोगूमलजी, धूमामलजी तथा गनपतरायजी नामक तीन पुत्र हुए। इस खानदान में लाला फोगूमल जी ने व्यापार और बैङ्किग का काम शुरू किया। तथा इसकी खास तरक्की लाला फोगूमलजी के पुत्र लाला चूकामलजी ने की। उस समय यह खानदान होशियारपुर में बिजिनेस की दृष्टि से पहला माना जाता था और अब भी इसकी वैसी ही प्रतिष्ठा है। लाला फोगूमलजी के तीन पुत्र हुए लाला पिण्डीमलजी, चूकामलजी तथा गोविंदमलजी। इनमें से यह परिवार लाला चूकामलजी का है।

लाला चूकामलजी के दो पुत्र हुए लाला कन्हैयालालजी और लाला रल्लूमलजी। लाला कन्हैया लालजी के लाला बाबूमलजी एवं लाला बंशीलालजी नामक दो पुत्र है। लाला बाबूमलजी के बनारसीदासजी रोशनलालजी एवं रतनलालजी नामक तीन पुत्र हैं। लाला बनारसीदासजी के हित कुमारजी नामक एक पुत्र हैं।

लाला बंशीलालजी—आप होशियारपुर की ओसवाल समाज में बड़े प्रतिष्ठात व्यक्ति माने जाते हैं। आप यहाँ भी म्युनसीपालिटी के कमिश्नर भी रहे है आप होशियारपुर की स्थानकवासी सभा के प्रेसिडेंट भी हैं। आप बैङ्किग का व्यापार करते हैं। आपके पुत्र मदनलालजी ने एफ० ए० तक शिक्षा पाई है तथा दिनेशकुमारजी एफ० ए० का अध्ययन करते हैं। तीसरे महेन्द्रकुमारजी है।

लाला शिब्बूमल वजीरामल का खानदान, मलेर कोटला (पंजाब)

इस खानदान के लोग जैन श्वेताम्बर स्थानकवासी सम्प्रदाय को मानने वाले सज्जन हैं। इस इस परिवार में लाला इन्द्रसेनजी हुए। आपके पोल्लमलजी, रोडामलजी, सौदागरमलजी एवं हीरामलजी नामक चार पुत्र थे। इनमें से यह खानदान लाला रोडामलजी का है। लाला रोडामलजी का स्वर्गवास संवत् १९१४ में हुआ। आपके लाला शिभूमलजी एवं लाला ज्योतिमलजी नामक दो पुत्र हुए। लाला शिभूमलजी का जन्म संवत् १९०१ में हुआ। ये इस खानदान में बड़े नामी व्यक्ति हुए हैं। आपका संवत् १९८० में स्वर्गवास हुआ। आपके लाला वजीरामलजी नामक एक पुत्र हुए। लाला ज्योतिमलजी का जन्म संवत् १९१६ में व स्वर्गवास संवत् १९७६ में हुआ।

लाला वजीरामलजी का जन्म संवत् १९२३ में हुआ। आपके अमरचन्दजी एवं करमचंदजी नामक पुत्र हैं। लाला अमरचंदजी का जन्म संवत् १९६० तथा करमचंदजी का संवत् १९६२ में हुआ। आप दोनों भाई इस समय अपनी फर्म का कारबार देखते हैं। आपदोनों बड़े सज्जन हैं। लाला अमरचंद जी के ज्ञानचंदजी एवं फूलचंदजी नामक दो पुत्र हैं। इस परिवार के लोग मलेर कोटला की ओसवाल समाज में प्रतिष्ठित माने जाते हैं और आप यहाँ की बिरादरी के चौधरी हैं। लाला ज्योतिमलजी के पुत्र लाला मूलामलजी अपना स्वतंत्र व्यापार करते है। इनके चंदनदासजी, बनारसीदासजी एवं रतनचंदजी नामक तीन पुत्र हैं।

लिंगे

लाला जयदयाल शाह गुरांताशाह लिंगे, सियालकोट

यह खानदान स्थानकवासी आम्नाय का है। तथा कई पीढ़ियों से स्यालकोट में निवास करता है। इस खानदान के बुजुर्ग लाला गण्डामलजी के पुत्र दीवानचंदजी और पौत्र अमीचन्दजी हुए। लाला अमीरचंदशाहजी के गोविंदरामशाहजी, गंगारामशाहजी तथा मुकन्दाशाहजी नामक ३ पुत्र हुए। इनमें यह परिवार लाला गंगाराम शाहजी का है।

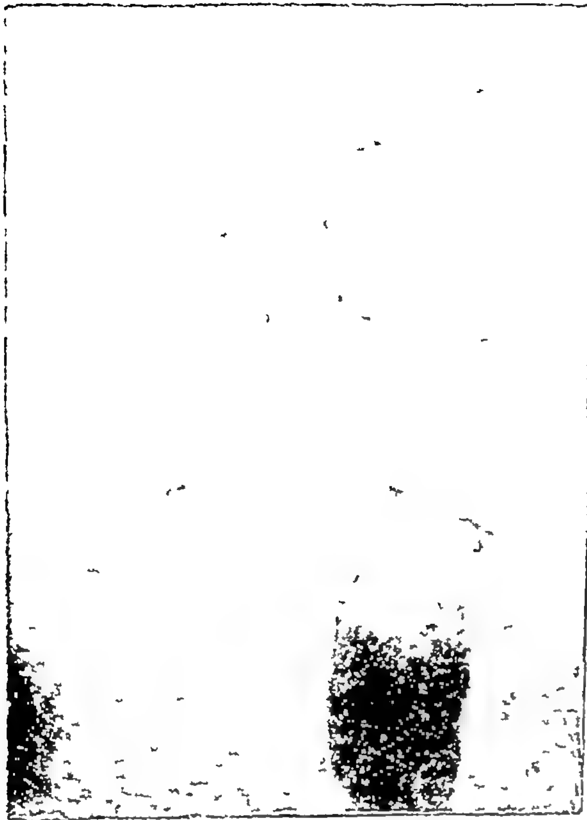
लाला गंगाराम शाहजी—आपका जन्म संवत् १८९० में हुआ। आपने सियाल कोट मे एक कागज का कारखाना तथा सूसी का कारखाना खोला था। आपका अपने समाज में बड़ा सम्मान था। संवत् १९५४ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके जयदयाल शाहजी, गुरांताशाहजी, चूनीशाहजी देवीदयालशाहजी तथा हरदयालशाहजी नामक ५ पुत्र हुए। आप सब बंधुजन सम्मिलित रूप में व्यापार करते थे। तथा सियालकोट के प्रसिद्ध बैंकर माने जाते थे। इन भाइयों में लाला देवीदयाल शाहजी मौजूद हैं। लाला जयदयालशाहजी के पुत्र खजांचीशाहजी तथा गुरांताशाहजी के पुत्र शादीलालजी मौजूद हैं।

लाला खजांचीशाहजी—अपका जन्म संवत् १९४५ में हुआ। आप सियाल कोट के जैन समाज में प्रतिष्ठित सज्जन हैं। तथा डिस्ट्रिक्ट दरबारी हैं। यहाँ के सैंट्रल बैंक के डायरेक्टर तथा कोर्ट के असेसर रहे हैं। आप पंजाब जैन संघ के खजांची भी रहे थे। कहने का मतलब यह है कि आप यहाँ के मशहूर आदमी हैं। आपके पुत्र नगीनालालजी सराफी व्यापार करते हैं तथा शेष मदनलालजी, सिकन्दरपालजी, कृष्ण गोपालजी, तथा सुदर्शनजी हैं। लाला शादीलालजी अपने चचा खजांची शाहजी के साथ "जयदयाल शाह गुरांता शाह" के नाम से बैंकिंग तथा मनीलेंडिग का व्यापार करते हैं। आपके जुगेन्द्रपाल तथा मनोहर पाल नामक २ पुत्र हैं।

लाला काकूशाह जीवाशाह लिंगे का खानदान, रावलपिंडी

इस खानदान के बुजुर्ग लाला हरकरणशाहजी के रामसिंहजी, लालूशाहजी, मन्नाशाहजी, भोलाशाहजी तथा ठाकरशाहजी नामक ५ पुत्र हुए। उनमें लाला मन्नाशाहजी के काकूशाहजी, ढोडेशाहजी तथा प्रेमाशाहजी नामक ३ पुत्र हुए। इनमें प्रेमाशाहजी मौजूद हैं।

लाला काकूशाहजी का खानदान—आपका जन्म संवत् १९१२ में हुआ था। आप बड़े सादे और पुराने खयालों के सज्जन थे। आपने करीब ६० साल पहिले कपड़े का रोजगार शुरू किया। संवत् १९४४ में आप तीनों भाइयों का रोजगार अलग २ हुआ। संवत् १९७६ में आपका स्वर्गवास हुआ। आपके लाला अमीचंदजी, लाला रादूशाहजी, लाला उत्तमचन्दजी तथा लाला फकीरचन्दजी नामक ४ पुत्र हुए। लाला अमीचंदजी की याद दाश्त बहुत ऊँची है। आपका जन्म संवत् १९३२ में हुआ। इस दुकान के



स्व० लाला काकूशाहजी लिगे, रावलपिण्डी.



स्व० लाला डोडेशाहजी लिगे, रावलपिण्डी





व्यापार में आप परिश्रम पूर्वक भाग लेते है। आपके पुत्र अमरनाथजी नेमनाथजी तथा गोरखनाथजी हैं। आप तीनों भाई व्यापार में भाग लेते हैं। लाला रादूशाहजी संवत् १९८८ में गुजरे। आपके पुत्र मुकुन्दलालजी, सरदारीलालजी तथा शोरीलालजी अपना स्वतंत्र व्यापार करते हैं।

लाला उत्तमचन्दजी—आपका जन्म संवत् १९२८ में हुआ। आप रावलपिंडी के जैन समाज में प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। आपने सन् १९२० में कन्याशाला को एक साल का खरच दिया। तथा इस पाठशाला की विल्डिंग बनवाने में २ हजार रुपये दिये। इस समय आप जैन सुमति मित्र मंडल के सभापति, बजाजा एसोशिएसन के वाइस प्रेसिडेंट तथा जैनेन्द्र गुरुकुल पंचकूला की प्रबंधक कमेटी के मेम्बर हैं। आप बड़े शांत, समझदार तथा प्रतिष्ठित सज्जन है। आपके छोटे भाई फकीरचंदजी आपके साथ व्यापार में भाग लेते हैं। लाला उत्तमचन्दजी के लालचन्दजी, चिमनलालजी तथा रोशनलालजी नाम ३ पुत्र है। इनमें रोशनलालजी एफ० ए० में पढ़ते हैं। शेष व्यापार में भाग लेते हैं। फकीरचंदजी के पुत्र वकीलचंदजी भी एफ० ए० में पढ़ते हैं। इस कुटुम्ब की २ कपड़े की दुकाने मन्नाशाह काकूशाह के नाम से रावलपिंडी में हैं इसके अलावा एक दुकान अमृतसर में भी है। पंजाब प्रान्त के मशहूर खानदानों में इस परिवार की गणता है।

लाला डोडेशाहजी का खानदान—आप बिरादरी के मुखिया तथा बहादुर तबियत के पुरुष थे। संवत् १९६० में आपका स्वर्गवास हुआ आपके पुत्र लाला जीवाशाहजी हैं।

लाला जीवशाहजी—आपका जन्म संवत् १९४३ में हुआ। आपका स्वभाव बड़ा मिलनसार है। आप दिलेर तबियत और गुसदानी सज्जन है। रावलपिंडी के जैन समाज में आप मशहूर व्यक्ति हैं। आपके यहाँ डोडेशाह जीवाशाह के नाम से कपड़े का व्यापार होता है। आपके पुत्र लालचन्दजी का संवत् १९७३ में स्वर्गवास हो गया। आपने जैनेन्द्र गुरुकुल पंचकूला को १ हजार तथा जैन सुमति मित्र मंडल को सात सौ रुपये प्रदान किये हैं।

लाला तोतेशाह काशीशाह लिंगे, जम्बू (काश्मीर)

इस खानदान के बुजुर्ग लाला दयानतशाहजी को काश्मीर महाराजा गुलाबसिंहजी ने तिजारत करने के लिए इज्जत के साथ जम्बू में बुलाया। तथा मकान और दुकान की जगह दी। आपने सराफी व्यापार चालू किया। आपके पुत्र लाला बूँटाशाहजी भी सराफी व्यापार करते रहे। इनके लाला निहाला शाहजी तथा तोतेशाहजी नामक २ पुत्र हुए। इन दोनों भाइयों ने व्यापार में तरक्की प्राप्त कर रियाया तथा दर्बार में इज्जत प्राप्त की। आप दोनों का कारबार ४० साल पहिले अलग २ हुआ। लाला तोतेसाहजी का स्वर्गवास २० साल पूर्व हुआ। आप उम्र भर म्युनिसिपेलेटी के मेम्बर रहे। आपके पुत्र लाला काशीराम शाहजी विद्यमान हैं।

लाला काशीराम शाहजी—आपका जन्म संवत् १९२९ में हुआ। आपका बिरादरी तथा राज-दरबार में अच्छा सन्मान है। आप २० सालों से जम्बू म्युनिसिसिपैलेटी के मेम्बर हैं। आपके यहाँ "तोतेशाह काशीशाह" के नाम से बैंकिंग व्यापार होता है, तथा यहाँ के व्यापारिक समाज में आपकी फर्म

नामी समझी जाती है। आपके पुत्र प्यारेलालजी B. A. में पढ़ते हैं तथा दूसरे हीरालालजी तिजारत में हिस्सा लेते हैं। यह परिवार स्थानकवासी आम्नाय का है।

लाला निहालशाहजी के हजारीशाहजी, करमचंदजी तथा धनपतचंदजी नामक ३ पुत्र हुए। इनमें करमचन्दशाहजी मौजूद हैं। आप सराफी तथा साहुकारे का काम करते हैं। आपके पुत्र बनारसी दासजी तथा कस्तूरीलालजी हैं। लाला हजारीशाहजी के पुत्र नानकचंदजी तथा धनपतचंदजी के पुत्र कपूरचंदजी तिजारत करते हैं। नानकचन्दजी के पुत्र किशोरीलालजी तथा शादीलालजी हैं।

लाला मय्यालाल काशीशाह लिगे, रावलपिंडी

इस खानदान के बुजुर्ग लाला जीवाशाहजी ने ६० साल पहिले कपड़े का रोजगार शुरू किया। आप जैन बिरादरी के चौधरी थे। इनके मय्याशाहजी तथा गोबिन्दशाहजी नामक दो पुत्र हुए। मय्याशाहजी संवत् १९६१ में स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र लाला काशीशाहजी मौजूद हैं। आप जाति सेवा के कामों में बड़ी दिलचस्पी लेते हैं। जैन यंगमैन एसोसिएशन, वालंटियर कोर और जैन प्रकाश सभा में आप प्रधान हैं। अजमेर साधु सम्मेलन के समय आपने सत्याग्रह किया था। आप रावलपिंडी गौशाला की व्यवस्थापक कमेटी के मेम्बर हैं। आपके यहाँ कपड़े का व्यापार होता है।

मनिहानी

लाला सावनशाह मोतीशाह मनिहानी का खानदान, (सियालकोट)

यह खानदान स्थानकवासी सम्प्रदाय का मानने वाला है। इस परिवार का खास निवास स्थान सियालकोट का ही है। इस परिवार के वंशज लाला रामजीदासजी के पुत्र लाला मंगलशाहजी, और पौत्र बहादुरशाहजी हुए। लाला बहादुरशाहजी के रल्लूशाहजी, मुश्ताकशाहजी और गुलाबशाहजी नामक पुत्र हुए। लाला रल्लूशाह के परिवार में लाला खुशीरामजी प्रसिद्ध धर्म भक्त थे। आप मशहूर व्यक्ति थे। संवत् १९७० में आपका स्वर्गवास हुआ। लाला मुश्ताकशाहजी के लाला सावनशाहजी तथा रामचन्दजी नामक दो पुत्र हुए।

लाला सावनशाहजी—आपका जन्म संवत् १९२० में हुआ। आप इस समय इस परिवार मे वयोवृद्ध सज्जन हैं। आपने व्यवसाय में हजारों लाखों रुपये उपार्जित किये। आपकी जवाहरात के के व्यापार में बड़ी बारीक दृष्टि है। आप यहाँ के प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। आपके इस समय ७ पुत्र हैं। जिनके नाम क्रमशः दीपचन्दजी, मोतीलालजी, पन्नालालजी, मुंशीरामजी, हीरालालजी, हंसराजजी तथा रोशनलालजी हैं। लाला दीपचन्दजी संवत् १९५८ से अपने पिताजी से अलग व्यापार करते हैं। आपके इस समय मुन्नीलालजी और सुदर्शनकुमारजी नामक दो पुत्र हैं।

लाला दीपचन्दजी को छोड़ कर शेष सब भाई सम्मिलित काम काज करते हैं। मोतीलालजी स्थानीय जैन कन्या पाठशाला के संरक्षक (Patron) तथा इसकी कार्य-कारिणी समिति के सदस्य हैं। लाला मुंशीलालजी प्रायः सभी सार्वजनिक कामों में भाग लेते रहते हैं। आप वर्तमान में महावीर जैन लायब्रेरी की एक्झीक्यूटिव के मेम्बर, डिस्ट्रिक्ट दरबारी तथा Life Associate of red cross society हैं। लाला मोतीलालजी के जंगीलालजी, मनोहरलालजी, शादीलालजी, कपूरचन्दजी एवम् छोटेलालजी नामक पांच पुत्र हैं, लाला पन्नालालजी के शांतिलालजी चेनलालजी, देवराजजी एवम् विमलकुमार जी नामक चार पुत्र हुए, लाला मुन्शीरामजी के कुनणराजजी एवम् परतमनलालजी नामक दो पुत्र हैं। लाला हीरालालजी के दर्शनकुमारजी तथा सुदीशकुमार जी और लाला हंसराजजी के बच्छराजजी, जगमोहनजी एवम् बाबूलालजी नामक पुत्र हैं।

यह परिवार सियालकोट की ओसवाल समाज में बड़ा प्रतिष्ठित माना जाता है। इस परिवार की सियालकोट में मेसर्स सावनशाह मोतीशाह के नाम से प्रधान फर्म तथा इसी की यहीं पर दो शाखाएँ हैं। इन सब फर्मों पर सराफी तथा बैंकिंग व्यापार होता है।

श्री हंसराजजी मनिहानी का खानदान सिढ़ोरा (पंजाब)

इस खानदान का मूल निवासस्थान सिरसा (हिसार) का है। वहाँ से उठ कर यह खानदान सिढ़ौरा (अम्बाला) में आकर करीब सात आठ पुश्त पहले आबाद हुआ। यह परिवार जैन श्वेताम्बर मन्दिर मार्गीय आम्नाय का मानने वाला है। इस परिवार में लाला जौंकीमलजी, दयारामजी और मौजीरामजी नामक तीन भाई थे। लाला मौजीरामजी बड़े बहादुर, दिलेरजंग और पराक्रमी थे। आपने कई लड़ाइयें लड़ीं थी। लाला जौंकीमलजी के लाला श्यामलालजी नामक एक पुत्र हुए। आपने इस खानदान की जमीदारी और नाम को बढ़ाया। आपके लाला नेमदासजी और लाला नेमदासजी के हीरालालजी, चढ़तीमलजी और हाकमरायजी नामक पुत्र हुए। इस खानदान में लाला चढ़तीमलजी और हाकमरायजी बड़े मशहूर व्यक्ति हो गये हैं। आपने अपनी ज़मीदारी और इज्जत को बढ़ाया। लाला हाकमरायजी करीब ३० वर्षों तक म्युनिसीपल कमिश्नर रहे। चढ़तीमलजी के बसंतामलजी और मित्रसेनजी नामक दो पुत्र हुए। लाला बसंतामलजी के लाला मुकुन्दीलालजी नामक पुत्र हुए।

लाला मुकुन्दीलालजी—आपका जन्म संवत् १९२७ में हुआ। आपने जैन हाई स्कूल अम्बाला तथा हस्तिनापुर तीर्थ स्थान की धर्मशाला में एक एक कमरा बनवाय। आपके हंसराजजी, लाला सूरजमलजी तथा लाला दीपचन्दजी नामक ३ पुत्र हुए। लाला मुकुन्दीलालजी का स्वर्गवास सन् १९२६ में हो गया है।

लाला हंसराजजी—आपका जन्म संवत् १९५६ में हुआ। आप सिढ़ौरा के प्रतिष्ठित रईस हैं। आप यहाँ की स्थानीय म्युनिसीपलिटी के व्हाइस चेअरमेन, यहाँ के हिंदी हाई स्कूल तथा हिन्दू गर्ल्स स्कूल के ऑनरेरी सेक्रेटरी रहे हैं। आप यहाँ की गवर्नमेंट में डिस्ट्रिक्ट दरबारी हैं तथा दानि

इन्श्यूरंस कम्पनी लि० के डायरेक्टर हैं। आप अछूतोद्धार और विद्या प्रचार के कामों में बहुत भाग लेते हैं। आपके छोटे भाई सूरतरामजी कॉलेज में तथा दीपचन्दजी हॉई स्कूल में पढ़ते हैं।

लाला मित्रसेनजी के बड़े पुत्र अमीचन्दजी—आपका जन्म संवत् १९४२ का है। आप पहले यहाँ के म्युनिसीपल कमिश्नर रह चुके हैं। आपकी यहाँ पर बहुत बड़ी जमीदारी है। आपके रिखबदासजी, रोशनलालजी अमरनाथजी नामक तीन पुत्र हैं। लाला बसंतालालजी ने अपने भाई लाला पन्नालालजी की मदद से सिंहौरामें एक विशाल जैन मन्दिर बनवाया है। यह खानदान यहाँ बड़ा प्रष्ठित और रईस माना जाता है।

लाला चेतराम नराताराम मुनिहानी, जुगरावाँ (पंजाब)

यह परिवार स्थानकवासी आम्नाय का मानने वाला है। इस खानदान के पुरुष लाला चेतराम जी के यहाँ लम्बे समय से पसारी का होता आया है। आपका स्वर्गवास हो गया है। आपके लाला नरातमरामजी तथा मुनीलालजी नामक २ पुत्र विद्यमान हैं। आप दोनों भाई अच्छे कामों में सहायता देते रहते हैं। लाला नरातारामजी के यहाँ चेतराम नरातमराम के नाम से पसारी का व्यापार होता है। लाला मुनीलालजी जैन प्रचारक सभा के खजाञ्ची हैं। आप गुरुकुल में बारी देते हैं। आपके यहाँ जानकीराम बालकराम के नाम से बिसाती का व्यापार होता है।

तातेड़

लाला मुन्नीलाल मोतीलाल ताँतेड़, अमृतसर

इस परिवार का खास निवास लाहौर है। वहाँ से ७५ साल पहिले लाला मेलूमलजी अमृतसर आये। यह परिवार स्थानकवासी आम्नाय का मानने वाला है। लाला मेलूमलजी ने जनरल मर्चेंटाइज़ के व्यापार में अच्छी सफलता प्राप्त की। आपके पुत्र लाला माहताब शाहजी का जन्म करीब संवत् १९०३-४ में हुआ। अमृतसर के ओसवाल समाज में आप प्रतिष्ठित्रान सज्जन थे। जाति बिरादरी के कामों में आपकी सलाह वजनदार मानी जाती थी। आपने अपने व्यापार को बहुत उन्नति पर पहुँचाया। संवत् १९५९ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके लाला मुन्नीलालजी, लाला मोतीलालजी लाला भीमसेनजी तथा लाला हंसराजजी नामक ४ पुत्र हुए।

लाला मुनीलालजी, मोतीलालजी—आपका जन्म क्रमशः संवत् १९४७ तथा संवत् १९४९ में हुआ। आपने अपने व्यापार को काफी तरक्की पर पहुँचाया है। आपके दोनों छोटे भाई भी व्यापार में आपके साथ भाग लेते हैं। आपने अमृतसर में अपनी ३ ब्रांचें फेंसी कपड़ा, होयजरी तथा मनिहारी के थोक व्यवसाय के लिए खोली हैं। आप बिलायत से डायरेक्टर कपड़े का इम्पोर्ट करते हैं। लाला रतनचन्द हरजसराय की गोल्डशाखा में आप भागीदार हैं। लाला मुन्नीलालजी श्री सोहनलाल जैन अनाथालय के कोषाध्यक्ष हैं। तथा धार्मिक और जातीय कामों में दिलचस्पी लेते रहते हैं। आप स्थानक-

वासी सभा की व्यवस्थापक कमेटी के मेम्बर हैं। अमृतसर के ओसवाल समाज में आपका खानदान नामी है। आपके पुत्र मनोहरलालजी, रोशनलालजी, तिलकचन्दजी तथा धर्मपालजी हैं। इनमें लाला मनोहरलाल जी ने एफ० ए० का इम्तहान दिया है। शेष सब पढ़ते हैं। लाला मोतीलालजी के पुत्र शादीलालजी इंटर में पढ़ते हैं। तथा छोटे मदनलालजी तथा जितेन्द्रनाथजी हैं। इसी तरह लाला भीमसेनजी के पुत्र कस्तूरीमलजी तथा हंसराजजी के पुत्र राजपालजी तथा सतपालजी हैं।

लाला मस्तरामजी एम० ए० एल० एल० बी० तांतेड़ अमृतसर

इस खानदान के पूर्वज लाला शिवदयालजी अपने खास निवास लाहौर से कांगड़ा, होशियारपुर के जिलों में गये, वहाँ आप एक्साइज के कंट्राक्ट का काम करते थे। आप लगभग ५० साल पूर्व स्वर्गवासी हुए। आपके लाला मिलखीमलजी, लाला लछमणदासजी, तथा लाला नन्दलालजी नामक पुत्र विद्यमान हैं। लाला लछमणदासजी को उनके चाचा लाला महताबसाहजी ७ वर्ष की आयु में लाहौर ले आये, पीछे से इनके छोटे भाई भी अमृतसर आ गये। लाला लछमणदासजी इस समय आढ़त का काम करते हैं। आपने मेट्रिक तक शिक्षा पाई है। आपके पुत्र लाला मस्तरामजी हैं।

लाला मस्तरामजी—आपका जन्म संमत् १९५८ में हुआ। आप सन् १९२१ में बी० ए० ऑनर्स, सन् १९२४ में एम० ए० तथा १९२६ में एल० एल० बी० पास हुए। सन् १९२९ में आप हिन्दू कॉलेज में एकॉनामिक प्रोफेसर हुए। इसके अलावा आप यहाँ वकालत भी करते हैं। आपने सन् १९२२ में लाला बाबूरामजी तथा मोतीशाहजी के सहयोग से लाहौर में जैन एसोशिएसन नामक संस्था स्थापित की थी। इसके अलावा आप अमर जैन होस्टल के सुपरिण्टेण्डेण्ट तथा "आफताब जैन" के एडीटर भी रहे थे। इस समय आप स्थानकवासी जैन सभा पंजाब, ऑल इण्डिया स्थानकवासी सभा, एस० एस० यूथ कान्फ्रेस, तथा अमृतसर की लोकल स्था० सभा की प्रबन्ध कारिणी कमेटी के मेम्बर और श्रीराम आश्रम हाई स्कूल की मैनेजिंग कौंसिल तथा बोर्ड ऑफ ट्रस्टीज के मेम्बर हैं। तथा पब्लिक वेल फेअर लीग के प्रेसिडेण्ट हैं। कहने का मतलब यह कि आप यहां के जैन समाज में अग्रगण्य व्यक्ति हैं। लाला मिलखीमलजी के बड़े पुत्र हंसराजजी आढ़त का काम करते हैं। तथा छोटे लाला देसराज जी एफ० ए० दो साल पहिले स्वर्गवासी हो गये हैं।

लाला दुनीचंद प्यारेलाल जैन-ताँतेड़, अमृतसर

यह परिवार सो सवासो वर्ष पूर्व लाहोर से अमृतसर आया यह परिवार स्थानकवासी आम्नाय का मानने वाला है। इस परिवार के पूर्वज लाला कन्हैयालालजी के लाला कसुरियामलजी, छज्जूमलजी आदि ११ पुत्र थे। लाला कसुरियामलजी नामी जौहरी थे। लाला छज्जूमलजी धार्मिक प्रवृत्ति के के व्यक्ति थे। आपका संवत् १९४९ में स्वर्गवास हुआ। आपके लाला चुन्नीलालजी, दुनीचन्दजी और प्रभुदयालजी नामक ३ पुत्र हुए। लाला चुन्नीलालजी के पुत्र देवीचंदजी, नगीनालालजी तथा मायूरामजी अमृतसर में स्वतन्त्र व्यापार करते हैं।

लाला दुनीचंदजी—आपका जन्म संवत् १९४० हुआ। आप आरम्भ में जवाहरात का काम करते थे। बाद आपने बसाती का व्यापार शुरू किया। इस व्यवसाय में आपको अच्छी सफलता मिली। धार्मिक कार्मों में आपकी अच्छी रुचि है। आपके प्यारेलालजी, प्रेमनाथजी, विलायतीरामजी, रतनचंदजी तथा रोशनलालजी नामक ५ पुत्र हैं। लाला प्यारेलालजी का जन्म संवत् १९६० में हुआ। आप अपने व्यापार का उत्तमता से संचालन कर रहे हैं। आप हायजरी तथा मनीहारी का थोक व्यापार और इस माल का जापान आदि देशों से डायरेक्ट इम्पोर्ट करते हैं। आपके छोटे भ्राता प्रेमनाथजी तथा विलायतीरामजी व्यापार में भाग लेते हैं। अमृतसर में यह परिवार अच्छा प्रतिष्ठित माना जाता है। प्यारेलालजी के पुत्र तिलकराज तथा जतनराज हैं।

लाला मुंशीरामजी जैन ताँतड़, लाहोर

इस खानदान के पुरुष स्थानकवासी सम्प्रदाय के मानने वाले हैं। इस परिवार का मूल निवास जयपुर है। वहां से यह परिवार लाहोर आया। इस परिवार में लाला नंदलालजी हुए। आपके पुत्र लाला शिव्बूमलजी और लाला पन्नालालजी हुए। लाला शिव्बूमलजी ने लगभग ५५ साल पूर्व क्राकरी मरचेंट्स का व्यापार शुरू किया। आप दोनों बंधु बड़े सज्जन व्यक्ति थे। लाला पन्नालाल जी संवत् १९८२ के स्वर्गवासी हुए। आपके लाला मुंशीरामजी, गंडामलजी तथा कपूरचन्दजी नामक ३ पुत्र विद्यमान हैं। इनमें गंडामलजी लाला शिव्बूमलजी के नाम पर तथा कपूरचन्दजी मोघा में अपने मामा के नाम पर दत्तक गये हैं।

लाला मुंशीरामजी—आपका जन्म संवत् १९५२ में हुआ। आपने मेट्रिक तक शिक्षण पाया। सन् १९२१ से आपने देशकी सेवाओं में योग देना आरम्भ किया, तथा उस समय से आप लाहोर कांग्रेस के तमाम कार्मों में दिलेरी से हिस्सा लेते हैं। आप कई सालों तक लाहोर कांग्रेस के कोषाध्यक्ष व सूबा कांग्रेस के मेम्बर रहे हैं। सन् १९३० में सरकार ने बग़ावत फैलाने के आरोप पर दफा १२४ में आपको १ साल की सख्त सजा दी, तथा बी. क्लास रिकमेंड की। सत्याग्रह के समय आपने १ हजार वालंटियर दिये थे। और २ सालों तक वर्द्धमान नामक पेपर भी चालू किया था। आप कई सालों तक पंजाब मरचेंट एसोशिएसन के मेम्बर रहे। इस समय आप लाहोर ग्राम वेअर एसोशिएसन के सेक्रेटरी, अछूतोद्धार कमेटी, स्वराज सभा तथा एस० एस० जैन सभा, की व्यवस्थापक कमेटी के मेम्बर हैं। इसी तरह श्री अमर जैन होस्टल लाहोर की लोकल कमेटी के मेम्बर हैं। आप विधवा विवाह के बड़े हामी हैं। आपने बीसियों विधवाओं का सम्बन्ध जैनियों से करा दिया है। आपके यहां लाला शिव्बूमल जैन अनारकली के नाम से क्राकरी बिजिनेस होता है। लाला गंडामलजी भी "शिव्बूमल गंडामल" के नाम से क्राकरी बिजिनेस करते हैं।



लाला काशीरामजी जैन, जम्मू (काश्मीर)
(पेज नं० ६०५)



लाला मोहनलालजी पाटनी बी. ए. एल एल. बी. एडवोकेट
अमृतसर.



लाला मन्नरामजी जैन एम. ए. एल एल. बी.,
अमृतसर.



लाला नेमदासजी जैन, बी. ए. अंबाला सिटी,
(पेज न० ६०१)

पाटनी

लाला मोहनलालजी जैन एडवोकेट, अमृतसर

आपका खानदान लुधियाना (पंजाब) का निवासी है। वहाँ इस खानदान के पूर्वज लाला गोपीचन्दजी, तिजारत करते थे। आपके पंजाबरायजी तथा खुशीरामजी नामक २ पुत्र हुए। आप भी लुधियाना में तिजारत करते रहे। लाला पंजाबरायजी के पुत्र लाला मोहनलालजी हैं।

लाला मोहनलालजी—आपका जन्म संवत् १९५३ में हुआ। आपको होनहार समझकर २।३ साल की बाल्यावस्था में ही आपके मामा अमृतसर के मशहूर जौहरी लाला पन्नालालजी दूगड़ अमृतसर ले आये। तब से आप यहीं निवास करते हैं। आपने सन् १९२३ में एल० एल० बी० की डिगरी हासिल की, तथा तब से आप अमृतसर में प्रेक्टिस कर रहे हैं। आप श्वेताम्बर जैन समाज के मंदिर मार्गीय आम्नाय के अनुयायी हैं। आप पंजाब प्रान्त की ओर से "आनन्दजी कल्याणजी" की पेढ़ी के मेम्बर हैं। पंजाब के मन्दिर मार्गीय समाज में आप गण्य मान्य व्यक्ति हैं। आपने सन् १९२७ में श्री आत्मानंद जैन सभा पंजाब के अम्बालाअधिवेश के समय तथा १९३३ में होशियारपुर अधिवेशन के समय सभापति का आसन सुशोभित किया था। अमृतसर जैन मंदिर की व्यवस्था आपके जिम्मे है। तथा आप जैन वाचनालय के प्रेसिडेंट हैं। लाला मोहनलालजी एडवोकेट बड़े समझदार तथा विचारवान सज्जन हैं। आपके छोटे भाई सोहनलालजी तथा मुनीलालजी लुधियाने में अपना घरू व्यापार करते हैं।

लाला चीचूमलजी का खानदान, लुधियाना

इस खानदान के लोग मंदिर आम्नाय को मानने वाले हैं। इस खानदान का मूलनिवास स्थान पीचा पाटन (गुजरात) का था। वहाँ से उठकर करीब १०० वर्ष पहले यह खानदान लुधियाने में आकर बसा। तभी से यह खानदान यहीं निवास करता है। और इस खानदान वाले पाटन से आने के कारण पाटनी के नाम से आज भी मशहूर हैं।

इस खानदान में सबसे पहले लाला चीचूमलजी हुए। लाला चीचूमलजी के लाला फतेचंदजी एवं गोपीमलजी नामक दो पुत्र हुए। लाला फतेचन्दजी के लाला लाजपतरायजी कुन्दनरायजी एवं लाला हुकमचन्दजी नामक तीन पुत्र हुए। इनमें से लाला लाजपतराय जी और कुन्दनरायजी का स्वर्गवास हो गया है। लाला लाजपतरायजी के मंगतरायजी और मंगतरायजी के हितकरणदासजी नामक पुत्र हैं। आप लोग इस समय यहीं पर अलग स्वतंत्र व्यवसाय करते हैं।

लाला कुन्दनमलजी के कस्तूरीलालजी और कस्तूरीलालजी के लालचन्दजी नामक पुत्र हैं जो अपने काका लाला हुकुमचन्दजी के साथ व्यापार करते हैं। लाला हुकुमचन्दजी का जन्म संवत् १९५५ में हुआ। आपके अमरनाथजी, दीवानचन्दजी, ज्ञानचन्दजी एवं केशरदासजी नामक चार पुत्र हैं। आपकी फर्म पर दरी कम्मल वगैरह का थोक और खुदरा व्यापार होता है।

लाला उत्तमचंद बाबूराम पाटनी, जुगरावाँ

यह खानदान में कई पीढ़ियों से जुगरावाँ में पसारी का व्यापार करता आ रहा है। लाला उत्तमचन्दजी ने इस दुकान के धन्धे और आबरू को ज्यादा बढ़ाया। आप जैन प्रचारक सभा जुगरावाँ

को सहायता देते रहते हैं। इसी तरह जैनेन्द्र गुरुकुल पंचकूला को वारी देने की ओर अच्छा लक्ष्य रखते हैं। यहाँ के जैन समाज में आप सयाने व्यक्ति हैं। आपने रूपचन्दजी महाराज की समाधि में शादीरामजी महाराज की एक समाधि बनवाई है। आपने बाबूरामजी तथा झंडूरामजी नामक दो सज्जनों को दत्तक लिया है। आप दोनों बंधु अपनी दुकानों का व्यापार संचालन बड़ी तत्परता से करते हैं। आप के यहां "उत्तमचन्द बाबूराम" के नाम से शहर में तथा झण्डूमल प्यारेलाल के नाम से मंडी में पसारी और बसाती का व्यापार होता है। लाला बाबूरामजी उत्साही तथा समाज सेवी सज्जन हैं। आप श्री जैन प्रचारक सभा के प्रेसिडेंट हैं।

मालकस

लाला गण्डामलजी का खानदान, जण्डियाला गुरू (पंजाब)

यह खानदान श्री जैनश्वेताम्बर स्थानकवासी सम्प्रदाय को मानने वाला हैं। यह खानदान सबसे पहले पटियाला में रहता था। फिर वहाँ से महाराजा रणजीतसिंहजी के समय में लाहौर में आकर जवाहरात का व्यापार करने लगा इस खानदान में लाला जेठमलजी के पुत्र हरगोपालजी और पौत्र अनोखामलजी हुए। अनोखामलजी के पुत्र हरभजमलजी और जयगोपाल जी लाहौर में गदर हो जाने के कारण अपने ननिहाल जण्डियाला गुरू चले आये। आप लोगों के समय में जण्डियाला गुरू की दुकान पर जमीदारी और साहुकारा तथा अमृतसर की दुकान पर जवाहरात का व्यापार होता था। लाला हरभजमल जी के रामसिंहजी, ज्वालामलजी तथा कर्मचन्दजी नामक तीन पुत्र हुए। लाला रामसिंहजी के मेलामलजी, मीतामलजी, कालामलजी और दितमलजी नामक चार पुत्र हुए। लाला मेलामलजी बड़े दयालु तथा व्यापार कुशल व्यक्ति थे। आपका संवत् १९५९ में ८३ साल की वय में स्वर्गवास हो गया है। आपके तीन पुत्र हुए जिनके नाम लाला आत्मारामजी, कोटूमलजी तथा सिब्बूमलजी थे। लाला आत्मारामजी का जन्म संवत् १९०७ में हुआ था। आप धर्मात्मा पुरुष थे। आपका स्वर्गवास संवत् १९७२ में हो गया। आपके लाला गण्डामलजी, गोपीमलजी, तथा खजांचीमलजी नामक तीन पुत्र हुए।

लाला गण्डामलजी—आपका जन्म संवत् १९३६ का है। आप इस परिवार में बड़े नामी तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। आपने प्रयत्न करके सन् १९०९ में पंजाब स्थानकवासी जैन सभा की स्थापना करवाई। और आप इसके १८ सालों तक ऑनरेरी सेक्रेटरी रहे। लाहोर के अमर जैन होस्टल के स्थापित करवाने में भी आपका बहुत बड़ा प्रयत्न रहा है। आप इस समय जण्डियाला गौशाला के प्रेसिडेंट, वहाँ के म्युनिसिपल कमिश्नर, डिस्ट्रिक्ट हिन्दू सभा अमृतसर के तथा जैन विधवा सहायक सभा पंजाब के ऑनरेरी सेक्रेटरी हैं। सारे पंजाब के जैन समाज में आपका नाम प्रसिद्ध है। आपके पुत्र लाला सुशीलालजी पढ़ते हैं।

लाला गण्डामलजी के छोटे भाई लाला गोपीमलजी का जन्म १९३९ में हुआ। आप इस खान दान का तमाम व्यापार देखते हैं। तथा इस समय सराफा कमेटी के प्रेसिडेंट हैं। आपके पुत्र दिलीप चंदजी तथा मदनलालजी व्यापार सम्हालते हैं, तथा रोशनलालजी और मनोहरलालजी पढ़ते हैं। लाला

खजांचीमलजी उत्साही तथा समझदार सज्जन हैं। आप जैन मित्र मंडल के प्रेसीडेंट हैं आपके पुत्र विद्यासागरजी सेकंडईयर पढ़ते हैं। शेष विद्याप्रकाशजी और विद्याभूषणजी भी पढ़ते हैं।

नागोरी

सेठ ज्ञानमलजी नागोरी का परिवार, भीलवाड़ा

इस परिवार के पूर्व पुरुष पंवार राजपूत सोभाजी को जैनाचार्य्य ने जैनी बनाया। इन्होंने जालोर में एक मन्दिर निर्माण करवाया। इनके वंशज संवत् १६१५ में नागोर आये। यहां से संवत् १६८३ में इस परिवार के प्रसिद्ध व्यक्ति कमलसिंहजी महाराणा जगतसिंहजी के समय में पुर (मेवाड़) में आकर बसे। नागोर से आने के कारण ये लोग नागोरी कहलाये। कनमलसिंहजी के पश्चात् क्रमशः गौड़ीदासजी, भोगीदासजी, और अखैराजजी हुए। ये भीलवाड़ा आकर बसे। इनके बाद क्रमशः माणकचन्दजी जुमजी, केशोरामजी और खूबचन्दजी हुए। आप सब लोग व्यापार कुशल थे। आप लोगों ने फर्म की बहुत तरक्की की। यहाँ तक कि खूबचन्दजी के समय में इस फर्म की १८ शाखाएं हो गई थी। आपके पुत्र न होने से जवानमलजी को दत्तक लिया। आपकी नाबालिगी में भीलवाड़ा एवम् जावद की दुकान रख कर शेष सब बन्द करदी गई। सेठ जवानमलजी को महाराणाजी की ओर से खातरी के कई परवाने प्राप्त हुए थे। कहा जाता है कि आपका विवाह रीयां के सेठों के यहां हुआ, उस समय सवा लाख रुपया इस विवाह में खर्च हुआ था। बरात में कई मेवाड़ के प्रसिद्ध २ जागीरदार भी आये थे। रास्ते में महाराणाजी की ओर से पहरा चौकी का पूरा २ प्रबन्ध था। आपका स्वर्गवास होगया। आपके ज्ञानमलजी और नथमलजी नामक दो पुत्र हुए।

सेठ ज्ञानमलजी धार्मिक व्यक्ति थे। आपका राज्य में भी अच्छा सम्मान था। यहाँ की पंच पंचायती एवम् जनता में आपका अच्छा मान था। आपके समय में भी फर्म उन्नति पर पहुँची। आपका स्वर्गवास हो गया है। इस समय इस परिवार में सेठ नथमलजी ही बड़े व्यक्ति हैं। आप भी योग्यता पूर्वक फर्म का संचालन कर रहे हैं। आप मिलनसार हैं। आपके पुत्र न होने से चंदनमल जी नागोरी के पुत्र शोभालालजी दत्तक आये हैं। इस समय आप लोग जुमजी केशोराम के नाम से व्यापार कररहे हैं। भीलवाड़ा में यह फर्म बहुत प्रतिष्ठित मानी जाती है।

सेठ ज्ञानमलजी के दोहित्र कु० मगनमलजी कंदकुदाल एम० आई० सी० एस० बचपन से ही इसी परिवार में रह रहे हैं। आप मिलनसार और उत्साही नवयुवक हैं। आजकल आप यहाँ काटन का व्यापार करते हैं। आपके पिताजी वगेरह सब लोग जनकुपुरा मदसोर में रहते हैं। वहीं आपका निवास स्थान भी है। आपके दादाजी चम्पालालजी मंदसोर में एक प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। आपने हजारों लाखों रुपयों की सम्पत्ति उपार्जित की थी।

गुगलिया

सेठ गुलाबचन्द हीराचन्द गुगलिया, मद्रास

इस परिवार के पुरुष श्वेताम्बर जैन मन्दिर मार्गीय आम्नाय के मानने वाले हैं। इस खानदान के पूर्व पुरुष सेठ जयसिंहजी देवाली (मारवाड़) में रहते थे। वहाँ से इनके पुत्र खूमाजी, चाणोद (मारवाड़) आये। इनके वीरचन्दजी और भूरमलजी नामक २ पुत्र हुए।

सेठ वीरचन्दजी भूरमलजी गुगालिया—आप दोनों भाइयों में पहले सेठ वीरचन्दजी सन् १८७० में व्यवसाय के लिये अहमदाबाद गये। वहाँ से आप कर्नाटक की ओर गये। उधर २ साल रहकर आपने मद्रास में आकर पैरम्बूर बैरक्स में दुकान की। यहाँ आने पर आपने अपने छोटे भाई भूरमलजी को भी बुलालिया, तथा अपनी दुकान की एक ब्रांच और खोली। इन दोनों बंधुओं ने साहस पूर्वक व्यापार में सम्पत्ति उपार्जित कर अपने सम्मान को बढ़ाया। आपने अपने कई जाति भाइयों को सहायता देकर दुकानें करवाई। सेठ वीरचन्दजी सन् १९०५ में स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र माणकचन्दजी का चाणोद में छोटी वय में स्वर्गवास हो गया। सेठ वीरचन्दजी के पश्चात् सेठ भूरमलजी व्यापार सम्हालते रहे। सन् १९१५ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके धनरूपमलजी, हीराचन्दजी तथा गुलाबचन्दजी नामक ३ पुत्र हुए। इनमें गुलाबचंदजी सेठ विरदीचंदजी के यहां दत्तक गये। तथा धनरूपमलजी का स्वर्गवास छोटी वय में हो गया।

इस समय इस परिवार में हीराचन्दजी तथा गुलाबचन्दजी गुगलिया विद्यमान हैं। आपका जन्म क्रमशः सन् १९०८ तथा १९१३ में हुआ। सन् १९२९ में इन दोनों भाइयों ने अपना कार्य्य प्रेम पूर्वक अलग २ कर लिया है। आप अपने पिताजी के स्वर्गवासी होने के समय बालक थे। अतः फर्म का काम वीरचन्दजी की धर्म पत्नी श्री मती जड़ाव बाई ने बड़ी दक्षता के साथ सम्हाला। आपका धर्म ध्यान में बड़ा लक्ष्य हैं। आपने शत्रुंजय तीर्थ में एक टोंक पर छोटा मन्दिर बनवाया। गुंदौल गाँव में दादा-वाड़ी का कलश, चढ़ाया। इसी प्रकार जीव दया, स्वामी वात्सल्य पाठशाला आदि शुभ कार्य्यों में सम्पत्ति लगाई। इस समय गुलाबचन्दजी, "वीरचन्द गुलाबचन्द" के नाम के तथा हीराचन्दजी, "भूरमल हीराचन्द" के नाम से व्यापार करते हैं। मद्रास के ओसवाल समाज में यह फर्म प्रतिष्ठित मानी जाती है।

सेठ गम्भीरमल वख्तावरमल गुगलिया, धामक

इस परिवार का मूल निवास स्थान बलूँदा (जोधपुर) हैं। आप स्थानकवासी आम्नाय के माननेवाले सज्जन हैं। जब सेठ बुधमलजी लूणावत ने धामक आकर अपनी स्थित को ठीक किया, तथा उन्होंने अपने जीजा (बहिन के पति) सेठ गम्भीरमलजी को भी व्यापार के लिए धामक बुलाया। सेठ गम्भीरमलजी के साथ उनके पुत्र वख्तावरमलजी भी धामक आये थे। इन दोनों पिता पुत्रों ने व्यापार में सम्पत्ति पैदा कर अपने सम्मान तथा प्रतिष्ठा की वृद्धि की। सेठ वख्तावरमलजी बड़े उदार पुरुष थे। बरार प्रान्त के गण्य मान्य ओसवाल सज्जनों में आपकी गणना थी। आपकी धर्म पत्नी ने बलूंदे में एक



सेठ गुलाबचंदजी गूगलिया (गुलाबचंद हीराचंद) मद्रास.



सेठ ज्ञानमलजी नागोरी भीलवाड़ा (मेवाड़)



श्री हीराचंदजी गूगलिया (गुलाबचंद हीराचंद) मद्रास



श्री मगनमलजी भीलवाड़ा (मेवाड़)

श्वेताम्बर जैन मन्दिर बनवा कर उसकी व्यवस्था वहाँ के जैन समाज के जिम्मे की। आपके नाम पर रिखबचन्दजी अजितगढ़ (अजमेर) से दत्तक आये। इनका भी अल्प वय में स्वर्गवास हो गया, अतः इनके नाम पर धामक से केसरीचंदजी गुगलिया दत्तक लिये गये।

केशरीचन्दजी गुगलिया—आपका जन्म संवत् १९४७ में हुआ। आप उदार प्रकृति के राजसी ठाट बाट वाले व्यक्ति हैं। आपने अपने दादीजी के ओसर के समय ३१ हजार रुपया जैन बोर्डिंग हाउस फंड में दिया, इसी प्रकार हजारों रुपये की सहायता आपने शुभ कार्यों में की। ओसवाल बोर्डिंग में भी आपने सहायता प्रदान की थी। बाबू सुगनचन्दजी लूणावत द्वारा स्थापित महावीर मंडल नामक संस्था से आप दिलचस्पी रखते हैं। आप सन् १९२१ तक धामन गाँव में आनरेरी मजिस्ट्रेट रहे। आपको पहलवान, गवैया आदि रखने का बड़ा शौक है। आपके बड़े पुत्र खेमचन्दजी का ९ साल की वय में स्वर्गवास हो गया। इस समय आपके मुकुन्दीलालजी तथा कुंजीलालजी नामक २ पुत्र हैं जो बालक है। आपके यहाँ कृषि का विशेष कार्य्य होता है। बरार प्रान्त के प्रतिष्ठित कुटुम्बों में इस परिवार की गणना है।

संखलेचा

काशीनाथजी वाले जोहरियों का खानदान, जयपुर

इस परिवार के पूर्वज श्री जौहरीमलजी संखलेचा जयपुर में जवाहरात तथा जागीरदारों के साथ लेने-देन का व्यापार करते थे। आपके नाम पर देहली से जौहरी दयाचन्दजी दत्तक आये। आपके समय से इस कुटुम्ब के व्यवसाय की उन्नति आरम्भ हुई। आपके काशीनाथजी, मूलचन्दजी, जमनालालजी तथा छोटीलालजी नामक ४ पुत्र हुए।

काशीनाथजी जौहरी—आपने इस खान के जवाहरात के व्यापार को बहुत चमकाया। आप पर जयपुर महाराजा सवाई माधोसिंहजी बहुत प्रसन्न थे। जवाहरात में आपकी दृष्टि बड़ी सूक्ष्म थी। आप ए० जी०, रेजिडेंट, तथा अन्य उच्च पदाधिकारियों से जवाहरात का व्यवसाय किया करते थे। इसके अलावा भारतीय राजा रईस तथा जागीरदारों में आप जवाहरात बिक्री किया करते थे। इस समय आप का खानदान "काशीनाथजी वाले जौहरी" के नाम मशहूर है। आपके भैरोंलालजी, बेजूलालजी तथा फूलचन्दजी नामक ३ पुत्र हुए। इन तीनों सज्जनों का स्वर्गवास हो गया है। इस समय बेजूलालजी के पुत्र नौरतनमलजी हैं।

मूलचन्दजी जौहरी—आपके नाम पर आपके सब से छोटे भ्राता छोटीलालजी के तीसरे पुत्र चुन्नीलालजी दत्तक आये। चुन्नीलालजी का स्वर्गवास हो गया है। आपके पुत्र माणकचन्दजी स्था० नवयुवक मंडल के कोषाध्यक्ष हैं।

जमनालालजी जौहरी—आप अपने बड़े भ्राता काशीनाथजी के पश्चात् उसी प्रकार फर्म का व्यापार संचालित करते रहे। संवत् १९५३ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र महादेवलालजी तथा

चम्पालालजी जौहरी विद्यमान हैं। वर्तमान में जौहरी महादेवलालजी ही इस परिवार में सब से बड़े हैं। आपको दरबार में कुर्सी प्राप्त है। जौहरी चम्पालालजी के पुत्र उमरावमलजी तथा गुलाबचन्दजी हैं। इनमें गुलाबचन्दजी महादेवलालजी के नाम पर दत्तक गये हैं। श्री उमरावमलजी, समझदार तथा मिलनसार नवयुवक हैं। आप शांति जैन लायब्रेरी के मंत्री हैं। आपके पुत्र मिलापचन्दजी हैं।

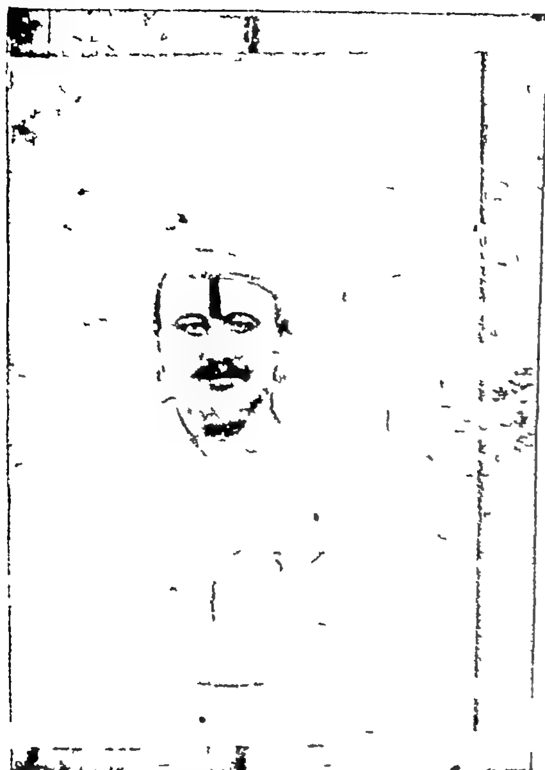
छोटीलालजी जौहरी—आपका स्वर्गवास हो गया है। आपके पुत्र मुन्नीलालजी तथा चुन्नीलालजी हुए। इनमें चुन्नीलालजी जौहरी मूलचन्दजी के नाम पर दत्तक गये। जौहरी मुन्नीलालजी स्थानीय म्युनिसिपैलिटी के मेम्बर, स्थानकवासी जैन सुबोध पाठशाला के ट्रेझरर तथा जैन कन्या शाला के प्रेसिडेंट तथा ट्रेझरर हैं। आपके पुत्र रतनलालजी व्यवसाय में भाग लेते हैं।

यह खानदान जयपुर के प्रधान जौहरियों में माना जाता है। इस खानदान की फर्म को कई वायसरायों ने सार्टिफिकेट दिये है। कई भारतीय राजा रईसों के यहाँ आपका जवाहरात जाता है। न्यूयार्क लंदन आदि स्थानों पर भी आप जवाहरात भेजते हैं। इस फर्म को लन्दन, कलकत्ता जयपुर आदि प्रदर्शनियों से गोल्ड सिलवर मेडल तथा सार्टिफिकेट मिले हैं। जयपुर के ओसवाल समाज में यह परिवार नामी माना जाता है। यह परिवार स्थानकवासी सम्प्रदाय का अनुयायी है। वर्तमान में इस परिवार का "जौहरीमल दयाचन्द" के नाम से व्यापार होता है। आपकी एक जीनिंग फेक्टरी, कसरावद (इन्दौर) में है।

सेठ रिखबदास सवाईराम संखलेचा, खामगांव

सेठ रिखबदासजी संखलेचा—इस परिवार के पूर्वज रिखबदासजी संखलेचा अपने मूल निवास जोधपुर से व्यापार के लिये संवत् १९२१ में खामगांव आये। तथा आपने सेठ "श्रीराम शालिगराम" के यहाँ २५ सालों तक मुनीमात की। आपका जन्म संवत् १९०२ में हुआ था। इस दुकान पर नौकरी करते हुए आप बूत कम्पनी की रुई की आढ़त तथा अपनी घरू आढ़त का व्यापार भी करते थे। इसमें आपने २।३ लाख रुपयों की सम्पत्ति उपार्जित की। साथ ही आपने राठीजी के व्यापार की भी काफी वृद्धि की। इस समय उनकी ३० दुकानों की देखरेख व व्यवस्था आपके जिम्मे थी। आप बड़े रुतबेदार तथा वजनदार पुरुष माने जाते थे। संवत् १९९३ में राठी फर्म की ५२ दुकानों का बँटवारा आपही के हाथों से हुआ था। संवत् १९४० में मस्जिद के सामने बाजा बजने के सम्बन्ध में बखेड़ा खड़ा हुआ, उसमें आपने हिन्दू समाज का नेतृत्व किया, तथा उस समय की निश्चित हुई शर्तें इस समय तक पाली जाती हैं। संवत् १९३६ में पानी के बंदोबस्त के लिये तालाब बनवाने में तथा नल का कनेक्शन ठीक करवाने में आपने इमदाद दी। खामगाँव के काटन मार्केट, म्युनिसिपेलेटी आदि के स्थापनकर्ताओं में आपका नाम अग्रगण्य है। कहने का तात्पर्य्य यह कि आप खामगांव के नामीगरामी व्यक्ति हो गये हैं।

सेठ रिखबदासजी के शांतिदासजी तथा गोड़ीदासजी नामक २ पुत्र हुए। आप दोनों सज्जनों का जन्म क्रमशः १९४२ तथा संवत् १९५७ में हुआ। सेठ शांतिदासजी खांमगाँव सेवा समाज के केप्टन थे। इसी प्रकार माहेश्वरी महासभा के चतुर्थ वेशन अकोले के समय आप असिस्टेंट हेड केप्टन थे। आप मध्य प्रांत तथा वरार की ओसवाल सभा के हर कार्य्यों में उत्साह से भाग लेते हैं। आप बुलढाणा प्रान्त के



स्वर्गीय सेठ रिखबदासजी सुखलेचा, खामगाँव.



श्री जवाहरमलजी लूणिया, अजमेर (परिचय पेज नं०



श्री शान्तिदासजी सखलेचा खामगाव



श्री [illegible]

वजनदार पुरुष हैं। आपके यहाँ रुई, आढ़त का कार्य्य होता है। आपके छोटे बंधु गोढ़ीदासजी आपके साथ व्यापार में सहयोग लेते हैं।

सेठ रामचन्द्र चुन्नीलाल संखलेचा आर्वी (बरार)

इस परिवार का आगमन लगभग १५० साल पहिले जेसलमेर से आर्वी हुआ, पहिले इस दुकान पर "हुकुमचंद रामचंद" के नाम से काम होता था, संखलेचा हुकुमचंदजी के पुत्र रामचंदजी तथा रामचन्द्रजी के पुत्र चुन्नीलालजी हुए। संखलेचा चुन्नीलालजी संवत् १९७४ में स्वर्गवासी हुए, आपके ३ पुत्र भगवानदासजी, राजमलजी तथा गोकुलदासजी हुए, इनमें से भगवानदासजी २५।३० साल पहिले गुजर गये, तथा राजमलजी संखलेचा अमोलकचंदजी के नाम पर दत्तक गये।

संखलेचा गोकुलदासजी का जन्म संवत १९५६ में हुआ। भगवानदासजी के पुत्र सोभागमलजी का जन्म संवत् १९५५ में तथा बिसनदासजी का १९५८ में हुआ। आपके हाथों से दुकान के व्यवसाय को उन्नति मिली है। स्थानीय श्वे० जैन मंदिर की व्यवस्था आप लोगों के जिम्मे हैं, आपकी फर्म "रामचन्द्र चुन्नीलाल" के नाम से रुई चांदी सोना तथा लेनदेन का काम काज करती है तथा आर्वी के व्यापारिक समाज में प्रतिष्ठित मानी जाती है। संखलेचा राजमलजी, "अमोलचन्द हीरालाल" के नाम से कार बार करते हैं।

केसरीमलजी संखलेचा, येवला

आपका मूल निवास तींवरी (जोधपुर) है। देश से सेठ हरकचंदजी संखलेचा व्यापार के निमित्त येवले आये तथा सेठ भींमराजजी दईचन्दजी की भागीदारी में कपड़े का व्यापार आरंभ किया। संवत् १९६३।६४ में आपका स्वर्गवास हुआ। आपके पुत्र केसरीमलजी तथा पूनमचंदजी विद्यमान हैं। आप बंधु सेठ भीमराजजी दईचन्दजी की बम्बई और येवला दुकान के भागीदार हैं। केसरीमलजी का जन्म १९५२ में हुआ। आप सज्जन व्यक्ति हैं। तथा येवले के व्यापारिक समाज में प्रतिष्ठित हैं।

श्री लक्ष्मीलालजी सखलेचा, जावद

आप जावद (मालवा) के एक प्रतिष्ठित परिवार के हैं। आपके पिताजी वहाँ के लक्षाधीश व्यापारी थे। श्री लक्ष्मीलालजी ज्योतिष शास्त्र के अच्छे ज्ञाता है। और आपके सामाजिक विचार भी अच्छे हैं। ज्योतिष के सम्बन्ध में आपने कुछ पुस्तकें भी प्रकाशित की हैं। इस समय आप बम्बई में दलाली तथा ज्योतिष दोनों कार्य्य करते हैं। आपके चांदमलजी तथा सोभागमलजी नामक २ पुत्र हैं, चांदमलजी अपनी घरू जमीदारी का काम सम्हालते हैं। और सोभाग्यमलजी एफ० ए० में पढ़ते हैं। सोभाग्यमलजी प्रतिभाशाली युवक हैं।

बरड़िया

बरडिया गौत्र की उत्पत्ति—पवार राजवंशीय राजपूतों मे बरड़िया ओसवालों की उत्पत्ति का पता चलता है। कहते हैं कि पँवार लाखनसी के पुत्र वेरसी को श्री उद्योतन सूरिजी ने उपदेश कर जैन

धर्म का ज्ञान कराया। बड़ के नीचे उपदेश देने से "बरदिया" नाम सम्बोधित हुआ। यही नाम आगे चल करे बरड़िया गौत्र में परिवर्तित हुआ।

श्री राजमलजी बरड़िया का खानदान, जेसलमेर

इस परिवार का मूल निवास स्थान जेसलमेर ही है। हम ऊपर बरड़िया वेरसी का उल्लेख कर चुके हैं। इनके कई पीढ़ियों बाद समराशाहजी हुए। ये जेसलमेर के दीवान थे। इनके पुत्र मूलराजजी ने भी रियासत के दीवान पद पर कार्य्य किया। मूलराजजी की ११ वीं पीढ़ी में भोजराजजी हुए, इनसे यह परिवार "भोजा मेहता" कहलाया। इनकी छठी पीढ़ी में मेहता सरूपसिंहजी हुए। इनके सरदारमलजी, जोरावरसिंहजी तथा उत्तमसिंहजी नामक ३ पुत्र हुए।

धनराजजी बरड़िया—बरड़िया सरदारमलजी के नाम पर बभूतसिंहजी दत्तक आये, तथा इनके पुत्र धनराजजी थे। धनराजजी जेसलमेर स्टेट के प्रतिभा सम्पन्न पुरुष हो गये हैं। आपके नाम पर आपके चाचा विशनसिंहजी के पुत्र केवलचन्दजी दत्तक आये। इनके सोभागमलजी तथा तेजमलजी नामक पुत्र हुए। बरड़िया तेजमलजी भी जेसलमेर के प्रतिष्ठित सज्जन हैं। आप इस समय स्टेट ट्रेझरर हैं।

बरड़िया जोरावरसिंहजी का परिवार—आपके बभूतसिंहजी, सगतसिंहजी, विशनसिंहजी, जवरचन्दजी, तथा नथमलजी नामक ५ पुत्र हुए। इनमें बभूतसिंहजी सरदारमलजी के नाम पर दत्तक गये। सगतसिंहजी के हिम्मतरामजी, ज्ञानचन्दजी, हमीरमलजी, इन्द्रराजजी, बलराजजी नामक ५ पुत्र हुए। इनमें हिम्मतरामजी का स्वर्गवास हो गया। शेष बन्धु विद्यमान हैं। बरड़िया हमीरमलजी उत्तमसिंहजी के पुत्र चन्दनमलजी के नाम पर दत्तक गये हैं। इसी तरह जवरचन्दजी के प्रपौत्र कुन्दनमल जी विद्यमान हैं। बरड़िया जोरावरसिंहजी के सबसे छोटे पुत्र नथमलजी थे। इनके पूनमचन्दजी तथा रतनलालजी नामक पुत्र हुए। इस समय पूनमचन्दजी के पुत्र राजमलजी तथा रतनलालजी के पुत्र रामसिंहजी विद्यमान हैं।

राजमलजी बरड़िया—आपका जन्म संवत् १९३७ में हुआ। आप जेसलमेर के ओसवाल समाज में समझदार तथा वजनदार पुरुष हैं। यहाँ के करोड़ों रुपयों की लागत के जैन मंन्दिरों की व्यवस्था का भार श्री संघ ने आपके जिम्मे कर रक्खा है। आप श्वेताम्बर संघ कार्य्यालय के प्रेसिडेंट हैं। इस समय आप जेसलमेर स्टेट में कस्टम सुपरिन्टेन्डेन्ट हैं। इसके अलावा आप अपना घरु व्यापार भी करते हैं। आपके पुत्र फतेसिंहजी हैं।

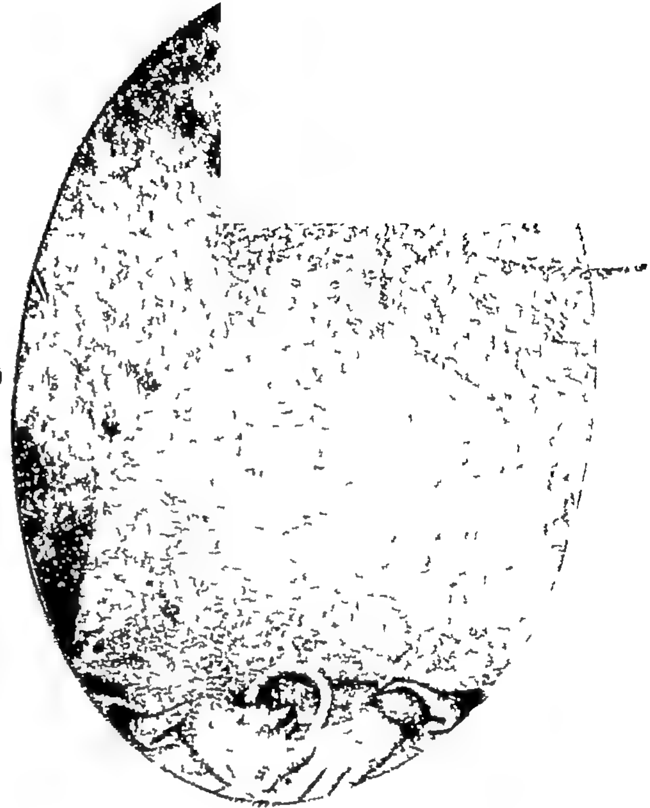
यह परिवार ५६ पीढ़ियों से जेसलमेर स्टेट की सेवा करता आ रहा है। रियासत की ओर से दी गई जागीरी का पट्टा इस परिवार वालों के हाथ से लिखा जाता है। रियासत के कस्टम, फोज बख्शी, खजाना, भंडार आदि मुख्य सीगे हमेशा से इस परिवार के जिम्मे रहते आये हैं। तथा जेसलमेर महारावलजी से इस परिवार को समय २ पर रुक्के तथा पर वाने मिलते रहे हैं।

बरड़िया गनेशजी का परिवार उदयपुर

करीब १०० वर्ष पूर्व बरड़िया गनेशजी करेड़ा पार्श्वनाथ से उदयपुर आये। उनके मगनमल जी, जालमचंदजी, साहबलालजी और फूलचन्दजी नामक चार पुत्र हुए। इनमें मगनमलजी बड़े प्रतिभा



सेठ राजमलजी बरडिया, जैसलमेर



श्री माणकलालजी बरडिया बी ए एलएल. बी , उदयपुर.



[illegible]



[illegible]

सम्पन्न व्यक्ति थे। आप चारों भाइयों का परिवार अलग २ होगया। सेठ मगनमलजी के पुत्र सेठ चांदमलजी और सेठ प्यारचन्दजी इस समय अलीगढ़ में अपना २ व्यापार करते हैं।

सेठ जालमचन्दजी हिसाब के अच्छे जानकार थे। आपके चम्पालालजी और कन्हैयालालजी नामक दो पुत्र हैं। सेठ चम्पालालजी करीब ३५ वर्षों से उदयपुर स्टेट में रेसिडेन्सी सर्जन की आफिस में हेड क्लर्क हैं। आपको यहां आने वाले कई अंग्रेज सर्जनों से अच्छे २ सर्टिफिकेट प्राप्त हुए हैं। आपके पुत्र माणकलालजी इस परिवार में सर्व प्रथम ग्रेज्युएट हुए है। आप मिलनसार और योग्य सज्जन हैं। आप इन्दौर स्टेट में मनासा, खरगोन, सनावद, जीरापुर, सेंधवा, इतोद आदि कई स्थानों पर मजिस्ट्रेट रह चुके है। इस समय आप गरोठ में फर्स्ट क्लास मजिस्ट्रेट हैं। आप फुटबाल, क्रिकेट वगैरह खेलों के अच्छे खिलाड़ी हैं। आपके हीरालालजी और जवाहरलालजी नामक दो पुत्र हैं। सेठ कन्हैयालाल जी उदयपुर ही में व्यापार करते हैं। आपके रतनलालजी, परमेश्वरीलालजी और मनोहरलालजी नामक नामक तीन पुत्र हैं। रतनलालजी शिक्षित और मिलनसार व्यक्ति हैं। आपका अध्ययन बी० ए० तक हुआ है। आप आजकल उदयपुर की मशहूर संस्था विद्याभवन में मास्टर हैं।

सेठ साहबलालजी के पुत्र कालूलालजी तथा फूलचन्दजी के पुत्र मोतीलालजी इस समय उदयपुर में विद्यमान हैं। तथा वहीं अपना व्यापार करते हैं।

सेठ जुहारमल मूलचंद बरड़िया, सरदारशहर

इस परिवार के लोग बहुत समय पहले सिरसा होते हुए अबोहर आये। सिरसा में सेठ गंगारामजी हुए। आप सिरसा ही में रहकर व्यापार करते रहे। आपके पुत्र छोगमलजी और गणेशमलजी अबोहर आये एवम् वहाँ कपड़े का व्यापार प्रारम्भ किया। तथा इसमें अच्छी उन्नति की सेठ छोगमलजी के जुहारमलजी एवम् सेठ जेठमलजी नामक दो पुत्र हुए। प्रथम जुहारमलजी वहाँ से सरदारशहर आकर बस गये और जेठमलजी वहीं रहकर अपना व्यवसाय करने लगे। आपके सुगनचंदजी, जयचन्दलालजी और जगन्नाथजी नामक पुत्र हैं।

सेठ जुहारमलजी जब कि अबोहर रहते थे, उसी समय कलकत्ता व्यापार के लिये चले गये थे। कलकत्ता आकर आपने पहले भैरोंदानजी चुन्नीलालजी सरदारशहर वालों के यहां काम करना आरम्भ किया। पश्चात् आप अपनी बुद्धिमानी से इस फर्म में साझीदार हो गये। कुछ वर्षों बाद आपने इस फर्म से भी अपना साझा अलग कर लिया। एवम् रघुनाथदास शिवलाल के यहां ५ हजार रुपया सालाना पर मुनीमी का काम करना प्रारम्भ किया। इस समय आप वयोवृद्ध होने से सरदारशहर में शांतिलाभ कर रहे हैं। आपके पुत्र मूलचन्दजी, सोहनलालजी एवम् सूरजमलजी अपना स्वतन्त्र व्यापार करते हैं।

बाबू मूलचन्दजी मिलनसार व्यक्ति हैं। आजकल १५ वर्षों से आप जूट का वायदे का सौदा करते हैं। इस ओर आपकी अच्छी गति है। आपकी गिद्दी १६ वोना फिल्ड लेन में हैं। सूरजमलजी अपना स्वतन्त्र व्यापार करते हैं। सोहनलालजी अपने चाचा हीरालालजी के साझे में "छोटूलाल सोहनलाल" के नाम से पारख कोठी में धुले कपड़े तथा गगेश भगत के कटले में धोती का व्यापार करते हैं।

बा० मूलचन्दजी के श्रीचन्दजी, सुमेरमलजी, चन्दनमलजी, कन्हैयालालजी एवम् मंगलचन्दजी और बा० सोहनलालजी के माणकचन्दजी और रतनलालजी नामक पुत्र हैं। आप तेरापन्थी संप्रदाय के हैं।

श्री भैरोंलालजी बरड़िया बी० ए० एल० एल० बी० नरसिंहपुर (सी० पी०)

इस परिवार के पूर्वज बरड़िया परभचन्दजी आपने मूल निवासस्थान फलौदी (जोधपुर स्टेट) से व्यापार के लिये नरसिंहपुर आये। यहाँ आकर आप रीयाँवाले सेठों की दुकान पर मुनीम हुए। आप संवत् १९५५ में स्वर्गवासी हो गये। आपके पुत्र दमरूलालजी करीब १५ सालों तक रीयाँवाले सेठों की दुकान पर प्रधान मुनीम रहे। आपने गोटे गाँव में मानमल मिलापचन्द तथा परभचन्द नंदराम के नाम से दुकान खोली। सन् १९२७ में आप स्वर्गवासी हो गये। आपके पुत्र भैरोंलालजी तथा मिश्रीलालजी हैं।

भैरोंलालजी बरड़िया—आपका जन्म संवत् १९५४ में हुआ। आपने सन् १९२३ में बी० ए० तथा १९२६ में एल० एल० बी० की डिगरी प्राप्त की। सन् १९२७ से आप नरसिंहपुर से प्रेक्टिस करते हैं। यवतमाल के ओसवाल सम्मेलन में आप मध्यप्रान्तीय ओसवाल महा सभा के सेक्रेटरी नियुक्त हुए थे। आपको लिखने तथा भाषण देने का अच्छा अभ्यास है। आपने एक "हिन्दी ग्रन्थ माला" भी प्रकाशित की थी। आपके छोटे भाई मिश्रीलालजी ने मेट्रिक तक अध्ययन किया है। श्री भैरोंलालजी बरड़ियाके पुत्र पूनमचन्दजी तथा हुकुमचन्दजी पढ़ते हैं तथा लक्ष्मीचन्दजी और कुशलचन्दजी छोटे हैं।

बनवट

सेठ प्रतापमल फूलचन्द बनवट, आस्टा (भोपाल)

यह कुटुम्ब जोधपुर स्टेट के रास ठिकाना का निवासी है, आप श्वेताम्बर जैन समाज के मंदिर मार्गीय आम्नाय के माननेवाले हैं। देश से लगभग संवत् १८५१ में सेठ विनेचन्दजी बनवट के पुत्र श्री नारायणदासजी, चन्द्रभानजी तथा नंदरामजी तीन भ्राता भोपाल स्टेट के मगरदा नामक स्थान में आये तथा वहाँ संवत् १८८१ में "नारायणदास नंदराम" के नाम से दुकान स्थापित की गई। सेठ नारायणदासजी के पुत्र चुन्नीलालजी तथा नंदरामजी के पुत्र छोगमलजी हुए। इन भ्राताओं में सेठ चुन्नीलालजी ने अफीम तथा लेन-देन के व्यापार में इस दुकान के व्यापार तथा कुटुम्ब के सम्मान को विशेष बढ़ाया। इन दोनों सज्जनों का स्वर्गवास क्रमशः संवत् १९४६ तथा संवत् १९५८ में हुआ। सेठ चुन्नीलालजी के पुत्र प्रतापमलजी उनकी मौजूदगी में ही स्वर्गवासी हो गये थे। सेठ प्रतापमलजी बनवट के नाम पर बीजलपुर से फूलचन्दजी बनवट दत्तक आये तथा छोगमलजी के यहाँ सिरेमलजी, बढ़ू (खानदेश) से दत्तक आये। आप दोनों भाई संवत् १९६२ में अलग २ हो गये।

सेठ फूलचन्दजी बनवट—आपका जन्म संवत् १९४६ में हुआ। आप संवत् १९६६ में मगरदे से आस्टा आये। आप ही की हिम्मत के बल पर दिगम्बर जैन प्रतिमा का जुलूस आस्टे में निकालना आरम्भ

हुआ। इस सम्बन्ध में आपको आस्टे के दिगम्बर जैन समाज ने चाँदी की डिब्बी, सिरोपाव तथा मान पत्र देकर सम्मानित किया। आपका आस्टे की जनता में तथा भोपाल राज्य में अच्छा सम्मान है, आपको बाला बाला नवाब साहिब से मिलने की इजाजत प्राप्त है। तथा आप आस्टे के ऑनरेरी मजिस्ट्रेट हैं। वर्तमान में आपके यहाँ "प्रतापमल फूलचन्द" बनवट के नाम से साहुकारी तथा आसामी लेन-देन होता है।

बढ़ेर

सेठ कन्हैयालाल चुन्नीलाल बढ़ेर, देहली

यह खानदान करीब सात आठ पुश्त से देहली में ही रहता है। आप ओसवाल जाति के बढ़ेर गौत्रीय सज्जन हैं। आप स्थानकवासी जैन सम्प्रदाय के मानने वाले हैं। इस खानदान में लाला आसानन्दजी के पुत्र लाला छजमलजी और छजमलजी के हीरालालजी नामक पुत्र हुए। आपका जन्म संवत् १८८२ के करीब हुआ। और संवत् १९५० के ज्येष्ठ मास में आपका स्वर्ग वास हुआ। आप बड़े धार्मिक और परोपकारी पुरुष थे सामायिक और प्रतिक्रमण का आपको बड़ा दृढ़ निश्चय था। आपके पुत्र लाला कन्हैयालालजी इस खानदान में बड़े नामी और प्रतापी पुरुष हुए। आपने इस खानदान की सम्पत्ति और इज्जत को बहुत बढ़ाया। आप खास कर नीलाम का व्यापार करते थे। आपका स्वर्गवास १९४७ में हुआ। आपके दो पुत्र हुए जिनके नाम क्रम से लाला मांगीलालजी और लाला चुन्नीलालजी हैं। लाला मांगीलालजी का जन्म संवत् १९२७ का है। आपके तीन पुत्र हुए जिनके नाम श्री चम्पालालजी, मुन्नालालजी और ऋषभचन्दजी हैं। इनमें से चम्पालालजी का केवल २२ वर्ष की कम उम्र में ही देहान्त होगया। लाला चुन्नीलालजी का जन्म संवत् १९४१ का है। आप बड़े सज्जन और योग्य पुरुष हैं। आपके इस समय दो पुत्र हैं जिनके नाम जवाहरलालजी और मिलापचंद जी हैं। देहली के ओसवाल समाज में यह खानदान बड़ा धार्मिक और प्रतिष्ठित माना जाता है।

भड़गातिया

भड़गातिया खानदान, अजमेर

इस परिवार का मूल निवास स्थान मेड़ता है। इस खानदान के पूर्वज भड़गतिया सूरजमलजी तथा उनके पुत्र बाघमलजी मेड़ते के समृद्धि शाली साहुकार माने जाते थे। आपके यहाँ "सूरजमल बाघमल" के नाम से व्यापार होता था। सेठ बाघमलजी के पुत्र फतेमलजी हुए।

सेठ फतेमलजी भड़गतिया—आप संवत् १८६५-७० के मध्य में अजमेर आये। आप बड़े बहादुर तबियत तथा राजसी ठाट-बाट वाले पुरुष थे। आपने अजमेर में बैंकिंग व्यापार चालू किया। आपकी प्रथम पत्नी से कल्याणमलजी तथा द्वितीय पत्नी से सुगनमलजी भड़गतियाका जन्म हुआ।

संवत् १९२८ में आप अजमेर से वापस मेड़ते चले गये। आपके बड़े पुत्र कल्याणमलजी का परिवार अजमेर में तथा सुगनमलजी का परिवार मेड़ते में निवास करता है।

मड़गतिया कल्याणमलजी—आपने अपने व्यापार और मकान, जायदाद आदि स्थाई सम्पत्ति को बहुत बढ़ाया। संवत् १९५७ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके कस्तूरमलजी तथा जावंतराजजी नामक दो पुत्र हुए। इन बन्धुओं ने अपने पितामह सेठ फतेमलजी द्वारा बनाई गई दादाजीको छत्री में एक लाख रुपये व्यय करके १९७१ में प्रतिमा प्रतिष्ठित कराई। आप दोनों बन्धुओं का लाखों रुपयों का लेनदेन मारवाड़ के जागीरदारों में रहा करता था। आप अजमेर के प्रधान, प्रतिभाशाली साहुकारों में माने जाते थे। संवत् १९७३ मे दोनों भाइयों का व्यापार अलग अलग हुआ। भड़गतिया कस्तूरमलजी विद्यमान हैं। आपने लाखों रुपयों की सम्पत्ति मौज, शौक और आनन्द उल्लास में खरच की। आपके कोई सन्तान नहीं है। सेठ जावन्तराजजी का स्वर्गवास सम्वत् १९७६ में हुआ। आपके पुत्र उदयमलजी का जन्म सन् १९११ में हुआ। आप प्रसन्नचित्त युवक हैं आपके यहाँ कल्याणमल जावंतराज के नाम से जोधपुर में तथा "बाघमल उदयमल" के नाम से अजमेर में बैंकिंग तथा जायदाद के किराये का काम होता है।

मड़गतिया सुगनमलजी—आपका परिवार मेड़ते में निवास करता है। तथा वहाँ के ओसवाल समाज में बहुत प्रतिष्ठित माना जाता है। आपका स्वर्गवास हो गया है। आपके तीन पुत्र हैं। जिनमें धनपतमलजी तथा आनन्दमलजी बिड़ला मिल गवालियर में सर्विस करते हैं तथा चन्दनमलजी मेड़ते में निवास करते हैं।

सांखला

साखला गौत्र की उत्पत्ति—कहा जाता है कि सिद्धपुर पाटन के राजा सिद्धराज जयसिंह के विश्वास पात्र सेवक जगदेवजी के सूरजी, संखजी, सांवलजी, तथा सामदेवजी आदि ७ पुत्र थे। जयदेव जी, बड़े बहादुर पुरुष हुए। इनको श्री हेमसूरिजी ने संवत् ११७५ में जैन धर्म की दीक्षा दी। इस प्रकार संखजी जैन धर्म से दीक्षित हुए। इनकी सन्ताने सांखला कहलाई।

सेठ सागरमल गिरधारीलाल सांखला, बंगलोर

इस परिवार का मूल निवास्थान मोहरां (जोधपुरस्टेट) है वहाँ से लगभग ६५ साल पहले सेठ गिरधारीलालजी सांखला व्यापार के लिये बंगलोर आये। आरम्भ में आपने १० सालों तक मुनीमात की। पश्चात् मिल्टरी को नाणा, सप्लाय करने के लिये बैंकिंग व्यापार आरम्भ किया। तथा "सागरमल गिरधारीलाल" के नाम से फर्म स्थापित की। इसके १० साल पश्चात् आपने सिकराबाद (दक्षिण) में तथा इसके भी साल पश्चात् आपने नीलगिरी में अपनी दुकानें खोलीं। इन सब स्थानों पर यह फर्म ब्रिटिश-छावनी के साथ बैंकिंग बिजिनेस करती है। आपके पुत्र श्रीयुत अनराजजी सांखला बड़े बुद्धिमान उदार तथा व्यापार कुशल सज्जन हैं।

इस कुटुम्ब की ओर से ब्यावर में श्री गिरधारीलाल सांखला बोर्डिंग हाउस स्थापित है। जिसमें ६० विद्यार्थी निवास करते हैं। मोहर्रा में संवत् १९४६ से आपकी ओर से चिड़ी चुगा का सदाव्रत जारीहै। सेठ अनराजजी के पुत्र केशरीमलजी, लालचन्दजी तथा रतनलालजी हैं। इनमें केशरीमलजी फर्म के कारबार में भाग लेते हैं। यह फर्म सिकंदराबाद, बंगलोर तथा नीलगिरी के व्यापारिक समाज में बहुत प्रतिष्ठित मानीजाती है। इस खानदान के मेम्बर धार्मिक तथा परोपकार के कार्यों में अच्छी सम्पत्ति व्यय करते रहते हैं। मारवाड़ में भी यह खानदान नामी माना जाता है। यह परिवार श्वेताम्बर जैन स्थानकवासी आम्नाय का मानने वाला है।

सेठ लछमणदास शिवलाल, परभणी

इस खानदान के मालिकों का मूल निवास स्थान ताजौली (जोधपुर-स्टेट) का है। अप जैन तेरहपन्थी आम्नाय के मानने वाले सज्जन हैं। इस खानदान में सौ वर्ष पहले सेठ लक्ष्मणदासजी सांकला साढ़े गाँव (निजाम) आये। यहाँ आकर आपने लेन देन और खेती वाड़ी का काम आरम्भ किया। तदनन्तर आपने अपनी एक और फर्म परभणी में स्थापित की, जिस पर बैंकिङ्ग तथा कपास वगैरह का व्यापार प्रारम्भ किया। सेठ लक्ष्मणदासजी का संवत् १९२७ में स्वर्गवास हुआ। आपके पश्चात् आपके पुत्र सेठ शिवलालजी ने फर्म के काम को सम्हाला। आपके हाथ से इस फर्म के काम को बहुत तरक्की मिली। आप परभणी में प्रतिष्ठा सम्पन्न व्यक्ति माने जाते थे। आपका संवत् १९७६ में स्वर्गवास होगया। आपके नाम पर हेमराजजी सांकला दत्तक आये।

सेठ हेमराजजी साकला—आप बड़े योग्य और सज्जन पुरुष हैं। आपका जन्म संवत् १९५१ में हुआ। आपकी ओर से मन्दिरों, तीर्थ यात्राओं तथा परोपकार में बहुत सा धन खर्च होता रहता है। आपके इस समय एक पुत्र है जिनका नाम कुंदनमलजी है। आपने परभणी के पार्श्वनाथ जी के मन्दिर में बहुत रकम सहायतार्थ प्रदान की थी। आपकी फर्म परभणी के व्यापारिक समाज में प्रतिष्ठित मानी जाती है।

हिंगड़

सेठ केशरीमल कुन्दनमल हिंगड़, कलकत्ता

इस परिवार के मालिकों का मूल निवास स्थान घाणेराव (गोडवाड़) का है। वहाँ से करीब ५० वर्ष पूर्व इस परिवार के पुरुष चन्द्रभानजी नाडोल (गोड़वाड़) में आकर बसे। तभी से यह परिवार नाडोल में ही निवास करता है। आप श्वेताम्बर जैन मंदिर आम्नाय को मानने वाले सज्जन हैं। सेठ चन्द्रभानजी के छः पुत्र हुए जिनके नाम क्रमशः सेठ लखमीचंदजी, रिखबदासजी, गुलाबचंदजी, सिरदारमलजी पृथ्वीराजजी तथा राजमलजी हैं।

सेठ लखमीचंदजी नाडोल में ही राज का काम करते हैं। आप इस ठिकाने के कामदार हैं। सेठ गुलाबचंदजी और सिरदारमलजी का स्वर्गवास हो गया है। आप लोग भी जब तक रहे तब तक बड़ी बुद्धिमानी से फर्म का कारबार चलाते थे। सेठ रिखबदासजी बड़े प्रतिभाशाली व्यक्ति हैं। रानी स्टेशन पर आपके यहाँ रिखबदास सिरदरमलजी के नाम से अनाज, किराना, कमीशन आदि का व्यवसाय होता है। इसके पश्चात आपने तथा आपके परिवार वालों ने मिलकर कलकत्ता में भी एक शाखा खोली जिसपर भी उपरोक्त नाम पड़ता है। इस फर्म पर विदेश से कपड़े का डायरेक्टर इम्पोर्ट बिजिनेस होता है। इसके बाद आपने एक स्वदेशी जूट मिल नामक एक जूट खोला,तथा एक छाते की फेक्टरी खोली। वर्त्तमान में आपके कलकत्ता आफिस से मद्रास, कोलम्बो, कोचीन, सीलोन, बम्बई वगैरह स्थानों पर लार्ज स्केल में किराने का एक्सपोर्ट होता है। इसके अतिरिक्त गव्हर्नमेंट फारेस्ट डिपार्टमेंट तथा रक्षित राज्यों से आप हाथीदांत तथा गेंडे के सींगों को कन्ट्राक्ट से खरीदते हैं। तथा बाहर पंजाब, मुलतान, राजपूताना वगैरह स्थानों पर अपना माल भेजते हैं। इस फर्म की एक शाखा नाडोल में सिरदारमल फौजमल के नाम से है।

इस फर्म के कार्य्य को संचलित करने में सेठ रिखबदासजी, पृथ्वीराजजी, राजमलजी, कुन्दनमल जी, दानमलजी, फतेराजजी, अमरचंदजी, भागचंदजी, सिरेमलजी, अजयराजजी, केशरीमलजी और पुखराज जी का बहुत हाथ है। आप सब लोग व्यापार कुशल सज्जन हैं। वर्तमान में कलकत्ता दुकान का कार्य्य प्रधान तौर से बाबू केशरीमलजी और पुखराजजी देखते हैं। आप दोनों भाइयों को मशीनरी विभाग का अच्छा ज्ञान है। इस परिवार के व्यक्तियों का सार्वजनिक कामों की ओर भी बहुत ध्यान है। सेठ रखबदासजी ने वरकाणा पार्श्वनाथ बोर्डिंग के लिये लगभग २ लाख रुपये एकत्रित करवाये।

पटावरी

सेठ शोभाचन्दजी पटावरी का परिवार, भादरा

इस परिवार के लोग भादरा के निवासी हैं। इस परिवार में सेठ चैनरूपजी बड़े बुद्धिमान और प्रसिद्ध व्यक्ति हुए। आप तत्कालीन समय में ठाकुर साहब भादरा के कामदार रहे। इसके बाद ऐसा कहा जाता है कि जब भादरा खालसे हो गया तब आप बीकानेर दरबार की ओर से वहाँ का काम काज देखने लगे। आपके पुत्र जीतमलजी तथा पौत्र हीरालालजी भी वहीं राज में काम करते रहे। सेठ हीरालालजी के शोभाचन्दजी, चतुरभुजजी, लूनकरनजी प्रतापमलजी और छोटेलालजी नामक पांच पुत्र हैं।

सेठ शोभाचन्दजी पटावरी अपने जीवन में बड़े क्रान्तिकारी व्यापारी रहे। प्रारम्भ में आपने कई स्थानों पर गुमास्तागिरी की, फिर पाट की दलाली का काम किया। इसके बाद जब कि कलकत्ते में पाट का बाड़ा कायम हुआ उस समय आपभी इसमें शामिल हो गये। आप में उत्साह है, साहस है और व्यापार करने की पूरी २ क्षमता भी है। अतएव आप शीघ्र ही इस व्यापार में बड़े नामांकित व्यक्ति हो गये। आपने अपने हाथों से वायदे के सौदों में लाखों रुपये कमाये और खोये। आपने अपने हाथों से पाट का

बाड़ा स्थापित किया कई बार आपस में व्यापारियों की तनातनी में आप साहसपूर्वक खड़े रहे एवम बड़ी सफलतापूर्वक उसमें विजय पाई। वायदे के व्यापार में आपका अनुभव बहुत बढ़ा चढ़ा है। इस समय आप ईस्ट इंडिया जूट एसोसिएशन के डायरेक्टर हैं। जूट के वायदे के व्यवसाय में आप इस समय प्रधान व्यक्ति माने जाते हैं। आपके भाई भी आपको इस व्यवसाय में सहयोग प्रदान करते हैं। आप श्वेताम्बर जैन तेरापंथी संप्रदाय को मानने वाले हैं। आपका आफ़िस नं० ४ सैनागो स्ट्रीट कलकत्ता में है।

बम्बोली

सेठ सोभाचन्द माणकचन्द बम्बोली, सादड़ी

इस खानदान वाले प्रथम उदयपुर में रहते थे। इस वंश में पीथाजी हुए जो सादड़ी में आकर रहने लगे। पीथाजी के सवजी नामक पुत्र हुए। सवजी के सोभाचन्दजी तथा माणकचन्दजी नामक दो पुत्र हुए। सोभाचन्दजी संवत् १९२८ में स्वर्गवासी हुए। सोभाचन्दजी के पुत्र नवलचन्दजी हुए। तथा नवलचन्दजी के केसूरामजी, सांकलचन्दजी संतोपचन्दजी रूपचन्दजी तथा मेवराजजी नामक ५ पुत्र हुए। इनमें से सांकलचन्दजी को माणकचन्दजी के नाम पर दत्तक दिया गया। इस समय इन भ्राताओं की दो दुकाने पूना में बैङ्किग, तथा सराफी काम करती है। सांकलचन्दजी तथा संतोपचन्दजी दोनों प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। संवत् १९९७ में संतोपचन्दजी का स्वर्गवास हुआ।

बम्बोली केसुरामजी के पुत्र गुलाबचन्दजी थे। इनके जसराजजी, तेजमलजी, चन्दनमलजी, हस्तीमलजी तथा देवराजजी नामक पाँच पुत्र विद्यमान हैं। इनमें से तेजमलजी को सांकलचन्दजी के पुत्र पृथ्वीराजजी के नाम पर दत्तक दिया है। बम्बोली संतोपचन्दजी के मयाचन्दजी, चुन्नीलालजी तथा बालचंद जी नामक तीन पुत्र विद्यमान हैं। जिनमें चुन्नीलालजी, रूपचन्दजी के नाम पर तथा बालचन्दजी, मेघराजजी के नाम पर दत्तक गये हैं।

बम्बोली मयाचन्दजी का जन्म संवत् १९४७ में हुआ। आप स्थानीय शुभ चिंतक जैन समाज नामक संस्था के प्रेसिडेण्ट तथा वरकाणा विद्यालय की मैंनेजिंग कमेटी के मेम्बर हैं। सादड़ी के विद्यालय में इस परिवार ने ६०००) छः हजार रुपये दिये हैं। इसी प्रकार सार्वजनिक व धार्मिक कार्यों में आप सहायताएँ देते रहते हैं।

श्री श्रीमाल

सेठ जेचन्दजी हिम्मतमलजी श्रीश्रीमाल, सिरोही

सेठ जेचन्दजी सिरोही के प्रतिष्ठित व्यापारी थे। इनके हिम्मतमलजी, फोजमलजी और जवान मलजी नामक ३ पुत्र हुए। इनको प्रतिष्ठित व्यापारी समझकर महाराव केसरीसिंहजी ने संवत् १९४० की चेतवदी ११ के दिन अपनी स्टेट ट्रेझरी का ट्रेझरर बनाया। इस स्टेट बैंकर शिप का काम ५० सालों तक

यह परिवार करता रहा। ता० १।१०।२२ से स्टेट ने अपनी ट्रेझरी खोल कर यह काम इनकी फर्म से ले लिया। इन पचास सालों में स्टेट का तमाम खजाना इनकी फर्म पर आता रहा, तथा इनके द्वारा सुविधानुसार हर एक डिपार्टमेंट में पहुँचाया जाता रहा। स्टेट की मीटिंगों में दीवान और रेवन्यू कमिश्नर के पश्चात् तीसरी चेयर इनकी लगती रही। सेठ हिम्मतमलजी प्रतिष्ठा सम्पन्न व्यापारी हैं, तथा स्थानीय पंच पंचायती में अग्रगण्य व्यक्ति माने जाते हैं। धार्मिक और सामाजिक कार्मों में भी आपने अच्छा व्यय किया है। सिरोही स्टेट में आपकी बड़ी इज्जत है। आपकी वफादारी और ईमानदारी की कद्र कर स्टेट हर एक विवाह शादी आदि उत्सवों पर सिरोपाव प्रदान करती है। आपके छोटे भ्राता जवानमलजी विद्यमान हैं तथा फोजमलजी का अंतकाल १९७६ में हो गया है। सेठ हिम्मतमलजी के पुत्र इन्द्रचन्द्रजी हैं। आप श्रीश्रीमाल-सेठिया बोहरा गौत्र के सज्जन हैं।

सवदरा

सेठ चुन्नीलाल रामचन्द्र सवदरा, मांजरोद (खानदेश)

इस परिवार का निवास आसरडाई (जैतारण के पास) मारवाड़ है। आप लोग स्थानकवासी आम्नाय के मानेवाले सज्जन हैं। इस परिवार के पूर्वज सेठ रायमलजी के पुत्र जीताजी तथा सरदारमलजी हुए। इन बंधुओं में देश से व्यापार के लिये लगभग ८० साल पहिले सेठ सरदारमलजी, खानदेश के मांजरोद नामक स्थान में आये। तथा मामूली हालत में यहाँ धंधा रू किया। आपके बड़े भ्राता सवदरा जीताजी के पुत्र रामचन्द्रजी हुए, आपने आसामी लेनदेन शुरू करके अपने व्यापार की नींव जमाई। संवत् १९५३ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके नाम पर आसरडाई से सेठ चुन्नीलालजी दत्तक आये।

चुन्नीलालजी सवदरा—आपका जन्म संवत् १९३२ में हुआ। १२ साल की वय में आप सेठ रामचन्द्रजी के नाम पर आये। आपने इस खानदान के व्यापार तथा सम्मान को बढ़ाया। खानदेश के ओसवाल समाज में आप का परिवार प्रतिष्ठित माना जाता है। आप सरल स्वभाव के, गंभीर तथा सुखी गृहस्थ हैं। आपके पुत्र पन्नालालजी, मोहनलालजी, चम्पालालजी, दीपचन्दजी तथा बंशीलालजी हैं। श्री पन्नालालजी का जन्म सं० १९५५ में मोहनलालजी का १९५८ में तथा चम्पालालजी का १९६४ में हुआ। आप तीनों भाई फर्म में व्यापार में सहयोग लेते हैं। तथा इनसे छोटे दीपचन्दजी सवदरा पूना कॉलेज में बी० ए० के द्वितीय वर्ष में अध्ययन कर रहे हैं। आपका विवाह खानदेश के प्रसिद्ध श्रीमंत श्रीमान् सेठ राजमलजी ललवानी की कन्या से हुआ है। इनसे छोटे वंशीलालजी जलगाँव हाईस्कूल में पढ़ते हैं। पन्नालालजी के पुत्र शिवलालजी तथा नेमीचंदजी और मोहनलालजी के पुत्र मानमलजी व सुरजमलजी तथा चम्पालालजी के पुत्र भँवरलालजी हैं।

जालोरी

श्री तखनमलजी जालोरी, भेलसा (गवालियर)

इस परिवार के पूर्वज जालोरी खुशालचन्दजी तथा उनके पुत्र संतोषचन्दजी अरटिया (रीयां) में रहते थे। वहाँ से आपने अपना निवास सेठों की रीयां में बनाया। सेठ संतोषचन्दजी के पुत्र तारा-

चन्दजी हुए। आप रीयां से व्यवसाय के लिये भेलसा आये, और यहां सर्विस की। संवत् १९३१ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके गुलाबचन्दजी पूनमचन्दजी तथा नथमलजी नामक ३ पुत्र हुए। सेठ गुलाबचन्दजी तथा पूनमचन्दजी ने बासोदा (भेलसा के पास) में अपना व्यापार शुरू किया, तथा १० गांवों में अपनी जमीदारी की। आप तीनों भ्राता क्रमशः संवत् १९४५ संवत् १९२८ तथा संवत् १९३१ में स्वर्गवासी हुए। सेठ गुलाबचन्दजी के पुत्र रिखबदासजी संवत् १९८१ मे स्वर्गवासी होगये हैं। इनके पुत्र सिंगारमलजी तथा सागरमलजी बासोदा में व्यापार करते हैं।

जालोरी पूनमचन्दजी के अबीरचंदजी तथा लूणकरणजी नामक २ पुत्र हुए। जालोरी लूणकरण जी संवत् १९७४ में भेलसा आये तथा यहां ३ गांवों की जमीदारी करके मकानात दुकाने आदि बनवाईं। संवत् १९८० में आप स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र जालोरी तखतमलजी हैं।

श्री तखतमलजी जालोरी—आपका जन्म संवत् १९५१ में हुआ। आप १८ साल की आयु से ही भेलसा कोर्ट में प्रेक्टिस करते हैं। तथा भेलसा और गवालियर स्टेट के प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। तीन सालों तक आप गवालियर स्टेट प्रीवियस कान्फ्रेंस के सेक्रेटरी थे, तथा इधर २ वर्षों से उसके प्रेसिडेंट हैं। आप गवालियर स्टेट लेजिस्लेटिव कौंसिल के मेम्बर हैं। इसके अलावा अछूतोद्धारक संघ भेलसा के प्रेसिडेन्ट, चरखा संघ खादी भण्डार के संचालक तथा डिस्ट्रिक्ट बोर्ड और डिस्ट्रिक्ट औकॉफ कमेटी के मेम्बर हैं। भेलसा म्यु० के प्रेसिडेण्ट भी आप रह चुके हैं। इसी तरह के हरएक सार्वजनिक कामों में हिस्सा लेते हैं। आपके पुत्र राजमलजी इलाहबाद में थर्ड ईयर में पढ़ते हैं।

सेठ अबीरचन्दजी के पुत्र मिलापचन्दजी तथा अमोलकचन्दजी स्वर्गवासी होगये हैं। इस समय मिलापचन्दजी के पुत्र सोभागमलजी भेलसा में खजांची हैं। तथा सूरजमलजी उदयपुर में पढ़ते हैं। अमोलकचन्दजी के पुत्र सरदारमलजी हैं।

सेठ नथमल दलीचंद जालोरी बोहरा का खानदान, अहमदनगर

इस खानदान का मूल निवास पीपाड़ (मारवाड़) है। आप मन्दिर मार्गीय आम्नाय के मानने वाले सज्जन हैं। इस खानदान के पूर्वज सेठ बक्षूरामजी तथा उनके पुत्र मोतीरामजी थे। सेठ मोतीरामजी के ३ पुत्र हुए। इनमें बड़े दो सेठ तेजमलजी तथा सूरजमलजी लगभग १५० वर्ष पूर्व पैदल रास्ते से अहमदनगर आये, तथा यहाँ सराफी और कपड़े का व्यापार चालू किया। आपके छोटे भाई बुधमलजी मारवाड़ में ही रहते रहे।

सेठ तेजमलजी के पुत्र गणेशदासजी तथा भगवानदासजी थे। इनमें गणेशदासजी के लक्ष्मणदासजी, राजमलजी तथा भीकनदासजी नामक ३ पुत्र हुए। और भगवानदासजी के पुत्र पेमराजजी हुए। इन चारों सज्जनों का स्वर्गवास हो गया है। इस समय लछमणदासजी के पुत्र चुन्नीलालजी तथा पेमराजजी के पुत्र पन्नालालजी विद्यमान हैं।

सेठ सूरजमलजी के पुत्र नथमलजी तथा पौत्र दलीचन्दजी हुए। जालोरी बोहरा दलीचन्दजी के हाथों से फर्म के व्यापार को विशेष उन्नति मिली। आपने पीपाड़ में एक उपाश्रय तथा भांदकजी में

एक धर्मशाला बनवाई। अहमदनगर में आपकी फर्म सबसे पुरानी मानी जाती है। आप ६५ सालकी आयु में, संवत् १९७८ में स्वर्गवासी हुए। आपके समरथमलजी, कनकमलजी, सिरेमलजी, हस्तीमलजी तथा अमोलकचन्दजी नामक ५ पुत्र हुए। आप सब भाइयों का भी धरम ध्यान की ओर अच्छा लक्ष्य था। इनमें सेठ हस्तीमलजी को छोड़कर शेष चार भ्राता निःसंतान स्वर्गवासी हो गये हैं। हस्तीमलजी का जन्म संवत् १९४८ में हुआ। आप अहमदनगर के प्रतिष्ठित सज्जन हैं। आपके पुत्र बाबूलाल ४ साल के हैं।

फलोदिया

सेठ फतेचन्द मांगीलाल फलोदिया, अहमदनगर

इस परिवार का मूल निवास सेठों की रींया (मारवाड़) है। वहाँ से सेठ खुशालचन्दजी फलोदिया अपने पुत्र गुमानचन्दजी तथा मोहकमदासजी के साथ लगभग २०० साल पूर्व अहमदनगर जिले के साकूर नामक गाँव में गये। और वहाँ अपनी दुकान खोली। सेठ गुमानचन्दजी के इन्द्रभानजी, तथा मुलतानमलजी नामक २ पुत्र हुए।

इन्द्रभानजी फलोदिया का परिवार—सेठ इन्द्रभानजी का सम्वत् १९२७ में स्वर्गवास हुआ। आपके हजारीमलजी, भवानीदासजी तथा गुलाबचन्दजी नामक ३ पुत्र हुए। फलोदिया भवानीदासजी के नवलमलजी तथा हरकचन्दजी नामक २ पुत्र हुए। इनमें हरकचन्दजी, सेठ गुलाबचन्दजी के नाम पर दत्तक गये। इस समय इस परिवार में हजारीमलजी के पुत्र किशनदासजी तथा सूरजमलजी साकूर में व्यापार करते हैं। और हरकचन्दजी के पुत्र चुन्नीलालजी वरोरा (सी०पी०) में सूत का व्यापार करते हैं।

मुलतानमलजी फलोदिया का परिवार—आपका सम्वत् १९४२ में स्वर्गवास हुआ। आपके पुत्र पूनमचन्दजी लगभग ७० साल पहले साकूर से अमरावती आये। तथा "मानमल गुलाबचन्द" के साझे में कपड़े का व्यापार शुरू किया। आप सम्वत् १९५० में स्वर्गवासी हुए। आपके शोभचन्दजी, फतेचन्दजी तथा माँगीलालजी नामक ३ पुत्र हुए। इनमें शोभाचन्दजी सम्वत् १९६२ में स्वर्गवासी हुए।

फतेचन्दजी फलोदिया—आपका जन्म सम्वत् १९३७ में हुआ। आप अमरावती के व्यापारिक समाज में प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। सार्वजनिक तथा धार्मिक कामों में आप अच्छा सहयोग लेते हैं। आपने लगभग ५० हजार की लागत से अमरावती के एक जैन मन्दिर बनवाकर सम्वत् १९८० में उसकी प्रतिष्ठा कराई। आपके यहाँ "फतेचन्द माँगीलाल" के नाम से कपड़े का व्यापार होता है। आपके पुत्र मोहनलालजी २८ साल के हैं।

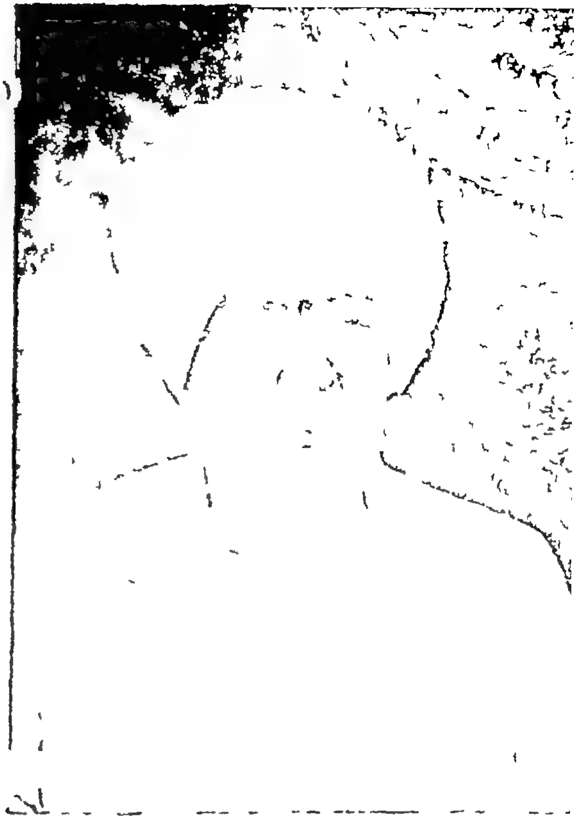
धूपिया

सेठ हजारीमल विशनदास (धूपिया) का खानदान, अहमदनगर

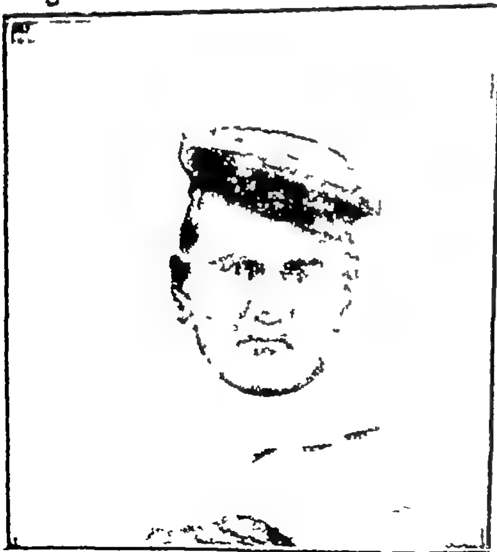
इस खानदान का मूल निवास स्थान रणसी गाँव (पीपाड़) का है। आप श्वेताम्बर जैन स्थानकवासी आम्नाय के सज्जन हैं। इस खानदान के पूर्वज सेठ पन्नालालजी के पौत्र श्रीयुत हजारीमलजी



सेठ फतेचंदजी फलोदिया (फतेचंद मांगीलाल) अमरावती



सेठ हीरालालजी भलगट (छोगमल हीरालाल) गुलबर्गा



स्व० सेठ किशनदासजी मेहता (किशनदास माणकचंद)
अहमदनगर.



श्री मोतीलालजी भलगट (छोगमल हीरालाल)
गुलबर्गा.

मारवाड़ से करीब ७५ वर्ष पूर्व अहमद नगर में आये। शुरू में आपने थोड़े समय सर्विस की और पश्चात् संवत् १९२८ में "हजारीमल अगरचन्द" के नाम से भागीदारी में दुकान स्थापित की। संवत् १९४१ में आपका स्वर्गवास हुआ। आपके धीरजमलजी, अगरचन्दजी, नेमीदासजी और विशनदासजी नामक ४ भाई और थे। इनमें से अगरचन्दजी, नेमीदासजी और विशनदासजी भी मारवाड़ से अहमदनगर आ गये। आप चारों भाइयों के हाथों से इस फर्म की खूब उन्नति हुई। आपका धार्मिक कार्यों की ओर बहुत लक्ष्य था। सम्वत् १९७३ में चारों भाइयों का व्यापार अलग २ हो गया। मूथा विशनदासजी ने शास्त्रों का पठन पाठन और अभ्यास बहुत किया था। अगरचन्दजी का स्वर्गवास सम्वत् १९५५ में, नेमीदासजी का सम्वत् १९६९ में और विशनदासजी का स्वर्गवास सम्वत् १९८९ में हुआ।

मूथा हजारीमलजी के पुत्र मोतीलालजी का जन्म सम्वत् १९३३ में हुआ है। आपके यहाँ "मोतीलाल चुन्नीलाल" के नाम से व्यापार होता है। आप सज्जन व्यक्ति हैं। आपके पुत्र चुन्नीलालजी हैं।

मूथा विशनदासजी के माणकचन्दजी और प्रेमराजजी नामक २ पुत्र हैं। आपका जन्म सम्वत् १९५५ तथा ६२ में हुआ। आप दोनों भाई सज्जन पुरुष हैं। अहमदनगर के ओसवाल नवयुवकों में आप बड़े उत्साही तथा कर्मशील हैं। आपने अपने पिताजी के स्वर्गवास के समय २१००) का दान किया था। आपके यहाँ "विशनदास माणकचन्द" के नाम से व्यापार होता है।

सेठ पूनमचंद मुकुन्ददास मूथा (धूपिया), अहमदनगर

यह खानदान श्वेताम्बर जैन स्थानकवासी आम्नाय का मानने वाला है। इस खानदान का मूल निवास स्थान रणी गांव (जोधपुर) का है। इस खानदान में मूथा जेठमलजी देश से अहमद नगर आये और यहाँ पर अपनी दुकान स्थापित की। आपके नवलमलजी और मुल्तानमलजी नामक दो पुत्र हुए। नवलमलजी बड़े बुद्धिमान और व्यापार दक्ष पुरुष थे। आपके हाथों से इस फर्म की बहुत उन्नति हुई। आपका स्वर्गवास संवत् १९२९ में हुआ। आपके छः पुत्र हुए जिनके नाम क्रम से गंभीरमलजी, हमीरमलजी, विशनदासजी, मुकुन्ददासजी, रतनचन्दजी और पूनमचंदजी थे। इनमे से केवल मूथा पूनमचन्दजी इस समय विद्यमान हैं। विशनदासजी का स्वर्गवास संवत् १९४७ में तथा मुकुन्ददासजी का सम्वत् १९७५ में हुआ। इस समय मुकुन्ददासजी के पुत्र प्रेमराजजी तथा मोतीलालजी और पूनमचन्दजी के पुत्र पन्नालालजी, धनराजजी तथा वंशीलालजी विद्यमान हैं। इस समय इस फर्म के व्यापार का संचालन सेठ पूनमचन्दजी और मूथा प्रेमराजजी करते हैं। आप दोनों बड़े सज्जन और व्यापार दक्ष पुरुष हैं। दान धर्म और सार्वजनिक कार्यों की ओर आपका अच्छा लक्ष्य है। इस समय यह फर्म तिल, रुई, कपास का व्यापार करती है। मूथा पूनमचन्दजी अहमद नगर जिला ओसवाल पंचायत अधिवेशन के स्वागताध्यक्ष थे।

सेठ छोगमल हीरालाल भलगट, गुलबर्गा

इस परिवार का मूल निवास सेठजी की रीयाँ (मारवाड़) में है। वहाँ भलगट अनोपचंदजी

निवास करते थे। आपके कस्तूरमलजी, हजारीमलजी व जीरामलजी तथा वख्तावरमलजी नामक ४ पुत्र हुए। हजारीमलजी रीयाँ के प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। आपके गादमलजी तथा छोगमलजी नामक २ पुत्र हुए। देश से व्यापार के लिए सेठ छोगमलजी संवत् १९३८ में गुलवर्गा आये। आपके आने के बाद दो दो साल के अन्तर से आपके पुत्र चुन्नीलालजी तथा हीरालालजी भी यहाँ आगये, तथा छोगमल चुन्नीलाल के नाम से व्यापार शुरू किया। संवत् १९६८ में इन दोनों भाइयों का व्यापार अलग २ हो गया। संवत् १९७७ में सेठ छोगमलजी तथा सवत् १९८४ मे सेठ चुन्नीलालजी स्वर्गवासी हुए। इनके नाम पर मारवाड़ से गुलाब-चन्दजी दत्तक आये हैं। इनके यहाँ "चुन्नीलाल गुलाबचन्द" के नाम से सराफी व्यापार होता है।

सेठ हीरालालजी मलगट—आपका संवत् १९२१ में जन्म हुआ। आपने कपड़े के व्यापार में अच्छी सम्पत्ति पैदा की। तथा गुलवर्गा के व्यापारिक समाज में अपनी प्रतिष्टा को वढ़ाया। आपकी यहाँ ३ दुकाने सफलता के साथ कपड़े का व्यापार कर रहीं हैं। तथा गुलवर्गा की दुकानों में मातवर मानी जाती हैं। गुलवर्गा स्टेशन रोड पर आपका महावीर भवन नामक सुन्दर बंगला वना हुआ है। इसी तरह आपके और भी कई मकानात बंगले आदि हैं। सार्वजनिक तथा धार्मिक कार्यों में भी आप अच्छो सम्पत्ति व्यय करते हैं। आपके नाम पर मोतीलालजी बूसी (जोधपुर स्टेट) से दत्तक आये हैं। इनकी वय ३० साल की है। आपभी तत्परता से अपने कपड़े के व्यापार को सम्हालते हैं। इनके पुत्र शांतिलालजी ३ साल के हैं।

इसी तरह इस खानदान में सेठ वजीरामलजी के छोटे पुत्र किशनराजजी तथा उन के भतीजे पेमराजजी और धनराजजी कान गाँव (वर्द्धा) में व्यापार करते हैं।

मुदरेचा (वोहरा)

सेठ सूरजमल दूलहराज मुदरेचा (वोहरा), कोलार गोल्ड फोल्ड

इस परिवार की उत्पत्ति चौहान राजपूतों से हुई। इस कुटुम्ब का मूल निवास स्थान ब्यावर राजपूताना है। आप जैन श्वेताम्बर स्थानकवासी आम्नाय के माननेवाले सज्जन हैं। सेठ छोगमलजी मुदरेचा अपने बड़े पुत्र सूरजमलजी के साथ सम्वत् १९५२ में बूंटी से बंगलोर आए, तथा यहाँ सेठ "बख्तावरमल रूपराज" मूथा के यहाँ ६ सालों तक सर्विस की। इसके बाद सम्वत् १९५९ में सेठ "हजारीमल बनराज" मूथा की भागीदारी में बंगलोर में एक दुकान की। इसके २ वर्ष बाद कोलार गोल्ड फील्ड में आपने अपनी स्वतंत्र दुकान खोली। मुदरेचा सूरजमलजी का जन्म सम्वत् १९४६ में हुआ। आप सज्जन तथा व्यापार कुशल व्यक्ति हैं। आप कोलार गोल्ड फील्ड में "सूरजमल दूलहराज" के नाम से बेकिंग व्यापार करते हैं। आपके छोटे भाई श्रीयुत दुलहराजजी का जन्म सम्वत् १९४६ में तथा श्री हरकचन्दजी का सं० १९४८ में हुआ। इन वन्धुओं का व्यापार बंगलोर हलसूर बाजार में "सूरजमल दूलहराज" तथा "छोगमल सूरजमल" के नाम से होता है। आप दोनों वन्धु सज्जन व्यक्ति हैं।

मुदरेचा सूरजमलजी के पुत्र रतनलालजी २० साल के हैं, तथा व्यापार में भाग लेते हैं। इनसे छोटे हीरालालजी तथा पन्नालालजी बालक हैं। इसी तरह हरकचन्दजी के पुत्र मोहनलालजी १४ साल के हैं।

तथा शेष धनराजजी और माणकलालजी बालक हैं। इस परिवार की ओर से बूंदी में गायों की सुविधा के लिये एक बावड़ी तथा खेड़ी कोटा बनवाया गया है। आप शिक्षा के लिये ५००) सालियाना स्कूलों को देते हैं। कोलार गोल्ड फील्ड तथा बंगलोर के ओसवाल समाज में इस परिवार की अच्छी प्रतिष्ठा है।

बैताला

सेठ अमरचन्द माणकचन्द बैताला, मद्रास

यह खानदान मूल निवासी डे (मारवाड़) का है। मगर इस समय यह खानदान नागौर में रहता है। आप मन्दिर आम्नाय को माननेवाले सज्जन है। इस खानदान में सेठ बालचन्दजी हुए। आपने आसाम में जाकर अपनी फर्म स्थापित की। आपके पुत्र अमरचन्दजी का स्वर्गवास सम्वत् १९७४ में हुआ।

बैताला अमरचन्दजी के कोई पुत्र न होने से आपके नाम पर माणिकचन्दजी बैताला सम्वत् १९७६ में दत्तक लिये गये। आपका जन्म सम्वत् १९६५ का है। आप सम्वत् १९८० में मद्रास आये और काम सीखने के लिये सेठ बहादुरमलजी समदरिया के पास रहे। उसके पश्चात् आपने अमरचन्दजी बोथरा के हिस्से में मनी लेंडिंग और ज्वैलरी का व्यापार शुरू किया। उसके बाद सम्वत् १९८८ से आपने अपना स्वतंत्र व्यापार शुरू कर दिया। इस समय आप मद्रास में डायमण्ड और ज्वैलरी का व्यापार करते हैं। आपने अपनी बुद्धिमानी से व्यापार में अच्छी तरक्की की है।

सेठ घासीराम बच्छराज बैताला, बागलकोट

इस परिवार का मूल निवास स्थान सोवणा (नागोर) है। यह परिवार स्थानकवासी आम्नाय का माननेवाला है। इस परिवार के पूर्वज सेठ जेठमलजी बैताला मारवाड़ में रहते थे। इनके बख्तावरमलजी, कस्तूरचन्दजी तथा छोगमलजी नामक ३ पुत्र हुए। इन बंधुओं में सेठ बख्तावरमलजी बैताला लगभग १०० साल पूर्व पैदल रास्ते से महाड़ बन्दर होते हुए बागलकोट आये। तथा "जेठमल बख्तावरमल" के नाम से कपड़े का व्यापार शुरू किया। आपने पीछे से अपने भाइयों को भी बागलकोट बुला लिया। आपके छोटे भाई छोगमलजी का सम्वत् १९८३ में स्वर्गवास हुआ। आपके घासीमलजी चंदूलालजी, हीरालालजी तथा किशनलालजी नामक ४ पुत्र हुए। इनमें किशनलालजी संवत् १९८६ में स्वर्गवासी हो गये। तथा सेठ हीरालालजी, कस्तूरचन्दजी के नाम पर दत्तक गये।

सेठ घासीलालजी का जन्म सम्वत् १९४२ में हुआ। आपने सेठ "गणेशदास गंगाविशन" की भागीदारी में सम्वत् १९६५ से बेजवाड़ा तथा बागलकोट में आढ़त की फर्म खोली है। तथा आप बागलकोट के व्यापारिक समाज में प्रतिष्ठित व्यापारी माने जाते हैं। आपके पुत्र बच्छराजजी तथा जसराजजी व्यापार में भाग लेते हैं। तथा मूलचन्द, तेजमल और मेघराज छोटे हैं। इसी प्रकार से सेठ चंदूलालजी, "जेठमल बख्तावरमल" के नाम से कपड़े का व्यापार करते हैं। इनके पुत्र भीमराजजी हैं। हीरालालजी के पुत्र जोरावरमलजी तथा किशनलालजी के पुत्र चम्पालालजी सराफी व्यापार करते हैं।

विनायकया

सेठ जुहारमल शोभाचंद विनायक्या, राजलदेसर

इस परिवार के लोग बहुत वर्षों से राजलदेसर ही में निवास कर रहे हैं। इस परिवार में किशोरसिंहजी के पुत्र उमचन्दजी हुए। इनके दो पुत्र किस्तूरचन्दजी और जुहारमलजी हुए। आप दोनों ही भाई बड़े प्रतिभा वाले और व्यापार कुशल थे। आप लोगों ने गोविन्दगंज (रंगपुर) में जाकर अपनी फर्म मेसर्स किस्तूरचन्द जुहारमल के नाम से खोली। इसमें आप लोगों को अच्छी सफलता रही।

वर्तमान में इस फर्म के संचालक सेठ किस्तूरचन्दजी के पुत्र शोभाचन्दजी और सेठ जुहारमलजी के पुत्र मालचन्दजी, जयचन्दलालजी और धनराजजी हैं। आप सब सज्जन और मिलनसार व्यक्ति हैं। आप लोगों ने आर्मेनियन स्ट्रीट कलकत्ता में भी चलानी का काम करने के लिये अपनी एक फर्म खोली। इस समय आपकी कलकत्ता और गोविन्द गंज दोनों स्थानों पर फर्मे चल रही हैं। आपके यहाँ कपड़ा, चलानी तथा जूट का व्यापार होता है।

सेठ शोभाचन्दजी के मोहनलालजी, पन्नालालजी और दीपचन्दजी, सेठ मालचन्दजी के सींव करणजी, सेठ जैचन्दलालजी के मन्नालालजी और धनराजजी के हनुमानमलजी नामक पुत्र हैं।

लाला खेरातीराम पन्नालाल विनायक्या, लुधियाना

यह खानदान जैन श्वेताम्बर स्थानकवासी सम्प्रदाय को माननेवाला है। यह खानदान करीब सौ सवा सौ वर्षों से यहीं निवास कर रहा है। इस खानदान में लाला जुहारमलजी और रनचन्दजी नामक दो भाई हो गये हैं। लाला जुहारमलजी के गुलाबमलजी नामक एक पुत्र हुए जो यहाँ के बड़े मशहूर चौधरी हो गये हैं। आपका संवत् १९३० में स्वर्गवास हो गया। आपके लाला खैरातीमलजी एवं फकीरचन्दजी नामक दो पुत्र हुए। इनमें लाला फकीरमलजी निसंतानावस्था में संवत् १९६७ में स्वर्गवासी हुए।

लाला खेरातीमलजी का संवत् १९१९ में जन्म हुआ। आपने अपने भतीजे (लाला पूरनचंदजी के प्रपौत्र) लाला पन्नालालजी को गोद लिया है। आप इस समय अपने पिता लाला खैरातीमलजी के साथ व्यापार करते हैं। आपके तिलकरामजी नामक एक पुत्र है। इस परिवार का यहाँ पर जनरल मर्चेंटाइज़ का व्यापार होता है। तथा यह कुटुम्ब यहाँ प्रतिष्ठित माना जाता है।

लाला रोशनलाल पन्नालाल जैन विनायक्या पटियाला

यह खानदान कई पुश्त पहिले समाना से आकर पटियाले में आबाद हुआ। यह परिवार स्थानकवासी आम्नाय का मानने वाला है। इस परिवार में लाला चैनामलजी तथा उनके पुत्र पूरनचंदजी हुए। लाला पूरनचन्दजी के कूढामलजी तथा नथुरामलजी नामक २ पुत्र हुए। इनमें से लाला कूढामलजी संवत् १९०९ में स्वर्गवासी हुए। आपके रामसरमदासजी तथा कन्हैयालालजी नामक दो पुत्र हुए।

इन भाइयों में लाला रामसरनदासजी इस खानदान में नामी व्यक्ति हुए। आप संवत् १९४८ में स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र लाला लछमणदासजी ३२ साल की आयु में संवत् १९६२ में तथा बाबूरामजी उनके चार साल पहिले १९ साल की आयु में स्वर्गवासी हुए। इस समय बाबू रामजी के पुत्र लाला नगीनालालजी हैं। इनके टेकचन्दजी तथा ओमप्रकाशजी नामक २ पुत्र हैं।

लाला कन्हैयालालजी—आपका स्वर्गवास ३० साल की आयु में संवत् १९२६ में हुआ। उस समय आपके पुत्र लाला रोशनलालजी एक साल के थे। लाला रोशनलालजी बड़े धर्मात्मा तथा योग्य व्यक्ति हैं। तथा ४० सालों से पटियाला की जैन बिरादरी के चौधरी हैं। आपके पुत्र लाला पन्नालालजी ३० साल के हैं। इनके पुत्र श्यामलालजी हैं।

सेठ सवाईराम गुलावचन्द विनायक्या, जालना (निजाम)

इस फर्म के मालिकों का मूल निवास स्थान रायपुर (जोधपुर स्टेट) का है। आप श्वेताम्बर जैन मन्दिर आम्नाय को मानने वाले सज्जन हैं। करीब ६४ वर्ष पहले श्री सवाईरामजी ने रायपुर से आकर जालना में अपनी दुकान की स्थापित की। आपका संवत् १९५५ में स्वर्गवास हुआ। आपके बाद इस दुकान के काम को आप के तीनों पुत्रों ने सम्हाला जिनमें से इस समय केशरीमलजी विद्यमान हैं।

केशरीमलजी इस समय दुकान के मालिक हैं। आपकी ओर से दान धर्म तीर्थ यात्रा आदि सत्कार्यों में द्रव्य व्यय किया जाता है। आपके पुत्र उत्तमचन्दजी व्यापार में भाग लेते हैं। आपके यहाँ "सवाईराम गुलाबचन्द" के नाम से कमीशन, तथा कृषि का काम होता है। उत्तमचंदजी के २ पुत्र हैं।

मालू

मालू गौत्र की उत्पत्ति—कहा जाता है कि रतनपुर के राजा रतनसिंह के दीवान माहेश्वरी वैश्य जाति के राठी गौत्रीय माल्हदेवजी नामक थे। इनके पुत्र को अर्धांग की बीमारी हो गई थी। अतएव दादा जिनदत्तसूरिजी ने अपनी प्रतिभा के बल पर माल्हदेवजी के पुत्र को स्वास्थ्य लाभ कराया। इससे मंत्री ने दादा जिनदत्तसूरिजी से जैन धर्म का प्रति बोध लिया, इनकी संतानें "माल्ह" के नाम से मशहूर हुई।

सेठ गणेशदास केशरीचंद मालू, सिवनी-छपारा (सी० पी०)

बीकानेर के समीप गजरूप देसर नामक स्थान से लगभग ७५ साल पूर्व इस परिवार के पूर्वज सेठ तिलोकचन्दजी मालू सिवनी आये तथा यहां सराफी व्यवहार चालू किया। आपका संवत् १९४९ में शरीरान्त। हुआ। आपके गणेशदासजी, केवलचन्दजी व रतनचन्दजी नामक ३ पुत्र हुए। इन भ्राताओं का कार बार संवत् १९५० के लगभग अलग २ होगया। सेठ गणेशचन्दजी मालू का जन्म संवत् १९१४ में हुआ। आपके केशरीचंदजी, माणिकचन्दजी, सुगनचन्दजी तथा दुलीचन्दजी नामक ४ पुत्र हुए। मालू गणेशचन्दजी तथा उनके पुत्र केशरीचन्दजी और माणिकचन्दजी के हाथों से इस फर्म के व्यापार को उन्नति मिली। मालू केसरीचन्दजी का जन्म संवत् १९३७ में हुआ। आप धार्मिक वृत्ति के पुरुष थे। सुगनचन्दजी मालू का शरीरान्त संवत् १९८० में हुआ।

वर्तमान में आप इस फर्म के मालिक सेठ माणिकचन्दजी, दुलीचन्दजी व केशरीचन्दजी के पुत्र देवचन्दजी, नेमीचन्दजी, हरिश्चन्दजी तथा सुगनचन्दजी के पुत्र शिखरचन्दजी हैं। आप सब सज्जन फर्म के व्यापार संचालन में भाग लेते हैं।

माणिकचन्दजी मालू—आपका जन्म संवत् १९४१ में हुआ। आप समझदार पुरुष हैं। आप वर्तमान में सिवनी में ऑनरेरी मजिस्ट्रेट, म्युनिसिपल मेम्बर तथा डिस्ट्रिक्ट कौंसिल के मेम्बर हैं। आपके उद्योग से सन् १९३२ में "श्री जैन ओसवाल परस्पर सहायक कोष मध्यदेश व बरार" नामक संस्था की स्थापना हुई है और आप उसके प्रेसिडेंट हैं। इधर दो सालों से आपकी फर्म के द्वारा एक जैन पाठशाला चल रही है। तथा इस समय स्थानीय जैन मन्दिर की व्यवस्था आपके जिम्मे है। आपके छोटे भ्राता दुलीचन्दजी मालू चांदी सोने के जेवर बनाने के कारखाने का संचालन करते हैं। आपके पुत्र ईश्वरचन्दजी इन्द्रचन्द्रजी, खेवरचन्द्रजी, कोमलचन्दजी, यादवचन्द्रजी तथा निहालचन्दजी हैं। इसी तरह दुलीचन्दजी के पुत्र सोभागचन्द, ईश्वरचन्दजी के पुत्र खुशालचन्द उत्तमचन्द व नेमीचन्दजी के पुत्र लालचन्द प्रेमचन्द हैं। इस परिवार का माणकचन्द्र दुलीचन्द्र के नाम से सराफी व्यवहार होता है। केवलचन्दजी मालू के पुत्र भयालालजी अपना स्वतन्त्र कार्य्य करते हैं। यह खानदान सी० पी० के ओसवाल समाज में प्रतिष्ठत है।

सेठ कालूराम रतनलाल मालू का परिवार, मद्रास

इस खानदान के मालिको का मूल निवास स्थान फलौधी (मारवाड़) का है। इसके पहले आप लोगों का निवासस्थान खिचंद और तिंवरी था। आप लोग स्था० आम्नाय के सज्जन हैं। इस खानदान में लालचन्दजी हुए, आपके देवीचन्दजी, शोभाचन्दजी तथा खुशालचन्दजी नामक तीन पुत्र थे। देवीचन्दजी मालू के पुत्र कालूरामजी बड़े प्रतापी तथा साहसी व्यक्ति हो गये हैं। आप अपनी हिम्मत और बहादुरी के सहारे देश से पैदल मार्ग द्वारा नागपुर आये और अपने भाई खुशालचन्दजी की फर्म पर काम करने लगे। वहाँ से आप संवत् १८९० में पैदल रास्ते चलकर मद्रास में आये। उस समय मारवाड़ियों की मद्रास में दो तीन दुकानें थीं। सेठ कालूरामजी बड़े धर्मात्मा और जाति प्रेमी पुरुष थे। आपने अपनी जाति के बहुत से पुरुषों को अपने यहाँ रखकर धंधे से लगाया। आपने मद्रास के बेपारी सूले में श्री चंद्राप्रभु जी का संवत् १९३० में एक बड़ा मन्दिर बनवाया। संवत् १९३७ में आपका स्वर्गवास हो गया। आपके कोई पुत्र न होने से आपने जुगलचन्दजी के पुत्र रतनलालजी को दत्तक लिया रतनलालजी मालू का जन्म संवत् १९२० में हुआ। आप अपने जाति भाइयों पर बड़ा प्रेम रखते थे। आपका संवत् १९६१ में स्वर्गवास हो गया। रतनलालजी के कोई संतान न होने से आपने अनोपचन्दजी को दत्तक लिया। अनोपचन्दजी का जन्म संवत् १९५२ का है। आपके पुत्र मनोहरमलजी, पूनमचन्दजी तथा गेंदमलजी हैं।

मरोठी

सेठ हीरचन्द पूनमचन्द मरोठी, दमोह,

इस परिवार के पूर्वज सेठ चैनसुखजी तथा उम्मेदचंदजी नामक दो भ्राता अपने मूल निवास

स्थान बीकानेर से संवत् १९६०-६५ के लगभग व्यवसाय के लिये दमोह आये। तथा यहाँ इन्होंने कुछ मौज़े सरकार से खरीदकर मालगुजारी और साहुकारी व्यापार चालू किया। मरोठी उदयचन्द का स्वर्गवास संवत् १८४१ में हुआ। आपके पुत्र सुखलालजी भी जमींदारी का संचालन करते रहे। इनके वंशीधरजी, तखतमलजी और बिरदीचन्दजी नामक ३ पुत्र हुए। आप तीनों बंधु अपनी फर्म का संचालन करते रहे। वंशीधरजी के कोई संतान नहीं हुई। शेष २ बंधुओं का परिवार विद्यमान है।

तखतमलजी मरोठी का परिवार—सेठ तखतमलजी ६५ वर्ष की आयु में संवत् १९६३ में स्वर्गवासी हुए। आपके डालचन्दजी, रतनचंदजी, मूलचन्दजी, हीरचन्दजी तथा कस्तूरचन्दजी नामक ५ पुत्र हुए। इनमें डालचन्दजी संवत् १९७५ में, रतनचन्दजी संवत् १९६० में और हीरचंद का संवत् १९७२ में स्वर्गवासी हुए। इस समय इस परिवार में सेठ कस्तूरमलजी मरोठी, डालचन्दजी के पुत्र लखमीचन्दजी मरोठी तथा हीरचंदजी के पुत्र पूनमचंदजी मरोठी हैं।

मरोठी पूनमचन्दजी—आपका जन्म संवत् १९६१ में हुआ। आप मिलनसार, शिक्षित तथा समझदार युवक हैं। आप स्थानीय म्यु० के मेम्बर रह चुके हैं। तथा इस समय डिस्ट्रिक्ट कौंसिल के मेम्बर हैं। आपके पुत्र पीतमचन्दजी तया पदमचन्दजी पढते हैं। मरोठी लखमीचन्दजी के पुत्र हरखचंदजी मेट्रिक में पढ़ते हैं। इस परिवार में प्रधानतया जमीदारी का काम होता है।

बिरदीचन्दजी मरोठी का परिवार—आपका जन्म संवत् १९०५ में हुआ था। आप दमोह के प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। आप यहाँ के ऑनरेरी मजिस्ट्रेट थे। तथा दरबारी सम्मान भी आपको प्राप्त था। यहाँ की कई सार्वजनिक संस्थाओं के आप मेम्बर थे। आपके हजारीमलजी सूरजमलजी तथा नेमीचंदजी नामक ३ पुत्र हुए। जिनमें हजारीमलजी का स्वर्गवास हो गया।

सूरजमलजी मरोठी—आपका जन्म संवत् १९४४ में हुआ। आप अपने पिताजी के बाद तमाम प्रतिष्ठित पदों और सार्वजनिक कामों में सहयोग देते हैं। इस समय आप दमोह के सेकंड क्लास ऑनरेरी मजिस्ट्रेट तथा कई संस्थाओ के मेम्बर है। सरकार में आपका अच्छा सम्मान है। आपके पुत्र खुशालचन्दजी २० साल के तथा गोकुलचन्दजी १५ साल के हैं। आपके यहाँ जमीदारी का काम होता है। सेठ सूरजमलजी के छोटे भ्राता नेमीचंदजी का जन्म संवत् १९४८ में हुआ। आपके पुत्र तिलोकचन्दजी बालक हैं।

सावण सुखा

सावण सुखा गौत्र की उत्पत्ति—कहा जाता है कि चंदेरी के राजा खरहत्थसिंह राठोड़ ने अपने चार पुत्रों सहित दादा जिनदत्तसूरिजी से संवत् ११९२ में जैन धर्म की दीक्षा ग्रहण की। इनके तीसरे पुत्र भैंसाशाह नामी व्यक्ति हुए। भैंसाशाह के ५ पुत्रों में से चौथे पुत्र कुँवरजी थे। इनको ज्योतिष का ज्ञान था। एक बार चित्तौड़ के राणोजी ने इनको पूछा कि कहो "कुँवरजी सावण भादवा कैसा होगा"। इन्होंने गिनती करके बतलाया कि "सावण सूखा और भादवा हरा होगा" जब यह बात सत्य निकली। तब से कुँवरजी की संतानें "सावण सुखा" के नाम से प्रसिद्ध हुईं। और इस प्रकार यह गौत्र उत्पन्न हुई।

सेठ गणेशदास जुहारमल सावण सुखा, सरदार शहर

जब सरदारशहर बसा तब इस परिवार के सेठ टीकमचन्दजी, मेघराजजी और हेरामजी तीनों भाई सवाई से यहां आकर बसे। एवम् साधारण खेतीबाड़ी एवम देन लेन का व्यापार करते रहे। सेठ टीकमचन्दजी के सात पुत्र हुए मगर इस समय उनके परिवार में कोई नहीं है। सेठ हेरामजी के भैरोंदानजी नामक एक पुत्र हुआ जिसका स्वर्गवास होगया। वर्तमान में उनके पुत्र मूलचन्दजी और शोभारामजी रंगपुर में अपना व्यापार करते हैं। मूलचन्दजी के भीखनचन्दजी और शोभाचन्दजी के फकीरचन्दजी नामक पुत्र हैं। सेठ मेघराजजी सरदारशहर ही में रहे। आप के सेढ़मलजी और गणेशदासजी नामक दो पुत्र थे। सेठ सेठमलजी के मूलचन्दजी, जुहारमलजी, नेमिचन्दजी, और हरकचंदजी नामक ४ पुत्र हुए। इनमें से सेठ जुहारमलजी का स्वर्गवास होगया है। मूलचन्दजी के द्वारा इस फर्म की बहुत तरक्की हुई। आज कल १५ वर्षों से आप सरदारशहर में ही रहते हैं। हरकचन्दजी दत्तक चले गये। एवम् आज कल फर्म का संचालन सेठ नेमीचन्दजी ही करते हैं। आप योग्य एवम् समझदार सज्जन हैं। आपके बुधमलजी, सुमेरमलजी और चम्पालालजी नामक तीन पुत्र हैं।

सेठ गणेशदासजी इस परिवार में नामांकित व्यक्ति हुए। आप ही ने संवत् १९६० में गणेशदास मिलापचन्द के नाम से साझे में फर्म स्थापित की। फिर "गणेशदास जुहारमल" के नाम से अपना स्वतंत्र व्यापार कर लिया। इसके पूर्व आप नरसिंहदास तनसुखदास आंचलिया की फर्म पर काम करते रहे। इसमें आपकी प्रतिभा से बहुत उन्नति हुई। आप व्यापार चतुर थे। आपके मिलापचन्दजी नामक पुत्र हुए। जिनका स्वर्गवास होगया। इनके यहाँ हरकचन्दजी दत्तक हैं। आपके इस समय मोतीलालजी और माणकचन्दजी पुत्र हैं। आपकी फर्म पर १२ नारमल लोहिया लेन में देशी कपड़े का थोक व्यापार होता है। आपका परिवार तेरा पन्थी संप्रदाय का अनुयायी है।

मेसर्स हजारीमल रूपचन्द सावण सुखा का परिवार, मद्रास

इस परिवार के मालिकों का मूल निवास स्थान बीकानेर का है। आप श्वे॰ जैन समाज के मंदिर आम्नाय को माननेवाले सज्जन हैं। सब से पहले इस परिवार में से हजारीमलजी सावणसुखा संवत् १९२१ में बीकानेर से मद्रास आये। आपने मद्रास में आकर व्याज की फर्म स्थापित की। आपके हाथों से इस फर्म की अच्छी उन्नति हुई। आपका संवत् १९४९ में स्वर्गवास हो गया। आपके पश्चात् आपके नाम पर आपके भाई के पुत्र रूपचन्दजी दत्तक लाये गये। इस परिवार के लोगों ने चन्द्राप्रभुजी के मन्दिर का काम अच्छी तरह से देखा। श्री रूपचन्दजी का संवत् १९५७ में स्वर्गवास हो गया। आपके पुत्र चम्पालालजी हुए। इनका जन्म संवत् १९५० में हुआ। आप ही इस समय इस फर्म के कारबार को सम्हाल रहे हैं। आपके पुत्र रतनचन्दजी बालक हैं।

इस परिवार का दान धर्म की ओर विशेष लक्ष्य है। आप ही ने यहाँ की दादावाड़ी का उत्थापन करवाया। साथ ही दादावाड़ी के एक तरफ का पर कोटा भी इस परिवार की ओर से बनाया गया है। आप ही के द्वारा दादावाड़ी के मन्दिर में संगमरमर के पत्थरों की जुड़ाई हुई है। आपकी मद्रास

साहुकार पेठ में "मेसर्स हजारीमल रूपचन्द" के नाम से बैङ्किग की दुकान है। इस फर्म पर डायमण्ड डीलिंग व्यवसाय भी होता है।

सेठ भीमराज हुकुमचंद सावण सुखा, रतनगढ़

इस परिवार का मूल निवास रतनगढ़ है। यहाँ सेठ खेतसीदासजी तथा अक्षयसिंहजी नामक दो भ्राता साधारण व्यापार करते थे। इनके कोई संतान नहीं हुई।, अतः इनके यहाँ रूणियाँ (बीकानेर) से भीमराजजी दत्तक आये। सेठ भीमराजजी का जन्म संवत् १९०७ में हुआ। आप यहाँ से कलकत्ता गये, तथा सेठ "माणकचन्द ताराचन्द" वेद के यहाँ सर्विस की। तथा पीछे "सेठ तेजरूप गुलाबचन्द" की भागीदारी में चलानी का काम शुरू किया। आपका स्वर्गवास संवत् १९५७ में हुआ। आपके पुत्र शोभाचन्दजी, रुघलालजी तथा जयचंदलालजी हैं। शोभाचन्दजी रतनगढ़ में रहते हैं। तथा जयचन्दजी कलकत्ता में सर्विस करते हैं। इनके पुत्र मोहनलालजी हैं।

बाबू भीमराजजी के मझले पुत्र रुघलालजी का जन्म संवत् १९४२ में हुआ। पिताजी के स्वर्गवासी होने पर आप दलाली करने लगे, तथा इधर संवत् १९८३ से रोसड़ाघाट (दर्भंगा) में रुघलाल हुकुमचन्द के नाम से चलानी का व्यापार आरम्भ किया। इसके बाद आपने सिंधिया (दरभंगा) में रुघलाल इन्द्राजमल तथा ढोली (मुजफ्फरपुर) में भीमराज सावणसुखा के नाम से आढ़त का व्यापार शुरू किया। इसके पश्चात् संवत् १९८७ में नं० २ राजा उमंड स्ट्रीट में अपनी फर्म स्थापित की। सेठ रुघलालजी के भीमराजजी तथा इन्द्राजमलजी नामक पुत्र हैं। भीमराजजी ने अपने पिताजी के बाद व्यापार को बढ़ाने में काफी परिश्रम किया है। आपके पुत्र हुकुमचन्दजी हैं।

रेदासनी

सेठ मोतीलाल रामचन्द्र रेदासनी, नसीराबाद (खानदेश)

यह परिवार पीह (जोधपुर स्टेट) का निवासी है। वहाँ से लगभग १०० साल पूर्व सेठ शिवचन्दजी और अमरचन्दजी दो भ्राता व्यापार के लिये नसीराबाद (जलगांव के समीप) आये। सेठ शिवचन्दजी संवत् १९२५ में स्वर्गवासी हुए। आपके छोटे बंधु अमरचन्दजी के पुत्र मानमलजी तथा पौत्र रामचन्द्रजी हुए। सेठ रामचन्द्रजी ने इस दुकान के व्यापार को बहुत उन्नति दी। आपके पुत्र सेठ मोतीलालजी हुए।

सेठ मोतीलालजी रेदासनी—आपका जन्म सम्वत् १९३३ में हुआ। आप खानदेश के ओसवाल समाज में गण्य मान्य तथा समझदार पुरुष थे। आप बड़े सरल स्वभाव के धार्मिक प्रवृति वाले पुरुष थे। कुछ मास पूर्व सम्वत् १९९० में आपका स्वर्गवास हो गया है। आपके पुत्र रंगलालजी, बंशीलालजी, बाबूलालजी तथा प्रेमचन्दजी हैं। रंगलालजी का जन्म सन् १९०५ में तथा बंशीलालजी का सन् १९०९ में हुआ। आप दोनों सज्जन अपने व्यापार को सम्हालते हैं। आपके यहाँ आसामी लेन देन का व्यापार होता है।

नीमानी

सेठ खूबचंद केवलचंद नीमानी, नाशिक

इस परिवार का मूल निवास फलोधी (मारवाड़) है। आप श्वेताम्बर जैन समाज के मन्दिर मार्गीय आम्नाय को माननेवाले सज्जन हैं। इस परिवार के पूर्वज सेठ रूपचन्दजी नीमानी (रतनपुरा-बोहरा) के पुत्र खूबचन्दजी नीमानी लगभग १०० वर्ष पूर्व मारवाड़ से मालेगाँव (नाशिक) आये। तथा वहाँ साधारण कपड़ा बिक्री का काम किया। पश्चात् आपने नाशिक आकर खुर्दा बेंचने का काम किया। इस प्रकार साहस पूर्वक सम्पत्ति उपार्जित कर साहुकारी धंधा जमाया। आपका स्वर्गवास सम्वत् १९१८ में हुआ। आपके पुत्र केवलचन्दजी का जन्म सम्वत् १८८८ में हुआ। आपने इस फर्म के व्यवसाय तथा स्थिति को दृढ़ बनाया। सम्वत् १९४८ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके सेठ अमोलकचन्दजी, सेठ नैनसुखजी तथा सेठ बुधमलजी नीमानी नामक ३ पुत्र हुए।

सेठ अमोलकचन्दजी नीमानी—आपने सराफी, कपड़ा किराना आदि का व्यापार कर बहुत सम्पत्ति उपार्जित की। इसके साथ २ आपने अपने खानदान की जगह ज़मीन व लेंडेड प्रापर्टी के संग्रह करने में भी विशेष लक्ष दिया। आपके २ पुत्र हुए, इनमें बड़े भोजराजजी सन् १९१७ में स्वर्गवासी हो गये, तथा उनसे छोटे पृथ्वीराजजी विद्यमान हैं।

सेठ नैनसुखदासजी नीमानी—आपके हृदयों में जातीय संगठन की भावनाओं की बहुत बड़ी उमंग थी। आपने सम्वत् १९४७ में महाराष्ट्र प्रांत के तमाम ओसवाल गृहस्थों को एकत्रित कर ओसवाल हितकारिणी सभा का अधिवेशन किया, तथा जातीय सुधार सम्बन्धी २१ नियम बनाये, जिनका पालन नाशिक जिले में आज भी कानून की भांति किया जाता है। आप महाराष्ट्र तथा खानदेश के नामीगरामी महानुभाव हो गये हैं। आपको सरकार ने आनरेरी मजिस्ट्रेट का सम्मान दिया था। आपके पुत्र रामचन्द्रजी छोटी वय में ही स्वर्गवासी हो गये थे।

सेठ बुधमलजी नीमानी—आपका जन्म सम्वत् १९३१ में हुआ था। आप नाशिक की जनता में बड़े विद्वान तथा रुवाबदार पुरुष हो गये हैं। आपने अंग्रेज़ी की इंटर तक शिक्षण पाया था। संस्कृत के भी आप ऊंचे दर्जे के विद्वान थे। कानूनी ज्ञान आपका बहुत बढ़ा चढ़ा था। आप १६ सालों तक नाशिक में फर्स्ट क्लास आनरेरी मजिस्ट्रेट रहे। इस प्रकार प्रतिष्ठामय जीवन बिताकर सं० १९८२ में आप स्वर्गवासी हुए।

वर्तमान में इस परिवार में श्री पृथ्वीराजजी नीमानी विद्यमान हैं। आपका जन्म सन् १९१० में हुआ है। आपका परिवार महाराष्ट्र तथा नाशिक में नामांकित माना जाता है। आप ३ सालों तक म्यु० मेम्बर भी रहे थे। इस समय लोकल बोर्ड के मेम्बर हैं। आपके नाशिक तथा धूलिया में बहुत से मकानात तथा स्थाई सम्पत्ति है। आपके यहाँ किराया, सराफी तथा टोल कंट्राक्टिंग का काम होता है।



स्व० सेठ बुधमलजी नीमाणी (खूबचद केवलचद) नाशिक.



स्व० सेठ छजमलजी घेमावत (छजमलजी नथमलजी) सादड़ी.



स्व० सेठ बख्तावरमलजी टेवड़ा (बुधमल जुहारमल) औरंगाबाद.



स्व० सेठ नथमलजी घेमावत (छजमलजी नथमलजी) सादड़ी.

घेमावत

घेमावत गौत्र की उत्पत्ति—कहा जाता है कि संवत् ९७२ में बीजापुर (गोड़वाड़) के पास हस्ती कुंडी नामक स्थान में राजा दिगवत् राज करते थे। इनको जैन मुनि श्री बलभद्राचार्य्य ने जैनधर्म अंगीकार कराया। इनके कई पीढ़ियों बाद भांडाजी हुए जिन्होंने गिरनार व शत्रुँजय के संघ निकाले। इनके कई पीढ़ियों बाद संवत् १८०० के लगभग घेमाजी और ओटाजी हुए। इन्होंने वाली में मनमोहन पार्श्वनाथजी का मन्दिर बनवाया। इनका परिवार घेमावत, और ओटावत कहलाता है। यह कुटुम्ब हटुंडिया राठोर हैं, तथा शिवगंज, सिरोही और सादड़ी में रहते हैं।

सेठ छजमलजी घेमावत का परिवार, सादड़ी

इस खानदान के पूर्वज डाबाजी घेमावत के पुत्र कपूरचन्दजी घेमावत लगभग संवत १९०५ में व्यवसाय के लिये सूरत गये तथा सूरत से ३ मील की दूरी पर भाटे गाँव नामक स्थान में लेनदेन का व्यापार शुरू किया। संवत् १९३१ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र सेठ छजमलजी हुए।

सेठ छजमलजी घेमावत—आपका जन्म संवत् १८९१ में हुआ। आपने संवत् १९४८ में बम्बई में कपड़े की दुकान खोली। तथा आपही ने इस खानदान के जमीन जायदाद को विशेष बढ़ाया। आप बड़े सरल तथा धर्म में श्रद्धा रखने वाले पुरुष थे। संवत् १९७० में आप स्वर्गवासी हुए। आपके नथमलजी, कस्तूरचन्दजी, मूलचन्दजी, जसराजजी तथा दीपचन्दजी नामक ५ पुत्र हुए। इन बंधुओं में से कस्तूरचन्दजी संवत् १९६० में तथा नथमलजी संवत् १९८८ में स्वर्गवासी हुए। इन पांचों भाइयों ने इस कुटुम्ब के व्यापार, सम्मान तथा सम्पत्ति को बहुत बढ़ाया। इन बंधुओं का कारबार इधर २ साल पूर्व अलग २ हो गया है। तथा सब भाइयों का बम्बई में अलग २ कपड़े का व्यापार होता है। सादड़ी में आप लोगों की बड़ी २ हवेलियाँ बनी हुई हैं। तथा गोडवाड़ प्रान्त के प्रतिष्ठित परिवारों में यह परिवार माना जाता है। इस परिवार में सेठ नथमलजी गोड़वाड के प्रतिष्ठा सम्पन्न महानुभाव थे। तथा इस समय सेठ मूलचन्द और दीपचन्दजी गोडवाड प्रांत के वजनदार पुरुष माने जाते हैं। आप दोनों भाइयों का जन्म क्रमशः संवत् १९३२ तथा १९४० में हुआ। इसी तरह आपके मझले बंधु सेठ जसराजजी का जन्म संवत् १९३६ में हुआ।

वर्तमान में इस कुटुम्ब में सेठ मूलचन्दजी, सेठ जसराजजी, सेठ दीपचन्दजी तथा सेठ नथमलजी के पुत्र निहालचन्दजी और सेठ कस्तूरचन्दजी के पुत्र चन्दनमलजी मुख्य हैं। सेठ मूलचन्दजी के पुत्र सागरमलजी, जसराजजी के पुत्र ओटरमलजी, हमीरमलजी तथा जुगराजजी और दीपचन्दजी के पुत्र सहस मलजी तथा लखमीचन्दजी हैं। इसी प्रकार निहालचन्दजी के पुत्र कालूरामजी तथा सागरमलजी के पुत्र विमलचन्दजी पढ़ते हैं। और सहसमलजी के पुत्र हरखमलजी हैं।

इस खानदान की ओर से सार्वजनिक तथा धार्मिक कार्यों की ओर उदारता से सम्पत्ति लगाई गई है। संवत् १९५६ में कन्या शाला का मकान बनाया तथा उसका व्यय आज तक आप ही दे

रहे हैं, आपने एक विद्यालय को २०००) का दान दिया था। संवत् १९७७ में १७ हजार की लागत से गांव में एक उपाश्रय बनवाया। इसी प्रकार नथमलजी धर्मपत्नी हीराबाई के नाम से राणकपुरजी के रास्ते पर एक हीरा बावड़ी बनवाई। इस कुटुम्ब ने वरकाणा विद्यालय को १००००) एक बार तथा ४००) दूसरी बार प्रदान किये। इस विद्यालय की मेनेजिंग कमेटी के प्रेसिडेण्ट सेठ मूलचन्दजी हैं। इसके अतिरिक्त पालीताना, भावनगर विद्यालय, बम्बई महावीर विद्यालय, आदि स्थानों पर आपकी ओर से सहायताएं दी गई हैं। इस कुटुम्ब ने अभी तक लगभग एक लाख रुपयों का दान किया है।

घेमावत उदयभानुजी का परिवार, शिवगंज

हम ऊपर कह आये हैं कि घेमाजी की संतानें घेमावत नाम से मशहूर हुई। इनके देवीचंदजी सुखजी, थानजी, तथा करमचन्दजी नामक ४ पुत्र हुए। घेमावत करमचन्दजी को बाली से सांडेराव के ठाकुर अपने यहाँ ले गये। इनका यहाँ जोरों से व्यापार चलता था। इनके पुत्र उदयभानजी भी सांडेराव में व्यापार करते रहे। उदयभानजी के रतनचंदजी, जवानमलजी, हजारीमलजी, मानमलजी, हिम्मतमलजी तथा फतेमलजी नामक ६ पुत्र हुए।

घेमावत रतनचन्दजी का परिवार—रतनचन्दजी ने धार्मिक कार्य्यों में बहुत इज्जत पाई। आपने सांडेराव से ऋषभदेवजी तथा आबूजी के संघ निकाले आप संवत् १९२३ में सांडेराव से शिवगंज आये। संवत् १९३२ में आपका स्वर्गवास हुआ। आपके पुत्र चिमनमलजी आपके स्वर्गवासी होने के समय ४ माह के थे। घेमावत चिमनमलजी का खानदान शिवगंज में बहुत प्रतिष्ठित माना जाता है। आप आरंभ में सांडेराव में कामदार थे। आप समझदार पुरुष हैं। आपके पुत्र घेमावत धनराजजी तथा तखतराजजी हैं। घेमावत धनराजजी का जन्म संवत् १९५९ में हुआ। संवत् १९८३ में आपने बी० ए० ऑनर्स तथा १९८५ में एल० एल० बी० की परीक्षा पास की। संवत् १९८३ में आप सिरोही में डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट हुए, तथा संवत् १९८६ से आप चीफ मिनिस्टर के ऑफिस सुपरिटेन्डेन्ट पद पर कार्य्य करते हैं। आपके छोटे भाई तखतराजजी का जन्म संवत् १९६५ में हुआ। आप इंटर तक शिक्षा प्राप्त कर मुरादाबाद पोलीस ट्रेनिंग में गये, तथा इस समय जोधपुर में सब इन्सपेक्टर पोलीस हैं धनराजजी के पुत्र सम्पतराजजी तथा सुशवंतराजजी हैं।

घेमावत जवानमलजी का परिवार—आपके पुत्र हीराचन्दजी तथा तेजराजजी हुए। आपका स्वर्गवास क्रमशः संवत् १९५४ तथा ५७ में हुआ घेमावत हीराचंदजी के पुत्र सुन्दरमलजी तथा तेजरामजी के पुत्र बरदीचंदजी तथा कुशलराजजी हुए। घेमावत सुंदरमलजी का जन्म १९३५ में हुआ। आप बड़े शिक्षा प्रेमी तथा धार्मिक सज्जन हैं। आप शिवगंज की कन्या शाला को विशेष सहायता देते रहते हैं। आपके मेनेजमेंट तथा कोशिश से पाठशाला की स्थिति में बहुत सुधार हुआ है। घेमावत हजारीमलजी के पुत्र राजमलजी सांडेराव में कामदार थे। इनके पौत्र देवीचंदजी तथा साहबचंदजी सांडेराव में व्यापार करते हैं। तथा घेमावत मानमलजी के पौत्र चांदमलजी सिरोही में सर्विस करते हैं।

घेमावत फतेचन्दजी का परिवार—घेमावत फतेचन्दजी गोड़वाड़ प्रान्त की पब्लिक तथा जागीरदारों में सम्माननीय व्यक्ति थे। संवत् १९५९ में आपका स्वर्गवास हुआ। आपके पुत्र पुखराजजी

का जन्म संवत् १९३८ में हुआ आप आरंभ में सांडे राव ठिकाने में कामदार रहे। संवत् १९८३ में आप सिरोही स्टेट में कस्टम सुपरिटेन्डेन्ट हुए। तथा इस पद के साथ इस समय आप कंट्रोल हाउस होल्ड और जंगलात आफीसर भी हैं। सिरोही दरबार की आप पर अच्छी मरजी है। तथा समय २ पर आपको तथा धनराजजी घेमावत को दरबार ने सिरोपाव देकर सम्मानित किया है।

देवड़ा

सेठ बुधमल जुहारमल देवड़ा, औरंगाबाद (दक्षिण)

सिरोही के देवड़ा राजवंश से इस परिवार का प्राचीन सम्बन्ध है। वहाँ से ३०० वर्ष पूर्व इस परिवार ने वगड़ी में आकर अपना निवास बनाया। यह कुटुम्ब स्थानकवासी आम्नाय का मानने वाला है। वगड़ी से संवत् १८५५ में सेठ ओटाजी के पुत्र बुधमलजी पैदल रास्ते से औरंगाबाद आये। तथा "बुधमल जुहारमल" के नाम से किराने की दुकान की। आपके पुत्र जुहारमलजी तथा पूनमचन्दजी ने व्यापार को उन्नति दी। सेठ जुहारमलजी ने संवत् १९३८ में "पूनमचन्द वख्तावरमल" के नाम से बम्बई में दुकान खोली। इन बंधुओं के बाद सेठ जुहारमलजी के पुत्र सेठ वख्तावरमलजी ने तथा सेठ पूनमचन्दजी के पुत्र सेठ जसराजजी ने इस दुकान के व्यापार तथा सम्मान को बहुत बढ़ाया। संवत् १९५८ में यह फर्म "औरंगाबाद मिल लिमिटेड" की बैंकर हुई। और इसके दूसरे ही साल मिल की सोल एजेन्सी इस फर्म पर आई। इसी साल फर्म की शाखाएं वरंगल, नांदेड़, परभणी, जालना, सिकंदराबाद आदि स्थानों में खोली गईं। संवत् १९९८ में इस दुकान की एक शाखा "गणेशदास समरथमल" के नाम से मूलजी जेठा मारकीट बम्बई मे खोली गई। इन सब स्थानों पर इस समय सफलता के साथ व्यापार हो रहा है। तथा सब स्थानों पर यह फर्म प्रतिष्ठित मानी जाती है।

सेठ वख्तावरमलजी देवड़ा का स्वर्गवास संवत् १९८७ में ६९ साल की आयु में हुआ। आप जोधपुर स्टेट के जसवंतपुरा नामक गांव के १४ सालों तक ऑनरेरी मजिस्ट्रेट रहे। इसी प्रकार आपने बहुत प्रतिष्ठा प्राप्त की। सेठ जसराजजी संवत् १९८९ में स्वर्गवासी हुए। इस परिवार ने औरंगाबाद स्टेशन पर ७० हजार रुपयों की लागत से एक सुन्दर धर्मशाला बनवाई। वगड़ी में ५० सालों से एक पाठशाला व सदाव्रत चल रहे हैं। यहाँ एक समरथ सागर नामक सुंदर बावड़ी तथा १ धर्मशाला भी बनवाई। इसी तरह औरंगाबाद में मन्दिरों तथा धर्मशालाओं में २० हजार रुपये खरच किये। इसी तरह के कई धार्मिक काम इस परिवार ने किये।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ वख्तावरमलजी के पुत्र नेमचन्दजी तथा जसराजजी के पुत्र मेघराजजी, हस्तीमलजी तथा फूलचन्दजी हैं। सेठ मेघराजजी के पुत्र मोहनलालजी भी व्यापार में भाग लेते हैं। यह परिवार निज़ाम स्टेट तथा वगड़ी में बहुत प्रतिष्ठित माना जाता है।

डाँगी

शाहपुरा का डाँगी खानदान

इस परिवार के पूर्वज मेवाड़ में उच्च श्रेणी के व्यापारी तथा बैंकर थे। [illegible]

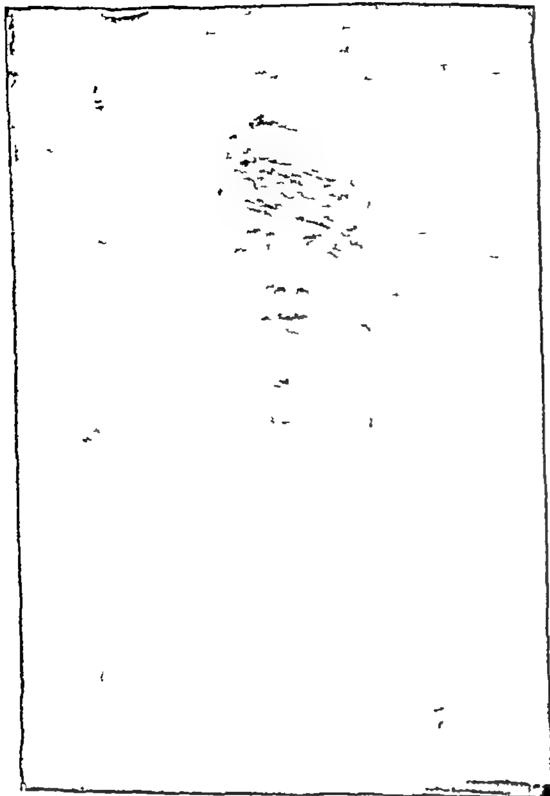
जी के तृतीय पुत्र सुजानसिंहजी ने शाहपुरा बसाया, उस समय वे इस परिवार के पूर्वज सेठ टेकचन्दजी को अपने साथ शाहपुरा में लाये थे। इनके पुत्र सरूपचन्दजी, अनोपचन्दजी तथा मंसारामजी हुए। इनमें सरूपचन्दजी तथा अनोपचन्दजी शाहपुरा रियासत के बैंकर थे। आवश्यकता पड़ने पर इन्होंने रियासत को आर्थिक सहायताएँ दी थीं। "न्याय" का कुल काम इनके घर पर होता था। बनेड़ा स्टेट में भी यह परिवार बहुत समय तक बैंकर रहा। एक लड़ाई में मदद देने के उपलक्ष में शाहपुरा दरबार ने डाँगी अनोपसिंहजी को कंठी और मर्यादा की पदवियां देकर सम्मानित किया था। आपके जेष्ट पुत्र हमीरसिंहजी को सम्वत् १८९२ में कर्नल डिक्सन ने ब्यावर में बसने के लिये इज्जत के साथ निमंत्रित किया था। इनसे छोटे भाई चतुरभुजजी, सेठ सरूपचन्दजी डाँगी के नाम पर दत्तक गये। उदयपुर के दीवान मेहता अगरजी तथा मेहता शेरसिंहजी से इस परिवार की रिश्तेदारियाँ थीं। हमीरसिंहजी के ज्येष्ठ पुत्र चंदनमलजी के साथ उनकी धर्मपत्नी सम्वत् १९१४ में सती हुई। आगे चलकर डाँगी चतुर्भुजजी के पुत्र बालचन्दजी और चनणमलजी के दत्तक पुत्र अजीतसिंहजी कमजोर स्थिति में आ गये। जब शाहपुरा दरबार नाहरसिंह जी की दृष्टि में पुराने कागजात आये, तो उन्होंने इस परिवार की सेवाओं पर ख़याल करके डाँगी अजीतसिंह जी के पुत्र जीवनसिंहजी को "जींकारे" का सम्मान बख्शा। दरबार समय २ आपकी सलाह लेते थे। आप बड़े विद्याप्रेमी तथा सज्जन पुरुष थे। आपके पुत्र अक्षयसिंहजी डाँगी हैं। डाँगी बालचन्दजी के पुत्र सोभागसिंहजी बड़े परोपकारी, हिम्मत बहादुर तथा लोकप्रिय व्यक्ति थे। सम्वत् १९५६ के अकाल में आपने गरीब जनता की बहुत मदद की थी। सन् १९१२ में इनका स्वर्गवास हुआ। इनके पुत्र हरकचन्दजी हैं।

श्री अक्षयसिंहजी डाँगी ने बनारस यूनिवर्सिटी से बी० ए० पास किया। थर्ड ईयर में इकानामिक्स में प्रथम आने के कारण आपको स्कालर शिप मिली। इसी तरह आप हर एक क्लास में प्रथम द्वितीय रहते रहे। बी० ए० पास करने के बाद आप तीन सालों तक शाहपुरा में सिविल जज रहे। इसके बाद आपने एम० ए० और एल एल० बी० की डिगरी प्राप्त की। इस समय आप अजमेर में वकालत करते हैं। आपकी अंग्रेज़ी लेखन शैली ऊँचे दर्जे की है। ओसवाल कान्फ्रेंस के प्रथम अधिवेशन के आप मंत्री थे। सामाजिक सुधारों में आप अग्रगण्य रूप से भाग लेते हैं। आपके पुत्र सुभाषदेव हैं।

आँचलिया

रामपुरा का आँचलिया परिवार

यह परिवार मूल निवासी मारवाड़ का है। वहाँ से कई पुश्त पूर्व यह कुटुम्ब रामपुरे में आकर आबाद हुआ। इस परिवार में आँचलिया सूरजमलजी तथा उनके पुत्र चुन्नीलालजी कस्टम विभाग में कार्य्य करते थे। कार्य्य दक्ष होने के कारण जनता ने आपको चौधरी बनाया। और तब से इनका परिवार "चौधरी" कहलाने लगा। चौधरी चुन्नीलालजी के चम्पालालजी, रतनलालजी तथा किशनलालजी नामक ३ पुत्र हुए। इनमें चौधरी चम्पालालजी सीधे सादे तथा धार्मिक विचारों के व्यक्ति थे। आप आसामी लेन देन का काम करते थे। संवत् १९७६ में ५१ साल की आयु में आप स्वर्गवासी हुए। आपके मोतीलालजी, बसंतीलालजी, बाबूलालजी, कन्हैयालालजी, बहुतलालजी, तथा मदनलालजी नामक



राजवैद्य स्व० मुकुनचंदजी राय गांधी, जोधपुर (पेज न० ६५२)



श्री बांबूलालजी चौधरी वकील, गरोठ



श्री माणिकचंदजी बेताला, मद्रास (पेज नं० ६३१)



श्री कचरूमलजी आबड़, (छगनमल कपूरचंद) जालना (पेज नं० ६४६)

६ पुत्र विद्यमान हैं। मोतीलालजी रामपुरा में व्यापार करते हैं। इनके पुत्र नानालालजी, तेजमलजी तथा शांतिलालजी हैं। चौधरी वसंतीलालजी रामपुरे के सर्व प्रथम मेट्रिक्युलेट हैं। सन् १९१५ में मेट्रिक पास करते ही आप जैन हॉईस्कूल के सेक्रेटरी नियुक्त हुए, और तब से इसी पद पर कार्य्य कर रहे हैं।

बाबूलालजी चौधरी—आपने इस परिवार में अच्छी उन्नति की। आपका जन्म संवत् १९५९ में हुआ। मेट्रिक तक अध्ययन कर आपने इन्दौर स्टेट की वकीली परीक्षा पास की। आज कल आप गरोठ में वकालात करते हैं। तथा रामपुरा भानपुरा जिले के प्रसिद्ध वकील माने जाते हैं। इतनी छोटी वय में ही आपने कानूनी लाइन में अच्छी दक्षता प्राप्त कर अपनी आर्थिक स्थिति को उन्नत बनाया है। आपके छोटे बंधु दरबार आफिस में क्लार्क हैं। तथा उनसे छोटे चौधरी बहुतलालजी इस समय एल० एल० बी और में मदनलालजी इन्टर में पढ़ रहे हैं। इसी तरह इस परिवार में रतनलालजी के पुत्र गेंदालालजी तथा छोटेलालजी इन्दौर में व्यापार करते हैं। यह परिवार श्वे० जैन स्थानकवासी आम्नाय को मानता है।

गोधावत

सेठ मेघजी गिरधरलाल गोधावत, छोटी सादड़ी

इस परिवार के पूर्वज सेठ मेघजी बड़े प्रतिभावान सज्जन थे। आपके पौत्र सेठ नाथूलालजी ने इस खानदान की मान मर्यादा तथा सम्पत्ति में बहुत उन्नति की। आप बड़े दानी तथा व्यापारदक्ष पुरुष थे। अफीम के व्यापार में आपने सम्पत्ति उपार्जित की थी। आपने सवा लाख रुपयों के स्थाई फंड से "श्री नाथूलाल गोधावत जैन आश्रम" नामक एक आश्रम की स्थापना की थी। सम्वत् १९७६ की ज्येष्ठ बदी १० को आप स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र हीरालालजी का आपकी विद्यमानता में ही स्वर्गवास हो गया था। इस समय सेठ नाथूलालजी के पौत्र सेठ छगनलालजी विद्यमान हैं। आप सज्जन तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। आपका परिवार मालवा तथा मेवाड़ के ओसवाल समाज में प्रधान धनिक माना जाता है। आप स्थानकवासी आम्नाय के माननेवाले सज्जन हैं। आपके यहाँ सादड़ी में लेनदेन का व्यापार होता है, तथा बम्बई-धनजी स्ट्रीट में साहुकारी और आढ़त का व्यापार होता है।

दनेचा (बोहरा)

सेठ आईदान रामचन्द्र दनेचा (बोहरा) बंगलोर

इस खानदान का मूल निवास मेसिया (मारवाड़) है। वहाँ से इस परिवार ने अपना निवास ब्यावर बनाया। आप स्थानकवासी आम्नाय के मानने वाले सज्जन हैं। इस खानदान में सेठ आईदानजी प्रतापी पुरुष हुए।

सेठ आईदानजी—आप लगभग १०० वर्ष पूर्व मारवाड़ से पैदल राह चलकर सिकन्दराबाद आये तथा रेजिमेंटल बैंकर्स का कार्य्य आरम्भ किया। वहाँ से संवत् १९१० में आप बंगलोर आये। उस समय बंगलोर में मारवाड़ियों की एक भी दुकान नहीं थी। आपने कई मारवाड़ी कुटुम्बों को यहाँ आबाद करने में मदद दी। थोड़े समय बाद आपने अगरचन्दजी बोहरा की भागीदारी में "आईदान अगरचन्द"

के नाम से फर्म स्थापित की। ४० साल सम्मिलित व्यापार करने के बाद संवत् १९५४ में "आईदान रामचन्द्र" के नाम से अपना घरू बैंकिंग व्यापार स्थापित किया। आपका राज दरबार और पंच पचायती में अच्छा सम्मान था। संवत् १९५५ में आप स्वर्गवासी हुए। आप के रामचन्द्रजी, हीराचन्दजी तथा प्रेमचन्दजी नामक तीन पुत्र हुए। अपने पिताजी के पश्चात् आप तीनों बंधुओं ने कार्य्य संचालित किया। आप तीनों सज्जन स्वर्गवासी हो गये हैं। सेठ रामचन्दजी के पुत्र ताराचन्दजी छोटी व्यय में स्वर्गवासी हुए। वर्तमान में इस परिवार में सेठ हीराचन्दजी के पुत्र दुलहराजजी, मिश्रीलालजी तथा फूलचन्दजी बंगलोर छावनी में सेठ "आईदान रामचन्द्र" के नाम से बैंकिंग व्यापार करते हैं। आप तीनों सज्जनों का जन्म क्रमशः १९४८, ५२ तथा संवत् १९५६ में हुआ। सेठ प्रेमचन्दजी के पुत्र मिट्ठूलालजी बंगलोर सिटी में कपड़े का व्यापार करते हैं। सेठ मिश्रीलालजी बड़े सज्जन तथा शिक्षित व्यक्ति हैं। आपकी दुकान बंगलोर में सबसे प्राचीन तथा प्रतिष्ठित है। आपके पुत्र भँवरलालजी की वय २० साल हैं।

बागचार

लाला दानमलजी बागचार, जेसलमेर

लाला अमोलकचन्दजी बागचार—आप जेसलमेर में प्रतिष्ठा प्राप्त महानुभाव हुए। आप का परिवार मूल निवासी जेसलमेर का ही है। आप मीर मुन्शी थे। तथा जेसलमेर रियासत की ओर से मोतमिद बनाकर ए० जी० जी० आदि गवर्नमेंट आफीसरों के पास तथा अन्य राजाओं के पास भेजे जाया करते थे। महारावल रणजीतसिंहजी आपसे बड़े प्रसन्न थे। उन्होंने संवत् १९२० की वैशाख वदी २ को एक परवाने में लिखा था कि "थूँ बहोत दानतदारी व सचाई के साथ सरकार की बंदगी में मुस्तेद व सावत कदम है...सरकार थारे ऊपर मेहरबान है"। इसी तरह पटियाला दरबारने भी आपको सनद दी थी। आपकी मातमपुर्सी के लिये जेसलमेर दरबार आपकी हवेली पर पधारे थे। आपके पुत्र लाला माणकचन्दजी हुए।

लाला माणकचन्दजी बागचार—आप अपने पिताजी के बाद "बाप" परगने के हाकिम हुए। इसके अलावा आपने रेवेन्यू इन्स्पेक्टर, कस्टम आफीसर तथा बाउण्डरी सेटलमेंट मोतमिद आदि पदों पर भी काम किया। पश्चात् आप जीवन भर "जज" के पद पर कार्य्य करते रहे। रियासत में आने वाले ब्रिटिश आफीसरों का अरेंजमेंट भी आपके जिम्मे रहता था। आपकी योग्यता की तारीफ रेजिडेण्ट कर्नल एवेट, कर्नल विंडहम तथा मि० हेमिल्टन आदि उच्च पदाधिकारियों ने सार्टिफिकेट देकर की। संवत् १९७८ में आप स्वर्गवासी हुए। जेसलमेर दरबार आपकी मातमपुर्सी के लिये आपकी हवेली पर पधारे थे। आपके पुत्र लाला दानमलजी विद्यमान हैं।

लाला दानमलजी बागचार—आप अपने पिताजी के बाद "ज्वाइन्ट जज" के पद पर मुकर्रर हुए। इसके पहिले आप "बाप तथा समखावा" परगनों के हाकिम तथा दीवान और दरबार की पेशी पर नियुक्त थे। आपको जेसलमेर दीवान श्रीयुत एम० आर० सपट, ए० जी० जी० आर० ई० हॉलेण्ड आदि कई उच्च आफीसरों न सार्टिफिकेट देकर सम्मानित किया है। संवत् १९८० तक आप सर्विस करते रहे। आपका खानदान जेसलमेर में प्रतिष्ठा सम्पन्न माना जाता है।

सालेचा

सेठ गुलाबचंदजी सालेचा, पचपदरा

इस परिवार के पूर्वज सालेचा बजरंगजी गोपड़ी गांव से संवत् १७३५ में पचपदरा आये। तथा यहाँ लेन देन का व्यापार शुरू किया। इनकी नवीं पीढ़ी में सागरमलजी हुए। आप बंजारों के साथ नमक का व्यापार तथा कोटे में अफीम की खरीदी फरोख्ती का व्यापार करते थे। इन व्यापारों में सम्पत्ति उपार्जित कर आपने अपने आस पास की जाति बिरादरी में बहुत बड़ी प्रतिष्ठा पाई। जोधपुर दरबार को आपने ६० हजार रुपया कर्ज दिये थे, इसके बदले में पचपदारा हुकूमत की आय आपके यहां जमा होती थी। संवत् १९३५ में आप स्वर्गवासी हुए। उस समय आपके पुत्र हजारीमलजी ४ साल के थे।

सेठ हजारीमलजी सालेचा—आप पचपदरा के नामी व्यापारी और रईस तबियत के ठाठबाट वाले पुरुष थे। जोधपुर स्टेट व साल्ट डिपार्टमेंट के तमाम ऑफीसरों से आपका अच्छा परिचय था। आप जोधपुर स्टेट से २ लाख मन नमक खरीदने का कंट्राक्ट कई सालों तक लेते रहे। संवत् १९७२ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके नाम पर सालेचा गुलाबचन्दजी भोपाल से दत्तक आये।

सेठ गुलाबचन्दजी सालेचा—आपका जन्म संवत् १९४४ में हुआ। आप बड़े अनुभवी तथा होशियार पुरुष हैं। आपने पचपदरा आने के पूर्व भोपाल, नागपूर आदि में स्कूल खुलवाये। पचपदरा में भी शिक्षा के काम में मदद देते रहे। आपके पास भारत की नमक की झीलों का ६० सालों का कम्पलीट अकाउण्ट है। संवत् १९२९ में आपने विलायती नमक की काम्पीटीशन में पचपदरा साल्ट का एक जहाज करांची से भर कर कलकत्ता रवाना किया, लेकिन बृटिश कम्पनियों ने सम्मिलित होकर वहाँ भाव बहुत गिरा दिया, इससे आपको उसमें सफलता न रही। नमक के व्यापार में आपका गहरा अनुभव है। आप पचपदरा के प्रधानपंच तथा नाकोड़ा पार्श्वनाथ के प्रबन्धक हैं। तथा जाति सुधारों में भाग लेते रहते हैं। आपके पुत्र लक्ष्मीचन्दजी तथा अमीचन्दजी जोधपुर में और चम्पालालजी पचपदरा में पढ़ते हैं।

टाँटिया

सेठ भोमराज किशनलाल टाँटिया, खिचंद

यह परिवार खिचंद का रहने वाला है। आप स्थानकवासी आम्नाय के मानने वाले सज्जन हैं। इस परिवार के पूर्वज सेठ हिम्मतमलजी टाँटिया, मालेगांव (खानदेश) गये, तथा वहाँ सर्विस करते रहे। फिर आपने चौपड़ा (खानदेश) में दुकान की। अपने जीवन के अन्तिम २५ सालों तक मारवाड़ में आप धर्म ध्यान में लीन रहे। संवत् १९७२ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके हस्तीमलजी, सोभागमलजी, गम्भीरमलजी तथा भोमराजजी नामक ४ पुत्र हुए। इनमें हस्तीमलजी टाँटिया ने संवत् १९४८ में बम्बई में दुकान खोली। संवत् १९६९ में आप स्वर्गवासी हुए। आप चारों भाइयों का कारबार संवत् १९७६ में अलग २ हुआ। सेठ हस्तीमलजी के किशनलालजी तथा राणूलालजी नामक दो पुत्र हुए। इनमें राणूलालजी मद्रास दत्तक गये।

सेठ किशनलालजी ने अपने काका भोमराजजी के साथ बम्बई में भागीदारी में व्यापार आरंभ

किया। तथा इधर संवत् १९८१ से बम्बई कालबा देवी में आढ़त का व्यापार "मिश्रीमल गुमानचन्द" के नाम से करते हैं। खिचन्द में आपका परिवार अच्छा प्रतिष्ठत माना जाता है। आपके पुत्र भैरूराज जी, गुमानचन्दजी, देवराजजी तथा समीरमलजी हैं। सेठ भोमराजजी विद्यमान हैं। आपके पुत्र मिश्रीलालजी हैं। इसी प्रकार इस परिवार में सेठ सोभागमलजी और उनके पुत्र कन्हैयालालजी का व्यापार धरनगाँव में तथा गम्भीरमलजी और उनके पुत्र मेघराजजी का व्यापार सारंगपुर (मालवा) में होता है।

आवड़

सेठ हरखचन्द रामचन्द आवड़, चांदवड़

यह परिवार पीसांगन (अजमेर के पास) का निवासी है। आप मन्दिर मार्गीय आम्नाय को मानने वाले सज्जन हैं। इस परिवार के पूर्वज सेठ हणुवंतमलजी के बड़े पुत्र हरखचन्दजी व्यापार के लिये संवत् १९२० में चाँदवड़ के समीप पनाला नामक स्थान में आये, तथा किराने की दुकानदारी शुरू की। आपका जन्म संवत् १९१५ में हुआ। पीछे से अपने छोटे भ्राता मूलचन्दजी को भी बुलालिया, तथा दोनों बंधुओं ने हिम्मत पूर्वक सम्पत्ति उपार्जित कर समाज में अपने परिवार की प्रतिष्ठा स्थापित की। सेठ मोतीलालजी का संवत् १९८४ में स्वर्गवास हो गया है, तथा सेठ हरकचन्दजी विद्यमान हैं। आपके पुत्र रामचन्दजी तथा केशवलालजी हैं। आप दोनों का जन्म क्रमशः संवत् १९४६ तथा १९५२ में हुआ। आप दोनों सज्जन अपनी कपड़ा व साहुकारी दुकान का संचालन करते हैं।

श्री केशवलालजी आवड—आप बड़े शान्त, विचारक और आशावदी सज्जन हैं। चाँदवड़ गुरुकुल के स्थापन करने में, उसके लिए नवीन बिल्डिंग प्राप्त करने में आपने जो जो कठिनाइयाँ झेलीं, उनकी कहानी लम्बी है। केवल इतना ही कहना पर्य्याप्त होगा कि, आपने विद्यालय की जमावट में अनेकानेक रुकावटों व कठिनाइयों की परवाह न कर उसकी नींव को दृढ़ बनाने का सतत् प्रयत्न किया। इसके प्रतिफल में परम रमणीय एवं मनोरम स्थान में आज विद्यालय अपनी उत्तरोत्तर उन्नति करने में सफल हो रहा है। तथा अब भी आप विद्यालय की उसी प्रकार सेवाएँ बजा रहे हैं। आप खानदेश तथा महाराष्ट्र के सुपरिचित व्यक्ति हैं। आपके बड़े भ्राता रामचन्द्रजी विद्यालय की प्रबंधक समिति के मेम्बर हैं। आपके पुत्र शाँतिलालजी ब्रह्मचर्य्याश्रम से शिक्षण प्राप्तकर कपड़े का व्यापार सम्हालते हैं। इनसे छोटे लखीचंद तथा सरूपचन्द हैं। इसी प्रकार केशवलालजी के पुत्र संचियालाल तथा रतनलाल हैं।

सेठ धनरूपमल छगनमल आवड़, जालना

इस खानदान का मूल निवास स्थान बीजाथल (मारवाड़) है। आप मन्दिर आम्नाय को माननेवाले सज्जन हैं। इस खानदान में सेठ धनरूपमलजी मारवाड़ से जालना ८० वर्ष पूर्व आये। तथा यहाँ आकर व्यापार किया। आपका स्वर्गवास हुए करीब ४० वर्ष हुए। आपके पश्चात् आपके पुत्र सेठ छगनमलजी ने इस फर्म के काम को सम्हाला। आपके समय में फर्म की अधिक तरक्की हुई। संवत् १९६५ के करीब आपका स्वर्गवास हुआ। धार्मिक कार्यों की ओर आपकी अच्छी रुचि थी। आपके पश्चात् आपके पुत्र सेठ कपूरचन्दजी ने इस फर्म के काम को सम्हाला। वर्त्तमान समय में आप ही इस फर्म के



सेठ गुलाबचंदजी मालेचा, पचपदरा



सेठ किशनलालजी टांटिया (मिश्रीमल गुलाबचंद) खिचंद.





रीगल सिनेमा, इन्दौर.

मालिक हैं। आपका संवत् १९३५ में जन्म हुआ है। आप समझदार तथा सज्जन व्यक्ति हैं। आपके हाथों से इस फर्म की बहुत तरक्की हुई। आपने जालना के मन्दिर की प्रतिष्ठा करवाने में दो तीन हजार रुपये लगाये। इसी तरह के धार्मिक कामों में आप सहयोग लेते रहते है। इस समय आपके यहाँ लेन-देन, कृषि, तथा सराफी का व्यापार होता है। आपके पुत्र कचरूलालजी व्यापार में भाग लेते हैं तथा उत्साही युवक हैं। जालना में यह फर्म अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है।

ठाकुर

सेठ देवीचंद पन्नालाल ठाकुर, इन्दौर

इस परिवार के पूर्वज अपने मूल निवास ओशियाँ से कई स्थानों पर निवास करते हुए लगभग २०० साल पूर्व इन्दौर में आकर आबाद हुए। इन्दौर में इस परिवार के पूर्वज सेठ बिरदीचन्दजी अफीम का व्यापार करते थे। आपके पुत्र नाथूरामजी तथा नगजीरामजी "नाथूराम नगजीराम" के नाम से व्यापार करते थे। आप दोनों भाइयों के क्रमशः देवीचन्दजी, तथा शंकरलालजी नामक एक एक पुत्र हुए। ये दोनों भाई अपना अलग २ व्यापार करने लगे।

सेठ देवीचन्दजी का परिवार—आप इस परिवार में वड़े व्यवसाय चतुर तथा होशियार पुरुष हुए। आपके पुत्र पन्नालालजी तथा मोतीलालजी ने अपनी फर्म पर चाँदी सोने का व्यवसाय आरम्भ किया। तथा इस व्यापार में अच्छी सम्पत्ति उपार्जित की। सेठ पन्नालालजी का ९० साल की आयु में संवत् १९९० में स्वर्गवास हुआ। आपके पुत्र सरदारमलजी ६० साल के हैं। इनके पुत्र धन्नालालजी, मन्नालालजी तथा अमोलकचन्दजी हैं। इनमें अमोलकचन्दजी अपने पिताजी के साथ सराफी दुकान में सहयोग देते हैं।

श्री धन्नालालजी तथा मन्नालालजी ठाकुर—आप दोनों बन्धुओं ने इन्दौर की शौकीन जनता की मनःस्तुष्टि के लिये सन् १९२३ में क्राउन सिनेमा तथा सन् १९३४ में रीगल थियेटर का उद्‌घाटन किया। इन सिनेमाओं में एक में "हिन्दी टॉकी" तथा दूसरी में "अँग्रेज़ी टॉकी" मशीन का व्यवहार किया जाता है। सिनेमा लाइन में आप दोनों बन्धुओं का अच्छा अनुभव हैं। धन्नालालजी के पुत्र हस्तीमलजी तथा बाबूलालजी पढ़ते हैं। मोतीलालजी ठाकुर के पुत्र इन्दौरीलालजी चाँदी सोने का व्यापार करते हैं इनके पुत्र मिश्रीलालजी व्यापार में भाग लेते हैं, तथा कान्हूरामजी छोटे हैं। इसी प्रकार इस परिवार में शंकरलालजी के पुत्र भगवानदासजी, सूरजमलजी तथा हजारीमलजी हुए। इनमें हजारीमलजी मौजूद हैं। सूरजमलजी के पुत्र ओंकारलालजी तथा हीरालालजी अपने काका के साथ चाँदी सोने का व्यापार करते हैं। ओंकारलालजी के पुत्र रतनलालजी हैं।

भादाणी

सेठ दौलतराम हरखचन्द भादाणी, कलकत्ता

यह परिवार श्वे० जैन तेरापन्थी आम्नाय को मानने वाला है। आपका मूल निवास स्थान डूंगरगढ़ (बीकानेर) का है। इस खानदान के पूर्व पुरुष भादाणी आदाकरणजी ने करीब सौ वर्ष पहले

कूच विहार में दुकान खोली। धीरे २ आपका काम बढ़ने लगा, और आपकी कूच विहार स्टेट में बहुत सी जमीदारी हो गई। आपके तनसुखदासजी और गुलाबचंदजी नामक दो पुत्र हुए। इन दोनों भाइयों के हाथ से इस फर्म की खूब उन्नति हुई। डूँगरगढ़ बसाने में भादाणी तनसुखदासजी ने बहुत मदद दी। भादाणी हरखचन्दजी बीकानेर "राजसभा" के मेम्बर रहे थे। तनसुखदासजी के दौलतरामजी और गुलाबचन्दजी के हरकचन्दजी नामक पुत्र हुए। इनमें से श्री दौलतरामजी का स्वर्गवास संवत् १९७५ में हो गया आपके पुत्र मालचन्दजी विद्यमान हैं। हरखचन्दजी इस समय इस फर्म के खास प्रोप्राइटर हैं। आपके पाँचपुत्र हैं जिनके नाम श्री केशरीचन्दजी, पूनमचन्दजी, मोतीलालजी, इन्द्रराजमलजी और सम्पतरामजी हैं। करीब बीस वर्ष पूर्व इस फर्म की एक शाखा कलकत्ता आर्मेनियन स्ट्रीट में खोली गई है। यहाँ "दौलतराम हरकचंद" के नाम से कमीशन एजंसी का काम होता है।

पगारिया

सेठ सरूपचन्द पूनमचन्द पगारिया, बेतूल

इस परिवार के पूर्वज सेठ छोटमलजी पगारिया, गूलर (जोधपुर स्टेट) से लगभग ७० साल पहिले चांदूर बाजार आये, तथा वहाँ से उनके पुत्र सरूपचन्दजी संवत् १९२७ में बदनूर आये तथा सेठ प्रतापचन्दजी गोठी की भागीदारी में "तिलोकचन्द सरूपचन्द" के नाम से कपड़े का कारबार चालू किया, संवत् १९३९ में आपने अपना निज का कपड़े का धंधा खोला, व्यापार के साथ २ सेठ सरूपचन्दजी पगारिया ने २ गाँव जमीदारी के भी खरीद किये, संवत् १९७४ में ६० साल की वय में आपका शरीरान्त हुआ। आपके गणेशमलजी, सूरजमलजी, मूलचन्दजी, चांदमलजी तथा ताराचन्दजी नामक ५ पुत्र हुए इन भाइयों में से गणेशमलजी १९७२ में तथा मूलचन्दजी १९८२ में स्वर्गवासी हुए।

सेठ सूरजमलजी पगारिया—आपका जन्म संवत् १९३६ में हुआ। आप सेठ "शेरसिंह माणकचंद" की दुकान पर पिताजी की मौजूदगी तक मुनीम रहे। बाद आपने अपनी जमीदारी के काम को बढ़ाया, इस समय आपके यहाँ १० गाँवों की जमीदारी है, इसके अलावा बेतूल में कपड़ा तथा मनीहारी काम होता है। आपके छोटे बंधु चांदमलजी का जन्म १९४२ में तथा ताराचन्दजी का जन्म १९४९ में हुआ। सेठ गणेशमलजी के पुत्र धरमचन्दजी, सूरजमलजी के पुत्र मोतीलालजी तथा चांदमलजी के पुत्र कन्हैयालालजी व्यापार में भाग लेते हैं। आप तीनों का जन्म क्रमशः सम्वत् १९५४ संवत १९६१ तथा १९६० में हुआ। मूलचन्दजी के पुत्र पुखराजजी, जसराजजी, हंसराजजी और ताराचन्दजी के बसंतीलालजी हैं।

भटेवड़ा

सेठ मोतीचन्द निहालचन्द, भटेवड़ा, बेलूर (मद्रास)

इस परिवार के पूर्वज सेठ मनरूपचंदजी भटेवड़ा अपने मूल निवास स्थान पिपलिया (मारवाड़) से व्यापार के लिये जालना आये, तथा वहाँ रेजिमेंटल बैङ्किंग तथा सराफी व्यापार किया। आपका परिवार स्थानकवासी आम्नाय के मानने वाला है। संवत् १९३४ में ६८ साल की वय में आप स्वर्गवासी हुए।

आपके जुहारमलजी, मोतीचन्दजी, छोगमलजी तथा हजारीमलजी नामक ४ पुत्र हुए। भटेवड़ा जुहारमलजी का स्वर्गवास सम्वत् १९५८ में ६४ साल की वय में हुआ। आपके नाम पर आपके भतीजे गुलाबचन्दजी दत्तक आये। इस समय इनके पुत्र केवलचन्दजी तथा घेवरचन्दजी बेलूर में व्यापार करते हैं। केवलचंदजी के पुत्र सोहनराजजी तथा सम्पतराजजी हैं।

भटेवड़ा मोतीचन्दजी का जन्म सम्वत् १९०० में हुआ था। आपने २६ साल की वय में जालना से सागर में अपनी दुकान खोली। आप सरल प्रकृति के सज्जन थे। सम्वत् १९३४ में आपका स्वर्गवास हो गया। आपके पुत्र सेठ निहालचन्दजी विद्यमान हैं। आप बेलूर के प्रतिष्ठित सज्जन माने जाते हैं। आपने बेलूर में "मोतीचन्द निहालचन्द" के नाम से फर्म स्थापित की। इस समय यह फर्म बेलूर में मातबर है। आपके यहाँ बेंकिंग तथा सराफी का काम होता है। सेठ छोगमलजी के पुत्र सूरजमलजी व गुलाबचन्दजी हुए। इनमें गुलाबचन्दजी, अपने काका सेठ जुहारमलजी के नाम पर दत्तक गये, तथा सूरजमलजी के पुत्र हीराचन्दजी ओर बनेचन्दजी बेलूर में अपना २ स्वतन्त्र व्यापार करते हैं। हीराचन्दजी के पुत्र भंवरीलालजी तथा बनेचन्दजी के विजयराजजी तथा सम्पतराजजी हैं। सेठ हजारीमलजी भटेवड़ा के पौत्र सुखराजजी विद्यमान हैं। इनके पुत्र चम्पालालजी हैं।

पूनमियां

सेठ ताराचन्द डाहजी पूनमियां, सादड़ी

इस वंश का मूल निवास सादड़ी है। यहाँ से सेठ ईंदाजी लगभग ७५ साल पहले सादड़ी से बम्बई गये। तथा इन्होंने बम्बई में सराफी लेन देन शुरू किया। इनके डाहजी, तेजमलजी तथा गेंदमलजी नामक ३ पुत्र हुए। डाहजी का जन्म सम्वत् १९१९ तथा मृत्युकाल सम्वत् १९७८ में हुआ। ये अपना सराफी लेनदेन व जुएलरी का काम काज देखते रहे। आप धार्मिक वृत्ति के पुरुष थे। आपके पुत्र केसरीमलजी, रूपचन्दजी तथा ताराचन्दजी विद्यमान हैं। इनमें केसरीमलजी, तेजमालजी के नाम पर दत्तक गये। इनकी चाँदरा (बम्बई) में चाँदी सोने की दुकान है। गेंदमलजी के पुत्र रिखबदासजी तथा बालचन्दजी हैं। इनका "रिखबदास बालचन्द" के नाम से मोती बाजार-बम्बई में गिन्नी का बड़ा कारबार होता है।

सेठ ताराचन्दजी—आप स्थानकवासी आम्नाय को मानने वाले हैं। आप सेठ नवलाजी दीपाजी के साथ बम्बई में बंगड़ियों का इम्पोर्टिंग तथा डीलिंग बिजिनेस करते हैं। आपने देशी चूड़ियों के कारबार को भी अच्छी उत्तेजना दी है। ताराचन्दजी शिक्षित सज्जन हैं। आपने स्थानकवासी ज्ञानवर्द्धक सभा के लिये ६०००) का एक सुन्दर मकान बनवाया है। आप अन्य संस्थाओं को भी सहायताएँ देते रहते हैं।

ललूंडिया राठोड़

सेठ पृथ्वीराज नवलाजी, ललूंडिया राठोड़, सादड़ी

इस वंश के पूर्वज जाकोड़ा (शिवगंज के पास) में रहते थे। वहाँ इन्होंने एक जैन मन्दिर भी बनवाया था। इस कुटुम्ब में दौलजी के पुत्र राजाजी तथा पौत्र खाजूजी हुए। जाकोडा से खाजूजी और

उनके पुत्र दीपाजी सादड़ी आये। दीपाजी के पुत्र नवलाजी का जन्म १८९९ में तथा भागाजी का १९१४ में हुआ। इन दोनों भाइयों का स्वर्गवास सम्वत् १९६९ में हुआ। नवलाजी के कस्तूरचन्दजी, संतोषचन्द जी, पृथ्वीराजजी तथा दलीचन्दजी नामक ४ पुत्र हुए। इन भाइयों ने सम्वत् १९४९ में बम्बई में चूड़ी का व्यापार शुरू किया, तथा इस व्यापार में इतनी उन्नति प्राप्त की, कि आज आप बम्बई में सब से बड़ा चूड़ी के व्यापार करते हैं। आपका आफिस "नवलाजी दीपाजी" के नाम से फोर्ट बम्बई में है, तथा आपके यहाँ चूड़ी का विदेशों से इम्पोर्ट होता है। सेठ कस्तूरचन्दजी सम्वत् १९५४ में तथा दलीचन्दजी १९७४ में स्वर्गवासी हुए। इस समय संतोषचन्दजी तथा पृथ्वीराजजी विद्यमान हैं। संतोषचन्दजी के पुत्र पुखराजजी व्यापार में भाग लेते हैं तथा दलीचन्दजी के पुत्र फूलचन्दजी पढ़ते हैं।

सेठ पृथ्वीराजजी—आप सादड़ी तथा गोड़वाड़ के प्रतिष्ठित सज्जन हैं। इस समय आप "दयाचन्द धर्मचन्द" की पेढ़ी व न्यात के नौहरे के मेम्बर हैं। आपके परिवार ने राणकपुरजी में ८ हजार रुपये लगाये। पंच तीर्थी के संघ में १७ हजार रुपये व्यय किये। सादड़ी में उपासरा बनवाया। नाडोल तथा बाँदरा के मन्दिरों में कलश चढ़ाने में मदद दी। नाडलाई मन्दिर में चाँदी का पालना चढ़ाया। इसी तरह के कई धार्मिक कार्यों में आप हिस्सा लेते रहते हैं।

छजलानी

सेठ कोजीराम घीसूलाल छजलानी, टिंडिवरम् (मद्रास)

इस खानदान के मालिकों का मूल-निवासस्थान जेतारण (मारवाड़) का है। आप जैन श्वेताम्बर समाज में तेरा पंथी आम्नाय को मानने वाले हैं। इस परिवार के श्री घीसूलालजी सबसे पहले सम्वत् १९७२ में टिण्डिवरम् आये और गिरवी के लेन देन की दुकान स्थापित की। घीसूलालजी बड़े साहसी और व्यापार कुशल पुरुष हैं। आपका जन्म संवत् १९५३ में हुआ। आपके पुत्र बिरदीचन्दजी इस समय दुकान के काम को संभालते हैं। इस फर्म की ओर से दान धर्म और सार्वजनिक कामों में यथाशक्ति सहायता दी जाती है। इस समय इस फर्म पर गिरवी और लेन देन का व्यवसाय होता है।

भूरा

सेठ चौथमल चाँदमल भूरा, जबलपूर

इस गौत्र की उत्पत्ति भणसाली गौत्र से हुई है। इस परिवार का मूल निवास देशनोक (बीकानेर) है। वहाँ से सेठ परशुरामजी भूरा अपने पुत्र चौथमलजी तथा करनीदानजी को लेकर सौ वर्ष पूर्व जबलपुर आये। यहां से करणीदानजी शिवनी चले गये, इस समय उनके परिवार वाले शिवनी में "बहादुरमल लखमीचन्द" के नाम से व्यापार करते हैं। सेठ चौथमलजी भूरा संवत् १९२३ में स्वर्गवासी हुए। आपके चाँदमलजी, मूलचन्दजी, मिलापचन्दजी तथा चुन्नीलालजी नामक ४ पुत्र हुए। इनमें सेठ चाँदमल जी ने १९ साल की आयु में अपने पिताजी के साथ संवत् १९२९ में सराफी की दुकान स्थापित की साथ ही इस फर्म की स्थाई सम्पत्ति को भी आपने खूब बढ़ाया। स्थानीय जैन मन्दिर की व्यवस्था

का भार संवत् १९४० से आपने लिया। तथा उसकी नई बिल्डिंग व प्रतिष्ठा कार्य्य आपही के समय में सम्पन्न हुआ। इसी तरह आपकी प्रेरणा से सिवनी, बालाघाट, कटंगी तथा सदर में जैन मन्दिरों का निर्माण हुआ। आप बड़े प्रभावशाली पुरुष थे। आपके छोटे भाई आपके साथ व्यापार में सहयोग देते रहे। संवत् १९७९ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके नेमीचन्दजी, रिखवदासजी तथा मोतीलालजी नामक ३ पुत्र हुए। इनमें नेमीचन्दजी, मूलचन्दजी के नाम पर दत्तक गये। मिलापचन्दजी के राजमलजी माणिकचन्दजी तथा हीरालालजी नामक ३ पुत्र हुए। इनमें माणिकचन्दजी स्वर्गवासी होगये।

इस समय इस परिवार में सेठ राजमलजी, रिखवदासजी, मोतीलालजी, हीरालालजी तथा रतनचन्दजी मुख्य हैं। सेठ मोतीलालजी शिक्षित तथा वजनदार सज्जन हैं। सन् १९२१ से आप म्युनिसिपल मेम्बर हैं। जबलपुर की हरएक सार्वजनिक संस्थाओं में आप भाग लेते रहते हैं। सेठ रिखवदासजी के पुत्र हुकुमचन्दजी व्यापार में भाग लेते हैं और रतनचन्दजी सेठ नेमीचन्दजी के नाम पर दत्तक गये हैं, तथा ईसरचन्दजी व प्रेमचन्दजी छोटे हैं। राजमलजी के पुत्र मगनमलजी एवं मोतीलालजी के खुशहालचन्दजी है। यह परिवार जबलपुर में प्रतिष्ठा सम्पन्न माना जाता है।

गाँधी

गाँधी मेहता डाक्टर शिवनाथचंदजी, जोधपुर

भाटों की ख्यातों से पता चलता है कि जालौर के चौहान वंशीय राजा लाखणसी से भण्डारी और गांधी मेहता वंशों की उत्पत्ति हुई। लाखणसीजी के ११ पीढ़ी बाद पोपसीजी हुए जो अपने समय के आयुर्वेद के विख्यातज्ञाता थे। कहा जाता है कि उन्होंने सवत् १३३८ में जालोर के रावल सांवन्तसिंह जी को एक असाध्य व्याधि से आराम किया इससे उक्त रावलजी ने इन्हें "गान्धी" की उपाधि से विभूषित किया। पोपसीजी के १३ पुश्त बाद रामजी हुए जो बड़े वीर और दानी थे। रामजी की पांचवी पीढ़ी में शोभाचन्दजी हुए जो बड़े वीर और नीतिज्ञ थे। आप पोकरण के एक युद्ध में वीरतापूर्वक लड़ते हुए काम आये। उनके स्मरण में पोकरण ठाकुर साहब ने वहाँ देवालय बनवाया है, जहाँ लोग "जात" के लिये जाते है। आपके पौत्रों में आलमचन्दजी बड़े वीर हुए। आप पोकरण ठाकुर सवाईसिंहजी के प्रधान थे और मूँडवे मुकाम पर अमीरखाँ से युद्ध करते हुए धोके से मारे गये। आपके स्मारक में उक्त स्थान पर छत्री बनी हुई है। शोभाचन्दजी के कनिष्ट भ्राता रूपचन्दजी मराठों के साथ युद्ध करते हुए वीरगति को प्राप्त हुए। आपके पश्चात् इसी वंश के रतनचन्दजी और अभयचन्दजी पोकरण ठाकुर साहब के पक्ष में युद्ध करते हुए काम आये। इस वंश में कई सतियाँ हुईं।

डाक्टर शिवनाथचन्दजी इसी प्रतिष्ठित वंश में हैं। संवत् १९४८ में आपका जन्म हुआ। १३ वर्ष की अवस्था में आपके पिता देवराजजी का देहान्त होगया। आपने इन्दौर में स्टेट की ओर से डाक्टरी की शिक्षा प्राप्त की। जोधपुर राज्य के देशी आदमियों में आप सबसे पहले डॉक्टर हुए। इस समय आप वेक्सीनेशन सुपरिन्टेण्डेण्ट हैं। आप जोधपुर की ओसवाल यंगमेन्स सोसायटी के कई वर्ष तक मन्त्री रहे। आप अत्यन्त लोकप्रिय और निःस्वार्थ डॉक्टर हैं, और सार्वजनिक कार्यों में उत्साह से भाग लेते हैं। आपके बड़े पुत्र मेहतापचन्दजी बी० कॉम बड़े उत्साही और देशभक्त युवक हैं।

राजवैद्य हीराचंद रतनचन्द रायगाँधी का खानदान, जोधपुर

रायगाँधी देपालजी के पूर्वज गुजरात में गाँधी (पसारी) का व्यापार तथा वैद्यकी का कार्य्य करते थे। इसलिये ये "रायगाँधी" कहलाये। गुजरात से देपालजी नागोर आये। इनके पौत्र गहराजजी ख्याति प्राप्त वैद्य थे। संवत् १५२५ में इन्होंने देहली के तत्कालीन लोदी बादशाह को अपने इलाज से आराम किया। कहा जाता है कि इनकी प्रार्थना से बादशाह ने शत्रुंजय के यात्रियों पर लगनेवाला कर माफ़ किया। इनकी १० वीं पीढ़ी में केसरीचंदजी प्रतिष्ठित वैद्य हुए। इनको संवत् १८०८ में महाराजा बखतसिंहजी नागोर से जोधपुर लाये, और जागीर के गाँव देकर बसाया, तब से यह खानदान जोधपुर में "राज्यवैद्य" के नाम से मशहूर हुआ। केशरीसिंहजी के बाद क्रमशः बखतमलजी, वर्धमानजी सरूपचन्दजी, पन्नालालजी, तथा मालचन्दजी हुए, उपरोक्त व्यक्तियों को समय २ पर १० गाँव जागीरी में मिले थे। संवत् १८९३ में मालचन्दजी के गुजरने के समय उनके पुत्र इन्द्रचन्दजी किशनचन्दजी तथा मुकुन्दचन्दजी नाबालिग थे, अतः बागी सरदारों ने इनके गाँव दबालिये। इनके सयाने होनेपर दरबार ने गाँवों की एवज में तनख्वाह करदी। समय २ पर इस खानदान को राज्य की ओर से सिरोपाव भी मिलते रहे। गाँधी बखतमलजी के पौत्र गढ़मलजी तथा मालचन्दजी के छोटे भ्राता प्रभूदानजी प्रसिद्ध वैद्य थे। किशनचन्दजी तथा मुकुन्दचन्दजी को वैद्यक का अच्छा अनुभव था। आप क्रमश संवत् १९५१ तथा १९६४ में स्वर्गवासी हुए। मुकुन्दचन्दजी के माणकचन्दजी, हीराचन्दजी तथा रतनचन्दजी नामक ३ पुत्र हुए, इनमें संवत् १९७४ में माणक्चन्दजी स्वर्गवासी हुए। हीराचन्दजी का जन्म सम्वत् १९२५ में हुआ, इनके पुत्र चाँदमलजी हैं। रायगाँधी चाँदमलजी का जन्म संवत् १९५० में हुआ इनको स्टेट की ओर से जाती तनख्वाह मिलती है, आपको वैद्यक का अच्छा ज्ञान है। सनातन धर्म सभा ने आपको "वैद्य भूषण की पदवी" दी है। आपके पुत्र मानचन्दजी कलकत्ता में वैद्यक तथा डाक्टरी की शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

रायगाँधी रतनचंदजी का जन्म संवत् १९४२ में हुआ। आपको भी स्टेट से जाती तनख्वाह मिलती है आपके पुत्र वैद्य पदमचन्दजी हैं। डाक्टर परमचंदजी वैद्य का जन्म संवत् १९६२ में हुआ, सन् १९२९ में आपने इन्दौर से डाक्टरी परीक्षा पास की, इस परीक्षा में आप प्रथम गेट में सर्व प्रथम उत्तीर्ण हुए। और आप इसी साल जोधपुर स्टेट में मेडिकल ऑफीसर मुकर्रर हुए इस समय आप बाढ़मेर डिस्पेंसरी में सब असिस्टेंट सर्जन के पद पर हैं। सन् १९३० में आपने जोधपुर दरबार के साथ देहली में उनके परसनल फिजिशियन की हेसियत से कार्य्य किया। आप डाक्टरी में अच्छा अनुभव रखते हैं। डिपार्टमेंट से व जनता से आपको कई अच्छे सार्टीफिकेट मिले हैं। नागोर की जनता ने आपको मानपत्र तथा केस्केट भेंट किया था।

सेठ ताराचन्द वख्तावरमल गांधी, हिंगनघाट

इस परिवार के पूर्वज गांधी ताराचन्दजी नागोर से पैदल मार्ग द्वारा लगभग १०० साल पूर्व हिंगनघाट आये। तथा यहाँ लेनदेन का व्यापार शुरू किया। आपके वख्तावरमलजी, धनराजजी तथा हजारीमलजी नामक ३ पुत्र हुए। गांधी वख्तावरमलजी समझदार, तथा प्रतिष्ठित पुरुष थे। हिंगनघाट की जनता में आप प्रभावशाली व्यक्ति थे। आपने व्यापार की वृद्धि कर इस दुकान की शाखाएँ नागपुर कामटी, तुमसर, वर्द्धा, भंडारा तथा चांदा आदि स्थानों में खोली। आपका सवत् १९४४ में स्वर्गवास

हुआ। आपके भीकमचन्दजी तथा हीरालालजी नामक २ पुत्र हुए, इनमें हीरालालजी, सेठ हजारीमलजी के नाम पर दत्तक गये। इन दोनों बंधुओं का व्यापार संवत् १९६३ में अलग २ हुआ। सेठ हजारीमलजी संवत् १९७७ में स्वर्गवासी हुए। तथा धनराजजी के कोई संतान नहीं हुई।

सेठ हीरालालजी गांधी—आपका जन्म संवत् १९३१ में हुआ। आप समझदार तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। आपके यहाँ "हजारीमल हीरालाल" के नाम से लेन देन तथा कृषि का कार्य्य होता है। आपके पुत्र हंसराजजी २४ साल के तथा वच्छराजजी २१ साल के हैं। इसी प्रकार सेठ भीकमचन्दजी के हेमराजजी तथा जँवरीमलजी नामक २ पुत्र हुए। इनमें गाँधी जँवरीमलजी, तथा हेमराजजी के पुत्र पुखराजजी विद्यमान हैं। आप दोनों सज्जन भी व्यापार करते हैं। यह परिवार हिंगनघाट के व्यापारिक समाज में प्रतिष्ठित माना जाता है।

गड़िया

मेसर्स पीरदान जुहारमल (गड़िया) एण्ड संस, त्रिचनापल्ली

यह परिवार अपने मूल निवास नागोर से फलोदी, जोधपुर, लोहावट आदि स्थानों में होता हुआ सेठ झुरमुटजी गड़िया के समय में मथानियाँ (ओसियाँ के पास) आकर अबाद हुआ। कहा जाता है कि झुरमुटजी ने थोड़े समय तक जोधपुर में दीवानगी के कार्य्य में मदद दी थी। ये अपने समय के समृद्धिशाली साहुकार थे। एकबार जोधपुर दरबार ने बारेट अमरसिंह को कुछ जागीर देना चाही, उस समय उसने यह कह कर मथाणिया माँगा कि, खम्मा खम्मा कर उठाणिया, देराजा गाव मथानियाँ। बहुत साँवा घणा पाणियाँ जिण में बसे झुरमुट वाणिया। गड़िया परिवार में सेठ राजारामजी गड़िया जोधपुर में बहुत नामी साहुकारी हुए। इन्होंने संवत् १८७२ में मीरखां को चिट्ठा चुकाने के समय महाराजा मानसिंहजी को बहुत बड़ी इमदाद दी थी। तथा आपने शत्रुंजयजी का विशाल संघ भी निकलवाया था।

गड़िया झुरमुटजी के वंश में आगे चलकर गजाजी हुए। इनके पुत्र देवराजजी तथा पौत्र पीरदानजी, चतुर्भुजजी तथा ऊदाजी थे। सेठ पीरदानजी संवत् १९४३ में सेठ रावलमलजी के पारख के साथ त्रिचनापल्ली आये, और थोड़े समय में इनके यहाँ मुनीमात करके फिर उन्हीकी भागीदारी में दुकान की। यह कार्य्य आप संवत् १९५९ तक करते रहे। इनके ३ वर्ष बाद आपने अपनी स्वतंत्र दुकान तिन्नूर (त्रिचनापल्ली) में खोली। इधर १५ सालों से सब व्यापार अपने पुत्रों के जिम्मे कर आप देश में ही रहते हैं। इधर आपने संवत् १९८९ में "पीरदान जुहारमल बैंक लिमिटेड" की स्थापना की है। आपके पुत्र घेवरचंदजी, धनराजजी, लूमचन्दजी, पृथ्वीराजजी, तथा गणेशमलजी (उर्फ चम्पालालजी) तमाम व्यापारिक काम उत्तमता से संचालित करते हैं। श्री घेवरलालजी का जन्म संवत् १९५२ में हुआ। आप स्थानीय पाँजरापोल तथा जीवदया मंडली के प्रधान हितचिंतक हैं। आप जीवदया संस्था के प्रेसिडेंट हैं। आपके छोटे बंधु लूमचंदजी बैंक के मेनेजिंग डायरेक्टर तथा पांजरापोल के सेक्रेटरी है। आपके बैंक में अंग्रेजी पद्धति से बेंकिंग विजिनेस होता है। इसके अलावा आपके यहाँ ४ दुकानों पर व्याज का काम होता है। आप सब भाई सरल तथा शिक्षित सज्जन हैं। घेवरचंदजी के पुत्र सिरेमलजी हैं।

रूणवाल

सेठ पन्नालाल शिवराज रूणवाल, बीजापुर

इस परिवार का मूल निवास स्थान खुडी-बंडवारा (मेड़ते के पास) है। आप स्थानकवासी आम्नाय के माननेवाले सज्जन हैं। इस परिवार के पूर्वज सेठ किशनचन्दजी के चतुर्भुजजी, पन्नालालजी, रिधकरणजी तथा इन्द्रभानजी नामक ४ पुत्र हुए। इनमें सेठ चतुर्भुजजी खुड़ी ठाकुर के यहाँ कामदार का काम करते थे। आपका सम्वत् १९६१ में तथा पन्नालालजी का सम्वत् १९४५ में स्वर्गवास हुआ। सेठ चतुर्भुजजी के पूसालालजी तथा सुखदेवजी सेठ पन्नालालजी के शिवराजजी, अभयराजजी तथा चुन्नीलालजी और इन्द्रभानजी के कुन्दनमलजी नामक पुत्र हुए। इनमें पूसालालजी तथा सुखदेवजी स्वर्गवासी हो गये हैं।

सेठ पन्नालालजी रूणवाल का परिवार—सेठ पन्नालालजी के बड़े पुत्र शिवराजजी का जन्म सम्वत् १९२४ में हुआ। आप सम्वत् १९४० में बागलकोट आये। तथा सर्विस करने के बाद सम्वत् १९६५ में "प्रेमराज भागीरथ" के नाम से बीजापुर में दुकान की। आपके पुत्र प्रेमराजजी, भागीरथजी, जीतमलजी तथा मूलचन्दजी हैं। जिनमें बड़े तीन पुत्र अपनी तीन दुकानों का संचालन करते हैं। श्री पेमराजजी के पुत्र भंवरूलालजी, हीरालालजी, अजराज, पारसमल तथा दलीचन्द हैं। इसी प्रकार भागीरथजी के पुत्र अम्बा॰ लालजी तथा मूलचन्दजी के जेठमलजी हैं। शिवराजजी की प्रधान दुकान पर "शिवराज जीतमल" के नाम से रूई तथा अनाज का बड़े प्रमाण में व्यापार होता है। सेठ अभयराजजी का जन्म सम्वत् १९१२ में हुआ। आपके पुत्र राजमलजी, सेठ चुन्नीलालजी के पुत्रों के साथ भागीदारी में व्यापार करते हैं।

सेठ चुन्नीलालजी रूणवाल—आप इस परिवार बड़े समझदार तथा प्रतिष्ठित महानुभाव हैं। आप सम्वत् १९४४ में केवल ९ साल की वय में अपने बड़े भ्राता के साथ जलगाँव आये। तथा वहाँ से आप बागलकोट आये। यहाँ आपने फूलचन्दजी भय्या की दुकान पर सर्विस की। तथा पीछे इस दुकान के भागीदार हो गये। सम्वत् १९६४ में आपने "चुन्नीलाल उत्तमचंद" के नाम से रूई तथा आढ़त का व्यापार चालू किया। इस समय आपकी फर्म पर यूरोपियन तथा जापानी आफिसों की बहुत खरीदी रहा करती है। आप बीजापुर की जनता में बड़े लोकप्रिय व आदरणीय व्यक्ति हैं। सम्वत् १९६१ से लगातार १६ वर्षों तक आप जनता की ओर से म्यु॰ मेम्बर चुने गये। जब आपने म्यु॰ के लिये खड़ा होना छोड़ दिया, तब सरकार ने आपको आनरेरी मजिस्ट्रेट के सम्मान से सम्मानित किया। और इस सम्मान पर आप अभीतक कार्य्य करते हैं। इसी तरह आप बीजापुर मर्चेंट एसोशिएसन के प्रेसिडेंट हैं। कहने का तात्पर्य यह कि आप बीजापुर के वजनदार व्यक्ति हैं। आपके उत्तमचन्दजी, दुर्गालालजी, देवीलालजी, केशरीमलजी, पुखराजजी, माणकचन्दजी, मोतीलालजी और साकलचन्दजी नामक ८ पुत्र हैं। इनमें बड़े ३ तीन पुत्र आपकी तीन दुकानों के व्यापार में सहयोग लेते है। उत्तमचन्दजी भी म्यु॰ मेम्बर रह चुके हैं।

इसी तरह इस परिवार में सेठ कुन्दनमलजी तथा उनके पुत्र भेरूलालजी और ताराचन्दजी अपना स्वतन्त्र व्यापार करते हैं। सेठ पूसालालजी के ६ पुत्र हैं, जिनमें छोटमलजी तथा वरदीचन्दजी बागलकोट में सेठ बच्छराज कन्हैयालाल सुराणा के साथ तथा शेष ४ बीजापुर में व्यापार करते हैं।

सीयाल

सेठ फतेमलजी सीयाल, ऊटकमंड

यह परिवार पाली निवासी मन्दिर आम्नाय का मानने वाला है। पाली से सेठ फतेमलजी सीयाल ने सम्वत् १९६० में आकर नीलगिरी के वेलिंगटन नामक स्थान में ब्याज का धंधा शुरू किया। आप सज्जन व्यक्ति हैं तथा विद्यमान हैं। आपने तथा पुखराजजी ने इस दुकान के कारबार को ज्यादा बढ़ाया। आपका परिवार पाली तथा नीलगिरी के ओसवाल समाज में प्रतिष्ठित माना जाता है। आपके यहाँ गोरीलाल फतेमल के नाम से वेलिंगटन में तथा रिखबदास फतेमल के नाम से ऊटकमंड में भागीदारी में ब्याज का व्यापार होता है। आपके नाम पर धरमचन्दजी सीयाल दत्तक आये हैं। आप १२ साल के हैं।

राय सोनी

सेठ सिरेमल पूनमचन्द मूथा (राय सोनी) बेलगांव

यह परिवार भाँवरी (पाली) का निवासी है। वहाँ मूथा डायाजी रहते थे। इनके माणकचन्दजी तथा इंदाजी नामक २ पुत्र हुए। इनमें माणिकचन्दजी, भाँवरी ठिकाने के कामदार थे। इनके पुत्र पूनमचन्दजी तथा जसराजजी हुए। मूथा पूनमचन्दजी के पुत्र सिरेमलजी २२ साल की आयु में सम्वत् १९४५ में बेलगाँव आये। तथा "दानाजी ऊमाजी" की भागीदारी में कपड़े का व्यापार शुरू किया। इसके बाद आप हलियाल (कारवार डिस्ट्रिक्ट) में लकड़ी का कंट्राक्टिंग बिजिनेस करते रहे। इसमें सफलता प्राप्त कर सम्वत् १९७३ में आपने कपड़े का व्यापार शुरू किया। तथा व्यापार में उन्नति प्राप्त कर सम्मान को बढ़ाया। सम्वत् १९८० में आप स्वर्गवासी हुए। आपके नाम पर आपके चाचा मूथा जसराजजी के पौत्र जीवराजजी दत्तक आये। इनका भी १७ साल की वय में सम्वत् १९८४ में शरीरान्त हो गया। अतः इनके नाम पर सेठ इंदाजी के प्रपौत्र भीकमचन्दजी दत्तक लिये गये। इनका जन्म सम्वत् १९७२ में हुआ। इस दुकान पर सोजत निवासी भंडारी माणिकराजजी १५ सालों से मुनीम हैं। आप समझदार व्यक्ति हैं। यह दुकान बेलगाँव के व्यापारिक समाज में अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती हैं। यहाँ कपड़े का थोक व्यापार होता है।

कातरेला

सेठ धौंकलचन्द चुन्नीलाल कातरेला, बंगलोर

इस खानदान के मूल पुरुषों का खास निवास स्थान बगड़ी (मारवाड़) है। आप श्वेताम्बर में जैन स्थानक वासी सम्प्रदाय को माननेवाले हैं। इस खानदान में सेठ मनरूपचन्दजी अपने जीवन भर बगड़ी में ही रहे। आपके पुत्र धौंकलचन्दजी का जन्म संवत् १९०१ में हुआ। आप भी बगड़ी में ही रहे। आप बड़े धार्मिक और सज्जन पुरुष थे। आपका स्वर्गवास संवत् १९७८ में हुआ। आपके पुत्र धनराजजी

चुन्नीलालजी और सुखराजजी विद्यमान हैं। इनमें से धनराजजी ने अपनी फर्म अमरावती में 'धोंकलचन्द धनराज" के नाम से खोली। सेठ चुन्नीलालजी ने संवत् १९५६ में अपना फर्म बंगलोर में "धोंकलचन्द चुन्नीलाल के नाम से कालीन्नप बाज़ार में खोली। तथा सेठ सुखराजजी ने संवत् १९७७ में अपनी दुकान मद्रास में खोली। आप तीनों भाई बड़े धार्मिक और व्यापार दक्ष पुरुष हैं। आप लोगों का जन्म क्रमशः संवत् १९३१ संवत् १९३५ तथा १९३८ में हुआ। सेठ धनराजजी के पुत्र बन्शीलालजी हैं। सेठ सुखराजजी के पुत्र अमोलकचन्दजी और अमोलकचन्दजी के पुत्र भँवरीलालजी हैं। भँवरीलालजी को सेठ चुन्नीलालजी ने दत्तक लिया है।

मरलेचा

सेठ धूलचन्द दीपचन्द मरलेचा, चिंगनपेठ (मद्रास)

इस परिवार के पूर्वज सेठ बोरीदासजी मरलेचा कण्टालिया रहते थे। सम्वत् १९२३ में वहाँ के जागीदार से इनकी अनबन हो गई, और जिससे इनका घर लुटवा दिया गया। इससे आप कण्टालिया से मेलावास (सोजत) चले आये। तथा ४ साल बाद वहाँ स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र धूलचन्दजी व्यवसाय के लिये जालना आये, यहाँ थोड़े समय रह कर आप मारवाड़ गये, तथा वहाँ सम्वत् १९७६ में स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र दीपचन्दजी का जन्म सम्वत् १९५६ में हुआ। दीपचन्दजी मरलेचा मारवाड़ से सम्वत् १९६६में अहमदनगर और उसके डेढ़ बरस बाद मद्रास आये। और वहाँ सर्विस की। सम्वत् १९७६ में आपने बगड़ी निवासी सेठ धनराजजी कातरेला की भागीदारी में चिंगनपेठ (मद्रास) में व्याज का धंधा "धनराज दीपचन्द" के नाम से शुरू किया आपके पुत्र पारसमलजी तथा चम्पालालजी हैं। आप स्थानकवासी आम्नाय के सज्जन हैं। श्री धनराजजी कातरेला के पुत्र वंशीलालजी इस फर्म के व्यापार में भाग लेते हैं। आप दोनों युवक सज्जन व्यक्ति हैं।

मड़ेचा

मेसर्स सागरमल जवाहरमल मडेचा,

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान सोजत (जोधपुर-स्टेट) का है। आप श्वे० जैन समाज के तेरह पंथी आम्नाय को मानने वाले सज्जन हैं। इस फर्म के स्थापक सेठ जमनालालजी मारवाड़ से जालना आये और यहाँ पर आकर लोहे और किराने की दुकान खोली। आपका स्वर्गवास हुए करीब ३० वर्ष हो गये। आपके पश्चात् आपके छोटे भाई सेठ सागरमलजी ने इस फर्म के काम को सम्हाला। सागरमलजी सं० १९७० में स्वर्गवासी हुए। आपके चार पुत्र हुए। इनमें जवानमलजी, कुन्दनमलजी तथा समरथमलजी छोटी २ उमर में गुजर गये, तथा इस समय फर्म के मालिक आपके चतुर्थ पुत्र केशरीमलजी हैं। आपकी ओर से १००००) दस हजार की लागत से एक बङ्गला सामायिक तथा प्रति क्रमण के लिए दिया गया। आपके पुत्र चम्पालालजी तथा मदनलालजी बालक हैं।

बागमार

सेठ जगन्नाथ नथमल बागमार, बागलकोट

इस परिवार का मूल निवास कूणसरा (कुचेरा के पास) जोधपुर स्टेट है। इस परिवार के पूर्वज सेठ रिड़मलजी बागमार के पुत्र सेठ थानमलजी बागमार संवत् १९२२ में बागलकोट आये, तथा, भागीदारी में रेशमी सूत का व्यापार शुरू किया। आप संवत् १९७८ में स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र सेठ जगन्नाथजी बागमार का जन्म संवत् १९३५ में हुआ। आपने तथा आपके पिताजी ने इस दुकान के व्यापार तथा सम्मान को वढ़ाया। आप कपड़ा एसोशिएसन के अध्यक्ष हैं। बागलकोट के व्यापारिक समाज में आपकी दुकान प्रतिष्ठित मानी जाती है। सेठ जगन्नाथजी के पुत्र नथमलजी का जन्म संवत् १९६१ में हुआ। आप फर्म के व्यापार को तत्परता से सम्हालते हैं। आपके पुत्र हेमराजजी, पूनमचन्दजी, हंसराजजी, तथा केवलचन्दजी हैं। आपके यहाँ बागलकोट में सूती कपड़े का व्यापार होता है।

कुचेरिया

सेठ खींवराज अभयराज कुचेरिया, धूलिया

यह परिवार बोरावड़ (जोधपुर स्टेट) का निवासी है। देश से सेठ गोपालजी कुचेरिया संवत् १९१० में व्यापार के लिये धूलिया आये। आप संवत् १९५० में स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र अभयराजजी ने व्यवसाय को उन्नति दी। आप भी संवत् १९५८ में स्वर्गवासी हुए। आपके खींवराजजी तथा मोतीलालजी नामक २ पुत्र हुए, इनमें खींवराजजी विद्यमान हैं। कुचेरिया खींवराजजी का जन्म संवत् १९३८ में हुआ। आपने १९६० में रुई अनाज और किराने की दुकान की। तथा इस व्यापार में अच्छी सम्पत्ति और प्रतिष्ठा प्राप्त की। आप स्थानकवासी आम्नाय के मानने वाले हैं, तथा धार्मिक कार्मो में सहयोग लेते रहते हैं आपके पुत्र नेमीचन्दजी तथा बरदीचन्दजी व्यापार में सहयोग लेते हैं।

हाड़िया

सेठ दलीचंद मूलचंद हाड़िया, बलारी

यह परिवार सीवाणा (मारवाड) का निवासी है। वहाँ से सेठ दलीचन्दजी अपने भ्राता झूठाजी को साथ लेकर संवत् १९२० में बलारी आये। तथा मोती की फेरी लगाकर दस पन्द्रह हजार रुपयों की सम्पत्ति उपार्जित की, और संवत् १९४४ में "दलीचद झूठाजी" के नाम से कपडे का कारबार शुरू किया। आप दोनों बंधु क्रमशः संवत् १९६५ तथा १९६० में स्वर्गवासी हुए। आप दोनों बन्धुओं ने मिलकर लगभग ३ लाख रुपयों की सम्पत्ति इस व्यापार में कमाई। सेठ दलीचन्दजी के रघुनाथमलजी, मूलचन्दजी तथा आसूरामजी नामक ३ पुत्र हुए। सेठ रघुनाथमलजी, १९७७ में गुजरे। इनके बाद यह दुकान ऊपर के नाम से व्यापार कर रही है। इन तीनों भाइयों के नाम पर श्री छोगालालजी दत्तक

हैं। आपके पुत्र सम्पतराजजी हैं। सीवाणची में यह परिवार बड़ा नामी माना जाता है। आप स्थानकवासी आम्नाय के मानने वाले सज्जन हैं। इस फर्म में सीवाणा निवासी कई सज्जनों के भाग हैं। इसी तरह अन्य स्थानों के भी भागीदार हैं।

धोका

सेठ बहादुरमल सूरजमल, धोका यादगिरी (निजाम)

इस कुटुम्ब का मूल निवास स्थान साथीण (पीपाड़ के पास) है। आप श्वे० जैन समाज के स्थानक वासी आम्नाय के मानने वाले सज्जन हैं। सेठ जीतमलजी के पुत्र बालचन्दजी धोका देश से संवत् १९४१ में यादगिरी आये तथा आपने कपड़े का काम काज शुरू किया। आपका संवत् १९५० में स्वर्गवास हुआ। आपके नवलमलजी, बहादुरमलजी तथा सूरजमलजी नामक ३ पुत्र हुए। सेठ नवलमलजी धोका के हाथों से इस दुकान के रोजगार और इज्जत को बहुत तरक्की मिली। आपका स्वर्गवास संवत् १९८५ में तथा बहादुरमलजी संवत् १९६१ में हुआ। इस समय इस परिवार में सेठ सूरजमलजी सेठ नवलमलजी के दत्तक पुत्र हीरालालजी, बहादुरमलजी के दत्तक पुत्र किशनलालजी तथा सूरजमलजी के दत्तक पुत्र लालचन्दजी मोजूद हैं। सेठ सूरजमलजी का जन्म संवत् १९२४ में हुआ। आप ही इस समय इस परिवार में बड़े हैं। तथा दान धर्म के कामों की ओर आपकी अच्छी रुचि है। आपकी दुकान यादगिरी की मातबर दुकानों में है। आपके यहाँ "बहादुरमल सूरजमल" के नाम से आढ़त सराफी लेन-देन का काम काज होता है। हीरालालजी के पुत्र पूरनमलजी तथा मदनलालजी हैं।

परिशिष्ट ❀

सेठ हरचन्दरायजी सुराणा का खानदान, चुरू

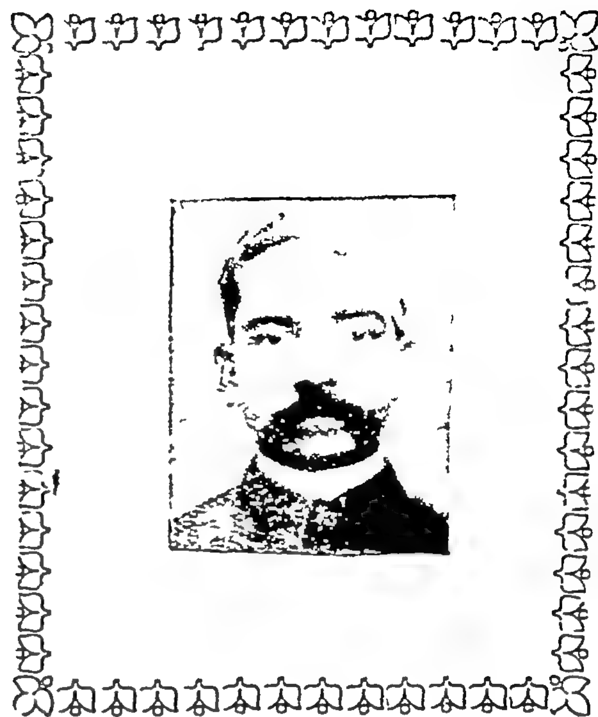
इस खानदान का मूल निवास स्थान नागौर (मारवाड़) का था। वहाँ से इस परिवार के पूर्व पुरुष सेठ सुखमलजी चूरू आकर बस गये। तभी से आपके परिवार के सज्जन, चूरू में ही निवास कर रहे हैं। आपके बालचन्दजी, चौथमलजी तथा हरचन्दरायजी नामक तीन पुत्र हुए। इनमें यह खानदान सेठ हरचन्दरायजी से सम्बन्ध रखता है।

सेठ हरचन्दरायजी—आप बड़े सीधे सादे, मिलनसार एवं धार्मिक वृत्ति के महानुभाव थे। आप देश में ही रह कर साधारण व्यापार करते रहे। आपका स्वर्गवास होगया है। आपके डूंगरचन्दजी, रतनलालजी सुगनचन्दजी एवं शोभाचन्दजी नामक चार पुत्र हुए।

❀ जिन सज्जनों का परिचय भूल से छपना रह गया, या जिनका परिचय पुस्तक छपने के पश्चात् प्राप्त हुआ, उन सज्जनों का परिचय "परिशिष्ट" में दिया जा रहा है।



स्व० सेठ मुन्नालालजी सुराना, चूरू.



सेठ तिलोकचंदजी सुराना, चूरू.



कुं० हनुतमलजी सुराना, चूरू



कुँ० हिम्मतमलजी सुराना, चूरू.

सेठ उगरचन्दजी का परिवार—सेठ उगरचन्दजी सीधे सादे और धार्मिक प्रकृति के पुरुष थे। आप चूरू से व्यापार के निमित्त कलकत्ता आये थे। मगर प्रायः आप देश में ही रहा करते थे। आपका स्वर्गवास होगया है। आपने रतीरामजी के पुत्र धनराजजी को अपने नाम पर दत्तक लिया। सेठ धनराजजी भी साधारण स्थिति में व्यापार करते रहे। आपका भी स्वर्गवास होगया है। आपके स्वर्गवास के पश्चात् आपकी धर्मपत्नी सिरेकुँवरजी तथा आपके पुत्र श्री सोहनलालजी ने जैन धर्म के तेरापन्थी सम्प्रदाय में दीक्षा ग्रहण करली। श्रीमती सिरेकुँवरजी का स्वर्गवास होगया है। श्री सोहनलालजी इस सम्प्रदाय में संस्कृत के विद्वान तथा शास्त्रों का अच्छा ज्ञान रखते हैं।

सेठ रतीरामजी का परिवार—आप भी देश से कलकत्ता व्यापार निमित्त आये थे। आपने सर्व प्रथम दलाली का काम प्रारंभ किया था। कुछ समय पश्चात् आप अपने भाइयों से अलग होकर अपना स्वतन्त्र व्यापार करने लगे थे। तभी से आपके परिवार के सज्जन अलग व्यवसाय करते हैं। आपके सुगनचन्दजी, धनराजजी, खूबचन्दजी तथा हजारीमलजी नामक ४ पुत्र हुए। पहले पहल आपने मेसर्स सुगनचन्द हजारीमल के नाम से धोती जोड़ों का काम शुरू किया। इस फर्म का व्यवसाय सं० १९६० के करीब साझे में चलता रहा। तदनन्तर आप सब लोग अलग २ व्यवसाय करने लग गये। इस समय सेठ सुगनचन्दजी देश में ही निवास करते हैं। आपके चम्पालालजी, प्रेमचन्दजी, नेमचन्दजी तथा भँवरलालजी नामक चार पुत्र हैं। सेठ धनराजजी सेठ ऊगरचन्दजी के नाम पर दत्तक चले गये। सेठ खूबचन्दजी का स्वर्गवास होगया है। आपके सुमेरमलजी नामक एक पुत्र हैं। आप इस समय अपने काका सेठ हजारीमलजी के साथ काम करते हैं। सेठ हजारीमलजी बड़े योग्य, मिलनसार तथा धार्मिक प्रकृति के पुरुष हैं। आप आज कल मेसर्स हजारीमल माणकचन्द के नाम से सूता पट्टी में धोती जोड़ों का व्यापार करते हैं। इसके अतिरिक्त आपकी लुक्सलेन में एक छातों के व्यवसाय की फर्म तथा छातों का कारखाना भी है। आपके पुत्र बा० माणकचन्दजी इस समय पढ़ रहे हैं।

सेठ मुन्नालालजी का परिवार—इस परिवार में सेठ मुन्नालालजी बड़े नामांकित व्यक्ति हुए। परिवार की उन्नति का सारा श्रेय आप को ही है। आप सबसे पहले संवत् १९२७ में देश से व्यापार निमित्त कलकत्ता आये और दलाली का काम प्रारंभ किया। आप बड़े ही व्यापार कुशल, होनहार तथा होशियार सज्जन थे। आपने अपनी व्यवहार कुशलता, व्यापार चातुरी तथा होशियारी से दलाली में अच्छी सफलता प्राप्त की। आप बड़े परिश्रमी तथा अग्रसोची सज्जन थे। दलाली में धनोपार्जन कर आपने अपने आर्थिक उत्थान के हेतु अपने छोटे भ्राता शोभाचन्दजी के साझे में 'मन्नालाल शोभाचन्द सुराणा' के नाम से संवत् १९४० में स्वतन्त्र फर्म स्थापित की और इस पर विलायत से धोती जोड़ों का कारवार चालू किया। इस व्यवसाय में आपको बहुत काफी सफलता प्राप्त हुई। आपके व्यवसाय को ज्यों २ सफलता मिलती गई त्यों त्यों उसे बढ़ाते गये और उसमें लाखों रुपये की सम्पत्ति उपार्जित की। आप की फर्म पर विलायत से धोती जोड़ों का डायरेक्ट इम्पोर्ट होता था। आप बड़े बुद्धिमान तथा अध्यवसायी सज्जन थे। आप वृद्धावस्था में चुरू में ही रहते रहे। आपको साधु सेवा की भी बड़ी लगन थी। आपका अन्तिम जीवन साधु सेवा में ही व्यतीत हुआ। अभी आपका सं० १९९१ में स्वर्गवास हुआ है। आप

का कलकत्ता व चुरू की ओसवाल समाज में अच्छा सम्मान था। आप चुरू पिंजरापोल के सभापति भी रह चुके थे। आपके विचार बड़े सुधरे हुए थे। आपने अपनी मृत्यु के समय ५००००) का एक वृहद् दान निकाला है जिसका एक ट्रस्ट भी कायम कर गये हैं। इस दान की रकम का उपयोग विधवाओं को सहायता पहुँचाने तथा जात्योन्नति के कार्य्यों में किया जायगा। इस दान के अतिरिक्त आपने चुरू और कलकत्ता की कई संस्थाओं को बहुत द्रव्य दान दिया है। आपके कोई पुत्र न होने से सेठ शोभाचन्दजी के पौत्र (सेठ तिलोकचन्दजी के पुत्र) बाबू हनुतमलजी आपके नाम पर दत्तक आये हैं। आप बड़े मिलनसार एवं उत्साही नवयुवक हैं। आप का इस समय मेसर्स "हरचन्दराय मुन्नालाल" और "मुन्नालाल हनुतमल" के नाम से बैङ्किग तथा किराया का स्वतन्त्र काम होता है। आप ओसवाल तेरापन्थी विद्यालय के सेक्रेटरी रह चुके हैं। वर्त्तमान में आप "ओसवाल नवयुवक समित" की ओर से व्यायामशाला के खास कार्य्यकर्त्ता हैं।

सेठ शोभाचन्दजी का परिवार—सेठ शोभाचन्दजी भी मिलनसार, समझदार तथा व्यापार कुशल सज्जन थे। आप अपने भाई के साथ व्यापारिक कामों से बड़ी कुशलता और तत्परता के साथ सहयोग प्रदान करते रहे। आपका धार्मिक कार्य्यों की ओर भी अच्छा लक्ष्य था। मगर कम वय में ही आपका स्वर्गवास होगया। आपके स्वर्गवास के पश्चात् आपकी धर्मपत्नी श्रीमती नौनाजी ने तेरापन्थी सम्प्रदाय में दीक्षा ग्रहण करली। आप इस समय विद्यमान है। आपके पुत्र तिलोकचन्दजी हैं।

सेठ तिलोकचन्दजी—आपका जन्म संवत् १९४० में हुआ। आप प्रारंभ से ही व्यापार कुशल बुद्धिमान तथा समझदार सज्जन हैं। आप इस समय कलकत्ता व थली प्रांत की ओसवाल समाज के प्रमुख कार्य्य कर्त्ताओं में से एक हैं। आप मारवाड़ी चेम्बर ऑफ कामर्स, मारवाड़ी एसोसिएशन, जैन श्वेताम्बर तेरापन्थी सभा, जैन श्वेताम्बर तेरापन्थी विद्यालय, विशुद्धानन्द सरस्वती विद्यालय व अस्पताल, मारवाड़ी रिलीफ सोसायटी, मारवाड़ी ट्रेड एसोसिएशन, चुरू पींजरापोल, ओसवाल सभा, ओसवाल नवयुवक समिति आदि कई संस्थाओं के सेक्रेटरी, उपसभापति व सभापति आदि पदों पर कई बार काम कर चुके हैं। प्रायः ओसवाल समाज की सभी सार्वजनिक सभाओं में आप पूर्ण रूप से सहायता देते तथा उसमें प्रमुख भाग लेते हैं। बिहार रिलीफ फण्ड में आपने आर्थिक सहायता पहुँचा कर बहुत से ओसवाल नवयुवकों को सेवा कार्य्य के लिये बिहार भेजने में बहुत कोशिश की थी। इसी प्रकार की अन्य सार्वजनिक सेवाओं में आप भाग लेते रहते हैं। आपके हनुतमलजी, हिम्मतमलजी, बच्छराजजी तथा हंसराजजी नामक चार पुत्र हैं। इनमें बाबू हनुतमलजी, सेठ मुन्नालालजी के नाम पर दत्तक गये हैं। शेष सब भाई मिलनसार सज्जन हैं। बाबू हिम्मतमलजी एवं बच्छराजजी व्यापार में भाग लेते हैं तथा हंसराजजी पढ़ते हैं। आपका इस समय कलकत्ता में 'हरचन्दराय शोभाचन्द' 'सुराना ब्रदर्स,' 'तिलोकचन्द हिम्मतमल' के नामों से जमीदारी, बैङ्किग, जूट बेलिंग व शिपिंग का काम होता है तथा जैपुरहाट (बोगड़ा) में आपका एक राइस मिल चल रहा है। यह फर्म कलकत्ते की ओसवाल समाज में प्रतिष्ठित समझी जाती हैं। इस फर्म की यहां पर बड़ी २ इमारतें बनी हुई हैं।



कुं० वच्छेराजजी सुराना, चूरू.



स्व० सेठ भैरोंदानजी सुराना, पडिहारा.



कुं० [illegible]मरानजी सुराना, चूरू.



कुं० सुमरमलजी बोथरा (रामलाल नथमल) सरदार श
(परिचय परिशिष्ट में)

सेठ रतनचंद जवरीमल सुराना, पड़िहारा

इस खानदान के लोगों का मूल निवास स्थान नागौर (मारवाड़) का था मगर बहुत वर्षों से इस परिवार के सेठ मलूकचन्दजी पड़िहारा में आकर बस गये थे। तभी से आपके वंशज वहीं पर निवास कर रहे हैं। आप खेती वगैरह का काम करते थे। आपके पुत्र रतनचन्दजी सबसे पहले देश से बंगाल आये और माहीगंज में अपनी फर्म स्थापित की। आप बड़े सज्जन तथा कुशल व्यापारी थे। आपके हरकचन्दजी तथा भेरोंदानजी नामक दो पुत्र हुए।

आप दोनों भाई भी देश से व्यापार निमित्त कलकत्ता आये और सबसे प्रथम सदाराम पूरनचंद भण्साली की कलकत्ता फर्म पर सर्विस की। इसके पश्चात् आपने सरदार शहर निवासी सेठ चुन्नीलाल जी बोथरा के साझे में मेसर्स चुन्नीलाल भेरोंदान के नाम से फर्म खोली। इस फर्म को जूट के व्यवसाय में अच्छा लाभ रहा। संवत् १९८८ तक इस फर्म पर आपका साझा रहा। तदनन्तर आप लोगों का पार्ट अलग अलग होगया। जिस समय उक्त फर्म साझे में चल रही थी उस समय इस खानदान की सं० १९८१ में रतनचन्द जवरीमल के नाम से कलकत्ता में एक स्वतन्त्र फर्म खोली गई थी। वर्त्तमान में आप लोग इसी नाम से स्वतन्त्र व्यापार करते हैं। सेठ भेरोंदानजी बड़े नामी, मिलनसार तथा प्रतिष्ठित सज्जन थे। आपका संवत् १९८८ में स्वर्गवास हुआ। सेठ हरकचन्दजी विद्यमान हैं। आपके धनसजजी नामक एक पुत्र हैं।

सेठ भेरोंदानजी के भँवरलालजी, जवरीलालजी तथा पन्नालालजी नामक तीन पुत्र हैं। इनमें से प्रथम दो भली प्रकार व्यापार सचालन करते है। तीसरे अभी पढ़ रहे हैं। आप लोग जैन तेरापन्थी सम्प्रदाय के मानने वाले सज्जन हैं। इस खानदान की कलकत्ता, आलमनगर (रगपुर), रहिया, शिव गंज, काली बाजार आदि स्थानों पर फर्में हैं जिन पर जूट का काम होता है। पड़िहारे में यह खानदान प्रतिष्ठित माना जाता है।

सेठ वच्छराज कन्हैयालाल सुराणा, बागलकोट

यह परिवार पी (मारवाड़) का निवासी स्थानकवासी जैन समाज का मानने वाला है। इस परिवार के पूर्वज सेठ नथमलजी सुराणा लगभग संवत् १९२० में स्वर्गवासी हुए।

सेठ वच्छराजजी सुराणा—सेठ नथमलजी के पुत्र वच्छराजजी सुराणा का जन्म संवत् १९२९ में हुआ। १३ साल की वय में आप बागलकोट आये, तथा यहाँ सर्विस की। संवत् १९५५ में आपने भागीदारी में रेशम का व्यापार आरम्भ किया। एवम् १९७० मे आपने अपनी स्वतन्त्र दुकान की। आपके हाथों से व्यापार और सम्मान की उन्नति हुई। इस समय आप बागलकोट के ५ सालों से आनरेरी मजिस्ट्रेट एवं २ सालों से म्युनिसिपल कौंसिलर हैं तथा वहाँ के ओसवाल समाज में नामांकित व्यक्ति हैं। धार्मिक कार्यों की ओर आपकी अच्छी रुचि है। आपके पुत्र कन्हैयालालजी का जन्म सम्वत् १९७० में हुआ। आप उत्साही युवक हैं, तथा व्यापार में भाग लेते हैं। आपके यहाँ बागलकोट तथा गुलेजगुड में "वच्छराज कन्हैयालाल" के नाम से रेशमी सूत, खण तथा रेशमी वस्त्रों का व्यापार होता है। गुलेज गुड में आपकी शाखा २५ सालों से है। इसी तरह बागलकोट और बीजापुर में "कन्हैयालाल सुराणा" के नाम से आढ़त व गल्ला का व्यापार होता है। इन सब स्थानों पर आपकी दुकान प्रतिष्ठा सम्पन्न मानी जाती है।

सेठ महासिंह राय मेघराज बहादुर (चोपड़ा कोठारी) का खानदान, मुर्शिदाबाद

इस परिवार के पूर्व पुरुषों ने जोधपुर और जेसलमेर राज्य में अच्छे २ काम कर दिखाए हैं। ऐसा कहा जाता है कि, ये लोग वहाँ के दीवानगी के पद को भी सुशोभित कर चुके हैं। इन्हीं की सन्ताने किसी कारणवश गैर सर नामक स्थान पर आकर रहने लगीं। कुछ वर्षों पश्चात् कुछ लोग तो बीकानेर चले गये एवम् सेठ रतनचन्दजी, महासिंहजी और आसकरनजी तीनों बंधु मुर्शिदाबाद आकर बसे। यहाँ आकर आप लोगों ने अपनी प्रतिभा के बल पर सम्वत् १८१८ में ग्वालपाड़ा में अपनी फर्म स्थापित की। इसमें सफलता मिलने पर क्रमशः गोहाटी और तेजपुर में भी अपनी शाखाएँ स्थापित कीं। उस समय इस फर्म पर बैंकिंग, रबर और चायबागान में रसद सप्लाय का काम होता था। सेठ महासिंहजी के पुत्र मेघराजजी हुए।

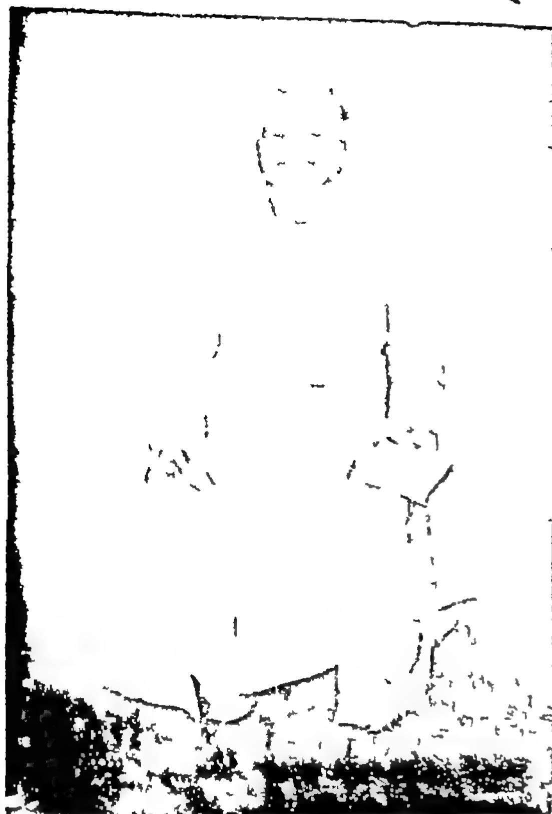
राय मेघराजजी बहादुर—आपके समय में इस फर्म की बहुत तरक्की हुई और बीसियों स्थानों पर इसकी शाखाएँ स्थापित की गई। आप बड़े व्यापार चतुर पुरुष थे। भारत सरकार ने आपके कार्यों से प्रसन्न होकर सन् १८६७ में आपको "राय बहादुर" के सम्मान से सम्मानित किया। आपका सन् १९०१ में स्वर्गवास हो गया। आपके पुत्र बाबू जालिमचन्दजी और प्रसन्नचन्दजी—सन् १९०७ में अलग २ हो गये।

सेठ जालिमचन्दजी का परिवार—सेठ जालिमचन्दजी भी बड़े धार्मिक और व्यवसाय-कुशल व्यक्ति थे। आपके पाँच पुत्र हुए जिनके नाम क्रमशः बा० धनपतसिंहजी, लक्ष्मीपतसिंहजी, खड्गसिंहजी, जसवन्तसिंहजी और दिलीपसिंहजी हैं। आप सब लोग बड़े मिलनसार और शिक्षित सज्जन हैं। वर्तमान में आप लोग उपरोक्त नाम से व्यवसाय कर रहे हैं। आपकी फर्में इस समय तेजपुर, ग्वालपाड़ा, गोहाटी, विश्वनाथ, बड़गाँव, उरांग, माणक्याचर, मुर्शिदाबाद, धुलियान, युटारोही, जीयागंज, सिराजगंज, बालीपाड़ा, पुरानाघाट, नयाघाट, आदमबाड़ी, बुड़ागांव, चुटैया, पामोई, टांगामारी, सांकूमाथा, गंभीरीघाट, कदमतल्ला जांजियां, फूलसुन्दरी, झड़ानी, बांसबाड़ी, सूर्सिया, बड़गाँव हाट, पावरी पारा, लावकुवा, गोरोहित इत्यादि स्थानों पर हैं। इन सब पर जमींदारी, जूट और बैंकिंग का व्यापार होता है।

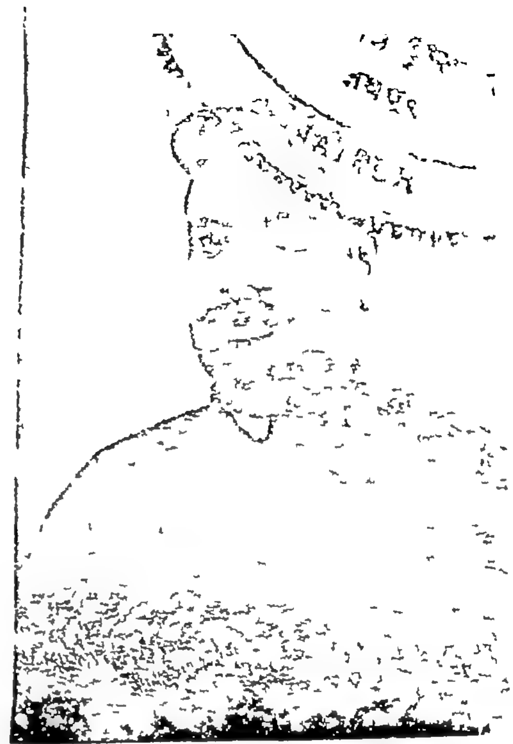
सेठ प्रसन्नचंदजी का परिवार—सेठ प्रसन्नचन्दजी ने अलग होने के बाद "प्रसन्नचन्द फतेसिंह" के नाम से व्यापार प्रारम्भ किया। आपका स्वर्गवास हो गया। इस समय आपके भंवरसिंहजी और फतेसिंहजी नामक दो पुत्र हैं, इनमें से भंवरसिंहजी का स्वर्गवास हो गया। आपके पुत्र कमलपतसिंहजी हैं। बाबू फतेसिंहजी मुर्शिदाबाद में व्यापार करते हैं। तथा कमलपतसिंहजी कलकत्ता में रहते हैं यह परिवार मन्दिर सम्प्रदाय का अनुयायी है।

चौपड़ा राजरूपजी का खानदान, गंगाशहर

इस परिवार के पूर्वजों का मूल निवास स्थान मण्डोवर का था। वहाँ से इस खानदान के पूर्व पुरुष का कापड़ेद, कुचौर तथा देराजसर में आकर बसे थे। तदनंतर सम्वत् १९६० में इस खानदान के वर्तमान पुरुष श्री छौगमलजी चौपड़ा गंगा शहर आकर बस गये तभी से आप लोग गंगाशहर में निवास कर रहे हैं। इस खानदान में सेठ राजरूपजी हुए। आपके रतनचन्दजी दुर्गदासजी, करमचन्दजी, हरकचंदजी सरदारमलजी तथा ताजमलजी नामक छः पुत्र हुए।



स्व० राय मेघराजजी कोठारी बहादुर, मुर्शिदाबाद



स्व० सेठ जालिमसिंहजी कोठारी, मुर्शिदाबाद





चौपड़ा करमचन्दजी का परिवार—चोपड़ा करमचन्दजी के पूसराजजी, लाभूरामजी तथा गुमानीरामजी नामक ३ पुत्र हुए। आप तीनों भाई देश से व्यापार निमित रंगपुर आये और माहीगंज (रंगपुर) में वहाँ की प्रसिद्ध फर्म मेसर्स मौजीराम इन्द्रचंद नाहठा के यहाँ सर्विस करते रहे। सेठ पूसराजजी बड़े बुद्धिमान तथा अच्छे व्यवस्थापक थे। आपको बंगला भाषा का भी अच्छा ज्ञान था। आप रंगपुर जिले के नामी व्यक्ति हो गये हैं। आप रंगपुर जिले की म्यु० क० के मेम्बर भी थे। आपका स्वदेश प्रेम भी बड़ा बढ़ा चढ़ा था। सन् १९०५ की बंगाल स्वदेश मुव्हमेंट में आपने अग्र भाग लिया था तथा तभी से आप स्वदेशी वस्त्रों का उपयोग किया करते थे। आप ही के समय में सम्वत् १९५० में छोगमल तिलोकचन्द चौपड़ा के नाम से माहीगंज से सेठ हरकचन्दजी के पुत्र बीदामलजी के साझे में स्वतंत्र फर्म स्थापित की गई। सम्वत् १९८१ में इस फर्म की एक शाखा कलकत्ता में भी खोली गई थी। सम्वत् १९८७ के पश्चात् सेठ बीदामलजी व पूसराजजी के परिवार वाले अलग २ हो गये। सेठ पूसराजजी के छोगमलजी तथा रावतमल जी नामक दो पुत्र हुए।

श्री छोगमलजी चौपड़ा—आपका जन्म सम्वत् १९४० में हुआ। आपने सन् १९०५ में बी० ए० तथा सन् १९०८ में एल० एल० बी० की परीक्षाएँ पास कीं। इस समय आप सारे परिवार में समझदार, योग्य तथा बुद्धिमान सज्जन हैं। आप कलकत्ते की ओसवाल समाज के नामी वकीलों में से एक हैं। आप मारवाड़ी चेम्बर आफ कामर्स, मारवाड़ी एसोसिएशन, ओसवाल सभा, ओसवाल नवयुवक समिति आदि कई संस्थाओं के सेक्रेटरी, मेम्बर तथा प्रधान कार्य्यकर्त्ता रहे हैं। आपके इस समय गोपीचन्दजी, भोजराज जी, मेघराजजी, अजीतमलजी तथा भूरामलजी नामक पाँच पुत्र हैं। इनमें गोपीचन्दजी ने सन् १९३३ में एल० एल० बी० पास किया है। शेष सब व्यापार में भाग लेते हैं।

सेठ लाभूरामजी के पुत्र मंगलचन्दजी लाहौर की फर्म पर बलौइज फायर इंश्युरंस कं० स्विट्जरलैण्ड की जनरल एजेन्सी का सब काम देखते हैं। चौपड़ा गुमानीरामजी के पुत्र इन्द्रचन्दजी, तिलोकचंदजी तथा प्रतापमलजी फर्म के काम में सहयोग लेते हैं। आप लोगों की एजंसी में उक्त इन्श्युरंस कंपनी की पालिसियाँ भी इश्यु की जाती हैं। आप लोगों की "छोगमल रावतमल" के नाम से कलकत्ता में भी एक फर्म है।

सेठ हरकचन्दजी का परिवार—सेठ हरकचन्दजी के दूदामलजी, रामसिंहजी, धनराजजी, बीदामल जी, जोरावरमलजी तथा गुमानीरामजी नामक छः पुत्र हुए। सेठ रामसिंहजी व बीदामलजी देश से रंगपुर तथा दिनाजपुर आये तथा वहाँ मौजीराम इन्द्रचन्द नाहटा के यहाँ सर्विस करते रहे। आप लोग देश से बंगाल प्रान्त में आते समय देहली तक का मार्ग पैदल तै करते हुए आये थे। आप यहाँ प्रतिष्ठित समझे जाते थे। आपके पश्चात् सेठ बीदामलजी उसी फर्म पर सर्विस करते रहे। तदनंतर आपने संवत् १९५० में माहीगंज में एक फर्म स्थापित की जिसका उल्लेख हम ऊपर कर चुके हैं। इसी समय दिनाजपुर में आपने तिलोकचन्द चौपड़ा के नाम से एक स्वतंत्र फर्म भी स्थापित की थी जिस पर, बैङ्किग वगैरह का व्यापार होता था। इस फर्म पर इस समय "तिलोकचंद सुगनमल" नाम पड़ता है। इसके अतिरिक्त आपकी तिलोकचन्द पृथ्वीराज के नाम से कलकत्ता में एक और फर्म है। सेठ बीदामलजी का संवत १९६६ स्वर्गवास हो गया है। आपके पुत्र तिलोकचन्दजी, फतेचन्दजी तथा सुगनचन्दजी हैं।

श्री तिलोकचन्दजी बड़े प्रतिष्ठित तथा व्यापार कुशल सज्जन थे। आपका जन्म संवत् १९४४ में हुआ था। आप दिनाजपुर के म्युनिसीपल कमिश्नर भी रह चुके हैं। दिनाजपुर फर्म का आपने बड़ी योग्यता से संचालन किया था। आपका संवत् १९८१ में स्वर्गवास हुआ। आपके पुत्र लालचन्दजी हैं।

श्री फतेचन्दजी—आपका जन्म संवत् १९५० में हुआ। आप चौपड़ा रामसिंहजी के नाम पर दत्तक गये थे लेकिन रामसिंहजी की धर्मपत्नी अत्यंत तपस्विनी थी अतः आप सब के शामिल ही रहते हैं। आप बड़े योग्य, समझदार तथा बुद्धिमान सज्जन हैं। इस समय आप इनकमटैक्स ऑफीसर हैं। आपके रतनचन्दजी, छगनमलजी तथा अमरचन्दजी नामक तीन पुत्र हैं। सुगनचन्दजी का जन्म संवत् १९५२ में हुआ। आप मिलनसार हैं तथा इस समय फर्म के सारे काम को संचालित कर रहे हैं। आपके पृथ्वीराजजी नामक एक पुत्र हैं।

गोठी परिवार, सरदारशहर

इस परिवार के लोग बहुत समय से सरदार शहर ही में निवास करते चले आ रहे हैं। इस परिवार में सबसे पहले सेठ चिमनीरामजी और आपके भाई चौथमलजी दिनाजपुर गये, एवम् वहाँ सर्विस की। पश्चात् वहाँ से आप लोग जलपाईगोड़ी चले गये। वहाँ जाकर आपने अपनी फर्म स्थापित की, एवम उसमें बहुत सफलता प्राप्त की। आप ही लोगों ने वहाँ बहुत सी जमींदारी भी खरीद की। सेठ टीकमचन्दजी के ६ पुत्रों में से चिमनीरामजी अविवाहित ही स्वर्गवासी हो गये। शेष के नाम क्रमशः जीवनदासजी, चौथमलजी, पांचीरामजी, वख्तावरमलजी और हीरालालजी था। आप लोगों का स्वर्गवास हो गया है। आप लोगों के पश्चात् इस फर्म का संचालन आपके पुत्रों ने किया। आप लोगों की जमींदारी बीकानेर-स्टेट, जलपाईगौड़ी, पबना एवम् रंगपुर जिले में हैं। यह जमींदारी अलग २ विभाजित है। संवत १९९१ से आप लोगों का व्यवसाय अलग २ हो गया। इस समय इस परिवार की चार शाखाएँ हो गई जो भिन्न २ नाम से अपना व्यवसाय करती है। जिसका परिचय इस प्रकार है।

चौथमल जैचन्दलाल—इस फर्म के मालिक सेठ बिरदीचन्दजी गोठी और आपके पुत्र मदनचन्दजी और जयचन्दलालजी हैं। सेठ बिरदीचन्दजी बड़े प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं।

गिरधारीमल रामलाल—इस फर्म के वर्तमान संचालक सेठ रामलालजी गोठी हैं। आपको जूट के व्यापार की अच्छी जानकारी है। अपनी कलकत्ते की सम्मिलित फर्म की सारी उन्नति का श्रेय आप ही को है। आपके चम्पालालजी, छगनलालजी, नेमीचन्दजी, हनुमानमलजी और रतनचन्दजी नामक पांच पुत्र हैं।

गिरधारीमल अभयचन्द—इस फर्म के मालिक सेठ गिरधारीमलजी के पुत्र अभयचन्दजी और सुमेरमलजी हैं। आप दोनों ही मिलनसार और उत्साही नवयुवक हैं।

सरदारमल शुभकरन—इस फर्म के मालिक सेठ सरदारमलजी के वंशज हैं।

जौहरी लाभचन्दजी सेठ (राकां) का खानदान, कलकत्ता

इस खानदान के पूर्वजों का मूल निवास स्थान जयपुर का है। यहाँ पर सेठ अमीचन्दजी बड़े नामी व्यक्ति हो गये हैं। आपके कल्लूमलजी, धनसुखदासजी, हाबूलालजी तथा चन्द्रभानजी नामक चार

पुत्र हुए। इनमें से प्रथम दो भाइयों ने संवत् १८०० के करीब मिर्जापुर जा कर अपनी व्यापार कुशलता और होशियारी से रुई तथा गल्ले के व्यवसाय में अच्छी सफलता प्राप्त की। आप लोगों का स्वर्गवास हो गया है। सेठ कल्लूमलजी के नथमलजी नामक एक पुत्र हुए जिनका युवावस्था में ही देहावसान हो गया। आपके नाम पर अजमेर से सेठ लाभचन्दजी गेलड़ा दत्तक लिये गये।

सेठ लाभचन्दजी—आप इस परिवार में बड़े नामांकित व्यक्ति हो गये हैं। आप बड़े बुद्धिमान व्यापार चतुर तथा प्रतिष्ठित पुरुष थे। आपने करीब ८० वर्ष पूर्व कलकत्ते में जवाहरात का व्यापार किया तथा सेठ मोतीचन्दजी नखत के साझे में करीब ३५ वर्षों तक "लाभचन्द मोतीचंद" के नाम से जवाहरात का सफलता पूर्वक व्यवसाय किया। यह फर्म बड़ी प्रतिष्ठित और कोर्ट जुएलर रही तथा वाइसराय आदि कई उच्च पदाधिकारियों से अपाइन्टमेंट भी मिले थे। सन् १९२६ में उक्त फर्म के दोनों पार्टनर अलग २ हो गये। तभी से सेठ लाभचन्दजी के पुत्र लाभचन्द सेठ के नाम से स्वतंत्र जवाहरात का व्यापार कर रहे हैं।

इस फर्मके वर्तमान संचालक लाभचन्दजी के पुत्र सौभागचंदजी, श्रीचन्दजी, अभयचन्दजी, लखमीचन्दजी, हरकचन्दजी, विनयचन्दजी एवं कीरतचन्दजी हैं। इनमें प्रथम चार व्यवसाय का संचालन करते हैं। आप लोग मिलनसार तथा शिक्षित सज्जन हैं। शेष तीन भाई पढ़ते हैं। आप लोगों का आफीस इस समय ७ ए. लिन्डसे स्ट्रीट में है जहाँ पर जवाहरात का व्यवसाय होता है। आप लोगों की कलकत्ते में बहुत सी स्थायी सम्पत्ति भी है। आपके पिताजी द्वारा स्थापित किया हुआ। श्री 'लाभचन्द मोतीचन्द' जैन फ्री प्रायमरी स्कूल कलकत्ते में सुचारुरूप से चल रहा है। इसके लिये लाभचन्द मोतीचन्द नामक फर्म से ८००००) का एक ट्रस्ट भी कायम किया गया था।

बच्छावत मेहता माणकचन्द मिलापचन्द का खानदान, जयपुर

इस खानदान के पूर्वज मेहता भेरोंदासजी सं० १८२६ में जोधपुर से जयपुर आये। इनके सवाईरामजी, सालिगरामजी तथा शेरकरणजी नामक तीन पुत्र हुए। इनको "मौजे मानपुर टीला" (चाटसू तहसील) नामक गांव जागीर में मिला जो इस समय तक सवाईरामजी की संतानों के पास मौजूद है। सवाईरामजी के पुत्र उदयचन्दजी तथा साहिबचन्दजी हुए। उदयचन्दजी के विजयचन्दजी, माणकचन्दजी तथा मिलापचन्दजी नामक तीन पुत्र हुए। इनमें माणिकचन्दजी, साहिबचन्दजी के नाम पर दत्तक गये। मेहता उदयचन्दजी राज का काम तथा साहिबचन्दजी गीजगढ़ ठिकाने के कामदार और महारानी तंवरजी व चम्पावतजी के कामदार रहे। इसी प्रकार माणकचंदजी और मिलापचंदजी शिवगढ़ ठिकाने के कामदार रहे। मेहता मिलापचंदजी के पुत्र रामचन्द्रजी तथा माणकचंदजी के लक्ष्मीचंदजी, अखेचंदजी, नेमीचंदजी, गोपीचंदजी तथा भागचंदजी नामक पांच पुत्र हुए। इनमें अखेचन्दजी विजयचन्दजी के नाम पर तथा गोपीचन्दजी अन्यत्र दत्तक गये। मेहता लक्ष्मीचन्दजी तथा अखेचंदजी ने गीजगढ़ ठिकाने का काम किया। इन दोनों का संवत् १९७८ में स्वर्गवास हुआ।

वर्तमान में इस कुटुम्ब में मेहता नेमीचंदजी, अखेचंदजी के पुत्र मंगलचंदजी बी० ए०, मिलापचन्दजी के पुत्र रामचन्द्रजी तथा लक्ष्मीचन्दजी के पुत्र जोगीचंदजी, केवलचन्दजी, उमरावचन्दजी, उत्तमचंदजी और कानचन्दजी विद्यमान हैं। मेहता मंगलचन्दजी जयपुर में २७।२८ सालों तक सर्वे सुपरिन्टेन्डेन्ट

रहे। यहाँ से पेंशन होने के बाद आप वर्तमान में सीकर स्टेट में सेटलमेंट ऑफीसर हैं। आपके गोपालसिंह जी, हरकचंदजी तथा सुखचन्दजी नामक तीन पुत्र हैं। इनमें गोपालसिंहजी तो उदयपुर दत्तक गये हैं। शेष दोनों भ्राता घर का कारबार सम्हालते हैं। मेहता उमरावचन्दजी शिवगढ़ ठिकाने के कामदार हैं।

इसी प्रकार शालिगरामजी के प्रपौत्र रूपचन्दजी के पुत्र सरूपचंदजी बालक हैं। इनके कुटुम्ब में भी गीजगढ़ ठिकाने का काम रहा। मेहता शेरकरणजी के पुत्र चौथमलजी जनानी ड्योढ़ी के तहसीलदार रहे। इनके पुत्र गोपीचन्दजी विद्यमान हैं। मेहता भागचन्दजी के पुत्र कानचंदजी सेटलमेंट डिपार्टमेंट में तथा नेमीचंदजी के पुत्र प्रभूचन्दजी इम्पीरियल बैंक में खजांची हैं। मेहता जोगीचन्दजी के पौत्र (ज्ञानचन्दजी के पुत्र) गुमानचन्दजी एव केवलचन्दजी के पौत्र (उत्तमचन्दजी के पुत्र) अमरचन्दजी हैं।

श्री लक्ष्मीलालजी बोथरा, उटकमंड

लक्ष्मीलालजी बोथरा के दादा शिवलालजी तथा पिता केवलचंदजी खिचंद (मारवाड़) में ही निवास करते रहे। केवलचन्दजी संवत् १९५५ में स्वर्गवासी हुए। लक्ष्मीलालजी का जन्म संवत् १९५२ में हुआ। आप संवत् १९६५ में नीलगिरी आये, तथा मिश्रीमलजी वेद फलोदी वालों की भागीदारी में व्यापार आरम्भ किया। इस समय आप ऊटकमंड में "जेठमल मूलचंद एण्ड कम्पनी" नामक फर्म पर बैंकिंग फेंसी गुड्स एण्ड जनरल ड्रापर्स बिजिनेस करते हैं। एवम् यहाँ के व्यापारिक समाज में यह फर्म अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है। श्री लक्ष्मीलालजी सज्जन व्यक्ति हैं। आपके हाथों से व्यापार को तरक्की मिली है। आपके पुत्र भोमराजजी कामकाज में भाग लेते हैं, तथा रामलालजी और भँवरलालजी पढ़ते हैं।

कोठारी जवाहरचन्दजी दूगड़ का खानदान, नामली

इस परिवार के पूर्वज अमरसिंहजी दूगड़ ने नागोर से जालोर में अपना निवास बनाया। इनके पश्चात् महेशजी, जेवंतजी, भेरूसिंहजी और पंचाननजी हुए। पंचाननजी ने अनेकों राज्यकीय कार्य्य किये। कहा जाता है कि इनको "रावराजा बहादुर की पदवी" तथा १२ गाँव जागीर में मिले थे और संवत् १७६५ में इन्हें सोने की सांट, हाथी, कड़ा. मोती और पालकी सिरोपाव इनायत हुआ। सम्वत् १७७१ में बिठोर नामक गाँव की एक लड़ाई में आप काम आये। आपके पुत्र बल्लूजी, सोनगरा राजपूत नायक के साथ मालवा की ओर गये, और उनके साथ नामली में आबाद हुए। तथा वहाँ कोठार और कामदारे का काम करने के कारण "कोठारी" कहलाये। बल्लूजी के पश्चात् क्रमशः जीवराजजी और सूर्यमलजी हुए। सूर्य्यमल जी के स्वर्गवासी होने के समय उनके पुत्र गुलाबचन्दजी, जवाहरचन्दजी तथा हीराचन्दजी छोटे थे। कोठारी हीराचन्दजी ऊँचे दर्जे के कवि थे, कवित्व शक्ति के कारण कई दरबारों में आपको उच्च स्थान मिला था।

कोठारी जवाहरचन्दजी—आपका जन्म सम्वत् १८८१ में हुआ। आप बाल्य काल से ही होनहार व्यक्ति थे। नामली ठाकुर के छोटे भ्राता बख्तावरसिंहजी के साथ आप रतलाम दरबार बलवन्तसिंहजी के पास आया जाया करते थे। जब महाराजा बलवन्तसिंहजी के पुत्र भेरूसिंहजी राजगद्दी पर बैठे, तब उन्होंने कोठारी जवाहरचन्दजी को दीवान का सम्मान दिया। तथा इनको कुछ जागीर भी इनायत की। सम्वत् १९२१ में महाराजा के स्वर्गवासी हो जाने पर आप वापस नामली चले गये। सम्वत् १९७१ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके नाम पर कोठारी हीराचन्दजी के बड़े पुत्र गुमानसिंहजी दत्तक आये। आपके

पुत्र दुल्हेसिंहजी तथा वेरीसालसिंहजी विद्यमान हैं। आप दोनों सज्जनों ने जोधपुर में ही शिक्षा पाई। इस समय कोठारी दुलहसिंहजी जोधपुर सायर में कस्टम आफीसर हैं। और कोठारी वेरीसालसिंहजी जोधपुर स्टेट के असिस्टेंट स्टेट आडीटर हैं। आप जोधपुर के शिक्षित समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त व्यक्ति हैं। कोठारी दुल्हेसिंहजी के पुत्र कुँवर दौलतसिंहजी, देवीसिंहजी, सज्जनसिंहजी तथा रघुवीरसिंहजी हैं। इसी प्रकार कोठारी वेरीसालसिंहजी के पुत्र कुंवर कुशलसिंहजी, कोमलसिंहजी, केशवसिंहजी तथा कंचनसिंहजी हैं। कुशलसिंहजी के पुत्र भंवर स्वतंत्र कुमार हैं।

इसी तरह इस परिवार में गुलाबचन्दजी कोठारी के पुत्र राजसिंहजी और पौत्र उम्मेदसिंहजी तथा मनोहरसिंहजी हुए। मनोहरसिंहजी के पुत्र धर्मसिंहजी हैं। कोठारी हीराचन्दजी के खुमानसिंहजी, निधराजसिंहजी, सादूलसिहजी और दलेलसिंहजी हुए। तथा दलेलसिंहजी के तजेराजसिंहजी, नगेन्द्रसिंहजी, चन्द्रवीरसिंहजी और सूर्यवीरसिंहजी नामक पुत्र हुए।

सिंघी (बावेल) खानदान, शाहपुरा (मेवाड़)

इस परिवार के पूर्वज सेठ झांझणजी बावेल "पुर" में निवास करते थे। संवत् १५६५ में आपने एक संघ निकाला, अतः इनका परिवार सिंघी कहलाया। आपकी सोलहवीं पुश्त में देवकरणजी हुए। आप "पुर" से शाहपुरा आये। आपके साथ आपकी धर्मपत्नी लखमादेवीजी संवत् १७६९ में सती हुईं। इनकी तीसरी पुश्त में नानगरामजी हुए। आप बड़े वीर और पराक्रमी पुरुष हुए। कहाजाता है कि संवत् १८२५ में उदयपुर की ओर से उज्जैन में सिंधिया फौज से युद्ध करते हुए आप काम आये थे। आपको शाहपुरा दरबार ने ताजीम दी थी। आपके पुत्र चतुरभुजजी, चन्द्रभानजी, इन्द्रभानजी और वर्द्धभानजी हुए।

सिंघी चतुरभुजजी का परिवार—आप भी अपने पिताजी की तरह प्रतिष्टित हुए। आपको उदयपुर महाराणाजी ने शाहपुरा दरबार से १५०० बीघा जमीन जागीर में दिलाई। आपने अपनी जागीरी में "आड़" नामक गाँव बसाया, जो आज "सिंघीजी के खेड़े" के नाम से बोला जाता है। आप शाहपुरा के कामदार थे। उस समय आपको मोतियों के आखे चढ़ाये थे। आपके गिरधारीलालजी, समरथसिंहजी, सूरजमलजी, अरीमलजी, गाढ़मलजी और जीतमलजी नामक ६ पुत्र हुए। इनमें सिंघी समरथसिंहजी बड़े सीधे व्यक्ति थे। स्थिति की कमजोरी के कारण आपने पुश्तैनी "ताजीम" विनय पूर्वक वापस करदी। इनके पुत्र महतावसिंहजी के सवाईसिंहजी और केसरीसिंहजी नामक २ पुत्र थे। सवाईसिंहजी ने कस्टम तथा तहसीलदारी का काम बड़ी होशियारी से किया। संवत् १९०७ में आप स्वर्गवासी हुए। केसरीसिंहजी के पुत्र इन्द्रसिंहजी, सोभागसिंहजी और सुजानसिंहजी हुए। इनमें इन्द्रसिंहजी, सवाईसिंहजी के नाम पर दत्तक गये। आप स्टेट ट्रेझरर और खासा खजाना के आफीसर थे। आपके नाम पर आपके भतीजे (सोभागसिंहजी) के पुत्र मदनसिंहजी दत्तक आये। इस समय आप शाहपुरा में निवास करते हैं।

सिंघी सुजानसिंहजी का जन्म संवत् १९२३ में हुआ। आप राजाधिराज उम्मेदसिंहजी के हुजूर पदे में हाउस होल्ड आफीसर थे। इस समय आप स्टेट के रेवेन्यूमेम्बर हैं। आपके पास सिंघीजी का खेड़ा तो जागीर में है ही। इसके अलावा दरबार ने आपको १ हजार की रेख की जागीर इनायत की है।

आपके पुत्र चन्दनसिंहजी फौजदारी सरिश्तेदार हैं, एवं फतेसिंहजी ने इंजनियरिंग परीक्षा पास की है। आप दोनों सज्जन व्यक्ति हैं। चन्दनसिंहजी के पुत्र प्रतापसिंहजी पढ़ते हैं।

सिंघी इन्द्रभानुजी का परिवार—आपके बदनमलजी तथा बाघमलजी नामक २ पुत्र हुए। सिंघी बाघमलजी इस परिवार में बहुत प्रतापी पुरुष हुए। आपका जन्म सम्वत् १८४३ में हुआ था। आपने महाराजा जगतसिंहजी के बाल्यकाल में सम्वत् १८९७ से १९०४ तक कामदारी का काम बड़ी होशियारी और ईमानदारी से किया। आपके लिये कर्नल डिक्सन ने लिखा था, जिसका आशय यह है कि सब रैयत राज के कामदारे से खुश और राजी है। इलाके का बन्दोबस्त दुरुस्त और खालसे के गाँव आबाद हैं।........ता० १७ फरवरी सन् १८४६ ई०। आगरा के लेफ्टिनेंट गवर्नर ने आपके लिये लिखा कि ......"सिंघी बागमल की कामदारी से राज्य बहुत आबाद हुआ" ता० १८ अगस्त सन् १८४५ ई०। उदयपुर के महाराणा स्वरूपसिंहजी ने सिंघी बाघमलजी को एक रुक्के में लिखा था कि ....राजाधिराज होश संभालें, जब तक इसी श्याम धर्मी से बन्दगी करना"... ..संवत् १९०२ मगसर सुदी १५। आपने परिश्रम करके शाहपुरा स्टेट की खिराज १० हजार करवाई। आपको उदयपुर महाराणा तथा शाहपुरा दरबार ने खिल्लत भेंटे कर सम्मानित किया। आपने अपनी बहुत सी स्थाई सम्पत्ति व्यावर में बनाई। पुष्कर की घाटी में भी आपने अच्छी इमदाद दी थी। आपने बूवल बाड़ी के मीणों पर राणाजी की ओर से फौज लेकर चढ़ाई की, और उनका उपद्रव शांत किया। आपको "बांगूदार" नामक एक गाँव भी जागीर में मिला था। आपने शाहपुरा में रिखबदेव स्वामी का मन्दिर बनवाया। इस प्रकार प्रतिष्ठा मय जीवन बिता कर सं० १९०५ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र केसरीसिंहजी २२ साल उम्र में सं० १९२१ में स्वर्गवासी हुए। इनके पुत्र सिंघी कृष्णसिंहजी हुए

सिंघी कृष्णसिंहजी का जन्म संवत् १९१६ में हुआ। आपको पठन पाठन का बहुत शौक था। संवत् १९५६ के अकाल में आपने शाहपुरा की ग़रीब जनता की अच्छी सहायता की थी। संवत् १९६० में आपने अपना निवास गोवर्द्धन में भी बनवाया। यहाँ आपने एक अच्छी धर्मशाला बनवाई। एवं मथुरा जिले के २ ग्राम एवं १ लाख ४० हज़ार रुपयों के प्रामिज़री नोट धर्मार्थ दिये, इनकी आय से, औषधालय, अनाथालय, सदावृत, विधवाओं की सहायता और छात्रवृत्तियाँ दिये जाने की व्यवस्था की तथा इसका प्रबन्ध एक ट्रस्ट के जिम्मे कर उसकी सुपरवीज़न लोकल गवर्नमेंट के जिम्मे की। आपने शाहपुरा में रघुनाथजी का मन्दिर बनाया। संवत् १९७९ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र फतेसिंहजी बाल्यावस्था में ही गुजर गये थे। इनके नाम पर २० हजार की रकम का "साधु और जाति सेवा" के अर्थ प्राइवेट ट्रस्ट किया गया। कृष्णसिंहजी के यहाँ सज्जनसिंहजी बड़ी सादड़ी से दस साल की आयु में संवत् १९५८ में दत्तक आये।

सिंघी सज्जनसिंहजी शाहपुरा तथा गोवर्द्धन के प्रतिष्ठित सज्जन हैं। आप गोवर्द्धन में डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के मेम्बर, लोकल बोर्ड के चेयरमैन और डिस्ट्रीक्ट एडवायजरी एक्साइज कमेटी के मेम्बर हैं। आपने पिताजी द्वारा स्थापित धार्मिक व सहायता के कार्य्यों को आप भली प्रकार संचालित करते हैं। आप वैष्णव मतानुयायी हैं। शाहपुरा की गोशाला के स्थापन में आपने परिश्रम उठाया है। इसी साल आपने ओसवाल सम्मेलन अजमेर के सभापति का आसन सुशोभित किया था। आप गोवर्द्धन के आनरेरी



श्री सज्जनसिंहजी सिंघी, शाहपुरा.



सेठ नेमीचन्दजी सावणसुखा (गणेशदास जुहारमल)



बाबू भूपेन्द्रसिंहजी S/o बा० धनपतसिंहजी



बा० अरिदमनसिंहजी S/o बा० धनपतसिंहजी

मजिस्ट्रेट एवं लोकप्रिय महानुभाव हैं। उदयपुर दरबार ने आपको "ताजीम" बख्शी है। आपके पुत्र कुँवर गोविन्दसिंहजी इण्टर में पढ़ रहे हैं। इनसे छोटे कुँवर मुकुन्दसिंहजी भी पढते हैं। आपका परिवार शाहपुरा तथा गोवर्द्धन में बहुत प्रतिष्ठा सम्पन्न माना जाता है। आपके यहाँ जमीदारी और बैंकिंग का काम होता है।

सुजानगढ़ का सिंघी परिवार

इस परिवार के पूर्व पुरुष जोधपुर से राव बीकाजी के साथ इधर आये थे। उन्हीं की सन्तानें चुरू, छापर वगैरह स्थानों में वास करती रहीं। चुरू में राजरूपजी हुए। आपके ३ पुत्र हुए। इनमें प्रथम मोतीसिंहजी चुरू ही रहे। दूसरे कन्हीरामजी हरासर नाम के स्थान पर चले आये। तीसरे करनीदानजी निः संतान स्वर्गवासी हो गये। कहा जाता है कि कन्हीरामजी तत्कालीन हरासर के ठाकुर हरोजी के कामदार रहे थे। किसी कारणवश अनबन हो जाने के कारण आप सम्वत् १८८९ के करीब सुजानगढ़ आकर बस गये। जब आप हरासर में थे उस समय वहाँ आपने एक तालाब और कुआ बनवाया जो आज भी विद्यमान है। आपके पाँच पुत्र हिम्मतसिंहजी, शेरमलजी, गोविन्दरामजी, पूर्णचन्दजी और अनोपचन्दजी थे। इन सब भाइयों में पूर्णचन्दजी बड़े प्रतिभावान व्यक्ति हुए। आपने मुर्शिदाबाद आकर वहाँ की तत्कालीन फर्म सेठ केशोदास सिताबचन्द के यहाँ सर्विस की। पश्चात् आप अपनी होशियारी से उक्त फर्म के मुनीम हो गये। आपके द्वारा जाति के कई व्यक्तियों का बहुत लाभ हुआ। आपने अपने देश के कई व्यक्तियों को रोज़गार से लगवाया था। हिम्मतमलजी भी बड़े न्यायी और उदार सज्जन थे। सम्वत् १९०५ में आप लोग अलग २ हो गये। सेठ हिम्मतमलजी के परिवार में चेतनदासजी हुए। आपके इस समय बींजराजजी और रावतमलजी नामक दो पुत्र हैं। शेरमलजी के कुशलचन्दजी, ज्ञानमलजी और लालचन्दजी नामक ३ पुत्र हुए। आप सब अलग अलग हो गये और आपके परिवार वाले इस समय स्वतंत्र व्यापार कर रहे हैं।

सेठ कुशलचन्दजी का परिवार—सेठ कुशलचन्दजी के तीन पुत्र हुए, जिनके नाम क्रमशः जेसराजजी, गिरधारीलालजी और पनेचंदजी हैं। सेठ जेसराजजी शिक्षित और अंग्रेजी पढ़े लिखे सज्जन थे। आपने अपने भाइयों के शामलात में केरोसिन तेल का व्यापार किया। इसमें आपको अच्छी सफ़लता मिली। इसके बाद आप लोग जूट बेलिंग का काम करने लगे। इसमें भी बहुत सफ़लता रही। आप मन्दिर सम्प्रदाय के अनुयायी थे। आपने अपने जीवन में बहुत सम्पत्ति उपार्जित की। आपका स्वर्गवास हो गया। आपके पुत्र बछराजजी इस समय विद्यमान हैं। आप मिलनसार सज्जन हैं और कलकत्ता में १६१।१ हरिसन रोड में जूट का व्यापार करते हैं। आपके हंसराजजी, धनराजजी और मोहनलालजी नामक तीन पुत्र हैं।

सेठ गिरधारीमलजी अपने चाचा सेठ लालचन्दजी के नाम पर दत्तक चले गये। आपके इन्द्रचन्दजी नामक एक पुत्र हुए। इस समय आपके भँवरलालजी और नथमलजी नामक दो पुत्र विद्यमान हैं।

सेठ पनेचन्दजी भी अपने बड़े भ्राता की भाँति कुशल व्यापारी हैं। आपने अपनी शामलात वाली फर्म पर जूट के व्यापार में बड़ी उथल पथल पैदा कर लाखों रुपये अपने हाथों से कमाये थे। अपनी फर्म के नियमानुसार धर्मादे की रकम में से आप लोगों ने सुजानगढ़ में एक सुन्दर मन्दिर का निर्माण करवाया। आप इस समय बीकानेर स्टेट कौंसिल के मेम्बर हैं। आपको दरबार से कैफ़ियत की इज्जत

प्रदान है। सुजानगढ़ की जनता में आपके प्रति आदर के भाव हैं। इस समय आप नं० २० काटनस्ट्रीट में जूट का व्यापार करते हैं। आपके पुत्र चैनरूपजी और सोहनलालजी व्यापार में सहयोग देते हैं।

सेठ ज्ञानचन्दजी का परिवार—सेठ ज्ञानचन्दजी गोहाटी में तत्कालीन फर्म मेसर्स जोधराज जैसराज के यहाँ मेनेजरी का काम देखते थे। आपके तीन पुत्र भैरोंदानजी, जीतमलजी और प्रेमचन्दजी हुए। भैरोंदानजी कम वय ही में स्वर्गवासी हो गये। शेष दोनों भाई और इनके पुत्र वगैरह संवत १९८७ तक जीतमल प्रेमचन्द के नाम से जूट का अच्छा व्यापार करते रहे। तथा आजकल अलग २ स्वतंत्र व्यापार कर रहे हैं।

सेठ जीतमलजी प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति थे। आपने अपने समय में व्यापार में बहुत उन्नति की। आपका स्वर्गवास हो गया। आपके पुत्र मालचन्दजी, अमीचन्दजी, हुलाशचन्दजी और भिखमचन्दजी हैं। आप लोग सिरसावाड़ी में "जीतमल जौहरीमल" के नाम से जूट का व्यापार करते हैं।

सेठ प्रेमचन्दजी का जन्म संवत् १९३९ है। आप को जूट के व्यापार का अच्छा अनुभव है। आपने अपनी साझेवाली फर्म के काम को बहुत बढ़ाया था। साथ ही कई स्थानों पर उसकी शाखायें भी स्थापित की थी। इस समय आप प्रेमचन्द माणकचन्द के नाम से ११५ चीना बाजार में जूट का अच्छा व्यापार करते है। आप मिलनसार संतोषी और समझदार सज्जन है। आपकी यहाँ और सुजानगढ़ में अच्छी प्रतिष्ठा है। आपके इस समय माणकचन्दजी, धनराजजी और अमोलकचन्दजी नामक तीन पुत्र हैं। इनमें से बा० माणकचन्दजी फर्म के कार्य्य का संचालन करते हैं। बाबू धनराजजी बी० काम थर्ड ईयर में पढ़ रहे हैं। आप लोगों का व्यापार कलकत्ता के अलावा ईसरगंज, जमालपुर (मैमनसिंह) में भी होता है। आपकी ओर से जमालपुर में जीतमल प्रेमचन्द रोड के नाम से एक पक्का रोड बनवाया हुआ है तथा वहाँ के स्कूल के बोर्डिंग की इमारत भी आप ही ने बनवाई है। ओसवाल विद्यालय में भी आपकी ओर से अच्छी सहायता प्रदान की गई है।

सेठ भिखनचन्दजी मालचन्दजी सिंघी, सरदारशहर

इस खानदान के लोग जोगड गौत्र के हैं। मगर संघ निकालने के कारण सिंघी कहलाते है। आप लोगों का पूर्व निवास स्थान नाथूसर नामक ग्राम था। मगर जब कि सरदारशहर बसने लगा आपके पूर्वज भी यहीं आ गये। वहाँ सेठ दुरंगदास के गुलाबचन्दजी नामक एक पुत्र हुए। सेठ गुलाबचन्दजी जब कि १५ वर्ष के थे सरदार शहर वाले सेठ चैनरूपजी के साथ कलकत्ता गये। पश्चात् धीरे २ अपनी बुद्धिमानी, इमादारी तथा होशियारी से आप इस फर्म के मुनीम हो गये। इस फर्म पर आपने करीब ५० वर्ष तक काम किया। इसके पश्चात् संवत् १९६६ में आपने नौकरी छोड़दी एवम अपने पुत्र भीखनचन्द मालचन्द के नाम से स्वतंत्र फर्म खोली तथा कपड़े का व्यापार प्रारंभ किया। इस फर्म पर डायरेक्टर विलायत से इम्पोर्ट का काम भी प्रारंभ किया गया। इस कार्य में आपको बहुत सफलता रही। आपका संवत् १९८३ में स्वर्गवास हो गया। आपके तीन पुत्र हैं जिनके नाम करनीदानजी, भीखनचन्दजी एवम् मालचन्दजी हैं। आप तीनों सज्जन और मिलनसार हैं। करनीदानजी के भूरामलजी और रामलालजी नामक पुत्र हैं। आप लोग भी व्यापार संचालन करते हैं। भूरामलजी के बुधमलजी नामक



स्व०, लाला फग्गूमलजी, अमृतसर.



लाला भगवानदासजी, अमृतसर



श्रीयुत पन्नालालजी जैन, अमृतसर



श्रीयुत विजयकुमारजी जैन, अमृतसर

एक पुत्र हैं। भीखनचन्दजी के पुत्र जयचन्दलालजी और चम्पालालजी है। तथा जयचन्दलालजी के पुत्र शुभकरनजी और मालचन्दजी के पुत्र मदनचन्दजी हैं।

आप लोगों का व्यापार कलकत्ता में ३९ आर्मेनियनस्ट्रीट होता है। इसी स्थान पर "गुलाबचन्द सिंघी" के नाम से विलायत से तथा उपरोक्त नाम से जापान से डायरेक्ट कपड़े का इम्पोर्ट व्यापार होता है। इसके अतिरिक्त "जयचन्दलाल रामलाल" के नाम से मनोहरदास कटला में स्वदेशी कपड़े का व्यापार होता है। आपका परिवार तेरापंथी संप्रदाय का अनुयायी है।

लाला फग्गूमल भगवानदास बावेल, अमृतसर

यह परिवार लगभग १५० वर्ष पूर्व मारवाड़ से आकर अमृतसर में आबाद हुआ। यह कुटुम्ब श्वेताम्बर जैन स्थानकवासी सम्प्रदाय का मानने वाला है। इस परिवार के पूर्वज लाला धनपतराय जी के पुत्र लाला मुकुन्दामलजी और नंदामलजी हुए। लाला मुकुन्दामलजी बसाती का व्यापार करते थे, तथा बड़े धार्मिक प्रवृत्ति के पुरुष थे। संवत् १९६१ में ७० साल की आयु में आप स्वर्गवासी हुए। आपके लाला कसूरियामलजी और लाला फग्गूमलजी नामक २ पुत्र हुए। लाला नंदामलजी भी प्रतिष्ठित व्यक्ति हो गये हैं। संवत् १९५९ में आप निसंतान स्वर्गवासी हुए। लाला कसूरियामलजी सन् १९१२ में स्वर्गवासी हुए। इनके पुत्र लाला दीनानाथजी तथा लाला अमरनाथजी का भी स्वर्गवास हो गया है।

लाला फग्गूमलजी—आपका जन्म संवत् १९१७ में हुआ। आप वयो वृद्ध और धार्मिक पुरुष हैं। आप उन भाग्यवानों में हैं, जो अपनी चौथी पीढ़ी को अपने सम्मुख देख रहे हैं। आप के पुत्र लाला भगवानदासजी तथा लाला जंगीमलजी हुए।

लाला भगवानदासजी—आपका जन्म संवत् १९४० में हुआ। आप अमृतसर के ओसवाल समाज में अच्छे प्रतिष्ठित सज्जन हैं। दान धर्म के कामों में भी आप अच्छा सहयोग लेते हैं। इस समय आप एस० एस० जैन सभा अमृतसर के खजांची हैं। आपके पुत्र लाला पन्नालालजी, विलायतीरामजी तथा विजयकुमारजी हैं। आपकी कन्या श्रीमती शांतिदेवी ने गत वर्ष "हिंदीरत्न" की परीक्षा पास की है। लाला पन्नालालजी का जन्म १९६१ में हुआ। आप व्यापारकुशल तथा उत्साही युवक हैं। आपके हाथों से व्यापार की बहुत उन्नति हुई है। धार्मिक कामों मे आपकी अच्छी रुचि है। पूज्य सोहनलालजी महाराज के नाम से स्थापित जैन कन्या पाठशाला के आप सभापति हैं। आपके पुत्र श्री राजकुमारजी पढ़ते हैं। लाला विलायतीरामजी भी व्यापार में भाग लेते हैं तथा इनसे छोटे विजयकुमारजी पढ़ रहे हैं।

इस परिवार का अमृतसर में ४ दुकानों पर बीड्स, हॉयजरी, मनिहारी और जनरल मर्चेंटाइज का थोक व्यापार होता है। "बी० पी० बावेल एण्ड सस" के नाम से विलायती तथा जापानी माल का डायरेक्ट इम्पोर्ट होता है। इसके अतिरिक्त हाल ही में इस परिवार ने "पी० विजय एण्ड कम्पनी" के नाम से ओसाका (जापान) में अपना एक ऑफिस कायम किया है, इस पर इम्पोर्ट तथा एक्सपोर्ट बिजिनेस होता है। यह खानदान अमृतसर के ओसवाल समाज में नामांकित माना जाता है।

सिंघी (बावेल) हेमराजजी का खानदान, उत्तराण और खेडगांव (खानदेश)

इस परिवार का मूल निवासस्थान भगवानपुरा (मेवाड़) है। वहाँ से सिंघी हेमराजजी के छोटे

पुत्र हजारीमलजी तथा जुहारमलजी संवत् १९०१ में तथा बड़े पुत्र रूपचंदजी संवत् १९०९ में उत्तराण (खानदेश) आये। तथा यहाँ इन भाइयों ने व्यवसाय आरम्भ किया।

सिंघी रूपचन्दजी का खानदान—आप उत्तराण से संवत् १९०७ में खेड़गाँव चले आये तथा वहाँ आपने अपना कारबार जमाया। आपके मोतीरामजी, वच्छराजजी तथा गोविन्दरामजी नामक ३ पुत्र हुए। इन तीनों भाइयों के हाथों से इस परिवार के व्यापार तथा सम्मान की वृद्धि हुई। इन बन्धुओं का परिवार इस समय अलग २ व्यापार कर रहा है। सिंघी मोतीरामजी संवत् १९६० में स्वर्गवासी हुए। आपके नाम पर सिंघी चुन्नीलालजी केरिया (मेवाड़) से दत्तक आये। आपका जन्म संवत् १९३३ में हुआ। आप खानदेश के ओसवाल समाज में प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। भुसावल, जलगाँव तथा पाचोरा की जैन शिक्षण संस्थाओं में आप सहायता देते रहते हैं। आपके पुत्र दीपचन्दजी तथा जीपरूलालजी हैं। आप दोनों का जन्म क्रमशः संवत् १९५२ तथा ६२ में हुआ। दीपचंदजी सिंघी अपना व्यापारिक काम सम्हालते हैं, तथा जीपरूलालजी बी० ए०, पूना में एल० एल० बी० में अध्ययन कर रहे हैं। आप समझदार तथा विचारवान् युवक हैं। आपके यहाँ "मोतीराम रूपचंद" के नाम से कृषि, बैंकिंग तथा लेनदेन का व्यापार होता है। घरखेड़ी में आपकी एक जीनिंग फेक्टरी है। दीपचन्दजी के पुत्र राजमलजी, चांदमलजी तथा मानमलजी हैं।

सिंघी वच्छराजजी—आप इस खानदान में बहुत नामी व्यक्ति हुए। आपने करीब २० हजार रुपयों की लागत से पाचोरे में एक जैन पाठशाला स्थापित कर उसकी व्यवस्था ट्रस्ट के जिम्मे की। आपने पाचोरे में जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी खोलकर अपने व्यापार और सम्मान को बहुत बढ़ाया। संवत् १९७७ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र तोतारामजी, हीरालालजी स्वर्गवासी हो गये हैं। और कपूरचंदजी तथा लक्खीचंदजी विद्यमान हैं। इन भाइयों का व्यापार १९७७ में अलग २ हुआ। सिंघी कपूरचंदजी, "कपूरचंद वच्छराज" के नाम से पाचोरे में रुई का व्यापार करते हैं तथा यहाँ के प्रतिष्ठित व्यापारी माने जाते हैं। आपके सुगनमलजी तथा पूरनमलजी नामक २ पुत्र हैं। इसी तरह तोतारामजी के पुत्र शंकरलालजी, गणेशमलजी, प्रतापमलजी तथा हीरालालजी के पुत्र मिश्रीलालजी, कनकमलजी, खुशालचंदजी और सुवालालजी और सिंघी गोविन्दरामजी के पुत्र छगनमलजी, ताराचंदजी, विरदीचदजी तथा सरूपचन्दजी खेड़गाँव में व्यापार करते हैं।

सेठ हजारीमलजी तथा जुहारमलजी सिंघी का परिवार—इन बन्धुओं का परिवार उत्तराण में निवास करता है। आप दोनों बन्धुओं के हाथों से इस परिवार के व्यापार और सम्मान की विशेष वृद्धि हुई। सेठ जुहारमलजी के पुत्र सेठ किशनदासजी और सेठ हजारीमलजी के सेठ ओंकारदासजी, चुन्नीलालजी तथा छोटमलजी नामक ३ पुत्र हुए। सेठ किशनदासजी ख्याति प्राप्त पुरुष हुए। आप बड़े कर्तव्यशील व समझदार सज्जन थे। सम्वत् १९५३ में आपका स्वर्गवास हुआ। सिंघी ओंकारदासजी संवत् १९७४ में स्वर्गवासी हुए। आपके पन्नालालजी, माणिकचन्दजी, पूनमचन्दजी, दलीचन्दजी, रतनचन्दजी तथा रामचन्दजी नामक ६ पुत्र विद्यमान हैं। इनमें सेठ माणिकचन्दजी, किसनदासजी के नाम पर दत्तक गये हैं।

सेठ माणिकचन्दजी सिंघी—आपका जन्म सम्वत् १९४५ में हुआ। आपने सम्वत् १९७२ से साहुकारी व्यवसाय बन्द कर कृषि तथा बागायात की ओर बहुत बड़ा लक्ष दिया। आपका विस्तृत बगीचा



सेठ माणकचन्दजी सिंघी (माणकचन्द किशनदास), उत्तराण



श्री राजमलजी बलदोटा बी. एस. सी., सपत्नीक, पूना



सेठ माणकचन्दजी सिंघी के पुत्र



श्री हरलालजी बलदोटा सपत्नीक, पूना.

लाला सुखरूपमल रघुनाथप्रसाद भण्डारी, कानपुर

इस परिवार में लाला सुखरूपमलजी के पुत्र लाला रघुनाथप्रसादजी बड़े धार्मिक व प्रतापी व्यक्ति हुए। आपने व्यापार में लाखों रुपयों की सम्पत्ति उपार्जित कर कानपुर, सम्मेदशिखरजी तथा लखनऊ में ३ सुन्दर जैन मन्दिर बनवाकर उनकी प्रतिष्ठा करवाई। इस प्रकार प्रतिष्ठापूर्ण जीवन बिताते हुए संवत् १९४८ में आपका स्वर्गवास हुआ। आपके नामपर लाला लछमणदासजी चतुरमेहता के पुत्र मेहता सन्तोषचन्दजी दत्तक आये। आपका जन्म संवत् १९३५ में हुआ। आप भी अपने पिताजी की तरह ही प्रतिष्ठित व्यक्ति हुए। आपने अपने कानपुर मदिर में कांच जड़वाये, और आसपास बगीचा लगवाया। यह मन्दिर भारत के जड़ाऊ मन्दिरों में उच्च श्रेणी का माना जाता है। मंदिर के सामने आपने धर्मशाला के लिए एक मकान प्रदान किया। संवत् १९८९ के फाल्गुण मास में आप स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र बाबू दौलतचन्दजी भण्डारी का जन्म संवत् १९६४ में हुआ। आप भी सज्जन एवम् प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। आपके पुत्र विजयचंदजी हैं।

श्री हुलासमलजी मेहता का खानदान, रामपुरा

लगभग ३०० वर्षों से यह परिवार रामपुरा में निवास कर रहा है। राज्यकार्य्य करने के कारण इस परिवार की उपाधि "मेहता" हुई। संवत् १८२५ से राज्य सम्बन्ध त्याग कर इस परिवार ने अफीम का व्यापार शुरू किया और मेहता गम्भीरमलजी तक यह व्यापार चलता रहा। आप बड़े गम्भीर तथा धर्मानुरागी थे। संवत् १९५३ में आपका स्वर्गवास हुआ। आपके पुत्र चुन्नीलालजी मेहता भी व्यापार करते रहे। इनके भाइयों को मंदसोर में "धनराज किशनलाल" के नाम से सोने चाँदी का व्यापार होता है। मेहता चुन्नीलालजी के मोहनलालजी तथा हुलासमलजी नामक २ पुत्र हैं। मोहनलालजी विद्याविभाग में लम्बे समय तक सर्विस करते रहे तथा इस समय पेंशन प्राप्त कर रहे हैं।

मेहता हुलासमलजी—आप इन्दौर स्टेट में कई स्थानों के अमीन रहे। तथा इस समय मनासामें अमीन हैं। आप बड़े सरल तथा मिलनसार सज्जन हैं। आपके ४ पुत्र हैं। जिनमें बड़े सज्जनसिंहजी मेहता इसी साल एल० एल० बी० की परीक्षा में बैठे थे। आप होनहार युवक हैं। आप से छोटे; मनोहरसिंहजी बी० ए० में तथा आनंदसिंहजी मेट्रिक में पढ़ रहे। और ललितसिंह बालक हैं।

मेहता किशनराजजी, मेड़ता

इस परिवार के पूर्वज मेहता जसरूपजी जोधपुर में राज्य की सर्विस करते थे। इनके मनरूप जी तथा पनराजजी नामक २ पुत्र हुए। पनराजजी जालोर के हाकिम थे। इनके रतनराजजी, कुशलराज जी, सोहनराजजी तथा शिवराजजी नामक ४ पुत्र हुए। इन बंधुओं में केवल शिवराजजी की संतानें विद्यमान हैं। मेहता शिवराजजी जोधपुर में वकालात करते थे। इनका संवत् १९७४ में ५४ साल की वय में स्वर्गवास हुआ। आपके किशनराजजी तथा रंगराजजी नामक २ पुत्र हुए। मेहता किशनराज जी का जन्म संवत् १९४७ में हुआ। आपने सन् १९१३ में जोधपुर में वकालात पास की। तथा ७-८ सालों तक वहीं प्रेक्टिस करते रहे। उसके बाद आप मेड़ते चले आये। तथा इस समय मेड़ते के प्रतिष्ठित वकील माने जाते हैं। आपके छोटे बंधु रंगराजजी हवाला विभाग में कार्य्य करते हैं।

को बहुत बढ़ाया है। आपने वेलिंगटन, कुन्नूर और ऊटकमंड में दुकानें खोलीं। बम्बई में आपका "फतहलाल मिश्रीलाल" के नाम से व्यापार होता है। तथा नीलगिरी में आपकी ५ दुकाने हैं। जिनमें लालचन्द शंकरलाल एण्ड कं० अंग्रेज़ी ढंग से बैंकिंग व्यापार करती है और नीलगिरी में बड़ी प्रतिष्ठित मानी जाती है। सेठ मिश्रीलालजी बड़े शिक्षा प्रेमी तथा धार्मिक व्यक्ति है। आप अपनी फर्म की ओर से आठ साल से २ हजार रुपया प्रतिवर्ष ब्यावर के "जैन गुरुकुल" को सहायता दे रहे हैं। एवं आप उस गुरुकुल के प्रेसिडेण्ट भी हैं।

सेठ जेठमलजी के पुत्र नेमीचन्दजी व शंकरलालजी, सेठ फतेलालजी के पुत्र चम्पालालजी, सेठ विजयलालजी के पुत्र कन्हैयालालजी और रामलालजी तथा कंवरलालजी के पुत्र फकीरचन्दजी तथा मूलचन्द जी हुए। इन बंधुओं में शंकरलालजी, चाँदमलजी (बहादुरचंदजी के पुत्र) के नाम पर तथा मूलचन्दजी, मिश्रीलालजी के नाम पर दत्तक गये। एवं फकीरचन्दजी का स्वर्गवास सम्वत् १९८९ में अल्पवय में हो गया। नेमीचन्दजी, चम्पालालजी तथा कन्हैयालालजी व्यापार में भाग लेते हैं। यह परिवार फलोदी बम्बई और नीलगिरी के ओसवाल समाज में अच्छी प्रतिष्ठा रखता है।

श्री बख्तावरमल नथमल वेद, ऊटकमंड

इस परिवार के पूर्वज दौलतरामजी वेद के पुत्र शिवलालजी, बींजराजजी तथा जोरावरमलजी वेद ने रोहिणा नामक स्थान से आकर अपना निवास स्थान फलोदी में बनाया। सेठ शिवलालजी संवत् १९५७ में स्वर्गवासी हुए। तथा बींजराजजी व जोरावरमलजी का व्यापार अमलनेर के पास पीपला नामक स्थान में रहा। सेठ शिवलालजी के बाघमलजी तथा बख्तावरमलजी नामक २ पुत्र हुए। इन बंधुओं ने रामगाँव (बरार) में अपना व्यापार शुरू किया। सम्वत् १९५९ में सेठ बख्तावरमलजी ने सेठ-सूरजमलजी वेद फलोदीवालों की भागीदारी में "सूरजमल सुजानमल" के नाम से साहूकारी व्यापार चालू किया। संवत् १९६६ में आपका तथा १९८२ में बाघमलजी का स्वर्गवास हुआ।

सेठ बख्तावरमलजी के पुत्र नथमलजी का जन्म सम्वत् १९५५ में हुआ। इस समय आप सेठ मिश्रीलालजी वेद फलोदी वालों की भागीदारी में "शिवलाल नथमल" के नाम से ऊटकमंड में बैंकिंग व्यापार करते हैं। यहाँ के ओसवाल समाज में आप प्रतिष्ठित एवं समझदार व्यक्ति हैं। आपको पठन पाठन का बड़ा प्रेम है। इसी तरह इस परिवार में सेठ जोरावरमलजी के पौत्र भेरूदानजी, वेलिंगटन में सेठ मिश्रीलालजी वेद की भागीदारी में तथा बींजराजजी के पुत्र मोतीलालजी वेद अमलनेर में व्यापार करते हैं।

सेठ चुन्नीलाल छगनमल वेद, ऊटकमंड

इस परिवार के पूर्वज वेद गंभीरमलजी तथा उनके पुत्र बालचंदजी ठिकाना रास (मारवाड़) में रहते थे। सेठ बालचन्दजी सम्वत् १९६४ में स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र चुन्नीलालजी का जन्म सम्वत् १९५४ में तथा छगनमलजी का १९६० में हुआ। इन बंधुओं ने सम्वत् १९८० में अपना निवास ब्यावर में किया। आप लोगों ने सेठ "रिखबदास फतेमल" की भागीदारी में सन् १९१८ में ऊटकमंड में सराफी व्यापार चालू किया। इस समय इस दुकान पर कपड़े का व्यापार होता है। आप दोनों सज्जन श्वेताम्बर जैन स्थानकवासी आम्नाय के माननेवाले हैं। व्यापार को आपने तरक्की दी है।

हैं। धार्मिक मामलों से भी आप लोगों के उदार विचार हैं। आपने दृढ़ता पूर्वक परिश्रम कर चचवड़ में एक अबोध कन्या को दीक्षा दिये जाने के कार्य्य को रुकवाया था। श्री हरलालजी का विवाह सन् १९३२ में अजमेर में वर्द्धमानजी बाठिया की पुत्री श्रीमती दीपकुमारी (उर्फ सरलादेवी) के साथ बहुत सादगी के साथ हुआ। इस विवाह में तमाम फुजूल खर्चियां रोककर लगभग ३००) रुपयों में सब वैवाहिक काम पूरा किया गया। तथा शुद्ध खद्दर का व्यवहार किया गया। श्री दीपकुमारी बलदोटा सन् १९३० में विदेशी वस्त्रों की पिकेटिंग करने के लिये ३। ४ वार जेल गईं। लेकिन १५ वर्ष की अल्पायु होने के कारण आप दो चार दिनों में ही छोड़ दी गईं।

लाला रणपतराय कस्तूरीलाल बम्बेल का खानदान, मलेर कोटला

इस परिवार के मालिकों का मूल निवास स्थान सुनाम का है। आप जैन श्वेताम्बर स्थानक वासी सम्प्रदाय को मानने वाले है। इस खानदान में लाला कानारामजी के पश्चात् क्रमश. छज्जूरामजी, मोतीरामजी तथा लाला रणपतरायजी हुए। लाला रणपतरायजी इस कुटुम्ब में बड़े योग्य व्यक्ति होगये हैं। आप सौ साल पूर्व मलेर कोटला में सुनाम से आये थे। आपने अपने परिवार की इज्जत व दौलत को बढ़ाया। आपके पुत्र लाला मुकुंदीलालजी का स्वर्गवास संवत् १९५० में होगया। आपके लाला कस्तूरीलालजी, मिलखीराम जी एवं चिरंजीलालजी नामक तीन पुत्र हुए। लाला कस्तूरीलालजी का जन्म १९४६ का था। आप बड़े सज्जन और धार्मिक पुरुष थे। आपका संवत १९७९ में स्वर्गवास होगया है। आपके लाला बचनाराम जी नामक एक पुत्र हैं। लाला मिलखीरामजी का जन्म संवत् १९४८ में हुआ। आप यहां की बिरादरी के चौधरी हैं। आपका यहाँ के राज दरबार में अच्छा सम्मान है। आपके प्रेमचन्दजी नामक एक पुत्र है। लाला चिरंजीलालजी का जन्म संवत् १९५० में हुआ। आप भी मिलनसार सज्जन हैं। आपके मनोहरलालजी तथा शीतलदासजी नामक दो पुत्र हैं।

इस परिवार की इस समय दो शाखाएँ होगई हैं। एक फर्म पर मेसर्स कस्तूरीलाल मिलखी राम के नाम से तथा दूसरी फर्म पर चिरंजीलाल मनोहरलाल के नाम से व्यापार होता है।

सेठ फतहलाल मिश्रीलाल वेद, फलोदी

इस परिवार के पूर्वज सेठ परशुरामजी वेद ने फलोदी से ४४ मील दूर रोहिणा नामक स्थान से आकर सम्वत् १९२५ में अपना निवास फलोदी में बनाया। आपके पुत्र बहादुरचन्दजी तथा मुलतानचंदजी हुए। यह परिवार स्थानकवासी सम्प्रदाय का माननेवाला है। सेठ मुल्तानचन्दजी के चुन्नीलालजी, छोगमलजी, हजारीमलजी, आईदानजी तथा सूरजमलजी नामक ५ पुत्र हुए। इनमें सेठ सूरजमलजी तथा आईदानजी ने बम्बई तथा ऊटकमंड में दुकानें खोलीं। सेठ सूरजमलजी फलोदी के स्थानकवासी सम्प्रदाय में नामांकित व्यक्ति हो गये हैं। संवत् १९७८ में आप स्वर्गवासी हुए। सेठ आईदानजी के जेठमलजी फतेलालजी, विजयलालजी, मिश्रीलालजी तथा कंवरलालजी नामक ५ पुत्र हुए। इनमें सेठ मिश्रीलालजी, सूरजमलजी वेद के नाम पर दत्तक गये हैं।

वर्तमान में इन बंधुओं में जेठमलजी, विजयलालजी तथा मिश्रीलालजी विद्यमान हैं। सेठ जेठमलजी फलोदी में ही रहते हैं, तथा विजयलालजी और मिश्रीलालजी ने इस कुटुम्ब के व्यापार तथा सम्मान

लगभग ७५ एकड़ भूमि में है। इनमें हजारों मोसम्मी के झाड़ हैं। इन झाड़ों से पैदा होने वाली मोसम्मी की सैकड़ों बैगन बम्बई, गुजरात आदि प्रान्तों में भेजी जाती हैं। इधर आपने लेमनज्यूस तथा अरेंजज्यूस बड़े प्रमाण में बनाने का आयोजन किया है और इस कार्य के लिये ६५ एकड़ भूमि में नीबू के हजारों झाड लगाये हैं। इन तमाम कार्यों में आपके साथ आपके बड़े पुत्र बंशीलालजी सिंघी परिश्रम पूर्वक सहयोग लेते हैं। आपका फलों का बगीचा बम्बई प्रांत में सबसे बड़ा माना जाता है। सेठ माणिकचन्दजी के इस समय बंशीलालजी, शिवलालजी तथा शांतिलालजी नामक ३ पुत्र हैं। सिंघी बंशीलालजी का जन्म संवत् १९६५ में हुआ। आपने लेमन तथा अरेंज ज्यूस के लिये पूना एग्रीकलचर कॉलेज से विशेष ज्ञान प्राप्त किया है। आप बड़े सज्जन व्यक्ति हैं। आपके छोटे भाई शिवलालजी पूना एग्रीकलचर कॉलेज में केमिस्ट का ज्ञान प्राप्त कर रहे हैं।

सिंघी पन्नालालजी भी बरखेड़ी में बागायात का व्यापार करते हैं। आपके पुत्र मिश्रीलालजी, चम्पालालजी, इन्द्रचंदजी, हरकचंदजी तथा भागचंदजी हैं। इसी प्रकार पूनमचंदजी अमलनेर में व्यापार करते हैं और दलीचंदजी बरखेड़ी में तथा रतनचंदजी और रामचंद्रजी उत्तराण में कृषि कार्य करते हैं। इसी प्रकार इस परिवार में सेठ चुन्नीलालजी सिंघी के पुत्र मोहनलालजी, बृजलालजी, झूमरलालजी तथा उत्तमचंदजी और छोटमलजी के पुत्र कन्हैयालालजी और नंदलालजी उत्तराण में कृषि कार्य करते हैं।

सेठ उम्मेदमल रूपचंद बलदोटा, दौंड (पूना)

इस परिवार का मूल निवास स्थान बारवा (आऊवा के पास) मारवाड़ में है। इस परिवार के पूर्वज सेठ गंगारामजी बलदोटा, मारवाड़ से व्यापार के लिए लगभग ६० साल पूर्व नीमगाँव (अहमदनगर) आये। तथा वहाँ किराना का धंधा शुरू किया। संवत् १९५० के लगभग आप स्वर्गवासी हुए। आपके चार पुत्र हुए, जिनमें उम्मेदमलजी का परिवार विद्यमान है। सेठ उम्मेदमलजी ने संवत् १९६० में अपनी दुकान दौंड में की और व्यापार की आपके हाथों से उन्नति हुई। संवत् १९७२ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र रूपचन्दजी (उर्फ फूलचन्दजी) का जन्म १९४२ में मोहनलालजी का संवत् १९५७ में एवं राजमलजी का संवत् १९६६ में हुआ। इस समय बलदोटा रूपचन्दजी, अपनी उम्मेदमल रूपचन्द नामक दुकान का कार्य्य दौंड में संचालित करते हैं। आपके पुत्र श्री हरलालजी हैं।

श्री मोहनलालजी बलदोटा ने सन् १९२० में बी० ए० तथा १९२२ में एडवोकेट परीक्षा पास की। सन् १९२३ से आप पूना में प्रेक्टिस करते हैं, एवं यहाँ के प्रतिष्ठित वकील माने जाते हैं। आप ४ सालों तक स्थानीय स्था० बोर्डिंग के सेक्रेटरी रहे थे। आपके छोटे बन्धु राजमलजी बलदोटा ने सन् १९३२ में बी० एस० सी० की परीक्षा पास की। तथा इस समय पूना लॉ कालेज में एल० एल० बी० में अध्ययन कर रहे हैं। हरलालजी बलदोटा का जन्म सन् १९११ में हुआ। आपने सन् १९२९ में मेट्रिक पास किया तथा इस समय पूना मेडिकल स्कूल के द्वितीय वर्ष में अध्ययन कर रहे हैं।

इस परिवार ने शिक्षा तथा सुधार के कार्य्यों में प्रशंसनीय पैर बढ़ाया है। श्रीयुत राजमलजी और हरलालजी बलदोटा ने परदा प्रथा को त्याग कर महाराष्ट्र प्रदेश के ओसवाल समाज के सम्मुख एक नवीन आदर्श उपस्थित किया है। आप दोनों युवक अपनी पत्नियों सहित शुद्ध खद्दर का व्यवहार करते

सेठ घमड़सी जुहारमल स्याम सुखा, बीकानेर

हम ऊपर लिख आये हैं कि चंदेरी के खतरसिंह के पौत्र भैंसाशाहजी के ८ पुत्रों से अलग-अलग आठ गौत्रें उत्पन्न हुईं। इनमें श्यामसीजी से श्यामसुखा हुए। इनकी नवीं पीढ़ी में मेहता रतनजी हुए। आप बीकानेर दरबार के बुलाने से संवत् १५७५ में पाटन से बीकानेर में आकर आबाद हुए। इनकी दसवीं पीढ़ी में श्यामसुखा साहबचन्दजी हुए आपके संतोषचदजी, सुल्तानचन्दजी, सुगालचन्दजी एवं घमड़सीजी नामक ४ पुत्र हुए।

सेठ घमडसीजी श्यामसुखा--जिस समय मरहठा सेना के अध्यक्ष महाराजा होल्कर स्थान २ पर चढ़ाइयाँ करके अपने राज्य स्थापन की व्यवस्था में व्यस्त थे, उस समय बीकानेर से सेठ घमड़सीजी इन्दौर गये, एवं महाराजा होल्कर की फौजों को रसद सप्लाय करने का कार्य्य करने लगे। कहना न होगा कि ज्यों ज्यों होल्करों का सितारा उन्नति पर चढ़ता गया। त्यों त्यों सेठ घमड़सीजी का व्यापार भी उन्नति पाता गया। आपने होल्कर एवं सिंधिया के जीते हुए प्रदेशों में डाक की सुव्यवस्था की। होल्करी सेना को आप ही के द्वारा वेतन दिया जाता था। तत्कालीन होल्कर नरेश ने आपके सम्मान स्वरूप इन्दौर में आधे एवं सांवेर में पौने महसूल की माफी के हुक्म बख्शे। एवं घोड़ा, छत्री, चपरास व छड़ी, आदि बख्शकर आपको सम्मानित किया। इसी प्रकार गवालियर स्टेट की ओर से भी आपको कई सम्मान प्राप्त हुए। इसी समय पटवा खानदान के प्रतापी पुरुष सेठ जोरावरमलजी बापना का आप से सहयोग हुआ, एवं इन दोनों शक्तियों ने "घमड़सी जोरावरमल" के नाम से अनेकों स्थानों में दुकानें स्थापित कर बहुत जोरों से अफीम व बैंकिंग का व्यापार बढ़ाया। तमाम मालवा प्रान्त की अफीम आपकी आढ़त में आती थी। जब सेठ जोरावरमलजी का व्यापार पाँच भागों में विभक्त हो गया, उस समय सेठ घमड़सीजी अपने पुत्र जुहारमलजी के साथ में "घमडसी जुहारमल" के नाम से अपना स्वतन्त्र कारबार करने लगे। सेठ जुहारमलजी संवत् १९१३ में स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र सूरजमलजी एवं समीरमलजी ने अफीम तथा सराफी व्यापार को बहुत उन्नत किया। इन्दौर के ११ पंचों में आप भी प्रभावशाली और प्रधान व्यक्ति थे। सेठ समीरमलजी श्यामसुखा बीकानेर के सम्माननीय पुरुष थे। बीकानेर दरबार ने आपको कैफियत तथा चौकड़ी बख्शी थी। इसी तरह आपके पुत्र सहसकरणजी को सोने का कड़ा एवं कैफियत तथा उनकी धर्म पत्नी को पैरों में सोना पहनने का अधिकार बख्शा था। आपने सिद्धाचलजी आदि में कई धार्मिक काम करवाये।

सेठ सूरजमलजी के सोभागमलजी एवं पूनमचन्दजी नामक २ पुत्र हुए। इनमें सेठ सोभागमलजी के अल्पवय में गुजर जाने से उनके नाम पर सेठ पूनमचन्दजी दत्तक गये। आपका जन्म संवत् १९२५ में हुआ। आप बीकानेर के प्रतिष्ठित एवं वयोवृद्ध सज्जन हैं। बीकानेर से आपको इज्जत, कैफियत, छड़ी, चपरास, चौकड़ी आदि का सम्मान प्राप्त हुआ है। देहली दरबार के समय बीकानेर दरबार सेठ चाँदमलजी ढड्ढा एवं आपको अपने साथ ले गये थे। आपके पुत्र कुँवर दीपचन्दजी का जन्म संवत् १९४४ में हुआ। आप अपनी दुकानों का कारोबार सम्हालते हैं। कुँवर दीपचन्दजी के पुत्र टीकमसिंहजी, पदमसिंहजी, रत्तीचन्दजी एवं तेजसिंहजी हैं। कुँवर टीकमसिंहजी का जन्म संवत १९६४ में हुआ।

आप मिलनसार युवक हैं। इस परिवार की इन्दौर एवं उज्जैन में दुकाने हैं। तथा इन्दौर, उज्जैन, सांवेर और बीकानेर में स्थाई जायदाद है। कुँवर टीकमसिंहजी के पुत्र भँवर दुलीचन्दजी हैं।

श्री राखेचा मानमलजी मंगलचन्दजी, बीकानेर

इस परिवार के पूर्वज लच्छीरामजी राखेचा बीकानेर में अपने समय में बड़े प्रतापी पुरुष हुए। आप संवत् १८५२-५३ में बीकानेर के दीवान रहे। आपने अपनी अन्तम वय में सन्यास वृत्ति धारण की एव "अलख मठ" स्थापित कर "अलख सागर" नामक प्रसिद्ध विशाल कूप बनवाया। जो इस समय बीकानेर का बहुत बड़ा कूप माना जाता है। इनके पुत्र मानमलजी एवं गेंदमलजी माजी साहिबा पुङ्गलियाणीजी के कामदार रहे। मानमलजी के पुत्र राखेचा मंगलचन्दजी बड़े प्रभावशाली व्यक्ति थे। आप श्री महाराजा गंगासिंहजी के बाल्यकाल में रिजेंसी कौंसिल के मेम्बर थे। इनके दत्तक पुत्र भेरूदानजी कारखाने का कार्य्य करते रहे। इस समय भेरूदानजी के पुत्र गंभीरचन्दजी एवं शेपकरणजी विद्यमान हैं।

सेठ पूनमचन्दजी नेमीचन्दजी कोठारी (शाह) बीकानेर

यह परिवार सेठ सूरजमलजी कोठारी के पुत्रों का है। लगभग १५० साल पहिले सेठ "बालचन्द गुलाबचन्द" के नाम से इस परिवार का व्यापार बड़ी उन्नति पर था। एवं इनकी दुकानें जयपुर, पूना आदि स्थानों पर थीं। सेठ बालचन्दजी के पुत्र भीखनचन्दजी एवं पौत्र हरकचन्दजी हुए। कोठारी हरकचन्दजी के पुत्र नेमीचन्दजी का जन्म सम्वत् १९०२ में हुआ। आपने ज़ादातर बीकानेर में ही व्याज और जवाहरात का व्यापार किया। सम्वत् १९५२ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके प्रेमसुखदास जी, पूनमचन्दजी तथा आनन्दमलजी नामक ३ पुत्र हुए। आप तीनों का जन्म क्रमशः सम्वत् १९३० सम्वत् १९३८ एवं सम्वत् १९४३ में हुआ। सेठ प्रेमसुखदासजी व्यापार के लिये सम्वत् १९४४ में रंगून गये, तथा "प्रेमसुखदास पूनमचन्द" के नाम से फर्म स्थापित की। सम्वत् १९५३ में आप स्वर्गवासी हो गये। आपके बाद आपके छोटे बंधु सेठ पूनमचन्दजी तथा आनन्दमलजी ने इस दुकान के व्यापार एवं सम्मान में अच्छी वृद्धि की। सेठ पूनमचन्दजी कोठारी रंगून चेम्बर आफ कामर्स के पंच थे। एवं वहाँ के व्यापारिक समाज में गण्यमान्य सज्जन माने जाते थे। इधर सम्वत् १९८२ से व्यापार का बोझ अपने छोटे बंधु पर छोड़ कर आप बीकानेर में ही निवास करते हैं। इस समय आप बीकानेर के आनरेरी मजिस्ट्रेट एवं म्युनिसिपल कमिश्नर हैं। यहाँ के ओसवाल समाज में आप प्रतिष्ठित एवं समझदार पुरुष हैं। स्थानीय जैन पाठशाला में आपने ७१००) की सहायता दी है। इस समय आपके यहाँ "प्रेमसुखदास पूनमचन्द" के नाम से रंगून में बैंकिंग तथा जवाहरात का व्यापार होता है। आपका परिवार मन्दिर मार्गीय आम्नाय का माननेवाला है। सेठ आनन्दमलजी के पुत्र लालचन्दजी एवं हीराचन्दजी हैं।

कोचर परिवार बीकानेर

सम्वत् १६७२ में महाराजा सूरसिंहजी के साथ कोचरजी के पुत्र उरझाजी अपने ४ पुत्र रामसिंहजी, भाखरसिंहजी, रतनसिंहजी तथा भींवसिंहजी को साथ लेकर बीकानेर आये। तथा उरझाजी के शेष ४ पुत्र फलोदी में ही निवास करते रहे। बीकानेर आने पर महाराजा ने इन भाइयों को अपनी रियासत में ऊँचे २ ओहदों पर मुकर्रर किया। इन बंधुओं ने अपनी कारगुजारी से रियासत में अच्छा

सम्मान पाया। इस समय इन चारों भाइयों की संतानों के लगभग १२५ घर बीकानेर में निवास कर रहे हैं। यहाँ का कोचर परिवार अधिकतर बीकानेर स्टेट की सेवा ही करता चला आ रहा है राज्य कार्य्य करने से यह परिवार "मेहता" के नाम से सम्मानित हुआ, आज भी इस परिवार के अनेकों व्यक्ति स्टेट सर्विस में हैं। बीकानेर का कोचर परिवार अधिकतर श्री जैन श्वे० मंदिर मार्गीय आम्नाय का माननेवाला है।

मेहता रामसिंहजी कोचर का परिवार

कोचर रामसिंहजी, उरझाजी के पाटवी पुत्र थे, बीकानेर दरबार महाराजा सूरसिंहजी ने इन्हें चाँदी की कलम एवं दवात बख्श कर लिखने का काम दिया, जिससे इनका परिवार "लेखणिया" कहलाने लगा। इस परिवार को स्टेट ने "बीमलू" नामक गाँव जागीर में दिया, जो आज भी इस परिवार के पाटवी मेहता मंगलचन्दजी के अधिकार में है। मेहता रामसिंहजी के पश्चात् क्रमशः जीवराजजी, भगौतीरामजी और माणकचन्दजी हुए। मेहता माणकचन्दजी के पुत्र दुलीचन्दजी तथा बख्तावरचन्दजी थे। इनमें मेहता दुलीचन्दजी के परिवार में राय बहादुर मेहता मेहरचन्दजी एवं बख्तावरचन्दजी के परिवार मेंस्वर्गीय मेहता बहादुरमलजी नामी व्यक्ति हुए।

राय बहादुर मेहता मेहरचन्दजी का परिवार—ऊपर हम मेहता दुलीचन्दजी का नाम लिख आये हैं। आपके पुत्र चौथमलजी एवं पौत्र सुल्तानचन्दजी हुए। मेहता सुल्तानचन्दजी के सूरजमलजी, बींजराजजी, चुन्नीलालजी एवं हिम्मतमलजी नामक ४ पुत्र हुए, इनमें मेहता चुन्नीलालजी २२ सालों तक हनुमानगढ़ में तहसीलदार रहे। आपके कार्य्यों से प्रसन्न होकर दरबार ने आपको सूरतगढ़ में नाजिम का सम्मान दिया। आपके लखमीचन्दजी एवं मोतीचन्दजी नामक २ पुत्र हुए, इनमें मेहता मोतीचन्दजी, हिम्मतमलजी के नाम पर दत्तक गये। मेहता लखमीचन्दजी बहुत समय तक बीकानेर एवं रिणी में नाजिम के पद पर कार्य करते रहे। पश्चात् आप स्टेट की ओर से आबू, हिंसार एवं जयपुर के वकील रहे। इसी प्रकार मेहता मोतीचन्दजी भी कई स्थानों पर तहसीलदारी एवं नाजिमी के पद पर कार्य्य करते रहे। आपके मेहरचन्दजी मिलापचन्दजी, गुणचन्दजी तथा केसरीचन्दजी नामक ४ पुत्र हुए, इन में मेहरचन्दजी, मेहता लखमीचन्दजी के नाम पर दत्तक गये। मेहता मेहरचन्दजी का जन्म सम्वत् १९३२ में हुआ। आप इस परिवार में विशेष प्रतिभावान पुरुष हुए। सम्वत् १९५४ में आप रियासत में तहसीलदारी के पद पर मुकर्रर हुए। एवं सन् १९१२ में स्टेट ने आपको सूरतगढ़ का नाजिम मुकर्रर किया। आपकी कारगुजारी एवं होशियारी से दिनों दिन जिम्मेदारी के कार्यों का भार आप पर आता गया। सन् १९१३ में बीकानेर स्टेट ने जोधपुर, जयपुर एवं बीकानेर के सरहद्दी तनाजों को दूर करने के लिये आपको अपना प्रतिनिधि बनाकर सुजानगढ़ भेजा। सन् १९१६ में महाराजा श्री गंगासिंहजी बहादुर ने आपको "शाह" का सम्मान इनायत किया। इसी तरह से वार आदि कार्यों में स्टेट की ओर से इमदाद में सहयोग लेने के उपलक्ष में आपको ब्रिटिश गवर्नमेंट ने सन् १९१८ में "रायबहादुर" का खिताब एवं मेडिल इनायत किया। इसी साल बीकानेर दरबार ने भी आपको "रेवेन्यू कमिश्नर" का पद बख्श कर सम्मानित किया। इस प्रकार प्रतिष्ठापूर्ण जीवन बिता कर आप २९ दिसम्बर सन् १९१९ को स्वर्गवासी हुए। आप बड़े लोकप्रिय महानुभाव थे। आपके अंतिम संस्कारों के लिये दरबार ने आर्थिक सहायता पहुँचाई थी। इतना

ही नहीं आपकी धर्मपत्नी एवं २ नाबालिग पुत्रों के लिये खास तौर से पेंशन भी मुकर्रर कर दी। आपके स्मारक में आपके पुत्रों ने बीकानेर में कोचरों की गवाड़ में एक जैन धर्मशाला बनवाई। आपके कृपाचन्दजी उत्तमचन्दजी एवं मंगलचन्दजी नामक ३ पुत्र विद्यमान हैं। इन तीनों भाइयों का जन्म क्रमशः सम्वत् १९५१, ६५ तथा सम्वत् १९६७ में हुआ। मेहता कृपाचन्दजी थोड़े समय तक कलकत्ता में व्यापार करते रहे, तथा इस समय नौहर में नायब तहसीलदार हैं। आपके पुत्र धीरचन्दजी बालक हैं।

मेहता उत्तमचन्दजी बी० ए० एल एल० बी०—आपने बनारस युनिवर्सिटी से सन् १९२८ में बी० ए० तथा १९३० एल एल० बी० की परीक्षा पास की। इसके २ वर्ष बाद आपको स्टेट ने सुजानगढ़ में मजिस्ट्रेट बनाया। इतनी अल्पवय होते हुए भी इस वजनदारी पूर्ण कार्य को आप बड़ी योग्यता से संचालित कर रहे हैं। आप बड़े सहृदय, मिलनसार एवं लोकप्रिय युवक हैं। आपके पुत्र उपध्यानचन्द बालक हैं। आपके छोटे बंधु मेहता मंगलचन्दजी सुजानगढ़ में गिरदावर हैं।

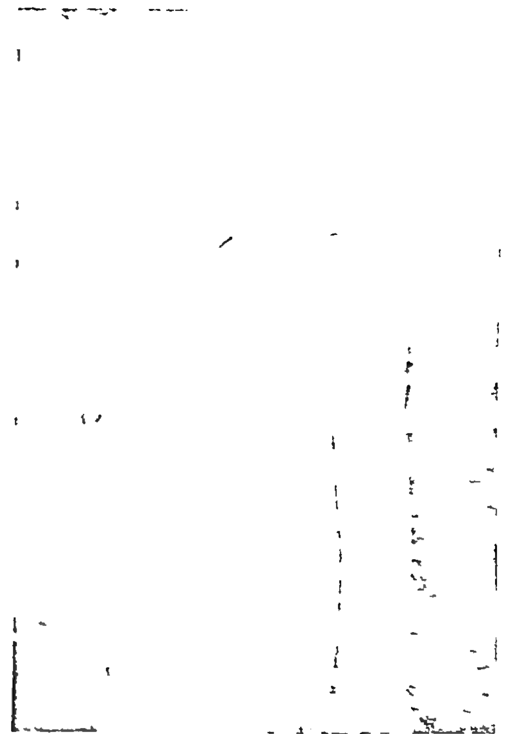
इसी प्रकार इस परिवार मे मेहता मिलापचन्दजी भी कई स्थानों पर तहसीलदार एवं नाजिम के पद पर काम करते रहे सन १९२७ में आपका स्वर्गवास हुआ। आपके पुत्र पीरचन्दजी भिनासर में डाक्टरी करते हैं, मोहनलालजी एफ. ए में तथा सम्पतलालजी मिडिल में पढ़ते हैं। इसी तरह मेहता मेहरचन्दजी के सब से छोटे भाई मेहता केसरीचन्दजी के पुत्र माणिकचन्दजी बालक हैं।

मेहता बहादुरमलजी कोचर का परिवार—ऊपर हम लिख आये हैं कि मेहता दुलीचन्दजी के छोटे भ्राता मेहता बक्तावरचन्दजी थे। इनके पश्चात् क्रमशः मेहता तखतमलजी, मुकुन्ददासजी एवं छोगमलजी हुए। मेहता छोगमलजी बीकानेर स्टेट में सर्विस करते रहे। संवत् १९४२ में आपका स्वर्गवास हुआ। आपके मेहता छगनमलजी, बहादुरमलजी, एवं हस्तीमलजी नामक ३ पुत्र हुए। इनमें मेहता छगनमलजी भी स्टेट में सर्विस करते रहे। आपका स्वर्गवास हो गया। आपके सहसकरणजी एवं अभयराजजी नामक २ पुत्र हुए। इनमें अभयराजजी, अपने काका मेहता बहादुरमलजी के नाम पर दत्तक गये।

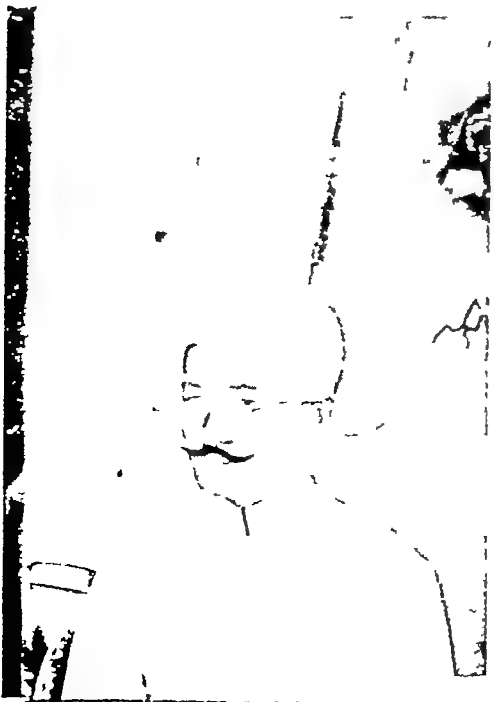
मेहता बहादुरमलजी इस परिवार में नामी व्यक्ति हुए। आपने सवंत् १९४० में सेठ मोजीराम पन्नालाल बांठिया भिनासर वालों की भागीदारी में कलकत्ते में छातों का व्यापार आरम्भ किया, एवं इस व्यापार को उन्नत रूप देने के लिये आपने वहाँ एक कारखाना भी खोला। इस व्यापार में सम्पत्ति उपार्जित कर आपने अपने सम्मान में अच्छी उन्नति की। आप बड़े दयालु थे, तथा धर्म के कामों में उदारता पूर्वक भाग लेते थे। एवं अन्य कामों में भी उदारतापूर्वक सहायता देते थे। बीकानेर के ओसवाल समाज में आप गण्यमान्य व्यक्ति माने जाते थे। इस प्रकार प्रतिष्ठा पूर्वक जीवन बिताकर सवंत् १९९० की प्रथम बैसाख सुदी १४ को आपका स्वर्गवास हो गया। आपके दत्तक पुत्र मेहता अभयराजजी का जन्म संवत् १९६० में हुआ। इधर संवत् १९८६ से आपका सेठ मोजीराम पन्नालाल फर्म से भाग अलग हो गया है। एवं आप "बहादुरमल अभयराज" के नाम से बीकानेर में बैंकिंग व्यापार करते हैं। आप बड़े सरल एवं सज्जन व्यक्ति हैं। बीकानेर के कोचर परिवार में आप सधन व्यक्ति हैं। एवं यहाँ के ओसवाल समाज में अच्छी प्रतिष्ठा रखते हैं। आपके पुत्र भँवरलालजी, अनंदमलजी एवं दुलीचन्दजी हैं।



स्वर्गीय मेहता बहादुरमलजी कोचर, बीकानेर



सेठ पूनमचन्दजी कोठारी, बीकानेर



मेहता शिवबख्शजी कोचर, बीकानेर



सेठ थानमलजी मुहणोत, बीदासर (परिचय पृष्ठ ६८४ में)



स्वर्गीय मेहता नेमीचन्दजी कोचर, बीकानेर.



मेहता मेघराजजी कोचर, बीकानेर.



मेहता लूनकरणजी कोचर, बीकानेर.



कुँवर रावतमलजी कोचर, बीकानेर.

मेहता बहादुरमलजी के छोटे भाई मेहता हस्तीमलजी भी राज्य में सर्विस करते रहे। आपका संवत् १९७४ में स्वर्गवास हो गया। आपके पुत्र मेहता शिवबख्शजी, सेठ मोजीराम पन्नालाल बाठिया की भागीदारी में छातों के कारखाने का संचालन एवं व्यापार करते हैं। तथा अच्छे प्रतिष्ठित सज्जन माने जाते हैं। आपके पुत्र मेघराजजी मेट्रिक में पढ़ते हैं। इनसे छोटे सम्पतलालजी एवं जतनलालजी हैं।

मेहता भींवसिंहजी कोचर का परिवार

कोचर उरझाजी के तीसरे पुत्र भीवसिंहजी की संतानों में समय २ पर कई प्रतिष्ठित व्यक्ति हुए। जिन्होंने बीकानेर रियासत की सेवाएं कर अच्छी प्रतिष्ठा प्राप्त की। इस परिवार में मेहता शाहमलजी नामांकित व्यक्ति हुए। आपको बीकानेर दरबार महाराजा सरदारसिंहजी ने संवत् १८६७ में दीवानगी का सम्मान बख्शा था।

मेहता भीवसिहजी के पुत्र पद्मराजजी थे। इनके चन्द्रसेनजी एवं इन्द्रसेनजी नामक २ पुत्र हुए। इनमें मेहता चन्द्रसेनजी के परिवार में मेहता मेघराजजी, लूणकरणजी, रावतमलजी एवं चम्पालालजी मेहता जतनलालजी, आदि सज्जन हैं। एवं चन्द्रसेनजी के परिवार में मेहता शिवबख्शजी हैं।

मेहता मेघराजजी, लूणकरणजी कोचर का खानदान—हम ऊपर मेहता चन्द्रसेनजी का नाम लिख आये हैं। आपके पुत्र अजबसिंहजी एवं अनोपचन्दजी बड़े बहादुर पुरुष थे। आप लोग रियासत की ओर से भनोपगढ़ आदि कई लड़ाइयों में शामिल हुए थे। मेहता अजबसिंहजी के पुत्र कीरतसिंहजी के जालिमचंदजी, मदनचन्दजी एवं केसरीचंदजी नामक ३ पुत्र हुए। आप बंधु स्टेट के ऊँचे २ ओहदों पर कार्य्य करते रहे। स्टेट ने आप लोगों को कई खास रुक्के बख्शे थे। इन भाइयों में मेहता मदनचन्दजी के पुत्र मोतीचन्दजी और पौत्र हरखचंदजी हुए। मेहता हरकचन्दजी तहसीलदारी के पद पर कार्य करते थे। संवत् १९५२ में आपका स्वर्गवास हुआ। आपको तथा आपके बड़े पुत्र को राज्य ने "शाह" की पदवी इनायत की थी। आपके मेहता नेमीचन्दजी एवं मेघराजजी नामक २ पुत्र हुए। इन बन्धुओं में मेहता मेघराजजी विद्यमान हैं। शाह नेमीचन्दजी आफीसर कोर्ट आफ वार्ड तथा आफीसर श्री बड़ा कारखाना थे। महाराजा श्रीगंगासिंहजी बहादुर आप पर बड़े प्रसन्न थे। आप स्पष्ट वक्ता एवं स्टेट के सच्चे ख़ैरख्वाह व्यक्ति थे। आपके पास स्टेट के प्राइवेट जवाहरात कोष की चाबियाँ अन्तिम समय तक रहीं। संवत् १९८९ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र मेहता लूणकरणजी एवं बिशनचन्दजी विद्यमान हैं। मेहता लूणकरणजी का जन्म संवत् १९४५ में हुआ। आप ९ सालों तक महकमा हिसाब तथा १६ सालों तक कंट्रोलर आफ दि हाउस होल्ड रहे। तथा संवत् १९८९ से अपने पिताजी के स्थान पर आप आफीसर श्री बड़ा कारखाना हैं। आप बड़े सरल एवं समझदार पुरुष हैं। आपके छोटे बन्धु बिशनचन्दजी खजाने में सर्विस करते हैं।

मेहता मेघराजजी कोचर का जन्म संवत् १९२९ में हुआ। आप वर्तमान महाराजा श्री गंगासिंहजी की बाल्यावस्था में उनके प्राइवेट दफ्तर के खजांची रहे। पश्चात् संवत् १९७२ में तहसीलदार बनाये गये। इसके बाद आप रामकुमार श्री सार्दुलसिंहजी की चीफ़ मिनिस्टरी के समय उनके पेशकार रहे। इधर संवत् १९८१ से आप पेंशन प्राप्त कर शान्तिलाभ कर रहे हैं। आप बड़े सरल एवं सज्जन पुरुष हैं। आपके पुत्र श्री रावतमलजी कोचर का जन्म संवत् १९६१ में हुआ। आप इस समय

बीकानेर में प्रेक्टिस करते हैं, एवं यहाँ के नामी वकील माने जाते हैं। आप बड़े मिलनसार एवं समझदार युवक हैं। तथा स्थानीय ओसवाल जैन पाठशाला एव महावीर मंडल की व्यवस्थापक कमेटी के मेम्बर हैं। आप शुद्ध खादी पहिनते हैं।

मेहता रतनलालजी, जतनलालजी कोचर का खानदान—हम ऊपर मेहता चन्द्रसेनजी तथा उनके पुत्र अजबसिंहजी एवं अनोपचन्दजी का परिचय दे चुके हैं। मेहता अनोपचन्दजी फरासखाने के मुंसरीम थे। आपके आसकरणजी, माणकचन्दजी एवं हठीसिंहजी नामक ३ पुत्र हुए। इनमें मेहता हठीसिंहजी के पुत्र रिखनाथजी हुए, जो आसकरणजी के नाम पर दत्तक गये। मेहता रिखनाथजी राज्य में सर्विस करते रहे। आप बड़ी धार्मिक वृति के पुरुष थे। आपके सुजानमलजी, चुन्नीलालजी एवं पन्नालालजी नामक ३ पुत्र हुए। इन बन्धुओं ने भी स्टेट की अच्छी सेवकाई की। मेहता पन्नालालजी, राव छत्रसिंहजी के वेद के साथ महाजन, बीदासर तथा नौहर की लड़ाइयों में शामिल हुए थे। आपके अनाड़मलजी तथा जसकरणजी नामक २ पुत्र हुए। मेहता अनाड़मलजी ने बीकानेर स्टेट के कस्टम विभाग के स्थापन में अच्छा सहयोग लिया था। आप चतुर एवं प्रभावशाली व्यक्ति थे। आपके रतनलालजी, जतनलालजी एवं राजमलजी नामक ३ पुत्र हुए, इनमें जतनलालजी मेहता जसकरणजी के नाम पर दत्तक गये। मेहता जसकरणजी का स्वर्गवास सवत् १९७५ में हुआ। मेहता रतनलालजी इस परिवार में बहुत समझदार एवं अपने समाज में सम्माननीय व्यक्ति थे। सवत् १९८९ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके छोटे बंधु मेहता जतनलालजी का जन्म संवत् १९४० में हुआ। आप लगभग ३५ सालों से बीकानेर रियासत में सर्विस करते हैं। एवं इस समय कस्टम सुपरिटेन्डेन्ट के पद पर हैं। आपने अपने पुत्रों को उच्च शिक्षा दिलाने में अच्छा लक्ष दिया है। आपके पुत्र चम्पालालजी, कन्हैयालालजी एवं शिखरचन्दजी हैं।

मेहता चम्पालालजी बी० ए० एल० एल० बी०—आपका जन्म संवत् १९६५ में हुआ। सन् १९२८ में आपने बनारस युनिवर्सिटी से बी० ए० एवं सन् १९३१ में एल० एल० बी० की डिगरी हासिल की। इसके पश्चात् आप बीकानेर स्टेट में नायब तहसीलदार, तहसीलदार एवं इंचार्ज नाजिम के पद पर कार्य्य करते रहे, एव इस समय आप असिस्टेंट टू दि रेवेन्यू कमिश्नर बीकानेर हैं। आप बड़े सुशील, होनहार एवं उग्र बुद्धि के युवक हैं। इतनी अल्प वय में जिम्मेदारी पूर्ण ओहदों का कार्य्य बड़ी तत्परता से करते हैं। आपके छोटे बंधु कन्हैयालालजी बी० ए० की तयारी कर रहे हैं। तथा उनसे छोटे शिखरचन्दजी बनारस युनिवर्सिटी में बी० ए० में पढ़ रहे हैं। आपके काका मेहता राजमलजी व्यापार करते है। इनके बड़े पुत्र सिरेमलजी मेट्रिक में पढ़ते हैं।

मेहता शिवबख्शजी कोचर का खानदान—हम ऊपर लिख आये हैं कि मेहता चन्द्रसेनजी के छोटे भाई इन्द्रसेनजी थे। इनके पश्चात् क्रमश हरीसिंहजी, गाजीमलजी, प्रतापमलजी एवं चुन्नीलालजी हुए। मेहता चुन्नीलालजी के मलूकचन्दजी एवं जेठमलजी नामक २ पुत्र हुए। आप दोनों भाई स्टेट की सर्विस करते रहे। इनमें मेहता मलूकचन्दजी संवत् १९५७ में स्वर्गवासी हुए। आपके शिवबख्शजी तथा हीराचन्दजी नामक २ पुत्र विद्यमान हैं। इनमें हीराचन्दजी, जेठमलजी के नाम पर दत्तक गये हैं। मेहता शिवबख्शजी का जन्म संवत् १९३९ में हुआ। मेट्रिक तक शिक्षा प्राप्त कर सन् १९०० में आप



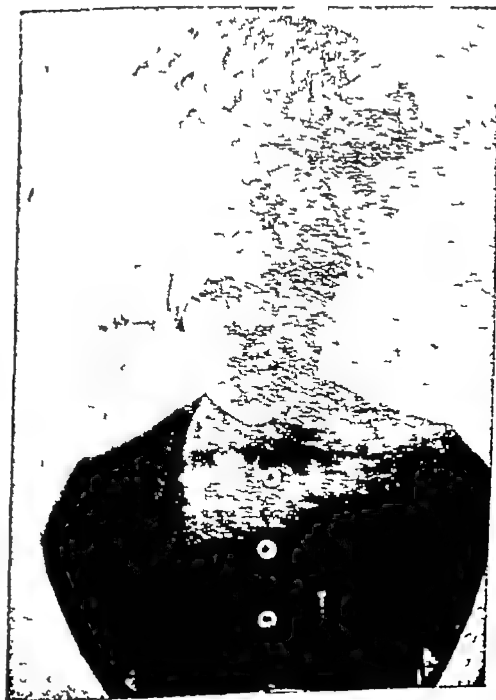
स्वर्गीय मेहता रतनलालजी कोचर, बीकानेर.



श्री मेहता जतनलालजी कोचर, बीकानेर



कुँवर चम्पालालजी कोचर, बी ए एल एल बी बीकानेर.



कुँवर शिखरचन्दजी कोचर, बीकानेर



सेठ पूनमचन्दजी नाहटा भादरा
एम एल ए. (बीकानेर स्टेट कौंसिल).



श्री रामचन्द्रजी सिंघी बी० ए०
S/o सेठ संतोषचन्दजी सिंघी, नौहर.



बिल्डिंग सेठ पूनमचन्दजी नाहटा भादरा, (बीकानेर स्टेट)



श्री सुगनचन्दजी गोलेछा, इनकमटेक्स आफीसर, अमरावती

बीकानेर स्टेट सर्विस में शामिल हुए। तथा कई औहदों पर कार्य्य करते हुए सन् १९१९ में आप असिस्टेंट इन्स्पेक्टर जनरल कस्टम एण्ड एक्साइज़ के पद पर मुकर्रर हुए, और तब से इस पद पर काम करते हैं। इस समय आप बीकानेर के कोचर परिवार में सबसे ऊँचे ओहदे पर हैं। स्थानीय ओसवाल जैन पाठशाला की उन्नति में आपका बजनदार सहयोग रहा है। आप सज्जन एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं।

सेठ लखमीचन्दजी रामलालजी नाहटा का परिवार भादरा (बीकानेर स्टेट)

इस परिवार के पूर्वज नाहटा खेतसीदासजी बिल्लू (भादरा से २२ कोस) से लग भग १०० साल पूर्व भादरा में आकर आबाद हुए। आपके नवलचन्दजी तथा जेठमलजी नामक २ पुत्र हुए। आप दोनों बन्धु भी साधारण लेन देन करते रहे। सेठ नवलचंदजी के रामलालजी एवं जेठममजी के लखमीचन्दजी नामक पुत्र हुए।

सेठ रामलालजी नाहटा का परिवार—सेठ रामलालजी का जन्म संवत् १९२३ में हुआ। आप भादरा एवं आसपास की जनता में प्रतिष्ठा प्राप्त महानुभाव थे। संवत् १९७८ से ८५ तक आप बीकानेर स्टेट कौंसिल की मेम्बर शिप के सम्माननीय पद पर निर्वाचित रहे। इसके अलावा आप बहुत समय तक भादरा म्यु० के मेम्बर रहे। जनता आपको बड़े आदर की निगाहों से देखती थी। सवत् १९८५ की मगसर सुदी ५ को आप स्वर्गवासी हुए। आपके लूणकरणजी, सुगनचन्दजी एवं पन्नालालजी नाम ३ पुत्र विद्यमान हैं। आप बंधुओं का जन्म क्रमशः संवत् १९४५, ५० तथा १९६१ में हुआ है। मेहता लूणकरणजी भादरा म्यु० के मेम्बर हैं। आपके पुत्र नेमीचन्दजी, सोहनलालजी, मोहनलालजी, भँवरलालजी एवं हुकुमचन्दजी हैं। नाहटा सुगनचन्दजी के पुत्र इन्द्रचन्द्रजी है। नाहटा पन्नालालजी समझदार तथा मिलनसार सज्जन हैं। आपके पुत्र रामचन्दजी हैं। आपके यहाँ "नवलचन्द रामलाल" के नाम से व्यापार होता है। तथा निर्मली (भागलपुर) और फाजिलका में आपकी दुकानें हैं, जिन पर जमीदारी तथा लेन देन का व्यापार होता है। यह परिवार भादरा में अच्छी प्रतिष्ठा रखता है।

सेठ लखमीचन्दजी नाहटा का परिवार—सेठ लखमीचन्दजी का जन्म संवत् १९०८ में हुआ। आप इस परिवार में बड़े नामांकित व्यक्ति हुए आपने अपने आसामी लेन देन के व्यापार को बहुत बढ़ाया, एवं इसमें सम्पत्ति उपार्जित कर संवत् १९५३ में हिसार जिले में सारंगपुर नामक एक गाँव खरीद किया। व्यापार और स्टेट की वृद्धि के साथ २ आपने बीकानेर स्टेट एवं जनता में भी काफी सम्मान पाया। ६ सालों तक आपको बीकानेर स्टेट कौंसिल की मेम्बरी का सम्मान मिला। भादरा व आसपास की जनता आपका बड़ा आदर करती थी। आप बड़े सरल पुरुष थे, अभिमान आपको छू तक नहीं गया था। इस प्रकार प्रतिष्ठा पूर्वक जीवन विताते हुए संवत् १९७७ की भादवा सुदी १२ को आप स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र सेठ भेरोंदानजी नाहटा होनहार तथा जनता में प्रिय युवक थे। लेकिन संवत् १९६२ में २८ साल की वय में इनका स्वर्गवास हो गया। आपके पुत्र नाहटा पूनमचन्दजी का जन्म संवत् १९५८ की आसोज सुदी १५ को हुआ। आप भी अपने पूर्वजों की तरह प्रतिष्ठिति एवं समझदार सज्जन हैं। संवत् १९८५ से आप बीकानेर स्टेट असेम्बली की मेम्बरी का स्थान सुशोभित कर रहे हैं। इधर ३ सालों से भादरा म्यु० के मेम्बर व १ साल से वाइस प्रेसिडेंट हैं। यूरोपीय वार के समय गव्हर्नमेंट ने सार्टिफिकेट एवं

"सिल्वर मेडल घड़ी" देकर आपकी इज्जत की थी। आप के यहाँ "जेठमल लखमीचन्द" के नाम से बेंकिंग व जमीदारी का कार्य्य होता है, एवं बीकानेर स्टेट के प्रतिष्ठा प्राप्त परिवारों में इस कुटुम्ब की गणना है। यह परिवार श्री श्वे० जैन तेरापंथी आम्नाय का मानने वाला है।

सेठ जेठमल लखमीचन्द फर्म के वर्तमान मुनीम चम्पालालजी चोरड़िया हैं। आपके पितामह सेठ चिमनीरामजी चोरड़िया रिणी से भादरा आये। इनके पुत्र सेठ वींजराजजी चोरड़िया सेठ लखमीचंदजी के समय उनके यहाँ मुनीम हुए। तथा मालिकों के कारबार को आपने बहुत बढ़ाया। भादरा की जनता में आप बड़े आदरणीय सम्माननीय एवं वजनदार पुरुष थे। संवत् १९७१ में आपका स्वर्गवास हुआ। आपके पुत्र चम्पालालजी भी प्रतिष्ठित, मिलनसार एवं सज्जन व्यक्ति हैं।

सेठ संतोषचन्दजी सदासुखजी सिंघी, नौहर

जोधपुर के सिंघी परिवार से इस कुटुम्ब का निकट सम्बन्ध था। वहाँ से १७५ वर्ष पूर्व यह परिवार "छापर" आया, एवं वहाँ से "सवाई" में आबाद हुआ। सवाई से सिंघी परिवार सरदारशाह, सुजानगढ़ नौहर आदि स्थानों में जा बसा। सवाई से लगभग १५० साल पूर्व इस परिवार के पूर्वज लालचन्दजी के पिताजी नौहर आये। सिंघी लालचन्दजी के खेतसीदासजी, मेघराजजी तथा चौथमलजी नामक ३ पुत्र हुए। इनमें खेतसीदासजी सवा सौ साल पूर्व आसाम प्रान्त के जोरहाट नामक स्थान में गये। कहा जाता है कि आपकी होशियारी से खुश होकर जोरहाट के तत्कालीन अधिपति ने आपको अपनी रियासत का दीवान बनाया। १८ साल में कई लाख रुपयों का जवाहरात लेकर आप वापस नौहर आये। तथा आपने यहाँ सराफे का रोजगार शुरू किया। संवत् १९२५ आप स्वर्गवासी हुए। आपके पूरनमलजी तथा रिखबचन्दजी नामक २ पुत्र हुए। सेठ पूरनमलजी नौहर के म्युनीसिपल मेम्बर व प्रतिष्ठित पुरुष थे। आप बड़े दयालु स्वभाव के थे। संवत् १९५६ में आपने जनता की अच्छी सहायता की थी। संवत् १९८४ में आपका स्वर्गवास हो गया। आपके पुत्र सेठ संतोपचन्दजी का जन्म संवत् १९४२ में हुआ। आप भी नोहर के अच्छे प्रतिष्ठित एवं शिक्षा प्रेमी सज्जन हैं। आप स्थानीय म्युनिसिपैलेटी तथा धर्मादा कमेटी के मेम्बर हैं। आपने अपने पुत्रों को शिक्षित करने की ओर काफी लक्ष दिया है। सेठ संतोषचन्दजी श्री जैन तेरापथी सम्प्रदाय का अच्छा ज्ञान रखते हैं। आपके इस समय सदासुखजी, हीरालालजी, रामचन्द्रजी, पांचीलालजी एवं इन्द्रचन्दजी नामक ५ पुत्र हैं। इन बन्धुओं में सिंघी रामचन्द्रजी बी० ए० पास करके दो साल पूर्व चार्टेड अकांउटेंसी का अध्ययन करने के लिये लंदन गये हैं। सदासुखजी, हीरालालजी एवं पांचीलालजी का भी शिक्षा की ओर अच्छा लक्ष है। आप तीनों भाई फर्म के व्यापार में भाग लेते हैं। इस समय आपके यहाँ "संतोषचन्द सदासुख" के नाम से ११ आर्मेनियन स्ट्रीट में पाट का व्यापार होता है। श्री सदासुखजी के पुत्र भँवरलाल, जसकरण, हीरालालजी के पुत्र रतनलाल एवं रामचन्द्रजी के पुत्र जयसिंह हैं। नौहर में यह परिवार अच्छा प्रतिष्ठित माना जाता है। इसी तरह इस कुटुम्ब में सेठ, रिखबचन्दजी के पुत्र कालूरामजी नेपाल में व्यापार करते थे। संवत् १९८० में आपका स्वर्गवास हो गया। इस समय आपके पुत्र मेगराजजी कलकत्ते में एफ० ए० में पढ़ रहे हैं।

सेठ थानमलजी मुहणोत, बीदासर (बीकानेर स्टेट)

इस परिवार का मूल निवास तोसीणा (जोधपुर) है। यहाँ से मुहणोत मंगलचंदजी लगभग सं० १८९० में बीदासर आये। यहाँ से लगभग सं० १९१० में आपके पुत्र कुन्दनमलजी व्यापार के लिये कलकत्ता गये। सं० १९५७ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र मुहणोत थानमलजी का जन्म सं० १९३५ में हुआ। आप भी सं० १९४६ में कलकत्ता गये, तथा सेठ थानसिंह करमचन्द दूगड़ की भागीदारी में कारबार करते रहे। सं० १९७२ में आपने तथा बीदासर निवासी सेठ दुलीचन्दजी सेठिया और सुजानगढ़ के सेठ नेमीचन्दजी डागा ने मिल कर भागीदारी में कलकत्ते में जूट बेलर का व्यापार आरंभ किया, तथा इस व्यापार में आप सज्जनों ने अपनी होशियारी, चतुराई और बुद्धिमानी से अच्छी सम्पत्ति एवं सम्मान उपार्जित किया। एवं अपनी फर्म की शाखाएं रंगपुर, भौंगड़िया, नागा आदि जगहों पर खोलीं। इस समय आप तीनों सज्जनों का व्यापार "दुलीचन्द थानमल" के नाम से १०५ पुराना चीना बाजार में होता है। सेठ थानमलजी। बिदासर के प्रतिष्ठित सज्जन हैं। आपको सन् १९३२ में बीकानेर दरबार ने पैरों में सोना पहिनने का अधिकार बख्शा है। आपके पुत्र कानमलजी एवं मागीलालजी हैं।

श्री सेठ कस्तूरचन्द उत्तमचन्द छाजेड़, मद्रास

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ उत्तमचन्दजी छाजेड़ हैं। आप सरल प्रकृति के सज्जन हैं। आप सेठ कस्तूरचन्दजी छाजेड़ के पुत्र हैं। आपका मूल निवास बीकानेर है। आप मद्रास के चांदी सोने के अच्छे व्यवसायी हैं। एवं मन्दिर मार्गीय आम्नाय के मानने वाले सज्जन हैं। खेद है कि आपका परिचय खोजाने से विस्तृत नहीं छापा जा सका। आपके फोटो "छाजेड़" गौत्र में छापे गये हैं।

श्री सुगनचन्दजी गोलेछा, अमरावती

आप शिक्षित सज्जन हैं। एवं इस समय अमरावती (बरार) में इनकम टेक्स आफीसर के पद पर कार्य्य करते हैं। वहाँ के सरकारी आफीसरों में एवं जनता में सम्माननीय व्यक्ति हैं। खेद है कि आपका परिचय प्राप्त न होने से जितनी हमारी जानकारी थी, उतना ही लिखा जा रहा है।

श्रीयुत लक्ष्मीलालजी बोरड़िया, इन्दौर

आपका मूल निवासस्थान उदयपुर है। आपने आरम्भ में बांसवाड़ा राज्य में सर्विस की। इसके बाद आपने इन्दौर में असिस्टेंट गेजेटियर आफिसर, असिस्टेंट प्रेस सुपरिन्टेन्डेन्ट आदि अनेक पदों पर कार्य किया। इस समय आप कॉटन ऑफिस में ऑफिस सुपरिन्टेन्डेन्ट के पद पर अधिष्ठित हैं। आप समाज सुधारक तथा उन्नत विचारों के सज्जन हैं। आपके ५ पुत्र हैं। सबसे बड़े पुत्र केसरीमलजी इन्दौर होलकर कॉलेज में प्रोफेसर हैं। और दूसरे पुत्र नंदलालजी बोरडिया इन्दौर के महाराजा तुकोजीराव अस्पताल में डाक्टर हैं। तीसरे पुत्र नोरतनमलजी इलाहाबाद में बी० ए० में पढ़ते हैं। तथा चौथे पुत्र चन्द्रसिंहजी विद्याभवन उदयपुर में शिक्षा पा रहे हैं। आप सभी सज्जन बड़े उन्नत तथा समाज सुधारक विचारों के हैं। यह कुटुम्ब अच्छे संस्कारों वाला है और इन्दौर में इस परिवार ने परदा प्रथा को तिलांजलि देकर समाज के सम्मुख अनुकरणीय आदर्श रक्खा है। आपके प्रथम तीनों पुत्र देशभक्त भी हैं।

सेठ समीरमल भेरूदान फतेपुरिया, अमरावती

इस परिवार के पूर्वज सेठ भेरूदानजी दूगड़ ११ साल की आयु में सम्वत् १९११ में अमरावती आये। आपने यहाँ होशियार होकर "धर्मचंद केशरीचंद" भेरूदान जेठमल, तथा पूरनमल प्रेमसुखदास नामक दुकानों पर सर्विस की। सम्वत् १९४५ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र सेठ समीरमलजी दूगड़ का जन्म संवत् १९२७ में हुआ। आप अपने पिताजी के स्थान पर संवत् १९८२ तक "सेठ पूरनमल प्रेमसुखदास" के यहाँ मुनीमात करते रहे। इस समय आपके यहाँ आढ़त, रुई, दलाली तथा किराये का व्यापार होता है। अमरावती के ओसवाल समाज में आप समझदार तथा प्रतिष्ठित सज्जन हैं।

सेठ रावतमल करनीदान गोलेछा, मद्रास

यह परिवार खिचंद (मारवाड़) का निवासी है, तथा श्वेताम्बर स्थानकवासी आम्नाय का मानने वाला है। सेठ शोभाचन्दजी गोलेछा के पुत्र करनीदानजी और रावतमलजी हुए। सेठ करनीदानजी ने संवत् १९३८ में मद्रास में दुकान खोली। इसके पूर्व इनका विजगापट्टम तथा बम्बई में व्यापार होता था। संवत् १९४८ में करनीदानजी का स्वर्गवास हुआ। आपके पुत्र जवानमलजी तथा सदासुखजी ने और सेठ रावतमलजी के पुत्र बख्तावरमलजी और अगरचंदजी ने व्यापार को विशेष बढ़ाया। सेठ बख्तावरमलजी ने अंग्रेजों के साथ व्यापार कर बहुत उन्नति प्राप्त की। आप खिचंद व आसपास की पंचपंचायती में सम्माननीय व्यक्ति थे। संवत् १९७२ में ४५ साल की आयु में आप स्वर्गवासी हुए। आपके ३ साल बाद आपके पुत्र किशनलालजी भी स्वर्गवासी होगये, अतः उनके नाम पर विजयलालजी दत्तक आये हैं। आप विद्यमान हैं।

गोलेछा अगरचंदजी के कँवरलालजी, खेवरचंदजी, विजयलालजी, नेमीचन्दजी तथा लालचंदजी नामक पुत्र विद्यमान हैं। इसी प्रकार सेठ जवानमलजी के पुत्र राजमलजी, अमरचंदजी तथा भँवरलालजी और सदासुखजी के पुत्र जीवनलालजी, माणिकलालजी तथा सुखलालजी विद्यमान हैं। इनमें विजयलालजी, किशनलालजी गोलेछा के नाम पर दत्तक गये हैं। आप लोगों का मद्रास के "वेपेरी सुला" नामक स्थान में ब्याज और बैंकिंग व्यापार होता है।

सेठ चौथमल दुलीचन्द दस्साणी, सरदारशहर

इस परिवार का मूल निवास स्थान अजमेर है। वहाँ से यह परिवार बीकानेर, डांडूसर आदि स्थानों में निवास करता हुआ सरदारशहर के बसने के समय यहाँ आकर आबाद हुआ। यहाँ दस्साणी हुकुमचन्दजी आये। आप के सालमचन्दजी, चौथमलजी एवं मुल्तानचन्दजी नामक ३ पुत्र हुए। आप बंधु संवत् १८८० के लगभग लखनऊ गये। कहा जाता है कि लखनऊ के नवाब से इनका मैत्री का सम्बन्ध था। सन् १९१४ में गदर की लूट होने से आप लोग सरदारशहर चले आये। इन भाइयों में सालमचन्दजी तो बीकानेर दत्तक गये। और सेठ चौथमलजी एवं मुल्तानचन्दजी संवत् १९१५ में कलकत्ता गये। एवं मुल्तानचन्द दुलीचन्द के नाम से कपड़े का व्यापार आरंभ किया। संवत् १९३५ में इस दुकान पर गरम और रेशमी कपड़े का धन्धा शुरू हुआ। आप दोनों भाई क्रमशः संवत् १९४९ में तथा १९३४ में स्वर्ग वासी हुए। सेठ चौथमलजी के दुलीचन्दजी, केसरीचन्दजी, सुन्नीलालजी, मग

राजजी तथा कोड़ामलजी और मुलतानचन्दजी के भैरोंदानजी नामक पुत्र हुए। सेठ चौथमलजी १० साल की वय में संवत् १९२४ में कलकत्ता गये। आपने अपनी दुकान के व्यापार व सम्मान को बहुत बढ़ाया। संवत् १९६९ से सेठ दुलीचन्दजी का भाग मुलतानचन्दजी से अलग हो गया, तब से दुलीचन्दजी अपने भाइयों के साथ कारबार करने लगे। इसी साल आप अपनी दुकान का काम अपने भाइयों के जिम्मे छोड़ सरदारशहर में आ गये एवं धार्मिक जीवन बिताते हुए संवत् १९८६ में स्वर्ग वासी हुए। आपने उपवास त्याग और तपस्या के बड़े २ कार्य्य किये। अपनी पत्नी के साथ ३१ दिनों के उपवास किये। अपने जीवन के अन्तिम ५ सालों में आप केवल ८ वस्तुओं का उपयोग करते थे। संवत् १९७५ में सेठ दुलीचन्दजी के सब भ्राताओं का कारबार अलग २ हो गया। सेठ दुलीचन्दजी के संतोपचन्दजी, धनराजजी, बरदीचन्दजी, नथमलजी, चंदनमलजी, सदासुखजी एवं कुशलचन्दजी नामक ७ पुत्र हुए। इनमें सेठ संतोपचन्दजी को छोड़ कर शेप सब भाई मौजूद हैं। सेठ संतोपचन्दजी ने इस फर्म पर इम्पोर्ट व्यापार आरंभ किया। आप बुद्धिमान् एवं व्यापार चतुर पुरुप थे। आप संवत् १९७४ में स्वर्ग वासी हुए। आपके पुत्र मोतीलालजी एवं इन्द्रचन्दजी हैं। आपके छोटे भ्राता सेठ धनराजजी ने संवत् १९७५ में श्री जैन तेरापंथी सम्प्रदाय में दीक्षा ग्रहण की है।

इस समय सेठ "चौथमल दुलीचन्द" फर्म के मालिक सेठ मोतीलालजी, इन्द्रचन्दजी, नथमलजी, चंदनमलजी, कुशलचन्दजी एवं सेठ कोडामलजी के पुत्र रिधकरणजी हैं। इन भाइयों में मोतीलालजी, इन्द्रचन्दजी तथा रिधकरणजी फर्म के प्रधान संचालक हैं। आप सज्जनों के हाथों से व्यापार की वृद्धि हुई है। आप बंधुओं के साथ अन्य भाई भी व्यापार में सहयोग देते हैं। सेठ मोतीलालजी समझदार पुरुप हैं। एवं इस परिवार में सब से बड़े हैं। आपके पुत्र श्री शुभकरणजी को उनके मामा सुजानगढ़ निवासी सेठ हजारीमलजी रामपुरिया ने अपनी सम्पत्ति प्रदान की है। आप होनहार युवक हैं। इस समय आप लोगों के यहाँ कलकत्ते के मनोहरदास कटला और केशोराम कटला में देशी विलायती कपड़े का इम्पोर्ट, व देशी मिलों के कपड़े की कमीशन सेलिंग एवं बैंकिंग तथा जूट का व्यापार होता है। इसके अलावा फारबिसगंज (बंगाल) में जूट और जमीदारी का काम होता है। यह परिवार सरदारशहर के ओसवाल समाज में अच्छा प्रतिष्ठित माना जाता है।

सेठ रावतमल प्रेमसुख गुलगुलिया, देशनोक (बीकानेर)

इस परिवार का मूल निवासस्थान नाल (बीकानेर) था। वहाँ से गुलगुलिया रामसिंहजी के पुत्र पीरदानजी तथा रावतमलजी संवत् १९२५ में देशनोक आये, तथा इन बन्धुओं ने यहाँ अपना स्थाई निवास बनाया। सवत् १९३६ में सेठ पीरदानजी सिलहट गये और संवत् १९४२ में आपने मोल्वी बाजार (सिलहट) में दुकान खोली। २ साल बाद सेठ रावतमलजी भी मोलवी बाजार आगये। सं० १९४७ में इस फर्म की एक ब्रांच श्रीमङ्गल में भी खोली गई। इन दोनों दुकानों पर "पीरदान रावतमल" के नाम से व्यापार होता था। सम्वत् १९६५ में दोनों बन्धुओं का कारबार अलग २ होगया। तब से मोल्वी बाजार की दुकान सेठ रावतमलजी के भाग में एवं श्रीमंगल की दुकान पीरदानजी के भाग में आई। एवं इन दुकानों पर पुराने नाम से ही व्यापार चालू रहा। सम्वत् १९७८ में सेठ पीरदानजी स्वर्गवासी

हुए। आपके तोलारामजी, मोतीलालजी, प्रेमसुखजी, नेमचन्दजी एवं सोहनलालजी नामक ५ पुत्र हुए। इनमें तोलारामजी सम्वत् १९७२ में गुजर गये। तथा शेष ४ भाई विद्यमान हैं। श्री प्रेमसुखजी अपने काका सेठ रावतमलजी के नाम पर दत्तक गये हैं।

सेठ रावतमलजी का जन्म सम्वत् १९३८ में हुआ। आपने मोलवी बाजार के व्यापारियों में अच्छी इज्जत पाई। आप वहाँ की लोकल बोर्ड के मेम्बर भी रहे थे। सम्वत् १९७७ में आपने श्रीमङ्गल के नूतन बाजार में दुकान खोली। इस समय आप देशनोक में ही धार्मिक जीवन बिताते हैं। आपके दत्तक पुत्र श्री प्रेमसुखजी का जन्म संवत् १९५८ में हुआ। आपका मोलवी बाजार और श्रीमङ्गल की दुकानों के अतिरिक्त प्रेमनगर (सिलहट) में भागीदारी में एक चाय का बागान है। इन स्थानों पर और देशनोक में यह परिवार अच्छा प्रतिष्ठित माना जाता है।

इसी प्रकार सेठ पीरदानजी के शेष पुत्र मोतीलालजी, नेमचन्दजी तथा सोहनलालजी, श्रीमंगल, भानुगाछ और समशेरनगर (सिलहट) में अपना स्वतन्त्र व्यापार करते हैं।

सेठ चतुर्भुज हनुमान बख्श बोथरा, गंगाशहर

यह परिवार जालोर से बोढ़वण, भग्गू और वहाँ से पारवा आकर आबाद हुआ। पारवा से संवत् १९७६ में गंगाशहर में इस परिवार ने अपना निवास बनाया। इस परिवार के पूर्वज सेठ लालचन्दजी के पुत्र जोरावरमलजी बोथरा संवत् १९०५ में दिनाजपुर गये तथा वहाँ अपना धंधा शुरू किया। संवत् १९३० में आपने फूलवाड़ी (दिनाजपुर) में अपनी दुकान खोली। आपके अगरचन्दजी, चुन्नीलालजी, तनसुखदासजी, राजरूपजी एवं चतुर्भुजजी नामक ५ पुत्र हुए। संवत् १९४४ में सेठ जोरावरमलजी स्वर्गवासी हुए। संवत् १९४३ में सेठ चतुर्भुजजी बंगाल गये, एवं कलकत्ते में "अगरचन्द चतुर्भुज" के नाम से दुकान खोली। सेठ चुतुर्भुजजी के हाथों से इस दुकान के व्यापार तथा सम्मान को उन्नति मिली। संवत् १९८३ में इस फर्म से सेठ राजरूपजी और अगरचन्दजी का तथा संवत् १९८८ में सेठ तनसुखदासजी का कारबार अलग हुआ।

इस समय सेठ चुन्नीलालजी एवं चतुर्भुजजी का व्यापार शामिल है। सेठ चुन्नीलालजी के पुत्र कालूरामजी, चिमनीरामजी, रेखचन्दजी, पूसराजजी एवं अमोलकचन्दजी तथा सेठ चतुर्भुजजी बोथरा के पुत्र हनुमानमलजी एवं तोलारामजी हुए। इन भाइयों में चिमनीरामजी, रेखचन्दजी और पूसराजजी का स्वर्गवास हो गया है। तथा कालूरामजी, अमोलकचन्दजी एवं हनुमानमलजी व्यापार में भाग लेते हैं। इस परिवार का "चतुर्भुज हनुमान बख्श" के नाम से १६ बनफील्ड्स लेन कलकत्ता में जूट कपड़ा तथा आढ़त का कारबार होता है। गंगाशहर में यह परिवार अच्छा प्रतिष्ठित माना है।

इसी तरह इस परिवार में सेठ अगरचन्दजी के दत्तक पौत्र खेवरचन्दजी तथा राजरूपजी के पुत्र जसरूपजी और रामलालजी "अगरचन्द रामलाल" के नाम से १९५।१ हरिसन रोड में एवं तनसुखदासजी के पुत्र रावतमलजी, "इन्द्रचन्द प्रेमसुख" के नाम से आर्मेनियन स्ट्रीट में व्यापार करते हैं। यह परिवार श्वेताम्बर जैन स्था० आम्नाय का माननेवाला है।

सेठ दुलीचन्दजी सेठिया का परिवार बीदासर (बीकानेर स्टेट)

इस परिवार का मूल निवास बीदासर है। यहाँ से सेठ भेरोंदानजी सेठिया ८ साल की उमर में कलकत्ता गये। एवं सेठ थानसिंह करमचन्द दूगढ़ के यहाँ मुनीमात करते रहे, इनके पुत्र सेठ दुलीचन्दजी सेठिया १९३८ में कलकत्ता गये, तथा दूगड़ फर्म पर भागीदारी में व्यापार करते रहे। पश्चात् १९७२ में थानमलजी मुहणोत आदि के साथ "दुलीचन्द थानमल" के नाम से जूट का व्यापार शुरू कर अपनी कई शाखाएं बाहर खोली। संवत् १९८० में आप स्वर्गवासी हो गये। इस समय आपके पुत्र प्रतापमलजी, जेठमलजी एवं आपके छोटे भाई कुंदनमलजी तथा मोतीचंदजी विद्यमान हैं। आप सब सज्जन व्यक्ति हैं। तथा बीदासर में आपका परिवार अच्छा प्रतिष्ठित माना जाता है। सेठ प्रतापमलजी के ५ जेठमलजी के १ मोतीचन्दजी के १ एवं कुंदनमलजी के ७ पुत्र हैं।

सेठ छोगमल मोहनलाल दुधोरिया, छापर (बीकानेर स्टेट)

यह परिवार मूल निवासी लाच्छरसर (बीकानेर) का है। वहाँ से सेठ भारमलजी दुधेरिया संवत् १९१२ में छापर आये। आपके सूरजमलजी, बींजराजजी एवं छोगमलजी नामक तीन पुत्र हुए। छापर से सेठ सूरजमलजी दुधोरिया व्यापार के लिये शिलांग गये एवं वहाँ गवर्नमेंट आर्मी को रसद सप्लाय करने का कार्य्य करने लगे। आपके साथ आपके बंधु सेठ शेरमलजी एवं कालूरामजी दुधोरिया भी सम्मिलित थे। इन भाइयों ने व्यापार में अच्छी सम्पत्ति पैदा कर अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाई। पीछे से सेठ बींजराजजी तथा छोगमलजी दुधोरिया भी शिलांग गये। तथा इन भाइयों ने तेजपुर, पटना, कलकत्ता गोहाटी, आदि स्थानों में अपनी दुकाने खोलीं। एव इन दुकानों पर रवर चलानी एवं अफीम गांजे की कंट्राक्टिंग का व्यापार शुरू किया। इन सज्जनों के साथ लाडनूं के सेठ शिवचन्द सुल्तानमल सिंघी तथा हजारीमल सुलतानमल बोरड भी सम्मिलित थे। संवत् १९६० में कालूरामजी और पांचीरामजी दुधोरिया इस फर्म से अलग हुए। इसी तरह और लोग भी अलग २ हो गये। संवत् १९७८ में सेठ भारमलजी दुधारिया के पुत्र भी अलग २ हो गये। तथा सूरजमलजी एवं बींजराजजी साथ में और छोगमलजी एवं चोथमलजी (शेरमलजी के पुत्र) सामिल व्यापार करते रहे। सेठ सूरजमलजी का १९४० बींजराजजी का १९८७ में तथा छोगमलजी का संवत् १९८२ में स्वर्ग वास हुआ।

सेठ बींजराजजी के पुत्र सुसीलालजी, सागरमलजी तथा धनराजजी हुए। इनमें सेठ सागरमलजी, दुधोरिया सूरजमलजी के नाम पर दत्तक गये। वर्तमान में आप तीनों भाइयों के तेजपुर में "भारमल सूरजमल" के नाम से कई "चाय बागान" हैं। इसी प्रकार सेठ छोगमलजी के पुत्र मोहनलालजी, तिलोकचन्दजी तथा जसकरणजी गोहाटी में "छोगमल मोहनलाल" के नाम से आढ़त का व्यापार करते हैं। सागरमलजी के पुत्र मांगीलालजी, सुसीलालजी के पुत्र हजारीमलजी, जयचन्दलालजी, मालचंदजी, मांगीलालजी, तथा मोहनलालजी के पुत्र पूनमचन्दजी, लादूरामजी एवं तिलोकचन्दजी के पुत्र समीरमल हैं।

सेठ मोतीलालजी हीरालालजी सिंघी, बीकानेर

यह परिवार मूल निवासी किशनगढ़ का है। वहाँ से सिंघी शेरसिंहजी, बीकानेर आये। आपके पुत्र सिंघी कुंदनमलजी व्यापार के लिए बीकानेर से बंगाल गये। तथा ढाका और पटना में गल्ला का व्यापार आरंभ किया। आपके सिंघी बख्तावरचन्दजी तथा सिंघी मोतीलालजी नामक २ पुत्र हुए। आप दोनों बंधु भी बंगाल प्रान्त में व्यापार करते रहे। सेठ मोतीलालजी सिंघी से पुत्र हीरालालजी का जन्म संवत् १९४३ में हुआ। आपने संवत् १९६९ में कलकत्ते में कपड़े की दुकान खोली। आप बीकानेर के ओसवाल समाज में अच्छे प्रतिष्ठित सज्जन माने जाते हैं। इस समय आप "मोतीलाल हीरालाल" के नाम से कलकत्ते में कपड़े का व्यापार करते हैं।

सेठ शालिगराम लुनकरण* दस्साणी का खानदान, बीकानेर

सेठ हीरालालजी दस्साणी—इस परिवार के पूर्वज सेठ हीरालालजी दस्साणी का जन्म सं० १८८५ में हुआ। आप बीकानेर में कपड़े का व्यापार करते थे। तथा वहाँ की जनता और अपने समाज में गण्य-मान्य पुरुष माने जाते थे। बीकानेर दरबार श्री सरदारसिंहजी एवं श्री डूँगरसिंहजी के समय में आप राज्य को आवश्यक कपड़ा सप्लाय भी करते थे। आपके उदयचन्दजी तथा सालिगरामजी नाम के २ पुत्र हुए।

सेठ उदयचन्दजी दस्साणी—आपका जन्म सम्वत् १९१० में हुआ। आप बीकानेर के दस्साणी परिवार में सर्व प्रथम कलकत्ता जाने वाले व्यक्ति थे। बाल्यकाल ही में आपने पैदल राह से कलकत्ते की यात्रा की। एवं वहाँ १२ सालों तक व्यापार कर आप वापस बीकानेर आ गये। तथा यहाँ अल्पवय में सम्वत् १९३९ में स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र सुमेरचन्दजी दस्साणी हुए।

सेठ सालिगरामजी दस्साणी—आपका सम्वत् १९२२ में जन्म हुआ। आप बुद्धिमान, व्यापारदक्ष तथा प्रतिभाशाली सज्जन थे। आपने १३ साल की अल्पवय में पैदल राह द्वारा व्यवसायार्थ कलकत्ते की यात्रा की। एवं वहाँ कुछ समय व्यापार करने के अनंतर बीकानेर के माहेश्वरी सज्जन सेठ शिवदासजी गंगादासजी मोहता की भागीदारी में कपड़े का व्यापार चालू किया। तथा बाद में शालिगराम सुमेरमल के नाम से अपनी २ स्वतंत्र दुकानें भी खोलीं। जिनमें एक पर देशीधोती तथा दूसरी पर विलायती मारकीन का प्रधान व्यापार होता था। इन व्यापारों में आपने कई लाख रुपयों की सम्पत्ति उपार्जित की थी। आप कलकत्ता मर्चेंट कमेटी के सदस्य थे। एवं अपने समय के समाज में प्रभावशाली तथा समझदार व्यक्ति माने जाते थे। सम्वत् १९७४ में आपका स्वर्गवास हुआ। आपके पुत्र लूनकरणजी, मंगलचन्दजी, सम्पतलालजी तथा सुन्दरलालजी इस समय विद्यमान हैं।

सेठ सुमेरमलजी दस्साणी—आप भी कलकत्ते के मारवाड़ी व्यापारिक समाज में प्रतिष्ठित सज्जन माने जाते थे। सम्वत् १९७६ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके स्वर्गवासी हो जाने के बाद असहयोग आन्दोलन के कारण उपरोक्त "सालिगराम सुमेरमल" फर्म का काम बंद कर दिया गया। साथ ही सेठ शिव-दासजी गंगादासजी की फर्म से भागीदारी भी हटा ली गई। आपके पुत्र सतीदासजी तथा भँवरलालजी हैं।

---

* खेद है कि आपका परिचय समय पर न आने से यथा स्थान नहीं छापा जा सका।

सेठ लूनकरणजी, मंगलचन्दजी—आप लोग वर्तमान में अपनी "शालिगराम लूनकरण दस्साणी" नामक फर्म के प्रधान संचालक हैं। यह फर्म नं० ४ राजा उडमंड स्ट्रीट कलकत्ता में व्यापार करती है। बीकानेर राज सभा एवं दर्बार खास आदि अवसरों के समय आप लोग निमंत्रित किये जाते हैं। आपका परिवार बीकानेर के ओसवाल समाज में गण्य मान्य एवं प्रतिष्ठित माना जाता है। आपके छोटे भाई सम्पतलालजी एवं सुंदरलालजी पढ़ते हैं। आप लोग श्वे० जैन मन्दिर मार्गीय आम्नाय को मानने वाले हैं।

श्री खुशालचंदजी खजांची (चांदा)

इस परिवार के पूर्वज सेठ हीरालालजी खजांची बीकानेर से लगभग ७० साल पहिले कामठी आये तथा सेठ जेठमलजी रामकरणजी गोलेछा की दुकान पर मुनीम रहे। इनके दुलीचन्दजी तथा घासीरामजी नामक २ पुत्र हुए। हीरालालजी संवत् १९५३ में गुजरे और इनके स्थान पर इनके पुत्र घासीरामजी मुनीमात करने लगे। संवत् १९७६ में कामठी में घासीरामजी का शरीरान्त हुआ। आपके पुत्र खुशालचंदजी, लूणकरणजी तथा ताराचंदजी हुए। श्रीखुशालचंदजी खजांची १६ साल की वय में संवत् १९७० में चाँदा आये। आपका शिक्षण मेट्रिक तक हुआ। सन् १९२२ से आपने सार्वजनिक तथा देश हित के कार्यों में सहयोग देना आरम्भ कर दिया। इसी साल आप जनता की ओर से म्यु० मेम्बर निर्वाचित हुए। १९२७ में आप डिस्ट्रीक्ट कौंसिल के मेम्बर बनाये गये। आपकी सेवाओं के कारण आप सन् १९२९ में प्रथम बार तथा १९३१ में दूसरी बार म्यु० के प्रेसिडेन्ट बनाये गये। इस पद पर आप अभी तक कार्य करते हैं। राजनैतिक कार्यों में भी आप काफी दिलचस्पी से भाग लेते हैं। नागपुर में "गढ़वाल डे" के उपलक्ष में प्रान्तिक डिक्टेक्टर की हैसियत से आप गये थे। इसलिए आपको ता० ८-८-३१ को ७ मास की सख्त कैद तथा २००) जुर्माना हुआ। सन् १९३२ में कांग्रेस कार्य के कारण चांदा में २००) जुर्माना तथा ४ मास की पुनः सजा हुई, इस समय आप अछूतोद्धार निवारक संघ के प्रेसिडेन्ट हैं। सन् १९३३ के फ्लड के समय आपने गरीब जनता की बहुत सेवा की। चांदा की जनता आपको आदर से देखती है आपके पुत्र छगनमलजी हैं। आपके यहाँ "लूणकरण छगनमल" के नाम से कपड़े का व्यापार होता है इसका संचालन लूणकरणजी खजांची करते हैं। तथा तीसरे भ्राता ताराचंदजी खजांची नागपुर साइन्स कॉलेज में एफ० ए० में शिक्षण पाते हैं।

ओसवाल जाति की मर्दुमशुमारी के सम्बन्ध में कुछ जानने योग्य बातें

ओसवाल आबादी १९३१ की गणना से		मर्द	स्त्रियां	कुल
१—बीकानेर राज्ज	...	११९५७	१५६११	२७५६८
२—जोधपुर राज्य (मारवाड)		४५४३५	५१३६१	९६७९६
३—मेवाड (उदयपुर)	...	२५२१८	२३०९७	४८३१५
४—सिरोही स्टेट	...	३५३३	४६३०	८१६६

५—किशनगढ़ स्टेट	...	८५९	७५७	१६१६
६—प्रतापगढ़	...	६६१	६८९	१३५०
७—नाशिक ज़िला में	...	३२१८	२७५१	५९६९
योग ७ प्रांतों का		९०८८१	९८८९६	१८९७७७

१—पंजाब में* कुल २३२ गावों में ३३६६ घर निवास करते हैं। उनमें आबादी संख्या १४२६५ है।

इन प्रान्तों के अलावा ओसवाल जाति की आबादी सी० पी०, बरार, खानदेश, महाराष्ट्र, कर्नाटक, अहमदनगर, मद्रास प्रान्त, निज़ाम स्टेट, बिहार, यू० पी०, बंगाल आसाम आदि प्रान्तों में है। जिनकी आबादी इनमें शुमार करने से इतनी या इससे अधिक संख्या हो जाना सम्भव है।

राजपूताना और अजमेर मेरवाड़ा में ओसवाल आबादी

नाम प्रान्त	सन् १९०१ में	सन् १९११ में	सन् १९२१ में	सन् १९३१ में
राजपूताना	२०९१८८	२०९९६५	१८०९५४	१९७४६०
अजमेर मेरवाड़ा	९५४७	१४३२८	१२३९६	१३५२६

सन् १९३१ की मर्दुमशुमारी के अनुसार

नाम प्रान्त		कंवारे	व्याहे	विधुर और विधवाएँ	योग
जोधपुर स्टेट	मारवाड़ में मर्द	२४००१	१६९९९	४४४१	४५३९५
	„ औरतें	१६७९५	२१५०२	१३०६४	५१३६१
	योग	४००९६	३८४५१	१७५०९	९६७५६
उदयपुर स्टेट	मेवाड़ में मर्द	१२४२०	१०१९४	२६०४	२५२१८
	„ औरतें	७६६४	१०४१४	५०१९	२३०९७
	योग	२००८४	२०६०८	७६२३	४८३१५
जोधपुर तथा मेवाड़ का कुल योग		६०८८०	५९०५९	२५१२७	१४५०६१
नाशिक जिले में†	...	२६९०	२३४३	९३६	५९६९

नोट—यह अवतरण हमें जोधपुर के इतिहास वेत्ता श्री कुँवर जगदीशसिंहजी गहलोत द्वारा प्राप्त हुए। धन्यवाद

*यह संख्या केवल पंजाब के श्वे० स्था० आम्नाय माननेवाले कुटुम्बों की है। इनमें अग्रवाल कुटुम्ब जो स्था० सम्प्रदाय मानते हैं। उनकी गणना भी शामिल है। लेकिन तौभी इस संख्या में विशेष भाग ओसवाल जाति का है। इसके अलावा मन्दिर सम्प्रदाय के भी पंजाब में सैंकड़ों घर हैं। यदि उपरोक्त संख्या में जैन श्वे० मन्दिर आम्नाय के घर भी जोड़ दें तो पंजाब के ओसवालों की गणना लगभग १० हजार की हो जायगी।

† यह गणना नाशिक ज़िला ओसवाल सभा के अधिवेशन के समय मई १९३२ में की गई थी।

ओसवाल जाति के इतिहास का

परिवर्द्धित संस्करण



१ जनवरी सन् १९३७

प्रकाशक
ओसवाल हिस्ट्री पब्लिशिंग हाउस
भानपुरा (इन्दौर)

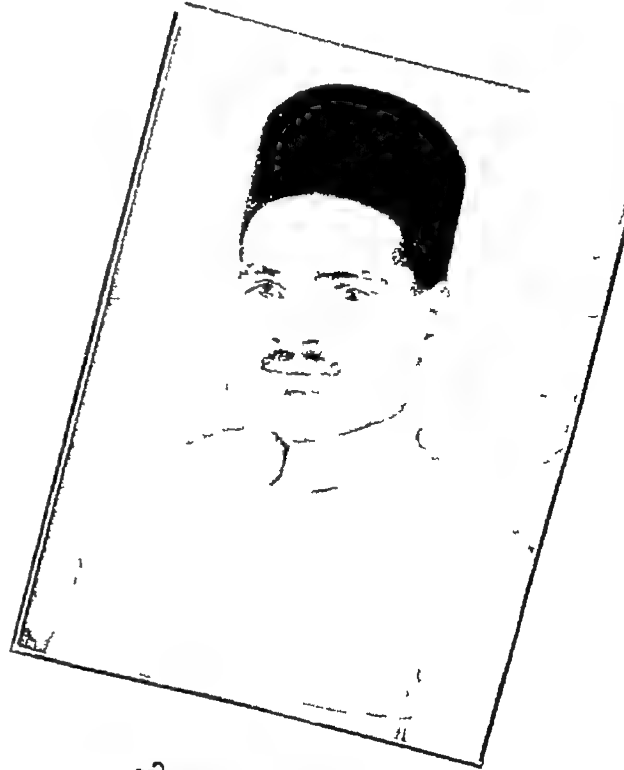


मुद्रक—
कृष्णगोपाल केडिया
'वणिक प्रेस"

लेखक



श्रीकृष्णलाल गुप्त



श्री बलराम रतनावत

EDITED BY—

K. L. Gupta

B. R. Ratnawat

PUBLISHED BY—

OSWAL HISTORY PUBLISHING HOUSE

BHANPURA (INDORE)

सम्पादक

श्री कृष्णलाल गुप्त

श्री बलराम रतनावत

प्रकाशक

ओसवाल हिस्ट्री पब्लिशिंग हाउस

भानपुरा (इन्दौर)

ग्रन्थ के प्रथम आधार स्तंभ



स्व० लाला खैरातीलालजी राक्यान जौहरी, देहली

स्मारक में—

स्व० श्री लाला खैरातीलालजी राकयान जौहरी, देहली



जिस ग्रन्थके कार्यारम्भको देखकर आपको बहुत प्रसन्नता हुई थी, जिसकी सफलताके लिये आपने अपनी शुभाकाक्षाएँ प्रगट की थीं, जिसको पुस्तकाकारमे देखनेके लिये आप इच्छुक थे, खेद है कि उसी ग्रन्थके प्रकाशित होनेके प्रथम ही आप एकाएक स्वर्गवासी हो गये। अत हमलोग कृतज्ञता पूर्वक यह ग्रन्थ आप ही के स्मारकमें निकाल रहे हैं।

स्व० लाला खैरातीलालजी राक्यान जौहरी का संक्षिप्त परिचय

संसार एक बहुत ही अद्भुत नाट्यशाला है। जिस प्रकार नाटक गृहके रङ्गमंचपर अनेक व्यक्ति अपने भिन्न २ पार्टोंका अभिनय कर जनताको मुग्ध करके चले जाते हैं उसी प्रकार इस विचित्र तथा लीलापतिके लीलामय संसारके अन्तर्गत हजारों व्यक्ति अवतीर्ण होते हैं और अपनी अवधि समाप्त हो जानेके पश्चात् लुप्त हो जाते हैं। मगर जिस प्रकार एक नाटकार अपने पार्टको सुचारु रूपसे अदा करके श्रावकोंको प्रभावित तथा प्रसन्न कर देता है उसी प्रकार इस ससारके अंतर्गत मनुष्य अपनी विशेषता, व्यक्तित्व तथा योग्यता की ऐसी अमिट छाप बैठा देता है कि उसके इस संसारसे विदा हो जानेके पश्चात् भी एक चिरकाल तक उसकी विशेषत्ताएं एवं व्यक्तित्व चमकते हुए उसके गत जीवनका प्रत्येक परिचित हृदयमे स्मृति, स्नेह एवं आदरका संचार करते रहते हैं। हमारे लाला खैरातीलालजी राक्यान भी ऐसे ही व्यक्तियों मे से एक व्यक्ति थे।

आप जिस खानदानमे पैदा हुए थे वह खानदान बहुत ही प्राचीन तथा गौरवशाली रहा है। आपके पूर्वज इन्द्रजीतजी* वैराट के शासक व प्रभावशाली व्यक्ति थे। इन्हीं इन्द्रजीतजी की सतानों मे लाला नवलकिशोरजी हुए। आपके लाला खैरातीलालजी नामक पुत्र हुए।

आपका जन्म सं० १९३४ की माघ सुदी ६ को हुआ था। बचपनसे ही आपको व्यापारका बहुत शौक था। आप सं० १९६४ तक तो अपने पिताजीके साथ व्यापार करते हुए अनुभव प्राप्त करते रहे। मगर स० १९६४के पश्चात् लाला नवलकिशोरजीका स्वर्गवास हो जानेके कारण आपके परिवारके व्यापार तथा अन्य सब कार्य्योंका भार आपके कंधोंपर पडा। योग्य हाथोंके नीचे व्यापारिक अनुभव प्राप्त करनेके कारण आप कुशल व्यापारी, जवाहरातके व्यापारमे सूक्ष्म दृष्टि रखनेवाले एव योग्य व्यक्ति निकले। आपकी व्यापारिक प्रतिभाने अपने फर्मके व्यापारको चमकाया तथा अनुभवपूर्ण कुशल व्यापार-सचालन नीतिसे आपने लाखों रुपयोंकी सम्पत्ति उपार्जित की। आपकी फर्म देहलीकी जवाहरातकी फर्मोंमे प्रमुख एवं प्रतिष्ठित गिनी जाने लगी।

व्यापारके उत्थानके साथ ही साथ आप की शक्तियोंने धार्मिक क्षेत्रमे भी बहुत काम किये। आपने बडी लगनके साथ धार्मिक कार्योंमे भाग लिया व अनेक धार्मिक संस्थाओंको सहायताए वगैरह प्रदान कर उत्साहित किया। आपने श्रीजी की पोशालका पुनर्निर्माण करवाया जिसमे वीस हजार रुपयेसे अधिक रुपया आपके पाससे लग गया होगा। मोठकी मसजिद पर छोटे दादाजीके स्थानपर एक सुन्दर जिन मन्दिर भी आप हीके द्वारा निर्मित कराया गया है। इसके अतिरिक्त देहलीके नौघरे और चेलपुरीके मन्दिरों, मोठकी मस्जिदकी दादावाडी व मन्दिर तथा श्रीजी की पोशालकी आपने आजीवन सफलता पूर्वक सुचारु रूपसे व्यवस्था की। आपके योग्य सचालन ने इन उक्त सस्थाओंमे एक प्रकारके विशेष जीवनका सचार किया है। इसी प्रकार आपने और भी अनेक धार्मिक सस्थाओंमे बहुत योग दिया है।

धार्मिक जीवन—

* विशेष परिचयके लिये देखिये पृष्ठ न० १५७

लालाजीकी शक्तियोंने तो सर्वतोमुखी काम किया है। आपका सार्वजनिक जीवन भी प्रशस-नीय रहा है। आपने अपने पिताजीकी आज्ञानुसार अस्सी हजारकी लागतमें देहलीमें एक धर्मशाला

सार्वजनिक जीवन— बनवाई जो आज भी सुचारु रूपसे चल रही है। ऐसा कहा जाता है कि देहलीके अन्तर्गत ऐसी बहुत कम संस्थाएँ हैं जिन्हें आपकी ओरसे किसी न किसी रूपमें प्रोत्साहन न मिला हो। आपने सभी जैन और अजैन संस्थाओंको सहायता पहुचाई।

लालाजीका स्वभाव सरल तथा मिलनसार था। आप नीतिज्ञ तथा मिष्टभाषी सज्जन थे। कठिनाइयोंमें आप धैर्यधारी, सहनशील तथा अनुभवी व्यक्ति थे। हमारे प्रतिनिधिने स्वयं देखा है कि

स्वभाव— उनकी तथा उनके ज्येष्ठ पुत्रकी बीमारी की भयंकरताके समय अनेक प्रकारकी बाह्य तथा आतरिक कठिनाइयोंका वातावरण होते हुए भी लालाजीको बहुत कम उत्तेजना हो जाया करती थी। लालाजी भावुक, विचारशील तथा योग्य व्यक्ति थे। आपके स्वभावसे प्राय: हर एक मनुष्य सन्तुष्ट रहता था। आपको आत्म प्रशंसा भी प्रिय न थी।

पाठकोंको यह लिखनेकी आवश्यकता नहीं है कि इतने क्षेत्रोंमें सफलता पूर्वक कार्य्य करने वालेकी कितनी प्रतिष्ठा होगी। कहना न होगा कि लालाजी जनताके लोकप्रिय व्यक्ति, ओसवाल

प्रतिष्ठा— एवं श्रीमाल समाजमें प्रतिष्ठित एवं देहलीकी व्यापारिक समाजमें माननीय व्यक्ति थे। लालाजीने अपने खानदानके गौरव व सम्मानको बढ़ाया था। कई पेचीदे मामलों में जब दो पार्टियोंमें आपसमें संघर्ष हो जाया करता उस समय उन्हें सुलझानेके लिये लालाजी तथा हजारीमलजी मध्यस्थ चुन लिये जाते थे। आपलोग अपनी अनुभवशीलता से ऐसे मामलोंको न्यायोचित तथा उभय पार्टियोंके रुचिकर ढंगका सुझाव निकालकर उन्हें निपटा देते थे। इस प्रकारके अनेकों झगड़े आपके द्वारा निपटाये गये होंगे।

लालाजी का कार्तिक सुदी १४ (दूसरी) सं० १९९३ शुक्रवारको रात्रिके आठ बजे एकाएक हृदयकी गति रुक जानेसे स्वर्गवास हो गया। जिस दिन आपका स्वर्गवास हुआ उस दिन दीपमालिका

स्वर्गवास— का दिन होनेकी वजहसे आपने शाम को पांच बजे तक अपनी दुकानपर आकर जवाहरात वगैरह खरीद किये। किसी व्यक्तिको यह कल्पना भी नहीं हो सकती थी कि आजके बाद लालाजी पुन: दुकान पर न आवेंगे।

लालाजीके स्वर्गवाससे सारे परिवारमें कोहराम मच गया और देहलीकी जनताने बहुत शोक प्रगट किया। देहलीकी सार्वजनिक, परोपकारी एवं धार्मिक संस्थाओंने आपके अभावको दुःख पूर्वक महसूस करते हुए मृतात्माको पूर्ण शांति मिलनेकी ईश्वरसे प्रार्थना की।

लालाजीके स्वर्गवासी हो जानेके पश्चात सब कार्योंका भार लाला बाबूमलजीके कन्धोंपर पड़ गया है। भगवान उन्हें अपने भारवहन करनेकी शक्ति प्रदान करें। स्व० लालाजीके वर्त्तमान में लाला मिट्ठूमलजी, जवाहरलालजी नेमचन्दजी, निहालचन्दजी एवं विमलचन्दजी नामक पांच पुत्र विद्यमान हैं।

ग्रन्थ के दूसरे आधार स्तंभ

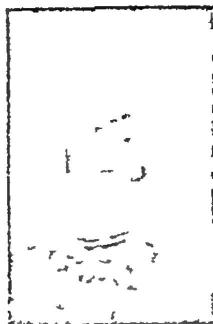


राय सुखराजजी राय बहादुर, भागलपुर

आप बड़े मिलनसार, सरल स्वभावके एवं अनुभवी सज्जन हैं। बिहार प्रान्तके आप एक बहुत बडे जमींदार तथा भागलपुरके प्रसिद्ध तथा प्रतिष्ठित रईस हैं। आपने भी हम लोगोंको बहुत सहायता प्रदान कर उत्साहित किया है।

ओसवाल एवम् श्रीमाल जातिका इतिहास

ग्रन्थके माननीय संरक्षक



२



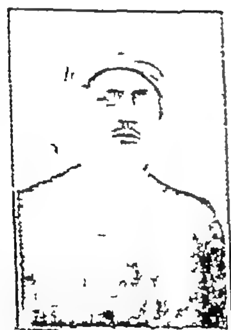
३



४



१



५



६



७

ग्रन्थके माननीय संरक्षक

१—राय बद्रीदासजी मुकीम बहादुर, कलकत्ता

आप सारे भारतवर्षकी ओसवाल एवं श्रीमाल समाजके चमकते हुए रत्न, जौहरी समाजके शिरोमणि, श्वेताम्बर जैनोंके प्राण, ब्रिटिश गवर्मेन्टमे माननीय तथा कलकत्ता की हिन्दू समाजके नेता हो गये हैं।

२—श्री बाबू महाराजबहादुरसिंहजी दूगड़, मुर्शिदाबाद

आप योग्य, विचारशील तथा बंगाल प्रान्तके एक बड़े प्रतिष्ठित जमींदार हैं। आपकी ओरसे हम लोगोंको ग्रथके प्रणयनमे सहायता प्राप्त हुई है।

३—श्री सेठ हीराचन्दजी सिंघवी, कालिन्द्री

आप एक धनिक, धार्मिक तथा सिरोही प्रान्तके माननीय व्यक्ति है। आपने भी हमको सहायता प्रदान कर उत्साहित किया है।

४—श्री हीरालालजी कोठारी, कामठी

आप सी० पी० मे प्रतिष्ठित तथा योग्य व्यक्ति हैं। आपने भी हम लोगोंको सहायता प्रदान कर उत्साहित किया है।

५—बाबू छुट्टनलालजी फोफलिया, जयपुर

आप उत्साही तथा मिलनसार युवक हैं। आपही वर्त्तमानमे अपने व्यवसायके प्रधान संचालक हैं। आपकी ओरसे भी हम लोगोको सहायता प्राप्त हुई है।

६—लाला फूलचन्दजी चोरड़िया, देहली

आप बड़े साहसी, पगडीके व्यापारमे कुशल तथा अतिथि सेवाप्रेमी सज्जन हैं।

७—बाबू रायकुमारसिंहजी, नाथनगर (भागलपुर)

आप मिलनसार, देशभक्त एवं सरल स्वभावके सज्जन हैं। वर्त्तमानमे आप ही अपनी स्टेटकी सारी व्यवस्था कर रहे हैं।

ग्रन्थके माननीय सहायक

सेठ केसरचन्दजी आनन्दरामजी वॉठिया, पनवेल (कुलावा)

सेठ लालचन्दजी मूथा ऑनरेरी मजिस्ट्रेट, गुलेदगुड्ड (बीजापुर)

वाबूरायकुमारसिंहजी मुकीम, कलकत्ता

सेठ कन्हैयालालजी जैन जमींदार ऑनरेरी मजिस्ट्रेट, (कस्तला)

श्रीठाकुर साहब छोटा बड़ा रावला, रिंगणोद (देवास-स्टेट)

श्रीमोहकमचन्दजी सँखलेचा, हाथरस

सेठ कन्हैयालालजी गोठी, भरतपुर

सेठ धनराजजी पुंगलिया, जयपुर

जौहरी हीरालालजी खारड़, कलकत्ता

विषय-सूची



ओसवाल जाति के शेष खानदान



Remaining families of Oswals



श्री सेठ उदयराजजी हीरालालजी कोठारी, कामठी (सी॰ पी॰)

इस प्रतिष्ठित परिवारके मालिकोका मूल निवासस्थान डीडवाणाके पास दौलतपुरा (मारवाड़) नामक स्थान का है। आप रणधीरोत कोठारी गौत्रके सज्जन हैं। इस परिवारके पूर्व पुरुष कोठारी रणधीरसिंहजी मेवाड़ और मारवाड़के राज घरानोंमें बड़े सम्माननीय सरदार थे। इन रियासतोंकी बड़ी-बड़ी जिम्मेदारियाँ आपके सुपुर्द थीं। मुगल दरबारमें भी आपका बड़ा सम्मान था। आपका विशेष परिचय इसी ग्रन्थके कोठारी रणधीरोत गौत्रके इतिहासमें दिया जा चुका है। उपरोक्त परिवार इन्हीं रणधीरसिंहजीका वंशज है। इस परिवारके पुरुष दौलतपुरामें मारवाड़ राज्यकी फौजोंके खजांची थे और आर्थिक स्थिति उत्तम होनेके कारण समय समयपर रियासतको इम्दाद भी देते रहते थे तथा बड़े सम्माननीय और प्रतिष्ठित व्यक्ति माने जाते थे। इस परिवारमें आगे चलकर सेठ गुलराजजी हुए। आप मारवाड़से व्यापारके निमित्त लगभग ५० साल पूर्व कामठी आये। आपके भींवराजजी, राजमलजी और उदयराजजी नामक तीन पुत्र हुए। इन बन्धुओंमें सेठ भीवराजजी रणधीरोत कोठारी सेठ सूरजमलजीके नामपर दत्तक गये हैं। आपके पुत्र माणिकलालजी तथा पन्नालालजी नागपुर सदरमें निवास करते हैं।

सेठ राजमलजीका जन्म संवत् १९१९ की आषाढ़ सुदी ९ तथा सेठ उदयराजजीका संवत् १९२२ की मगसर सुदी १४ को हुआ। जब सेठ गुलराजजी मारवाड़ चले गये तब उनके पश्चात् कारबारकी विशेष उन्नति सेठ उदयराजजीने की। आप बड़े व्यवसाय चतुर और अनुभवी पुरुष हैं। आपके हाथोंसे परिवारकी आर्थिक स्थिति एवं सम्मानकी बहुत उन्नति हुई है। मध्यप्रान्त व बरारकी ओसवाल समाजमें आपका परिवार बड़ा गण्य-मान्य समझा जाता है। सेठ राजमलजीके माँगीलालजी, रतनलालजी तथा हीरालालजी नामक ३ पुत्र हुए। इन बन्धुओंमें श्री माँगीलालजी और रतनलालजी दोनों बन्धु कामठीमें किरानेका व्यापार करते हैं तथा श्री हीरालालजी सेठ उदयराजजीके नामपर दत्तक गये हैं।

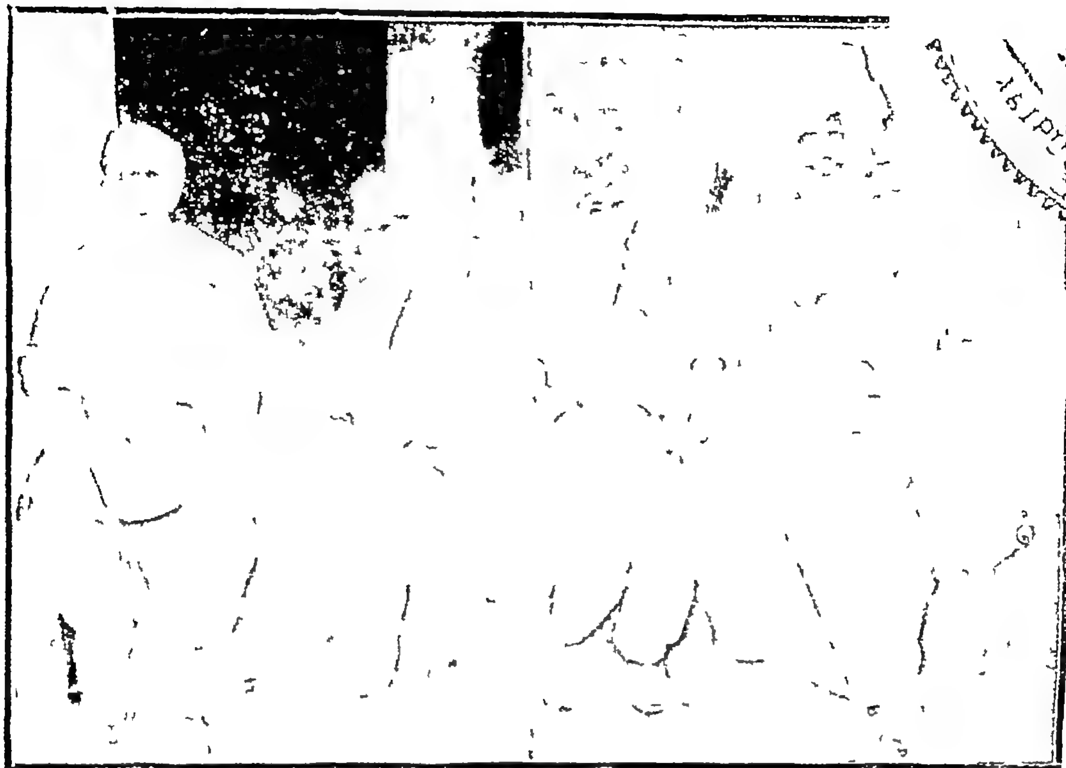
सेठ हीरालालजी कोठारी—आपका जन्म संवत् १९५६ की भादवा वदी ऽऽ को हुआ। आरंभसे ही आप बड़ी तीव्र बुद्धिके और होनहार युवक थे। शिक्षण कार्य्यमें तथा सार्वजनिक व जाति हितके कार्यों में आप सहयोग लेते एवं बड़े उत्साहके साथ नवीन-नवीन योजनाएं बनानेकी ओर ध्यान देते रहते थे। आपका प्रथम विवाह १९७२ मे बरारमें लूणावतोंके यहाँ एवं द्वितीय विवाह संवत् १९८५ में वरोरामें सीयाणी परिवारमें हुआ। इस समय आपके दो पुत्र और दो कन्याएं विद्यमान हैं। पुत्रोंके नाम कुँवर जेठमलजी एव कुँवर हेमचन्द्रजी हैं। कुँवर जेठमलजीका जन्म सन् १९२२ के मार्चमे हुआ है। आप आठवीं कक्षामें अध्ययन करते हैं।

हम ऊपर लिख आये हैं कि श्री हीरालालजी कोठारी अपने शिक्षण कालसे ही सार्वजनिक एवं जाति हितके कामोंमें विशेष दिलचस्पी लेते थे। फलतः वयस्क होनेपर आपमें उन सद्वृत्तियोंकी उत्तम वृद्धि हुई। आपके व्यवहारमें एक विशेषता यह है कि आपका परिवार श्री जैन श्वे० तेरा पंथी सम्प्रदायका अनुयायी होते हुए भी, आप सभी सम्प्रदायकी संस्थाओंमें उदारतापूर्वक प्रमुख रूपसे भाग लेते हैं। इस समय आप कामठीके सनातन धर्मावलम्बियोंकी धर्म सभाके उपसभापति हैं। सनातन धर्मावलम्बी समाजने आपके गुणोंका उचित आदर करके उक्त सम्माननीय पद दिया है। इसके अलावा आप स्थानीय हाई स्कूलके सेक्रेटरी तथा गवर्नमेंट मिडिल स्कूलके मेम्बर हैं। यहांके सरकारी सर्कलमें आप बड़ी आदरणीय निगाहोंसे देखे जाते हैं। मध्यप्रान्त तथा बरारके ओसवाल युवकों द्वारा होनेवाले प्रत्येक आयोजनमें आप विशेष उत्साहसे भाग लेते हैं, एवं इस समय आप मध्यप्रान्त तथा बरार की ओसवाल सभाके सेक्रेटरी हैं। आपके यहाँ बहुतसे मकानात आदि स्थायी सम्पत्ति है, तथा बैङ्किङ्ग और सोना चांदीका व्यापार होता है। आपको पठन-पाठन तथा लेखनका भी बड़ा शौक है। आपने "परमात्मा महावीर" पुस्तक भी लिखी है।

सेठ मिश्रीमलजी सुगनचंदजी कोठारीका खानदान, रैंठी (भोपाल स्टेट)

इस परिवारके मालिकोंका मूल निवास स्थान मेड़ता (जोधपुर स्टेट) है। आप रणधीरोत – कोठारी गौत्रके सज्जन हैं। मेड़तासे इस परिवारके पूर्वज सेठ उम्मेदमलजी कोठारी व्यवसायके निमित्त भोपाल स्टेटके रैंहठी नामक स्थानमें आये। आपके सिरेमलजी नामक पुत्र हुए। सेठ सिरेमलजी कोठारीने इस परिवारके व्यापारकी उन्नति आरम्भ की। संवत् १९९२ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके जुहारमलजी, मिश्रीमलजी, सुगनचंदजी तथा लालचंदजी नामक चार पुत्र हुए। इन बन्धुओंमें सेठ मिश्रीलालजी इस परिवारमें बहुत नामी व मोअज्जिज़ पुरुष हुए।

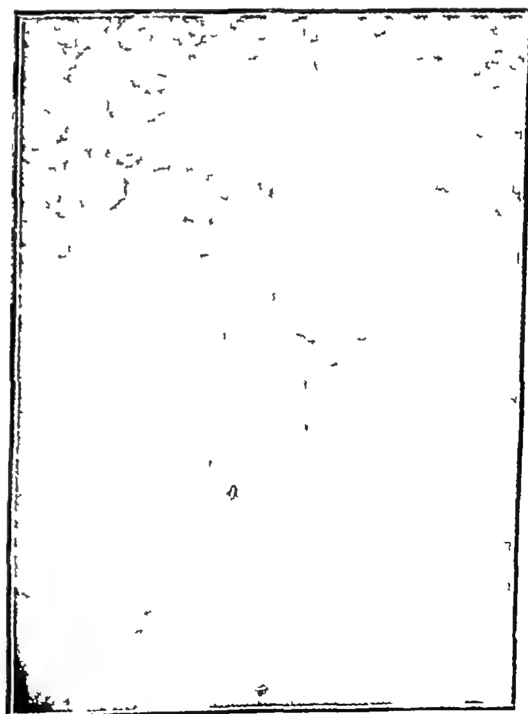
सेठ मिश्रीमलजी कोठारी—आपका जन्म संवत् १९४२ में हुआ था। हिन्दी और उर्दूका आपको अच्छा ज्ञान था। आरम्भमें ही आप ऊँचे खयालोंके महानुभाव थे। केवल अठारह सालकी आयुसे ही आप भोपालके सरकारी अफसरों व शाही खानदानके सज्जनोंसे मेलजोल बढ़ाने लगे, और इस कार्य्यमें आप अपनी तीव्र बुद्धिके कारण बहुत सफल हुए। ज्यों-ज्यों आपकी उम्र बढ़ती गई त्यों-त्यों शाही खानदान और नवाब साहबसे आपका मेलजोल अधिकाधिक बढ़ता गया। मौजूदा नवाब साहिबने अपनी तख्त नशीनीके समय आपको राय साहब का खिताब देकर आपकी इज्जत की। साथ ही आपको फर्स्ट क्लास दरबारीकी इज्जत भी इनायत की। नवाब साहबसे आपका मेलजोल यहांतक बढ़ गया था कि अनेकों बार मुलाकात-



बाईं ओरसे बैठे हुए—(१) सेठ उदयराजजी कोठारी (२) कुं० जेठमलजी कोठारी (३) कुं० हेमचन्द्रजी कोठारी (४) सेठ हीरालालजी कोठारी, कामठी



स्व० सेठ रंगलालजी बाठिया, नरसिंहगढ



सेठ लालचन्दजी बाठिया, नरसिंहगढ

के लिये आप तार द्वारा बुलवाये जाते थे। रियासतने समय-समयपर आपको जागीरीमें गाँव भी इनायत किये थे। भोपाल स्टेटकी जनता आपसे बहुत परिचित थी तथा बड़ी इज्जतकी निगाहोंसे आपको देखती थी। आपकी रंजिश किसी अदनासे लेकर आला आदमी-से भी नहीं थी। हजारों रुपये आपने समय समयपर दावतों जलसोंमें खर्च किये। यदि आपकी मौजूदगी रहती तो भोपाल स्टेटसे और भी कई तरहकी जागीरें व सम्मान प्राप्त होते, लेकिन ईश्वरकी गति निराली है। तारीख १८ दिसम्बर सन् १९३५ की रातको ९॥ बजे आप अपने मकानके बाहर पलँगपर ओढ़कर सोये हुए थे, कि एकाएक किसी खूनीने आप पर तीन फेर किये, जिससे आप स्वर्गवासी हो गये आपके इस प्रकार निधन होनेका समाचार जब रियासत भरने सुना तो हरएक आदमीको दर्द व रंज हुआ। यहाँ यह लिखनेकी आवश्यकता नहीं है कि जिस परिवारके ये थे उन्हें कितनी हृदय वेदना हुई होगी, इसे भुक्त भोगी ही जान सकते हैं।

जब राय साहब सेठ मिश्रीमलजीके खून होनेके समाचर नवाब साहब भोपालने सुना, तो उन्होंने बड़े ही दर्दभरे १० शब्दोंका एक तार सान्त्वनासूचक आपके पास भेजा, तथा ईदके दिन नवाज पढ़कर मातमपुर्सीके लिये नबाव साहब आपके यहाँ आये और परिवारको दिलासा देकर उस खूनीका पता लगानेके लिये ५ हजार रुपयेका इनाम गजटमें शाया कराया। इस समय आपके पुत्र घेवरचदजी विद्यमान हैं। आपका जन्म संवत् १९५९ में हुआ है तथा आप अपने तमाम व्यवसाय संचालनमें सहयोग लेते हैं। आपके रतनचंदजी व हरकचंदजी नामक दो पुत्र हैं।

सेठ सुगनचंदजी कोठारी—आपका जन्म संवत् १९४८ में हुआ। आपके बड़े भ्राता राय साहब सेठ मिश्रीमलजी हमेशा राजकीय कामोंमें लगे रहते थे। अतएव आप पर अपने परिवार-की व्यवस्था, व्यापार तथा जमींदारीकी देख-रेखका प्रधान भार रहा। संवत् १९५७ में आपने बानापुरा स्टेशनपर एक दुकान स्थापित की। इस समय आप ही अपने परिवारमें प्रधान पुरुष हैं तथा समझदार व विचारवान् सज्जन हैं। आपके पुत्र सन्तोषचंदजी २१ सालके हैं व कारबारमें भाग लेते हैं। दूसरे माणिकचंदजी पढ़ते हैं।

श्रीयुत लालचंदजी कोठारीका जन्म संवत् १९५८ में हुआ। आप अपने बड़े बन्धुके साथ व्यापार संचालनमें सहयोग देते हैं। आपके केवलचंदजी नामक एक पुत्र हैं। इस समय आपके यहाँ रेंहठीमें मिश्रीमल घेवरचंदके नामसे जमींदारी, कृषि तथा लेनदेनका कारबार एवं बानापुरामें सुगनचंद कोठारीके नामसे गल्ला व आढ़तका व्यापार होता है।

बांठिया

पनवेलका बांठिया परिवार, पनवेल

इस प्रतिष्ठित परिवारका मूल निवास-स्थान पीपाड़ (मारवाड़) का है। वहांसे लगभग १०० वर्ष पूर्व इस परिवारके पूर्वज सेठ इन्द्रभानजी बांठिया व्यापारके निमित्त अहमदनगर तालुकाके मेहकरी नामक गाँवमें आये। थोड़े समय यहां निवास करनेके पश्चात् आप किसी दूसरे उपयुक्त व्यापारिक स्थानकी तलाशमें बम्बईकी ओर रवाना हुए। उस समय पूना, अहमदनगर आदि दूर-दूरके शहरोंका माल पनवेल आता था तथा यहांसे नावों द्वारा बम्बई की ओर रवाना किया जाता था। अत. आपने पनवेलमें अपना छोटे स्केलपर व्यापार प्रारम्भ किया।। थोड़ समयके बाद आपके ज्येष्ठ पुत्र आनन्दरामजी १२ वर्षकी आयुमें अपनी माताके साथ मेहकरीसे पनवेल आ गये और वहीं निवास करने लगे। तभीसे यह खानदान पनवेलमें निवास कर रहा है। आप दोनों पिता पुत्रोंने साहसके साथ व्यापार प्रारंभ किया। आपको अपने व्यवसायमें बहुत लाभ रहा। आपके आनन्दरामजी, मेघराजजी तथा गुलावचन्दजी नामक तीन पुत्र हुए। इनमेंसे मेघराजजी सेठ जीवराजजी (इन्द्रभानजीके भतीजे) के नामपर दत्तक गये।

सेठ आनन्दरामजी:—आप बड़े व्यापार कुशल, होशियार तथा मिलनसार सज्जन थे। आपने हजारों लाखोंकी सम्पत्ति और बहुत यश कमाया। आपने करीब ३६ सालोंतक बहुत बड़े स्केलपर गाँजेका व्यवसाय किया। भारतके भिन्न-भिन्न स्थानोंके अलावा विदेशोंमें भी आप गाँजा भेजते थे। इस व्यवसायमें आपने बहुत सम्पत्ति उपार्जित की। आपका पनवेलकी जनतामें बड़ा सम्मान था। यहांकी म्यु० के आप बहुत सालोंतक मेम्बर रहे। आप बड़े शुद्ध हृदयके सरल स्वभाव वाले सज्जन थे। आपको अपने स्वर्गवास होनेका समय प्रथम ही मालूम हो गया था जिसकी सूचना आपने अपने कुटुम्बियोंको प्रथम ही दे दी थी। आप प्रतिष्ठापूर्ण जीवन बिताते हुए संवत् १९८३ की भादवा वदी ३ को स्वर्गवासी हुए। आपने मृत्यु समय ५०-०) का दान पनवेलमें एक स्थानक बनवानेके लिये किया था। तदनुसार यहांपर "आनन्द भवन" नामक स्थान बनवाया गया है जिसमें इस समय भी श्री महावीर जैन लायब्रेरी स्थापित है। आपके भीकमदासजी, केसरचंदजी, भूरचन्दजी, उदयचन्दजी एवं खींवराजजी नामक पाँच पुत्र हुए। इनमेंसे सेठ भीकमदासजी अपने काका सेठ गुलाबचन्दजीके नामपर दत्तक गये है।

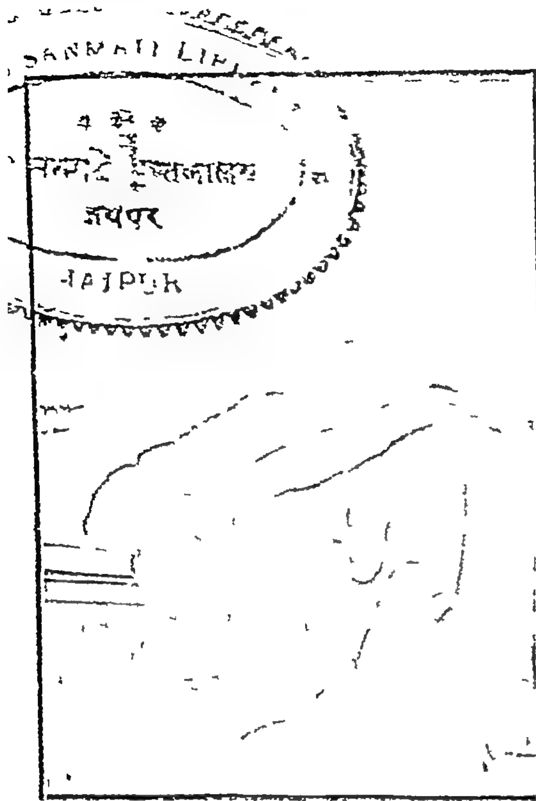
सेठ केसरचन्दजी:—आपका जन्म संवत् १९४२ की माघ सुदी १२ को हुआ। आप इस समय पनवेलकी व्यापारिक समाजमें गण्यमान्य सज्जन हैं। हर एक धार्मिक और शिक्षाके कामोंमें आप उदारतापूर्वक सहायता देते रहते हैं। आप इस समय श्री महावीर जैन वाचनालयके अध्यक्ष हैं। आपके पन्नालालजी नामक एक पुत्र हैं।


स्व० सेठ आनन्दरामजी बाठिया, पनवेल (कुलाबा)

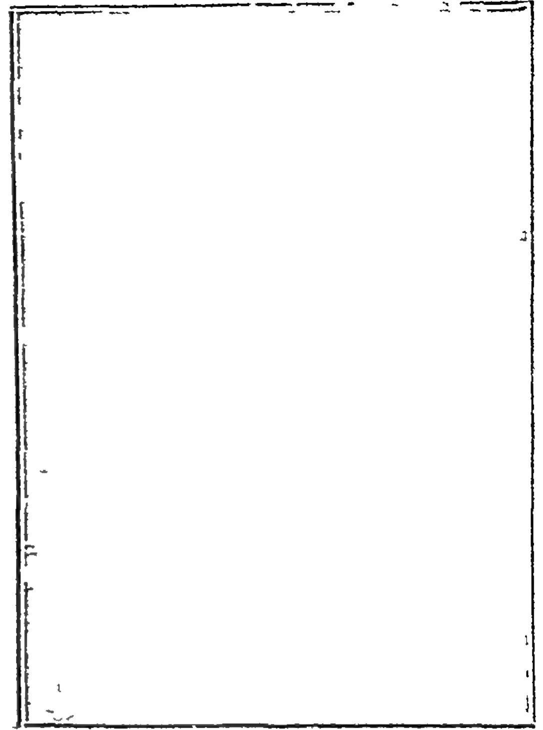

सेठ केशरचन्दजी बाठिया, पनवेल


सेठ आसकरणजी मेघराजजी बाठिया, पनवेल

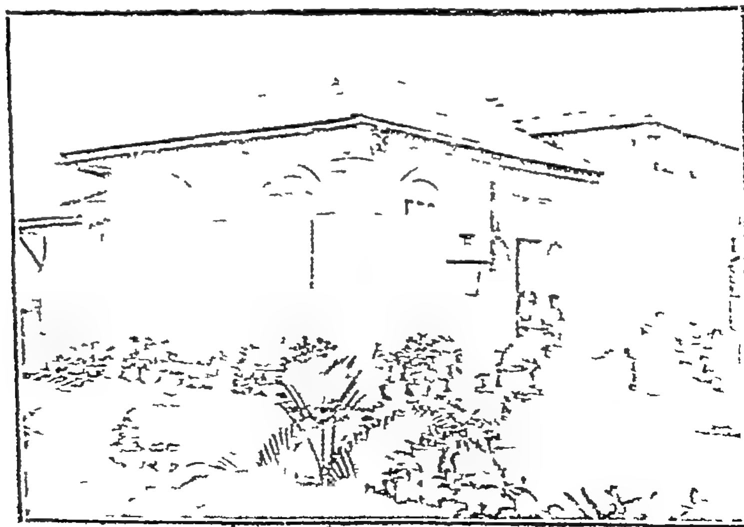

स्व० बाबू भूरचन्दजी बाठिया, पनवेल



१० सेठ भीकमचन्दजी वाठिया, पनवेल (कुलाबा)



सेठ रतनचन्दजी भीकमचन्दजी वाठिया पनवेल



शातिसदन (सेठ रतनचन्द भीकमचन्द) पनवेल

सेठ भूरचंदजीः—आप बड़े साहसी तथा व्यापार कुशल सज्जन थे। आपने लगभग डेढ़ लाख रुपये लगाकर एक मकान अपने नामपर खतम कराया था। आप संवत् १९७५ में स्वर्गवासी हुए। आपके बिरदीचंदजी तथा फूलचंदजी नामक दो पुत्र हैं। बिरदीचंदजी मेट्रिकमें पढ़ते है। सेठ केसरचंदजी तथा भूरचन्दजीके परिवार वालोका व्यापार 'मे० केसरचन्द आनन्दराम" के नामसे होता है। आप लोगोंकी दुकान पनवेलमे अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है।

सेठ उदयचन्दजी तथा उनके पुत्र कुन्दनमलजी "मे० उदयचन्द आनन्दराम" के नामसे तथा सेठ खीवराजी "मे० खींवराज आनन्दराम" के नामसे स्वतन्त्र कारबार करते हैं।

सेठ गुलाबचंदजी बांठियाका परिवारः—सेठ गुलाबचन्दजी अपने बड़े भ्राता सेठ आनन्दरामजीके साथ तमाम कामोंमें सहयोग देते हुए केवल २५ वर्षकी अल्पायुमें ही स्वर्गवासी हुए। अतएव आपके नामपर सेठ आनन्दरामजीके ज्येष्ठ पुत्र भीकमदासजी दत्तक आये।

सेठ भीकमदासजी बांठियाः—आपका जन्म संवत् १९३९ की विजयादशमीको हुआ। संवत् १९६६ में आपने अपना व्यापार सेठ आनन्दरामजीसे अलग कर लिया। आपने अपनी सराफीके व्यापारमे अच्छी तरक्की की। जनतामें आपका बहुत सम्मान था। संवत् १९८४ की कार्तिक सुदी ६ को आप स्वर्गवासी हुए। आपके श्री रतनचन्दजी नामक पुत्र विद्यमान हैं।

सेठ रतनचन्दजी बांठियाः—आपका जन्म संवत् १९६६ की चैत वदी १ को हुआ। आप बड़े शांत, सज्जन एवं निरभिमानी व्यक्ति हैं। वर्त्तमानमें आप ही अपने सराफीके व्यवसायको बड़ी योग्यतासे संचालित कर रहे हैं। पनवेलकी जनतामें आपका सम्मान है तथा आपकी फर्म बड़ी प्रतिष्ठित मानी जाती है। हाल हीमे आप जनताकी ओरसे पनवेल म्यु० के मेम्बर चुने गये है। धार्मिक और शिक्षाके कामोंमें आप सहायता देते रहते हैं। गराड़ा चारिटेबल ट्रस्टमें आपने बहुत सहायता दी हैं तथा आप उसके ट्रस्टी भी हैं। इस समय आपके हरकचन्दजी, कांतिलालजी, तथा मोतीलालजी नामक तीन पुत्र हैं। आपके फर्मपर मेसर्स भीकमदास गुलाबचन्दके नामसे व्यापार होता हैं।

सेठ मेघराजजीका परिवारः—सेठ आनन्दरामजीके छोटे बंधु सेठ मेघराजजी अपने काका जीवराजजीके नामपर संवत् १९२४ में पीपाड़में दत्तक गये। आप संवत् १९५२ में स्वर्गवासी हुए। आपके आशारामजी नामक एक पुत्र हुए।

सेठ आशारामजीः—आपका जन्म संवत् १९३९ के श्रावणमें हुआ। आप पनवेलके प्रतिष्ठित एवं देशभक्त सज्जन हैं। आप नौ वर्षों तक म्युनिसीपैलिटीके मेम्बर रहे तथा वर्त्तमानमे आप पिंजरापोलके सभापति हैं। कांग्रेसके कार्य्योंमें आप बहुत भाग लेते रहते हैं। आप शुद्ध खद्दर पहनते हैं। सन् १९३० के असहयोग आन्दोलनमें काम करनेके कारण आप १॥ मास कारागारमें रहे और उन्ही दिनों आपको पनवेलसे बाहर न जानेका हुक्म भी

हुआ था। वर्त्तमानमें आपकी यहां एक राइस मिल है तथा गल्लेका कारवार होता है। आपके अमोलकचन्दजी तथा जीतमलजी नामक दो पुत्र हैं।

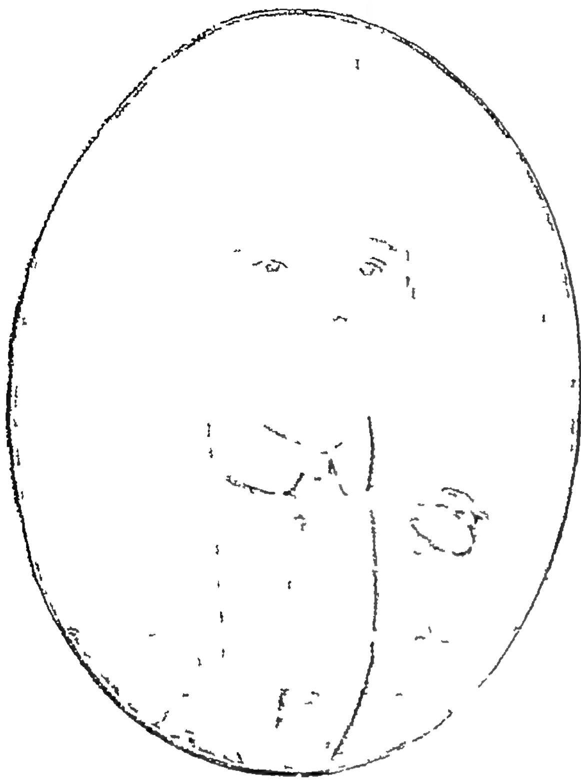
इस खानदानकी ओरसे स्थानीय जैन हाल नामक पब्लिक हालमें ५०००) पाँच हजार रुपयोंकी सहायता दी गई है।

सेठ सूरजमलजी जेठमलजी बांठिया, नरसिंहगढ़

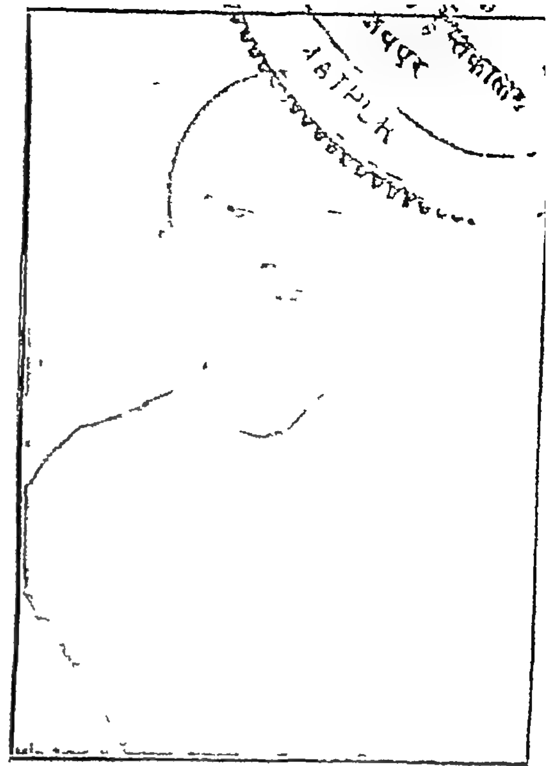
इस परिवारके मालिकोंका मूल निवास स्थान बीकानेर है। लगभग संवत् १८८७ में इस परिवारके पूर्वज सेठ लाहोरीचन्दजी बांठियाके पुत्र सेठ हीराचन्दजी बांठिया किशनगढ़ होते हुए नरसिंहगढ़ आये, और उस समयकी प्रसिद्ध फर्म गणेशदास किशनाजी की भागीदारीमें आपने पोद्दारेका कार्य्य आरम्भ किया। १० सालोंतक आप पोद्दारेका कार्य करते रहे। पश्चात् आपने अपना स्वतन्त्र साहुकारी लेन देन आरम्भ किया। आप बड़े व्यापार चतुर तथा बुद्धिमान पुरुष थे। नरसिंहगढ़ स्टेटमें आपका अच्छा सम्मान था। आपके सूरजमलजी तथा जेठमलजी नामक दो पुत्र हुए। इन भाइयोंने अपने परिवारके मान सम्मान व व्यापारको विशेष उन्नत किया। कपड़ेके व्यापारमें आपने विशेष सम्पत्ति उपार्जित की। आप दोनों बन्धु नरसिंहगढ़ राज्यके सम्मानित व्यापारी और नगरके वजनदार पुरुष माने जाते थे। रियासतके साथ साहुकारी लेनदेनका बहुतसा व्यवहार आपके द्वारा होता था। सेठ सूरजमलजी १९३७ में तथा सेठ जेठमलजी १९४२) में स्वर्गवासी हुए। सेठ सूरजमलजीके मानमलजी एवं सेठ जेठमलजीके रंगलालजी नामक पुत्र हुए।

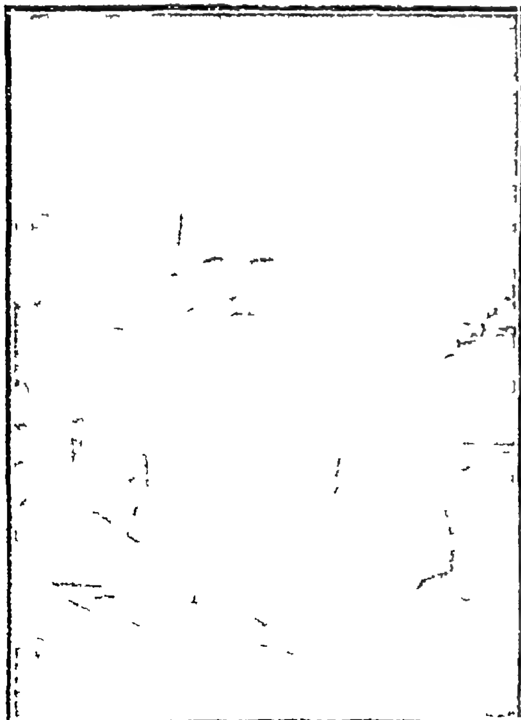
सेठ रंगलालजी बाठिया—आपने अपने पिता सेठ जेठमलजीके बाद अपने खानदानकी इज्जत व व्यापारको और बढ़ाया। अपने पिताजीकी भांति सरकार व जनतामें आपका अच्छा सम्मान था। आपको दरबारमें प्रथम श्रेणीमें बैठनेका सम्मान प्राप्त था। संवत् १९८५ की अगहन सुदी १५ को ७५ सालकी वयमें आप स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र लालचन्दजी हुए।

सेठ लालचन्दजी बांठिया—आपका जन्म संवत् १९४२ की कार्तिक बदीमें हुआ। यहाँ की जनता व सरकारमें आप भी अच्छे सम्माननीय सज्जन माने जाते हैं। दरबारमें प्रथम श्रेणीमें बैठनेका आपको सम्मान प्राप्त है। आप नरसिंहगढ़ म्युनिसिपेलेटीके मेम्बर व पञ्चायत बोर्ड के सीनियर मेम्बर हैं। आपके यहां इस समय सूरजमल जेठमलके नामसे साहुकारी व्यापार होता है। आपके पार्श्वमलजी तथा विरधमलजी नामक पुत्र हैं। यह परिवार श्री श्वे० जैन मन्दिर मार्गीय आम्नायका माननेवाला है।

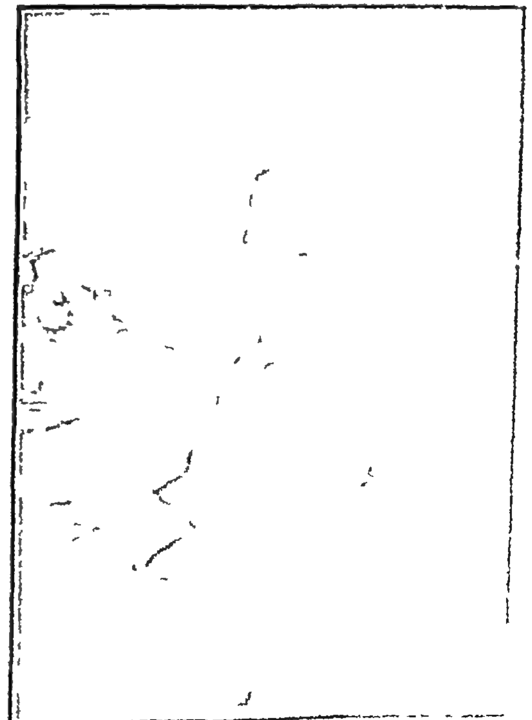


बाबू खींवराजजी बाठिया, पनवेल (कुलावा)





बाबू गिरधीचन्दजी नृपचन्दजी बाठिया पनवेल



बाबू [illegible]

सिंघवी सेठ फूलचन्दजी हीराचन्दजी का खानदान, कालिन्द्री

इस प्रतिष्ठित परिवारके मालिकोंका मूल निवासस्थान सिद्धपुर पाटण गुजरातका है। वहांसे इस परिवारके पूर्वज सिरोही स्टेटके नीवज नामक स्थानपर आकर बसे। उस समय नीबजमें सिरोही दरबारके छोटे बन्धु निवास करते थे। वहाँ इस परिवारके पुरुषोंने नीवज ठिकानेका तमाम राजकाज लगभग १५० सालोंतक ईमानदारी, बुद्धिमानी और बहादुरोके साथ किया और ठिकानेसे नेकनामी प्राप्त की। इस प्रकार डेढ़ सौ सालतक ठिकानेकी सेवा करनेके बाद तत्कालीन राजा साहबसे इस परिवारकी किसी कारण अनबन हो गई। अतएव उस समय जितने घर इस खानदानके वहाँपर थे, वे सब परिवार जालोर, रामसेन, कालिन्द्री और इसके आसपास के स्थानों पर जाकर बस गये। इस परिवारके इस समय कालिन्द्रीमें साठ एवं आस-पासके स्थानोंमें करीब एक सौ घर निवास करते हैं। नीवजसे यहां आनेके कारण आपलोग नीबजिया कहलाते हैं। इस कुटुम्बमें सेठ उमाजी हुए। आप बहुत साधारण स्थितिके पुरुष थे तथा कालिन्द्रीमें ही निवास करते थे। आपके फूलचन्दजी नामक पुत्र हुए।

सेठ फूलचन्दजी सिंघवी—आपका जन्म संवत् १९२१ में हुआ था। आप आरम्भसे ही बहुत होनहार एवं बुद्धिमान मालूम होते थे। आपकी हिम्मत बहुत बढ़ी चढ़ी थी। आप उन महानुभावों में से एक थे जो अपने साहस व बुद्धिमानीके बल पर बहुत साधारण स्थितिसे उठकर अपनी व्यापारिक चातुरीसे विपुल द्रव्य उपार्जित करते हैं एवं उन्हें शुभकार्य्योंमें व्यय करके समाजमें अपनी तथा अपने कुटुम्बकी प्रतिष्ठाको स्थापित करते हैं। लगभग १२ वर्षके अल्प वयमें ही आप पैदल मार्ग द्वारा अहमदाबाद गये तथा वहांसे रेल द्वारा पूना गये। पूनासे पैदल मार्ग द्वारा गोकाक पहुंचे। इसी गोकाक नामक स्थान पर व्यापार करके आपने अपने भीतर छिपे हुए गुणोंको प्रकाशित किया। आरम्भ में आपने गोकाकमें साधारण स्थितिमें नौकरी की। थोड़े ही समयमें आपने अपनी तीव्र बुद्धिके कारण गोकाकके व्यापारिक समाजमें प्रभाव स्थापित कर लिया। धीरे २ आप गोकाक काटन मिलमें मेसर्स फारबस कम्पनीके सूतके एजण्ट मुकर्रर हुए। सूतकी एजंसीके इस व्यापारको आपने खूब चमकाया और इससे आपको अच्छी आमदनी होने लगी। आरम्भमें आपने दोलाजी फूवाजीके नामसे दुकान खोली। इसमें द्रव्य उपार्जित कर आपने एक कपड़ेकी दुकान और खोली और उसपर भगवानजी फूवाजीके नामसे कारबार आरम्भ किया। इसके बाद आपने अपनी स्वतन्त्र मे० ऊमाजी फूलचन्दके नामसे दुकान स्थापित की। अपने व्यापार की वृद्धिके लिये आपने सम्वत् १९४९ में बम्बईमें किशनाजी फूलचन्दके नामसे एक दुकान और खोली। इस प्रकार हिम्मत, कारगुजारी तथा बुद्धिमानीसे आपने व्यापारमें सम्पत्ति उपार्जित

की। आपका व्यापारिक ज्ञान इतना बढ़ा-चढ़ा था कि उस समय वेलगाँव डिस्ट्रिक्टके व्यापारिक समाजमें आप नामी व्यापारी माने जाते थे। वृटिश सरकारने भी आपको अत्यन्त बुद्धिमान व चतुर समझ कर सम्मानित किया। आप गोकाक म्युनिसिपैलेटीके मेम्बर निर्वाचित हुए थे। इसी तरह गोकाक तथा वेलगांव लोकलवोर्डके आप मेम्बर चुने गये थे। इतना ही नहीं गोकाक म्युनिसिपैलेटीने अपना चेयरमैन बनाकर आपकी कद्र की थी। इस प्रकार व्यापारमें प्रतिष्ठा प्राप्त करके आपने जनताकी सेवा तथा धार्मिक कामोंकी ओर लक्ष दिया।

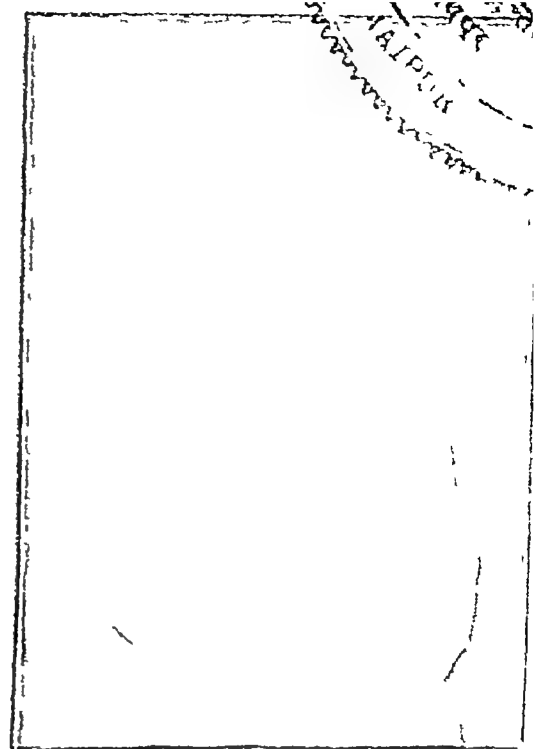
आपका धार्मिक तथा सामाजिक जीवन—प्रायः देखा जाता है कि हिम्मत व चतुराई से पैसा पैदा करके जो पुण्यशाली जीव होते हैं,—वही शुभ कार्य कर सकते हैं। यही कारण है कि सेठ साहबका जीवन भी शुभ कार्य्योंकी ओर अधिकाधिक प्रवृत्त रहा। सम्वत १९५६ के भयंकर दुर्भिक्षके समय कालिन्द्रीकी जनताकी आपने अन्न व वस्त्रोंसे सहायता की एवं कई बड़ेवड़े परिवारोंको बड़ी-बड़ी रकमें गुप्त रूपसे सहायतार्थ दीं। सम्वत् १९५९ में कालिन्द्रीके जैन मन्दिरमें आपने चार देहरियां बनवाईं तथा मन्दिरमें ३ हजारकी लागतसे चांदीका रथ बनवाकर गोकाक कम्पनीकी ओरसे भेट किया। सम्वत् १९६३ में आप श्रीशत्रुंजयजीकी यात्राके लिये गये और वहां एक विशाल नौकारसी आपने की। इस कार्य्यमें आपने ५।६ हजार रुपये लगाये।

आपने एक संघ भी निकाला था। इस संघमें ८०० श्रावक ५ साधु व २५ साध्वियाँ थीं। यह माघवदी ५ को रवाना हुआ एवं श्री केसरियाजी तक पैदल मार्गद्वारा गया। बहुत आनन्दके के साथ धर्मलाभ करता हुआ चैत सुदी ५ को २॥ महीनेमें यह संघ वापस कालिन्द्री आया। इस कार्यमें आपने ३८ हजार रुपया खर्च किया। इस संघके उपलक्षमें आपको "संघवी" की उपाधि प्राप्त हुई। इस संघ ने सादड़ी नामक गाँवके जैन संघमें जो ७ तड़ें पड़ी हुई थीं वे मिटाईं। उस समय उनके आपसके रंजोंको मिटाने में सेठ फूलचन्दजीने बहुत प्रयत्न किया। लगभग सवा लाख रुपयोंकी सम्पत्ति आपने धार्मिक तथा शुभ कार्योंमें लगाई। आपने लगभग १० स्वामिवत्सल तथा ४ नौकारसी उत्सव किये। इस प्रकार प्रतिष्ठा पूर्वक जीवन विताते हुए आप संवत् १९६७ की कुँवार वदी ४ को स्वर्गवासी हुए। आपने अपने स्वर्गवासके समय ६ हजार रुपयोंकी रकम धार्मिक कामोंके लिये दी। आपके पुत्र श्री हीराचंद जीकी वय उस समय ९ सालकी थी। सेठ फूलचन्दजीके कोई सन्तान जीवित नहीं रहती थी, अतएव उन्होंने अपने पुत्र शिशु श्री हीराचन्दजीको ५। सालकी उम्रमें उनके वजनके बराबर १९ रतल केशर १ सहस्र रुपयोंके समेत श्री केसरियानाथके यहाँ चढ़ाई थी।

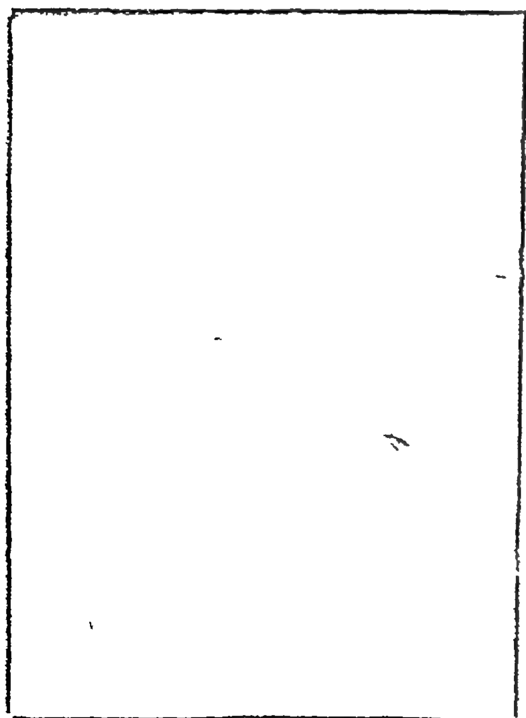
सेठ हीराचन्दजी सिंघवी—आपका जन्म संवत् १९५८ की मगसर सुदी २ को हुआ। आप इस समय अपने परिवारके प्रतिष्ठित पुरुष हैं। आप योग्य पिताकी योग्य सन्तान हैं तथा अपने पिताजीके समान ही धार्मिक व प्रतिष्ठा पूर्ण कार्य्य करनेकी भावनाएं हमेशा



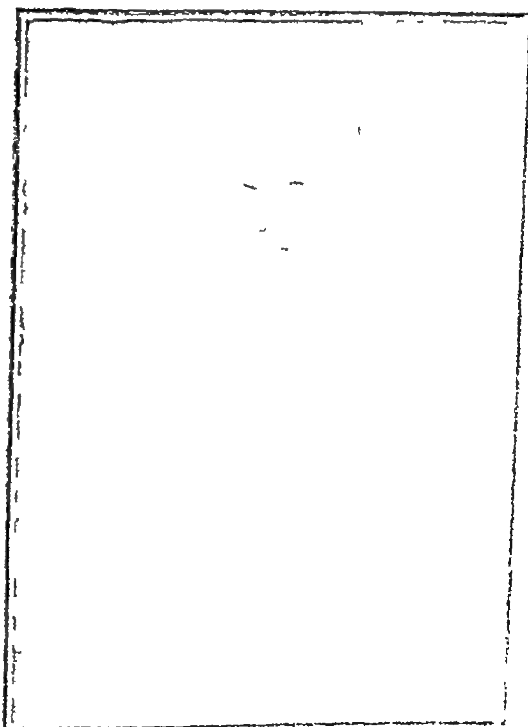
श्री सेठ हीराचन्दजी सिंघवी, कालिन्द्री



स्व० सेठ लछमणलालजी चोरड़िया, जयपुर



सेठ चन्दनमलजी रामपुरिया



श्री न[illegible]

आपके दिलमें रहती है। संवत् १६७२ मे सेठ हीराचन्दजीने श्री सम्मेद शिखरजीकी यात्रा की तथा वहाँ २ नवकारसीकी। इस यात्रामें आपने ८ हजार रुपये खरच किये। आपकी मातेश्वरी वड़ी उदार हृदयकी तथा धर्मात्मा स्त्री थी। आपने पांच पांच हजार रुपया लगाकर २ नवकारसी श्री शत्रुंजयजीमें की एवं ३ नवकारसी कालिन्द्रीमें करवाई। संवत् १६८० में सेठ हीराचन्दजी एव उनकी माताने श्रीशत्रुंजय तीर्थमें एक उपध्यान करवाया जिसमें ३८१ पुरुषोंने भाग लिया। इस कार्य्यमें आपने १६ हजार रुपयोंकी रकम लगाई। सिरोही स्टेटके सारणेश्वरजी नामक तीर्थमें आपने ११ हजार रुपयोंकी लागतसे एक सार्वजनिक धर्मशाला बनवाई। इस धर्मशालाके कारण अब यात्रियोंको बड़ा आराम मिलता है। जब संवत् १६८८ की आषाढ़ वदी १३ को आपकी माताजीका देहावसान हुआ उस समय उन्होंने ३ हजार रुपयोंका दान किया। इधर ४ सालोंसे आप ३ हजार रुपयोंका घास गायोंको डलवाते हैं। आपने कालिन्द्रीके जैन मन्दिरमें भगवानके चांदीकी आंगी व तीन देवियोके चांदीकी आंगियां बनवाई। इसी प्रकार केशरियाजीमें भी चांदी सोनेके इन्द्र बनवाये व हमेशा बजनेके लिये इंगिलश बैंड खरीदकर भिजवाया। कालिन्द्रीके अस्पतालमें ११००) की लागतसे एक कार्टर बनवाया व इतनी ही लागतसे साधु-साध्वियोंके लिये एक विद्याशाला बनवाई। इसी तरह कालिन्द्रीके महादेवके मन्दिरमें जीर्णोद्धार करवाया, गोशाला बनी उसमें मदद की। मन्दिरोंके सुधारमें, कालिन्द्रीके पानीके कुएके बनवानेमें भी मदद दी। शिवगंज कन्या पाठशालामें एवं मारवाड़के बंगलेके कार्य्यमें आदि इसी तरहके अनेकों कामोंमें समय समयपर आपने सैकड़ों रुपयोंकी मदद दीं। धार्मिक कामोंमें आप बड़ी उदारतापूर्वक सम्पत्ति खर्च करते हैं।

अभी संवत् १६६० में उदयपुरमें जो केसरियाजीका झगड़ा उग्र रूपसे खड़ा हुआ था तथा पूज्य आचार्य्य सूरि सम्राट् श्री शांतिसूरिजी महाराजने स्वयं वहां पधारनेका निश्चय किया, उस समय महाराज साहबके साथ सेठ हीराचन्दजी तथा चांदाके सेठ चांदकरणजी गोलेछा आदि सज्जन उपस्थित थे। जब आचार्य्य श्री ने मदाग नामक स्थानपर उपवास प्रारम्भ किया तब सारे भारतका जैन समाज विचलित हो गया। दूर दूरसे हजारों जैन गृहस्थ महाराज श्रीकी सातापुराने तथा झगड़ेको शान्ति पूर्वक निपटानेमें मदद करनेके लिये एकत्रित हुए। ऐसे समयमें दस-दस हजार मनुष्योंके आनेकी व्यवस्था एवं बीस-बीस हजार मनुष्योंके लिये ठंडाईकी व्यवस्था आपने बड़े ही सुन्दर ढङ्गसे की। जब महाराणाजीने आचार्य्य महाराजको पालणा करवाया, उस समयमें प्रसन्नता स्वरूप आपने ३५००) की गिन्नियां व नगदी महाराज श्रीपर निछावर की व अपनी दृढ़ भक्ति तथा श्रद्धाका परिचय दिया। इस प्रकार अनेकानेक धार्मिक कामोंमें आप उदारता पूर्वक भाग लिया करते हैं। गुप्तदान करनेकी ओर भी आपकी अच्छी अभिरुचि है। लगभग ३ लाख रुपयोंकी बड़ी रकम आप धार्मिक व शुभ कामोंमें खर्च कर चुके हैं।

जिस प्रकार सिंघवी सेठ हीराचन्दजी ने धार्मिक क्षेत्रमे बहुतसे कार्य्य करके मारवाड़में नाम पाया है उसी प्रकार सिरोही स्टेटमें भी आपका अच्छा सम्मान है। आप सिरोही स्टेटकी जैन समाजमें नामी महानुभाव हैं एवं बड़े सम्मानकी निगाहोंसे देखे जाते हैं। आपके गुणोंसे प्रसन्न होकर सिरोही दरबार श्री स्वरूपरामसिंहजीने सम्वत् १९८८ के वैसाख मासमें आपको "सेठ" की सम्माननीय उपाधि दी। वैसे तो सम्वत १९८१ से ही दरबारकी ओरसे आपके नामके आगे यह अलकाब लिखा जाता था पर इस पद के पूर्ण योग्य समझ कर आपको परवाना १९८८ में बख्शा गया। सिरोही दरबार आपका अच्छा आदर करते हैं। इसी तरह उदयपुर महाराणाजी एवं शत्रुंजय दरबारसे भी आपका परिचय है। जब सम्वत् १९८३ में आपका विवाह मड़गांवमें हुआ उस समय दरबारकी ओरसे लवाजमा, नगारा निशान व सिरोपाव आपको बख्शा गया। इसी प्रकार आपके पुत्र श्री रिखबदासजी एवं आपकी कन्याके विवाहोंमें भी स्टेटसे नगारा निशान वगैरा प्राप्त हुए।

सेठ हीराचन्दजी सिंघवी बड़े सरल स्वभावके तथा रईस तबियतके महानुभाव हैं। कालिन्द्रीमें आपकी विशाल हवेलियाँ नोहरे आदि बने हुए हैं। मोटर घोड़े आदि रखनेका आपको खास शौक है। कहनेका तात्पर्य यह कि आप सिरोही स्टेटके गण्यमान्य सज्जन हैं। आपके पुत्र श्री रिखबदासजीका जन्म सं०१९७५ की आसोज वदी १ को हुआ।

इस समय आपके यहाँ लगभग ४८ सालोंसे गोकाक मिलकी सूतकी एजंसीका काम होता आ रहा है। यहाँ सेठ फूलचन्द ऊमाजीके नामसे व्यापार होता है। इसके अलावा बम्बईमें सेठ फूलचन्द हीराचन्दके नामसे जौहरीबाजारमें बैङ्किंग, हुण्डी चिट्ठी तथा साहुकारी लेन देनका व्यापार होता है। आपकी प्रधान दुकान बम्बईमें है।

चोरड़िया, रामपुरिया

सेठ नेमचन्दजी फूलचन्दजी चोरड़ियाका खानदान, देहली

इस खानदानके पूर्व पुरुषोंका मूल निवासस्थान मारवाड़का था। मगर बहुत वर्षोंसे आपलोगों का परिवार देहलीमें ही निवास कर रहा है। आप चोरड़िया गौत्रके श्री जै० श्वे० स्थानकवासी सम्प्रदायको माननेवाले हैं। इस खानदानमें सेठ शामीलालजी हुए। आपके सन्तबिहारीजी, सन्तबिहारीजीके बूबनामालजी, बूबनामलजीके बरदीचन्दजी तथा बरदीचन्दजीके कन्हैयालालजी नामक पुत्र हुए। इस परिवारमें करीब करीब २०० वर्षोंसे कलाबत्तू का बड़े स्केल पर व्यवसाय चला आ रहा है।

लाला कन्हैयालालजीका जन्म सम्वत्१८८० व स्वर्गवास सम्वत १९४० में हुआ। आपके बसन्तरायजी, रूपचन्दजी, शादीरामजी, नेमचन्दजी, तथा रणजीतसिंहजी नामक पांच पुत्र हुए।



लाला फूलचन्दजी चोरडिया, देहली



लाला कपूरचन्दजी चोरडिया, देहली



लाला किशनचन्दजी चोरडिया, देहली



बाबू नौरतनचन्दजी चोरडिया, देहली

सेठ रूपचन्दजीका परिवार—आपके समयमें आपके यहाँ पर कलावत्तूका काम काज होता था। आपका स्वर्गवास संवत् १६६३ में हो गया। आपके खूबचन्दजी एवं गुट्टनमलजी नामक दो पुत्र हुए। लाला खूबचन्दजीका जन्म सं० १६१४ का था। आप सीधे सरल स्वभाव वाले तथा धर्मात्मा व्यक्ति हो गये हैं। आप सज्जन व्यक्ति थे। आप ही ने अपनी फर्म पर जवाहरातका व्यापार शुरू किया था। आपका स्वर्गवास सम्वत १६६४ में हो गया। आपके इन्द्रचन्द्रजी तथा जीतमलजी नामक दो पुत्र हुए। इनमें जीतमलजी गुट्टनलालजीके नाम पर गोद चले गये हैं। लाला गुट्टनलालजीने जवाहरातके व्यापारको खूब बढ़ाया था। आपका जन्म सं० १६३२ एवं स्वर्गवास सम्वत १६५६ मे हुआ। आपके दत्तक पुत्र जीतमलजीका भी स्वर्गवास हो गया है।

लाला इन्द्रचन्द्रजी—आपका जन्म संवत् १६३८ में हुआ। आप योग्य, मिलनसार तथा देशभक्त सज्जन हैं। खादीसे आपको विशेष प्रेम है तथा आप खादी ही को व्यवहारमें लाते हैं। वर्तमानमें आप ही अपने जवाहरातके व्यापारको योग्यता एवं सफलता पूर्वक संचालित कर रहे हैं। आपका देहलीकी व्यापारिक समाजमें अच्छा सम्मान है। आपके पुत्र चम्पालालजी मिलनसार युवक हैं। आपके लाभचन्दजी नामक पुत्र है।

लाला नेमचंदजीका परिवार—लाला नेमचंदजीका जन्म सं० १६०६ में हुआ। आप बड़े सरल, ईमानदार, धर्मात्मा तथा ३२ सूत्रोंके ज्ञाता थे। आपको सरोदा विद्याका भी अच्छा अभ्यास था। आपने अपनी फर्मपर कलावत्तूके व्यापारको बढ़ाया तथा बहुत सम्पत्ति कमाई व प्रतिष्ठा स्थापित की। आपका स्वर्गवास सं० १६४८ में हो गया। आपके सुगनचंदजी, माणकचंदजी, फूलचंदजी तथा कपूरचंदजी नामक चार पुत्र हुए। इनमेंसे लाला सुगनचंदजी गोद चले गये।

लाला फूलचंदजी—आपका जन्म सं० १६३८ की कार्तिक वदी १३ का है। आप व्यापार कुशल एवं योग्य व्यक्ति हैं। जिस समय आप केवल ८ वर्षके थे उस समय आपके पिताजीका स्वर्गवास हो गया था। आपने इस संकटका साहस तथा धीरजके साथ मुकाबिला किया व शान्ति पूर्वक अपने व्यवसायमें हाथ बटाने लगे। एक समय कुछ आपसमें मनमुटाव हो जानेके कारण आप सब भाइयोंसे खाली हाथ अलग हो गये और अपनी व्यापार चातुरी तथा साहससे यह सारा ऐश्वर्य्य पुनः सम्पादित किया।

आपने अपने यहांपर सं० १६६४ से पगड़ीका व्यापार आरम्भ कर बहुत सफलता प्राप्त की। अपने व्यापारको विशेष तरक्कीपर लानेके लिये आपने इन्दौर, उज्जैन, रतलाममें फर्में खोली तथा उनपर सफलता पूर्वक पगड़ीका व्यापार आरम्भ किया। बहुत दूर दूरतक आपके यहाँसे पगड़ियाँ जाती हैं। आपकी फर्म पगड़ीके व्यवसायियोंमें बड़ी मानी जाती हैं। पगड़ीकी परीक्षामें आप निपुण तथा बारीक दृष्टि रखनेवाले व्यक्ति हैं।

आप मिलनसार एवं परोपकार वृत्तिवाले सज्जन हैं। आज भी आप युवकोंको आश्रय

देते तथा उन्हें धन्धेसे लगाते हैं। अतिथि सत्कारका भी आपको बहुत शौक है। आप उदार तथा योग्य व्यक्ति हैं। युवावस्थामें आप बड़े साहसी तथा हृष्टपुष्ट व्यक्ति थे। आपने महावीर जैन विद्यालय सब्जीमंडी देहलीको ३०००) का दान व एक मकान प्रदान किया। और भी इसी प्रकार सहायता प्रदान करते रहते हैं। आप महावीर जैन विद्यालयके सभापति तथा देहलीकी ओसवाल समाजमें प्रतिष्ठित व्यक्ति माने जाते हैं। इसी प्रकार इन्दौर, उज्जैन आदि स्थानोंपर भी आपका अच्छा सम्मान है।

आपने सेठ ऋधमलजी लोढ़ा किशनगढ़ वालोंके पुत्र कल्याणमलजीके पुत्र नौरतनचन्दजीको गोद लिया है। श्रीकल्याणमलजी मिलनसार तथा लाला फूलचंदजीकी फर्मपर कार्य करते हैं। इसी प्रकार सुप्रसिद्ध पटवा खानदानके बाबू सुगन्धचन्दजी आपके यहांपर रोकड़िया हैं। बाबू नौरतनचन्दजी मिलनसार नवयुवक है। लाला फूलचंदजीके यहांपर बहुतसे मकानात बने हुए हैं।

लाला कपूरचन्दजी—आपका जन्म सं० १९४३ में हुआ। आप मिलनसार तथा व्यापार कुशल व्यक्ति हैं। आपने अपनी फर्मपर सं० १९६६ में पगड़ीका व्यापार शुरू किया। आपने भी सं० १९७० में अपनी एक फर्म इन्दौरमें खोली। इस व्यवसायमें आपको भी बहुत सफलता प्राप्त हुई। वर्त्तमानमें आपही अपनी फर्मके प्रधान सञ्चालक तथा योग्य व्यक्ति हैं। आपका देहलीकी ओसवाल समाजमें अच्छा सम्मान है। आपके यहांपर बड़े स्केलपर पगड़ीका व्यापार होता है। आपके पुत्र लाला किशनचन्दजीका जन्म सं० १९६५ की भादवा सुदी ३ का है। आप मिलनसार हैं तथा व्यापारमें भाग लेते हैं। आपके महतावचन्दजी नामक एक पुत्र हैं।

यह सारा खानदान देहलीकी ओसवाल समाजमें प्रतिष्ठित समझा जाता है।

सेठ लछमणलालजी केशरीलालजीका खानदान, जयपुर

इस खानदानवाले बीकानेर निवासी चोरड़िया गौत्रके श्री जै० श्वे० स्था० सम्प्रदायको माननेवाले हैं। इस परिवार वाले करीब १५० वर्षों पूर्व बीकानेरसे जयपुर आये तथा यहांपर जवाहरात एवं बैंकिंगका व्यापार प्रारंभ किया। तभीसे आप लोग यहींपर निवास कर रहे हैं। इस परिवारमें सेठ फतेसिंहजी हुए।

सेठ फतेसिंहजीः—आप संगीत कलामें निपुण, एक अच्छे चित्रकार तथा व्यापार कुशल सज्जन थे। आपने अपने जवाहरातके व्यापारको सफलतापूर्वक संचालित किया। आपके बख्तावरसिंहजी, बहादुरसिंहजी, भूधरसिंहजी तथा रतनसिंहजी नामक चार पुत्र हुए।

सेठ बहादुरसिंहजी, भूधरसिंहजी दोनो व्यापार-कुशल, जवाहरातके व्यापारमें अनुभवी एवं योग्य सज्जन हो गये हैं। आपने अपने व्यापारको बढ़ाया तथा जयपुरमें अपनी प्रतिष्ठा स्थापित की। आज भी आप लोगोंकी हवेली बहादुर भूधरके नामसे मशहूर है। आपने अपनी फर्म की शाखाएँ कोटा, हिंडोण आदि स्थानोंपर खोलकर अपने व्यापारको बढ़ाया था। आप दोनों बन्धुओंमें अच्छा मेल था। सेठ बहादुरसिंहजीके सदासुखजी, तथा लक्ष्मणलालजी नामक दो पुत्र हुए।

सेठ लक्ष्मणलालजीका जन्म सम्वत १८९९ मे हुआ। सं० १९३४ तक आपके परिवार वाले सम्मिलित रूपसे व्यापार करते रहे। इसके पश्चात् सब अलग अलग हो गये। आपने पहले पहल आगरामें सं० १९३५-३६ में रूईकी आढ़तका सफलता पूर्वक व्यापार किया। वहाँ से आपने मद्रास जाकर जवाहरात व बैंकिङ्ग व्यवसाय किया। आप धार्मिक विचारोंके ज्ञान वान व्यक्ति थे। जयपुरकी समाजमें आपका अच्छा सम्मान था। आपका स्वर्गवास सम्वत् १९६६ को जेठ बदी ७ को हुआ। आपके केशरीलालजी नामक एक पुत्र हुए।

सेठ केशरीलालजी—आपका जन्म सं० १९२६ की श्रावण बदीमें हुआ। आप व्यापार कुशल, शिक्षित तथा अनुभवी व्यक्ति हैं। आपको मद्रासमें आपकी ईमानदारी तथा कार्य्य-कुशलताके कई बड़े अंग्रेज अफसरोंने सर्टिफिकेट दिये हैं। अपने फर्म की सारी इंग्लिशकी कार्य्यवाही आप ही किया करते थे। सम्वत १९५२ में मद्रास दुकान बन्दकर आप जयपुर चले आये और यहां पर जवाहरातका व्यापार शुरू किया जिसमें सफलता प्राप्त की। आप यहांके प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। वर्तमानमें आप धर्म ध्यान करते हुए शान्ति लाभ कर रहे हैं। आपके पुत्र धनरूपमलजी एवं सरूपचन्दजीका जन्म स० १९६१ तथा १९६३ में हुआ। आप मिलनसार हैं तथा आप लोग धनरूपमल सरूपचन्दके नामसे जवाहरातका व्यापार करते हैं। धनरूपमलजीके ज्ञानचन्द्रजी, नेमीचन्दजी एवं सौभागमलजी नामक तीन पुत्र तथा सरूपचन्दजी के गुमानमलजी और उमरावमलजी नामक दो पुत्र है।

श्रीभूधरमलजीके प्रपौत्र सेठ सुगनचन्दजी बड़े नामी जौहरी हो गये हैं। आपकी जवाहरातमें बारीक दृष्टि थी। इसमें आप निपुण और साहसी तथा जवाहरातके थोक व्यापारियोंमेंसे एक थे। आपने अपने हाथोंसे बहुत रुपया कमाया तथा खर्च किया। आपके शागीर्द आज भी जयपुरमें अच्छा जवाहरातका व्यापार कर रहे। आपका स्वर्गवास सम्वत् १९८७ माह बदी ७ को हुआ।

लाला सुलतानसिंहजी निहालचन्दजीका खानदान, देहली

इस खानदानवाले मारवाड़ निवासी चोरड़िया गौत्रके श्री० जै० श्वे० स्था० सम्प्रदाय को माननेवाले हैं। बहुत वर्षों से आप देहलीमें ही निवास कर रहे हैं। इस खानदानमें लाला गंगादासजी हुए जिनके नाम पर हीरालालजी गोद आये। आपने गोटेका व्यवसाय सफलता

पूर्वक किया। आपके छोटी ऊमरमें निःसन्तान गुजर जाने पर आपके नाम पर पालीसे लाला सुल्तानसिंहजी गोद आये।

लाला सुल्तानसिंहजीका जन्म सं० १९२४ में हुआ। आप बड़े धार्मिक व्यक्ति थे। आपने बहुतसी धार्मिक संस्थाओंमें भाग लिया था। आप भी गोटेका व्यवसाय करते रहे। आपका स्वर्गवास सं० १९७६ में हो गया। आपके निहालचन्दजी नामक एक पुत्र हुए। लाला निहालचन्दजीका जन्म सं० १९६४ में हुआ। आपने अपने यहाँ पर सं० १९८०-८१ से जवाहरातका व्यापार प्रारम्भ किया। वर्तमानमें आप ही अपने व्यापारके प्रधान संचालक एवं मिलनसार व्यक्ति हैं। आप महावीर जैन पुस्तकालयके भूतपूर्व मन्त्री तथा उसकी प्रबन्धकारिणी सभाके वर्तमानमें सभासद हैं। श्वे० स्था० जैन कन्या पाठशालाकी प्रबन्धकारिणीके मेम्बर, महावीर जैन विद्यालय सब्जी मण्डीकी प्रबन्धकारिणीके मेम्बर आदि हैं। आप उत्साही युवक हैं। आपके सुरेन्द्रकुमार नामक एक पुत्र हैं।

सेठ नथमलजी निहालचन्दजी चोरड़िया, जबलपुर

इस परिवारके मालिकोंका मूल निवास स्थान बड़ीपादू (मारवाड़) है। आप लोग श्वे० जैन समाजके तेरापन्थी आम्नायको माननेवाले सज्जन हैं। मारवाड़से व्यापारके लिये इस परिवारके पूर्वज सेठ मूलचन्दजी चोरड़िया ग्वालियर आये और वहाँ आप लेन-देनका व्यापार करते रहे। आपने अपने नाम पर जबलपुरसे सेठ नन्दरामजी पारखके पुत्र श्रीनथमलजी को दत्तक लिया।

सेठ नथमलजी ग्वालियरसे जबलपुर आ गये तथा यहाँ श्री शारदाप्रसादजी खत्रीकी भागीदारीमें नत्थूमल शारदाप्रसादके नामसे व्यापार आरम्भ किया और पश्चात् आपने अपना स्वतन्त्र कपड़ेका व्यापार आरम्भ किया। इस व्यापारमें आपने लाखों रुपयोंकी सम्पत्ति उपार्जित कर मकान, बँगले आदि खरीद किये। इस प्रकार स्थाई सम्पत्तिकी वृद्धि करनेके साथ साथ सेठ नथमलजीने अपने परिवारके मान सम्मानको अच्छा बढ़ाया। आप जबलपुर तथा आस पासकी जैन समाजमें नामी पुरुष थे। जबलपुर सदरके गोरखपुर मोहल्लेमें आपने एक धर्मशाला बनवाई, तथा सदरमें एक कालीजीका मन्दिर भी बनवाना। जनवरी सन् १९२९ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके कोई सन्तान न होनेसे आपने श्री चन्द्रभानजी पारखके पुत्र श्री निहालचन्दजीको दत्तक लिया।

श्रीनिहालचन्दजी सरल स्वभावके नवयुवक हैं। आपके यहां श्री नत्थूमल निहालचन्द के नामसे कपड़ेका व्यापार तथा मकानातके किरायेका काम होता है। आपका लेन देन विशेष कर अंग्रेज लोगोंसे रहता है।

सेठ रतनचन्दजी रामपुरियाका खानदान, खुजनेर, छापाहेड़ा, संडावता (नरसिंहपुर)

इस परिवारके मालिकों का मूल निवासस्थान बीकानेर है। आप श्री श्वे० जैन मन्दिर मार्गीय व्यक्ति हैं। इस परिवारके पूर्वज सेठ करमचंदजीके रतनचन्दजी तथा जोरावरमलजी नामक दो पुत्र हुए। इनमे सेठ रतनचन्दजी रामपुरियाका परिवार इस समय खुजनेर, छापाहेड़ा तथा संडावतामें निवास करता है एवं सेठ जोरावरमलजीका परिवार इस समय सेठ हजारीमल हीरालाल रामपुरियाके नामसे बीकानेर स्टेटका प्रसिद्ध करोड़पती परिवार है। सेठ रतनचन्दजी तथा जोरावरमलजी दोनों बन्धुओंका स्वर्गवास बीकानेरमें ही हुआ। आप दोनों भाइयोंकी सम्मिलित छत्री बीकानेरमें पावनसूरिजीके बगीचेमे बनी है। सेठ रतनचन्दजीके पीछे उनके परिवार ने संवत् १९३७ में बीकानेरमें शहरसारिणी की थी।

सेठ रतनचन्दजीके छोगमलजी, पन्नालालजी, मोखमचन्दजी तथा फतेहचन्दजी नामक चार पुत्र हुए। ये चारों बंधु व्यापारके निमित्त संवत् १९१५ के लगभग नरसिंहगढ़ स्टेटके संडावता नामक गाँवमें आये। थोड़े समय बाद सेठ छोगमलजी और मोखमचन्दजी छापाहेड़ा में और सेठ पन्नालालजी खुजनेर में व्यापार करने लगे। इस प्रकार इन चारों भाइयोंका परिवार दस पाँच मीलके अन्तरपर अपना अपना स्वतन्त्र व्यापार करने लगा।

सेठ छोगमलजी रामपुरियाका परिवार—आपके कोई संतान नहीं थी। अतः आपके नामपर आपके भतीजे सेठ हमीरमलजी दत्तक आये। आपका जन्म सवत् १९२२ में हुआ है। आपके यहां हमीरमल भँवरलालके नामसे कपड़ेका व्यापार होता है। सेठ हमीरमलजीके पुत्र भँवरलालजी हैं।

सेठ पन्नालाल जी रामपुरियाका परिवारः—सेठ पन्नालालजी रामपुरियाने संवत् १९५५ में खुजनेरमें अपना निवास बनाया। आपने अपने व्यापारकी अच्छी उन्नति की। साथ ही अपने परिवारके सम्मानको भी बढ़ाया। संवत् १९६७ की जेठ सुदी १२ को ७६ सालकी वयमें आप स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र सेठ बुधमलजी तथा सेठ माणकचन्दजी विद्यमान हैं। सेठ बुधमलजीका जन्म संवत् १९३१ में एवं माणकचन्दजी का १९४५ में हुआ। आपके यहाँ इस समय साहुकारी लेनदेनका व्यापार होता है। आप लोगोंने खुजनेरमें ठाकुरजीके मन्दिरमें ८ आँगियाँ बनवाई तथा उपाश्रयमें मदद दी। आप दोनों समझदार तथा वजनदार व्यक्ति हैं। आपका व्यापार अलग अलग होता है। बुधमलजीके पुत्र रंगलालजी, दुलीचन्दजी तथा चम्पालालजी एवं माणकचन्दजीके माँगीलालजी तथा जतनलालजी हैं। इन भाइयोंमें रंगलालजी व्यापारमें भाग लेते हैं, दुलीचन्दजी एफ० ए० में पढ़ते हैं एवं माँगीलालजीने मेट्रिकतक अध्ययन किया है।

सेठ मोखमचन्दजी रामपुरियाका परिवार.—सेठ मोखमचन्दजीने संवत् १९२२ में

छापाहेड़ामें छोगमल हमीरमलके नामसे दुकान स्थापित की तथा अपने हाथोंसे व्यापारमें अच्छी सम्पत्ति उपार्जित कर अपने परिवारके सम्मान व प्रतिष्ठाको विशेष बढ़ाया। सेठ मोखमचन्दजीके हमीरमलजी और हिम्मतमलजी नामक दो पुत्र हुए। इनमें हमीरमलजी सेठ छोगमलजीके नामपर दत्तक गये। संवत् १९४२ में सेठ छोगमलजी तथा मोखमचन्दजी का कारवार अलग अलग हो गया। तब से सेठ हिम्मतमलजी अपने पिताजीके साथ "रतन-चन्द मोखमचन्द" के नामसे अपना स्वतन्त्र कारवार करने लगे। सेठ मोखमचन्दजी नरसिंह-गढ़ रियासतमें तथा बीकानेरकी ओसवाल समाजमें प्रतिष्ठित महानुभाव थे। संवत् १९७६ की श्रावण वदी अमावस्याको ७५ सालकी वयमें आपका स्वर्गवास हुआ। आपके पुत्र सेठ हिम्मतमलजी आपकी मोजूदगी में ही संवत् १९७२ में केवल ३६ सालकी अल्पायुमें स्वर्ग-वासी हो गये।

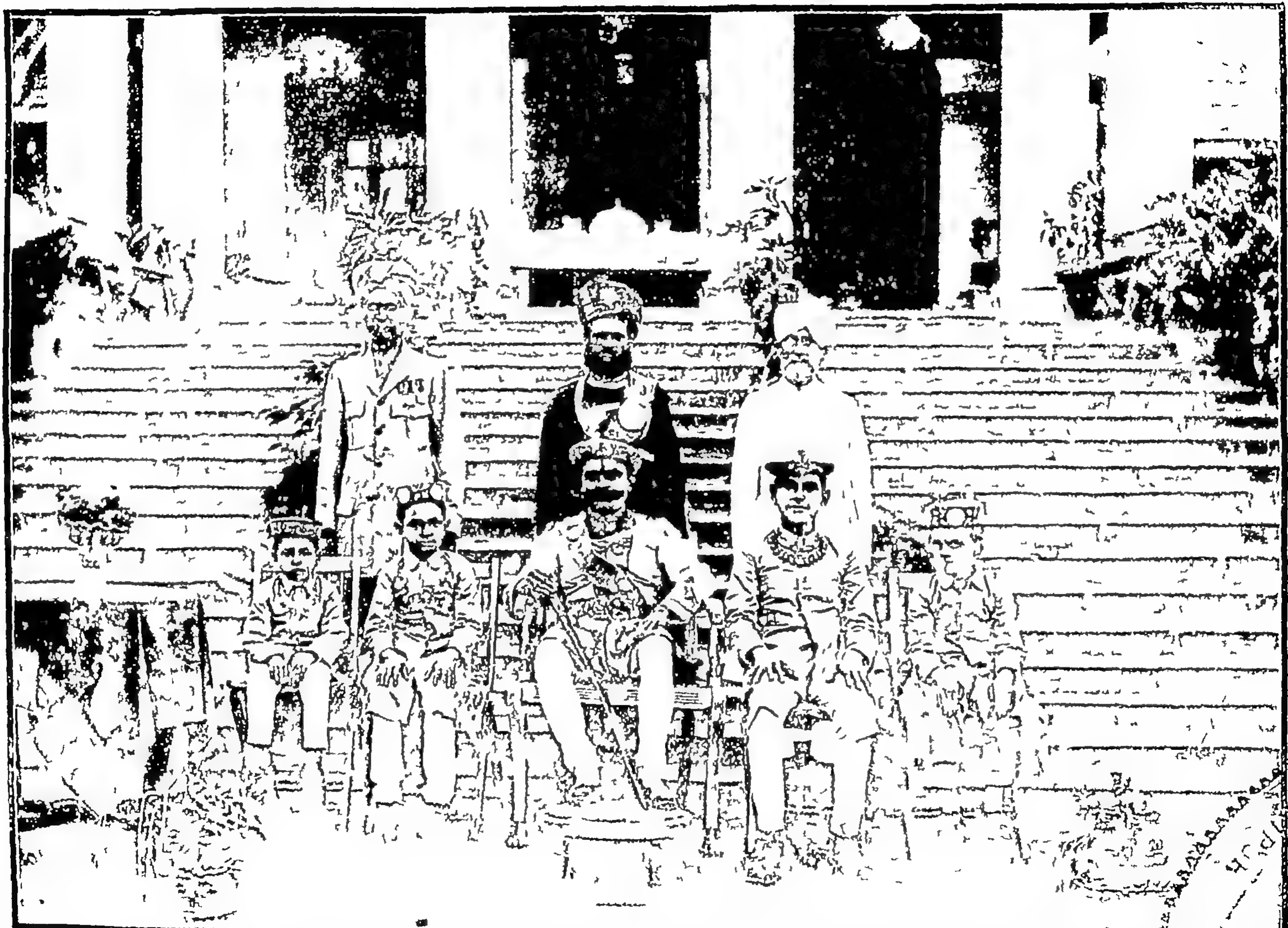
वर्तमानमें सेठ हिम्मतमलजीके पुत्र सेठ नथमलजी मौजूद हैं। आपका जन्म संवत् १९६३ की फागुन सुदी १५ को हुआ है। रियासतकी तरफसे भी आपको समय समयपर सम्मान मिलता रहता है। श्री नथमलजी मिलनसार तथा विवेकशील युवक हैं। आपके यहां इस समय छापाहेडामें रतनचन्द मोखमचन्दके नामसे साहुकारी लेनदेनका व्यापार होता है। आपके पुत्र श्रीगंभीरमलजी तथा निर्मलसिंहजी हैं।

सेठ फतेचन्दजी रामपुरियाका परिवारः—हम ऊपर लिख आये हैं कि सेठ फतेचंदजी रामपुरिया आरंभसे ही सडावतामें व्यापार करते रहे। आपने भी नरसिंहगढ़ राज्य तथा बीकानेरमें अपने परिवारके मान सम्मान तथा प्रतिष्ठाको बढ़ाया। संवत् १९७५ की चैत सुदी १ को आप स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र सेठ चंदनमलजी तथा सेठ सागरमलजी इस समय विद्यमान हैं। आप दोनों भाइयोंका जन्म क्रमशः संवत् १९४८ तथा १९५७ में हुआ है। आप दोनों बंधु सयाने, समझदार तथा प्रतिष्ठित महानुभाव हैं। आपके यहाँ इस समय "फतेचन्द चंदनमल" के नामसे व्यापार होता है।

इस समय सेठ चन्दनमलजीके पुत्र सोहनलालजी तथा भीकमचन्दजी व सेठ सागर मलजीके पुत्र सदनमलजी एवं सम्पतलालजी हैं। श्री सोहनलालजी ने मेट्रिकतक अध्ययन किया है।

सेठ धनसुखदास जेठमल रेदानीका खानदान, मिर्जापुर

यों तो इस परिवारके सज्जन बड़ीपादू (जोधपुर स्टेट) के निवासी हैं, लेकिन लगभग सवा सौ सालोंसे यह परिवार मिर्जापुरमें निवास कर रहा है। मारवाड़से इस परिवारके पूर्वज सेठ धनसुखदासजी रेदानी कानपुर होते हुए मिर्जापुर आये और यहां आकर आपने



बाई ओरसे—(१) कुं० आनन्दचन्दजी (२) कुं० उदयचन्दजी (३) सेठ मिश्रीलालजी रेंदानी (४) कुं० ज्ञानेन्द्रचंद्रजी (५) कुं० प्रकाशचंद
मेसर्स धनसुखदास जेठमल रेंदानी, मिर्जापुर

गल्लेका व्यापार आरम्भ किया। आपके फूलचन्दजी और जेठमलजी नामक दो पुत्र हुए, इनमें श्री फूलचन्दजी छोटी वयमें ही स्वर्गवासी हो गये।

लाला जेठमलजी— आप इस परिवारमें नामांकित तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति हुए। आपने अपने गल्लेके व्यापारको उठाकर हुंडीकी दलाली आरम्भ की। आपकी कार्य्य चातुरीसे आप व्यवसायमें बड़े होशियार तथा वजनदार दलाल समझे जाने लगे। अच्छे अच्छे नामांकित व्यापारियोंसे परिचय होनेके कारण आपने गरीब लोगोंको धंधेंसे लगानेमें बहुत मदद दी। धीरे धीरे आपने अपना घरू व्यवसाय आरम्भ किया तथा कलकत्ता, रांची, बलरामपुर, झालदा आदि स्थानोंमें अपनी २०-२५ शाखाएं खोलीं। व्यापारकी उन्नतिके अलावा आपने श्री केसरियाजी तीर्थके हाथीपोलकी धर्मशालाएं कोठरी एवं इलाहाबादके बोर्डिङ्ग हाउसमें कमरे बनवाये। इसी तरह तीर्थयात्रा आदि धार्मिक कामोंमें जीवन बिताते हुए आप संवत् १९६१ में स्वर्गवासी हुए। आपने अपने स्वर्गवासके समय २५ हजार रुपयोंका दान किया था। इस रकममे कुछ और मिलाकर आपके पुत्र बाबू मिश्रीलालजी रेदानीने बद्रीदासजी बहादुर जौहरीके जैन मन्दिरके समीप एक धर्मशाला बनवाई। सेठ जेठमलजीने अपने मुनीम गुमास्तोंमें जितना लेना था वह सब माफ कर दिया। आपके कोई सन्तान नहीं थी। अतएव आपके नामपर पाली (मारवाड़) से भंसाली गौत्रके श्रीमिश्रीलालजी संवत् १९५२ में दत्तक आये।

बाबू मिश्रीलालजी रेदानी—आपका जन्म सवत् १९४५ में हुआ। आपकी नाबालगीमें लाला जेठमलजीके तमाम कारबारको मुनीम लाला कपूरचंदजी सीपानी तथा हनुमानदासजीने बड़ी योग्यतासे सम्हाला। लाला मिश्रीलालजीने बालिग होनेके बाद अपने व्यापारको सम्हाला तथा अपने बैंङ्किग व चपड़ेके व्यापारकी उन्नति की ओर विशेष लक्ष दिया, तथा अपनी फर्मपर कार्पेटका व्यापार भी आरम्भ किया। आपने शैलक और कार्पेटका इम्पोर्ट विदेशोंसे करनेके लिये कलकत्तेमें मिश्रीलाल एण्ड संसके नामसे एक आफिस खोला। इसके अलावा रंगून से लाख इम्पोर्ट करनेके लिये एक ब्रांच आपने वहां भी खोली। इसके अलावा स्टोन और कंट्राक्टिंगका भी बहुत-सा व्यापार आपने किया। इस प्रकार सम्पत्ति उपार्जन कर आपने अपने परिवार एवं फर्मके सम्मानको विशेष बढ़ाया। आपका स्वभाव बड़ा मिलनसार है। धार्मिक तथा सार्वजनिक कामोंमें आप उत्साहसे काम लेते हैं। आपने देहलीमें दादाजी जिनचन्द्रसूरिजी महाराजकी छत्री बनवाकर उसकी प्रतिष्ठा करवाई। जयपुरके पास मालपुरा नामक स्थानमें एक छत्री बनवाई। मिर्जापुरमें एक जैन बोर्डिङ्ग तथा श्री मिश्रीलालजी रेदांणी स्कूलके लिये ८४ हजार रुपये लगाकर एक बिल्डिंग बनवाई। इसके ट्रस्टी श्रीलाभचंदजी सेठ, श्री बीजराजजी कोठारी एवं आप हैं। इस संस्थाके स्थायी प्रबन्धके लिये एक लक्ष एक सौ ग्यारह रुपयोंका भारी दान भी देकर आपने अपनी दानशीलताका परिचय दिया था। लेकिन उपर्युक्त रकम ट्रस्टियोंके एक प्रतिष्ठित फर्मपर ब्याज रखी थी,

वह रुपया उस फर्ममें रह जानेसे वोर्डिङ्ग तथा स्कूलका काम अधूरा ही रह गया। वर्तमानमें लालाजी इस ओर फिरसे प्रयत्नशील हैं। कलकत्ते के श्रीसंघने आपको श्री अयोध्या और रतनपुरी तीर्थोंकी सम्भालके लिये ट्रस्टी नियुक्त कर सम्मानित किया है।

धार्मिक तथा व्यापारिक कामोंके अलावा सार्वजनिक क्षेत्रमें भी लाला मिश्रीलालजी अच्छा सहयोग लेते हैं। आप मिर्जापुर म्युनिसिपैलिटीके मेम्बर एव ऑनरेरी मजिस्ट्रेट रह चुके हैं। इस समय आप शैलक एसोसियेशन, रेडपेअर एसोसियेशन तथा वाय काउण्ट एसोसियेशनके व्हाइस प्रेसिडेण्ट हैं एव स्थानीय सेवासमितिके जन्मदाता हैं। वृटिश आफिसरोंसे भी आपका अच्छा मेल है। मिर्जापुरमें गगाजीके किनारे पर आपकी एक बहुत सुन्दर एवं रमणीय कोठी है। इसके आसपास ३७ वीघा जमीनमें कई मकानात एवं बगीचा वना हुआ है। आपकी कोठी पर यू० पी० गवर्नरने आकर आपको सम्मानित किया था। सिलवर जुविली आदि उत्सवोंपर आपको कई सार्टिफिकेट प्राप्त हुए हैं।

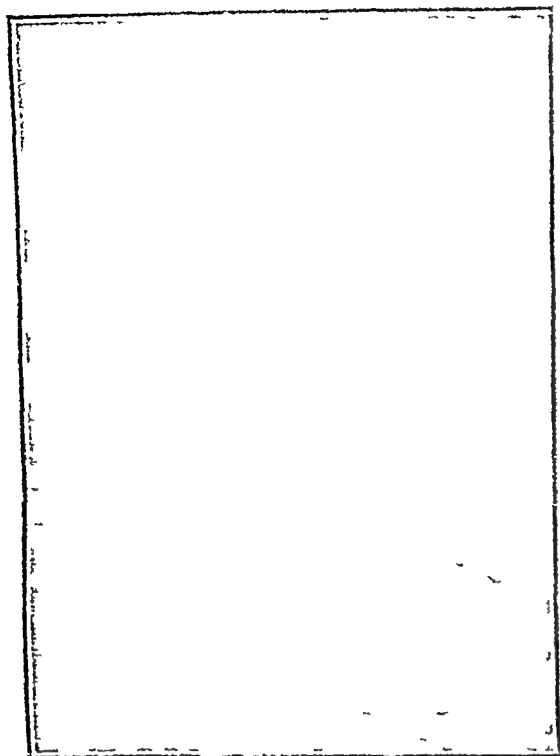
लाला मिश्रीलालजीके इस समय ६ पुत्र हैं जिनके नाम क्रमशः वावू ज्ञानचंदजी, उदयचंदजी, प्रकाशचंदजी, आनन्दचंदजी, विजयचंदजी एवं वीरेन्द्रचन्द्रजी हैं। वावू ज्ञानचन्दजीका जन्म सम्वत् १९७० में हुआ। आप शिक्षित युवक हैं, तथा फर्मके व्यापार संचालनमें भाग लेते हैं। वावू उदयचंदजी कलकत्तेमें B. S. C. में अध्ययन करते हैं तथा शेप वन्धु मिर्जापुरमें शिक्षा लाभ करते हैं। इस समय इस परिवारमें वैङ्किग, शैलक, जमींदारी, एक्सपोर्ट, कारपेट, स्टोन तथा जनरल मर्चेंटाइजका व्यापार होता है।

राजा बच्छराजजी नाहठाका खानदान, बनारस

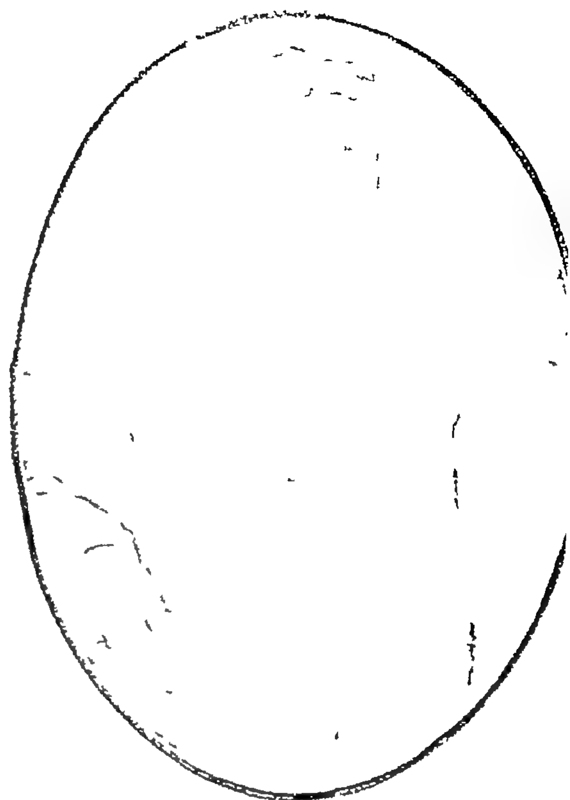
इस खानदान वालोंका मूल निवासस्थान यों तो मारवाड़का था, मगर करीब १५० वर्षों से आप लोग बनारसमें ही निवास कर रहे हैं। आप लोग नाहटा गौत्रके श्री जै० श्वे० मं० मार्गीय व्यक्ति हैं। इस खानदानमें वावू वच्छराजजी वड़े नामी तथा प्रतिभाशाली व्यक्ति हुए।

राजा बच्छराजजी—आप इस खानदानमें वड़े प्रतापी, प्रभावशाली तथा ऐश्वर्य्यशाली महानुभाव हो गये हैं। आप कार्यकुशल, चतुर तथा तीक्ष्ण बुद्धिवाले सज्जन थे। आप लखनऊके नवावके खजांची थे। आपकी योग्यता, व्यवस्थापिका शक्ति तथा विचार शीलतासे प्रसन्न होकर लखऊन के नवाव ने आपको "राजा" का खिताव प्रदान कर सम्मानित किया था। आप बनारस तथा लखनऊमें सम्माननीय व्यक्ति गिने जाते थे। आपका सितारा उस समय पूर्ण उन्नतावस्था पर था।

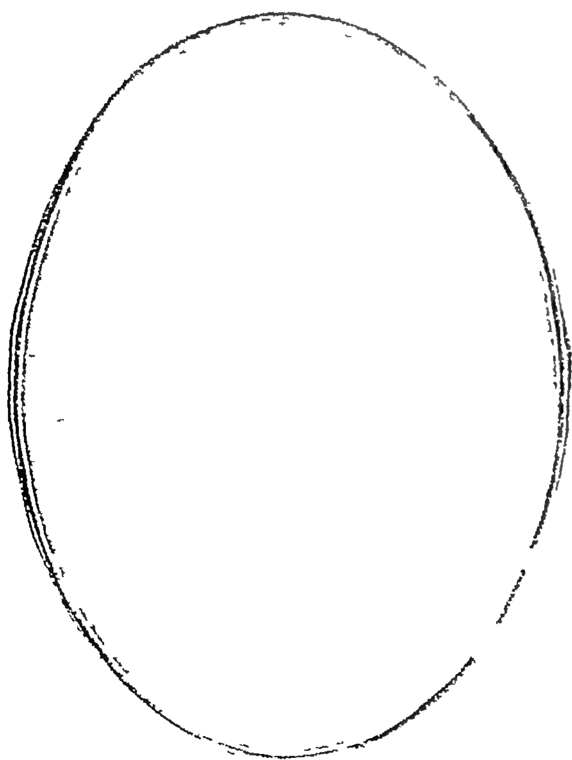
आप बड़े धार्मिक तथा परोपकारी व्यक्ति थे। आपने भदैनीमें एक सुन्दर मन्दिर तथा एक घाट बनवाया जो आज भी बच्छराज घाटके नामसे मशहूर है। आपने इस प्रकारके कई कार्य्य किये। आपके नामसे यहांपर एक फाटक भी विद्यमान है। आप बनारसकी जनतामें



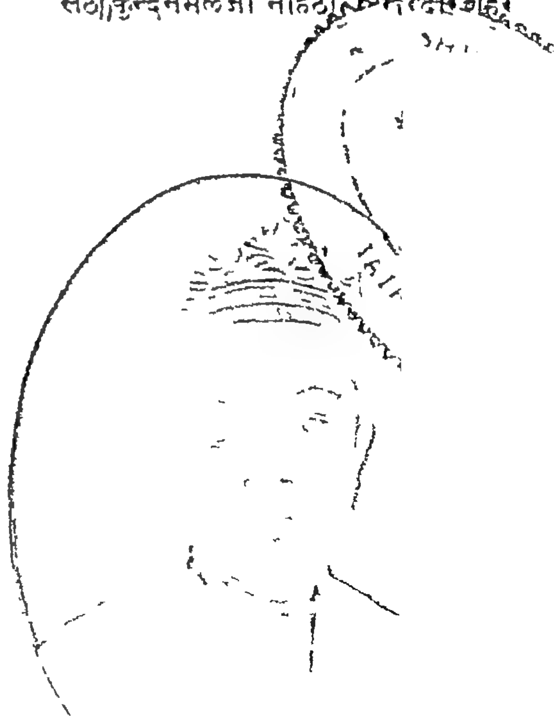
स्व० सेठ पाचीरामजी नाहटा सरदारशहर



सेठ कुन्दनमलजी नाहटा, सरदारशहर



स्व० सेठ जयचन्दलालजी नाहटा, सरदारशहर



बाबू शुभकरणजी S/o जयचन्दलालजी नाहटा

लोकप्रिय, माननीय एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति हो गये हैं। आपके बनाये हुए मन्दिर तथा घाट आज भी सुन्दर स्थितिमें विद्यमान हैं। आपने बनारसमें अपनी जमींदारी भी बढ़ाई थी। आप इस प्रकार बनारसमें चमकते हुए व्यक्ति हुए। आपके लक्ष्मीचंदजी, अयोध्याप्रसादजी तथा बट्टूजी नामक तीन पुत्र हुए।

बाबू लक्ष्मीपतजीका खानदान—बाबू लक्ष्मीपतजी अपनी जमीदारीके कामको संभालते रहे। आपके पुत्र दीपचन्दजीने सूद टोलामें अपने पिताजीके स्मारकमें एक मन्दिर बनवाया। आपका छोटी उम्रमे ही स्वर्गवास हो गया। आपके पुत्र शिखरचन्दजीका जन्म संवत् १६३६ में हुआ। आप भी अपने मकानात व जमींदारीके कामको करते रहे। आपका स्वर्गवास १६ अप्रैल सन् १६२५ में हो गया। आपके धनपतसिहजी, अमोलखचन्दजी, प्रतापचन्दजी, विजयचन्दजी, अभयसिंहजी एवं जयचन्दजी नामक छः पुत्र हुए।

बाबू धनपतसिंहजी—आप शिक्षित एवं सुधरे हुए खयालोंके सज्जन हैं। आपका जन्म सं० १६६१ की कार्तिक वदी १३ को हुआ। आपने सन् १६२५ में हिन्दू युनिवर्सिटीसे बी० ए० तथा एल० टी० की डिग्री सन् १६३६ मे हासिल की। वर्तमानमें आप कानपुर के पृथ्वीराज हाईस्कूल में असिस्टेण्ट हेडमास्टर हैं। आपके महिपतसिहजी, लखपतसिंहजी एवं नरपतसिंहजी नामक तीन पुत्र हैं।

बाबू अमोलखचन्दजी—आपका जन्म सं० १६६३ में हुआ। आप शिक्षित, योग्य एवं मिलनसार सज्जन हैं। आपने बी० ए० सन् १६२७ में हिन्दू यु० से तथा सन् १६२६ में ला की डिग्री प्रथम दर्जेसे पास की। वर्त्तमानमें आप बनारसमें सफलतापूर्वक वकालात करते हैं। आपके वीरेन्द्रकुमारजी, राजेन्द्रकुमारजी तथा नरेन्द्रकुमार नामक तीन पुत्र हैं। बाबू प्रतापचन्दजी का जन्म सं० १६६५ में हुआ। आप बी० काम तक अध्ययनकर वर्तमानमें महाबोधी सोसायटी बनारसके असिस्टेण्ट सेक्रेटरीकी सर्विस पर हैं। विजयचन्द्रजीका जन्म १६६८ में हुआ। आप अभी बी० एस० सी० में पढ़ते हैं। अभयसिहजीका जन्म सं० १६७१ में हुआ। आप जमीदारीका काम देखते हैं। जयचन्दजीका जन्म सं० १६७७ में हुआ। आप अभी मैट्रिकमें पढ़ रहे हैं।

श्री अयोध्याप्रसादजीके बहादुर सिंहजी नामक हुए जिनके नाम पर श्री सूरजमल गोद आये। आप अभी विद्यमान हैं तथा जवाहरातका व्यापार करते हैं।

सेठ पांचीरामजी कुन्दनमलजी नाहटा, जलपाईगुड़ी

इस परिवारके सज्जनोंका मूल निवासस्थान तोल्यासार (बीकानेर) का था। जब सरदार शहरकी नई आबादी हुई उस समय इस खानदानके पूर्वपुरुष सेठ पदमचन्दजीके पुत्र सेठ सुखमलजी एवं सेठ कालूरामजी सरदारशहर में आकर रहने लगे। तभीसे आप लोग यहीं पर निवास करते हैं। आप लोग नाहटा गौत्रीय श्री श्वेताम्बर जैन तेरापन्थी

मतावलम्वी हैं। आप दोनों वन्धु वड़े परिश्रमी, साहसी एवं व्यापार कुशल सज्जन थे। करीब १०० वर्ष पूर्व देशसे चलकर आप जलपाईगुड़ी आये और यहाँ आकर मेसर्स सुखमल कालूरामके नामसे अपना कारवार शुरू किया। आपको कपड़ेके व्यवसायमें वहुत लाभ रहा। अपनी स्थितिको और भी मजबूत करनेके लिये आपने सम्वत् १९५१ में मे० नथमल भीखमचन्द्के नामसे विलायती कपड़ेके इम्पोर्ट और आढ़तका व्यापार प्रारम्भ किया। आपने जमीदारी भी खरीद् की। सम्वत् १९६९ तक आप लोगोंका व्यवसाय शामलाल में चलता रहा। तदनन्तर आपदोनो भाइयोके परिवार वाले अलग २ होकर अपना स्वतन्त्र व्यवसाया करने लगे। सेठ सुखलालजीके घनसुखदासजी और शोभाचन्दजी नामक दो पुत्र हैं।

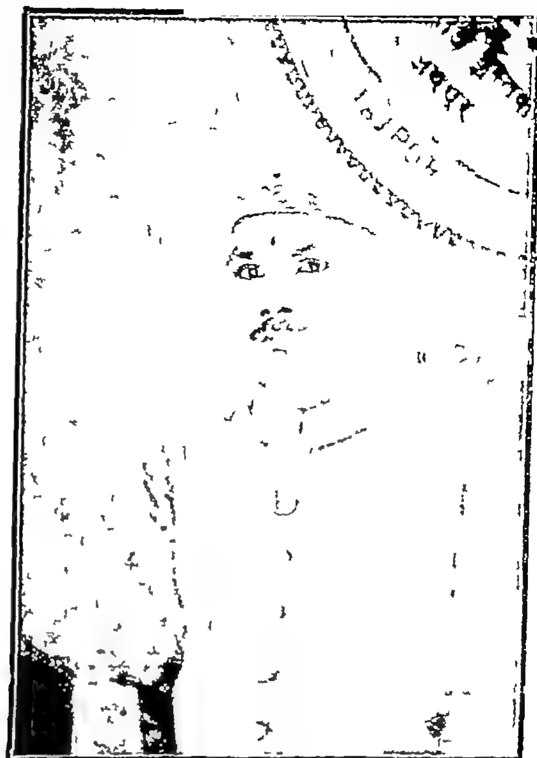
सेठ कालूरामजीका स्वर्गवास सवत् १९४९ में हो गया। आपके पाँचीरामजी एवं नथमलजी नामक दो पुत्र हुए। आप दोनों भाई भी वड़े वुद्धिमान और व्यापारकुशल सज्जन थे। आप लोगोंके हाथोंसे अपने फर्मकी वहुत तरक्की हुई और जमींदारीमें भी वृद्धि हुई। सम्वत् १९६९ में अपने व्यापारके अलग २ हो जानेके वाद आप दोनों वन्धुओंने अपना व्यापार शामलातमें शुरु किया। इस समय आप लोगोंकी कलकत्ता दुकान पर मे० पाँचीराम नथमल नाम पड़ने लगा। इस समय भी आप लोग कपड़ेका व्यवसाय करते रहे। सम्वत् १९७१ तक आप दोनों भाई शामलात में व्यापार करते रहे। तदनन्तर आप दोनों अलग २ हो गये। आप दोनों भाइयोंका जलपाईगुड़ी और सरदारशहरमें अच्छा सम्मान था। आप लोगों का धर्म की ओर भी वहुत ध्यान था। आप दोनों भाइयों ने अलग २ होकर अपना स्वतन्त्र व्यापार शुरू किया। सेठ पाँचीरामजीने मे० कुन्दनमल जयचन्दलालके नामसे और नथमलजीने मे० कालूराम नथमलके नामसे अपना व्यापार शुरू किया। कलकत्ता फर्म पर भी पाँचीराम नाहठा एवं नथमल सुमेरमलके नामसे क्रमश. अलग २ व्यवसाय होने लगा। कलकत्ता १७७ हरिसन रोडमें इस समय सेठ पांचीरामजीके परिवारवाले पाँचीराम नाहठाके नाम से अपना कारवार टी गार्डेन फायनेंस हेल्प (Tea garden Finance Help) तथा विलायती कपड़ेका इम्पोर्ट करते हैं। मे० नथमल सुमेरमलका काम सम्वत १९८८ में वन्द् कर दिया गया। सेठ पांचीरामजीका सम्वत १९८८ मे स्वर्गवास हो गया। आपके कुन्दनमलजी नामक एक पुत्र हैं। इसी प्रकार जयचन्दलालजीके शुभकरणजी नामक पुत्र हैं।

सेठ कुन्दनमलजी वड़े ही मिलनसार एवं व्यापारकुशल सज्जन हैं। वर्त्तमानमें अपने फर्मके सारे व्यवसायका संचालन आप ही करते हैं। आपके मोहनलालजी, दीपचन्दजी, श्रीचन्दजी एवं छोटूलालजी नामक चार पुत्र हैं। आप लोग पढ़ते हैं।

सेठ नथमलजीका स्वर्गवास संवत् १९८१ में हो गया। आपके सुमेरमलजी नामक एक पुत्र हैं। आपका जन्म सवत् १९६६ में हुआ। वर्त्तमानमें आप ही अपने व्यवसायको संचालित करते हैं। आप वड़े योग्य और मिलनसार हैं। आपने अपने फर्मकी अधिक उन्नति की है। आपके भँवरलालजी नामक एक पुत्र हैं। आजकल आपके यहां जमींदारीका कामकाज होता है।



लाला निहालचन्दजी चोरडिया, देहली



सेठ मानमलजी नाहठा, हापुड



बाबू मोहनलालजी, S/o सेठ कुन्दनमलजी नाहठा, सरदारशहर



व.बू उत्तमचन्दजी S/o मानमलजी नाहटा, हापुड

सेठ मानमलजी नाहठा का खानदान, हापुड़

इस खानदानवाले जैसलमेर निवासी नाहठा गौत्रके श्री जै० श्वे० मन्दिर मार्गीय सज्जन हैं। इस परिवारमें शामसिंहजी हुए। आपके पुत्र दानमलजी जैसलमेरसे भोपाल आये और वहांपर लेन देनका व्यापार किया। आप बड़े धार्मिक व्यक्ति थे। आपका स्वर्गवास सं० १६४८ में हुआ। आपके पुत्र जेठमलजीका भोपाल में ही १० वर्षकी आयु में सं० १६३५ में स्वर्गवास हो गया। सेठ जेठमलजीके गुजरनेके समय आपके पुत्र हजारीमलजी पेटमें थे।

सेठ हजारीमलजी भोपालसे सिकन्दराबाद आये और वहांपर कमीशन एजेन्सीका कार्य्य किया। आप धार्मिक, परोपकारी एवं मिलनसार व्यक्ति थे। श्रीलब्धिविजयजी महाराजके सिकन्दराबाद आनेके समय आपने एक व्यक्तिको दीक्षा दिलवाई थी जिसमें आपने श्री कुछ सहायता दी थी। आपका स्वर्गवास सं०१६७३ में हो गया। आपके मानमलजी नामक एक पुत्र हुए।

सेठ मानमलजीका जन्म सं० १६६२ में हुआ। आपके पिताजीकी मृत्युके समय आप केवल १० सालके थे। इस छोटीसी ऊमरसे आपने व्यापारमें भाग लेना शुरू कर दिया था। आगे जाकर आपको ठीक सफलता प्राप्त हुई। आप सिकन्दराबाद से सं० १६८२में हापुड़ चले आये। आप मिलनसार व्यक्ति हैं। वर्त्तमानमें आपकी हापुड़, अमृतसर, उकाड़ा (पंजाब), शाहजहांपुर तथा सिकन्दराबादमें फर्मं हैं।

आपने सिकन्दराबादमें एक धर्मशाला भी बनवाई है। आपके उत्तमचन्दजी नामक एक पुत्र हैं।

श्री तेजमलजी नाहटाका खानदान, झालरापाटन

इस परिवार का मूल निवासस्थान जैसलमेर का है। आपलोग नाहटा गौत्रीय श्री जै० श्वे० मं० मार्गीय सज्जन हैं। इस खानदानमें सेठ रतनचन्दजी हुए। आपका जन्म सं० १८६४ में हुआ। आप करीब १०० वर्ष पूर्व जैसलमेरसे बूंदी आये और यहांपर आकर दीवान बहादुर गणेशदासजी दानमलजी की फर्मपर मुनीमातका काम किया। आप आजीवन यही काम करते हुए सं० १६२४ में गुजरे। आपके निःसन्तान गुजर जानेपर आपके नामपर कोटासे सेठ जौहारमलजी गोद आये।

सेठ जौहारमलजीका जन्म संवत् १६०५ में हुआ। आप बूंदीसे कोटा चले आये और यहांपर आपने मे० गणेशदास हमीरमलके यहां नौकरी की। आपका स्वर्गवास सं० १६८८ में हुआ। आपके तेजमलजी एवं जयकरणजी नामक दो पुत्र हुए।

श्रीतेजमलजीका जन्म संवत् १६३६ में हुआ। आप व्यापार कुशल, साहसी तथा योग्य सज्जन हैं। इस खानदानमें आप ही विशेष कर्मशील एवं प्रतिभाशाली सज्जन हैं। २१ वर्ष

की अल्पायुसे ही आपने उदयपुरम सेठ जोरावरमलजीके खजानेपर मुलाजिमत की। इसके पश्चात् आपने मे० हरगोपाल हरदयाल फतेहपुरियों के यहांपर पांच सालोंतक सर्विस की। तदनन्तर दीवान वहादुर सेठ केशरीसिंहजीने आपको अपनी पाटन दुकान पर मुनीम वनाकर भेजा। आपने योग्यतासे काम संचालित कर सेठोंके फार्मोंमें तरक्की की। तदनन्तर आप सेठोंकी वम्बई दूकानपर हेड मुनीम वनाकर भेजे गये। वम्बई फर्मके विस्तृत व्यवसायको आपने योग्यता पूर्वक संचालित किया। आप देश प्रेमी, परोपकारवाले एवं मिलनसार हैं। असहयोग आन्दोलनके उस तूफानके समयमें आपने कांग्रेसको बहुत मदद पहुँचाई थी। इसी प्रकार हिन्दू मुसलमानोंके झगड़ोंके समयमें आपने हिन्दुओंको मदद पहुँचाकर उनकी सेवा की थी।

आप व्यापारमे साहसी तथा कुशल हैं। वम्बईकी मारवाड़ी समाजमें आपका अच्छा सम्मान है। वम्बईमें आपने बड़े२ जोखमपूर्ण व्यवसायोंको कुशलता पूर्वक निपटाया। वर्तमानमें आप सेठोंकी कोटा फर्मका कामकाज सञ्चालित कर रहे हैं। आपके उम्मेदमलजी नामके एक पुत्र हैं। श्री उम्मेदमलजीने संवत् १९३५ में बी० ए० पास किया है। वर्त्तमानमें आप एल० एल० वी में पढ़ रहे हैं। आप उत्साही एवं मिलनसार युवक हैं।

झालरापाटनमें आपका परिवार प्रतिष्ठित समझा जाता है। यहांपर आपकी बहुतसी जमीन वगैरह भी है।

श्री लक्ष्मीपतिजी नाहटा, मुलतान (पंजाब)

इस परिवारका मूल निवास मारवाड़ है। मगर लगभग ७ पीढ़ियोंसे यह परिवार मुलतानमें निवास कर रहा है। मुलतानमें इस परिवारके मेम्बर बड़ी समृद्धि पूर्ण अवस्थामें रहे हैं। इनमें प्रधान पुरुष श्री हीरालालजी थे। आप बड़े दयालु और नामी व्यक्ति थे। आपके यहां जनरल मर्चेन्ट तथा कपड़ेका व्यापार होता था। आपके पुत्र खडानन्दजी हुए। आपको वैद्यक का बडा शौक था। प्राचीन ग्रन्थोंके संग्रह करनेकी दिलचस्पी आपमें अच्छी थी। आपके दौलतरामजी, ठाकुरदासजी, माणिकचन्दजी एवं झंडूरामजी नामक ४ पुत्र हुए। लाला ठाकुरदासजी अपने चाचा लाला उत्तमचन्दजीके नामपर दत्तक गये। आप पंजाव प्रान्तके श्वे० जैन कार्य्योंमें अच्छा भाग लिया करते थे। आपके पुत्र श्री रोशनलालजी व श्री लक्ष्मीपति जी हैं। रोशनलालजी अपने मनिहारी कारवारको सम्हालते हैं।

नाहटा लक्ष्मीपतिजी B A मुल्तानके प्रथम ग्रेजुएट हैं। B A. पास करने बाद २॥ साल तक आपने गवर्नमेण्ट सर्विस की। इसके बाद आप कई कार्य करते रहे। आप बड़े स्पष्टवादी व सच्चरित्र व्यक्ति हैं तथा इस समय इण्डो यूरोपियन मशीनरी कम्पनी २२ एल्फीस्टन सरकल बम्बईके प्रतिनिधि हैं।

सेठ लालजीमलजी नाहटा का खानदान, सिकंदराबाद (यू० पी०)

इस खानदानवाले रूपसियां (जैसलमेर) निवासी नाहटा गौत्र के श्री जै० श्वे० मं० मार्गीय हैं। इस खानदानके पूर्वपुरुष सेठ गुमानचन्दजीके पुत्र लालजीमलजी करीब एक सौ वर्ष पूर्व देशसे अनवरपुर (मेरठ जिला) आये तथा यहांपर लेनदेनका व्यापार करने लगे। आप जाति सेवा प्रेमी तथा मिलनसार सज्जन थे। आपके ईश्वरदासजी, अचलदासजी, पोहकरणदासजी, भगवानदासजी तथा भवानीरामजी नामक पांच पुत्र हुए।

सेठ ईश्वरदासजीका खानदान—आप अनवरपुरमें ही अपनी जमींदारीको सम्भालते रहे। आपका स्वर्गवास सं० १९३२ में हुआ। आपके नाम पर सेठ अचलदासजीके पुत्र रतनलालजी गोद आये। सेठ रतनलालजी अनवरपुरसे सिकन्द्रावाद चले आये और यहांपर जमींदारी व बैंकिंगका कार्य्य किया। आपका जन्म सं० १९२६ तथा स्वगवास स० १९७९ में हुआ। आपके नामपर सेठ अचलदासजीके प्रपौत्र पीतमचन्दजी गोद आये। पीतमचंदका जन्म सं० १९६९ में हुआ। आप उत्साही तथा मिनलसार युवक हैं तथा बैंकिंग व जमींदारीका कार्य्य करते हैं। आप देशप्रेमी हैं। असहयोग आन्दोलनमें भाग लेनेके कारण आप दो बार जेलयात्रा भी कर आये हैं। आपके ताराचन्द नामक एक पुत्र हैं।

सेठ अचलदासजीका खानदान—आप बड़े योग्य कार्यकुशल तथा अनुभवी व्यक्ति हो गये हैं। आप पहले अनवरपुरसे समाना (मेरठ जिला) तथा वहांसे ६० वर्ष पूर्व सिकदरावाद चले आये। वर्त्तमानमें भी आपके वशज यहींपर निवास कर रहे हैं। आप बड़े धार्मिक, प्रतिष्ठित अथा लोकप्रिय व्यक्ति थे। आपने यहांपर एक धर्मशाला बनवाई तथा दुष्कालके समयमें करीब ५००००) पचास हजार रुपया गरीबोंको सहायताके रूपमें दिया। आप यहांके म्युनिसिपल कमिश्नर भी रह चुके हैं। सरकारने भी आपको आनरेरी मजिस्ट्रेटके पदपर नियुक्तकर सम्मानित किया था। आपने घी दूध खाना व सवारीपर बैठना छोड़ दिया था। आप दानप्रिय व्यक्ति थे। आपको गवर्मेंटसे "सेठ"का खिताब प्राप्त था। आपका स० १९७० मे स्वर्गवास हुआ। आपके दीपचन्दजी, रतनलालजी एवं खेमचन्दजी नामक तीन पुत्र हुए। सेठ दीपचन्दजीके दुर्गाप्रसादजी नामक एक पुत्र हैं। आप आपनी जमींदारीका काम देखते हैं। आपका जन्म स० १९४१ में हुआ। आपके काशीप्रसादजी, बनारसीदासजी, प्रीतमचन्दजी, ज्ञानचन्दजी एवं रणजीतसिहजी नामक पांच पुत्र हुए। इनमें प्रीतमचन्दजी रतनलालजीके नामपर गोद चले गये हैं। शेष सब व्यापारमे भाग लेते हैं। आप लोग मिलमसार युवक हैं।

इस खानदानवाले यहांके पञ्चायती मन्दिर की सारी व्यवस्था करते हैं। मन्दिरकी जमीन आप लोगों हीने दी थी।

सेठ भगवान दासजीका खानदान—सेठ भगवानदासजीके पूर्वज सेठ गुमानचन्दजी एवं लालजीमलजीके विषय में हम लोग प्रथम ही कह चुके हैं। आप लोग जाति सेवा प्रेमी तथा नवयुवकोंको आश्रय देनेवाले व उन्हें योग्य धन्धेसे लगा देनेवाले महानुभाव थे। सेठ

भगवानदासजीका स्वर्गवास छोटी ऊमरमें ही हो गया था। आपके नामपर आपके बड़े भाई पोहकरदासजीके छोटे पुत्र जवाहरलालजी गोद आये।

श्रीजवाहरलालजी—आपका जन्म सं० १९४१ के आषाढ़में हुआ। आप उत्साही, सार्वजनिक कार्य्यकर्त्ता तथा योग्य व्यक्ति हैं। आपको पठन पाठनका बहुत शौक हैं। आप व्यवस्था कुशल तथा अनुभवी व्यक्ति हैं। आपने कई लायब्रेरियां, सभाएं, आदि संस्थाएँ प्रयत्न करके स्थापित करवाईं जो आज भी सुचारु रूपसे चल रही हैं। कई स्थानोंपर आप व्यवस्थापक तथा प्रमुख कार्य्यकर्त्ता चुने गये। आपने प्रयत्न करके सं० १९६७ में आत्मानन्द पुस्तक प्रचार मंडलकी स्थापना की। इस संस्थासे कई महत्वपूर्ण पुस्तके प्रकाशित हुईं। जैनाचार्य्य विजयानन्द सूरिजी महाराज (आत्मानन्दजी) के समाधि प्रतिष्ठाके समय आप सेक्रेटरी पंजाब प्रान्तके चुने गये थे। आप जैन श्वेताम्बर कान्फ्रेंसकी स्टैंडिंग कमेटीके मेम्बर, ओसवाल सुधारक सञ्चालक बोर्डके मेम्बर, ओसवाल कान्फ्रेंसके स्वागताध्यक्ष, शिव बोर्डिङ्गहाऊस उदयपुरके सुपरिन्टेण्डेण्ट आदि रह चुके हैं। आप उत्साही, सुधरे हुए खयालोंके व्यक्ति हैं। आपने बहुतसे स्थानोंपर कुरीतियोंका निवारण किया। आठवीं जैन श्वे० कान्फ्रेस मुल्तानके आप प्रधान कार्य्यकर्त्ता थे। आपने हिन्दू युनिवर्सिटी आदि संस्थाओंमें भी चन्दे वगैरह इकट्ठे करवाये थे।

आप सन् १९१४ में म्यु० कमिश्नर भी नियुक्त हुए थे। आपने एक समय पेशा तिज़ारत टैक्सके खिलाफ जनताकी एक पब्लिक एसोसियेशन बनाई थी तथा तीन साल तक बराबर लड़ते रहे और अन्तमें विजयी हुए। इसी प्रकारके आपने कई स्थानोंपर सुधारवादी भाषण दिये, कई संस्थाओंको प्रयत्न करके स्थापित करवाया तथा हजारों रुपये एकत्रित कर कई धार्मिक कार्य्यों में खर्च किया। आपका सारा जीवन सार्वजनिक है। आपने पालीवाल जातिमें काफी जागृति फैलाई है।

गोठी

गोठी खानदान, भरतपुर

इस खानदानवाले देवीकोट (जैसलमेर) निवासी गोठी गौत्र के श्री जैन श्वे० मंदिर मार्गीय हैं। इस परिवारमें सेठ रतनचन्दजी हुए। आपके मानसिंहजी तथा जगरामदासजी नामक दो पुत्र हुए।

सेठ मानसिंहजीका खानदान—आप देवीकोटमें ही निवास करते रहे। आपके नामपर सेठ फतेरामजी गोद आये। आप ही सबसे पहले करीब ६० वर्ष पूर्व देवीकोटसे भरत·



श्री सेठ हजारीमलजी गोठी, भरतपुर



सेठ कन्हैयालालजी गोठी, भरतपुर

पुर आये और वहाँ आकर भरतपुरके तत्कालीन महाराजा श्री बलवंतसिंहजीके हुक्मसे फौजमें लेन देनका व्यापार किया। करीब ६० वर्ष प्रथम आपका स्वर्गवास हो गया है। आपके जवाहरमलजी, हजारीमलजी, तथा प्यारेलालजी नामक तीन पुत्र हुए। इनमें प्यारेलालजीका छोटी उम्रमें ही स्वर्गवास हो गया था।

सेठ जवाहरमलजीका जन्म सं० १९१९ में हुआ। आपने सं० १९५० के करीब लेनदेनका व्यापार बन्दकर अपनी फर्म पर बैंकिग तथा गिरवीका व्यापार शुरू किया। आप बड़े धार्मिक व्यक्ति थे। आपका स्वर्गवास सं० १९६३ में हुआ। आपके जसराजमलजी नामक एक पुत्र हैं। सेठ जसराजमलजीका जन्म सं० १९५० के चैत्रमें हुआ। आप मिलनसार तथा सरल स्वभाववाले व्यक्ति हैं। वर्तमानमें आप ही अपने फर्मके सारे कामको सफलतापूर्वक चला रहे हैं। आपके चम्पालालजी एवं पूनमचन्दजी नामक दो पुत्र हैं। बाबू चम्पालालजी मिलनसार तथा उत्साही युवक हैं। वर्तमानमें आप व्यापारमें योग देते हैं।

सेठ हजारीमलजीका जन्म सम्वत १९३२ में हुआ। आप सं० १९६३ तक अपने ज्येष्ठ भ्राताके साथ प्रेम पूर्वक व्यापारमें भाग लेते रहे। ज्येष्ठ भ्राताकी मृत्युके पश्चात् आपनेबड़ी योग्यता पूर्वक अपना काम संभाला तथा अपनी स्थायी सम्पत्तिको बढ़ाया। आप भरतपुरमें माननीय तथा योग्य पुरुष हो गये हैं। आपको स्टेटने ११ सालोंतक म्युनिसिपल कमिश्नरके पदपर नियुक्त कर सम्मानित किया था। आपने इस पदपर रहकर योग्यता पूर्वक कार्य किया। आप करीब १४ वर्षोंतक यहांकी कोर्टके असेसर रहे। स्टेटने आपको आनरेरी मजिस्ट्रेटके पदपर भी नियुक्त किया था। मगर आपने इसके लिये साफ इंनकार कर दिया। आपयहाँपर लोकप्रिय तथा मिलनसार पुरुष हो गये हैं। आपका स्वर्गवास सं० १९८५ की श्रावण बदी १२ को हो गया। आपकी मृत्युके पश्चात आप दोनों बन्धुओंके कुटुम्बी अलग अलग होकर अपना व्यापार करने लगे। स्थायी सम्पत्ति आप लोगोंके साझेमें है। सेठ हजारीमलजीके कन्हैयालालजी नामक एक पुत्र विद्यमान हैं।

सेठ कन्हैयालालजीका जन्म सं० १९६० की आसोज बदीका है। आपने मेट्रिक तक शिक्षा प्राप्त की है। उर्दू आप अच्छा जानते हैं। आप मिलनसार तथा कार्य्य कुशल व्यक्ति हैं। आपने अलग होनेके पश्चात अपनी फर्मपर कपड़ेका व्यापार प्रारम्भ किया जो सफलतापूर्वक चल रहा है। आपने अलग होनेके पश्चात अपनी बहुत सी स्थायी सम्पत्ति बढ़ाई तथा सं० १९८८ से मोटर सर्विस चालू की। आप कोई ९ वर्षों तक यहांके कोर्टके असेसर रहे। आप मिलनसार तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। आपका प्राय: सभी बड़े अफसरोंसे प्रेम भाव है। वर्तमानमें आप ही अपने व्यापारको संचालित कर रहे हैं।

सेठ जगरामदासजी का खानदान—देशसे चलकर सेठ जगरामदासजी भरतपुर आये तथा यहांपर व्यापार शुरू किया। आपके खुशालीरामजी, खुशालीरामजीके दीपचन्दजी व मिट्ठनलालजी हुए। सेठ दीपचन्दजी के नामपर सेठ चुन्नीलालजी गोद आये। आप सब लोग

फौजमें लेन देनका व्यापार करते रहे। सेठ चुन्नीलालजी का छोटी ऊमरमें ही स्वर्गवास हो गया। आपके नामपर डावरा से सेठ रिखवदासजी गोद आये।

सेठ रिखवदासजीका जन्म सं० १६५८ में हुआ। आपने फौजके साथ व्यापार करना बन्द करके अपने यहाँपर गिरवी व बैंकिंग का व्यापार शुरू किया। खेद है कि आपका भी छोटी ऊमरमे ही सं० १६८५ में स्वर्गवास हो गया। आपके भगवानदासजी नामक एक पुत्र हैं जो अभी बालक है।

यह खानदान भरतपुरकी ओसवाल समाजमें प्रतिष्ठित समझा जाता है।

वेद मेहता

वेद मेहता परिवार, रतलाम

इस प्रतिष्ठित परिवारके मालिकों का मूल निवासस्थान मारवाड़ राज्यके जालौर नामक स्थानमें है। सत्रहवीं शताब्दीमें इस परिवारके पुरुष मारवाड़ राज्यमें ऊँचे ओहदोंपर राज्यकी सेवा करते थे। जब सं० १७११ में जोधपुरके राजकुमार रतनसिंहजीको मुगल सम्राटने उनके बहादुरी पूर्ण कार्योंसे प्रसन्न होकर मालवा प्रान्तका एक परगना इनायत किया, उस समय महाराजा रतनसिंहजीके साथ इस परिवारके पूर्वज मेहता किशनदासजीके पांचों पुत्र मेहता आसकरणजी, रूपसिंहजी, देवीदासजी, राजसिंहजी तथा पञ्चाननजी भी आये थे। महाराजाने इस प्रान्तपर आधिपत्य जमाकर रतलामको अपनी राजधानी बनाया एवं इस परिवारके पुरुषको दीवान पद इनायत किया तथा वंश परम्पराके लिये बिबड़ोद गाँव जागीरमें दिया। मेहता आसकरणजीके पुत्र ठाकरसीजी और मेहता रूपसिंहजीके सुन्दरजी और सांवरजी नामक पुत्र हुए। इन बन्धुओंमें मेहता सांवरजी उज्जैनसे ७ कोस धर्मपुरा नामक गांव में उनाहाबादकी लड़ाईमें महाराजा श्री रतनसिंहजीके साथ काम आये।

मेहता ठाकरसीजीके पश्चात क्रमशः तोगाजी, केसाजी रायमलजी, मियांचन्दजी एवं बखतसिंहजी हुए। आपको जोधपुर दरबार महाराजा माधवसिंहजीने संवत् १८०६ में घोड़ा और हाथी सिरोपाव बख्शा तथा प्रतिष्ठाके साथ अपनी हवेली पर भेजा। आप मेवाड़के किसी युद्धमें मारे गये। ऐसी किम्वदन्ति है कि आपका घोडा आपके काम आ जानेपर पगड़ी लेकर बिबड़ोद आया। वहाँ आपकी धर्मपत्नी सती हुईं जिनका विशाल चबूतरा बिबडोदमें बना हुआ है। आपके सूरतसिंहजी, सरदारसिंहजी तथा उम्मेदसिंहजी नामक तीन पुत्र हुए।

मेहता सूरतसिंहजी—आप इस परिवारमें बड़े बहादुर व प्रतापी पुरुष हुए। आपने वीरतापूर्ण युद्ध किया। सं० १८२५ में आपने महाराजा अरिसिंहजीसे युद्ध किया। उसमें

आपकी विजय हुई तथा तीन सालो तक चित्तौड पर आधिपत्य रहा। वहाँ आपने एक लक्ष रुपये लगाकर तामीरका काम कराया व एक जैन मन्दिर और बावड़ी बनवाई। आपने सिन्धिया तथा होल्करके फौजोंकी सहायतासे आस पासके रजवाड़ो पर हमला कर कर वसूल करना शुरू किया। सम्वत १८३० की श्रावण सुदी ७ को महाराजा अरिसिंहजीने प्रसन्न होकर आपको पट्टा, पालकी, अगरकी माला, मोटी हवेली, कड़ा, मोती, हाथीका हौदा व घोड़ा साथ देकर बिदा किया। सं० १८३४ की आसोज वदी १४ को जोधपुर दरबार महाराजा विजयसिंहजीने प्रसन्न होकर परगणे मेड़ता का सारसंड़ा गाँव ३०००) की रेखका इनायत किया। होल्कर दरबारसे भी आपको बहुत सी लाग व पट्टा प्राप्त हुआ था। कहनेका तात्पर्य यह है कि आपका उस समय होल्कर, उदयपुर, जोधपुर, जयपुर व रतलामके दरबारोंमें बड़ा सम्मान व प्रभाव था। आपके छोटे बन्धु मेहता सरदारसिंहजी और मेहता उम्मेदसिहजी आपकी एकत्रित की हुई सम्पत्तिकी रक्षा बिबडोदमें रह कर करते थे।

मेहता सरदारसिंहजीका भी होल्कर दरबारमें अच्छा प्रभाव था। मेहता उम्मेदसिंहजी भी बहादुर तबियतके पुरुष थे। मेहता सरदारसिंहजीके पुत्र देवीसिंहजी तथा जोरावरसिंहजी एवं मेहता उम्मेदसिंहजीके पुत्र गुमानसिंहजी हुए। मेहता जोरावरसिंहजी तक बिबडोद गाँव इस परिवारके ताबेमें रहा, पीछे कुछ समय बाहर चले जानेसे रतलाम स्टेटने वह गाँव जप्त कर लिया। ऐसी स्थितिमे मेहता जोरावरसिंहजी ने जोधपुर दरबारसे अपने पुराने खैरख्वाह होने का प्रमाण पेश कर सिफारिशी पत्र रतलाम दरबारके नाम प्राप्त किया और इस प्रकार सम्वत् १८८० ८१ में इन्हें बीबड़ोदके बदलेमें पलसोड़ी गाँव जागीरमें मिला जो इस समयतक इस परिवार के ताबेमे है। मेहता जोरावरसिंहजी को मौजूदगीमें ही उनके पुत्र पूनमचन्दजी स्वर्गवासी हो गये थे।

मेहता गुमानसिंहजीके पुत्र भेरूसिंहजी और भेरूसिंहजीके दौलतसिंहजी, तखतसिंहजी, उदयसिंहजी तथा डूंगरसिंहजी नामक ४ पुत्र हुए। इन भाइयोंमें मेहता उदयसिंहजी अपने काका मेहता पूनमचन्दजीके नामपर दत्तक गये। मेहता दौलतसिंहजीके पुत्र हमीरसिंहजी, कुशलसिंहजी व चम्पालालजी हुए। इनमें दो बडे भ्राता तहसीलमें कार्य्य करते रहे। इस समय मेहता हमीरसिंहजीके पुत्र मेहता जसवंतसिंहजी रेवेन्यू विभागमे स्पेशल आफीसर हैं। मेहता कुशलसिंहजीके पुत्र रतनसिंहजी व शार्दूलसिंहजी व्यापार करते हैं।

मेहता तखतसिंहजी—आपने लगभग ३० सालोंतक रतलाम स्टेटमें इन्सपेक्टर जनरल पुलिसके पदपर बडे रुआबके साथ कार्य किया। महाराजा रणजीतसिंहजीके साथ आप डेली कालेजमें पढ़े थे। महाराजा रणजीतसिंह एवं महाराजा सज्जनसिंहजीने आपको कई प्रशंसा पत्र दिये थे। इसके अलावा कई अग्रेज आफिसर्स, ए० जी० जी०, पोलिटिकल एजेन्ट आदि महानुभावोंने आपके इन्तजामकी बहुत प्रशंसा की थी। सन् १६०८ में अ० भा० स्था० जैन कान्फ्रेसके रतलाम अधिवेशनके स्वयसेवक दलके आप प्रधान थे। आपने रतलाम स्टेट व

वाजनामें भैंसे व पाड़ेकी वलि प्रथा बन्द करवाई। इसके लिये जैन संघ तथा सस्थाओंने आपको कई धन्यवाद पत्र दिये। इस प्रकार ५४ सालोंतक रतलाम राज्यमें सर्विस कर ८५ सालकी आयुमें सम्वत १९८९ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र मेहता वहादुरसिंहजी, निर्भयसिंहजी तथा करणसिंहजी इस समय विद्यमान हैं। मेहता बहादुरसिंहजी गवर्नमेण्ट सर्विसमें हैं तथा निर्भयसिंहजी चीफ जज आफिस रतलाममें सिरस्तेदार हैं और इनसे छोटे मेहता करणसिंहजी पढ़ते हैं।

मेहता उदयसिंहजी रतलाम तहसील तथा कस्टम विभागमें सर्विस करते रहे। आपके पुत्र मेहता रतनसिंहजीका जन्म सम्वत् १९६२ में हुआ। रतलाममें मैट्रिक तक अध्ययन कर आप बम्बई आये तथा सन् १९१८ में यहाँ चारटेड अकाउण्टेंसी का इम्तहान पास किया। सन् १९२० में आप बम्बईके प्रसिद्ध व्यापारी सेठ रामनारायणजी रुइयाके प्राइवेट सेक्रेटरी नियुक्त हुए एव अपनी कार्य कुशलतासे आपने दिन २ इस परिवारमें प्रतिष्ठा पाई। इस समय आप रामनारायण संस लिमिटेडके बोर्ड आफ डायरेक्टर्सके सेक्रेटरी एवं इस फर्मकी दो मिलोंके स्टोर्स डिपार्टमेंटके हेड है।

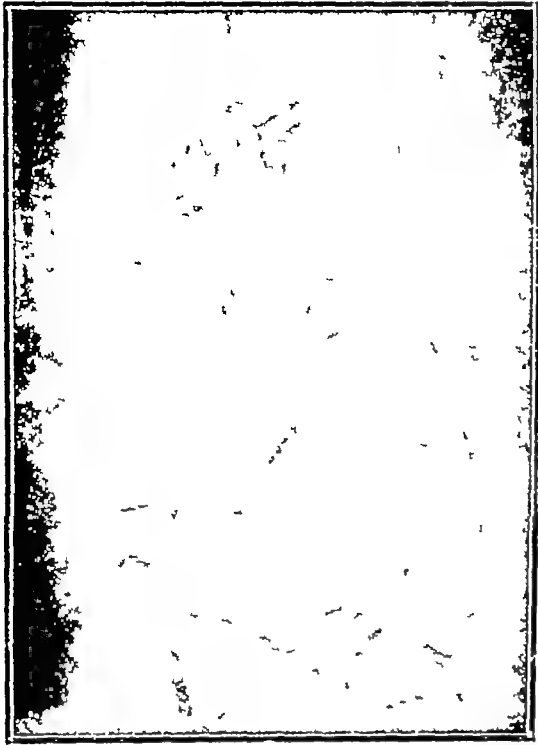
मेहता डूंगरसिंहजी इस समय विद्यमान हैं। आपके जसवंतसिंहजी, बिशनसिंहजी, मोहब्बतसिंहजी तथा भारतसिंहजी नामक ४ पुत्र हुए। इनमें मेहता जसवन्तसिंहजी ४६ सालकी आयुमें सम्वत १९९१ में स्वर्गवासी हो गये हैं। शेष तीन बन्धु विद्यमान हैं। मेहता जसवन्तसिंहजी सीतामऊ स्टेटमें वकालत करते रहे तथा वहां बहुत लोकप्रिय रहे। रतलाम व सीतामऊके नामी वकीलोंमें आपकी गणना थी। आपने अपने पुत्रोंको शिक्षित करनेकी ओर अच्छा लक्ष दिया है। आपके पुत्र मेहता कोमलसिंहजी बी० ए० ऑनर्स हैं। आप इस समय दरबार हाईस्कूलमें अध्यापक हैं तथा श्रीमहाराज कुमार रतलामके ट्यूटर हैं। आपके विचार बड़े उन्नत है। आपसे छोटे महतावजी पढ़ते हैं। मेहता कोमल सिंहजीके पुत्र निर्मल कुमार सिंहजी हैं।

मेहता बिशनसिंहजी स्टेट कौन्सिलमें सिरस्तेदार हैं। धार्मिक कामोंमें आपको ज्यादा अनुराग है। मेहता मोहब्बतसिंहजी होल्कर स्टेटमें हेल्थ आफिसर हैं एव भारत सिंहजी, झाबुआ स्टेटमें सर्विस करते हैं।

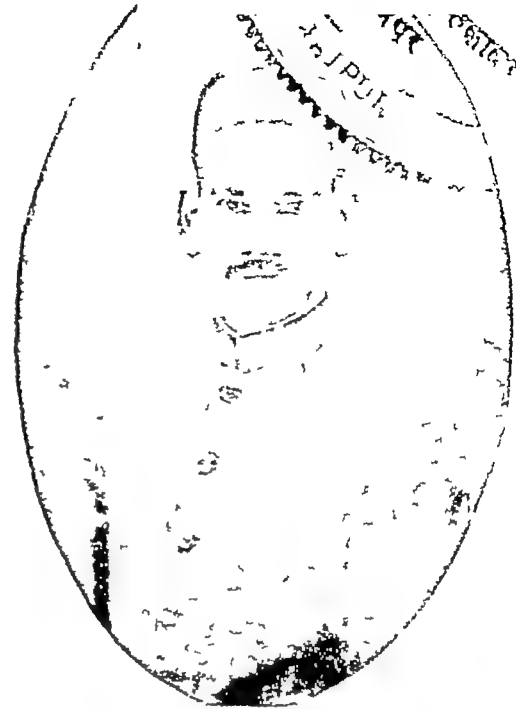
रतलाम स्टेटमें इस परिवारको जागीरी व दरबारमें सम्मान पूर्वक बैठक प्राप्त है।

सेठ सुखलालजी शिवलालजी वेदका परिवार, राहतगढ़ (सागर)

इस परिवारके मालिकोंका मूल निवास स्थान आऊ (जोधपुर-स्टेट) में है। आप श्री श्वे० जैन मन्दिर मार्गीय आम्नायके माननेवाले सज्जन हैं। इस परिवारके पूर्वज सेठ भूरचन्द जी वेद आऊमें निवास करते थे। आपके हजारीमलजी, सुखलालजी तथा शिवलालजी नामक



सेठ गोकुलचन्दजी पुंगलिया, जयपुर



मेहता रतनसिंहजी, रतलाम



बाबू धनराजजी पूंगलिया, (मे० सौभागमल गोकुलचंद) जयपुर



श्री अमरचन्दजी पुंगलिया बी० ए० बुरहानपुर

तीन पुत्र हुए। ये तीनों बन्धु अपने मामा सेठ सूरजमलजी रूणवालके साथ लगभग ५० साल पूर्व व्यवसायके निमित्त राहतगढ़ आये और यहाँ आकर आप लोगोंने दुकानदारीका कारबार शुरू किया। सेठ हजारीमलजी लगभग १९६७ में, सुखलालजी १९७० में तथा शिवलालजी सम्वत १९८३ की पौष वदी १० को स्वर्गवासी हुए। सेठ सुखलालजी तथा शिवलालजी बड़े व्यापार चतुर तथा बुद्धिमान पुरुष थे। आप भाइयोंने अपने परिवारके व्यापार तथा सम्मानको विशेष बढ़ाया। साथ ही अपने परिवारमें जमींदारी भी खरीद की। सी० पी० तथा रोहतासगढ़के ओसवाल समाजमें आप लोग प्रतिष्ठित व वजनदार सज्जन माने जाते थे। सम्वत् १९७१ में इन बन्धुओंका कारबार अलग २ हो गया। सेठ हजारीमलजीके पुत्र सुगनचन्दजी लश्करमें कनकमलजी मुन्नीलालजी वेदके यहाँ दत्तक गये।

सेठ सुखलालजीके पुत्र सेठ मानमलजीका जन्म सम्वत् १९६४ की फागुन सुदी १५ को हुआ। आपके यहाँ इस समय कपड़े तथा मालगुजारीका काम होता है। आप भी प्रतिष्ठित सज्जन हैं। आपके पुत्र धनरूपमलजी हैं।

सेठ शिवलालजीके इन्द्रचन्दजी, गुलाबचन्दजी तथा चाँदमलजी नामक ३ पुत्र विद्यमान हैं। आप तीनों भाई भी अपना अलग २ व्यापार करते हैं। सेठ इन्द्रचन्दजी वेद बड़े प्रतिष्ठित व समझदार सज्जन हैं। आपका जन्म सम्वत् १९५९ की कातिक वदी १४ को हुआ। आप स्थानीय जैन मित्र मण्डल तथा पब्लिक सेनीटेशन कमेटीके प्रेसिडेण्ट रहे। आपके धनराजजी, शिखरचन्दजी तथा माणिकचन्दजी नामक ३ पुत्र हैं। श्री गुलाबचन्दजीका जन्म सम्वत १९६४ में हुआ। आपके यहाँ मालगुजारीका काम होता है। आपके पुत्र आसकरणजी हैं। श्री चादमलजीका जन्म सम्वत् १९७० में हुआ। आपके यहाँ भी मालगुजारीका व्यापार होता है। आपके चैनकरणजी नामक एक पुत्र हैं।

पुंगलिया

श्रीयुत अमरचन्दजी पुंगलिया, बुरहानपुर (सी० पी०)

श्री अमरचन्दजी पुंगलिया उन चरित्रवान एवं कार्य्यदक्ष महानुभावोंमेंसे एक हैं जो अपनी योग्यताके बलपर मारवाड़ी समाजके नररत्नोंके दिलोंमें अपने प्रति ऊँचे-ऊँचे विचारोंकी नींव दृढ़ जमा लेते हैं एवं अपने उत्साहभरे जिम्मेदारीके कार्य्योंसे आप अपनी प्रतिष्ठाकी उत्तरोत्तर वृद्धि करते रहते हैं। आपके पितामह सेठ श्री दौलतरामजी पुंगलिया बीकानेरमें निवास करते थे। सेठ दौलतरामजीके कनीरामजी, भेरोंदानजी, सुगनचंदजी तथा जवाहरमलजी नामक चार पुत्र हुए थे।

उक्त चारों बंधुओंमेंसे सेठ भेरोंदानजी नागपुरमें आकर व्यवसाय करने लगे। आपके

छोटे भ्राता सुगनचंदजी देशसे अमरावती आये और यहांकी मशहूर फर्म मेसर्स 'मौजीराम बलदेवदास' पर प्रधान मुनीम रहे। आपकी इस फर्मपर इतनी प्रतिष्ठा थी कि आप अमरावती और उसके आस पासके गांवोंमें बड़े होशियार, समझदार तथा योग्य पुरुष समझे जाते थे। आप पर फर्मके मालिकोंका भी पूरा पूरा विश्वास था और अमरावतीकी जनता भी आपको वजनदार व्यक्ति समझती थी। लगातार २६ वर्षो तक आप इस फर्मकी मुनीमातका काम ईमानदारी एवं दक्षताके साथ करते हुए संवत् १९५४ में ४४ वर्षकी आयुमें स्वर्गवासी हुए। उस समय आपके पुत्र अमरचंदजीकी वय केवल ७ वर्षकी थी।

श्री अमरचन्दजी—आपका जन्म संवत् १९४६ के पौष मासमें हुआ। बाल्यावस्थामें ही आपके पिताजीके स्वर्गवासी हो जानेके कारण आपकी प्रारम्भिक शिक्षा दीक्षाकी सारी व्यवस्था आपके मामा श्री सेठ छोटमलजी चाठियाने की और पितृवत् आपका लालन-पालन किया। आपकी बाल्यावस्थामें आपकी माताजीकी सात्विकता और स्वाभिमान पूर्ण जीवन-का भी आप पर काफी प्रभाव पड़ा। अमरावतीमें आपने मैट्रिकतक अध्ययन किया। आपने सन् १९१२ में बी० ए० और इसके पश्चात् एल० एल० बी० तक अध्ययन किया। उस समय नागपुर कालेजमें आप ही एक अकेले मारवाड़ी युवक थे। आरम्भसे ही आप बड़े मिलनसार, उत्साही एवं सार्वजनिक स्पिरीटवाले सज्जन थे। सन् १९०७ से ही आपका मारवाड़ी समाजके श्रद्धेय नेता त्यागमूर्ति सेठ जमनालालजी बजाजसे सम्बन्ध हो गया था। उस समय आप मारवाड़ी शिक्षा मण्डल वर्धा व मारवाड़ी छात्रालय नागपुर-के सुपरविजन आदि कार्य्योंमें सहायता लेते रहते थे। वर्धाके मारवाड़ी विद्यालयमें आपने कुछ समयतक अध्यापन का भी काम किया। इसके पश्चात् सन् १९१६ से २१ तक आप राजा गोविन्दलालजी पित्तीके परसनल सेक्रेटरीके पदपर बम्बई में काम करते रहे। उस समय कई करोड़ रुपयोंके एक केसमें आपने उनको प्रशंसनीय सहायता दी थी। इसी बीच एक सालतक आप शेअर मार्केट बम्बईमें भी व्यापार करते रहे। उस समय आप मारवाड़ी विद्यालय बम्बईकी एजूकेशन कमीटीके मेम्बर एव मारवाड़ी सम्मेलनके भी मेम्बर थे।

सन् १९२१ से आप सुप्रसिद्ध टाटा सन्सके एजेण्ट मेसर्स चेनीराम जेसराज नामक फर्मकी सर्विसमें नागपुर आये तथा यहां उनके मेगेनीज का कार्य्य देखते रहे। सन् १९२८ तक आप उनके खदान विभागके प्रधान एजेण्टके तौरपर रहे। इसी बीच फर्मकी कई माईदार उलझनोंको सुलझानेके लिये आपने बम्बई, कलकत्ता, रंगून आदिकी यात्राएं कर उनमें सफलता प्राप्त की। आप पर मालिकों का पूरा विश्वास और अटूट प्रेम था। कई बार बड़ी बडी रकमें इनाम स्वरूप देकर फर्मने आपके कार्यों का उचित सम्मान किया। सन् १९२१—२८ के मध्यमें आप नागपुर प्राविन्शियल कांग्रेस कमेटीके मेम्बर एव मारवाड़ी सेवा संघके प्रधान रहे। नागपुरमें आपने महावीर भवन नामक संस्था कायम की एवं आप उसके जनरल सेक्रेटरीके पदपर रहकर उसके कार्य्यको जोरोंसे संचालित करते रहे। इसी प्रकार

आप मध्यप्रान्त एवं बरारकी ओसवाल महासभाके प्रारम्भिक तीन सालोंतक जनरल सेक्रेटरी रहे। सन् १९२८ से ३० तक बिड़ला ब्रदर्स कलकत्ताके जूट एक्सपोर्ट डि० में जिम्मेदारीके पदपर आपने कार्य्य किया। उसी समय आपने स्थानकवासी संघ नामक संस्था कायम की तथा उसके आप उप सभापति भी रहे। सन् १९३१ से ३३ तक आप बिडला मिल देहलीके ज्वाइंट सेक्रेटरी रहे। अजमेरके साधु सम्मेलन की सारे भारतवर्षके चुने हुए लोगोंकी समितिके आप भी एक सदस्य थे। आप शुद्ध खद्दरधारी, राष्ट्रीय विचारवाले एवं सुधरे हुए खयालोंके सज्जन हैं। आपने अपनी प्रथम धर्मपत्नीके स्वर्गवासी होनेके पश्चात् एक पोरवाल गुजराती विधवासे विवाह किया है जिसमें कई बड़े बड़े नेता एवं प्रतिष्ठित लोग आये थे।

सन् १९३२ के जूनसे आप राजा नारायणलालजी पित्तीके बुरहानपुर इलेक्ट्रिक पावर हाउस के प्रधान मैनेजरके रूपमे नियुक्त हुए तथा आज भी उसी पदपर सफलता पूर्वक कार्य्य कर रहे हैं। आपने बिजली द्वारा लूम इण्डस्ट्रीको बहुत प्रोत्साहन दिया। आप जिस समय बुरहानपुरमें आये थे उस समय ३ लूम्स बिजलीसे चलते थे। मगर आपके प्रयत्नोंसे आज १५१ लूम्स बिजलीसे चल रहे हैं। आपके इन कार्य्योंकी अनेक अंग्रेज तथा भारतीयोंने प्रशंसा की है। आपकी प्रथम धर्मपत्नी श्रीमती जवाहरबाई शिक्षित, पतिव्रता एवं राष्ट्रीय कार्य्यकर्त्री थीं। आपको अछूतोद्धारसे प्रेम था। आपका स्वर्गवास सवत् १९९१ में हुआ। श्रीपुंगलियाजी ने अपनी स्वर्गीया पत्नीके स्मारकमें पावर हाउसमें एक सर्व साधारणके उपयोगके लिये सुन्दर फव्वारा बनवाया है। पुंगलियाजीके इन्द्रचन्द्रजी नामक एक पुत्र विद्यमान हैं।

सेठ सोभागमलजी गोकुलचन्द्रजी पुङ्गलियाका खानदान, जयपुर

इस खानदानके सज्जनोंका मूल निवासस्थान पुंगलका था। वहांसे इस परिवारके पूर्व पुरुष बीकानेर आकर बस गये। आपलोग पुङ्गलिया गौत्रीय श्री जैन श्वेताम्बर मन्दिर मार्गीय सज्जन हैं। इस खानदानमें सेठ रावतमलजी हुए। आप ही सबसे पहले बीकानेरसे जयपुर आये और यहांपर आकर जवाहरातका व्यापार आरम्भ किया। आपको अपनी व्यापार चातुरीसे इस व्यवसायमें बहुत सफलता प्राप्त हुई। आपने अपना स्थाई निवास स्थान भी जयपुर बना लिया। तभीसे आजतक आपके वंशज यहीं पर निवास कर रहे हैं। आपके सौभागमलजी, किशनचन्दजी, हुकुमचन्दजी एवं भेरोंलालजी नामक पांच पुत्र हुए। इन पांचों बन्धुओंको सेठ रावतमलजी अपने जीतेजी सारी सम्पत्ति बांट गये थे। तभीसे आपलोगोंके वंशज आजतक अपना अलग२ स्वतन्त्र रूपसे व्यापार कर रहे हैं।

सेठ सौभागमलजी का परिवार—सेठ सौभागमलजी जवाहरातके व्यापारमें कुशल एवं

अनुभवी व्यक्ति थे। आपके हाथोंसे अपने फर्मके व्यवसायमे बहुत तरक्की हुई। आपने अपने व्यवसायको विशेष रूपसे चमकानेके लिये अपने फर्मकी एक शाखा रंगून भी खोली जिसपर प्रधान रूपसे हीरेका व्यापार होता था। जिस समय आपने रंगूनमे अपनी दूकान खोली थी उस समय वहापर हीरेका व्यापार करनेवाली आप हीकी पहली दूकान थी। आपके गोकुलचन्दजी नामक एक पुत्र हुए।

सेठ गोकुलचन्दजी—आपका जन्म संवत् १९३४ में हुआ। आप वड़े व्यापार कुशल, साहसी एवं योग्य सज्जन थे। आपने भी अपने जवाहरातके व्यापारको तरक्की पर पहुंचाया और बहुत सी सम्पत्ति उपार्जितकी। रंगूनकी फर्मके सारे काम काजको आपने वडी योग्यतापूर्वक संचालित किया था। आपका व्यापारिक अनुभव बहुत ही बढ़ा चढ़ा था। आपकी फर्म "कसला बाबू" के नामसे आज भी मशहूर है। यह एक पुरानीसे पुरानी पैढ़ी गिनी जाती है और हीराका वड़े स्केलपर काम होता है।

व्यापारमें बहुतसी सम्पत्ति कमानेके साथ ही साथ आपने अपने सम्मानको भी बढ़ाया और अपनी प्रतिष्ठा स्थापित की। आप वड़े धार्मिक विचारोंके भी सज्जन थे। सार्वजनिक एवं परोपकारके कामोंमे आपको विशेष रुचि रहा करती थी। आपने और आपके काका भैरालालजीने मिलकर जयपुर स्टेशनरोडपर एक सुन्दर धर्मशाला एवं एक मन्दिर बनवाया है जो आज भी विद्यमान है। इस मन्दिरके अन्तर्गत आपने सर्व प्रथम उत्सव वड़े ठाट वाटसे करवाया जिसमें आपका करीव दस बारह हजार रुपया खर्च हुआ होगा। इसके अतिरिक्त आपने अपने खर्चेसे इसी मन्दिर पर दो अठाई महोत्सव कराये जिसमें करीब दसर हजार व्यय हुआ होगा। आपने पांच साध्वीजी महाराजकी दीक्षाका कार्य्य भी अपने ही खर्चसे करके अपनी धर्म श्रद्धाका परिचय दिया। इसी प्रकार आपने कई सार्वजनिक, धार्मिक एव परोपकारके कामोंमें दिलचस्पीसे भाग लिया था।

धार्मिक एवं सार्वजनिक कामोंके साथ ही साथ आपने सामाजिक कार्य्य भी किये हैं। आपने अपनी पुत्री सौ० उमरावबाईका विवाह बहुत ही ठाटवाट और उत्साहके साथ किया था जिसमें करीव एक लाख रुपया खर्च किया गया था।

आप जयपुरकी ओसवाल एवं श्रीमाल समाजमें बड़े प्रतिष्ठित व्यक्ति समझे जाते थे। आप संवत् १९८४में स्वर्गवासी हुए। आपके धनराजजी नामक एक पुत्र विद्यमान हैं।

श्रीधनराजजीका जन्म संवत् १९६४ में हुआ। आप बड़े सरल स्वभाव वाले, शिक्षित, योग्य एव मिलनसार व्यक्ति हैं। वर्त्तमानमें आपही अपने सारे हीरेके इम्पोर्ट तथा एक्सपोर्टके काम काजको योग्यतापूर्वक सञ्चालित कर रहे हैं। आप देशभक्त तथा खद्दरसे प्रेम रखनेवाले हैं। आप श्वेताम्बर मन्दिरके मुख्य ट्रस्टी भी हैं। आप लोगोंका खानदान जयपुरमे अच्छा प्रतिष्ठित समझा जाता है। आपका जयपुरमें मे० सौभागमल गोकुलचन्दके नामसे जवाहरातका व्यापार होता है। इसी फर्मकी एक ब्रांच उक्त नामसे ही रंगूनमें अपना

सफलता पुर्वक बड़े हीरेका व्यवसाय कर रही है। रंगूनमे भी आपकी फर्म प्रतिष्ठित समझी जाती है।

सेठ हुकुमचन्दजीका परिवार—सेठ हुकुमचन्दजी जवाहरात तथा व्याजका व्यापार करते रहे। आप अपने पुत्र रूपचन्दजीको बाल्यावस्था में ही छोड़कर स्वर्गवासी हो गये थे।

सेठ रूपचन्दजी व्यापार कुशल एवं साहसी व्यक्ति हैं। वर्त्तमानमें आप ग्वालियरमें मोतीका व्यापार करते हैं। आपका ग्वालियरकी समाजमें अच्छा सम्मान है। आप यहांके प्रतिष्ठित व्यक्ति एवं स्टेटके जौहरी भी हैं। वर्त्तमानमें आपका परिवार ग्वालियरमें ही निवास कर रहा है। आपके शेरसिंहजी, सोहनलालजी एवं मुन्नीलालजी नामक तीन पुत्र हैं। इन बन्धुओंमेंसे शेरसिंहजी रंगून फर्मपर काम करते हैं। शेष सब बन्धु ग्वालियरकी फर्मपर काम काज करते हैं।

सेठ भेरोंलालजीका खानदान—सेठ भेरोंलालजी व्यापार कुशल, योग्य एवं साहसी व्यक्ति हो गये हैं। आप बड़े धार्मिक विचारवाले महानुभाव थे। आपके विषय में हम ऊपर लिख आये हैं कि आपने अपने भतीजे सेठ गोकुलचन्दजीके साथ साथ एक मन्दिर एव धर्मशालाके बनवाने में पूरा २ योग दिया था। इसी प्रकार आप भी प्रायः सभी सार्वजनिक एव परोपकारके कर्मों में सहायता प्रदान किया करते थे। आपका यहांकी समाजमें बहुत सम्मान था। आप यहाँकी समाजमें वजनदार व्यक्ति समझे जाते थे। आपके कन्हैयालालजी, भीखराजजी एव जोरावरमलजी नामक तीन पुत्र हुए। आप सब बन्धु वर्त्तमानमें जवाहरातका व्यापार करते हैं। सेठ जोरावरमलजीके पूनमचन्दजी नामक एक पुत्र हैं।

लूणावत

सेठ कन्हैयालालजी लूणावतका खानदान, कस्तला (हापुड़)

इस परिवारवाले रूपसियाँ (जैसलमेर) निवासी लूणावत गौत्रके श्री जै० श्वे० मन्दिर मार्गीय सज्जन हैं। सबसे प्रथम इस खानदान के सेठ रामकिशनदासजी देशमें अनवरपुर करीब १५० वर्षों पूर्व आये तथा यहांपर आकर व्यापार प्रारंभ किया। आपका मारवाड़में गणेशदासजी नाम था। आपके निःसन्तान गुजर जानेपर आपके नामपर सेठ जीवनलालजी गोद आये।

सेठ जीवनलालजी—आप अनवरपुरसे कस्तला (मेरठ जिला) में चले आये तथा यहांपर किश्तोंका व्यापार किया व धीरे धीरे जमींदारी खरीद की। आपको इसमें बहुत सफलता मिली। आप प्रतिष्ठित व्यक्ति हो गये हैं। आपका स्वर्गवास सम्वत् १९१० के करीब हुआ। आपके नामपर सेठ रिखबदासजी फलौदीसे गोद आये।

सेठ रिखबदासजी—आपका जन्म सम्वत् १६२० में हुआ। आप बड़े धार्मिक वृत्तिवाले तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। कस्तला तथा आसपासके गावोंमें आप लोकप्रिय सज्जन थे। आपने शिक्षा प्रचारकी दृष्टिसे यहांपर एक स्कूल खोला जिसे जमीन देकर व मकान बनाकर गवर्नमेण्टके अन्डरमें जानेतक सुचारु रूपसे संचालित किया। आपने करीब १५ वर्षो तक देहलीमें भी अपनी कोठी रखी थी। आप व्यापार कुशल व्यक्ति थे। आपका स्वर्गवास सं० १६७५ में हुआ। आपके कन्हैयालालजी नामक एक पुत्र हुए।

सेठ कन्हैयालालजी—आपका जन्म सम्वत् १६५७ की श्रावण सुदी ३ को हुआ। आप योग्य, विद्वान तथा अच्छे कवि हैं। आरम्भसे ही आपको कविता बनानेका शौक हो गया है। आप एक साहित्य सेवी तथा रसिक व्यक्ति हैं। आप मैट्रिक द्वितीय दर्जेसे पास हुए। आप तीक्ष्ण बुद्धिवाले तथा मिलनसार सज्जन हैं। आपके लेख समय समयपर हिन्दीके प्रमुख मासिक, साप्ताहिक पत्रोंमे जैसे-चाँद, सरस्वती, हंस आदिमें निकला करते हैं। आपने कई पद्य पुस्तकें भी लिखी हैं जैसे प्रेमोपहार, भारत जागृति, आदर्श जीवन आदि आदि। इसके अतिरिक्त गद्यमें भी आपने माधुरी, श्रीपाल आदि पुस्तकें लिखी हैं। आपकी लिखित पुस्तक श्रीपालकी भूमिका लाला कन्नूमलजी एम० ए० जज ढौलपुरने लिखी है। बाबू कन्हैयालालजी-की भाषा सरल तथा रोचक है।

वर्त्तमानमें आप ही अपनी जमींदारीके कार्य्योंको सफलता एवं योग्यता पूर्वक संचालित कर रहे हैं। आप अम्बाला महावीर जयन्तीके एक सालतक चेयरमैन तथा हस्तिनापुर तीर्थ कमेटीके कई वर्षों तक प्रेसिडेण्ट रह चुके हैं। आप जैन श्वेताम्बर कान्फ्रेन्स बम्बईकी यू० पी० स्टेण्डिग कमेटीके मेम्बर भी हैं। आपकी इन सेवाओंसे प्रसन्न होकर गवर्नमेंट ने आपको करीब ३ सालोंसे हापुड़ बेंचके आनरेरी मजिस्ट्रेटके पदपर नियुक्त किया है। आपको समस्या पूर्त्तिसे बड़ी दिलचस्पी है। बहुतसे अखबारोंमें आपकी समस्या पूर्त्ति छपा करती है। आपका कस्तला तथा हापुडकी जनतामें काफी सम्मान है। आपके भेरोंलालजी तथा धनपतलालजी नामक दो पुत्र हैं।

आप लोगोंका खानदान यहाँपर प्रतिष्ठित समझा जाता है। आपकी कस्तलामें बहुत बड़ी जमींदारी है।

सेठ मोतीलालजी नथमलजी लूणावतका खानदान, भरतपुर

इस परिवारवाले रूपसिंयां (जैसलमेर स्टेट) के निवासी लूणावत गौत्रके श्री जै० श्वे० मन्दिर मार्गीय है। इस खानदानवाले करीब ६० वर्ष पूर्व देशसे भरतपुर आकर बस गये हैं।

इस खानदानके सेठ गंगारामजी भरतपुरमें लेनदेनका व्यापार करते थे। आपके नथमलजी नामक पुत्रका जन्म सम्वत् १६१५ में हुआ। आपका स्वर्गवास सम्वत् १६६४ में हुआ।



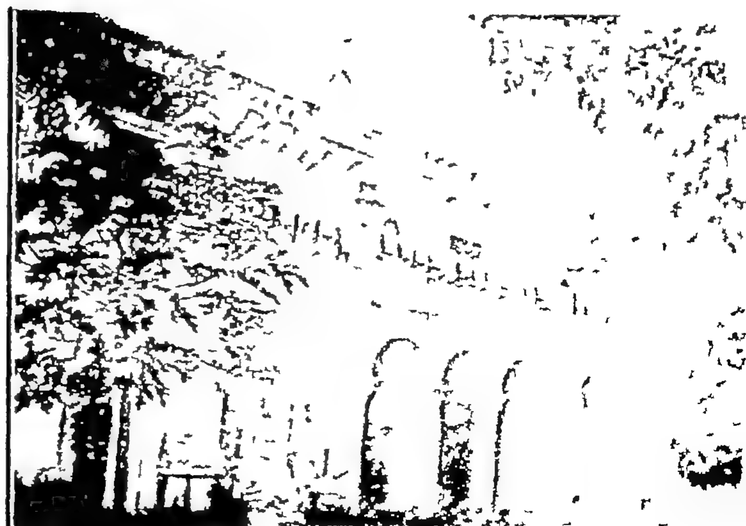
सेठ कन्हैयालालजी लूणावत आनरेरी मजिस्ट्रेट, कस्तला



बाबू मोहकमचन्दजी सँखलेचा, हाथरस



सेठ मोतीलालजी लूणावत भरतपुर



श्री दादावाड़ी, (से० [illegible]) [illegible]

आप भी लेनदेनका व्यापार करते रहे। आपके मोतीलालजी नामके एक पुत्र हैं। आपका जन्म सम्वत् १९४१ में हुआ। आप सम्वत् १९७२ तक भरतपुरमें ही व्यापार करते रहे। तदनन्तर आप कलकत्ता चले गये। वर्त्तमानमें आप मे० अजीतमल माणकचन्दके फर्मपर सर्विस करते हैं। आप मिलनसार हैं। आपके दोनों पुत्र रिखबचन्दजी एवं नेमीचन्दजीकी भरतपुरकी नहरमें डूब जानेके कारण असामयिक मृत्यु हो गई है।

सँखलेचा

सेठ बिहारीलालजी मोहकमचंदजी का खानदान, हाथरस

इस खानदानवाले जेसलमेर निवासी सँखलेचा गौत्रके श्री जै० श्वे० मंदिर मार्गीय हैं। इस खानदानमें धारसीजी हुए। आपके हंसराजजी, हंसराजजीके जालमचन्दजी नामक पुत्र हुए। आप सब लोग जैसलमेरमें ही रहते रहे। सेठ जालमचन्दजीके पुत्र सालमचन्दजी सबसे पहले करीब १०० वर्ष पूर्व देशसे हाथरस आये तथा यहाँपर लेन देन व जमींदारीका काम प्रारम्भ किया। आपका स्वभाव अच्छा था तथा धार्मिक पुरुष थे। आप यहींपर स्थायी रूपसे बस गये। तभीसे आपके वंशज आज तक यहींपर निवास कर रहे हैं। आपके धनीरामजी, उदयरामजी, एवं पूनमचंदजी नामक तीन पुत्र हुए।

सेठ धनीरामजीका परिवारः—आप बड़े कुशल एवं धार्मिक व्यक्ति थे। आपने अपनी जमीदारीको बढ़ाया तथा लेन देनके व्यापारमें तरक्की की। इसके अतिरिक्त आपने मकान वगैरह बनाकर अपनी स्थायी सम्पत्तिको बढ़ाया। आपने तीर्थ यात्राएँ भी की थी। आप संवत् १९०६ में स्वर्गवासी हुए। आपके माणकलालजी तथा बिहारीलालजी नामक दो पुत्र हुए। माणकलालजी तो छोटी उमरमें ही गुजर गये थे।

सेठ बिहारीलालजीका जन्म संवत् १९२० में हुआ। आप जमीदारी लेनदेन, किराया गिरवी तथा बैंकिंगका व्यापार करते रहे। इसमें आपने काफी सम्पत्ति कमाई। आप बड़े धार्मिक व्यक्ति भी थे। आपने हाथरस में २००००) बीस हजारकी लागतसे एक सुन्दर दादा-वाड़ी भी बनबाई जो आज भी सुन्दर स्थितिमें मौजूद है। आपके दोनों पुत्र सकटमलजी तथा ज्ञानचन्दजीका आपकी मौजूदगीमें ही स्वर्गवास हो गया था। सेठ सकटमलजी की मृत्युके समय आपके पुत्र मोहमकचंदजी केवल दस मासके थे। अतः आपका सारा लालन-पालन सेठ बिहारीलालजीने किया। सेठ बिहारीलालजी सं० १९८६ में स्वर्गवासी हुए।

बाबू मोहमकचन्दजीका जन्म संवत् १९७१ में हुआ। आप मिलनसार, उत्साही तथा अतिथि सेवा-प्रेमी सज्जन हैं। आप हाथरसमे लोकप्रिय तथा योग्य युवक हैं। वर्त्तमानमें आप ही अपने फर्मकी जमीदारी, बैंकिंग, किराया तथा लेनदेनके व्यापारको सफलतापूर्वक सचा-

लित कर रहे हैं। आप कमेटी तालीम, म्यु० कमेटी, देवग्रर मेला कमेटी आदि संस्थाओंके मेम्बर हैं। आपने अपने पितामह द्वारा बनवाई हुई दादावाड़ीका प्रतिष्ठा महोत्सव सं० १९८६ की माघ सुदी १० को जैनाचार्य्य श्री हरिसागरजी द्वारा सम्पन्न करवाया जिसमें दो ढाई हजार खर्च हुआ होगा।

आप मे० बिहारीलाल मोहकमचन्दके नामसे अपना सारा व्यापार करते हैं। यह खानदान यहांपर प्रतिष्ठित समझा जाता है।

सेठ रोशनलालजी सँखलेचा का खानदान, हाथरस

इस खानदान वाले जैसलमेर निवासी श्री जै० श्वे० स्था० तथा मन्दिर आम्नाय को माननेवाले हैं। सबसे पहले इस खानदानके सेठ मयाचन्दजी देशसे हाथरस आये और यहांपर आकर आपने जमींदारी व लेनदेनका व्यापार किया। आपके बहादुरमलजी, इनके गोकुलचन्दजी नामक पुत्र हुए।

सेठ गोकुलचन्दजीका जन्म सं० १८८० में हुआ। आप भी अपने जमींदारीके व्यापारको सफलतापूर्वक चलाते रहे। आप बड़े धर्मात्मा थे। आपका स्वर्गवास सं० १९५३ में हुआ। आपके निःसन्तान गुजरनेपर आपके नामपर रोशनलालजी गोद आये।

सेठ रोशनलालजीका जन्म सं० १९२५ में हुआ। आप धार्मिक पुरुष हैं। आपने सिद्धाचलजी आदि तीर्थोंकी यात्राकी है। आप गरीबोंको सहायता पहुँचाते रहते हैं। आपने भी अपनी जमीदारी वगैरहकी ठीक व्यवस्था की। आपके कन्हैयालालजी, चन्द्रभानजी, सूरजमलजी, लक्ष्मीनारायणजी, दुर्गाप्रसादजी, लखमीचन्दी, गुलाबचन्दजी तथा पन्नालालजी नामक आठ पुत्र हैं। इनमें बाबू लखमीचन्दजी, सूरजमलजी तथा पन्नालालजीका स्वर्गवास हो गया है।

बाबू कन्हैयालालजीका जन्म सं० १९४२ में, चन्द्रभानजीका १९४४, लक्ष्मीनारायणजी का १९४९ में, दुर्गाप्रसादजी का १९५४ तथा गुलाबचन्दजी का १९७३ में हुआ। आप सब बधु मिलनसार हैं तथा सम्मिलित रूपसे ही अपने व्यापारको संचालित कर रहे हैं। बाबू कन्हैयालालजीके नामपर चन्द्रभानजीके प्रथम पुत्र ज्ञानचन्दजी गोद आये। चन्द्रभानजीके ज्ञानचन्दजी, सुगनचन्दजी एवं प्रेमचन्दजी नामक तीन पुत्र हैं। सूरजमलजीके पीतमचन्दजी, दुर्गाप्रसादजीके हुकुमचन्दजी तथा गुलाबचन्दजीके रणजीतसिंह नामक पुत्र हैं। पीतमचन्दजीका स्वर्गवास हो गया है। आपलोग हाथरसमें बैंकिंग तथा जमींदारीका मे० गोकुलचन्द रोशनलालके नामसे व्यापार करते हैं।

श्री चुन्नीलालजी नेमीचन्दजी सँखलेचा, बी० ए० एल० एल० बी, अडव्होकेट अहमदनगर

इस परिवारके पूर्वज सेठ कचरदासजी संखलेचा बीसलपुर (मारवाड) में निवास करते थे। वहांसे आपने संवत् १४११ में अपना निवास स्थान कापरड़ा तार्थ (मेडताके समीप—मारवाड़) में बनाया। कापरड़ासे व्यापारके निमित्त इस परिवारके पूर्वज सेठ सीमलजी संखलेया महाराष्ट्र प्रान्तके आलकुटी (पारनेर तालुक जिला अहमद नगर में आये एवं वहां आपने अपना व्यापार आरम्भ किया। आपके वुधमलजी और विरदीचन्दजी नामक दो पुत्र हुए। सेठ शिवदासजीके नेमीचन्दजी, किशनदासजी, लछमणदासजो तथा रूपचंदजी नामक ४ पुत्र हुए। इन वन्धुओंतक यह परिवार आलकुटीमें ही व्यापार करता रहा। सेठ नेमीचन्दजीके भगनीरामजी, इन्द्रभानजी, चन्द्रभानजी, नैनसुखजी एवं चुन्नीलालजी नामक ५ पुत्र हुए। इन बन्धुओंमेंसे भगतीरामजी इस समय विद्यमान नहीं हैं।

आलकुटीसे लगभग ३० वर्ष पूर्व यह परिवार अहमदनगर आया। सेठ देमराजजी पन्नालालजीकी भागीदारीमें सेठ इन्द्रभानजीने बहुत समय तक व्यापार किया। इधर ३ साल पूर्व इस परिवारका व्यापार अलग हुआ है। इस समय इस परिवारका नेमीचन्द चन्द्रभान और नैनसुख शिवलालके नामसे व्यापार होता है।

श्री चुन्नीलालजी संखलेचाका जन्म सन् १८६८ में हुआ। आपने न्यू हाईस्कूल बम्बई-से१९१८ में मेट्रिक पास किया। सन् १९२१ में B. A और १९२५ में डेक्कन कालेज पूनासे एल० एल० बी० का डिप्लोमा हासिल किया और तबसे आप अहमद नगरमें वकालत करते हैं। श्री चुन्नीलालजी बड़े सरल-स्वभावके सज्जन हैं। आप सन् १९२३ से २५ तक पूनाके भारत जैन विद्यालयमें आनरेरी सुपरिन्टेन्डेन्ट रहे थे। सन् १९२८ से ३३ तक आपको अहमद नगर म्यु० की मेम्बरानका सम्मान प्राप्त हुआ था। इधर ८ सालोंसे आप मर्चेन्ट एसोशियेशन अहमदनगर के सेक्रेटरी हैं। इसी तरहके कार्योंमें आप भाग लेते रहते हैं। आप महाराष्ट्र प्रान्तके वीसा ओसवाल समाजमें प्रथम बी० ए० एल० एल० बी० वकील हैं।

पगारिया

सेठ नानचन्दजी नरसिंहदासजी पगारिया, हिंगोना (खानदेश)

इस परिवारके मालिकोंका मूल निवासस्थान मेड़ता है। वहाँसे यह कुटुम्ब करेड़ा (मेवाड़) मे आया। करेड़ासे इस परिवारके पूर्वज सेठ रायचन्दजी पगारिया लगभग संवत् १८६० मे व्यापारके लिये खानदेशके हिगोना नामक स्थानमे आये और यहाँ आपने लेनदेन का

व्यापार आरम्भ किया। आपके लच्छीरामजी, लालचन्दजी, गोविन्दरामजी, नानचन्दजी तथा परशुरामजी नामक ५ पुत्र हुए। इन भाइयोंमें लालचन्दजीके परिवारमें इस समय कोई नहीं है।

इन पांचों बन्धुओंमें सेठ नानचन्दजी तथा सेठ परशुरामजी पगारिया बहुत नामांकित पुरुष हुए। आपने बहुत सम्पत्ति उपार्जित की तथा साथ ही अपने परिवारके मान सम्मान व प्रतिष्ठाकी भी बहुत उन्नति की। आप खानदेशकी ओसवाल समाजमें गण्यमान्य पुरुष माने जाते थे। सेठ परशुरामजीने धरण गांवमें हाईस्कूलकी बिल्डिंग बनवाकर सरकारको भेंट की। सेठ नानचन्दजी लगभग २१ साल पहिले एवं सेठ परशुरामजी लगभग १६ साल पहिले स्वर्गवासी हुए।

सेठ नानचन्दजीके पुत्र सेठ नरसिंहदासजी हुए। आपने भी अपने व्यापारको बढ़ाकर अपने परिवारकी प्रतिष्ठाको कायम रक्खा। खानदेशकी ओसवाल समाजमें आप भी गण्यमान्य सज्जन माने जाते थे। सं० १९८८ मे आप स्वर्गवासी हुए। आपके दगडूलालजी तथा मोतीलालजी नामक दो पुत्र हुए। इनमें मोतीलालजी सेठ परशुरामजीके नाम पर दत्तक गये। सेठ दगडूलालजीका स्वर्गवास हो गया है। इस समय आपके पुत्र भागचन्दजी, दीपचन्दजी तथा उत्तमचन्दजी नामक ३ पुत्र हैं। आप तीनों भाई बड़े सीधे स्वभावके सज्जन हैं। आपके यहां सेठ नरसिंहदास नानचन्दके नामसे साहुकारी, कृषि तथा कपासका व्यापार होता है। सेठ मोतीलालजीके यहाँ मोतीलाल परशुरामके नामसे व्यापार होता है। आपने हिंगोना में एक पाठशालाका मकान बनवा कर सरकारको भेंट किया है। आपके अमोलकचन्दजी तथा प्रेमराजजी नामक पुत्र हैं। श्री भागचन्दजीके सौभागचन्दजी आदि पुत्र हैं।

इसी तरह इस परिवारमें सेठ लच्छीरामजीके पौत्र राजमलजी तथा सेठ गोविन्दरामजीके पौत्र हरकचन्दजी, बच्छराजजी तथा चम्पालालजी विद्यमान हैं।

लखमीचंदजी सोभागमलजी मेहता का खानदान,

इस परिवारके पूर्वजोंका मूल निवास स्थान मेड़ता (मारवाड़) है। यह परिवार श्वेताम्बर जैन स्थानकवासी सम्प्रदायका माननेवाला है। मारवाड़से लगभग डेढ़ सौ पौने दो सौ वर्ष पूर्व इस परिवारके पूर्वज सेठ हिन्दूमलजी पैदल मार्ग द्वारा व्यापारके निमित्त भोपाल स्टेटके इच्छावर नामक स्थानमें आये तथा यहाँ बहुत साधारण स्थितिमें कारबार आरम्भ किया। आपके पुत्र सेठ सांवतमलजी मेहता हुए। आप भी साधारण कारबार करते रहे।

मेहता सावनमलजीके पुत्र मेहता बाग्रमलजी हुए। आप बुद्धिमान तथा व्यवसाय

चतुर पुरुष थे। आपके समयसे इस परिवारके व्यवसाय तथा सम्मानकी विशेष उन्नति आरम्भ हुई। साहुकारी तथा अफीमके व्यापारमें आपने बहुत सम्पत्ति उपार्जित की। सम्वत १९७७ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके मेहता लखमीचन्दजी तथा मेहता ज्ञानमलजी नामक दो पुत्र हुए। आप दोनो बन्धुओंके कोई सन्तान नही थी। अतएव बोरावड़ से मेहता ज्ञानमलजीके नाम पर मेहता सोभागमलजी (मेहता जयकिशनजीके पुत्र) सम्वत १९४१ में तथा मेहता लखमीचन्दजीके नामपर मेहता प्रतापमलजी उर्फ सवाईमलजी (मेहता सिरेमलजीके पुत्र) सम्वत १९६२ में दत्तक आये।

सेठ बाघमलजी मेहताके पश्चात सेठ लखमीचन्दजी तथा सेठ सोभागमलजी दोनों काका भतीजोंने अपने व्यापारको विशेष उन्नत किया। आपने सम्वत् १९५० में अपना दुकानकी शाखाएं भोपालमें व सम्वत् १९६३ में आस्टामें खोलीं। इसी प्रकार इच्छावर तहसील में ३।४ स्थानोंपर और अपनी शाखाएं स्थापित कीं। इन सब दुकानोंपर साहुकारी तथा आढ़तका कारबार आरम्भ किया। भोपाल रियासतमे आप बड़े नामांकित पुरुष माने जाते थे। सेठ लखमीचन्दजी मेहता सम्वत् १९८३ में स्वर्गवासी हुए। सम्वत् १९४९ में ही इन दोनों बन्धुओंका व्यापार अलग २ हो गया था।

मेहता सोभागमलजी—आपका जन्म सम्वत् १९३३ में बोरावड़में हुआ। आप बड़े कुशाग्र बुद्धिके, राजनीतिसे प्रेम रखनेवाले, विद्वान और धार्मिक वृत्तिके पुरुष थे। श्री श्वेताम्बर जैन स्थानक वासी कान्फ्रेंसके रतलाम अधिवेशनके समय आप प्रान्तिक सेक्रेटरीके पदपर सम्मानित किये गये थे। आप इच्छावर म्युनिसिपलिटीके प्रेसिडेंट थे एवं भोपाल स्टेटने भी आपकी योग्यतासे प्रसन्न होकर आपको ऑनरेरी मजिस्ट्रेटका सम्मान इनायत किया था। इतना ही नहीं आप बिना परवानगी जब चाहें तब नवाब साहब भोपालसे मिल सकते थे। आपने इच्छावरमे इंग्लिश स्कूल तथा कन्या पाठशालाका उद्घाटन करवाया एवं अपनी ओरसे इन पाठशालाओं में ५ हजार रुपयोंकी सहायता प्रदान की। रियासतकी खुशियोंके समयपर आपने हजारों रुपये अपने आसामियोंको माफ किये। इस उदारताके उपलक्ष में भोपाल दरबारने प्रसन्न होकर आपको कई परवाने देकर आपकी कद्र की। इस प्रकार प्रतिष्ठापूर्वक जीवन विताते हुए सन् १९३१ की २० जनवरीको हृदयकी गति एकाएक बन्द हो जानेसे आपका स्वर्गवास हुआ। आपके मेहता थानमलजी तथा मेहता मोतीलालजी नामक पुत्र विद्यमान हैं।

मेहता सवाईमलजी—आपका जन्म सम्वत् १९५० में बोरावड़में हुआ। आपने भी अपने व्यापार तथा परिवारके सम्मानको विशेष उन्नत किया। रियासतमें व जनतामें आप गण्यमान्य व्यापारी और प्रतिष्ठित सज्जन माने जाते हैं। सन् १९३२ से तीन सालोंतक आपने भोपाल स्टेट कौन्सिलके मेम्बर पदको सम्मानित किया था। इस समय आपके यहाँ बाघमल लखमीचन्दके नामसे इच्छावर, भोपाल आस्टा आदि स्थानोंपर व्यापार होता है। आपके पुत्र श्री महेन्द्रप्रतापजी ८ सालके हैं।

मेहता थानमलजी—आपका जन्म सम्वत् १९६२ की कुँवार वदी ११ को हुआ। भोपालमें आपने मैट्रिक तक अध्ययन प्राप्त किया। हिन्दीकी भी आपने अच्छी योग्यता हासिल की है। जनताने आपको योग्य समझ सन् १९३३ से भोपाल स्टेट लेजिस्लेटिव कौंसिलके मेम्बर पदपर मनोनीत कर आपका उचित सम्मान किया है। इतनी छोटी वयमें ही आप बड़े लोकप्रिय, अनुभवी एवं विचारवान युवक प्रतीत होते हैं। भोपाल स्टेटके नवयुवकोंके आप अगुआ हैं। राजनीतिसे आपको विशेष रुचि है। इस समय आपके यहाँ इच्छावरमें वाघमल ज्ञानमलके नामसे बैंकिंगका व्यापार होता है तथा भोपालमें मे० सोभागमल थानमल के नामसे साहुकारी व आढ़तका कारवार होता है। इसी प्रकार अन्य शाखाओंपर वाघमल ज्ञानमल मेहताके नामसे कारवार होता है।

पारख

श्री लेखचंद्जी सुगनचन्द्जी पारख, जबलपुर

यह परिवार बड़ीपादू (मारवाड़) का निवासी है। वहांसे सेठ कवराजीका परिवार व्यापारके लिये जबलपुर आया। आपके खाजूरामजी, नन्दरामजी तथा मयारामजी नामक तीन पुत्र हुए। सेठ खाजूरामजी राजा गोकुलदासजीके यहां मुनीमात करते थे। आपकी सेठोंके यहां बड़ी प्रतिष्ठा तथा इज्जत थी। आप नामी तथा मातबर पुरुष थे।

सेठ नन्दरामजीके कस्तूरचन्दजी तथा नथमलजी और सेठ मयारामजीके गेनचन्दजी और केसरीचन्दजी नामक पुत्र हुए। इन भाइयोंमें केसरीचन्दजी सेठ खाजूरामजीके नामपर और नथमलजी सेठ मूलचन्दजी चोरड़ियाके नामपर दत्तक गये। सेठ केसरीचन्दजी प्रतिष्ठित व नामी व्यक्ति हुए। आपके लेखचन्दजी, सुगनचन्दजी, चन्द्रभानजी तथा नेमीचन्दजी नामक चार पुत्र हुए। इनमें लेखचन्दजी तथा सुगनचन्दजी विद्यमान हैं। श्री सुगनचन्दजी सेठ कस्तूरचन्दजीके नामपर दत्तक गये हैं।

सेठ लेखचन्दजी तथा सुगनचन्दजी जबलपुरकी ओसवाल समाजमें प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। श्री लेखचन्दजीने संवत् १९३० में पूज्य चम्पालालजी महाराजके साथ लाडनू तक पैदल यात्रा की थी। सेठ लेखचन्दजीके पुत्र भीकमचन्दजी तथा दुलीचन्दजी, सेठ सुगनचन्दजीके पुत्र माणिकचन्दजी, सेठ चन्द्रभानजीके पुत्र निहालचन्दजी और गेनचन्दजीके पुत्र गुलाबचन्दजी विद्यमान हैं। इन भाइयोंमें श्री निहालचन्दजी सेठ नत्थूमलजी चोरड़ियाके नामपर दत्तक गये हैं।

श्री सुगनचन्दजीके यहां सुगनचन्द माणिकचंदके नाम से जनरल एण्ड क्राकरी मर्चेंटका व्यापार होता है।

श्रीश्रीमाल

सेठ गुलाबचन्दजी वेदका खानदान मांगरोल (कोटा)

इस खानदानवाले मांगरोल (कोटा-स्टेट) निवासी ओसवाल जातिके श्रीश्रीमाल गुणायचा गौत्रके व्यक्ति हैं। इस खानदानमें सेठ गुलाबचन्दजी हुए।

सेठ गुलाबचन्दजी.—आप योग्य एवं वैद्यक विद्यामे कुशल सज्जन थे। आपकी वैद्यकीय निपुणताके कारण ही आज तक आपके खानदानवाले वेद नामसे मशहूर हैं। सरकारने आपकी वैद्यक सम्बन्धी प्रतिभाका सम्मान करनेके लिये खैरजा खेड़ली (जि० बड़ोर) में बहुतसी जमीन पुरस्कार स्वरूप प्रदान की। आपके स्वर्गवासी हो जानेपर उक्त जागीरी की जमीन स्टेटमें चली गयी। कारण आपकी संतानों मे इस विद्याका अभाव था। आप मांगरोलके एक प्रतिष्ठित व्यक्ति हो गये है। आपके डालूरामजी, ताराचन्दजी, राजारामजी, केशोरामजी एवं शम्भूरामजी नामक पाँच पुत्र हुए।

सेठ राजारामजीके निःसंतान स्वर्गवासी होनेके पश्चात् आपके नामपर सेठ केशोरामजीके पौत्र मन्नालालजी गोद आये। सेठ मन्नालालजी भी निःसन्तान स्वर्गवासी हुए। आपके नामपर मारवाड़की ओरसे सेठ ज्ञानमलजी गोद आये। सेठ ज्ञानमलजीका स्वर्गवास संवत् १६४३ में हुआ। आपके धनराजजी एवं भवानीशंकरजी नामक दो पुत्र हुए।

सेठ धनराजजीः—आपका जन्म संवत् १६३० में हुआ। आपने १४ वर्षकी अल्पायुसे ही व्यापारमें भाग लेना शुरू कर दिया था। आप दोनों बंधुओंकी छोटी उम्रमें ही आपके पिताका स्वर्गवास हो गया था। संवत् १६५८ तक तो आप दोनों शामलातमें ही अपना व्यापार करते रहे। इसके पश्चात् अलग होकर अपना २ स्वतन्त्र रूपसे व्यापार करने लगे। सेठ धनराजीने अलग होनेके पश्चात् अपने व्यापारको बढ़ाया तथा बहुतसी सम्पत्ति कमाई। आप कोटा स्टेटके धनिकोंमें गिने जाते थे। आपका मांगरोलमें अच्छा सम्मान था। आप प्रतिष्ठित एवं प्रसिद्ध व्यक्ति हो गये हैं। आपके निःसन्तान रहनेपर आपने जोधपुरके श्री जयचंदजी लूणावतके पुत्र मोतीलालजीको गोद लिया।

सेठ धनराजजी बड़े परोपकारी एवं सार्वजनिक सेवाप्रेमी सज्जन थे। आपने प्रयत्न करके मागरोलमें एक सार्वजनिक औषधालय खुलवाया था तथा उसमें स्वयं भी आर्थिक सहायता दी थी। इसके अतिरिक्त अहिंसा सिद्धान्तको पालन करते हुए आपने बहुतसे जीवोंके प्राण बचाये।

बाबू मोतीलालजीका जन्म संवत् १६६५ की माह सुदी १२ को हुआ। आप संवत् १६७५ में मांगरोल गोद आये। आपने अपने स्वर्गीय पिताजीकी स्मृतिमें श्मशानमें एक तिवारी बनवाई तथा उनकी पुण्यतिथिपर मुनि श्री चौथमलजी महाराजके उपदेशसे "निग्रंथ

प्रवचन" नामक ग्रन्थके इंग्लिश अनुवादमें सहायता दी है। ये अनुवादित पुस्तकें अमूल्य वितरण की जांयगी।

सेठ भवानीशंकरजीका स्वर्गवास संवत् १९७४ में हुआ। आपके पुत्र सूरजमलजी विद्यमान हैं। आपके तेजमलजी, सौभागमलजी, मानमलजी एवं रतनसिंहजी नामक चार पुत्र विद्यमान हैं।

सेठ राजमलजी नन्दलालजी श्रीश्रीमाल, वरणगाँव (भुसावल)

इस परिवारके मालिकोंका मूल निवासस्थान रूपनगढ़ (किशनगढ़ स्टेट) का है। आप श्री जै० श्वे० स्था० आम्नायके माननेवाले हैं। रूपनगढ़से लगभग १०० साल पूर्व सेठ जालमचन्दजी श्रीश्रीमालके पुत्र सेठ लक्ष्मणदासजी तथा सेठ सरदारमलजी व्यापारके लिये लखनऊ गये, वहांसे आप मिर्जापुर आये एवं मिर्जापुरसे दोनों बंधु लगभग ६० साल पहिले जबलपुर आये तथा वहाँ आप लोग अनाज व लेनदेनका व्यापार करते रहे। वहीं दोनों बन्धुओंका स्वर्गवास हुआ। सेठ लक्ष्मणदासजीके नथमलजी तथा ज्ञानचन्दजी एवं सेठ सिरदारमलजीके पन्नालालजी नामक पुत्र हुए। ये बंधु लगभग संवत् १९६६ में जबलपुरसे वरणगांव (भुसावल) आये तथा भागीदारीमें राजमल नन्दलालके नामसे रुई, सींगदाणा तथा कमीशनका व्यापार आरम्भ किया। सेठ पन्नालालजीने अपने परिवारके व्यापार तथा मान प्रतिष्ठाको विशेष बढ़ाया। संवत् १९८२ की कार्तिक वदी ११ के दिन ६२ सालकी वयमें आप स्वर्गवासी हुए।

इस समय सेठ नथमलजीके पुत्र बाबूलालजी तथा प्रेमचन्दजी, सेठ ज्ञानमलजीके पुत्र माणिकचन्दजी तथा सेठ पन्नालालजीके पुत्र राजमलजी, नन्दलालजी, हरकचन्दजी एवं चम्पालालजी विद्यमान हैं। सेठ बाबूलालजी तथा प्रेमचन्दजी, जलगांवमें बाबूलाल प्रेमचन्दके नामसे अपना स्वतन्त्र कारबार करते हैं तथा शेष बन्धु सम्मिलित रूपसे व्यापार करते हैं।

सेठ राजमलजी, नन्दलालजी—सेठ राजमलजीका जन्म संवत् १९४७ में तथा नन्दलालजीका जन्म १९४९ में हुआ। आप दोनों ने अपने पिताजीके पश्चात् अपने व्यापार तथा सम्मानको विशेष उन्नत किया है। खानदेश तथा वरार प्रान्तके जैन समाजमें आपका परिवार गण्यमान्य माना जाता है। आपने रुई तथा सींगदाणाके व्यापारमें अपनी व्यापार चातुरीसे अच्छी सम्पत्ति उपार्जित की है। मोसमके समय भुसावल, बोदवड़, जामनेर आदि अनेकों स्थानोंपर सींगदाणा तथा रुईकी खरीदी करनेके लिये आप अपनी एजेसियां कायम करते हैं। आपकी वरणगांवमें एक जीनिंग व सींगदाणा फोड़नेकी फैक्टरी है। हरएक सार्वजनिक व धार्मिक कार्यों में तथा संस्थाओंमें आप सहायता देते रहते हैं। सेठ नन्दलालजीने सन् १९२९ में वरणगाँवमें एक अंग्रेजी स्कूलको उद्घाटन करवाया जिसमें आपने भी बहुतसी सहायता प्रदान की। सेठ राजमलजीका व्यापारिक साहस बहुत बढ़ा चढ़ा है। आप

बड़ी उदार तबियतके तथा शिक्षासे प्रेम रखनेवाले व्यक्ति हैं। आपके साथ आपके बंधु हरकचंदजी तथा चम्पालालजी भी व्यापारमें भाग लेते हैं। आप दोनोंका जन्म संवत् १९६१ तथा ६८ में हुआ है।

सेठ नन्दलालजीके पुत्र फकीरचंदजी तथा नगीनचन्दजी एवं हरकचन्दजीके पुत्र नीलमचन्दजी हैं।

रांका

सेठ चेतनदासजी गुलाबचंदजी रांका, पूर्णिया

इस परिवारके पूर्वजोंका मूल निवासस्थान महाजन (बीकानेर स्टेट) का था। वहांसे संवत् १९५२ मे इस परिवारवाले सेठ चेतनदासजी राजलदेसर आकर रहने लगे। तभीसे आपके कुटुम्बी लोग राजलदेसरमे निवास कर रहे हैं। आप लोग रांका गौत्रीय श्रीजैन श्वेताम्बर तेरापंथी सम्प्रदायको माननेवाले हैं।

सबसे प्रथम सेठ चेतनदासजी संवत् १९२८ में देशसे चलकर व्यापार निमित्त पूर्णिया आये और यहांपर आपने कपड़ेका व्यवसाय प्रारम्भ किया। आपके हाथोंसे कार्यकी उन्नति हुई। आपका संवत् १९६० में स्वर्गवास हो गया। आपके गुलाबचन्दजी नामक एक छोटे भाई और थे।

सेठ गुलाबचन्दजी—आपका जन्म संवत् १९२५ में हुआ। आप बड़े व्यापार कुशल, साहसी एवं मेधावी सज्जन हैं। आपने अपनी व्यापार चातुरीसे बहुत सी सम्पत्ति उपार्जित की और यश भी सम्पादन किया। आपने अपनी फर्मकी १९६४ में कलकत्तामें, १९८४ में फारबिसगंजमें तथा गुलाबबागमें भी शाखाएं खोलीं। इन सब फर्मोंपर पाट, कपड़ा तथा सराफीका लेन देन होता है। आपके हजारीमलजी, फतेचंदजी एव जयचन्दलालजी नामक तीन पुत्र हैं। आप तीनों भाइयोंका जन्म क्रमशः सं०१९५५, १९६४, १९७४ मे हुआ। आप तीनों सज्जन मिलनसार एवं व्यापारमें कुशल हैं। वर्त्तमानमें आप सबलोग व्यापार कार्य्यमें हाथ बटा रहे हैं।

यह खानदान राजलदेसरकी ओसवाल समाजमें बड़ा प्रतिष्ठित समझा जाता है।

सेठ राजमलजी दीपचंदजी रांकाका खानदान, गङ्गापुर

इस खानदानवाले आमेट (मेवाड़) निवासी रांका गौत्रीय श्री जै० श्वे० स्था० सम्प्रदाय को माननेवाले हैं। इस खानदानके चतुर्भुजजी सं० १८५१ के करीब गंगापुर आये। आपके रूपचन्दजी तथा इनके मझले पुत्र किशनजी हुए।

सेठ श्रीकिशनजीः—आपका जन्म सं० १६०१ में हुआ। आपने सं० १६४४ तक तो अपने भाइयोंके साथ शामलातमें व्यापार किया। इसके पश्चात् सबलोग अपना२ अलग व्यापार करने लगे। सेठ किशनजी व्यापारकुशल व्यक्ति थे। आपने व्यापारमें अच्छी सफलता प्राप्त की।

आपको मेवाड़ स्टेट तथा गंगापुरमें अच्छा सम्मान प्राप्त हुआ। मेवाड़के महाराणा साहब श्री फतेहसिंहजीने आपको पोशाकें प्रदान कर व कस्टम सिलवाड़ीका खजांची बनाकर सम्मानित किया था। आप योग्य एवं मानेता व्यक्ति थे। आप सं० १६५८ में गुजरे। आपके पुत्र केशरीचन्दजीका जन्म सं० १६२२ में हुआ। आप भी अपने सराफी व सिलवाड़ीके खजांची का काम करते रहे। आपको श्री मेवाड़से पोशाकें इनायतकी गई थीं। आप बड़े धार्मिक व्यक्ति थे। आपका स्वर्गवास सं० १६६५ में हुआ। आपके राजमलजी एवं दीपलालजी नामक दो पुत्र विद्यमान हैं।

सेठ राजमलजीका जन्म सं० १६४३ में हुआ। आप योग्य एवं समझदार सज्जन हैं। आपको उदयपुर महाराणा साहबने पांच सात बार पोशाकें इनायत की हैं। इसके अलावा आपके पुत्र एवं पुत्रियोंके विवाहोंमें महाराणा साहबकी ओरसे कंठिए प्रदान की गई थीं। आप गंगापुरमें प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। आप यहां की म्यु० के मेम्बर, परगना बोर्ड, चेम्बर आफ सर्विस, तथा ग्वालियर बैंक गंगापुरके मेम्बर है। आपके शङ्करलालजी नामक एक पुत्र हैं। सेठ दीपलालजी का जन्म सं० १६४६ में हुआ। आप भी योग्य व्यक्ति हैं। आप पञ्चायत बोर्ड तथा ओकाव कमेटीके मेम्बर हैं। पञ्चायत बोर्डमें सफलता पूर्व कार्य करनेके उपलक्षमें आप दोनों बन्धुओंको ग्वालियर स्टेटने सार्टिफिकेट प्रदान किये हैं। शंकरलालजीके रिखबलालजी, कन्हैयालालजी तथा दीपलालजीके भगवतीलालजी नामक पुत्र हैं।

यह खानदान गंगापुरमें प्रतिष्ठित परिवार माना जाता है। आपलोग ब्याज, हुंडी चिट्ठी, जमीदारी तथा रईसों एवं जमीदारोंके साथ लेन देनका व्यापार करते हैं। आपके यहांपर कस्टम सिलावड़ीके खजानेके अतिरिक्त सोड़ती ठिकानेका खजाना भी है। स्व० महाराणा फतेहसिंहजीकी पाटधर गादी सोड़तीमें है तथा यहींसे स्व० महाराणा साहब उदयपुर गोद गये थे। सोड़तीके महाराज श्रीशिवदानसिंहजी एक समयसं० १६६० में आपके यहां पर आये थे।

सेठ नेमचंदजी सुजानमलजी रांका का खानदान, देशनोक

इस खानदानवाले देशनोक (बीकानेर स्टेट) के निवासी ओसवाल जातिके रांका गौत्रीय श्री जै० श्वे० स्था० सम्प्रदायको माननेवाले सज्जन हैं। इस खानदानमें सेठ उम्मेदमलजी हुए। आपके मूलचन्दजी, सवाई रामजी, हरिचन्दजी तथा हजारीमलजी नाम चार पुत्र हुए। आप

सबलोग देशनोकमें ही रहकर व्यापार करते रहे। सेठ सवाईरामजीका स्वर्गवास सं० १६२८ में हुआ। आपके सुगनचन्दजी तथा भीखमचन्दजी नामक दो पुत्र हुए।

सेठ सुगनचन्दजीका जन्म सं० १६०७ के करीब हुआ। आप छोटी उमरसे ही देशसे बाहर कलकत्तेके पास सेतियां चले आये तथा यहांपर आकर नौकरी की। आपका स्वर्गवास सं० १६४१ में हो गया। आपलोगोंतक यह खानदान मन्दिर मार्गीय रहा। मगर उधर मन्दिर मार्गीय साधुओंके आवागमन न होनेसे तथा स्थानकवासी साधुओंके संसर्गसे यह परिवार स्थानक वासी हो गया। सेठ सुगनचन्दजीके नेमचन्दजी नामक एक पुत्र हुए।

सेठ नेमचन्दजीका जन्म संवत् १६२६ में सेतियामें हुआ। आपकी छोटी उमरमें ही आपके पिताजीका स्वर्गवास हो गया था, अतः आपको बहुत कष्टोंका सामना करना पड़ा। आप व्यापार कुशल व्यक्ति हैं। आप सं० १६५४ तक सेतियामें ही रहे। यहांसे फिर देश तथा देश से फिर कलकत्ता चले आये। यहांपर सं० १६५८ तक सर्विस व सं० १६७२ तक दलाली की। फिर करीब ४ वर्षोंतक मे० नेमचन्दजी सुजानमल के नामसे कलकत्तेमें घीका व्यापार किया। तदनंतर आपने अपने यहाँपर कपड़ेका व्यापार शुरू किया जिसमें आपको बहुत सफलता मिली। आप बड़े दृढ़ विचारोंके सज्जन हैं। आप स्थानकवासी जैन संस्था कलकत्ता के उप सभापति भी रह चुके हैं। इसकी स्थापनामे आपका हाथ था तथा आप इसके मन्त्री भी रह चुके हैं। वर्त्तमानमें आप करणी मन्डल देशनोकके उपसभापति हैं। आप ही वर्त्तमानमें अपने सारे व्यापारको सञ्चालित कर रहे हैं। आपके सुजानमलजी नामक एक पुत्र हैं।

सुजानमलजीका जन्म सं० १६५१ में हुआ। आप अपने व्यापारमें भाग लेते हैं। आपके मन्नालालजी, दीपचन्दजी, चम्पालालजी एवं सम्पतलालजी नामक चार पुत्र हैं। इनमें बाबू मन्नालालजी शिक्षित तथा मिलनसार युवक हैं। आपने कलकत्ता युनिवर्सीटीसे सन १६३४ में बी. ए. तथा हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयागसे विशारद परीक्षा पास की। शेष सब भाई पढ़ते हैं। इस परिवारकी मे० नेमचन्द सुजानमजके नामसे ४३ क्लाइव स्ट्रीट कलकत्तामें गद्दी है तथा इसी नामसे ६६ क्रासस्ट्रीटमें दूकान है जिसपर आढ़तका व्यवसाय होता है।

भण्डारी सखरूपमलजी रघुनाथप्रसादजी भण्डारीका खानदान, कानपुर

इस खानदानके सज्जनोंका मूल निवासस्थान रूपनगढ़ (मारवाड़) का था। आपलोग भण्डारी गौत्रके श्री० जै० श्वे० मं० आम्नामको माननेवाले हैं। इस परिवारमें लाला सखरूप मलजी, चिमनलालजी तथा नारायणदासजी नामक तीन बन्धु हुए। आप तीनों भाई करीब १२५ वर्ष पूर्व देशसे माधवगंज आये तथा यहांपर गल्लेका व्यापार आरम्भ किया। १० वर्ष पश्चात् लाला चिमनलालजी चतुर मेहता नथमलजीके यहाँपर कानपुर गोद चले गये। लाला सखरूप मलजी भी माधोगञ्जसे कानपुर चले आये। आपने कानपुरमें भी गल्लेका व्यवसाय किया। आपके नामपर लाला रघुनाथ प्रसादजी गोद आये।

लाला रघुनाथप्रसादजी:—आप बड़े व्यापार कुशल, प्रतिभाशाली तथा होशियार सज्जन थे। आपने अपने गल्लेके व्यापारको बहुत चमकाया व बहुत सी सम्पत्ति उपार्जित की। अपने फार्मके व्यवसायके तरक्कीके लिये आपने कलकत्ता, बम्बई, सुधौली, कालाकांकर, भारवारी, सण्डीला; काकोरी, लखनऊ, मलियाबाद, लखीमपुर, बैरामघाट आदि कई स्थानोंपर अपनी फर्में खोलकर उनपर सफलता पूर्वक गल्ले वगैरहका व्यापार किया जिसमें आपने लाखों रुपये कमाये।

आप बड़े धार्मिक तथा योग्य व्यक्ति हो गये हैं। ऐसा सुना जाता है कि आपने सम्मेद शिखरजी तथा सिद्धाचलजीके पैदल संघ निकाले थे। इतना ही नहीं आपने कानपुर (प्रतिष्ठा सं० १९२८) सम्मेदशिखर तथा लखनऊमें तीन सुन्दर २ मन्दिर बनवाये और उनके प्रतिष्ठा महोत्सव करवाये।। आप बड़े प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। आपका स्वर्गवास सं० १९१८ में हुआ। आपके नामपर लाला लक्ष्मणदासजीके ज्येष्ठ पुत्र सन्तोषचन्दजी गोद आये। लाला सन्तोष-चन्दजीके लालचन्दजी तथा लखमीचन्दजी दो भाई और थे।

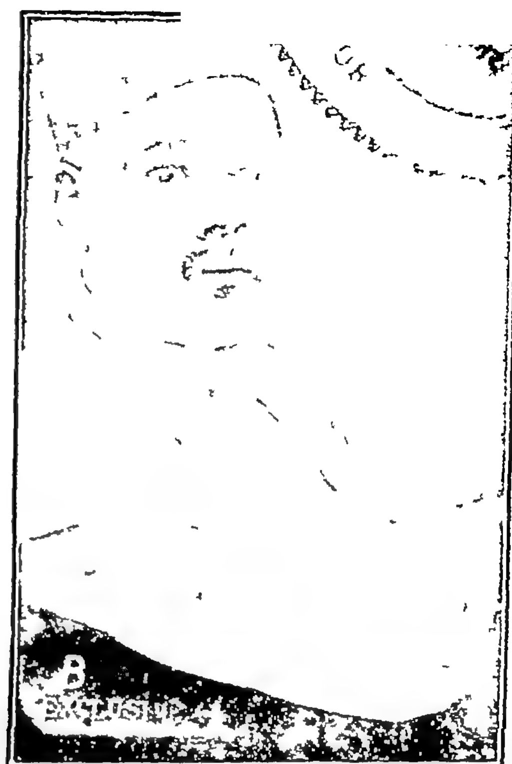
लाला सन्तोषचन्दजी:—आपका जन्म सं० १९२५ मे हुआ। आपने अपने फार्म के विस्तृत गल्लेके व्यापारको सफलता पूर्वक चलाया। आपके यहांपर गल्लेका व्यापार बहुत बड़े स्केलपर होता था। इसके पश्चात् आपने अपने यहांपर जवाहरातका व्यापार शुरू किया।

आपने अपने पिताजी द्वारा बनाये हुए कानपुरके जैन मन्दिरमे काच जड़वाये व आस-पास बगीचा लगवाया। यह मन्दिर भारतके दर्शनीय स्थानोंमें प्रसिद्ध तथा भारतीय जड़ाऊ मन्दिरोंमें बहुत उच्च श्रेणीका गिना जाता है। इसमन्दिरकी कारीगरी, सोने व मोतीके काम में प्राचीन कलाका बहुत ही उत्तम नमूना मिलता है। निज मन्दिरके चौकके छतमें सोनेकी कोराई व खम्भों तथा दीवालोंके ऊपर काचकी जड़ाईके साथ मोती वगैरहका काम बहुत ही अनूठे ढङ्गका बना हुआ है। यह मन्दिर इतना सुन्दर तथा भारतीय कला व कारीगरीका ऐसा अच्छा नमूना है कि जिसे देखनेके लिये बाहर दूर २ से बहुतसे लोग आया करते हैं। विदेशसे भारतमें भ्रमण करनेके लिये आनेवाले टुरिस्टोंके लिये भी यह एक बहुत ही अमूल्य तथा दर्शनीय भारतीय वस्तु है। प्रतिवर्ष बहुतसे विदेशी लोग भी इसे देखनेके लिए आया करते हैं तथा इसकी कारीगरीको देखकर इसकी मुक्त कण्ठसे प्रशंसा करते हुए चले जाते हैं। इस प्रसिद्ध मन्दिरका फोटो टाइम्स आफ इण्डिया में भी प्रकाशित हो चुका है। इस ग्रन्थ के अन्तर्गत भी इसके एकभागका फोटो दिया जा रहा है। इस मन्दिरके अन्तर्गत पर्यूषणपर्व में बहुत रोशनी तथा सजावट की जाती है जिसे देखनेके लिये हजारों नरनारी उन दिनों आते हैं।

लाला सन्तोषचन्दजीने एक सुन्दर वस्तु निर्मित कराकर अपना नाम अमर कर दिया है। आपने इस मन्दिरके सामनेका एक मकान धर्मशालाके लिये प्रदान किया हैं। आप कानपुरमें



सेठ सन्तोषचन्दजी भण्डारी, कानपुर



सेठ दौलतचन्दजी भण्डारी, कानपुर



श्री जैन श्वेताम्बर ग्लास टेम्पल, कानपुर



बाबू विजयचन्दजी भण्डारी S/o दौलतचन्दजी भण्डारी, कानपुर

बड़े प्रतिष्ठित तथा धार्मिक व्यक्ति हो गये हैं। आपका सं० १९८६ की फाल्गुन बदी १४ को स्वर्गवास हुआ। आपके दौलतचन्दजी नामक एक पुत्र विद्यमान हैं।

बाबू दौलतचन्दजीका जन्म सं० १९६४ की आषाढ़ सुदी १४ को हुआ। आप मिलनसार व्यक्ति हैं तथा अपने जवाहरात, क्यूरियो, पुरानी वस्तुएं, भाड़ा व लेनदेनका व्यवसाय करते हैं। आपके विजयचन्दजी, विनयचन्दजी एवं विमलचन्दजी नामक तीन पुत्र विद्यमान हैं। यह खानदान कानपुरमें प्रतिष्ठित माना जाता है।

———

भण्डारी रत्नसिंहजीका परिवार, जयपुर

इस खानदानके पूर्वजोंका मूल निवासस्थान जोधपुरका था। आप लोगोंका पूर्वकालीन इतिहास गौरव शाली तथा बहादुरी पूर्ण रहा है। आपलोगोंका श्री रतनसिहजी तथा उनके पुत्र जोरावरमलजी तकका इतिहास इस ग्रन्थके भण्डारी विभागमें पृष्ठ १४०-१४१ पर विस्तार पूर्वक दिया गया है। श्रीजोरावरमलजीके गणेशदासजी, शिवदासजी, भवानीदासजी एवं धीरजमलजी नामक चार पुत्र हुए।

धीरजमलजीका परिवारः—आपको अपने परिवारकी उच्चता व गौरवताका खयाल था। आपने अपने परिवारके सम्मानको बढ़ाया। आपके रिधमलजी नामक पुत्र हुए। श्री रिधमल जी शिक्षित व्यक्ति थे। आपकी धर्मपत्नी साहसी तथा कार्यकुशल थीं। आप बड़ी स्वस्थ, परिश्रमी तथा स्वावलम्बी स्त्री थीं। अपने पतिके स्वर्गवासी होनेके पश्चात् अनेक कष्टोंका सामना करते हुए भी अपनी जागीरीके गांव मौजा राधाकिशनपुरा की ठीक ढङ्गसे व्यवस्था करती रहीं। श्रीरिधमलजी अपने पुत्र बुधमलजीको केवल छः वर्षका छोड़कर सं० १९१६ में स्वर्गवासी हो गये।

श्रीबुधमलजीः—आपका जन्म सम्वत् १९२२ में हुआ। आप व्यापार कुशल तथा साहसी सज्जन हैं। आपने अपने हाथोंसे लाखों रुपये कमाये व अपने खानदानके सम्मानको ज्योंका त्यों बनाये रक्खा। आप सबसे पहले १४) रुपया लेकर बम्बई गये और वहांपर अपनी हिकमतसे बहुतसे रुपये कमाये। वहांसे आप उमरिया (रीवां-स्टेट) में गये तथा वहांपर अपनी व्यापार चातुरीसे बहुतसी सम्पत्ति उपार्जित की। वहांकी जनतामें आपका बहुत सम्मान है। आप उमरियामें आनरेरी मजिस्ट्रेट भी रह चुके हैं। आपने उमरियामें एक धर्म-शाला भी बनवाई। आप बड़े प्रतिष्ठित, मितव्ययी तथा स्वतन्त्र विचारोंके सज्जन हैं। उमरियाके पश्चात् आपने संवत् १९६६ में खड़गपुर (बंगाल) में अपनी एक ब्रांच खोली और वहांपर भी व्यापार शुरू किया। इसमें भी आपको सफलता मिली। आपके धनरूपमलजी, दौलतमलजी एवं प्रेमचन्दजी नामक तीनपुत्र विद्यमान हैं।

श्रीधनरूपमलजीका जन्म सं० १९४९ में हुआ। १६ वर्षकी आयुसे ही आपने व्यापारमें भाग लेना शुरू किया था। आपने योग्यता पूर्वक खड़गपुरके व्यापारको संभाला तथा वहांपर

स्थायी सम्पत्ति व प्रतिष्ठा स्थापित की। आपकी फार्म वहांपर मातवर मानी जाती है। आपके ज्ञानचन्दजी, गुमानचन्दजी, केशरीचन्दजी, विजयसिंहजी तथा नरेन्द्रसिंहजी नामक पांच पुत्र हैं।

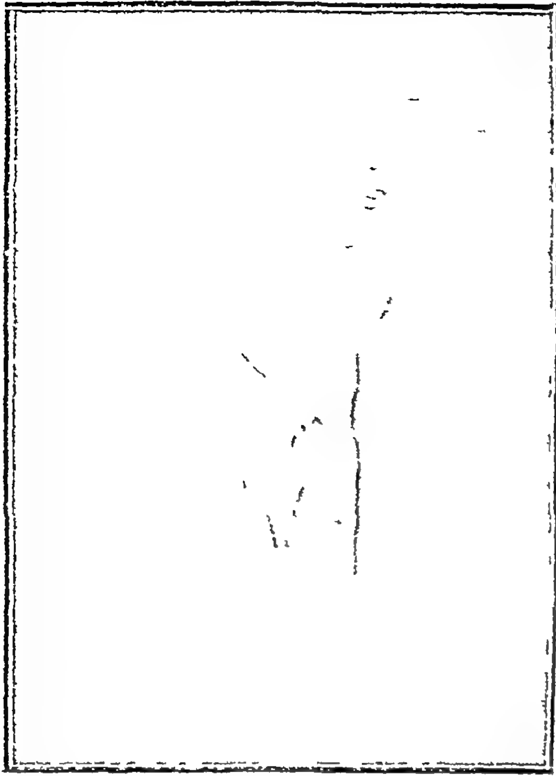
बाबू दौलतमलजीका जन्म सं० १९६४ में हुआ। आपने सन् १९३०में एल० एल० बी० व सन् १९३१ में एम० ए० पास किया। आप उत्साही मिलनसार तथा शिक्षित सज्जन हैं। आप वर्त्तमानमें जयपुरमें सफलता पूर्वक वकालत कर रहे हैं। आपके धीरेन्द्र सिंहजी नामक एक पुत्र विद्यमान हैं। बाबू प्रेमचन्दजीका जन्म सं० १९७१ में हुआ। आप बी० ए० में पढ़ रहे हैं। आप भी शिक्षित युवक हैं। आपके सुरेन्द्रसिंहजी नामक एक पुत्र हैं। बाबू ज्ञानचन्दजी मेट्रिकतक पढ़कर खड़गपुर फर्मके व्यापारमें योग दे रहे हैं।

जयपुर, खड़गपुर, व उमरियामें आप लोगोंका खानदान प्रतिष्ठित समझा जाता है। आपलोग श्री जै० श्वे० मन्दिर आम्नायको माननेवाले हैं।

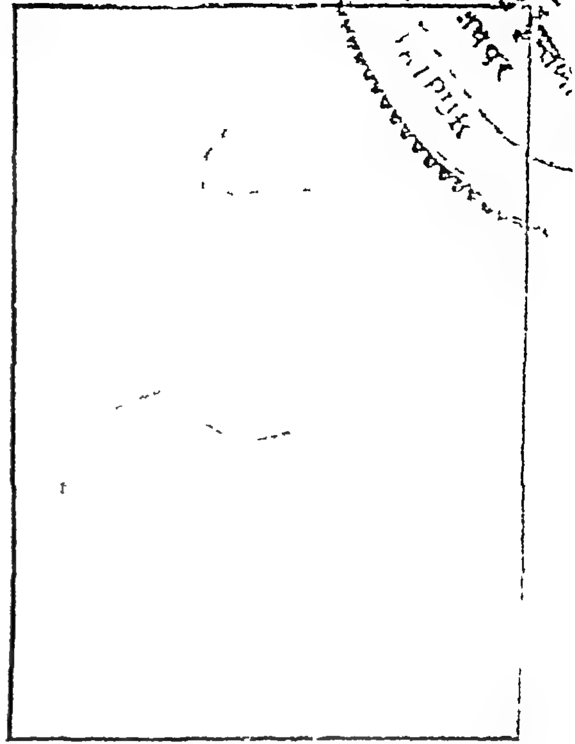
सेठ फतेमलजी श्रीमलजी भण्डारी मूथा, गुलेदगुड्ड

इस प्रतिष्ठित परिवारके मालिकोंका मूल निवासस्थान पीपाड़ (मारवाड़) है। वहाँ उस परिवारके पूर्वज सेठ फतेमलजी निवास करते थे। सेठ फतेमलजीके श्रीमलजी नामक एक पुत्र हुए। सेठ श्रीमलजी व्यापारके लिये मारवाड़से विदा हुए। अनेकों प्रकारकी कठिनाइयां उठाते हुए केवल २५ सालकी वयमें आप दक्षिण प्रान्तके गुलेदगुड्ड नामक स्थानमें आये। यहां आकर आपने कपड़ेका व्यापार आरम्भ किया। आपने बड़े परिश्रमपूर्वक अपनी बुद्धिमानी तथा होशियारीके बलपर अच्छी सम्पत्ति उपार्जित की। आपने अपने व्यापारकी नींवको जमाकर दुकानकी मान प्रतिष्ठाको बढ़ाया। व्यापारके साथ-साथ आप शास्त्रोंके पठन-पाठन व श्रवणमें बहुत भाग लेते थे। शास्त्रोंकी जानकारी आपको अच्छी थी। आप गुलेद गुड्डके व्यापारिक समाजमें गण्यमान्य तथा सम्माननीय पुरुष थे। यहांकी म्युनिसिपल कमेटीने मेम्बर निर्वाचित कर आपका सम्मान किया था। हरएक धार्मिक कामोंमें आप आगे रहते थे। इस प्रकार प्रतिष्ठापूर्वक जीवन बिताकर सेठ श्रीमलजी संवत् १९९२ की फागुन सुदी ११ को ५५ सालकी वयमें स्वर्गवासी हुए। आपके कोई संतान नहीं थी, अतएव आपने बेलापुरसे सेठ नेमीचन्दजी मूथाके पुत्र सेठ लालचन्दजीको संवत् १९६६ में दत्तक लिया।

सेठ लालचन्दजी—आपका जन्म संवत् १९५३ की पौस सुदी १२ को बेलापुरमें हुआ था। यहां आकर आपने अपने पिताजी द्वारा स्थापित व्यापारको भली प्रकार सम्भाल लिया तथा उसे बढ़ाकर अपने कुटुम्बके मान व प्रतिष्ठाको उज्ज्वल किया। आपने अपने पिताजीके स्मारकस्वरूप श्मशान भूमिमें ३ हजार रुपयोंकी लागतसे एक धर्मशाला बनवाई। संवत् १९९२ में अपने पिताजीके पश्चात् आप स्थानीय म्युनिसिपैलेटीमें मेम्बर निर्वाचित



श्री चुन्नीलालजी नेमीचन्दजी सँखलेचा,
बी ए एल एल बी, अ[illegible]



स्व० सेठ श्रीमलजी मूथा [illegible] ([illegible])

हुए, तबसे इस पदपर अभीतक आप हैं। आपके कार्यों से प्रसन्न होकर संवत् १९८८ से सरकारने आपको आनरेरी मजिस्ट्रेटका सम्मान प्रदान किया है। अभी संवत् १९९२ के आसोज मासमे यहांकी म्युनिसिपैलेटीने अपना प्रेसिडेंट बनाकर आपकी उचित कदर की है। आपने यहांके अस्पतालमें ११००) की लागतसे एक वार्ड बनवाकर जनताको विशेष सुविधा पहुचाई है। इस वार्डका उद्घाटन बीजापुरके कलक्टर श्री मिरचंदानी साहबके हाथोंसे १५-१२-३५ को हुआ। शिक्षाके कामोंमें आप दिलचस्पीके साथ सहायता देते रहते हैं। पाथर्डी जैन गुरुकुलको आप १० सालोंसे २५१) दे रहे हैं।

सेठ लालचन्दजीकी माताजी (सेठ श्रीमलजीकी धर्मपत्नी) की रुचि भी धार्मिक कार्यों की ओर बहुत है। आप भी अपने पतिदेवकी रुचिके अनुसार ही शिक्षाप्रचारके कामोंमें सहायताएँ देती रहती हैं। आपने श्री जैनरत्न पुस्तकालय सिंहपोल—जोधपुरको १ हजार रुपयोंकी सहायता दी है। इसी प्रकार किशनगढ़की जैन सागर पाठशाला, बड़लूकी जैन पाठशाला व पीपाड़की कन्या पाठशालाओंमें बंधी हुई वार्षिक सहायता देते हैं।

सेठ लालचन्दजीका स्वभाव बड़ा सरल व अभिमानरहित है। आप इतने मिलनसार महानुभाव हैं कि सम्पत्तिका कुछ भी गरूर आपपर विदित नहीं होता। महाराष्ट्र प्रान्तके जैन समाजमें आप नामी महानुभाव हैं। आपके पुत्र श्री देवीचन्दजी अभी शिशु हैं। इस समय आपके यहां सेठ फतेमल श्रीमलके नामसे गुलेदगुड्डमें साहुकारी व्याज तथा खण, साड़ी, चोली आदि कपड़ेका व्यापार होता है। गुलेदगुड्डके आप प्रधान धनिक है। आपका परिवार जैन श्वे० स्था० आम्नाय को माननेवाला है।

सरदार उत्तमचन्दजी भंडारी, पूना

इस परिवारका मूल निवासस्थान पीपाड़ (मारवाड़) है। वहांसे ३-४ पीढ़ी पूर्व यह कुटुम्ब व्यापारके लिये दक्षिण प्रान्तमें आया। इस परिवारके पूर्वज सेठ सरदारमलजी दौंडके पास पेड़गाँव नामक स्थानपर लेनदेन कृषिका कार्य्य करते थे। इनके पुत्र तुलसीरामजी भंडारी भी पेड़गाँवमें यही कार्य्य करते रहे। आपके उत्तमचन्दजी तथा फकीरचन्दजी नामक २ पुत्र हुए।

श्री उत्तमचन्दजी भंडारीका जन्म संवत् १९४५ में हुआ। अपने पिताजीके स्वर्गवासके समय आप केवल १५ सालके थे। आपकी आरम्भिक स्थिति बहुत साधारण थी, लेकिन आप होनहार तथा होशियार प्रतीत होते थे। लगभग ३० साल पूर्व आप पेडगाँवसे पूना आ गये, तथा वहां गल्लेका व्यापार आरम्भ किया। युरोपीय युद्धके समय आपको व्यापारमें अच्छी सफलता प्राप्त हुई, जिससे आपके सम्मान तथा सम्पत्तिमें विशेष उन्नति हुई। आपकी व्यापारिक चतुराई एवं मिलनसारीके उत्तम स्वभावके कारण आप व्यापारिक समाजमें "सरदार' के नामसे सम्बोधित किये जाने लगे। सन् १९२१ में आपने पूनसीने देवसी नामक

स्थापित की तथा उसके आप भागीदार हुए। पश्चात् आपने देवसी गंगाधर फर्म भागीदारी रूपमें स्थापन किया। एवं इन फर्मोंके व्यापारको अच्छा उत्तेजन दिया। तत्पश्चात् आपने ज्योतिप्रसाद दौलतराम फर्मकी भागीदारीमें व्यापार प्रारंभ करवाया एवं इस फर्मके व्यापारको भी आपके हाथोंसे अच्छा उत्तेजन मिला। वर्त्तमानमें आप इसी फर्मका संचालन करते हैं तथा पूनाके गल्लेके व्यापारियोंमें समझदार तथा वजनदार व्यक्ति माने जाते हैं। इस समय आप ग्रेन मर्चेंट एसोशियेसन पूनाके वायस प्रेसिडेंट तथा कोर्टमें सेशन ज्यूररके पदसे सम्मानित हैं। कई स्थानोंसे आपका यरोदा, थाना तथा वीजापुर आदि जेलोंकी कंट्राक्टिंगका काम होता था। इधर ४ सालोंसे आपने वीसापुर (अहमदनगर) जेलके कंट्राक्टिंगका काम आरंभ किया एवं इस समय इसका संचालन आपके पुत्र श्री वावूलालजी भंडारी करते हैं। श्री रिखब-दासजी उर्फ वावूलालजी भंडारीका जन्म मार्च सन् १९१३ में हुआ। आपने मेट्रिकतक अध्य-यन किया है। आप बड़े सुशील तथा होनहार युवक हैं तथा आपने कंट्राक्टिंग कार्य्यको बड़ी तत्परतासे सम्भालते हैं।

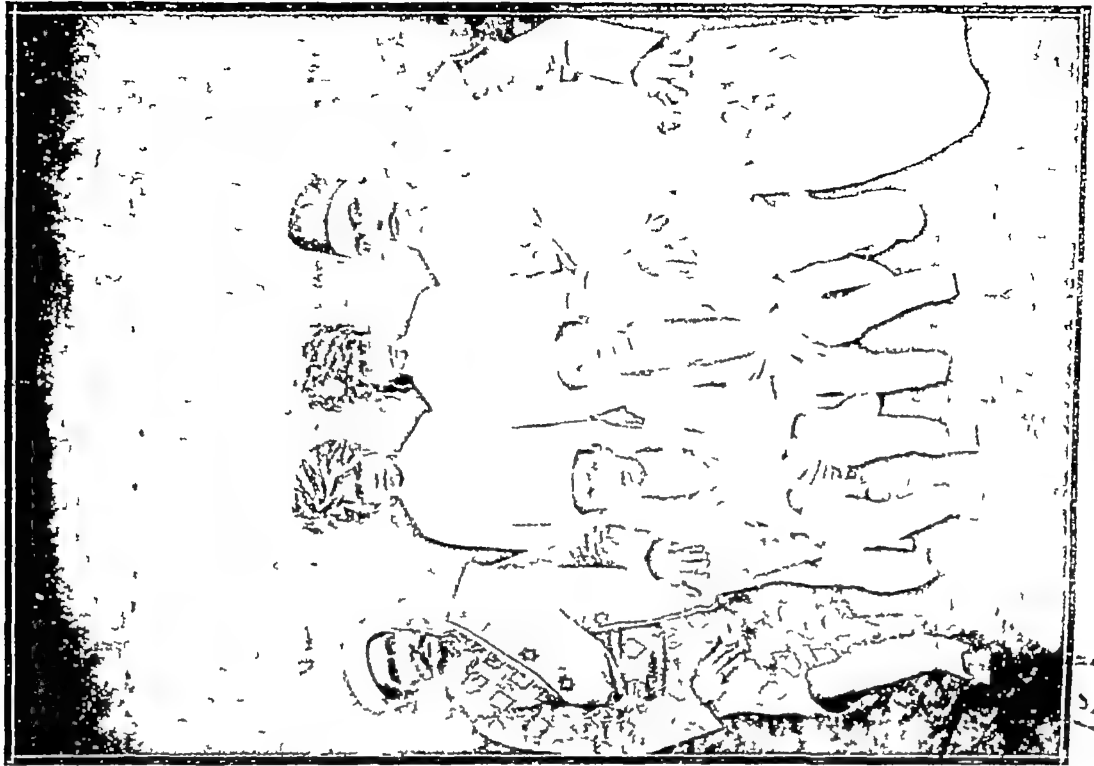
भंसाली

लाला जटमलजी भंसालीका खानदान, देहली

इस खानदानवालोंका मूल निवास स्थान नागोर (मारवाड़) का था। आपलोग भंसाली गौत्रके श्री जैन श्वे० मं० मार्गीय सज्जन हैं। यह परिवार करीब २५० वर्षों से देहलीमें निवास कर रहा है। इस परिवारमें लाला जटमलजी हुये। आपके नूनकरणजी एवं नूनकरणजीके शुभकरणजी तथा एक और इस प्रकार दो पुत्र हुए। इनमें दूसरे पुत्रका परिवार यहांसे जय-पुर चला गया। लाला शुभकरणदासजी तक आपलोग जवाहरातका व्यापार करते रहे।

लाला शुभकरणदासजी—आप बड़े सच बोलनेवाले व धार्मिक व्यक्ति हो गये हैं। आपने नौघरेके मन्दिरमें वास्पूत स्वामीजी की मूर्त्ति सं० १८८७ की माघ सुदी ५ को प्रतिष्ठित करवाई। ऐसा कहा जाता है कि एक दिन होलीके दिनोंमें आपके द्वारा एक मुसलमानका खून हो गया था। इस वातकी वादशाहसे जिक्र करके आपने इसका पश्चाताप करना चाहा। तब बादशाहकी मरजीसे आपने माली वाड़ में अपने मकानके सामने एक मसजिद बनवाई। आपके मथुरादासजी, गंगादासजी, कन्हैयालालजी एवं खेमराजजी नामक चार पुत्र हुए।

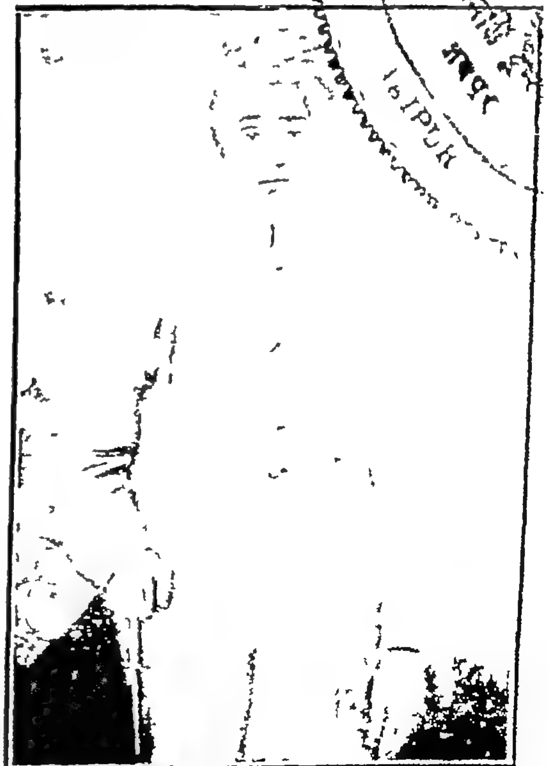
लाला गङ्गादासजीका खानदान—लाला गंगादासजी व्यापार कुशल व्यक्ति थे। आपने सबसे पहले अपने फार्मपर ठप्पेका व्यापार शुरू किया जिसमें आपको बहुत सफलता प्राप्त हुई। आपने अपने इस व्यवसायको इतना बढ़ाया कि आजतक आपके वंशज ठप्पेवालेके नामसे मशहूर



बाई ओरसे—प्रथम लाला मोतीलालजी भंसाली अपने पुत्रों सहित
चौथे लाला बन्नूमलजी भंसाली अपने पुत्रों सहित



लाला मुकुन्दलालजी भंसाली, देहली



बा० कुंदनमलजी S/o सेठ फत्तूरचन्दजी बाठोवाल, पाली

हैं। आप धार्मिक वृत्तिवाले व्यक्ति थ। आपने सिद्धाचलजी आदि तीर्थ स्थानोंकी यात्रा की थी। आपके जिम्मे नौघरेके मन्दिरके भण्डार की व्यवस्थाका कार्य भी रहा था व आपके पुत्र लाला चुन्नीलालजीके पास चिरेखानेके मन्दिरके भण्डारका कार्य्य रहा। उसके पश्चात् आपने उक्त कार्य्य अपने भतीजे लाला माठूमलजीके सुपुर्द किया। लाला चुन्नीलालजीका जन्म सं० १८८६ के मगसर सुद १ को हुआ। आपने अपने ठप्पेके व्यापारको बढ़ाया तथा देहलीकी ओसवाल समाजमें अपनी प्रतिष्ठा स्थापित की। आप उस समय ठप्पेके काममें प्रसिद्ध व्यक्ति हो गए हैं। आपके हीरालालजी नामक एक पुत्र हुये।

लाला हीरालालजीका जन्म सं० १६०७ में हुआ। आप भी अपने ठप्पेके व्यापारको करते रहे। आपका स्वर्गवास सं० १६६७ की चैत वदी १ को हुआ। आपके मोतीलालजी, जवाहरलालजी, वब्बूमलजी, पन्नालालजी एवं छोटेलालजी नामक पांच पुत्र हुए। इनमें जवाहरमलजी तथा छोटेलालजीका जन्म क्रमशः सं० १६४६, १६५२ तथा १६५६ का व स्वर्गवास सं० १६५८ की चैत सुदी नवमी, १६७० की आसोज बदी ११ तथा १६६५ की फाल्गुन ५ को हुआ।

लाला मोतीलालजीका जन्म सं० १६४३ की आषाढ़ वदी को हुआ। आप मिलनसार तथा अपने फार्मके व्यापारके प्रधान संचालक हैं। आपने अपने फार्मपर गोटेका व्यापार शुरू किया है। आपके रतनचन्दजी, नेमचन्दजी श्रीचन्दजी एवं विजयचन्दजी नामक चार पुत्र हुए। इनमें रतनचन्दजीका आसोज सुदी ११ सं० १६७१ को स्वर्गवास हो गया। लाला बब्बूमलजी का जन्म सं० १६४८ मे हुआ। आप भी मिलनसार तथा कार्य्यकुशल व्यक्ति हैं। वर्त्तमानमें आप मेसर्स मोतीराम नरसिंहदासके नामसे सूरतवालोंके साझेमें गोटे वगैरहका व्यापार करते हैं। आपके कुन्दनलालजी, इन्द्रचन्द्रजी एवं केशरीचन्दजी नामक तीन पुत्र हैं जिनमें कुन्दनलालजी तथा केशरीचन्दजी गुजर गए है। लाला मोतीलालजी तथा बब्बूलालजीने बहुतसी यात्रा भी की हैं।

लाला कन्हैयालालजीका खानदान :—लाला कन्हैयालालजीने अपने यहांपर गोटेका व्यापार सं० १६१० से बहुत बड़े स्केल पर शुरू किया जिसमें आपको बहुत सफलता मिली। आपका दूसरा नाम कन्नूजी था तथा उस समय आप कन्नूजी किनारी वालेके नामसे मशहूर थे। आपके नामपर मेड़तासे गुलाबसिंहजी गोद आये। आपका जन्म संवत १६०३ में हुआ। आपने भी गोटेका व्यापार किया। आपका स्वर्गवास सं० १६३३ में हुआ। आपके माठूमलजी नामक एक पुत्र विद्यमान हैं।

लाला माठूमलजी :—आपका जन्म सं० १६३१ की कार्तिक सुदी १ को हुआ। आप मिलनसार एवं अनुभवी सज्जन हैं। आपने अपने गोटे के व्यापारको विशेष तरक्की पर पहुचाया। वर्तमानमें आपकी फैक्टरी पर मे० कन्नूजी माठूमल एण्ड सन्स नाम पड़ता है। आपने इसके पश्चात् सन् १६०८ में आर्ट प्रिंटिंग वर्क्सके नामसे एक प्रेस भी खोला था। इसी प्रेसमें दिल्ली कैपिटल डायरेक्टरी (Delhi Capital Directory) भी छपी थी। आपके

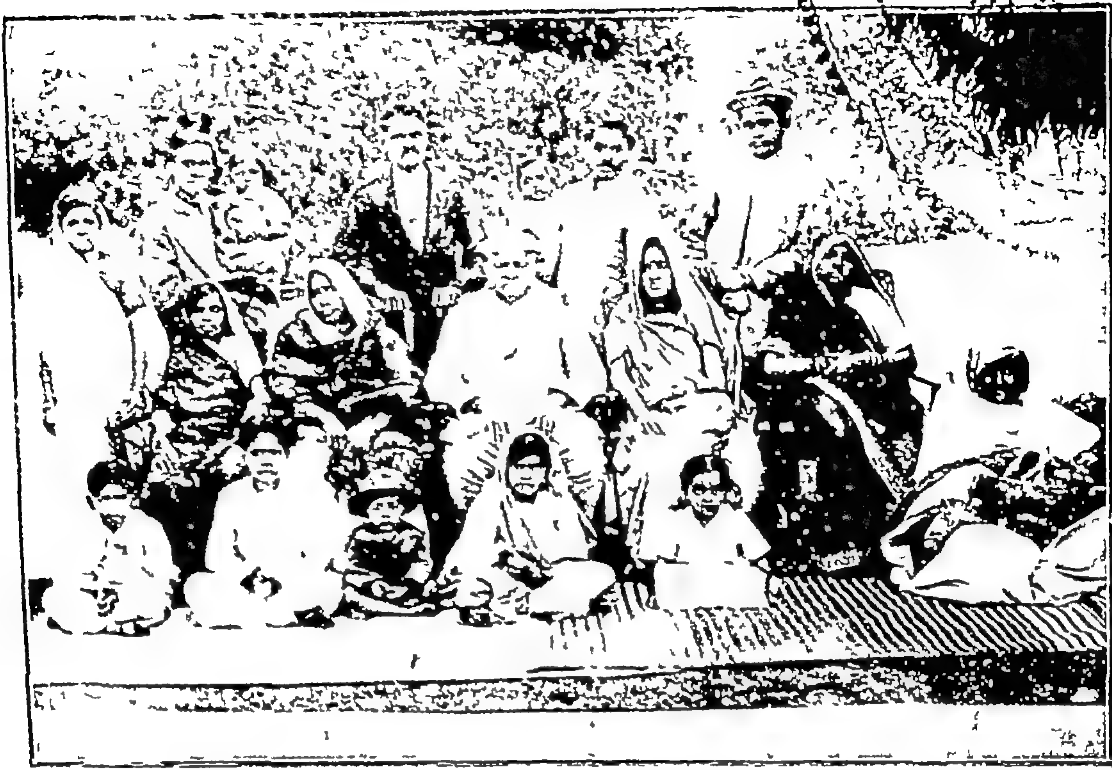
यहांसे हिन्दी समाचार नामक एक साप्ताहिक पत्र भी निकाला गया था जिससे राजनैतिक जागृति करनेमें बहुत सहायता देशको मिला करती थी। कुछ वर्ष पश्चात् आपको गवर्मेन्टकी क्रूर दृष्टि होनेके कारण अपना अखबार तथा छापाखाना भी बन्द कर देना पड़ा।

आपने सन् १९१४ के महायुद्धके समय अपने यहांपर जर्मनीके मुकाबिलेका कलाबत्तू बनाया था। सन् १९१६ की बदायूं प्रदर्शनीमें इसके लिये आपको एक फर्स्ट क्लास स्वर्ण-पदक प्रदान किया गया था। उसी समय आपने अपने कलाबत्तू व गोटेके व्यवसायको विशेष रूपसे चमकानेके लिये अपनी एक शाखा बंगलोरमें भी खोली थी। देहलीके अन्तर्गत कला-बत्तूके व्यापारकी इतनी तरक्कीका श्रेय आपहीको है। मैसूर राज्यसे भी आपको एक रौप्य-पदक प्रदान किया गया है।

आपके विचार सुधरे हुए एवं धार्मिक भाव उदार हैं। आपके जिम्मे चिरेखानेके श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथजीके मन्दिर तथा कुतुबके पास की जिनचन्द्रसूरिजीकी दादाबाड़ीके के समाधि स्थानकी व्यवस्थाका कार्य भी है। इन स्थानोंकी आपने सफलता पूर्वक व्यवस्था की है। आप दो तीन बार देहलीसे जै० श्वे० कान्फ्रेन्समें डेलीगेट बनाकर भी भेजे गये थे। कलकत्ता गवर्नरके सुपस्थानेके वास्ते आनेके समय आप देहली प्रान्तसे प्रतिनिधिके रूपमें भेजे गये थे जहांपर आपने रा० ब० बद्रीदासजी जौहरीके साथ काम किया। इसी तरह कई संस्थाओंमें आपने कार्य किया है। आपके धनपतसिंहजी, रामचन्द्रजी, लछमणसिंहजी एवं नरपतसिंहजी नामक चार पुत्र हैं।

लाला धनपतसिंहजीका जन्म सं० १९५३ की माह वदी ४ को हुआ। आप मशीनके काम में होशियार तथा अच्छे व्यवस्थापक हैं। आप वर्तमानमें तीन सालोंसे देहली क्लाथ एण्ड जनरल मिल्स लि० में असिस्टंट वीविंग मास्टर हैं। सन् १९३४ में खोली गई इसी मीलकी लायलपुरकी शाखाकी मशीनरीको जमानेके तथा पंजाब गवर्नर द्वारा उद्घाटित करनेकी सारी व्यवस्था आपहीके सुपुर्द थी जिसे आपने सफलतापूर्वक पूरा किया। आपने दो पुस्तकें भी लिखी हैं। आपकी धर्मपत्नी दिल्ली प्रांतमें वैद्यक परीक्षामें सर्वप्रथम पास हुई। मद्रास वैदिक यु० से आपका इसके उपलक्षमें एक स्वर्णपदक भी प्राप्त हुआ है। आपके सरदार सिंहजी, श्रीपतसिंहजी एवं महेन्द्रसिंहजी नामक तीन पुत्र हैं जिनमें प्रथम व्यापारमें भाग लेते हैं। लाला रामचन्द्रजी एवं लछमण सिंहजी दोनोंका जन्म सं० १९६७ की फाल्गुन सुदी ४ को हुआ। आप दोनों इस समय व्यापारमें भाग लेते हैं।

लाला माठूमलजीकी पुत्री कुमारी मीनादेवी तीक्ष्णबुद्धिवाली थीं। आप मिडिल परीक्षामें सारी पंजाब यु० में प्रथम पास हुई थीं जिसके फलस्वरूप आपको स्कूलकी ओरसे एक स्वर्णपदक भी मिला था। मगर आप १७ सालकी आयुमें स्वर्गवासी हो गयीं। इसी प्रकार श्रीमती धनवती देवी (माठूमलजीकी द्वितीय पुत्री) को भी अपनी तीक्ष्ण बुद्धिके कारण एक स्वर्णपदक प्राप्त हुआ था।



लाला माठूमलजी भंसाली अपनी पत्नी, पुत्र, पुत्रवधुओं एवं पौत्रों सहित, देहली



श्रीमती धन्नीदेवी D/o माठूमलजी भंसाली, देहली



कुमारी मीनादेवी D/o माठूमलजी भंसाली,

इस खानदान वालोंने अपने यहांपर पर्दाप्रथाको बिलकुल तोड़ दिया है।

लाला मुकुन्दलालजी प्यारेलालजी भंसालीका खानदान, देहली

इस खानदानवाले मारवाड़ निवासी भंसाली गौत्रके श्री जै० श्वे० स्था० संप्रदायको माननेवाले हैं। यह परिवार बहुत सालोंसे देहलीमें ही निवास कर रहा है। इस खानदानमें लाला प्यारेलालजीकी धर्मपत्नी मन्दिर मार्गीय थीं। इस परिवारमें कस्तूरचन्दजी हुए। आपके लक्ष्मीनारायणजी तथा लक्ष्मीनारायणजीके मेहरचन्दजी नामक पुत्र हुए। आप सब लोग गोटा व टोपीका व्यापार करते रहे।

लाला मेहरचन्दजीः—आप व्यापार कुशल तथा मिलनसार व्यक्ति हो गये हैं। आप अपने फर्म पर गोटे व टोपीका व्यापार करते रहे तथा इसमें बहुत सफलता प्राप्त की। आप देहलीकी ओसवाल तथा स्थानकवासी जैन समाजमें प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। आप टोपीवालोंके नामसे मशहूर थे। आपके मोहनलालजी, छुट्टनलालजी, प्यारेलालजी तथा मोतीलालजी नामक चार पुत्र हुए।

लाला प्यारेलालजीका परिवारः—आपभी गोटेका व्यापार करते रहे। आपका स्वर्गवास १९।२० वर्षकी छोटी ऊमरमें ही हो गया है। आपके निःसन्तान गुजर जानेपर आपके नामपर सेठ समीरमल पारखके पुत्र मुकुन्दलालजी पालीसे गोद आये।

लाला मुकुन्दलालजीका जन्म संवत १९६४ में हुआ। आप योग्य देशभक्त, उत्साही तथा मिलनसार व्यक्ति हैं। आपने सन् १९२१ के असहयोग आन्दोलनमें भी भाग लिया था। इसके पश्चात् सन् १९३१ के आन्दोलनमें आपने बहुत भाग लिया जिसके कारण आप तीन बार जेल हो आये हैं। आप सार्वजनिक स्पीरीटवाले युवक हैं। आपने सन् १९३० में एक राष्ट्रीय संघ स्थापित किया था जिसमें आपके खर्चेसे ५० वालंटीयर तयार किये गये थे। उस संस्थाका काम विदेशी नकली घी पर पिकेटिङ्ग करना था। इसी प्रकार कांग्रेसमें गरमा गरम भाग लेने पर आपको अनेकों कष्टोंका सामना करना पड़ा था। आप मजूर एवं गरीब जनताके शुभचिन्तक तथा सार्वजनिक कामोंमें उत्साहसे भाग लेनेवाले युवक हैं। कई कांग्रेस अधिवेशनोंपर आपको देशके पूज्य नेताओंके साथ रहनेका अवसर भी मिला है। आप मजदूर संघके आर्गेनाइजर हैं।

आपने अपने हाथोंसे जवाहरातके व्यापारमें काफी सम्पत्ति कमाई। आपने अपनी स्वर्गीया माताजीके स्मारकमें एक जवाहर लायब्रेरी स्थापित कर उसे २१ नवम्बर सन १९३५ को प्रख्यात विदूषी महिला कमलादेवी चट्टोपाध्याय द्वारा उद्घाटित करवाया। इसके अतिरिक्त नौघरेके जैन मन्दिरमें भी आपने अपनी माताजीकी यादगारमें एक वेदी बनवाई है।

आप कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टीके कोषाध्यक्ष तथा किसान संघके देहली प्रान्तके आर्गेनाइजर हैं। आपके हुकुमचन्दजी नामक एक पुत्र विद्यमान हैं।

बेंगाणी

सेठ माणिकचन्दजी बुधमलजी बेंगाणी, दिनाजपुर

इस खानदानके सज्जनोंका मूल निवास स्थान बीदासर (मारवाड़) है। बहुत पहले यह खानदान मेड़तामें निवास करता था। मेड़तासे इस खानदानके पूर्व पुरुष नागौर डिडवाना होते हुए बीदासरमें आकर निवास करने लगे। तभीसे करीब ३०० वर्षोंसे आपलोग बीदासर-में रह रहे हैं। आपके रहनेका मकान भी ३०० वर्ष पूर्वका बना हुआ है।

इस खानदानमें आगे चलकर सेठ जेसराजजी और बुद्धसिंहजी हुए। आप दोनों बन्धु देशसे करीब १०० वर्ष पहले व्यापार निमित्त कलकत्ते गये और यहांपर सराफीका काम-शुरू किया। आगे जाकर आप लोगोंका व्यवसाय अलग हो गया।

सेठ जेसराजजीः—आप बड़े उद्योगी तथा साहसी व्यक्ति थे। आपके आसकरणजी नामक एक पुत्र हुए। आपने अपनी दूकानपर कुस्टेका व्यवसाय चालू किया। आपका सवत् १६१८ स्वर्गवास हो गया।

सेठ आसकरणजीके इन्द्रचन्द्रजी नामक एक पुत्र हुए। आपका संवत् १६०५ में जन्म हुआ। आपने भी अपने व्यापारको बढ़ाया व कलकत्तेमें अपनी फार्मपर कुस्टेके व्यापारको प्रारम्भ किया। संवत् १६४८ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके मन्नालालजी, प्रतापमलजी एवं उदयचंदजी नामक तीन पुत्र हैं। आप तीनों बन्धुओंका जन्म क्रमशः संवत् १६२६,१६३५ तथा १६४० में हुआ। आप सब बन्धु बड़े समझदार तथा व्यापार कुशल व्यक्ति हैं। इधर चार सालोंसे आपलोग कपड़ेका व्यवसाय कर रहे हैं। सेठ प्रतापमलजीके सोहनलालजी एवं मांगीलालजी नामक दो पुत्र हैं। आपलोग भी दूकानके व्यापारमें भाग लेते है। बाबू सोहनलालजीके श्री प्रेमचन्दजी, माणिकचंदजी, बुधमलजी, तथा मंगलचन्दजी नामक चार पुत्र हैं, इनमेंसे बड़े व्यापारमें भाग लेते व शेष पढ़ते हैं

आप लोगोंका दीनाजपुरमें मे० माणकचन्द बुधमलके नामसे कपड़ेका एवं कलकत्तेमें मे० इन्द्रचन्द्र बुधमलके नामसे आर्मेनियम स्ट्रीटमें आढ़तका कामकाज होता है। बीदासरमें आप लोगोंका खानदान प्रतिष्ठित समझा जाता है।

चौधरी

चौधरी दीपचन्दजी हंसराजजीका खानदान, नीमच सिटी

इस खानदानके सज्जनोंका मूल निवासस्थान मांडू (सेन्ट्रल इंडिया) का था। आप लोग धूपिया चौधरी गौत्रीय श्री जैन श्वेताम्बर स्थानकवासी आम्नायके माननेवाले हैं। आप मांडूसे नीमच आकर बसे।

इस खानदानमें चौधरी उदयभानजीके पुत्र सांवलदासजी हुए। आपके दीपचन्दजी नामक एक पुत्र हुए। आप बड़े प्रभावशाली व्यक्ति हो गये हैं। आपके खानदानमें प्रारम्भसे ही जमीदारी तथा चोधरायत का कामकाज होता रहा है। आपने तथा आपके पुत्र हंसराजजीने नीमच सिटीके अन्दर सम्वत १८७० में एक सुन्दर श्री शांतीनाथजीका मन्दिर बनाया जिसमें करीब १॥ लाख रुपया खर्च हुआ होगा। श्री हंसराजजीके हुक्मीचन्दजी, पूरनचन्दजी नामक दो पुत्र हुए।

चौधरी हुक्मीचन्दजी—आपका जन्म संवत् १८५० के करीब हुआ। आप इस खान्दानमें प्रसिद्ध, वजनदार, साहसी तथा आत्मसम्मानवाले व्यक्ति थे। आपने मेवाड़ राज्यमें श्री महाराणा सरूपसिंहजीके वक्तमें सरूपगंज, गारियावास, चोहानखेड़ा आदि सात गांव बसाये तथा नीमचसे लोगोंको लेजाकर अपने खर्चसे गाँव आवाद किये। कुछ समय पश्चात् वहांके हाकिम और आपमें मनमुटाव होनेके कारण उदयपुरके महाराणा साहबने आपको उन सात गाँवोंकी जागीरदारीके बजाय जमीदारी रखनेका हुक्म दिया। तब इसे आप अपने आत्मा सम्मानके खिलाफ समझकर सब छोड़कर नीमच चले आये व अपना कार्य सम्हालने लगे। आप मिलनसार एवं धार्मिक व्यक्ति थे। आपका संवत् १९१२ में स्वर्गवास हुआ। आपके सुखलालजी, हीरालालजी, टेकचन्दजी, माणकचन्दजी, काशीरामजी तथा जोरावरसिंहजी नामक छः पुत्र हुए।

सुखलालजी चौधरी बड़े साहसी व्यक्ति थे। एक समय आपने उदयपुर स्टेटके खजाने को भीलवाड़ेकी ओरसे उदयपुर जाते समय डाकुओं द्वारा लूट जानेसे बचानेमें सहायता पहुंचाई थी। उस समय डाकू गिरफतार भी कर लिये गये थे। इसपर उदयपुरके महाराणा साहबने प्रसन्न होकर आपको भीलवाड़ा जिलेकी हाकिमी इनायत की। आपके हजारीमलजी तथा अजीतसिंहजी नामक दो पुत्र हुए।

हीरालालजी बड़े सीधे तथा मिलनसार थे। आपके हरकचन्दजी व नथमलजी नामक दो पुत्र हुए।

चौधरी टेकचन्दजीका परिवार :—आपका जन्म संवत् १८८७ का था। आप प्रभावशाली एवं माननीय व्यक्ति हो गये हैं। आपने अपने परिवारके सम्मानको बढ़ाया तथा ग्वालियर दरबारमें नजर व निछरावलका स्थान प्राप्त किया। आज भी आपके वंशज हुकमचन्द

टेकचन्दके नामसे मशहूर हैं। आपने अपनी व्यापार चातुरीसे सम्पत्ति भी बहुत उपार्जित की। आपका स्वर्गवास सं० १९४२ में हुआ। आपके जालिमसिंहजी, पन्नालालजी तथा नाहरसिंहजी नामक तीन पुत्र हुए।

चौधरी जालमसिंहजीका जन्म सं० १९१० का था। आप अपनी जमीदारी एवं साहुकारीके कार्य्योंको संभालते हुए सं० १९८१ में स्वर्गवासी हुए। आपके केसरीसिंहजी नामक एक पुत्र हुए।

श्रीकेसरीसिंहजीका जन्म सं० १९३६ में हुआ। आपने अपने पिताजीकी स्मृतिमें यहां पर एक वाग, छत्री व वावड़ी वनवाई। वर्तमानमें आप ही अपनी जमीदारी व साहूकारीके कामोंको योग्यता पूर्वक सम्भालते हैं।

श्रीपन्नालालजीका परिवार—आपका जन्म सं० १९२१ में हुआ। आप भी वड़े प्रतिष्ठित तथा अनुभवी व्यक्ति हैं। आपने नीमचमें १६ वर्ष तक सरपंची (ग्वालियर स्टेट) की ओरसे की। आप वर्तमानमें डिस्ट्रिक्ट वोर्ड, परगना वोर्ड म्युनिसिपल कमेटी, ओकाफ कमेटी, जमीदार कमेटी व प्रेसिडेंट कृषीहितकारिणी सभा नीमच व जावद तथा हुजूर दरवारमें जूडीशियन एण्ड ला में वतौर मश्वरेके मेंवर मुकर्रर हुए हैं। इन सव सेवाओंके सिलसिलेमें ग्वा० गवर्नमेंटकी ओरसे आपको कई सार्टिफिकेट्स, पोशाकें व तगमा अता हुए हैं। आपकी सलाह वजनदार व कीमती समझी जाती है। सं० १९५१ में यहां नाज की मँहगाईके समय आपने अपने धानके कोठे लोगोंके लिये खोल दिये और अपनी दरिया दिलीका परिचय दिया। इसपर दरवार ग्वालियरने खुश होकर आपको वेठ वेगार माफका परवाना हमेंशाके लिये अता किया। आपने एक समय हिन्दू मुसलिमके दंगेको बुद्धिमानीसे समझा कर वचाया था। ग्वालियर स्टेटने प्रसन्न होकर आपको मेडिल (तगमा) अता किया। आपने धार्मिक क्षेत्रमें भी करीव २५, ३० दीक्षा उत्सव कराये। यहांकी समाज तथा राज्यमें आपकी काफी प्रतिष्ठा है।

आपके श्रीमाधवसिंहजी नामक पुत्र हुए। आप वड़े अनुभवी और मिलनसार व्यक्ति हैं। आपका जन्म सं० १९३९ में हुआ। आप वर्तमानमें अपनी जमीदारीके सारे काम काज को सम्भाल रहे हैं। आपको घोड़ेपर चढ़नेका काफी शौक है। आपके पुत्र उमरावसिंहजीका जन्म सं० १९६२ में हुआ। आप सुधरे हुए खयालोंके उत्साही युवक हैं। आपहीने सर्व प्रथम नीमच सिटीमें शुद्धि कार्य्य किया है। आपको वन्दूक चलानेका शौक है। आपको इसके लिये एक चांदीका तगमा भी ग्वा० स्टेटने इनायत किया है। आपको कई सर्टिफिकेट भी मिले हैं। आपके राजेन्द्रसिंहजी एवं सत्यप्रसन्नसिंहजी नामक दो पुत्र हैं।

श्रीनाहरसिंहजीका परिवार :— आपका जन्म सं० १९३० में हुआ। आप भी परगना वोर्ड, म्यु० कमेटी आदिके मेम्वर तथा को-आपरेटिव वैंक परगना नीमचके डायरेक्टर व खजांची रहे। आप यहांके प्रतिष्ठित एवं योग्य व्यक्ति हो गये हैं। आपको ग्वा० स्टेटकी ओरसे सर्टिफिकेट एवं पोशाकें प्रदान की गई हैं। आपने अपनी जमींदारी व फर्मका काम योग्यतासे

सम्भाला। आपका स्वर्गवास सं० १६८२ की चैत्र वदी ४ को हुआ। आपके उदयसिंहजी एवं मदनसिंहजी नामक दो पुत्र हुए। इनमें उदयसिंहजीका जन्म सं० १६६४ में हुआ। आपही वर्तमानमें अपने सारे कामको सम्भाल रहे हैं। आपके प्रतापसिंहजी एवं लक्ष्मणसिंहजी नामक दो पुत्र हैं।

श्रीमाणिकचन्दजीका परिवारः—आपका जन्म सं० १८६५ एवं स्वर्गवास सं० १६६३ में हो गया। आपके राजमलजी तथा रतनलालजी नामक दो पुत्र हुए। राजमलजीके पुत्र मनोहरसिंहजी नीमच (ग्वा० स्टेट) में वकालत कर रहे हैं।

श्रीरतनलालजीका जन्म सं० १६४२ में हुआ। आप जमींदारी व साहूकारीके कामको सम्भालते रहे। आपके सज्जनसिंहजी, भूपालसिंहजी एवं फतेसिंहजी नामक तीन पुत्र हैं। श्री सज्जनसिंहजी शिक्षित एवं मिलनसार व्यक्ति हैं। आपको स्थानकवासी कान्फ्रेन्ससे "जैन विशारद" की पदवी प्राप्त हुई है। आप जैन पथ प्रदर्शक आगरा नामक साप्ताहिक पत्रके सम्पादक रहे। तदनंतर आपने बाम्बे हाईकोर्टसे एडवोकेटकी उच्च डिग्री प्राप्त की। आप ग्वालियर स्टेटमें वकालत पहिली जुलाईसे शुरु करेंगे। आपके यशवन्तसिंहजी नामक एक पुत्र हैं। चौधरी काशीरामजीके परिवारमें इस समयमें श्रीमन्नालालजी हैं। आप कपड़ेके व्यापारी हैं। चौधरी जोरावरसिंहजीका कम उम्रमें देहान्त हो गया था।

यह खानदान यहांकी ओसवाल समाजमें प्रतिष्ठित तथा मातबर माना जाता है। इस खानदान वाले स्व० पितामह चौधरी हुकमीचन्दजीके स्मारकमें "हुकमीचन्द जैन भवन" को सुन्दर रूपमें निर्मित करा रहे हैं। आप लोगोंके यहां पर सन् १६१६ में श्रीमंत जार्ज जीयाजी-राव महाराजके जन्म उपलक्षमें जलसेमें स्वय पोलिटिकल एजण्ट मि० लुकार्ट सदर्न इण्डियाने पधार कर आपको सम्मानित किया। आपकी वर्तमानमें नीमच डिस्ट्रिक्टमें ३ गांव जागीरीमें व ३० गांव जमींदारीमें है।

दूगड़

श्री सहसकरणजी दूगड़का खानदान, दिनाजपुर

दूगड़ परिवारकी उत्पत्ति का इतिहास हम दूगड़ गौत्रमें लिख चुके हैं। दूगड़ और सूगड़ नामक दोनों बन्धुओंसे दूगड़ और सूगड गौत्रकी उत्पत्ति हुई। इन्हीं दूगड़जीके परिवारमेंसे शीतलजी नामक व्यक्ति केलगढ़ नामक स्थानपर जाकर रहे। वहांसे फिर डिडवाना आये। डिडवानासे सरदारसिंहजी राजगढ़ आये। राजगढ़से इसी परिवारके व्यक्ति सवाई सिंहजी श्रीनगर नामक स्थानपर जाकर बसे। यहांसे फिर गोमजी किशनगढ़ (राजपूताना) में निवास करने लगे। तभीसे यह खानदान किशनगढ़में निवास कर रहा है। इसी परिवारमें अजीमगंजका प्रसिद्ध दूगड़ परिवार है जिनका इतिहास दूगड़ गौत्रके प्रारम्भमें दिया गया है।

किशनगढ़मे इस खानदानमें सवाईसिंहजी और उनके पुत्र गुमानसिंहजी हुए। आप दोनों साधारण साहुकारीका काम काज करते रहे। सेठ गुमानसिंहजीके कजोड़ीमलजी और कस्तूरचन्दजी नामक दो पुत्र हुए। सेठ कस्तूरचन्दजी बड़े परिश्रमी, मेधावी एवं अध्यवसायी सज्जन हुए। आपको अजीमगंजवाले प्रतापसिंहजी अपने देशकी तरफ ले गये थे। वहांपर आपने बड़ी कोठीमें महाराजबहादुरसिंहजीके यहां मुनीमात का काम किया। कुछ समयके पश्चात् आपने मेसर्स कजोड़ीमल कस्तूरचन्दके नामसे कपड़ेका व्यापार भी प्रारम्भ किया। आपने कोठीकी मैनेजरी और अपने फर्मके व्यवसायमें बहुत तरक्की की। आपका वहांपर बहुत सम्मान रहा। आपके आसकरणजी तथा शेषकरणजी नामक दो पुत्र हुए। आसकरण-जी इस समय मे० ज्ञानचन्द पूरनचन्दके यहां मुनीम हैं। आपके अमरविजयसिंहजी, इन्द्र-विजयसिंहजी, राजविजयसिंहजी, रतनविजयसिंहजी एवं सौभाग्यविजयसिंहजी नामक पांच पुत्र हैं।

सेठ शेषकरणजी—आपका जन्म संवत् १९३५ में हुआ। आप बड़े मिलनसार, सज्जन हैं। आप आजकल महाराजबहादुरसिंहजीकी दिनाजपुर फर्मपर जमींदारीके सारे कामकाजकी मेनेजरीका काम काज करते हैं। आप स्थानीय म्युनिसीपैलिटीके २१ वर्षतक मेम्बर और डिस्ट्रिक्ट बोर्डके ६ सालतक मेम्बर रहे। इसके अतिरिक्त आप यहांकी मरचेंट एसोसियेशन-के प्रेसिडेंट व गौशालाके प्रेसिडेंण्ट हैं। आपका यहाँकी जनतामें अच्छा सम्मान है। आपकी यहांपर अच्छी जमींदारी है जिसका काम मे० सहसकरण झूमरमल श्रीचंदके नामसे होता है। आपके झूमरमलजी, सूरजमलजी एवं सोहनलालजी नामक तीन पुत्र हैं।

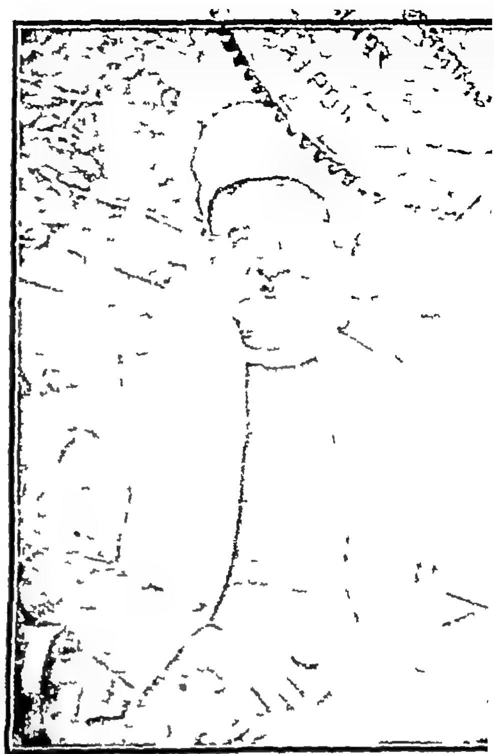
बाबू झूमरमलजीका जन्म सम्वत् १९६५ में हुआ। आप एम० ए० तक पढ़े हुए हैं और वर्त्तमानमें बालूबघाटकी महाराजबहादुरसिंहजीकी जमींदारीके मेनेजर हैं। सूरजमल-जी मेट्रिकतक पढ़े हैं और अपनी घरू जमींदारीका काम काज देखते है। इसके साथ ही आप मे० सूरजमल सोहनलाल नामक फर्मपर गनीका काम काज देखते हैं। बाबू सोहनलालजी भी अपनी जमीदारी तथा फर्मका कामकाज देखते हैं। आप तीनों बन्धु भी मिलनसार सज्जन हैं।

सेठ नानचन्दजी भगवानदासजी दूगड़, घोड़नदी

इस परिवारका प्रथम निवास गोठण (मारवाड़) था, पर वहांसे यह कुटुम्ब हरसोला (नागोरके पास) आकर निवास करने लगा। मारवाड़से लगभग १०० साल पहिले सेठ रामचन्द्रजी दूगड़ व्यापारके निमित्त घोड़नदी आये तथा अपने जातिबन्धु सेठ वाघजी दूगड़ के साथ भागीदारीमें करड़ा नामक स्थानमें लेनदेनका कारबार आरम्भ किया। सेठ वाघजी तथा उनके छोटे भाई सरूपचन्दजी घोड़नदीमें और सेठ रामचन्द्रजी करड़ामें निवास करते थे। सेठ रामचन्द्रजीके अमरचन्दजी, प्रतापमलजी, लच्छीरामजी, हमीरमलजी तथा जवाहर-



सेठ बुधमलजी भण्डारी, जयपुर



बाबू सहसकरणजी दूगड, दिनाजपुर (बंगा



सेठ अनराजजी कोचर, (अनराज नारायणदास) देहली



बाबू आसकरणजी दूगड, दिनाजपुर (बंगाल

मलजी नामक ५ पुत्र हुए। इन भाइयों में से सेठ प्रतापमलजीके जोरावरमलजी, नानचन्दजी तथा हीराचन्दजी नामक ३ पुत्र हुए।

सेठ वाघजी दूगड़के स्वर्गवासी हो जानेके वाद उनके पुत्र सेठ भगवानदासजीने अपने व्यापार तथा सम्मानको विशेष रूपसे बढ़ाया। आप घोड़नदी तथा आसपासकी जैन समाजमें प्रतिष्ठित पुरुष थे। आपका स्वर्गवास सम्वत् १९५५ में हुआ। आपके कोई पुत्र नहीं था, अतएव आपने सेठ प्रतापमलजीके विचले पुत्र सेठ नानचन्दजीको सम्वत् १९४१ मे दत्तक लिया।

सेठ नानचन्दजीका जन्म सम्वत् १९२२ में गोठणमें हुआ। आप पुराने खयालके, प्रतिष्ठित तथा समझदार सज्जन हैं। आसपासकी ओसवाल समाजमें आप गण्यमान्य व्यक्ति माने जाते हैं। आपने घोड़नदी पींजरापोलमें २१३) रुपयोंकी सहायता दी है। इसी प्रकार चिंचवड़की पाठशालामें भी सहायता की है। आप श्री अनन्दऋषिजी महाराजके शिक्षणमें ५०) मासिक सहायता देते हैं। स्थानीय म्युनिसिपैलेटी तथा पींजरापोलके प्रेसिडेंट भी आप रह चुके हैं। गराड़ाके सेठ नवलमलजी पारख ने जो २० हजार रुपयोंकी एक रकम व्याकरण शिक्षण उत्तेजनके लिये निकाली है उसके ५ ट्रस्टियोंमेंसे आप भी एक हैं। आपने उस रकमके व्याजसे १६ हजार रुपये शिक्षण कार्यमें खर्च किये हैं तथा इस समयमें और भी अच्छी उन्नति की है।

लाला हीरालालजी दूगड़का खानदान, देहली

इस खानदानके पूर्व पुरुषोंका मूल निवासस्थान लाहौरका था। आप दूगड़ गौत्रके श्री० जे० श्वे० मं० मार्गीय सज्जन हैं। इस परिवारमें लीलापतिजी हुए। आपके झुलकरणदास जी तथा इनके ताराचन्दजी नामक पुत्र हुए। भारतके ११ वे मुगल सम्राट महम्मदशाहके समय में लाला ताराचन्दजी लाहौरसे देहली आये। आपको शाही तोपे खानेसे १५) मासिक इनायत किया गया व आप शाही जौहरी मुकीम नियत किये गये। आपके नथमलजी तथा सेढ़मलजी नामक दो पुत्र हुए। शाही जवाहरातका काम नथमलजीके वशजोंके पास रहा, जिन्हें शाही तोपेखानेके १५) मासिक लागके अभीतक मिलते रहे। लाला सेढ़मलजी दलाली करते थे। आपके बख्तावरसिंहजी नामक एक पुत्र हुए।

लाला बख्तावरसिंहजीका जन्म सं० १९२२ मे हुआ। आपने दलालीकी और फिर गोट किनारीका ३० सालतक मोहकमसिंहजी वोथराके साझेमें व्यापार किया। आपके इन्द्रजीतजी, हीरालालजी तथा लक्ष्मणदासजी नामक तीन पुत्र हुए।

लाला इन्द्रजीतजीने जवाहरात व वैकिंगके व्यापारमे अपनी सम्पत्तिको बढ़ाया व स्वतंत्र रूपसे अपनी अलग दूकान करने लगे। आपके वतूमलजी तथा वतूमलजीके नामपर हीरालालजीके पुत्र प्यारेलालजी गोद आये। आपके पुत्र रामदासजीका जन्म सं० १९४७ की कार्तिक

वदी अमावस्याका है। आप वजनदार तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति है। आपने नौघरेके मन्दिरमें एक वेदी बनवाई। आपही अपने व्यापारको सञ्चालित करते हैं।

लाला हीरालालजी.—आपका जन्म सं० १८८१ की मगसर सुदी ११ को हुआ। आप जवाहरातके व्यापारमें निपुण थे। आपने अपने फार्मके जवाहरातके व्यापारको चमकाया व बहुत सी सम्पत्ति कमाई व स्थायी जायदाद बनाई। आपको कई अंग्रेज उच्च पदाधिकारियों की ओरसे सार्टिफिकेट आदि प्राप्त हुए। आप देहलीकी व्यापारिक समाजमें प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। आपका स्वभाव अच्छा व मिलनसार था। आप सं० १९५३ की वैसाख सुदी ११ को स्वर्गवासी हुए। आपके सोहनलालजी, प्यारेलालजी तथा बत्तनलालजी नामक तीन पुत्र हुए। इनमेंसे प्यारेलालजी तो इन्द्रजीतजीके नामपर गोद चले गये। सोहनलालजीने प्रयत्न करके किनारी बाजारकी धर्मशाला बनवाई तथा आजीवन इसके प्रबन्ध कर्त्ता रहे। नौघरेके जैन-मन्दिरमें सङ्गमरमरकी वासपूज्य स्वामीकी वेदी भी आपने बनवाई। आपके पुत्र नानकचन्दजीके घम्मूमलजी, खेरातीलालजी तथा रतनलालजी नामक तीन पुत्र विद्यमान हैं।

लाला बत्तनलालजीके मोतीलालजी पन्नालालजी व चुन्नीलालजी नामक तीन पुत्र हुए। मोतीलालजी सराफीका व्यापार करते हैं। आपके मन्नालालजी, चम्पालालजी, मिश्री-लालजी तथा सुन्दरलालजी नामक चार पुत्र विद्यमान हैं। लाला पन्नालालजीका जन्म सं० १९५२ की भादवा सुदी ११ का है। आप मिलनसार व्यक्ति है व अपने जवाहरातके व्यापार को सञ्चालित कर रहे हैं। आपने सम्वत १९७९ में सुधर्म जैन पुस्तकालय खोला है जिसके आजतक आप आनरेरी सेक्रेटरी व खजांची हैं। आपके पिताजीने गुणायचा की धर्मशालामें एक कोठा बनवाया हैं। लाला पन्नालालजीने कुटुम्ब सहित पञ्चमी तप भी किया है।

धाड़ीवाल

सेठ करणीदानजी चांदमलजी धाड़ीवाल का खानदान, पाली (मारवाड़)

इस खानदानवालोंका मूल निवासस्थान बीकानेरका है। आप धाड़ीवाल गौत्रके श्री जैन श्वे० स्था० सम्प्रदायको माननेवाले हैं। इस परिवारमें सेठ चिमनदासजी, रामचन्द्रजी तथा करणीदानजी नामक तीन भाई हुए।

सेठ रामचन्द्रजी —आपका जन्म सम्वत १८१३ में हुआ। आप कार्य कुशल, साहसी तथा योग्य व्यक्ति थे। आप बीकानेरसे एलिचपुर चले गये तथा वहां आपने योग्यता पूर्वक कार्य किया। आपका स्वर्गवास सम्वत् १८८६ की फाल्गुन सुदी ७ को हुआ था। आपके निःसन्तान गुजर जानेपर आपके नामपर सम्वत् १८९३ में सेठ सौभागचन्दजी तिंवरीसे गोद आये। सेठ सौभागचन्दजी फिर उस वर्ष बीकानेर से पाली आकर निवास करने लग गये। तभीसे आपके वंशज आजतक यहीं पर निवास कर रहे हैं। आपने पालीमें आकर ब्याज व लेनदेनका

व्यापार किया। आप सम्वत् १९२४ में स्वर्गवासी हुए। आपके सूरजमलजी एवं चांदमलजी नामक दो पुत्र हुए।

सेठ सूरजमलजीका जन्म सम्वत् १९१३ में हुआ था। आपने पालीमें मे० करणीदान चांदमलजीके नामसे फार्म स्थापित कर अपना व्यापार शुरू किया। इस व्यापारमें आपको बहुत सफलता प्राप्त हुई। आपका स्वर्गवास सम्वत् १९५७ की कार्तिक सुदी २ को हुआ। आपके भी कोई पुत्र न था। अतः चांदमलजीके ज्येष्ठ पुत्र केशरीमलजी आपके नामपर गोद आये। सेठ चांदमलजीका जन्म सम्वत् १९१८ का था। आप व्यापार कुशल तथा कार्य्य चतुर व्यक्ति थे। आपने तथा आपके बड़े भाई सूरजमलजीने अपने व्यापारको बढ़ाया और अपनी एक फर्म देहलीमे भी खोली। सेठ चांदमलजीने व्यापारमें खूब उन्नति कर लाखों रुपये कमाये। आपका पालीमें अच्छा सम्मान था। आपका स्वर्गवास सम्वत् १९७१ की आसोज सुदी १४ को हो गया। आपके केशरीमलजी, कस्तूरचंदजी, वस्तीमलजी एवं हस्तीमलजी नामक चार पुत्र हुए। इनमें सेठ केशरीमलजी सेठ सूरजमलजीके नामपर गोद चले गये हैं।

सेठ केशरीमलजीका जन्म सम्वत् १९४२ में हुआ। आप योग्य तथा मिलनसार व्यक्ति हैं। वर्त्तमानमें आप ही अपने व्यापारको सफलता पूर्वक सञ्चालित कर रहे हैं। आपने जनता की सुविधाके लिये पालीमें एक धर्मशाला भी बनवाई है। सेठ कस्तूरचन्दजीका जन्म सम्वत् १९४४ व स्वर्गवास सम्वत् १९७९ में हो गया। आपके नामपर बाबू कुन्दनमलजी गोद आये थे। उनका भी स्वर्गवास हो गया है। सेठ वस्तीमलजी एवं हस्तीमलजीका जन्म क्रमशः सम्वत् १९५९ तथा १९६१ में हुआ। आप दोनों भी व्यापारमें भाग लेते हैं। सेठ हस्तीमलजीके सोहनलालजी और मोहनलालजी नामक दो पुत्र विद्यमान हैं।

यह खानदान पालीमें प्रतिष्ठित माना जाता है। आपकी पाली तथा देहलीमें करणीदान चांदमल और चांदमल केशरीमल के नामसे फर्में हैं जिनपर कपड़े व आढ़तका व्यापार होता है।

श्री सेठ पनराजजी अनराजजी धाड़ीवाल, लश्कर

इस खानदानका मूल निवासस्थान नागौर (मारवाड़) का है। यह खानदान अठारहवीं शताब्दीमें बड़ा चमकता हुआ परिवार था। आप लोगोंकी उस समय नागौर, इन्दौर आदि स्थानोंपर दूकानें थीं। जोधपुर नरेश महाराजा मानसिंहजी ने इस खानदानके सेठ हंसराजजीका वंश परम्पराके लिये जोधपुर-स्टेटमें चौथाई महसूलकी माफी का परवाना सम्वत् १९६१ में इनायत किया था। इसी प्रकार इन्दौरके अधिपति सूबेदार यशवन्तराव होल्कर बहादुरने नागौरके महाराजाधिराज कल्याणसिंहजीको इनके पुत्र पनराजजीके विवाहमें लवाजमा देने एवं बड़ा सम्मानका व्यवहार रखनेके लिये सिफारिशी पत्र दिया था। उस

समय इन्दौरमें भी आपका अच्छा सम्मान था। सेठ हंसराजजीने अपनी एक शाखा लश्कर में भी खोली। आपके जसराजजी, पनराजजी तथा रूपराजजी नामक तीन पुत्र हुए।

सेठ पनराजजी:—आपका विवाह जोधपुरके दीवान मेड़ता मुकुन्दचंदजी की बहिनसे हुआ था। आपको २६ दूकानें अपने अधिकारमें मिली थी। आप लश्करमें स्थायीरूपसे निवास करने लगे। आप सम्वत् १६०४ में स्वर्गवासी हो गये थे। अतः सम्वत् १६०८ में इसी परिवारमें रंगराजजी दत्तक आये। सेठ रंगराजजी धार्मिक वृत्तिके पुरुष थे। आपका सम्वत् १६४२ की मगसर सुदी ११ को स्वर्गवास हुआ। आपके नामपर सेठ रिधराजजी जोधपुरसे सम्वत् १६३१ में दत्तक आये।

सेठ रिधराजजी—आपका जन्म सम्वत् १६२३ की अनन्त चतुर्दशीको हुआ। आरंभसे ही आप उग्र बुद्धिके पुरुष थे। आपने अपने हाथोंसे बहुतसी सम्पत्ति तथा यश सम्पादन किया। इस समय आपकी फर्मके पास ११ स्थानोंके खजाने हैं। लश्करमें जबसे म्युनिसिपैलिटी कायम हुई तबसे आप उसके कमिश्नर हैं। इसके अतिरिक्त आप बोर्ड आफ साहुकारानके प्रेसिडेण्ट तथा लश्कर कोआपरेटिव बैंकके मेनेजिंग डायरेक्टरका पद सुशोभित कर रहे हैं। इसी प्रकार आप कई संस्थाओंके प्रेसिडेंट, व्हाइस प्रेसिडेण्ट, डायरेक्टर तथा मेम्बर हैं। आपका यहांकी जनता व सरकारमें अच्छा सम्मान है। आपकी सेवाओंसे प्रसन्न होकर ग्वालियर दरबारने आपको कई समय सनदें, रुक्के, पोशाकें तथा नगदी इनाम देकर सम्मानित किया है। सम्वत् १६७४ में आपको एक सिलवर मेडल मिला व सन् १६१७ में ग्वालियर सरकारके जनानखानेमें आपका पड़दा रखना माफ हुआ। इसी समय आपको कई सम्मानोंसे यहांकी रियासत ने समय समयपर सम्मानित किया। आपके सिधराजजी, सम्पतराजजी, सजनराजजी एवं सुरजराजजी नामक चार पुत्र हुए। इनमें सजनराजजी का सन् १६३३ में स्वर्गवास हो गया।

श्रीसिधराजजी—आपका जन्म संवत् १६६३ की चैत सुदी १२ को हुआ। आप अपनी फर्मकी दूकानों, खजानों तथा जमींदारीकी देखरेख रखते हैं। आप बड़े सज्जन एवं समझदार पुरुष हैं। आपके बुधराजजी, नागराजजी एवं जीवनराजजी नामक तीन पुत्र हैं।

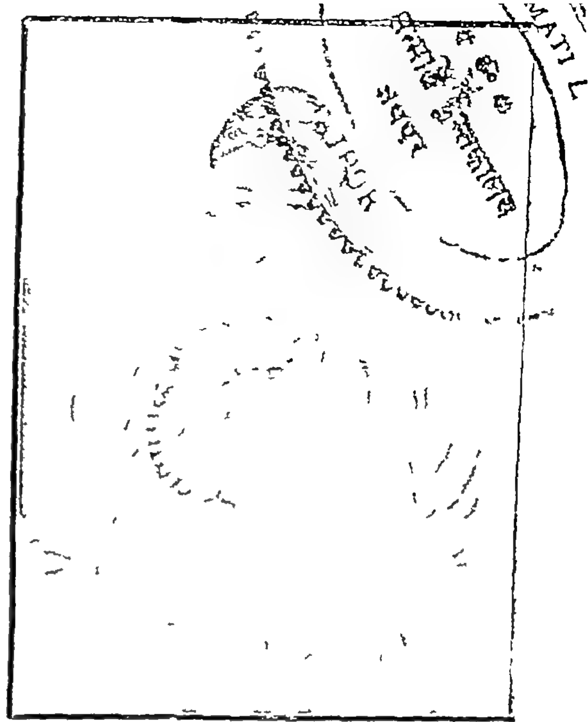
श्री सम्पतराजजी:—आपका जन्म सम्वत् १६६५ की आषाढ़ सुदी ४ को हुआ। आपने एफ० ए० तक शिक्षण पाया। आप इस समय स्थानीय जुडीशियल विभागके ऑनरेरी मजिस्ट्रेट व म्यु० के आनरेरी मजिस्ट्रेट भी हैं। इसके अलावा आप ग्वालियर चेम्बर आफ कामर्सके सेक्रेटरी एवं गिर्द ग्वालियरके ट्रेझरर हैं। आपके सुगनराजजी नामक एक पुत्र हैं।

इस खानदानका मे० पनराज अनराजके नामसे स्टेटके खजांचीशिप और बैंकिंगका व्यापार होता है। इसके अलावा आपका दसई (मालवा) में एक जीन है।

———



सेठ केशरीचन्दजी भाण्डावत जमीदार, शाजापुर (मालवा)



सेठ रिधराजजी, (मे० पनराज अनराज) लश्कर



बैठे हुए बाँयीं ओर से – (१) सेठ इन्द्रचन्दजी घाडीवाल (२) सेठ सुगनचन्दजी घाडीवाल (३) सेठ मोतीलालजी घाडीवाल, गोड़नदी (पूना)

सेठ सतीदासजी मुलतानचन्दजी घाड़ीवाल, घोड़नदी

इस परिवारका मूल निवासस्थान पांचला-सिद्धाका (खींवसरके पास जोधपुर स्टेट) का है। वहांसे इस परिवारके पूर्वज सेठ हिन्दूमलजी घाड़ीवाल व्यापारके निमित्त घोडनदीके पास अरोम्बिक गनेगांव नामक खेड़ेमें आये। आपकेहस्तीमलजी, ताराचन्दजी तथा अमरचंदजी नामक तीन पुत्र हुए। इन भाइयों ने घोड़नदीमे अपना कृषि तथा साहुकारीका कार्य्य चालू किया। सेठ हस्तीमलजीकेभेरूदासजी, सेठ ताराचन्दजीकेसतीदासजी एवं सेठ अमरचन्दजीके गम्भीरमलजी, गुलाबचंदजी, मुलतानचंदजी, कपूरचन्दजी तथा लच्छीरामजी नामक पांच पुत्र हुए। इनमेंसे सेठ मुलतानचंदजी सेठ सतीदासजीके नामपर दत्तक गये। आप इस समय विद्यमान हैं। सेठ गुलाबचंदजी एवं सेठ मुलतानचंदजी दोनों बन्धु जातिकी पञ्च पंचायतीमें अग्रगण्य व सम्माननीय व्यक्ति हैं। धार्मिक कार्य्योंमें आपका अच्छा लक्ष है। लगभग ५० वर्ष पूर्वसे इस परिवारका व्यापार अलग२ हो गया है।

सेठ मुलतानचन्दजीके जसराजजी और इन्द्रचन्द्रजी नामक दो पुत्र हुए। इन भाइयोंमें श्री जसराजजी सेठ भेरूदासजीके नामपर दत्तक गये। आपका हालहीमें आसोज सम्वत् १६६२ में सैंतीस सालकी आयुमें स्वर्गवास हो गया है। आप बड़ी धार्मिक प्रवृत्तिकेपुरुष थे। इस समय आपके १ सालका शिशु विद्यमान हैं। श्रीचन्दजीका जन्म सम्वत् १६५७ की पौष सुदी १० को हुआ। आप समझदार तथा योग्य व्यक्ति हैं। सरकारने जो ग्राम संगठनकी योजना चालूकी है उस योजनामें भाग लेनेके उपलक्षमें सरकार शिन्दने गोल्डन ज्युबिलीके समय आपको अच्छा मेडिल भेंट किया है। इसी तरह आप स्थानीय लोकलबोर्डके मेम्बर हैं तथा सार्वजनिक कामोंमें उत्साहसे भाग लेते हैं। आप घोड़नदीके आसपासकी जैनसमाजमें प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं।

आपके यहाँ कृषिका बड़े प्रमाणसे काम होता है। लगभग हजार रुपया साल आप सरकारी जमीन टैक्स चुकाते हैं। गनेगांव व अंजनगांवमें आपकी दुकानें हैं जहां सराफी व कृषिका कार्य होता है। आपके पुत्र मोतीलालजीकी वय १८ सालकी है। आप व्यापारमें भाग लेते हैं।

इस प्रकार इस परिवारमें सेठ गम्भीरमलजीके शोभाचंदजी और पूरनचन्दजी नामक दो पुत्र हुए। इनमें पूरनचंदजी सेठ गुलाबचन्दजीके नामपर दत्तक गये। सेठ कपूरचन्दजीके फूलचन्दजी व माणिकचन्दजी नामक दो पुत्र हैं। इनमें माणिकचन्दजी सेठ लच्छीरामजीके नामपर दत्तक हैं। आप बन्धुओंके यहां घोडनदी में कृषि तथा साहुकारीका कारबार होता है।

———

तांतेड़

लक्ष्मणदास सुगनचन्द तांतेड़, लश्कर

इस खानदानका मूल निवासस्थान मेड़ता (मारवाड़) का है। वहांसे संवत् १६०० में सेठ दुर्गादासजी लश्कर आये और यहीं पर व्यापार करने लगे। तभीसे आपके परिवारवाले यहीं पर निवास कर रहे हैं। थोडे समय बाद आपको यहाके खजाने और टकसालका काम मिला। आप बड़े व्यापार कुशल एवं कारगुजार सज्जन थे। आपकी सेवाओंसे प्रसन्न होकर सरकारने आपको एक म्याना प्रदान कर सरकारी खर्चेसे एक रथ और बैल जोड़ी रखनेका हुकुम बख्शा। आप सं० १६४४ में स्वर्गवासी हुए। आपके रिखबदासजी, लक्ष्मणदासजी, गणेशदासजी एवं फूलचन्दजी नामक चार पुत्र हुए।

इन उक्त चारों भाइयोंमें सेठ लछमणदासजीने लश्करमें कुछ काम किया है। आपको गवालियर सरकारने आपके पिताजीका ओर्ध्व दैहिक कार्य्य करनेके लिये ५०००) प्रदान कर सम्मानित किया था। आप भी खजानाका काम करते रहे। आपको भी सरकारकी ओरसे एक कीमती जवाहरातका कंठा तथा पोशाकें मिलीथीं। सं० १६६० में आप स्वर्गवासी हुए। आपके पश्चात् आपके छोटे भाई फूलचंदजी खजांची रहे। आप भी सम्वत् १६६३ में स्वर्गवासी हुए। वर्तमानमें आपके पुत्र सुगनचंदजी विद्यमान हैं।

सेठ सुगनचंदजी पिछाड़ी ड्योढ़ी खजानेके खजांची तथा गवालियर सिविल एण्ड मिलिटरी स्टोअरके सेक्रेटरी रहे हैं। इस समय आप कपड़ेका व्यापार करते हैं। आप सुधरे हुए विचारोंके सज्जन हैं।

भाण्डावत

सेठ पीरचन्दजी फूलचन्दजी भाण्डावत, शिवपुरी

इस खानदानके सज्जनोंका मूल निवासस्थान मेड़ता (मारवाड़) का है। आपलोग भाण्डावत गौत्रीय श्री जैन श्वेताम्बर मतावलम्वी सज्जन हैं। इस खानदानमें सेठ पीरचन्दजी हुए। आपके फूलचन्दजी तथा जेठमलजी नामक दो पुत्र हुए।

सेठ फूलचन्दजी उर्फ सिद्धमलजी सबसे पहले देशसे व्यापार निमित्त गुनाकी तरफ आये और यहाँपर आकर ब्रिटिश रेजिमेंटका काम करने लगे। जब रेजिमेंट गूनासे शिवपुरी आई तब आप भी खजानेके साथ यहां आये और यहीं आकर बस गये। तभीसे आपके परिवारवाले शिवपुरीमें रह रहे हैं। आपने तथा आपके छोटे भ्राता जेठमलजीने अपने व्यापारको खूब तरक्कीपर पहुचाया और यश भी सम्पादन किया। आपलोगोंका ब्रिटिश आफीसरोंमें एवं जनतामें अच्छा सम्मान था। सेठ फूलचन्दजीके तेजमलजी और भीकमचन्दजी नामक दो

पुत्र हुए। इनमेंसे तेजमलजी सेठ जेठमलजीके नामपर दत्तक चले गये। सेठ फूलचन्दजी तथा जेठमलजी जब स्वर्गवासी हुये उस समय सेठ फूलचन्दजीके दोनों पुत्र नाबालिग थे। ऐसी स्थितिमें इस फार्मके मुनीम श्रीसिद्धमलजीके चचेरे भाई सेठ करमचन्दजीने बड़ी योग्यतासे सारे व्यापारको संचालित किया। आपका भी आफिसरान एवं जनतामें अच्छा सम्मान था। इन्हीं दिनो जेठमलजीका भी छोटी अवस्थामें स्वर्गवास हो गया।आपके नाम पर टोडरमलजी दत्तक आये।

सेठ भीकमचन्दजीने बालिग होनेपर सारे कामकाजको संभाला और जनतामें भी खूब सम्मान प्राप्त किया। जब शिवपुरीसे रेजिमेंट हटी और शिवपुरीमें पब्लिक ट्रेझरी कायम हुई उस समय आप उसके ट्रेझरर नियुक्त हुए। आप योग्य तथा मिलनसार सज्जन थे। यहां के आफीसरोंमें भी आपका अच्छा सम्मान था। आपका सम्वत १९६० में स्वर्गवास हो गया। आपके नामपर सुपार्श्वमलजी दत्तक आये।

श्री टोडरमलजी एवं सुपार्श्वमलजी नागौर निवासी सेठ मोहनलालजी समदड़ियाके पुत्र हैं। आप दोनोंका जन्म क्रमश. सम्वत् १९४७ तथा ५३ में हुआ। आप दोनों बन्धु भी बड़े मिलनसार, योग्य एवं समझदार सज्जन हैं। आप लोगोंका यहाँकी जनता एव आफीसरों में अच्छा सम्मान है। ग्वालियर दर्बार स्व० श्री माधवरावजी सिंधिया जब शिवपुरी आते तब अपना प्राइवेट सारा काम काज आपकी फर्मके मार्फत करवाते थे। सम्वत् १९६८ में दरबारने भिंडकी पोद्दारी भी आपके जिम्मे कर दी थी। यह काम अभीतक आप लोगोंके पास है। इसके अलावा शिवपुरी, भिंड तथा लश्करमें आपका बैंकिंग व्यापार भी होता है।

वर्त्तमानमें सेठ टोडरमलजी मजलिसे कानून, (Legislative Assembly) मजलिसे आम और डिस्ट्रिक्ट बोर्डके मेम्बर, सहकारी बोर्ड शिवपुरीके व्हाइस प्रेसिडेण्ट, म्युनिसीपल बोर्ड तथा मंडी कमेटीके चेअरमैन और कोआपरेटिव बैंकके डायरेक्टर हैं। आपकी यहांपर अच्छी प्रतिष्ठा है। श्री सुपार्श्वमलजी यहांकी जुडिशियल और म्यु० के आनरेरी मजिस्ट्रेट व ओकाफ कमेटीके मेम्बर हैं। आप दोनों बन्धुओंको समय-समयपर ग्वालियर महाराज-ने पोशाकें, सनदें आदि देकर सम्मानित किया है। सन् १९२२ में जब प्रिंस आफ वेल्स ग्वालियर पधारे उस समय टोडरमलजीके जिम्मे प्रिंसके स्वागतका कार्य्य सौंपा गया था। उस समय प्रिंसकी ओरसे आपको एक घड़ी भी इनाम स्वरूप प्राप्त हुई थी।

सेठ केसरीचन्दजी प्रेमचन्दजी भांडावत, शाजापुर

इस परिवारके मालिकोंका मूल निवासस्थान मेड़ता (मारवाड़) है। यहाँसे इस परि-वारके पूर्वज सेठ गोड़ीदासजी भांडावत व्यापारके लिये लगभग १२५ साल पहिले बजरंगगढ़ (गुना-ग्वालियर) आये। सेठ गोड़ीदासजी वहां व्यापार करते हुए संवत् १९१५ में स्वर्ग-वासी हुए। आपके पुत्र जमनादासजी हुए।

सेठ जमनादासजीका जन्म संवत् १६०१ मे वजरंगगढ़में हुआ था। आपकी नावालगी-की अवस्थामे आपके व्यापारकी देखरेख आपके काका सेठ घेवरचन्दजी भांडावतने की थी, लेकिन कुछ आपसी बोल लग जनेसे आपने ५) मासिकपर कस्टम विभागमें मुलाजिमात कर ली। थोड़े समय वाद आपके श्वसुर सेठ हजारीमलजी नाहटा आपको लश्कर ले आये। उस समय उनको मालवामें कई जगह दुकानें थीं। थोड़े दिनोंतक आप लश्करमें नौकरी करते हुए जवाहरातका काम सीखते रहे। पश्चात् हजारीमलजी नाहटाकी शाजापुर, शुजालपुर तथा तलखेड़ दुकानोंपर सदर मुनीम बनाकर भेजे गये। इन दुकानोंपर सरकारी खजाना था और कस्टमका काम था। इन दुकानोंपर कार्य्य करते हुए सेठ जमनादासजीने अच्छी नामवरी तथा इज्जत प्राप्त की। धीरे धीरे आपने संवत् १६४० में शांजापुरमें अपनी घरू दुकानकी तथा उसपर हुंडी चिट्ठी व जमींदारीका कार्य्य आरम्भ किया। आपने मंडलका, पींडोनिया, रूपाहेड़ी तथा वाहीहेड़ा नामक ४ गाँवोंकी जमीदारी भी खरीद की। शाजापुर तथा आसपासकी जैन समाजमें आप नामी व्यक्ति थे। मक्षीजी तीर्थके सम्बन्धमें आपने वरसों तक दि० जैन समाजसे केस लड़ा तथा उसमें होशियारी और मर्दानगीपूर्वक काम करते हुए सफलता हासिल की। इस प्रकार प्रतिष्ठापूर्वक जीवन बिताते हुए संवत् १६६८ के आषाढ़ मासमें आपका स्वर्गवास हुआ। आपके लखमीचदजी, लाभचन्दजी, केसरीचन्दजी तथा प्रेम-चन्दजी नामक चार पुत्र हुए। इनमें लाभचन्दजी स्वर्गवासी हो गये हैं। शेष तीन भाई मौजूद हैं।

सेठ लखमीचन्दजीका जन्म संवत् १६३५ में हुआ। आप अपने पिताजीकी मौजूदगीमें ही अलग हो गये थे। धार्मिक वातोंमें आपका अच्छा प्रेम है। इस समय आप वेरधा (गवा-लियर) में व्यापार करते हैं। आपके कोई संतान नहीं है।

सेठ केसरीचन्दजीका जन्म सम्वत् १६४६ में तथा प्रेमचन्दजीको सम्वत १६५३ में हुआ। इन दोनों भाइयोंका व्यापार सम्मिलित होता है। सेठ केसरीचन्दजी ६ सालोंतक परगना वोर्ड, डिस्ट्रिक्ट वोर्ड और मजलिसे आम के मेम्बर रहे। स्थानीय म्यु० के आप मेम्बर रहे थे। इस समय आप जिला कोआपरेटिव्ह वेंकके डायरेक्टर और जैन प्रबोध कमेटी-के प्रेसिडेण्ट हैं। यहाकी प्रवोध कमेटीने आपको ओसवाल भूषणकी पदवी की है। आपका परिवार शाजापुर तथा आसपास नामी माना जाता है। श्रीप्रेमचन्दजी उज्जैन दुकान का काम सम्भालते हैं। वहाँ आपका केसरीचन्द प्रेमचन्दके नामसे आढ़तका धधा होता है। इस समय आप लोगोंके यहां ३ मोजोंकी जमींदारी हैं। श्री केसरीचन्दजीके पुत्र राजेन्द्रकुमार और प्रेमचन्दजीके पुत्र वीरचन्दजी हैं।

कोटेचा

श्री सेठ भीकचन्दजी चुन्नीलालजी कोटेचा, वार्शी (नांदूरकर)

इस परिवारके मालिकोंका मूल निवासस्थान शेरसिंहजी की रीयाँ (मेवाड़) है। वहांसे इस परिवारके पूर्वज सेठ नवलमलजी अनेकों कठिनाइयाँ उठाते हुए व्यापारके निमित्त लगभग १४० साल पूर्व रवाना हुए तथा नांदूर (जिला बीड़—निजामस्टेट) में आये और यहां लेन देनका व्यापार चालू किया। आपके व्यंकटलालजी, नीलूरामजी तथा शिवनाथजी नामक ३ पुत्र हुए। इन भाइयोंमें सेठ नीलूरामजीने इस परिवारके मान सन्मान तथा व्यापारको विशेष बढ़ाया। आप लगभग ५० वर्ष पूर्व स्वर्गवासी हुए। सेठ व्यंकटलालजीके हुकुमचन्दजी, भारमलजी तथा बापूलालजी नामक तीन पुत्र हुए, इनमें सेठ हुकुमचन्दजीके पुत्र दुलीचन्दजी तथा खूबचन्दजी इस समय विद्यमान हैं।

सेठ नीलरामजीका परिवारः—हम ऊपर लिख आये हैं कि सेठ नीलूरामजी नांदूरमें व बीड़ जिलेमें नामी पुरुष हो गये हैं। आपका विस्तृत परिवार नांदूरमें निवास करता है। आपके रामचन्दजी, हरखचन्दजी तथा छगनजी नामक ३ पुत्र हुए। इन बंधुओंमें सेठ रामचंदजी तथा सेठ छगनजीने भी आसपासकी जैन समाजमें एव बीड़ जिलेमें बड़ा सम्मान पाया। सेठ रामचन्दजी लगभग २६ साल पहिले स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र सेठ भीकचन्दजीका जन्म सम्बत् १९५० में तथा सेठ चुन्नीलालजीका जन्म सम्बत् १९५३ में हुआ। इन दोनों भाइयोंने भी अपने पिताजीके बाद अपने व्यापारकी अच्छी उन्नति की है। आपका नांदूरमें कृषि तथा साहुकारीका बड़े प्रमाणपर व्यापार होता हैं। आप लोग लगभग ३ हजार रुपया सालियाना सरकारी लगान भरते हैं। बीड़ जिलेमें आपका परिवार नामी माना जाता है। इधर ६ साल पूर्वसे आपने वार्शीमें आढ़तका कारबार शुरू किया है। श्री चुन्नीलालजी कोटेचाका धार्मिक और शिक्षाके कामोंकी ओर उत्तम लक्ष्य है। आप वार्शीके श्री महावीर जैन बालाश्रम तथा श्री मूलचन्द जोतीराम जैन पाठशालाके प्रेसिडेंट और तिलोक जैन पाठशाला पाथर्डीके प्रांतिक सेक्रेटरी हैं। इसी तरह हरएक सार्वजनिक व धार्मिक कामोंमे आप भाग लेते हैं। सेठ भीकचन्दजीके पुत्र मोतीलालजी तथा नन्दलालजी एवं चुन्नीलालजीके पुत्र पन्नालालजी, राजमलजी तथा साहबचन्दजी हैं।

इसी प्रकार सेठ रामचन्द्रजीके छोटे बन्धु सेठ हरखचन्दजीके लालचंदजी और गुलालचन्दजी नामक २ पुत्र हुए। इनमें लालचन्दजीके पुत्र मेघराजजी इस समय नादूरमें कृषि और साहुकारीका काम करते हैं। सेठ छगनजीके भाऊलालजी और मोहनलालजी नामक २ पुत्र हुए। इस समय भाऊलालजीके पुत्र चंदूलालजी, बालचन्दजी, उत्तमचन्दजी तथा भूमरलालजी और मोहनलालजीके पुत्र लेखीचन्दजी तथा अमरचन्दजी नांदूरमें अपना स्वतन्त्र कारबार करते है।

इसी तरह इस कुटुम्बमें सेठ शिवनाथजीके मगनलालजी, सुखलालजी तथा उदयचंदजी नामक ३ पुत्र हुए। इनमें मगनलालजी अच्छे प्रतिष्ठासम्पन्न व वजनदार पुरुष हुए। आपके छोटे बंधु सेठ उदयचन्दजी इस समय विद्यमान हैं।

सेठ ज्ञानमलजी केशरीमलजी कोटेचा, शिवपुरी

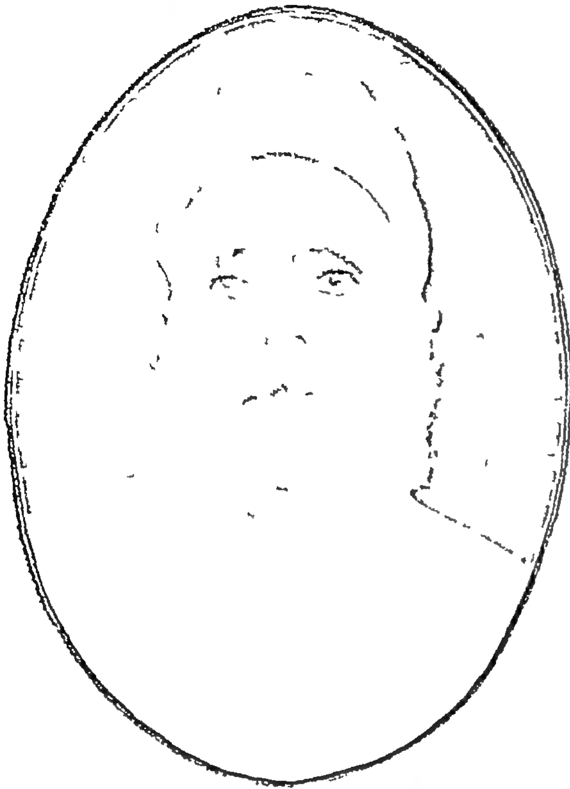
इस खानदानके सज्जनोंका मूल निवास स्थान मेड़ता (मारवाड़) का है। आप लोग कोटेचा गौत्रीय हैं। इस खानदानके पूर्वपुरुष सेठ ज्ञानमलजी मेड़तासे व्यापार निमित्त करीब १०० वर्ष पूर्व शिवपुरी आये। जिस समय शिवपुरी बस रही थी उस समय आप भी आकर यहां बसे और अपने पुत्र केसरीचंदजीकी मददसे व्यापार करने लगे।

सेठ केसरीचन्दजीके लालचन्दजी और मुलतानचन्दजी नामक दो पुत्र हुए। आप दोनों भाइयोंने भी अपने व्यवसायको बढ़ाया। सेठ लालचन्दजी सम्वत् १९५३ की वैसाख वुदी ११ को स्वर्गवासी हुए। आपको रेजिडेण्ट तथा एजेण्टसे कई प्रशंसापत्र प्राप्त हुए थे। ग्वालियर-स्टेटमें भी आपका अच्छा सम्मान था। आपके शिवचन्दजी तथा नेमीचन्दजी नामक दो पुत्र हुए। आप दोनों भाइयोंने भी अपने व्यापारको बढ़ाया। सेठ शिवचन्दजी बड़े सरल एवं मितव्ययी पुरुष थे। आपको दरबारोंसे कई पोशाकें इनायत हुई थीं। ब्रह्मचर्याश्रम उदयपुर तथा आगरा अनाथालयको आपकी ओरसे अच्छी सहायता दी गयी थी। सम्वत् १९८७ की आषाढ़ वदी १४ को आपका स्वर्गवास हुआ। आपके अमोलकचन्दजी नामक एक पुत्र हैं।

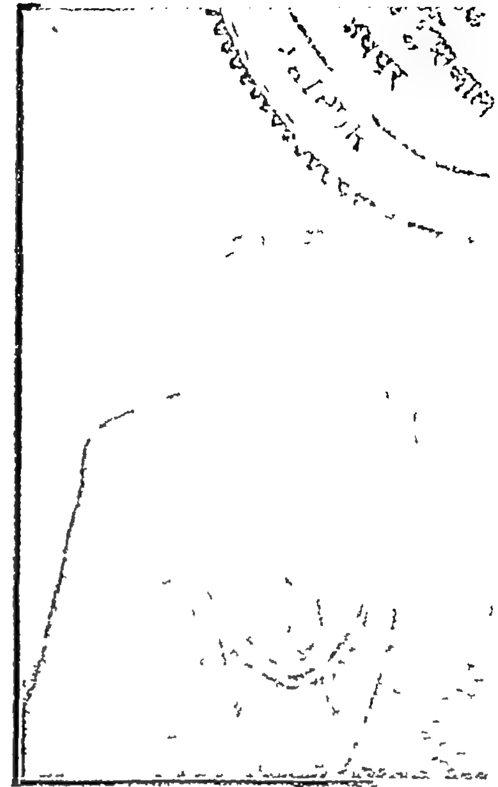
सेठ नेमीचन्दजीका जन्म सम्वत् १९४२ में हुआ। आप बड़े सज्जन, प्रतिष्ठित एव मिलनसार व्यक्ति हैं। आपको भी कई सर्टिफिकेट प्राप्त हुए हैं। आप यहांके ऑनरेरी मजिस्ट्रेट, बोर्ड साहुकारान और कोआपरेटिव बैंकके मेम्बर रह चुके हैं। आपके शिखरचन्दजी एवं प्रसन्नचन्दजी नामक दो पुत्र हैं।

सेठ अमोलकचन्दजी भी मिलनसार तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। आप यहा की पंचायत बोर्डके सरपच, ओकाफ कमेटी तथा मण्डी कमेटीके मेम्बर हैं। इसके पूर्व आप कोआपरेटिव बैंकके डायरेक्टर तथा म्यु० के आनरेरी मजिस्ट्रेट भी रह चुके हैं। आपकी सेवाओंसे प्रसन्न होकर महाराजा एवं महारानी साहिबाने प्रसन्नतापूर्वक पोशाकें एव सर्टिफिकेट देकर आपको सम्मानित किया है। आपके वल्लभचन्दजी, विनयचन्दजी एव वीरचन्दजी नामक तीन पुत्र हैं।

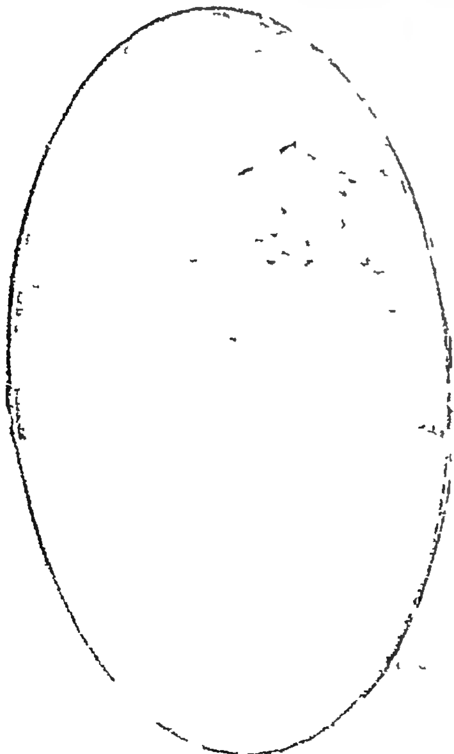
आप लोगोंका लश्कर तथा शिवपुरीमें बैंकिंग व्यवसाय होता है। इस फर्मपर प्रतापचन्दजी मुनीम हैं। आप करीब २५ सालोंसे यहांपर मुनीमात कर रहे हैं। आपको भी प्रशंसापत्र मिले हैं।



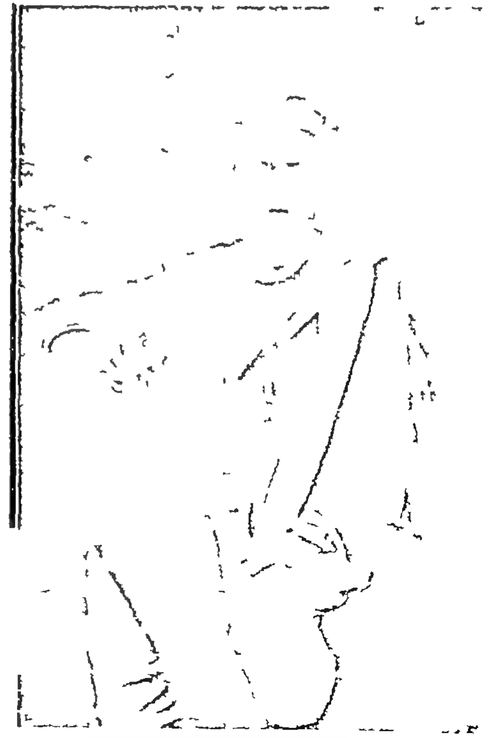
सेठ शिवचन्दजी कोटेचा, शिवपुरी



सेठ फूलचन्दजी कोचर मूथा, [illegible]



सेठ अमोलखचन्दजी कोटेचा, शिवपुरी



सेठ जवाहरमलजी जोतीरामजी बल्दोटा,

सांखला

सेठ भगवानदासजी शिवदासजी सांखला, शिवपुरी

इस खानदानके सज्जनोंका मूल निवासस्थान मेड़ता (मारवाड) का हैं। इस खानदानमें सेठ भगवानदासजी हुए जिन्होंने मेड़तेसे पालीतानाका संघ निकाला था। आप बड़े व्यापारकुशल एवं होशियार सज्जन थे। सम्बत् १८६० के करीब आप मेड़तेसे व्यापार निमित्त शिवपुरी आये और यहांपर कपड़ेका व्यवसाय चालू किया। आपका सम्बत् १६०२ में स्वर्गवास हो गया। आपके नामपर सम्वत् १६११ में सेठ शिवदासजी मेड़तासे दत्तक आये।

सेठ शिवदासजीकी धार्मिक कार्मोंमें अच्छी श्रद्धा थी। व्यापारमें भी आपके हाथोंसे अच्छी तरक्की हुई। आप संवत् १६२५ में स्वर्गवासी हुए। आपके गुलाबचन्दजी नामक एक पुत्र थे। गुलाबचन्दजी व्यापार कुशल, मिलनसार तथा परोपकारके कामोंमें विशेष रुचि रखनेवाले सज्जन थे। आपने यहांपर एक धर्मशाला बनवाई तथा श्रीपार्श्वनाथजीके मन्दिरमें श्री नेमिनाथ भगवानकी मूर्ति प्रतिष्ठित कराई। इसके अतिरिक्त उक्त मन्दिरकी व्यवस्थाके लिये आपने एक मकान दान स्वरूप प्रदान किया। इसी प्रकारके धार्मिक कार्योंमें आप अच्छा सहयोग लेते थे। आपका यहांकी साहुकार मण्डलीमें अच्छा सम्मान था। आपका सम्वत् १६७४ की चैत सुदी ४ को स्वर्गवास हुआ। आपके नामपर श्री कानमलजी सम्वत १६६८ में ही दत्तक आ गये थे। आप नागौर निवासी सेठ गुलाबचन्दजीके पुत्र हैं।

सेठ कानमलजीका जन्म सम्वत् १६५० में हुआ। आप मजलिसे आम, बोर्ड आफ साहुकारान, परगना बोर्ड, औकाफ कमेटी तथा म्यु० के मेम्बर हैं। इसके अतिरिक्त आप को-आपरेटिव बैङ्कके असिस्टेण्ट मेनेजिंग डायरेक्टर हैं। आपकी परोपकारके कामोंकी ओर भी अच्छी रुचि है। अपने पिताजीके स्वर्गवासी होनेके बाद आपने धर्मशालाके स्थाई प्रबन्धके लिये एक मकान दानस्वरूप प्रदान किया है। आपने अपने मन्दिरमें एक चांदीका विमान बनवाकर रक्खा है। आपके पुत्र इन्द्रमलजी २१ वर्षके हैं तथा वर्त्तमानमें व्यापारमें भाग लेते हैं। आप लोगोंने श्री विजयधर्मसूरीश्वर स्मारकमें एक लायब्रेरी को मकान भेंट किया है।

वर्त्तमानमें आपके यहां मे० भगवानदास शिवदासके नामसे बैंकिंग, आढ़त तथा कपड़े का व्यापार होता है। इसके अतिरिक्त मे० नथमल इन्द्रमलके नामसे सराफी व्यापार भी होता है। लश्करमें मे० भगवानदास शिवदासके नामसे हुण्डी चिट्ठीका काम होता है।

नाहर

सेठ अभयचन्दजी दीपचन्दजी नाहरका खानदान, जबलपुर

यह परिवार मेड़ताके पास ईडवा नामक स्थान का निवासी है। लगभग १२ पीढ़ी पूर्व इस परिवारमें श्रीदेवीचन्दजी नाहर हुए। आप तिल्लोनस ठिकानेके कीमती थे। आपके पश्चात् आपके पुत्र पौत्रोंमें क्रमशः श्री खूबचन्दजी, श्रीजीतमलजी, श्री डूंगरमलजी, श्रीवच्छराजजी और श्री मयाचन्दजी भी लगातार ६ पीढ़ियोंतक तिल्लोनस ठिकानेके कीमती पदपर कार्य्य करते रहे। तिल्लोनसके पश्चात् श्री मयाचन्दजीने अपना निवास ईडवामें सं० १७२६ में बनाया। आपके कुशलाजी, बीजराजजी, रतनचन्दजी तथा जसराजजी नामक ४ पुत्र हुए। इन भाइयोंमें श्री रतनचन्दजी नाहरके सुजानमलजी, रुधजी, हीरजी, सालमजी तथा सवाईमलजी नामक ५ पुत्र हुए। इन बन्धुओंमें सेठ सवाईमलजीके पुत्र सेठ बनेचन्दजी लगभग १५० साल पहिले व्यापारके लिये पैदल राह द्वारा हुशंगाबाद जिलेके चारुवा नामक स्थानमें आये तथा वहां अपना व्यापार स्थापित किया। आपके जुहारमलजी, जेठमलजी तथा आईदानजी नामक ३ पुत्र हुए। सेठ जुहारमलजीने वहां जादूपुरा नामक एक गांव खरीदा जो अब भी आपके परिवारके पास है। इस समय आपका कुटुम्ब चारुवामें निवास करता है।

सेठ जुहारमलजीके छोटे भाई सेठ जेठमलजी भी थोड़े समय बाद चारुवा आये। सम्वत् १९३८ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके बख्तावरचन्दजी अगरचन्दजी तथा चन्दनमलजी नामक ३ पुत्र हुए। इन बन्धुओंमें सेठ बख्तावरचन्दजी और सेठ अगरचंदजी जबलपुर आये तथा सम्वत १९२५ में यहां दुकान स्थापित कर कपड़ा व लेनदेनका व्यापार आरम्भ किया। आरम्भसे ही आपका व्यापार उन्नति करता आ रहा है। सेठ अगरचन्दजी संवत् १९५३ में एवं सेठ बख्तावरचन्दजी संवत् १९६२ में स्वर्गवासी हुए। इन दोनों बंधुओंका कारबार सम्वत १९६० में अलग-अलग हो गया। सेठ बख्तावरमलजीके हीराचन्दजी, घेबरचन्दजी तथा देवकरणजी नामक तीन पुत्र हुए। इनमें हीराचन्दजीका जन्म संवत् १९३६ में हुआ। आप तथा आपके पुत्र अगरचन्दजी इस समय विद्यमान हैं।

सेठ अगरचन्दजीके अभयराजजी तथा गोरीदासजी नामक २ पुत्र हुए। इन बंधुओंमें सेठ गोरीदासजी सम्वत १९४९में स्वर्गवासी हो गये है।

सेठ अभयराजजी नाहरका जन्म १९४० में हुआ। आप इस समय जबलपुरकी जैन समाजमें प्रतिष्ठित एवं समझदार सज्जन्न हैं। हरएक धार्मिक तथा सार्वजनिक कामोंमें आपका परिवार सहयोग लेता रहता है। आप श्री जैन श्वे० तेरापंथी सम्प्रदायके अनुयायी हैं। आपके श्री दीपचन्दजी, लालचन्दजी, रिखबदासजी, जीवनदासजी तथा भीकमचन्दजी नामक ५ पुत्र हुए, इनमें दीपचन्दजी, रिखबदासजी तथा भीकमचन्दजी इस समय विद्यमान हैं। आप तीनों बन्धु सज्जन तथा मिलनसार युवक हैं। तथा फर्मके व्यापारको

तत्परता से संभालते हैं। श्री हरिचन्दजी के पुत्र भँवरचन्दजी एवं रिखवदासजी के पुत्र धनराजजी हैं।

इस समय आपके यहाँ सेठ अभयराज दीपचन्द के नाम से बैंकिंग व्यापार एवं ए० आर० दीपचन्द एण्ड ब्रदर्स के नामसे कपड़े का बड़े प्रमाण पर व्यापार होता है। जबलपुर सदर की व्यापारिक समाज में आपकी फर्म नामी मानी जाती है।

कोचर

सेठ मेघराजजी कोचर का खानदान, पाली

इस खानदान के पूर्व पुरुषों का मूल निवासस्थान पाली (मारवाड़) का है। आपलोग कोचर गौत्र के श्री जै० श्वे० मं० मार्गीय हैं। आपका खानदान फलौदी के कोचरों में से निकला हैं। इस परिवार में सेठ मेघराजजी हुए। आप पाली में ही रह कर अपना व्यापार करते रहे। आपके चाँदमलजी नामक एक पुत्र हुए। आपका जन्म सं० १९१७ के करीव हुआ। आप पाली से देहली आये तथा यहां पर कुछ दिनों सर्विस करके अपनी दुकान खोली। आपका स्वर्गवास सं० १९७३ में हो गया। आपके अनराजजी तथा विरदीचन्दजी नामक दो पुत्र हुए। आप दोनों भाई सं० १९७४ तक शामलात में व्यापार करते रहे। इसके पश्चात् आप दोनों अलग २ होकर अपना स्वतंत्र रूप से व्यापार करने लगे।

सेठ अनराजजी का जन्म सं० १९४३ में हुआ। आप स० १९७४ तक तो सर्विस करते रहे। तदनन्तर आपने मे० रामभगतदास सूरजभान के साझे में कपडा व आढ़त का व्यापार शुरू किया। इस फर्मके व्यापार में आपको वहुत सफलता प्राप्त हुई। सं० १९८३ तक तो यह फर्म साझे में चलती रही। इसके पश्चात् आपने रा० ब० सेठ गोर्द्धनदास मोतीलाल के साझे में गिरधरलाल व्रजरतन के नाम से वही कपड़े व आढ़त का काम किया। सं० १९८८ से आपने मेसर्स अनराज नारायणदास के नाम से अपना फर्म स्थापित किया। इस फर्म पर वही आढ़त व कपड़े का व्यापार होता है। इस फर्म मे सेठ नारायनदासजी का साझा है। सेठ अनराजजी मिलनसार व योग्य व्यक्ति हैं। आपको जाति सेवा से बड़ा प्रेम है। आपके सुखराजकुमारजी नामक एक पुत्र विद्यमान हैं। बाबू विरदीचन्दजी का जन्म सं० १९५२ का है। आप अभी देहली में ही निवास कर रहे हैं। आपलोगों का पाली तथा देहली की ओसवाल समाज में अच्छा सम्मान है।

सेठ हीरचन्दजी फूलचन्दजी कोचर मेहता, जबलपुर

इस परिवार के पूर्वज लगभग सवा सौ वर्ष पूर्व मुआसर में निवास करते थे। वहाँ से सेठ हिम्मतरामजी कोचर फलौदी आये तथा अपना स्थाई निवास वहाँ बनाया। आपके

हीरचन्दजी, उम्मेदचन्दजी, केसरीचन्दजी, चौथमलजी और बहादुरचन्दजी नामक ५ पुत्र हुए। इन भाइयों में सेठ उम्मेदचन्दजी जबलपुर आये, तथा लेनदेन का व्यापार चालू किया। सेठ हीरचन्दजी ने इस दुकान के कपड़े तथा साहुकारी कारबार को बढ़ाया। आप संवत् १९५० की चेत वदी १० को स्वर्गवासी हुए। आपके मोहनलालजी, सूरजमलजी और फूलचन्दजी नामक ३ पुत्र हुए। सेठ हीरचंदजी के बाद मोहनलालजी ने कारबार को संभाला, आप संवत् १९५५ की पोष बदी २ को स्वर्गवासी हुए। इनसे छोटे बन्धु सेठ सूरजमलजी सिकंदराबाद में सेठ धीरजी चांदमलजी के यहाँ दत्तक गये।

सेठ फूलचंदजी का जन्म संवत् १९३७ की फागुन सुदी ४ को हुआ। आप ही इस समय उपरोक्त फर्म के मालिक हैं। जबलपुर सदर मे आपकी दुकान प्रतिष्ठित मानी जाती हैं। धार्मिक कामों में आपकी अच्छी रुचि है। आपके पुत्र श्री मेघराजजी भी फर्म के व्यापार मे भाग लेते हैं। इनके पुत्र अनोपचन्द बालक हैं। इस समय आपके यहाँ सराफीका व्यापार होता है।

डागा

सेठ शिवपालजी धनराजजी डागा, गाडरवारा

इस परिवार के मालिकों का मूल निवासस्थान बीकानेर है। लगभग सवा सौ वर्ष पूर्व सेठ शिवपालजी डागा व्यापार के निमित्त गाडरवारा आये। आपका सं० १९४१ में स्वर्ग वास हुआ। आपके धनराजजी तथा जुगराजजी नामक दो पुत्र हुए। सेठ धनराजजी डागा का जन्म संवत् १९१० में हुआ। आपके हाथों से फर्म के व्यापार तथा सम्मान की विशेष वृद्धि हुई। आपके विशेष प्रयत्न एवं सहयोग से गाडरवारा मे श्रीशांतिनाथजी के देरासर का निर्माण हुआ। स्थानीय धर्मादा कमेटी के आप सेक्रेटरी थे। आप गाडरवारा के व्यापारिक समाज में एव जैन समाज में गण्यमान्य पुरुष थे। आप बड़े साहसी व हिम्मतवान पुरुष हो गये हैं। आप तीव्र बुद्धि के महानुभाव थे तथा अपने विरोधी विचार वाले व्यक्तियों का संतोष बड़ी युक्ति से करने मे सिद्ध हस्त थे। आप संवत् १९६९ की फागुन सुदी ७ को स्वर्गवासी हुए। आपके मानपालजी और फूलचन्दजी नामक २ पुत्र हुए। इन भाइयों में श्री मानपालजी संवत् १९७४ में स्वर्गवासी हुए।

सेठ फूलचन्दजी डागा का जन्म सं० १९५१ की सावण सुदी १४ को हुआ। आपके हाथों से भी इस फर्म के व्यापार तथा सम्मान की विशेष वृद्धि हुई है। आप स्थानीय म्युनिसिपैलेटी के मेम्बर तथा व्हाइस प्रेसिडेण्ट रहे हैं, तथा इस समय ४ सालों से पुनः म्यु० के मेंबर हैं। आप धर्मादा कमेटी के सेक्रेटरी हैं तथा स्थानीय जैनमदिर के ट्रस्टी हैं। आपके पिताजी ने मदिर को जो १ गाँव दिया था उसकी आय को आपने बढ़ाकर २ गाँव की जमींदारी कर दी है। इसी प्रकार मदिर की और भी स्थाई सम्पत्ति को दृढ़ किया है।

सरकारी आफीसरों में आपका अच्छा सम्मान है। आपके डालचन्दजी तथा ताराचन्दजी नामक २ पुत्र हैं। इनमें श्री डालचन्दजी का जन्म सावण सुदी २ सं० १६७० में हुआ। आप कामर्स कालेज बम्बई में शिक्षा पा रहे हैं।

सिंघी

सेठ दयाचन्दजी सिंघी, गोटेगाँव

इस परिवार का मूल निवास नागोर है। वहाँ से सेठ रामचन्द्रजी सिंघी लगभग १०० साल पहिले डीडवाणा आये और आपने अपना स्थाई निवास वहाँ बनाया। यह परिवार रामभलोत सिंघवी गौत्र का है। इस खानदान ने जोधपुर दरबार की बड़ी २ सेवाएं की हैं, जिनका इतिहास इस ग्रन्थ के सिंघवी गौत्र में दिया है। सिंघवी रामचन्द्रजी महकमा दाण (सायर) में अफसर थे। स० १६४० में आप स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र सेठ दयाचन्दजी मारवाड से इन्दौर आये तथा सं० १६५५ में रीयाँ वाले सेठों की दुकान पर मुनीम होकर नरसिंहपुर गये। पश्चात् सं० १६६७ में आप जबलपुर वाले राजा गोकुलदासजी की गोटे गाँव दुकान के मुनीम नियुक्त हुए, एवं सं० १६७० से अनाज की आढ़त का अपना स्वतन्त्र व्यापार आरम्भ कर दिया। सं० १६८७ में आप स्वर्गवासी हो गये।

सेठ दयाचन्दजी के पुत्र सेठ मंगलचन्दजी सिङ्घी का जन्म सम्वत् १६४६ में हुआ। आपने अपने व्यापार तथा परिवार के सम्मान को बढ़ाया है। आप १५ सालों से गोटेगाँव म्युनिसिपैलेटी के मेम्बर हैं। आपके बड़े पुत्र श्री सुगनचन्दजी २२ साल की आयु में स्वर्गवासी हो गये हैं। आप बड़े होनहार थे। इनसे छोटे भीकमचन्दजी, सवाईचन्दजी, कोमलचन्दजी तथा हुकुमचन्दजी हैं। भीकमचन्दजी ने मेट्रिक तक अध्ययन किया हैं। इस समय आपके यहां अनाज का व्यापार होता है।

बलदोटा

सेठ मूलचन्दजी जोतीलालजी बलदोटा, बार्शी

इस परिवार का मूल निवास जीवन्द (बाली के पास जोधपुर स्टेट) में है। वहाँ से व्यापार के निमित्त इस कुटुम्ब के पूर्वज सेठ महासिंहजी बलदोटा दक्षिण प्रांत के बार्शी नामक स्थान के समीप चिकलोड़ खेड़े में आये और वहां आप लेनदेन का व्यापार करते रहे। आपके जीतमालजी उर्फ जोतीरामजी, मयारामजी, शिवरामजी तथा खुशालचन्दजी नामक ४ पुत्र हुए। इन बन्धुओं में सेठ जीतमलजी ने इस परिवार के व्यापार की नींव जमाई तथा अपने परिवार के मान की भी वृद्धि की। आप लगभग ८०।८५ साल पूर्व चिकलोड़ से बार्शी आ गये और अपना स्थायी रूप से निवास यहीं बना लिया। संवत् १६४६ में

में आप स्वर्गवासी हुए। आपके यहां प्रधानतया साहुकारी लेनदेन का व्यापार होता था। सेठ ज्योतीरामजी के मूलचन्दजी तथा जवाहरमलजी नामक २ पुत्र हुए। इन बन्धुओं में सेठ मूलचन्दजी इस समय विद्यमान हैं।

सेठ मूलचंदजी वल्दोटाः—आपका जन्म शके १७६७ की मगसर सुदी २ को हुआ। आपने अपने पिताजी के पश्चात् अपने परिवार के मान सम्मान तथा व्यापार को अच्छी उन्नति पर पहुचाया। धार्मिक, सार्वजनिक एवं परोपकार के कई प्रशसनीय कार्य आपने ऐसे किये जिन्हें वार्शी तथा आसपास की जनता कई वर्षों तक नहीं भूल सकती। शके १८३४ में आपने श्रीमूलचन्द जवाहरमल हास्पीटल नामक एक अस्पताल का उद्घाटन किया एवं इस संस्था के लिये ५० हजार रुपये की रकम प्रदान कर इसकी व्यवस्था एक ट्रस्ट के जिम्मे की, जिसके व्याज से यह संस्था चल रही है। इस अस्पताल में अंग्रेजी पद्धति से इलाज होता है एवं २५० रोगी प्रति दिन यहाँ इलाज के लिये आते हैं। इसके अलावा २० हजार रुपयों की लागत से आपने एक धर्मशाला एवं जैनमंदिर का निर्माण करवाया तथा ११ हजार की लागत से एक जैन पाठशाला का उद्घाटन किया। इसी प्रकार नगर की और भी सार्वजनिक एवं धार्मिक संस्थाओं में आप उदारता पूर्वक सहयोग एवं सहायता देते हैं। स्थानीय गोरक्षण संस्थायें, घास व गायों के पोषण के लिये ५ हजार रुपया एवं लखमीदास खीमजी आर्फनेज में सवाहजार रुपयों की सहायता दी है। शुभ कार्यों की ओर विशेष प्रेम होने की वजह से वार्शी की जनता आपको दानवीर के नाम से सम्बोधित करती है एवं नगर की सर्वसाधारण जनता के प्रमुख व्यक्तियों ने आपके द्वारा किये हुए पब्लिक कार्यों के उपलक्ष में धन्यवाद स्वरूप ता० २१ नवम्बर १९२४ को एक मान-पत्र देकर आपको सम्मानित किया है। सन् १९१२ से आप वार्शी में आनरेरी मजिस्ट्रेट हैं, व इधर २ सालों से आपकी वजनदारी का स्मरण कर सरकार ने सेकंड क्लास अधिकार दिये हैं। सन् १९३० में आप जुन्नर की श्री महाराष्ट्र प्रांतीय जैन परिवार के सभापति भी रहे थे। वार्शी के लोकमान्य मिल के आप भागीदार और डायरेक्टर हैं। इसके अलावा जय-शंकर मिल आदि मिलों के भी शेयर होल्डर हैं। आपका स्वभाव बड़ा सरल, सादा, एवं अभिमान रहित है। आपके छोटे बंधु श्री जवाहरमलजी वल्दोटा केवल २७ साल की अल्पायु में शके १८३४ में स्वर्गवासी हो गये हैं। उनके नाम पर आपके भाइयों के परिवार से श्री नेमीचंदजी वल्दोटा के मझले पुत्र चन्दनमलजी दत्तक आये है। आपकी वय २० साल की हैं, तथा आपभी होनहार एवं योग्य प्रतीत होते हैं।

इस समय आपके यहां सेठ मूलचन्द ज्योतीराम के नाम से मिल की भागीदारी, शेअर्स, व्याज व साहुकारी लेनदेन का कार्य होता है।

———

सेठ धीरजमलजी भगवानदासजी गांधी, सोलापूर

इस परिवार के मालिकों का मूल निवासस्थान नागोर (मारवाड़) है। यहां इस परिवार के पूर्वज सेठ कीरतमलजी चंडाल गांधी निवास करते थे। सेठ कीरतमलजी के धीरजमलजी, सूरजमलजी और गेंदमलजी नामक ३ पुत्र हुए। नागोर से आप बधुगण लगभग १०० वर्ष पूर्व ताहराबाद जिला ठाणा में आये और वहां से आप करंडी (तालुका पारनेर—जिला नगर) गये। सेठ सूरजमलजी तथा गेंदमलजी तो करंडी व ताहराबाद में ही साधारण व्यापार करते रहे तथा सेठ धीरजमलजी गांधी के पुत्र सेठ भगवानदासजी गांधी लगभग ६० साल पहिले सोलापुर आये और आपने यहां आरम्भ में सर्विस की। लगभग दस वर्षों तक सर्विस करने के पश्चात् आपने अपना स्वतन्त्र कपड़े का व्यापार आरम्भ किया तथा परिश्रम व बुद्धिमत्ता पूर्वक आपने व्यापार में अच्छी सम्पत्ति उपार्जित कर सोलापुर के व्यवसायिक समाज में एवं अपने समाज में अच्छी प्रतिष्ठा व ख्याति प्राप्त की। इस प्रकार प्रतिष्ठा पूर्ण जीवन विताते हुए आप सं० १९६८ में स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र श्री शिवलालजी गांधी उस समय केवल २ साल के थे।

सेठ शिवलालजी गांधीः—आपका जन्म सम्वत् १९६६ में हुआ। पिता श्री के स्वर्गवास के समय आप अबोध शिशु थे, अतएव आपके लालन पालन तथा शिक्षण का भार आपकी फर्म के योग्य दीवान श्री सीताराम बालकृष्ण देगांवकर नामक दक्षिणी सज्जन ने बड़ी योग्यता तथा बुद्धिमता से वहन किया। बाल्य वय से ही सेठ शिवलालजी बड़े होनहार तथा उग्र बुद्धि के युवक प्रतीत होते थे। आपने अपने व्यापार तथा परिवार की प्रतिष्ठा में उन्नति की। सोलापुर नगर के सार्वजनिक व व्यापारिक क्षेत्र में आप बहुत उत्साह तथा वजनदारी के साथ भाग लेते हैं। सोलापुर मर्चेण्ट एसोसिएसन के आप सेक्रेटरी रहे थे और इस समय सोलापुर कापड़ आढ़तिया मंडल के सेक्रेटरी हैं। राष्ट्रीय कार्यों में आप बड़ी दिलचस्पी से भाग लेते हैं। आपने सोलापुर जिला कान्फ्रेंस और प्रांतीय कान्फ्रेंस में कई कार्य्य किये हैं। स्थानीय हिन्दू महासभा के आप ट्रेझरर रहे। सन् १९२५ के हिन्दू मुसलमानों के झगड़े के समय चन्द मुसलमानों ने आप पर प्रहार किया था, जिससे आपके सिर में दो भारी चोटें आईं, लेकिन आपने इन प्रहारों को मुस्तैदी से सहन कर अपने सामने वालों को ऐसा करारा जवाब दिया, जिसकी याद उन्हें भी बहुत समय तक रहेगी। वयस्क होने के बाद से ही आप शुद्ध स्वदेशी वस्त्र धारण करते हैं तथा खादी प्रचार में आपने कई प्रकार से भाग लिया है। सन् १९३२ से ३५ तक आप स्थानीय म्यु० कमेटी के मेंबर रहे थे तथा वर्तमान में म्यु० के एजूकेशनल बोर्ड के मेंबर हैं। स्थानीय जैन मन्दिर में आपने बहुत

सी सम्पत्ति लगाई है। इस समय आपके यहां कपड़े का व्यापार होता है। आपकी फर्म सोलापुर की व्यापारिक समाज में मातबर मानी जाती हैं।

इसी प्रकार इस परिवारमें धीरजमलजीके छोटे बन्धु सेठ सूरजमलजीके गुलाबचन्द जी तथा रतनचन्दजी नामक दो पुत्र हुए। आप दोनों सज्जनोंका स्वर्गवास हो गया है। सेठ गुलाबचंदजीके शोभाचन्दजी तथा मूलचन्दजी और रतनचन्दजीके हीरालालजी व चांदमलजी नामक पुत्र हुए। इनमें मूलचन्दजी पारनेरमें व्यापार करते हैं। हीरालालजीके पुत्र भागचन्दजी सोलापुरमें कपड़ेका व्यापार करते हैं। दूसरे कुन्दनमलजी अहमदनगरमें रहते हैं एवं तीसरे पेमराजजी अजमेरमें धन्नालालजी मन्नालालजीके यहां दत्तक गये हैं।

सेठ शिवदानमलजी धनराजजी गांधी, गुलेदगुड्ड

इस परिवारके मालिकोंका मूल निवासस्थान सेठजीकी रीयां (मारवाड़) का है। वहांसे इस परिवारके पूर्वज सेठ शिवदानमलजी गांधी लगभग ५० वर्ष पूर्व व्यापारके लिये वेटगिरी (गदगके पास) आये तथा वहां आप सर्विस करते रहे। थोड़े समय बाद संवत् १९५३ के करीब सेठ शिवदानमलजी अपने बड़े पुत्र सेठ धनराजजीको साथ लेकर गुलेज गुढ (कर्नाटक) आये तथा कपड़ेका व्यापार आरम्भ किया। सेठ शिवदानमलजी बड़े व्यापार चतुर और हिम्मतवान पुरुष थे। अपने अपने व्यापारको जमाया। संवत् १९७२ की मिती चेत सुदी ६ को आप स्वर्गवासी हुए। आपके थोड़े समय बाद आपके बड़े पुत्र सेठ धनराजजी गांधी भी संवत् १९७३ की भादवा बदी २ को स्वर्गवासी हो गये।

सेठ शिवदानमलजीके धनराजजी, जुगराजजी तथा विरदीचन्दजी नामक ३ पुत्र हुए। इनमें विरदीचन्दजी तो छोटी वयमें ही स्वर्गवासी हो गये थे। सेठ जुगराजजी गांधीने अपने पिता शिवदानमलजी तथा बड़े भाई धनराजजीके स्वर्गवासी हो जानेके बाद अपने व्यापारको बड़ी योग्यतासे सञ्चालित किया। गुलेजगुड्डके व्यापारिक समाजमें आप प्रतिष्ठित सज्जन थे। धार्मिक कार्योंमें आपकी अच्छी रुचि थी। संवत् १९९१ की श्रावण सुदी १३ को आप स्वर्गवासी हो गये।

वर्त्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ धनराजजी गांधीके पुत्र सेठ मोतीलालजी एवं सेठ जुगराजजीके नथमलजी हैं। श्री मोतीलालजी गांधीका जन्म संवत् १९६५ की जेठ सुदी ६ को हुआ। आप सयाने तथा समझदार युवक हैं। हरएक धार्मिक तथा शिक्षाके कार्मोंमें आप सहायता देते रहते हैं। पीपाड़ जैन कन्याशाला व बड़लू पाठशालामें आपने सहायता दी है। आपके भाई नथमलजी ६ सालके हैं। आप श्री श्वे० जैन स्थानकवासी आम्नायके हैं। इस समय आपके यहां शिवदानमल धनराजके नामसे कपड़ा तथा साहुकारीका कारबार होता है।



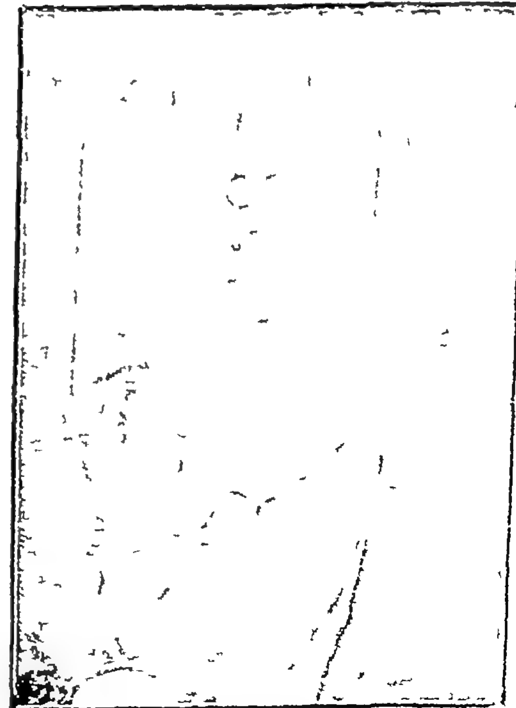
सेठ जुगराजजी गांधी (शिवदानमल धनराज)
गुलेदगुड्ड (बीजापुर)



श्रीशिवलालजी भगवानदासजी गांधी,
सोलापुर



सेठ मोतीलालजी गांधी, (शिवदानमल धनराज)
गुलेदगुड्ड



सेठ अभयराजजी नाहर
जबलपुर

लाला कुञ्जीलालजी गांधी मेहताका खानदान, बनारस

इस परिवारके पुरुषोंका मूल निवासस्थान मुल्तान (पञ्जाब) का है। आप गांधी मेहता गौत्रके श्री जैन दिगम्बर हैं। इस परिवारमे लाला मोतीसिंहजी हुए। आप मिलनसार, योग्य तथा अनुभवी थे। आप ही सर्व प्रथम मुल्तानसे काल्पीके राजा लोदीके दीवान होकर कालपी गये थे। आपकी योग्यता तथा कार्यकुशलतासे प्रसन्न होकर मुसलमान बादशाहने "दीवान" की पदवीसे विभूषित किया। आप कालपीमें ही स्वर्गवासी हुए। आपके परिवारवाले भी वहीं पर बस गये। आपके परिवारमें आगे जाकर श्रीचंदजी, विद्याचन्दजी तथा मानिकचन्दजी नामक तीन पुत्र हुए।

लाला मानिकचन्दजी बड़े दानी तथा धर्मात्मा व्यक्ति हो गये हैं। आप काल्पीसे मुर्शिदाबाद गये तथा वहाँपर जाकर आपने शिखरजी और सोनागिरीजीमें एक २ मन्दिर बनवाया जो आज भी विद्यमान है। लाला श्रीचन्दजीके मुन्नीलालजी और पलटीलालजी नामक दो पुत्र हुए। इनमें लाला पलटीलालजीने कालपीमे एक मन्दिर और धर्मशाला बनवाई जो आज भी विद्यमान है। लाला पलटीलालजीके मनसुखरायजी तथा सर्वसुखरायजी नामक दो पुत्र हुए। इनमें सर्वसुखरायजीके ताराचन्दजी, हरकचन्दजी तथा कुञ्जीलालजी नामक तीन पुत्र हुए। इनमें ताराचन्दजी सेठ मनसुखरायजीके नामपर गोद चले गये।

लाला ताराचन्दजीका खानदान:—लाला ताराचन्दजी बड़े धर्मात्मा थे। आप कालपीमें प्रसिद्ध जमींदार व बेंकर थे। आप म्युनिसीपैलिटीके मेम्बर तथा यहांकी जनतामें माननीय थे। आपके कुन्दनमलजी नामक पुत्र हुए। आप भी सार्वजनिक कार्यकर्त्ता तथा म्यु० कमिश्नर रहे। आपके किशनचन्दजी एवं बाबूलालजी नामक दो पुत्र हुए। लाला किशनचन्दजीके पुत्र राजकुमारसिंहजी बी० ए० एल० एल० बी० हैं तथा शिक्षित व मिलनसार युवक हैं। आप बनारसमें वकालत कर रहे हैं।

लाला हरकचन्दजीका खानदान—लाला हरकचन्दजीने कालपीमें एक मन्दिर बनवाया है। आपलोग श्वेताम्बर मतावलम्बी हैं। आपके पुत्र फकीरचन्दजीके पुत्र दीपचन्दजी कालपीमें कपड़ेकी दुकान कर रहे हैं।

लाला कुञ्जीलालजीका खानदान—लाला कुञ्जीलालजीका जन्म सं० १८७३ मे हुआ। आप बड़े धार्मिक तथा सरल स्वभाववाले थे। आपने शिखरजीकी यात्रा पैदल चलकर की थी। आप हर रोज महावीर स्वामीके दर्शन किये विना भोजन नहीं करते थे। आप सं० १९६३ में गुजरे। आपके विषयमें ऐसा कहा जाता है कि आप कभी झूठ नहीं बोले। आपके शिखरचंदजी, अयोध्याप्रसादजी तथा बनारसीदासजी नामक तीन पुत्र हुए। लाला शिखरचन्दजी व इनके पुत्र फूलचन्दजीका स्वर्गवास हो गया।

अयोध्याप्रसादजीका खानदान—लाला अयोध्याप्रसादजीका जन्म सं० १९१० में हुआ।

आप कसरत प्रिय, अच्छे पहलवान हैं। आप आजतक भगवत् भजन करते हुए शान्ति लाभ कर रहे हैं। आपके दौलतचन्दजी, लालचन्दजी एवं गुलालचन्दजी नामक तीन पुत्र हैं। आप तीनों बन्धुओंका जन्म क्रमश सं० १९३५, १९५४ तथा १९६० में हुआ। लाला दौलतचन्दजी अभी भी कालपीमें कपड़ेका व्यापार करते हैं। आपके मोतीचन्दजी, विमलचन्दजी, हीराचन्दजी एव प्रतापचन्दजी नामक पांच पुत्र विद्यमान हैं। इनमे बाबू मोतीचन्दजी बनारस चले गये हैं तथा यहांपर जवाहरातका व्यापार करते हैं।

लाला लालचन्दजी तथा गुलालचन्दजीको आपके काका बनारसीदासजी बनारस ले आये थे। आप दोनों बन्धु मिलनसार हैं तथा अपने-अपने जवाहरात व बैंकिङ्गके व्यापारको स्वतन्त्र रूपसे सफलतापूर्वक कर रहे हैं। लालचन्दजी सेशन कोर्टके जूरी भी हैं। आपके नगीनचन्दजी तथा रिखबचन्दजी नाम दो पुत्र व लाला गुलालचन्दजीके प्रकाशचन्दजी तथा दीपचन्दजी नामक दो पुत्र हैं।

लाला बनारसीदासजीका खानदान—लाला बनारसीदासजीका जन्म सं० १९१७ का था। इस खानदानमें आप एक बहुत योग्य, व्यापार कुशल एवं जवाहरातके व्यापारमें निपुण हो गये हैं। आप ही सबसे पहले कालपीसे बनारस आये तथा यहां आकर आपने जवाहरात का व्यापार प्रारम्भ किया जिसमें आपने बहुतसी सम्पत्ति उपार्जित की। आप यहांके नामी जौहरी, प्रतिष्ठित व्यक्ति तथा अनुभवशील पुरुष थे। आप समयके बड़े पाबन्द थे। आपका स्वभाव बड़ा सादा था।

जवाहरातके व्यापारमें सम्पत्ति व प्रतिष्ठा प्राप्त करनेके साथ ही साथ आपने सार्वजनिक तथा परोपकारके कामोंमें अच्छा योग दिया था। आपने प्रयत्न करके बनारसमें एक जैन दिगम्बर महाविद्यालय खोला था, जिसमें आपने सर्व प्रथम १०००) प्रदान किये थे। आप इस संस्थाके कई वर्षों तक कोषाध्यक्ष भी रहे। इसके अतिरिक्त कई समय आपने इस संस्थाकी सहायता की थी। आपको जैनधर्म व सिद्धान्तोंका अच्छा ज्ञान था। चतुर्दशी को अपनी फर्म बन्द करके आप अपना पठन-पाठन किया करते थे। आपका बनारसकी ओसवाल समाजमें अच्छा सम्मान था। आपका विवाह बनारसके प्रसिद्ध पुरुष राजा बच्छराजजीकी पोतीसे हुआ था। आपका सं० १९८४ की पौष बदी ११ को रथयात्रामें भगवानका दर्शन करते हुए हृदयकी गति रुक जानेके कारण एकदम स्वर्गवास हो गया था। आपके काशीप्रसादजी नामक एक पुत्र हुए। आपका जन्म सं० १९३५ में हुए। आप धार्मिक भावनाओंके व्यक्ति थे। आप बनारस तीर्थ कमेटीके मेम्बर भी थे। आप अपने व्यापारको सफलतापूर्वक सचालित करते हुए सं० १९६१ में स्वर्गवासी हुए। आपके फतेचन्दजी, केशरीचन्दजी, अमीचन्दजी तथा मिलापचन्दजी नामक चार पुत्र हुए।

लाला फतेचन्दजीका जन्म सं० १९७० में हुआ। आप मिलनसार हैं। वर्तमानमें आप ही अपने सारे जवाहरातके व्यापारका संचालन कर रहे हैं।



स्व० लाला बनारसीदासजी गांधी, बनारस



दानवीर सेठ मूलचन्दजी बलदोटा बार्शी



स्व० लाला काशीप्रसादजी गांधी, बनारस



लाला लालचन्दजी गांधी, बनारस

सुराणा

लाला प्यारेलालजी सुराणा मूंगेवाले, देहली

इस खानदान वाले बहुत पुराने समयसे अन्दाजन २५० वर्षोंसे देहलीमें ही निवास कर रहे हैं। आप लोग सुराणा गौत्रके श्री जै० श्वे० स्था० आम्नायको माननेवाले हैं। इस परिवारमें लाला प्यारेलालजी, पन्नालालजी तथा कन्हैयालालजी नामक तीन भाई हुए। प्राचीन समयमें यह खानदान बहुत प्रतिष्ठित रहा है। आपलोगोंके यहांपर मूंगेका व्यापार इतने बड़े स्केलपर होता था कि आजतक आपलोगोंके वंशज मूंगेवालेके नामसे मशहूर हैं।

लाला प्यारेलालजीः—आप इस खानदानमें बड़े प्रतिष्ठित तथा व्यापार कुशल व्यक्ति हो गये हैं। आपने अपने समयमें अपनी फर्मपर नीलमका व्यापार शुरू किया। चांदीमें भी आपने बहुत व्यापार किया। आप इस बाजारमें भी बहुत प्रसिद्ध पुरुष गिने जाते थे। आपका तत्कालीन जम्बू महाराजसे अच्छा परिचय था। आपका वहांपर इतना सम्मान था कि जब आप जाते तब महाराजा साहब आपको अपने पास सम्मान पूर्वक बिठाते थे। इसके अतिरिक्त जबतक आप जम्बू नहीं जाते तबतक स्टेट नीलमका व्यापार नहीं करती थी। करीब ४० वर्ष पूर्व आप तीनों भाई अलग २ होकर अपना स्वतन्त्र रूपसे व्यापार करने लग गये थे। तभीसे आपलोगोंके वंशज अलग अलग व्यापार करते आ रहे हैं।

लाला पन्नालालजीके पुत्र उमरावसिंहजी मूंगेके व्यापारको सफलतापूर्वक चलाते हुए स्वर्गवासी हुए। आपके उत्तमचन्दजी नामक पुत्र हुए जो अतीव भाग्यशाली थे। मगर आठ वर्षकी आयुमें ही आप गुजर गये। तदनन्तर लाला उमरावसिंहजीके नामपर नागौरसे जीतमलजी गोद आये। लाला जीतमलजीने मूंगेके व्यापारमें विलायती नकली मूंगोंके चल जानेके कारण कुछ सुस्ती देखकर अपने यहांपर हुण्डी, चिट्ठीका व्यापार शुरू कर दिया था जिसमें आपको काफी सफलता प्राप्त हुई। आप श्वे० स्था० कान्फ्रेंसके मेम्बर भी रहे थे। आप बड़े धार्मिक व्यक्ति थे। आप सं० १९७१ में स्वर्गवासी हुए। आपके नामपर कन्हैयालालजीके पौत्र (जवाहरलालजीके पुत्र) माणकचन्दजी गोद आये। आपका भी स्वर्गवास हो गया। अतः आपके नामपर आपके बड़े भाई नानकचन्दजी गोद आये।

लाला नानकचन्दजीका जन्म सं० १९३५-३६ में हुआ। आपने अपने यहांपर जवाहरातका व्यापार शुरू किया तथा इसमे काफी सफलता प्राप्त की। आप श्वे० स्था० कान्फ्रेंसके मेम्बर भी रहे थे। आप धार्मिक व्यक्ति थे। आपका स्वर्गवास स० १९७१ में हो गया। आपके कपूरचन्दजी तथा मिलापचन्दजी नामक दो पुत्र विद्यमान हैं।

लाला कपूरचन्दजीका जन्म सं० १९६९ में हुआ। आप ही वर्तमानमें अपने सारे व्यापारको संचालित कर रहे हैं। आप मिलनसार युवक हैं। आपके धर्मचन्दजी तथा पद्मचन्दजी नामक दो पुत्र हैं। बाबू मिलापचन्दजीका सं० १९९१ में स्वर्गवास हो गया है। आप

लोगोंका खानदान आज भी मूंगेवालोंके नामसे मशहूर है। आप मे० नानकचन्द कपूरचन्दके नामसे देहलीमें पीतलके वर्तनका व्यापार करते हैं। आपका फर्म जैन ब्रास वेअर मार्टके नामसे मशहूर है। देहलीमे आपका एक वहुत वड़ा मकान है।

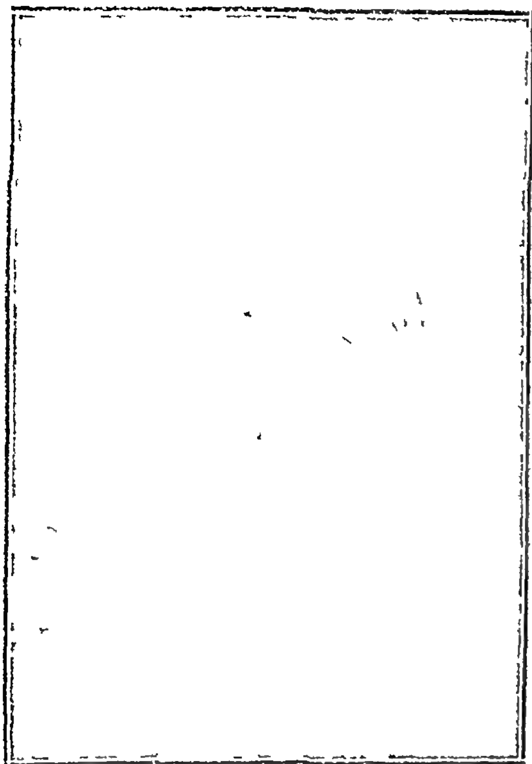
वावू निहालचन्दजी राय सुराणा का खानदान, वनारस

इस खानदानके पूर्वजोंका मूल निवासस्थान नागौर (मारवाड़) का था। आपलोग श्री० जै० श्वे० मं० मार्गीय हैं। इस परिवारवाले नागौरसे देहली तथा देहलीसे मुगलकालमें आगरा आये। आगरासे आपलोग वनारसमें आकर रहने लगे। इस खानदानमे रायसिंहजी हुए। आपके पूर्वज वनारसमें वैंकिंगका व्यापार करते थे। आपके गङ्गाप्रसादजी नामक पुत्र हुए। गङ्गाप्रसादजीके पन्नालालजी तथा पन्नालालजीके किशनचन्दजी नामक पुत्र हुए। आपलोग गवर्नमेंटमें सर्विस करते रहे। वावू किशनचन्दजीके विशनचन्दजी, निहालचन्दजी, पूरनचन्दजी तथा आनन्दचन्दजी नामक चार पुत्र हुए।

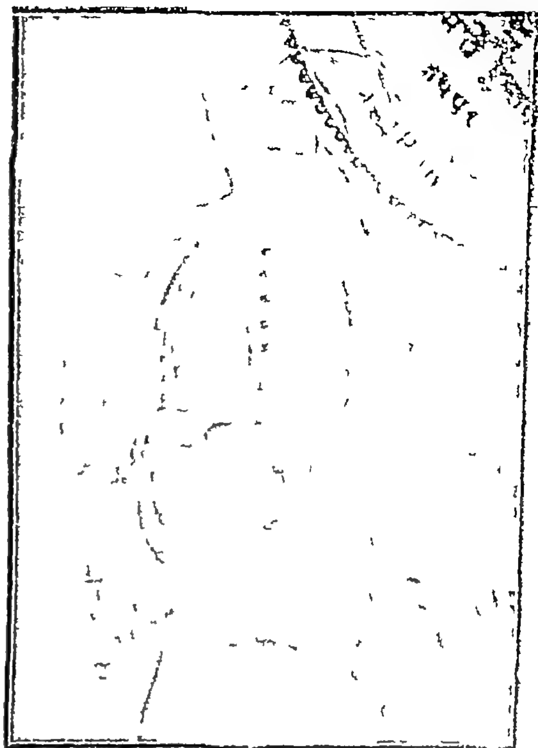
वावू विशुनचन्दजी—आपका जन्म १८ मई सन् १८५२ में हुआ। आप योग्य तथा कार्य्यकुशल व्यक्ति थे। आप गवर्मेंट सर्विसमें डिप्टी कलक्टर गाजीपुरमें रहे। आप अनुभवशील तथा मिलनसार महानुभाव थे। गवर्मेण्टके अन्तर्गत आपका अच्छा सम्मान था। आप तथा आपके तीनों भाई जव छोटे थे तव आपके पिताजीका स्वर्गवास हो गया था। ऐसी स्थितिमे आपका लालन-पालन आपकी दादी गङ्गाप्रसादजीकी धर्मपत्नीने किया। उस समय आपलोगोंकी देख-रेख राजा शिवप्रसादजी सितारे हिन्दके अन्डरमें रही।

वावू निहालचन्दजीः—आपका जन्म ५ दिसम्वर सन् १८५४ में हुआ। आपने कलकत्ता यु० से वी० ए० पासकर अलाहावाद हाईकोर्टसे ला पास किया। आप शिक्षित, कार्य्यकुशल तथा योग्य व्यक्ति हो गये हैं। पहले-पहल आप नैपालकी रेसीडेन्सीमें गवर्मेण्टकी ओरसे मीर मुंशी नियुक्त हुए। इसके वाद आप उन्नति करते गये। आप तीक्ष्ण वुद्धिवाले सज्जन थे। आप कोर्टके मुन्सिफ, सवजज आदि रहे। आपके ईमानदारीसे कार्य्य करनेके उपलक्षमें ब्रिटिश गवर्मेण्टने आपको सर्टिफिकेट देकर सम्मानितत किया है। यहांसे रिटायर हो जानेके पश्चात आप वीकानेर स्टेटमें चीफ जजके उच्च पदपर नियुक्त किये गये। मगर वहांपर अस्वस्थ रहनेके कारण आप उस पदसे इस्तीफा दे वनारस चले आये।

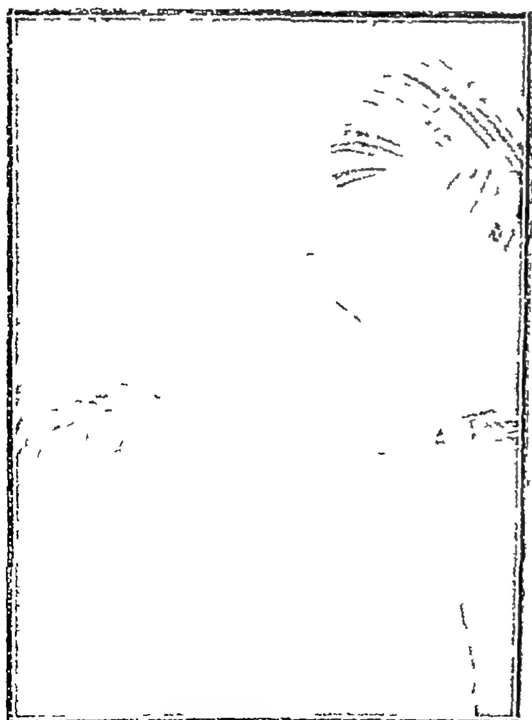
आप वड़े सार्वजनिक स्पीरीटवाले सज्जन थे। आप वनारस हिन्दू यु० के कोर्टके मेम्वर थे तथा आपने इसमें एक जैन सीटके कायम करनेमें वहुत कोशिश की थी जिसमें आप को पूर्ण सफलता मिली। आप धर्म पालनमें दृढ़ विचारोंके महानुभाव थे। आप वड़े वजनदार तथा माननीय व्यक्ति गिने जाते थे। आपका ब्रिटिश गवर्मेन्ट, वनारस तथा वीकानेर—स्टेटमें अच्छा सम्मान था। आप १५ दिसम्वर सन् १६२६ को स्वर्गवासी हुए। आपके खुशालचन्दजी, गुलालचन्दजी, महतावचन्दजी एवं सितावचन्दजी नामक चार पुत्र हुए।



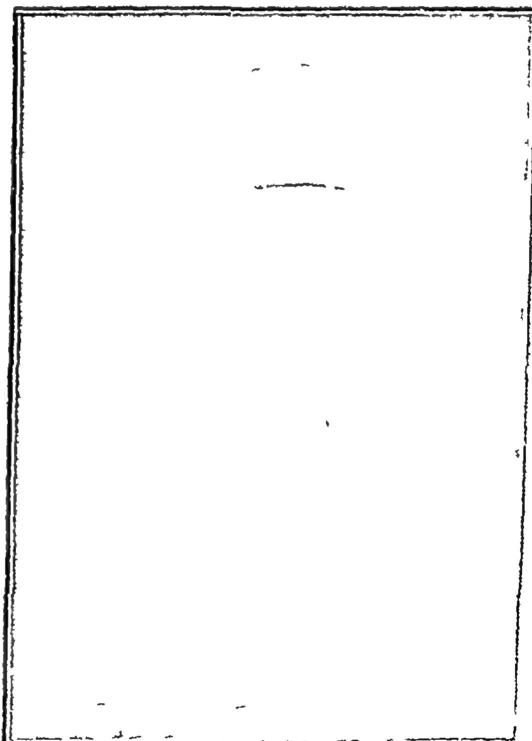
स्व० बाबू निहालचन्दजी रायसुराणा, बनारस



स्व० बाबू आनन्दचन्दजी रायसुराणा, बनारस



स्व० लाला नानकचन्दजी सुराणा मूंगावाले, देहली



बाबू धर्मचन्दजी [illegible] बनारस

बाबू खुशालचन्दजीका जन्म सन् १८८६ की ३ दिसम्बरको हुआ। आप बी० ए० एल० एल० बी० पास शिक्षित सज्जन हैं। आप बनारस बैंककी भागलपुर शाखाके मैनेजर, बनारस काटन मिलके सेक्रेटरी व बनारस हिन्दू यु० के कोर्टके मेम्बर रहे हैं। आपके जयचन्दजी, रायचन्दजी एवं रिखबचन्दजी नामक तीन पुत्र हैं। बाबू गुलालचन्दजीका जन्म २७ अक्टूबर सन् १८९२ में हुआ। आप वर्त्तमानमें एजेन्सी व अन्य व्यापार करते हैं। आपके अमीरचंदजी, लालचन्दजी, लाभचन्दजी, मोतीचन्दजी एवं अभयचन्दजो नामक पांच पुत्र हुए। इनमेंसे प्रथम दो भाई तो व्यापारमें भाग लेते हैं। तीसरे बाबू लाभचन्दजो एल० एल० बी फायनलमें व मोतीचन्दजी एफ० ए० में पढ़ रहे हैं। पांचवे बन्धुका स्वर्गवास हो गया है। बाबू महताबचन्दजी का जन्म जुलाई सन् १८९६ में हुआ। आप कलकत्तेमें जूट की दलाली करते हैं। सितावचन्दजीका जन्म १८९८ में हुआ। आप जमशेदपुरमें व्यापार करते हैं। आपके निर्मलचन्दजो, ललितचन्दजी, विनोदचन्दजी तथा सुबोधचन्दजी नामक चार पुत्र हैं।

बाबू पूरनचन्दजीका जन्म १३ जून सन् १८५६ में व स्वर्गवास १६ मई सन् १९०५ में हुआ। आप तहसीलदारीके पदपर काम करते रहे। आपके पुत्र उदयचन्दजीका भी स्वर्गवास हो गया है।

बाबू आनन्दचन्दजी—आपका जन्म २० फरवरी सन् १८५८ में हुआ। आप जवाहरातके व्यापारमें निपुण तथा व्यापार कुशल व्यक्ति थे। आपने अपने व्यापारमें तरक्की की। बनारसमें जमींदारी खरीद की। इस प्रकार अपने खानदानकी प्रतिष्ठा स्थापित की। आप ५० वर्षके बाद गृहस्थाश्रम छोड़कर धर्मध्यानमें अपने शेष जीवनको बिताने लग गये थे। आप बड़े धर्मध्यानी व्यक्ति थे। कई स्थानोंपर आपने पशु बलि बन्द करवाये तथा अनेक धार्मिक संस्थाओंको आपने मदद पहुंचाई। आपने अपनी जमीदारीपर मांसाहार तो बिलकुल ही बन्द करवा दिया था। आप २७ अगस्त सन् १९३४ को स्वर्गवासी हुए। आपके मानकचंदजी नानकचंदजी, फतेचंदजी एवं रूपचंदजी नामक चार पुत्र हुए।

बाबू मानकचंदजीका जन्म सन् १८८८ की १५ दिसम्बरको हुआ। आप वर्त्तमानमें एक्सपोर्ट एवं इम्पोर्टका कार्य्य करते हैं। आपने आय० ए० तक शिक्षा प्राप्त की है। आपके विजयचंदजी तथा पद्मचंदजी नामक दो पुत्र हुए। इनमें प्रथमका स्वर्गवास हो गया है। दूसरे अभी एफ० ए० में पढ़ रहे हैं। बाबू नानकचंदजीका जन्म सन १८९५ की १६ अप्रेलको हुआ। वर्त्तमानमें आप जवाहरातका व्यापार करते हैं। आप जै० श्वे० तीर्थ सोसायटीके आनरेरी सेक्रेटरी एवं धर्मके कामोंमें बहुत भाग लेते हैं। आपके खेमचन्दजी तथा हेमचन्दजी नामक दो पुत्र हैं। बाबू फतेचंदजीका जन्म १ अक्टूबर सन् १९०० में हुआ। आप कलकत्तामें जूट ब्रोकर हैं। आपके कुशलचन्दजी, पृथ्वीचन्दजी तथा किशोरचन्दजी नामक तीन पुत्र हुए। कुशलचन्दजीका स्वर्गवास हो गया है। बाबू रूपचन्दजीका जन्म २६ सितम्बर सन्

१९०२ में हुआ। आप अभी व्यापार करते हैं। आपके धर्मचन्दजी नामक एक पुत्र हैं।

आप लोगोंके यहां बनारसमें जवाहरात, बैंकिंग व जमीदारीका काम होता है। आप लोगोंका सारा खानदान सम्मिलित रूपसे प्रेमपूर्वक रह रहा है।

बोथरा

बाबू उदयचन्दजी बोथरा का खानदान, मुर्शिदाबाद बालूचर

इस खानदानके सज्जनोंका मूल निवासस्थान कोड़मदेसर (बीकानेर-स्टेट) का है। आप लोग बोथरा गौत्रके श्री जै० श्वे० मं० आम्नायको माननेवाले हैं। इस खानदानके पूर्व-पुरुष केशरीचन्दजी अपने पुत्र जसरूपजीको लेकर सम्वत् १८३२ के करीब देशसे बाहर रवाना हुए व सर्वप्रथम मुर्शिदाबाद आये। यहां आकर आपने स्वतन्त्र मनिहारीका व्यापार किया। इस खानदानवालोंने अपनी उन्नति सर्विस करके नहीं की वरन् अपने व्यापारिक परिश्रमसे सारी सम्पत्ति कमाकर अपनी प्रतिष्ठा स्थापित की। बाबू जसराजजीके दयाचन्दजी नामक एक पुत्र हुए।

बाबू दयाचन्दजी—आप व्यापार कुशल, योग्य तथा धर्मात्मा पुरुष हो गये हैं। आपने अपनी फर्मपर कपड़ेका व्यापार प्रारम्भ किया जिसमें आपको बहुत सफलता प्राप्त हुई। आपने अपने व्यापारकी तरक्कीके लिये कलकत्ता तथा जंगीपुर (मुर्शिदाबाद डि०) में भी फर्में खोली थीं। इस तरह लाखों रुपयेकी सम्पत्ति कमाकर आपने मुर्शिदाबादके मन्दिरमें चांदीके चौक व चन्दोवा करीब ४०००) की लागतका प्रदान किया व सिद्धाचलजी (शत्रुंजय) पर सदाव्रत चालू किया था। इसी प्रकार ३२ भर सोनेके श्रीदादाजीके चरण भी आपने बनवाये थे। आपका मुर्शिदाबादकी जैन जनतामें अच्छा सम्मान था। आप सं० १९३२ की श्रावण वदी ११ को स्वर्गवासी हुए। आपके नामपर रेणीसे श्री शिवदानमलजीके पुत्र उदय-चन्दजी बोथरा गोद आये।

बाबू उदयचन्दजीका जन्म सं० १९०६ की फाल्गुन सुदी १५ को हुआ था। आप तेरा-पन्थी खानदानसे यहांपर गोद आये थे। मगर आपने उदार नीति द्वारा इस खानदानके मन्दिर मार्गीय भावनाओंका पूरा पूरा आदर किया व मन्दिर आदि कार्य्योंमें अग्रभाग लेते हुए अपना तेरापन्थी धर्म पालते रहे। आपने भी अपने व्यापारको सफलतापूर्वक सञ्चालित किया व अपने खानदानकी प्रतिष्ठा स्थापित की। आप बड़े लोकप्रिय और मिलनसार महानुभाव थे। आपमें न तो अभिमान था और न अपनी प्रशंसाके प्रति प्रेम। आपने कई सत्कार्य्य कर यश सम्पादित किया। आपका सं० १९६० के आसोज सुदि ११ को स्वर्गवास हो गया। आपके स्वर्गवास पर सारी मुर्शिदाबादकी जनताने शोक मनाया था तथा स्वेच्छासे अपनी २



बाबू दयाचन्दजी बोथरा, मुर्शिदाबाद बालूचर



श्री सुगनचन्दजी कोठारी रेंहठी (भोपाल)
परिचय देखिये पृष्ठ ५



बाबू बुधसिंहजी बोथरा, मुर्शिदाबाद बालूचर



श्री जवाहरलालजी नाहठा, भरतपुर परिचय देखिये पृष्ठ २६

दुकानें बन्द करके शव के साथ साथ चले थे। आपके चुन्नीलालजी, धन्नूलालजी, बुधसिंहजी, अमरचन्दजी तथा कमलापतजी नामक पांच पुत्र हुए। आप सब बन्धु इस समय अपना अपना अलग व्यवसाय कर रहे हैं। इनमें बाबू चुन्नीलालजी व कमलापतजी मुर्शिदाबादमें हैं। बाबू धन्नूलालजीका स्वर्गवास हो गया है।

बाबू बुधसिंहजीका जन्म सं० १९३६ की चैत्र वदी १२ को हुआ। आप मिलनसार सज्जन हैं तथा अपनी जमींदारीकी व्यवस्था योग्यतापूर्वक कर रहे हैं। आपके खड्गसिंहजी, जसवन्तसिंहजी, पुण्यवंतसिंहजी तथा विनयवन्तसिंहजी नामक चार पुत्र तथा हीराकुमारी एवं देवकुमारी नामक दो पुत्रियां हैं। इनमें श्री हीराकुमारी बड़ी विदूषी तथा साध्वी स्त्री हैं। अपने पतिके स्वर्गवासी हो जानेके पश्चात् आप अपना सारा जीवन पढ़ाई तथा ज्ञान प्राप्त करनेमें व्यतीत कर रही हैं। आप सांख्य, वेदान्त तथा व्याकरण तीर्थ हैं और वर्त्तमानमें न्याय शास्त्रका अध्ययन कर रही हैं। आप बौद्ध तथा जैन सिद्धांतोंका अच्छा ज्ञान रखती हैं। बाबू खड्गसिंहजी अपनी जमींदारीके संचालनमें भाग लेते हैं, बाबू जसवन्त सिंहजी बम्बई आर्ट स्कूलमें फिफ्थइयरमें, पुण्यवंतसिंहजी इञ्जीनियरिङ्ग कालेजमें फोर्थइयरमें व विनयवन्तसिंहजी इन्टरमें विद्याध्ययन कर रहे हैं। आप सब बन्धु शिक्षित एवं मिलनसार हैं।

बाबू अमरचन्दजी मिलनसार तथा सरल स्वभाववाले सज्जन हैं। आप वर्त्तमानमें भागलपुर नाथनगर में कपड़ेका व्यापार करते हैं। आपके निर्मलचन्दजी तथा उद्योतचन्दजी नामक दो पुत्र हैं।

यह खानदान मुर्शिदाबादकी ओसवाल समाजमें प्रतिष्ठित समझा जाता है।

गुलाबचन्दजी बोथराका खानदान, जयपुर

इस खानदानके सज्जनोंका मूल निवासस्थान बीकानेरका है। आपलोग बोथरा गौत्रके श्रीजैन श्वे० स्था० सम्प्रदायको माननेवाले हैं। इस खानदानमें सेठ मायाचन्दजी हुए। आपके सवाईसिंहजी तथा सवाईसिंहजीके नवलसिंहजी नामक पुत्र हुए। सेठ नवलसिंहजी ही सबसे पहले बीकानेरसे करीब २०० वर्षोंपूर्व जयपुर आये और यहींपर स्थायीरूपसे निवास करने लगे। तभीसे आपके वंशज यहींपर निवास कर रहे हैं। आपके छोटमलजी, सरवसुखजी तथा चुन्नीलालजी नामक तीन पुत्र हुए।

सेठ सरवसुखजी कोठीवालीका व्यापार करते थे। आपके मन्नालालजी, धन्नालालजी तथा चौथमलजी नामक तीन पुत्र हुए। सं० १९४० के करीब आप तीनों भाइयोंके खानदानवाले अलग अलग होकर अपना स्वतन्त्र व्यापार करने लगे। सेठ मन्नालालजीके परिवारमें इस समय कोई नहीं हैं। सेठ धन्नालालजीके परिवारमें उनके पुत्र मगनमलजीके पुत्र हजारीमलजीके पुत्र चम्पालालजी विद्यमान हैं।

सेठ चौथमलजीका जन्म सं०१९१२ में हुआ। आपने पहले पदल मद्रासमें सर्विस की।

फिर आप जयपुर चले आये और यहां पर जवाहरात का व्यापार शुरू किया जिसमें आपको क़ाफी सफलता प्राप्त हुई। आप धार्मिक व्यक्ति भी थे। आपका सं०१९६९ में स्वर्गवास हो गया है। आपके नामपर जोधपुरसे श्रीपूनमचन्दजी वच्छावतके पुत्र गुलावचन्दजी सं० १९५७ में गोद आये।

सेठ गुलावचन्दजीका जन्म सं० १९५० में हुआ। आप मिलनसार व्यक्ति हैं तथा अपने जवाहरातके व्यापारको सफलतापूर्वक चला रहे हैं। आप जैन श्वे० स्था० सुवोध मिडिल स्कूलके सेक्रेटरी १० सालोंतक रहे। इस स्कूलके ट्रस्टियोंमेंसे भी आप एक हैं। इसके अतिआप जुएलर्स एसो० की एक्जीक्यूटिह्व कमेटीके मेम्बर भी हैं। आपके मिलापचन्दजी, कैलाशचन्दजी, प्रकाशचन्दजी तथा कमलचन्दजी नामक चार पुत्र विद्यमान हैं। श्रीमिलापचन्दजीने इसी साल वी० ए० का इम्तहान दिया है। वावू कैलाशचन्दजी इन्टरमें पढ़ते हैं। आप दोनों मिलनसार हैं।

सेठ लक्ष्मणदासजी बोथराका खानदान, बीकानेर

(मेसर्स शिवलाल पन्नालाल कोटा)

इस परिवारके लोगोंका मूल निवासस्थान वीकानेरका हैं। आप ओसवाल समाजके बोथरा गौत्रीय श्री जैन श्वेताम्वर तेरापन्थी आम्नायको माननेवाले सज्जन हैं। इस परिवारमें सेठ लक्ष्मणदासजी हुए। आप व्यापार कुशल थे। आपके समयमें आपकी फर्मपर अफीमका व्यापार होता था। धर्मध्यानकी तरफ भी आपका अच्छा ध्यान था। आपके मनसुखदासजी शिवलालजी, एव दीपचन्दजी नामक तीन पुत्र हुए। इन तीन बन्धुओंमेंसे प्रथम दो भाईयोंका स्वर्गवास क्रमशः स० १९६३ एवं १९६५ में हुआ। सेठ दीपचंदजी वर्तमानमें विद्यमान हैं। सेठ मनसुखदासजीके नथमलजी नामक एक पुत्र हुए। आप व्यापार कुशल एवं होशियार व्यक्ति हैं। आपके तोलारामजी नामक एक पुत्र हैं।

सेठ शिवलालजीके धनराजी एवं पन्नालालजी नामक दो पुत्र हैं। आप दोनों बन्धुओंका जन्म क्रमशः संवत् १९६१ एवं १९६४ में हुआ। आप दोनों मिलनसार एवं उत्साही व्यक्ति है। वर्तमानमें आप दोनों अपने फर्मके व्यवसायको संचालित कर रहे है।

सेठ दीपचंदजी व्यापार कुशल एवं मिलनसार सज्जन हैं। वर्तमानमें आप ही इस परिवारमें सबसे बड़े एव अपने व्यापारके प्रधान संचालक हैं। आपके हीरालालजी नामक एक पुत्र हैं। आप भी मिलनसार हैं।

वर्तमानमें इस परिवारवालोंकी बीकानेरमें तीन-चार फर्मे हैं जिनपर किराना अफीम आदि का व्यवसाय होता है। आप लोगोंकी कोटामें भी मे० शिवलाल पन्नालालके नामसे एक ब्रांञ्च हे जिसपर पेचा-पगड़ी एवं वैंकिगका व्यवसाय होता है।



सेठ गुलाबचन्दजी बोथरा, जयपुर



बाब मिलापचन्दजी S/o सेठ गुलाबचन्दजी बोथरा, जयपुर



बाबू कैलासचन्द्रजी S/o गुलाबचन्दजी बोथरा



बाब प्रकाशचन्द्रजी S/o सेठ गुलाबचन्दजी बोथरा

समदड़िया

सेठ मानमलजी बिरदीचन्दजी समदड़िया, मंचर (पूना)

इस परिवारके मालिकोंका मूल निवासस्थान बुचकलां (पीपाड़के समीप—मारवाड़) मे हैं। वहां इस परिवारके पूर्वज सेठ अमरचन्दजी समदड़िया निवास करते थे। आपके पुत्र सेठ बिरदीचंदजी समदड़िया हुए। आप लगभग सौ-सवासौ वर्ष पूर्व व्यापारके लिये दक्षिण प्रान्तमे आये एवं आपने मंचर नामक स्थानपर अपना लेन-देनका व्यापार आरम्भ किया। आपके हीराचंदजी, चतुरभुजजी, रामचन्दजी तथा मानमलजी नामक ४ पुत्र हुए। इन बन्धुओं में से सेठ मानमलजीने इस कुटुम्बके व्यापारको बढ़ाकर अपनी साम्पत्तिक स्थितिको मज़बूत किया। साथ ही अपने परिवारकी मान प्रतिष्ठामें भी आपके हाथोंसे अच्छी उन्नति हुई। मंचर तथा आसपासकी जनतामें आप वजनदार व्यक्ति माने जाते थे। सं० १९६८ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र सेठ आनन्दरामजी तथा सेठ राजमलजी समदड़िया हुए। आप दोनों सज्जन विद्यमान हैं।

सेठ आनन्दरामजी राजमलजी समदड़िया—आप दोनों बन्धुओंका जन्म क्रमशः संवत् १९४२ की कार्तिक सुदी १५ तथा सम्वत १९४६ में हुआ। आपका शिक्षण मचरमें ही अपने पिताजीकी देखरेखमें हुआ। आप दोनों भाई मचर, पूना तथा महाराष्ट्र प्रान्तकी जैन समाजमें नामांकित व्यक्ति हैं। आप बन्धुओंने अपने पिताजीके स्वर्गवासी हो जानेके बाद संवत् १९६९ में मंचरके श्री सुमतिनाथ भगवानके मन्दिरकी प्रतिष्ठाका उत्सव अपनी आगेवानीमें पूरा कराया। इस मन्दिरकी प्रतिष्ठाका कार्य्य लगभग ४० सालोंसे रुका हुआ था और इसके कारण समाजमें मनोमालिन्य पैदा हो रहा था। पर आपलोगोंके प्रेममय व प्रभावपूर्ण व्यवहार से शांति व समझौता स्थापित हुआ और कार्य्य निर्विघ्न समाप्त हुआ। जातिकी सभा समितियों एवं कान्फ्रेंसोंमें भी आप दोनों सज्जन अच्छी दिलचस्पी लेते रहते हैं। जुन्नरके मारवाड़ी सम्मेलनमें सं० १९८८ में सेठ आनन्दरामजीने स्वागताध्यक्षका पद सम्मानित किया था। इसी प्रकार आप ग्राम पंचायतके प्रेसीडेण्ट तथा लोकल बोर्डके मेम्बर भी निर्वाचित हुए थे। मञ्चर की हिन्दू मुस्लिम जनतामें आपका अच्छा वजन है एवं इन जातियोंमें प्रेममय व्यवहार बने रहनेका आप हमेशा प्रयास करते रहते हैं। इस समय आपके जिम्मे श्री अम्बालाल बाकुभाई धर्मार्थ दवाखाना मचर, श्रीपूना डिस्ट्रिक्ट पांजरापोल मंचर एवं जैन मन्दिरकी व्यवस्थाका भार है।

सेठ राजमलजी समदड़िया शिक्षित तथा विद्यानुरागी सज्जन हैं। श्री मूर्ति पूजक जैन वाचनालय नामक आपका एक स्वतन्त्र वाचनालय है। इसमें पुस्तकोंका अच्छा संग्रह है। इसके अलावा आपके पास लगभग ४०-५० पत्र आते रहते हैं। आपके पठनप्रेमसे ग्रामकी जनताकी जागृतिमें अच्छी मदद मिली है। सेठ आनन्दरामजीके २ पुत्र हैं जिनके नाम क्रमशः

उत्तमचंदजी, भागचंदजी एवं पन्नालालजी हैं। इन तीनों भाइयोंका जन्म क्रमशः संवत् १९६९-७१ तथा ७५ में हुआ है। आप तीनों भाई सुशील तथा शान्त प्रकृतिके युवक हैं तथा फर्मके व्यापारमें भाग लेते है। इस समय इस परिवारका मंचरमें सेठ मानमल बिरदीचंदके नामसे सराफी, बैंकिंग व साहुकारीका व्यापार होता है। सेठ रामचन्द्रजीके पुत्र प्रेमराजजी, लालचंदजी भी मंचरमें अपना स्वतन्त्र व्यापार करते हैं।

बोहरा

सेठ मेघराजजी पूनमचन्दजी बोहरा, घोड़नदी (पूना)

इस परिवारके मालिकोंका मूल निवासस्थान बराथड़ खींवसरके पास (जोधपुर स्टेट) में है। आपलोग श्वेताम्बर जैन समाजके ढेलडिया बोहरा गोत्रके सज्जन हैं। बराथड़से व्यापार के निमित्त इस परिवारके पूर्वज सेठ फतेचन्दजी बोहरा दक्षिण प्रांतके घोड़नदी नामक स्थानपर आये। आपके साथमें आपके पुत्र भींवराजजी और मेघराजजी भी थे। घोड़नदीमें इन तीनों पिता पुत्रोंने किरानेकी किरकोल दुकानदारी आरम्भ की तथा इस व्यापारसे सम्पत्ति उपार्जित करके रिसालेके साथ लेनदेनका व्यापार आरम्भ किया। उन दिनों घोड़नदीमें रेजिमेन्ट बहुत बड़ी सख्यामें रहती थी। इसलिये इस कार्य्यमें आपको बहुत बडी सफलता प्राप्त हुई। इन तमाम व्यापारोंका मुख्य संचालन सेठ मेघराजजी बोहरा करते थे। आप बड़े होशियार, चतुर तथा बुद्धिमान पुरुष थे। आपके हाथोंसे अपने परिवारके सम्मान और सम्पत्तिकी विशेष उन्नति हुई। गांवकी पञ्चपञ्चायतीमें भी आप सम्माननीय व अग्रगण्य पुरुष माने जाते थे। अपनी फर्मपर साहुकारी लेनदेन भी आपहीके समयमें आरम्भ हुआ। इस प्रकार अपने व्यापारको दृढ़ बनाकर आप सं० १९२२ में स्वर्गवासी हुए। आपके सेठ ताराचन्दजी और पूनमचंदजी नामक दो पुत्र हुए। इन दोनों भाइयोंका व्यापार लगभग ५० साल पहिले अलग अलग हो गया।

सेठ ताराचन्दजी बोराका जन्म लगभग स० १९०२ में हुआ था। जातिकी पञ्चपञ्चायतीमें तथा समाजमें आपभी सम्माननीय सज्जन थे। धार्मिक कामोंकी ओर आपका बड़ा लक्ष था। आपकी अगवानीमें घोड़नदीमें श्रीपार्श्वनाथ भगवानका मदिर बना तथा आपने अपने व्ययसे उसपर कलश चढ़वाया। लगभग स० १९८५ में आप स्वर्गवासी हुए। इस समय आप- के पुत्र जुगराजजी और हीरालालजी विद्यमान हैं

सेठ पूनमचन्दजी बोहरा—आपका जन्म सं० १९१६ की कार्तिक बदी ११ के दिन हुआ। आप घोड़नदी तथा आसपासके जैन समाजमें प्रतिष्ठित सज्जन हैं। दान धर्मके कामोंमें आपका अच्छा ध्यान है। आपने अपने बन्धु मेघराजजीके साथ सन् १९०७ में शिरूर मामलेदार कचहरीमें लगभग १ हजारकी लागतसे एक कारञ्जा बनवाया। सेठ पूनमचन्दजी शिरूर म्युनिसिपैलेटीमें ३० सालतक कार्य्य करते रहे। इस संस्थाके आप चेयरमैन और वाइस प्रेसिडेंटके

पदपर भी सम्मानित रहे। इसी तरह तालुका लोकलबोर्डमे भी आप मेम्बर रहे। अहमदनगरके श्रीजैनमन्दिरकी प्रतिष्ठामें आपने ३ हजार रुपयोंकी सहायता दी। आपकी दुकान घोड़नदीमे प्रधान एवं मातवर मानी जाती है। आपके पुत्र श्रीकेवलचन्दजीका जन्म सं० १६६४ की जेठ सुदी ३ को हुआ। श्रीकेवलचन्दजी सयाने तथा समझदार युवक हैं तथा अपनी दुकानके व्यापार संचालनमें प्रधान सहयोग देते हैं। इस समय आपके यहाँ मेघराज पूनमचन्दके नामसे साहुकारी तथा कृषिका कार्य्य होता है। बेलवण्डी बुदरक (अहमदनगर) में आपकी दुकान है।

इस दुकानपर श्रीशिवलालजी चोथरा ५० सालोंसे मुनीम हैं। आप बड़े सयाने तथा समझदार पुरुष हैं तथा जातिकी पञ्चपञ्चायतीमें दुकानकी ओरसे आप ही जाते हैं। आपकी ईमानदारी से प्रसन्न होकर दुकानके मालिकोंने आपको ७ हजारकी लागतके घर जमीन वगैरह बख्शिसमें दिये हैं।

बापना

सेठ लछमणदासजी केशरीमलजी बापना, बड़वाहा

इस खानदानके पुरुषोंका मूल निवासस्थान लवारी (मारवाड़) का है। आप बापना गौत्रके श्री जै० श्वे० मं० मार्गीय सज्जन हैं। इस खानदान वाले सेठ हजारीमलजी तक तो मारवाड़में ही रहते रहे। सेठ हजारीमलजी ही सबसे पहले देशसे चलकर पीपलगांव बसवत (जिला नाशिक) गये तथा वहांपर अपना व्यापार शुरू किया। आपके शेष भाई तो इसी गांवमें रहने लगे। मगर हजारीमलजी सं० १६५८ में बड़वाहा (इन्दौर-स्टेट) आये और यहां पर कपड़े, किराना आदिका व्यापार शुरू किया। आप अच्छे स्वभावके तथा व्यापारमें होशियार पुरुष थे। आपको व्यापारमें अच्छी सफलता मिली। आपके लछमणदासजी नामक एक पुत्र हुए।

सेठ लछमणदासजी—आप व्यापार कुशल तथा कार्य्यकुशल व्यक्ति थे। आपका सं० १६२१ में जन्म हुआ था। आपने व्यवसायके अन्तर्गत बहुत सफलता प्राप्त की व धीरे-धीरे बड़वाहा के अन्दर अपना एक जीन व प्रेस स्थापित किया। आपने बहुत प्रयत्न करके बड़-वाहके अन्दर एक कपासकी मण्डी जमाई। आप बड़वाहामें बड़े इज्जतदार, प्रतिष्ठित तथा लोक प्रिय सज्जन थे।

आपने करीब डेढ़ लाखकी लागतसे बड़वाहके अन्दर एक सुन्दर मन्दिर व धर्मशाला बनवाई। मन्दिरके प्रतिष्ठा महोत्सवको आपने बड़े ठाटसेकरवाया जिसमें करीब ५००००) पचास हजार रुपये व्यय हुये होंगे। आपका स्वर्गवास सं० १६६१ में हुआ। आपके केशरी-मलजी नामक एक पुत्र विद्यमान हैं।

सेठ केशरीमलजीका जन्म सं० १६४४ में हुआ। आप मिलनसार तथा व्यापार कुशल

व्यक्ति हैं। वर्त्तमानमें आप ही अपने सारे व्यापारको संचालित कर रहे हैं। आप वड़वाहमें प्रतिष्ठित एवं लोकप्रिय व्यक्ति हैं। आप अपने मन्दिरकी अच्छे ढगसे व्यवस्था कर रहें हैं। आपके सौभागचन्दजी तथा चौथमलजी नामक दो पुत्र हैं। आप लोगोंका वड़वाहमें एक जीन तथा एक प्रेस सफलतापूर्वक चल रहा है। आपका खानदान वड़वाहामें प्रतिष्ठित माना जाता है।

सेठ मोतीरामजी कुन्दनमलजी बापना, घोड़नदी (पूना)

इस परिवारका मूल निवासस्थान सिरला ढावा (मेड़ताके पास) है। वहांसे लगभग ६०, ७० साल पहिले इस परिवारने कुचेरामे अपना निवास बना लिया है। लगभग १२५ साल पहिले सेठ उदयचन्दजी वापना अपने निवास स्थान सिरला ढावासे व्यापारके लिये दक्षिण प्रान्तमें आये तथा धसाई (थाणा जिला-तालुका मुरवाड़) मे पहुचकर इन्होने वहां लेनदेनका कारवार आरम्भ किया। इनके फतेहचन्दजी, हीराचन्दजी, धीरजी, जीतमलजी और मोतीचन्दजी नामक ५ पुत्र हुए। धसाईसे आकर लगभग १०० साल पहिले इन पांचों भाइयोंने घोड़नदीमे कपड़ेकी दुकान खोली तथा सालमें चार माह वारिशमें घोड़नदी रहते थे और फिर धसाई चले जाते थे। जब घोड़नदीका व्यापार जम गया तव सेठ हीराचन्दजी और मोतीचन्दजीने अपना स्थाई निवास यहीं बना लिया तथा सेठ फतेहचन्दजी और धीरजीका परिवार धसाईमें ही निवास करता रहा। पीछेसे धीरजी मारवाड़ चले गये। शेप दो वन्धु हीराचन्दजी तथा जीतमलजीके कोई सन्तान नहीं रही।

सेठ फतेहचन्दजी वापनाका परिवार--आपके जोधराजजी, गम्भीरमलजी तथा कस्तूरचन्दजी नामक ३ पुत्र हुए। इन भाइयोंमें जोधराजजीके चन्दनमलजी, मगनमलजी और जीवराजजी नामक ६ पुत्र हुए। श्री चन्दनमलजी धसाईमे कपड़ेका व्यापार करते थे। आपके हंसराजी, चुन्नीलालजी तथा धूमरमलजी नामक ३ पुत्र हुए। इन भाइयोंमेंसे सेठ हंसराजजी धसाईमे ही स्वर्गवासी हो गये, सेठ चुन्नीलालजी इस समय कुचेरामे निवास करते हैं एव सेठ धूमरमलजी अपने दादा सेठ कुन्दनमलजीके यहाँ घोड़नदी में दत्तक आये हैं। सेठ चुन्नीलालजीके पुत्र पारसमलजी वङ्गालमें व्यापार करते हैं। सेठ मगनमलजीके रामदेवजी, लिखमीचन्दजी, मालमचन्दजी तथा खेमचन्दजी नामक ४ पुत्र हुए। इनमें सेठ लिखमीचन्दजी इस समय वङ्गालमें व्यापार करते हैं तथा रामदेवजीके पुत्र भँवरीलालजी, मनोहरमलजी और पारसमलजी गायबांदा (बंगाल) मे कारवार करते हैं। इसी प्रकार सेठ जीवराजजीके पौत्र अमोलकचन्दजी (सेठ मेरूदासजीके पुत्र) भी फूलछड़ी (वङ्गालमें) रहते हैं।

सेठ गम्भीरमलजीके अमरचन्दजी, रतनचन्दजी, वेदरचन्दजी तथा हरकचन्दजी नामक ४ पुत्र हुए। इनमें वेदरचन्दजी मौजूद हैं। इन चारों भाइयोंका कारवार धसाईमें होता है। रतनचन्दजीके नामपर मिलापचन्दजी दत्तक हैं और हरकचन्दजीके पुत्र जुगराजजी हैं।



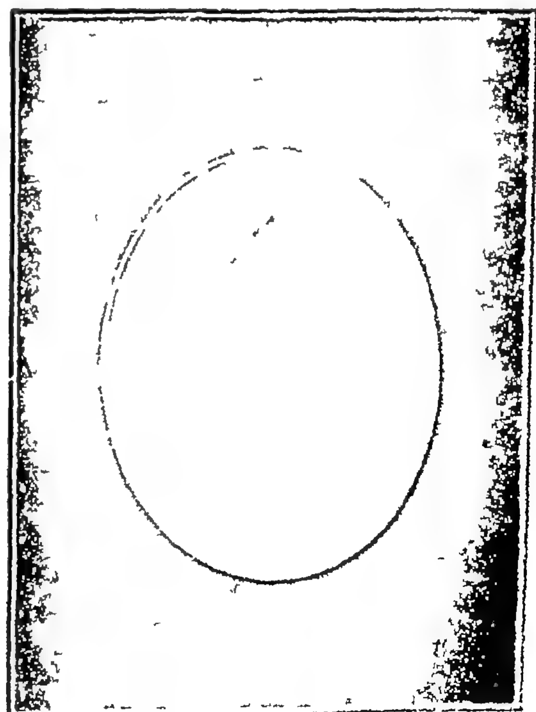
सेठ घुमरमलजी बापना, घोडनदी (पूना)



सेठ नन्दरामजी बरडिया, गोटगाव



बाबू शोभाचन्दजी बापना, घोडनदी (पूना)



श्री उत्तमचन्दजी [illegible] ([illegible])

सेठ धीरजी बापना मारवाड़में ही रहते थे। इनके सुकजी तथा धनजी नामक दो पुत्र हुए। आप दोनों भाई घोड़नदीमें व्यापार करते थे। पश्चात् सुखजी मारवाड चले गये तथा धनजी घोड़नदी में ही व्यापार करते रहे। सेठ सुखजी कार्तिक बदी ११ सं० १९५७ में स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र रावतमलजी सतारामे सेठ कनीरामजीके नामपर दत्तक गये हैं। सेठ धनजीके हरकचन्दजी, भूरमलजी तथा देवीचन्दजी नामक तीन पुत्र हुए। इनमें देवीचन्दजी मौजूद हैं। आपने १९५९ की पौष सुदी १३ को बड़ौदामे अमरविजयजीसे दीक्षा ली। आपका देवविजयजी नाम है।

सेठ मोतीचन्दजी बापनाका परिवार—हम ऊपर लिख आये हैं कि सेठ हीराचन्दजी और मोतीचन्दजीने अपने कपड़े तथा सराफीके व्यापारको घोड़नदी में बहुत उन्नतिपर पहुंचाया। आप लोग अपने आसपासकी व्यापारिक समाजमें नामी पुरुष थे। आपके हाथोसे परिवारके मान सन्मानकी एवं दानधर्मकी बड़ी वृद्धि हुई। हजारों रुपयोंको सहायता आपने गरीबोंको दी। सेठ हीराचन्दजी लगभग ७० साल पहिले तथा सेठ मोतीचन्दजी लगभग ५० साल पहिले स्वर्गवासी हुए। सेठ मोतीचन्दजीके पुत्र सेठ कुन्दनमलजीका जन्म सवत् १९०० में हुआ। आप भी अपने पिताजीकी भांति प्रतिष्ठित तथा नामी पुरुष हुए। धर्म ध्यानमें आपका बड़ा लक्ष था। आपने पूज्य श्री तिलोकऋषिजीके सामने प्रतिज्ञा ली थी कि अमुक रकमसे जितनी अधिक रकम मेरे पास होगी, वह सब पुण्यार्थ लगादेऊँगा और इस प्रतिज्ञाको आप आजन्म निवाहते रहे। जातिपाँति व आसपासके जैन समाजमें आप आगेवान पुरुष थे। आपके १४ पुत्र हुये थे। पर कोई जीवित नहीं रहा। आपने अतएव अपने परिवारसे ही चन्दनमलजीके छोटे पुत्र धूमरमलजीको कुचेरासे दत्तक लिया। संवत् १९७१ की फाल्गुन वदी ४ को आप स्वर्गवासी हुए। आपने अपने स्वर्गवासके समय ५ हजार रुपये तथा धूमरमलजीने १ हजार रुपये धर्मार्थ निकाले थे।

सेठ धूमरमलजी बापनाका जन्म संवत् १९४८ में कुचेरामे हुआ। सम्वत् १९६० में आप सेठ कुन्दनमलजीके यहाँ दत्तक आये। आप घोड़नदीकी जैन समाजमें सयाने एवं समझदार पुरुष हैं। आप जैन श्वे० स्थानकवासी आम्नायके माननेवाले सज्जन हैं। दान धर्म तथा सार्वजनिक कामोंमे यह परिवार सहयोग लेता रहता है। सेठ धूमरमलजीके पुत्र शोभाचन्दजी सुशील युवक हैं। आपका जन्म सम्वत १९६७ में हुआ है। इस समय आपके यहां कुन्दनमल धूमरमल तथा शोभाचन्द धूमरमलके नामसे कपड़ा, गिरवी तथा हुण्डी चिट्ठीका व्यापार होता है।

सेठ रावतमलजी मिश्रीमलजी बापना, सतारा

हम ऊपरके परिचयमे सेठ सुखजी बापनाका परिचय दे चुके हैं। सेठ सुखजीके स्वर्गवासी हो जानेपर उनके पुत्र सेठ रावतमलजी बापना स० १९४९ में सतारामें आये। सेठ

रावतमलजीका जन्म सम्वत् १९३९ की फाल्गुन वदी १० को खजवाणा (कुचेरा) में हुआ। सेठ कनीरामजी सतारावालोंकी धर्मपत्नीके अचानक प्लेगमें स्वर्गवासी हो जानेके कारण उनकी सम्पति आपको प्राप्त हुई। आपने सतारा आकर अपने कपड़ेके व्यापारको वढ़ाया तथा द्रव्य उपार्जन किया। सम्वत् १९६५ में आपने अपनी फर्मकी एक शाखा रावतमल भूरमलके नामसे वम्बईमें खोली। पर सम्वत् १९७४ में आपकी सुयोग्य पत्नीके स्वर्गवासी हो जानेसे एवं उनके कोई पुत्र भी जीवित न रहनेसे दुःखी होकर आपने अपनी वम्बईकी दूकानको वन्द कर दिया। पश्चात् आपने दो विवाह और किये, जिनसे मिश्रीमलजीका जन्म १९७७ की वैशाख वदी ६ को तथा हुकमीचन्दजीका जन्म १९८९ की आसोज वदी १० को हुआ।

सेठ रावतमलजीकी व्यापारमें अच्छी वढ़ी हुई हिम्मत है। हर एक धार्मिक कामोंमें आप उदारता पूर्वक व्यय करते हैं। आप सम्वत् १९७४ से हर साल दो माह अपना कारवार वन्द करके पूज्य श्री जवाहरलालजी महाराजकी सेवामें जहां वे चतुर्मास करते हैं वहाँ जाते हैं। इसी प्रकार हर एक साधु मुनिराजके दर्शनोंसे आपको अच्छा प्रेम है।

धूपिया

सेठ नेमीचन्दजी उत्तमचन्दजी मूथा, पाथर्डी (अहमदनगर)

इस परिवारका पूर्व परिचय इस ग्रन्थके पृष्ठ ६२८ में सेठ किशनदासजी माणकचन्दजी मूथा अहमदनगर वालोंके परिचयमें दे चुके हैं। जब सम्वत् १९७३ में सेठ हजारीमलजी, अगरचन्दजी, नेमीचन्दजी और विशनदासजी इन पांचों भाइयोंका व्यापार अलग २ हो गया तबसे इस परिवारकी पाथर्डीकी दुकान सेठ नेमीदासजीके परिवारके भाग में आई। सेठ नेमीदासजी सम्वत् १९६९ में स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र श्री उत्तमचन्दजी इस समय विद्यमान हैं।

सेठ उत्तमचन्दजी मूथाका जन्म सम्वत् १९५७ में हुआ। आप सामाजिक एवं शिक्षा विषयक कार्यों में अच्छी दिलचस्पी लेते हैं तथा स्थानीय श्री तिलोक जैन पाठशाला व जैन वोर्डिङ्गके मन्त्री पदका कार्य्य १३ वर्षों से वड़ी योग्यतासे संचालित कर रहे हैं। पाथर्डीके जैन समाजमें आप समझदार व आगेवान व्यक्ति हैं। आपके यहाँ इस समय कपड़ेका व्यापार होता है।

सेठ देवीचन्दजी चुन्नीलालजा मूथा, वांयोरी (अहमदनगर)

यह परिवार पीपाड़ (जोधपुर-स्टेट) का निवासी है। वहांसे लगभग १२५ साल पहिले इस परिवारके पूर्वज सेठ कानमलजी दक्षिण प्रान्तके अहमदनगर जिलेके डोंगरगांव

नामक स्थानमें आये। आपके दानमलजी, लक्ष्मणदासजी, देवीचन्दजी, चन्दनमलजी, किशनदासजी तथा पूनमचन्दजी नामक ६ पुत्र हुए। इन बन्धुओंमेंसे सेठ दानमलजी लगभग सौ साल पहिले डोंगरगांवसे वांभोरी आये और आपने कपड़ेका व्यापार आरम्भ किया। इनका पञ्चपञ्चायती तथा जातिमें अच्छा सम्मान था। इन छहों भाइयोंमेंसे इस समय सेठ किशनदासजी मौजूद हैं।

सेठ देवीचन्दजीका परिवार—सेठ देवीचन्दजीने अपने कपड़ेके व्यापारको जमा कर अपनी प्रतिष्ठा व सन्मानकी वृद्धि की। सम्वत् १६४० में आप स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र सेठ चुन्नीलालजीका जन्म संवत् १६३६ में हुआ। सेठ चुन्नीलालजी वांभोरीमें प्रतिष्ठित सज्जन हैं। आप यहांकी म्युनिसिपैलिटीके ३ सालोंतक प्रेसिडेंट ६ सालोंतक वाइस प्रेसिडेंट एवं तीन सालोंतक चेयरमनके पदपर रहे। हर एक अच्छे कामोंमें आप सहयोग लेते रहते हैं। आपके मोहनलालजी, उत्तमचन्दजी तथा समरथमलजी नामक ३ पुत्र हैं। आप तीनों भाई भी अपनी फर्मके व्यापारको बड़ी तत्परतासे सह्मालते हैं। श्री मोहनलालजी गत वर्ष तालुका लोकल बोर्डके मेम्बर थे एवं वर्तमानमें डिस्ट्रिक्ट लोकल बोर्ड अहमदनगरके मेम्बर हैं। आपके यहां इस समय वांभोरीमें देवीचन्द चुन्नीलाल तथा चुन्नीलाल समरथमलके नामसे तथा बम्बई व वेलापुरमें उत्तमचन्द मूथाके नामसे आढ़त, कपड़ा तथा फ्रूटकी चलानीका व्यापार होता हैं। वांभोरीके व्यापारिक समाजमें यह फर्म अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती हैं।

मुणोत

सेठ धीरजमलजी चांदमलजी रीयांवाले, लश्कर

इस प्रतिष्ठित खानदानका पूर्व परिचय हम इस ग्रन्थके प्रथम खण्डमें में दे चुके हैं। इस परिवारके पूर्व पुरुषोंने कई महत्वके कार्य्य किये और अपने नाम और यशको खूब चमकाया। इस परिवारवाले जीवनदासजी वगैरह कई सज्जनोंने अपने अतुल ऐश्वर्य्य एवं प्रतिभाके कारण सारे मारवाड़में खूब ख्याति और यश प्राप्त किया। यहांतक कि जोधपुरके महाराजा मानसिंहजी समय-समयपर आपसे आर्थिक सहायताएं लिया करते थे। इस परिवारवालोंके पास आज भी अनेकों महत्वपूर्ण रुक्के एवं पुराने कागजात पाये जाते हैं जिनसे आपलोगोंके प्राचीन ऐश्वर्य्यका पता लगता है। आपलोगोंको जोधपुर दरबारकी ओरसे पुश्त-हा-पुश्तके लिये सेठका सम्माननीय खिताब प्राप्त हुआ था।

इस खानदानके सेठ हमीरमलजीके समयमें इस खानदानकी अजमेर, जबलपुर, सागर, दमोह, लश्कर, उज्जैन आदि २ कई स्थानोंपर दुकानें थी। इसके अतिरिक्त पञ्जाबमें भी आपकी शाखाएँ खुली हुई थी। कई स्थानोंपर ब्रिटिश गवर्मेण्टके खजाने भी आपके जुम्मे

थे। सेठ हमीरमलजी संवत् १६१२ में लश्करमें स्वर्गवासी हुए। आपके धीरजमलजी, चन्दनमलजी तथा रा० सा० चांदमलजी नामक तीन पुत्र हुए। सेठ धीरजमलजी सं० १६११ में स्वर्गवासी हुए। आपके कनकमलजी तथा धनरूपमलजी नामक दो पुत्र हुए। इनमेंसे धनरूपमलजी सेठ चंदनमलजीके नाम पर दत्तक आये। संवत् १६३४ ३५ तक यह परिवार शामलातमें अपना व्यवसाय करता रहा। इसके पश्चात् रा० सा० सेठ चांदमलजीका परिवार अजमेरमें, सेठ कनकमलजीका परिवार सागरमें तथा सेठ धनरूपमलजीका परिवार लश्करमे अपने २ हैड आफीस बनाकर अपनी शाखाओंका व्यापार संचालन करने लगा।

सेठ धनरूपमलजीका व्यापार लश्कर, जवलपुर, भेलसा, उज्जैन आदि स्थानोंमें था। आपका बैंकिङ्ग व्यवसाय भी बहुत बढ़ा-चढ़ा था। सम्वत् १६५५ में आप ग्वालियर आ गये। यहांपर आप ग्वालियर स्टेटके ईसागढ़के तथा भेलसाके खजांची बनाये गये। यह खजानेका कार्य्य अभीतक आपके परिवालोंके पास चला आ रहा है। सेठ धनरूपमलजीका ग्वालियर सार्वजनिक क्षेत्रमें अच्छा सम्मान था। आप यहांके आनरेरी मजिष्ट्रेट तथा म्युनिसिपल मेम्बर भी रहे थे। आपके पुत्र बागमलजीका जन्म सम्वत् १६५३ में हुआ। आप बड़े मिलनसार तथा योग्य सज्जन हैं। आपके पांच गांव जमींदारीके हैं और ग्वालियर स्टेटके दो खजाने भी आपके जिम्मे हैं। आपके गोपीचन्दजी नामक एक पुत्र हैं।

सेठ कनकमलजीके पुत्र भैरोबगसजीके पास सागरमें १३-१४ गांवोंकी जमीदारी है। आप मेसर्स रघुनाथदास हमीरमलके नामसे बैंकिंग तथा जमीदारीका काम काज करते हैं। आपके रिखबदासजी एवं वल्लभदासजी नामक दो पुत्र हैं। बाबू रिखबदासजी बी० ए० में पढ़ रहे हैं।

सेठ मगनमलजी फतेचन्दजी मुहणोत, अमरावती

इस परिवारके मालिकोंका मूल निवासस्थान सेठोंकीरीयां (मारवाड़) है। इस परिवारके पूर्वज सेठ हुकमीचन्दजी मुहणोत रीयाँमें ही निवास करते थे। आपके मानमलजी, गुलालचन्दजी, तखतमलजी, वखतावरमलजी एवं रूपचन्दजी नामक पांच पुत्र हुए। इन भाइयोंमेंसे दो छोटे बन्धु वाल्यावस्थामें ही स्वर्गवासी हो गये थे। शेष तीन भाइयोंमेसे सबसे बड़े भाई सेठ मानमलजी मुहणोत मारवाड़से सं० १८८७ में व्यापारके निमित्त रवाना हुए एवं कई कठिनाइयाँ झेलते हुए बम्बईके पास महाड़बंदर नामक स्थानपर गये तथा सं० १६०० तक आप वहां नौकरी करते रहे। इस प्रकार कठिन परिश्रम द्वारा आपने २००) एकत्रित किये और फिर आप फेरी द्वारा मनिहारी सामानकी बिक्रीका कार्य्य करने लगे। कुछ ही दिनों बाद सं० १६०० मेंही आपने केलसी (रत्नागिरी) में अपनी स्वतन्त्र दुकान की और उसपर किराना और कपडाका व्यापार आरम्भ किया। आपके दो पुत्र नवलमलजी एवं धनराजजी थे। इन भाइयोंमें धनराजजी अपने काका सेठ गुलाबचन्दजीके नामपर दत्तक गये।

जब सेठ मानमलजी लगातार १२ सालोंतक मारवाड़ नहीं आये, तब उनकी धर्मपत्नीने

अपने पुत्र नवलमलजीको सेठ मानमलजीको मारवाड़ लिवा लानेके लिये भेजा। जब ये लोग केलसी पहुचे, तो सेठ मानमलजीने अपना तमाम व्यापार अपने छोटे बन्धु गुलाबचन्दजी एवं पुत्र नवलमलजीको सम्हलाया और आप मारवाड़ आ गये। यहाँ आकर आपने अपने पूर्वजों-का जितना देना था वह सब चुकाया। इस प्रकार आपका जीवन पूर्ण उद्योगमय एवं आशामय रहा।

सेठ नवलमलजीने केलसीके व्यापारको अच्छा बढ़ाया तथा अपनी दुकानकी शाखा आंजरला (केलसीके पास—रत्नागिरी) में खोली। इसके बाद सं० १९३४ में आपने अमरावतीमें दुकान की। इसके पश्चात् आपने अपनी शाखाएं बम्बई और गुलेजगुडमें भी खोलीं। आपने केलसीमें एक हनुमानजीका मन्दिर भी बनवाया। आपके रतनचन्दजी, सूरजमलजी तथा चाँदमलजी नामक तीन पुन हुए और सेठ धनराजजीके पनराजजी और मगनमलजी नामक दो पुत्र हुए। इन भाइयोंमें सेठ रतनचन्दजी सेठ तखतमलजीके नामपर दत्तक गये। सेठ रतनचन्दजी तथा सेठ धनराजजीने इस फर्मकी बम्बई, अमरावती तथा गुलेजगुड शाखाओंको बहुत उन्नति प्रदान की एवं अपनी भागीदारीमे शाखाएं बरोड़ा, सोलापुर, जमखण्डी, रायपुर आदि स्थानोंपर खोलीं। सं० १९७६ में प्लेगके कारण इस परिवारके मालिकोंमें सेठ रतनचन्द-जी, सूरजमलजी, चाँदमलजी, पनराजजी, उदयराजजी (पनराजजीके बड़े पुत्र) एवं मिश्रीमलजी (सूरजमलजीके पुत्र) का स्वर्गवास हो गया, जिससे इस परिवारमें भयङ्कर शोक छा गया। प्रमुख व्यक्तियोंके स्वर्गवासी हो जानेसे योग्य सञ्चालकोंकी कमी हो गई। अतएव कई जगहोंका व्यापार कम कर दिया गया। सं० १९८१ मे इस परिवारका व्यापार भी अलग-अलग हो गया। सेठ मिश्रीमलजीके नामपर सेठ पनराजजीके मझले पुत्र पुखराजजी दत्तक गये हैं। इनका व्यापार मोघामण्डी (पंजाबमें) सूरजमल मिश्रीमलके नामसे होता है।

वर्तमानमें सेठ रतनचन्दजीके परिवारका तथा सेठ मगनमलजीका व्यवसाय सम्मिलित है। सेठ रतनचन्दजीके पुत्र छगनमलजी एवं फतेचन्दजी हुए। इन भाइयोंमें सेठ फतेचन्दजीने इस परिवारके व्यापारको पुनः जोरोंसे उन्नत किया। सेठ छगनमलजीके पुत्र श्रीमाँगीलाल-जीका जन्म सं० १९६९ में हुआ। आप होशियार तथा समझदार युवक हैं तथा अपने व्यापार-को बड़ी तत्परतासे सह्मालते हैं। आपके पुत्र कल्याणमलजी हैं।

सेठ फतेचन्दजी तथा सेठ मगनमलजी प्रतिष्ठित सज्जन हैं। आपकी धार्मिक एवं शिक्षाके कामोंमें अच्छी रुचि है। आपने लगभग ३६ हजार रुपयोंकी लागतसे पीपाड़में एक पाठशालाकी सुन्दर बिल्डिंग बनवाई एवं उस स्कूलके पढ़ाईका सब व्यय भी आप अपनी ओरसे देते हैं। इस पाठशालामे इस समय १६० छात्र शिक्षा पाते हैं। सेठ फतेचन्दजीके पुत्र श्रीजॅवरीलालजी तथा हीरालालजी हैं।

वर्तमानमें इस परिवारका अमरावतीमे सेठ मगनमल फतेचन्द और रतनचन्द छगन-मलके नामसे, गुलेजगुडमें धनराज मगनमलके नामसे, अजरलामे मानमल गुलाबचन्दके नामसे

एवं केलसीमें चांदमल जॅवरीलालके नामसे व्यवसाय होता है। इन सब स्थानोंपर यह फर्म नामांकित मानी जाती है।

मुणोत परिवार, पनवेल (कुलाबा)

इस परिवारके मालिकोंका मूल निवासस्थान सेठोंकी रीयाँ (मारवाड़) है। वहाँ इस परिवारके पूर्वज सेठ राजारामजी और करणमलजी दोनों भ्राता निवास करते थे। इन बन्धुओंमेंसे लगभग १०० वर्ष पूर्व बड़े भ्राता सेठ राजारामजीके नन्दरामजी एवं सेठ करणमलजीके रामदासजी नामक पुत्र हुए।

सेठ नन्दरामजी मुणोतका परिवार—आपके यहां आरम्भसे ही कपड़ा, कृषि तथा साहुकारीका व्यापार होता है। सेठ नन्दरामजीके कोई सन्तान नहीं थी। अतएव उनके नामपर सेठ रामदासजीके ज्येष्ठ पुत्र सेठ किशनदासजी दत्तक आये। सेठ किशनदासजी इस परिवारमें प्रतिष्ठित तथा नामी पुरुष हुए। लगभग सम्वत् १९४९-५० में आपका स्वर्गवास हुआ। आपके मुकुन्ददासजी तथा मोतीलालजी नामक दो पुत्र हुए। सेठ मोतीलालजीने पनवेलके समीप ही बम्बई पूनारोडपर अच्छी लागतसे एक सुन्दर बगीचा बनाया है। आप शौकीन तबियत के और बुद्धिमान पुरुष थे। सेठ मुकुन्ददासजीका स्वर्गवास सम्वत् १९७७ में एवं सेठ मोतीलालजीका स्वर्गवास सम्वत् १९९१ की पोष सुदी १४ को हुआ। इस समय इस परिवारमें सेठ मुकुन्ददासजीके पुत्र लालचन्दजी एवं सेठ मोतीलालजीके पुत्र पन्नालालजी, पेमराजजी एवं शान्तिलालजी विद्यमान हैं। आप सब भाई अपने व्यापार को भली प्रकार सम्हालते हैं। इस समय आपके यहाँ सेठ राजाराम नन्दरामके नामसे व्यापार होता है।

सेठ रामदासजी मुणोतका परिवार—जिस प्रकार इस परिवारके पूर्वज सेठ राजारामजीने पनवेलमें आकर अपना व्यापार शुरू किया उसी प्रकार उनके छोटे भाई सेठ करणमलजीने मारवाड़से आकर पूना जिलेके आलेगाँव नामक गाँवमें अपनी दुकान की। आपके पुत्र सेठ राजारामजी का विवाह आलेगाँवमें ही हुआ। सेठ रामदासजीके किशनदासजी, जसरूपजी, हीरालालजी, शोभाचन्दजी तथा गुलाबचन्दजी नामक ५ पुत्र हुए। इन भाइयोंमें सेठ किशनदासजी अपने काका सेठ नन्दरामजी के नामपर दत्तक गये। कुछ समय बाद सेठ रामदासजीका परिवार भी पनवेलमें आकर रामदास जसरूपके नामसे कपड़ेका व्यापार करने लगा। सब भाई उस फर्मका संचालन करते रहे। सेठ गुलाबचन्दजी इस परिवारमें नामाकित पुरुष हुए। आपने अपने कुटुम्बकी सम्पति तथा सम्मानकी विशेष उन्नति की। सम्वत् १९६० में आपने कपड़ेके व्यापारके साथ साथ एक राइस मिल खोली एवं सांगलीमें श्रीराम गुलाबचन्दके नामसे एक दुकान खोली। यहाँके व्यापारको भी आपने बहुत बढ़ाया। कुछ समय बाद कपड़ेके व्यापारको बन्द कर दिया गया। सेठ जसरूपजी सम्वत् १९५८ में, सेठ शोभाचन्दजी १९५४ में तथा सेठ गुलाबचन्दजी सम्वत् १९७४ में स्वर्गवासी हुए।



स्व० सेठ लक्ष्मणदासजी बापना, बड़वाहा



सेठ केशरीमलजी बापना, बड़वाहा



कमलचन्दजी चोधरा S/o सेठ गुलाबचन्दजी चोधरा, जयपुर



कुं० सौभागचन्दजी बापना S/o सेठ केशरीमलजी बापना, बड़वाहा

इन बन्धुओंमें सेठ जसरूपजीके पुत्र चुन्नीलालजी और सोनीलालजी विद्यमान हैं। सोनीलालजी अपने काका सेठ शोभाचंदजीके नामपर दत्तक गये हैं। आप दोनों भाइयोंका व्यापार अलग अलग है।

सेठ चुन्नीलालजीका जन्म सम्वत् १९४८ में हुआ। आपने अपने काका गुलाबचन्दजीके बाद अपने व्यापारको भली प्रकार संचालित किया तथा १९७९ मे बम्बईमें गुलाबचन्द राजमलके नामसे आढ़तका काम शुरू किया था। थोड़े समय बाद स्वास्थ्य ठीक न होने एवं योग्य कार्य्यकर्त्ताओंके अभावके कारण बम्बईका काम बन्द कर दिया गया। इस समय आपके यहाँ सेठ बरदीचन्द मुणोतके नामसे एक राईस मिल है तथा राजाराम गुलाबचन्द और बरदीचन्द मुणोतके नामसे चावल व आढ़तका व्यापार होता है। इस समय सेठ चुन्नीलालजीके पुत्र हरकचंदजी तथा शांतिलालजी पढ़ते हैं।

सेठ लखमीचन्दजी जड़ावचन्दजी मुहणोत, सिवनी (मालवा)

इस परिवारके मालिकोंका मूल निवासस्थान बीकानेर है। वहांसे इस परिवारके पूर्वज सेठ लखमीचदजी मुहणोत लगभग १०० साल पहिले व्यापारके निमित्त सिवनी (मालवा) आये। यहां आकर आपने लेन-देनका व्यापार आरम्भ किया। आपके नामपर दौलतपुरेसे सेठ छोगमलजी मुहणोतके छोटेभाई (जिनका इटारसीमें छोगमल हजारीमलके नामसे फर्म है) सेठ जड़ावमलजी दत्तक आये। आपके हाथोंसे इस परिवारके व्यापार तथा सम्मानकी वृद्धि हुई। आपने साहुकारी व्यापारमे सम्पत्ति उपार्जित करकेअपने परिवारमें गांव व जमींदारी खरीद की। आप सिवनी म्यु० के मेम्बर तथा पञ्च कमेटीके प्रेसीडेण्ट थे तथा सिवनीके वजनदार और नामी पुरुष थे। शिवनी व आसपासकी जनतापर आपका बड़ा प्रभाव था। जनताके बीचमेंझगड़ोंका तसवीहा आपसे करवानेमें जनता बड़ी सन्तुष्ट होती थी। इस प्रकार प्रतिष्ठा पूर्वक जीवन विताते हुए सम्वत १९६९ की भादवा सुदी में आप स्वर्गवासी हुए। उस समय आपके पुत्र श्री पन्नालालजी व मोतीलालजी बालक थे। अतएव अपनी जमीदारी व व्यापारका तमाम संचालन आपकी धर्मपत्नीजीने बड़ी बुद्धिमत्तापूर्वक किया।

वर्तमान समयमे इस फर्मके मालिक सेठ पन्नालालजी तथा सेठ मोतीलालजी हैं। आप दोनों भाइयोंका जन्म क्रमशः सम्वत् १९६५ तथा १९६८ में हुआ है। आप सिवनीके अच्छे प्रतिष्ठित सज्जन हैं। स्थानीय अस्पताल, गौशाला आदिमें आपने सहायताएं दी हैं। आप लोग जैनोदय प्रिंटिंग प्रेस कमेटी रतलामके मेम्बर हैं। इस समय आपके यहा "लखमीचन्द जड़ावचन्द" के नामसे जमींदारी और साहुकारी लेन-देनका व्यापार होता हैं।

पालावत

लाला सौभागचंदजी रिखवदासजी, लखनऊ

इस खानदानके मालिकोंका मूल निवासस्थान अलवरका था। आप लोग पालावत गौत्रके श्री जै० श्वे० मं० मार्गीय सज्जन हैं। इस परिवारवाले सबसे पहले अलवरसे देहली तथा देहलीसे करीब १०० वर्ष पूर्व लखनऊ आये। तबसे आजतक आप लोग लखनऊमें ही निवास कर रहे हैं। इस परिवारमें लाला जोरामलजी हुए। आपके छोटमलजी तथा छोटमलजीके सौभागचन्दजी व सुगनचन्दजी नामक दो पुत्र हुए। लाला छोटमलजीकी धर्मपत्नीने अपने घरखर्चेसे एक पाठशाला खोली थी जो आजतक सुचारु रूपसे चल रही है। आप सब लोग महाजनी व जवाहरात का व्यापार करते रहे।

लाला सौभागचन्दजीने अपने जवाहरातके व्यापारको बढ़ाया व अपने खानदानकी प्रतिष्ठा स्थापित की। आप बड़े धार्मिक भावनाओंवाले पुरुष थे। आपने ऋषभदेवजी वगैरह स्थानोंके मन्दिरोंके जीर्णोद्धार करवाये थे। आप लखनऊकी ओसवाल समाजमे प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। आपके रिखवदासजी नामक पुत्र हुए।

लाला रिखवदासजी—आपका जन्म सम्वत् १९३१ में हुआ। आप बड़े धार्मिक, केशरियाजीके अनन्य भक्त तथा मिलनसार व्यक्ति थे। आपने कई समय बहुतसे व्यक्तियोंके साथ तीर्थयात्राएँ की थीं। धार्मिक कामोंके साथ ही साथ आपने जवाहरातके व्यापारमें भी काफी सफलता प्राप्त की। आप यहांकी श्रीमाल एवं ओसवाल समाजमें प्रतिष्ठित व्यक्ति गिने जाते थे। आप स्वर्गवासके समय ५०००) पांच हजार रुपया पुण्यार्थ निकाल गये हैं। जैन श्वे० पाठशालाके लिये भी आप ५) मासिक कर गये हैं। आपके रतनचन्दजी, उदयचन्दजी तथा उम्मेदचन्दजी नामक तीन पुत्र विद्यमान हैं। आप तीनों वन्धुओंका जन्म क्रमशः सम्वत् १९६२, १९६४ तथा १९७४ में हुआ। इनमेंसे प्रथम दो वन्धु तो अपने जवाहरातके व्यपारको सफलतापूर्वक चला रहे हैं। तृतीय अभी फोर्थ ईयरमें पढ़ रहे हैं। आप सब मिलनसार एवं उत्साही हैं। लाला उदयचंदजीके जयचन्दजी नामक एक पुत्र विद्यमान है।

इस खानदानकी ओरसे केशरियाजीमें एक छोटी धर्मशाला बन रही है। आप लोग मे० सौभागचन्द रिखवदासके नामसे लखनऊमें जवाहरातका व्यापार कर रहे हैं।

लाला प्यारेलालजी दलेलसिंहजीका खानदान, देहली

इस परिवारवाले मूल निवासी अलवरके हैं। आप लोग पालावत गौत्रके श्री जै० श्वे० मूर्त्तिपूजक हैं। इस खानदानके पूर्व पुरुष करीब २०० वर्ष पहले अलवरसे देहली आये थे। इनमें लाला दीपचन्दजी हुए। आपके सुखलालजी, सुखलालजीके लछमणदासजी तथा लछमणदासजीके प्यारेलालजी नामक पुत्र हुए।


स्व० लाला दुलेलसिंहजी पालावत, देहली


स्व० सेठ बरदीचन्दजी मुणोत, पनवेल (कुलबा


लाला सौभागचन्दजी पालावत, लखनऊ


सेठ फतेचन्दजी मुणोत, पीपाड़

लाला प्यारेलालजी जवाहरातका व्यापार करते रहे। आपका स्वर्गवास करीब ६० वर्ष पूर्व हो गया है। आपके स्वर्गवासके समय आपके पुत्र दलेलसिंहजी एवं टीकमसिंहजीकी बहुत छोटी २ ऊमर थीं। लाला प्यारेलालजीका जन्म स० १९२८ के करीब हुआ। आप योग्य, व्यापार कुशल तथा धार्मिक भावनाओंवाले पुरुष थे। आपने अपने हाथोंसे लाखों रुपयोंकी सम्पत्ति उपार्जित की व सारे सामाजिक कार्य सफलतापूर्वक सम्पन्न किये। आपका स्वभाव सरल व धार्मिक था। आपने तथा लाला टीकमचन्दजीने दिल्लीके नौघरेके जैन मन्दिरमें दो अलग २ वेदियां बनवाई हैं। इसी प्रकार लाला टीकमचन्दजीने श्री आत्मवल्लभ धर्मशालाके नामसे देहलीमें एक धर्मशाला भी बनवाई। लाला दलेल सिंहजीका स्वर्गवास सं० १९९० में हो गया। आपके श्रीचन्दजी, गुलाबचन्दजी एवं बिजयसिंहजी नामक तीन पुत्र हुए। आप तीनों बन्धुओंमेंसे लाला श्रीचन्दजी सं० १९९२ से अलग होकर अपना स्वतन्त्र कारबार कर रहे हैं। आप उत्साही तथा मिलनसार युवक हैं।

लाला गुलाबचन्दजीका जन्म सं० १९५९ में हुआ। आप मिलनसार हैं तथा वर्तमानमें प्यारेलाल दलेलसिंह नामक फर्मके सारे कामको संचालित कर रहे हैं। आपके पदमचन्दजी एवं हेमचन्दजी नामक दो पुत्र हैं। बाबू विजयसिंहजी अभी बालक हैं।

सुचंती

सेठ मालीरामजी फकीरचंदजीका खानदान, जयपुर

इस खानदानवाले बहादुरपुर निवासी सचेती गौत्रीय श्री जै० श्वे० मन्दिर मार्गीय व्यक्ति हैं। इस खानदानमें श्रीचन्दजी नामक व्यक्ति हुए। आपके पुत्र सूरजमलजी सबसे पहले करीब ६० वर्ष पूर्व बहादुरपुरसे जयपुर आये तथा वहांपर कपड़ेका व्यापार शुरू किया। आपको इस व्यवसायमें अच्छी सफलता मिली। आप बड़े धार्मिक मनोवृत्तिवाले व्यक्ति थे। आपने श्रीसुमतीनाथजीके मन्दिरकी व्यवस्थाका कार्य किया जिसे आजतक आपके वंशज बराबर कर रहे हैं। आपके मालीरामजी नामक एक पुत्र हुए।

सेठ मालीरामजी अपने व्यापारको सफलतापूर्वक चलाते रहे। आप सीधे तथा सज्जन व्यक्ति थे। आपके पुत्र फकीरचन्दजीका जन्म सं० १९२८ में हुआ। आप बड़े व्यापार कुशल एवं मिलनसार व्यक्ति हो गये हैं। आपने अपने सम्मानको बढ़ाया तथा व्यापारमे भी तरक्की की। आपका स्वर्गवास सं० १९५६ में हुआ। मरनेके कुछ समय पूर्व आपने अपने परिवार-वालों, इष्ट मित्रों आदिको बुलाकर क्षमा-याचना कर ली मानो कि आपको अपनी मृत्युका पहले हीसे ज्ञान हो गया हो। आपके सागरमलजी, सरदारमलजी तथा फूलचन्दजी नामक तीन पुत्र हुए।

सेठ सागरमलजीका जन्म सं० १९४१ में हुआ। आप धर्मध्यानमें श्रद्धा रखनेवाले

व्यक्ति हैं। वर्तमानमें आप अपने व्यापारको सफलतापूर्वक संचालित कर रहे हैं। अपनी वंश परंपरागत मन्दिरकी व्यवस्था आप भी ठीक ढङ्गसे कर रहे हैं। आपके सिरेमलजी तथा ताराचन्दजी नामक दो पुत्र हैं। बाबू सिरेमलजीका जन्म सं० १९६१ में हुआ। आप मिलनसार हैं तथा व्यापारमें भाग लेते हैं। आपने नौपतजीके उज्जवर्णाके उत्सवपर मंदिरमें श्रावकके १२ व्रत ग्रहण किये हैं। आप नवयुवक सभाके कोषाध्यक्ष हैं। आपके भंवरमलजी एवं ज्ञानचन्दजी नामक दो पुत्र हैं।

सेठ सरदारमलजीका जन्म सं० १९४७ में हुआ। आप भी व्यापारमें सहयोग प्रदान करते हैं। आपके रतनचन्दजी नामक एक पुत्र हैं। आप लोगोंका परिवार सम्मिलित रूपमें रह रहा है। आपके यहांपर त्रिपोलिया तथा जौहरी बाजारमें एक२ फर्म है जिनपर जयपुरी छपमा कपड़ेका व्यापार होता है। इसके अतिरिक्त आपकी त्रिपोलियामें एक रङ्गकी दुकान और है।

लाला खुशालचन्दजी कन्हैयालालजी सुचन्ती, देहली

आप लोगोंका मूल निवास स्थान बहादुरपुर (जिला अलवर) का हैं। आप संचेती गौत्रके श्री जै० श्वे० स्था० सम्प्रदायको माननेवाले हैं। करीब २०० वर्षों से यह परिवार देहलीमें निवास कर रहा है। इस परिवारमें लाला जवाहरलालजी हुए। आपके कालूरामजी, भैरोदासजी, दिलसुखरायजी आदि चार पुत्र हुए। भैरोदासजीके खुशालचन्दजी नामक एक पुत्र हुए।

लाला खुशालचन्दजीका सं० १८९९ में जन्म हुआ था। आप बड़े धार्मिक व्यक्ति थे। आपको गोटा, किनारा तथा रेशमके व्यापारमें बहुत सफलता मिली। आपकी यहांपर अच्छी प्रतिष्ठा थी। आपका स्वर्गवास सं० १९६४ में हुआ। आपके मन्नूलालजी, कन्हैयालालजी, मोतीलालजी तथा हीरालालजी नामक चार पुत्र हुए।

बाबू कन्हैयालालजीका जन्म सं० १९३५ में हुआ। आप मिलनसार हैं तथा अपने बैङ्किङ्ग व हुंडी चिट्ठीके व्यापारको सफलतापूर्वक चला रहे हैं। आपने अपने यहां डिप्टीमलजीको गोद लिया हैं। डिप्टीमलजी तीक्ष्ण बुद्धिवाले बालक हैं।

पीतल्या

सेठ बदीचंदजी बच्छराजजी पीतल्या, जावरा

इस खानदानका पूर्व परिचय इसी खानदानवाले बदीचंद वर्द्धमान पीतल्या रतलामवालोंके इतिहासमें पृष्ट ५८८ पर दिया गया है। इस परिवारका इतिहास बच्छराजजीसे प्रारम्भ होता है।

सेठ बख्तावरमलजी—आप बड़े भाग्यशाली एवं साहसी पुरुष थे। आपने पिताजी द्वारा सं० १९२२ में स्थापित जावरा दुकान सं० १९४४ में जब आप तीनों भाई अलग अलग हो गये तब आपके हिस्सेमें आई। आपने अपनी व्यापार चातुरीसे अपनी फर्मपर अफीमका व्यापार बहुत जोरोंसे प्रारम्भकर लाखों रुपये कमाये। आप जावराकी ओसवाल समाजमें प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। आपका जावरा स्टेटमें तथा यहाकी जनतामे भी अच्छा सम्मान था। व्यापारमें आपका साहस खुला हुआ था। सम्पत्ति कमानेके साथ ही साथ आपने कई लोगों-की सहायता करके उसका सदुपयोग किया था। आपका स० १९५६ मे स्वर्गवास हो गया। आपके चांदमलजी नामक एक पुत्र थे।

सेठ चांदमलजी—आपका जन्म सं० १९३६ में हुआ। आपके पिताजी गुजरे उस समय आपकी वय केवल १७ वर्षकी थी। अतः कुछ सालोंतक जावरा की फर्मका सारा कार्य्य रतलामवालोंने सम्हाला। संवत् १९६२ मे रतलामवालोंने पुनः सारा काम काज सेठ चांदमल-जीके सुपुर्द कर दिया। आप बड़े दयालु एवं मिलनसार व्यक्ति थे। आप जावरामें लोकप्रिय तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति गिने जाते थे। आपने अपने हाथोंसे धार्मिक एवं सार्वजनिक कामोंमें बहुत रुपया खर्च किया। जावरा स्टेटमें भी आपकी अच्छी प्रतिष्ठा थी। आपने स्टेशनके पास एक बङ्गला भी बनवाया है जो आज भी सुन्दर स्थितिमे विद्यमान है आपका स्वर्गवास स० १९८२ में हुआ। आपके बख्तावरमलजी एवं सूरजमलजी नामक दो पुत्र विद्यमान हैं।

श्री बख्तावरमलजी एवं सूरजमलजीका जन्म क्रमशः सम्वत १९६० एवं १९६५ में हुआ आप दोनों मिलनसार व्यक्ति हैं। आपलोग अपने कारबारको भी योग्यतापूर्वक चला रहे हैं। आप दोनोंका जनता एवं राज्यमें अच्छा सम्मान है। बख्तावरमलजीके व्रजलालजी, आनन्दी-लालजी, बसन्तीलालजी एव नन्दलालजी नामक चार पुत्र हैं। इसी प्रकार सूरजमलजीके विनेंद्रमलजी नामक एक पुत्र विद्यमान हैं।

———

बोरड़

सेठ मोतीलालजी कन्हैयालालजी बोरड़, हापुड़

इस खानदानवाले जैसलमेर निवासी बोरड़ गौत्रके श्री जै० श्वे० मंदिर मार्गीय हैं। इस परिवारके पूर्वपुरुष रतनलालजी करीब ८० वर्ष पूर्व देशसे चलकर सिकंदराबाद (जिला बुलद शहर) आये तथा यहापर व्याजका व्यापार किया। आपके मोतीलालजी, गंभीरमलजी एवं बाघमलजी नामक तीन पुत्र हुए।

सेठ मोतीलालजीका जन्म सं० १९३० में हुआ। आपको सिकन्दराबादमें आढ़तके व्यापारमें भी सफलता मिली। आपने संवत् १९७२ में हापुड़में अपनी एक दुकान खोली और आप भी यहां आकर रहने लगे। तभीसे आजतक आपके वंशज यहींपर निवास कर रहे हैं।

आपके दोनों भाई व्यापारमें भाग लेते रहे। सेठ गंभीरमलजीके मुकुटलालजी तथा मोहनलालजी नामक दो पुत्र हुए जो सेठ मोतीलालजीके वंशजोंसे अलग होकर करीब १० सालोंसे अपना अलग व्यापार करते हैं। सेठ मोतीलालजी बड़े प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। आप बड़े धार्मिक हो गये हैं। आपने हापुड़में एक मंदिर तथा धर्मशाला भी बनवाई है। आपका स्वर्गवास सं० १९९१ में हुआ। आपके कन्हैयालालजी नामक एक पुत्र हुए।

सेठ कन्हैयालालजीका जन्म सं० १९५६ में हुआ। वर्त्तमानमें आपही अपने व्यवसायके प्रधान संचालक तथा मिलनसार सज्जन हैं। आपने अपनी एक फर्म गाजियाबादमें भी खोली है। आपने सम्वत् १९८३ में हापुड़में पुण्य श्री जैन लाइब्रेरी नामकी एक लायब्रेरी भी खोल रक्खी है। इसके अतिरिक्त मंदिर तथा धर्मशालाका कार्य्य भी सुचारुरूपसे चल रहा है। इस मंदिरका प्रतिष्ठा महोत्सव सम्वत् १९७९ में यति श्री बरदीचन्दजीने सम्पन्न किया है।

सेठ कन्हैयालालजीके जीवनलालजी, तुलारामजी तथा फकीरचंदजी नामका तीन पुत्र है। यह खानदान यहां की ओसवाल समाजमें प्रतिष्ठित समझा जाता है। आपकी फर्मोंपर गल्ले, रुई, भाड़ा तथा व्याजका व्यवसाय होता है।

पावेचा

सेठ गुलाबचन्दजी मेहताका खानदान, कोटा

इस खानदानका मूल निवासस्थान सोजत (मारवाड़) का था। आप लोग ओसवाल जातिके पावेचा गौत्रीय श्री जैन श्वे० मं० मार्गीय सज्जन हैं। इस खानदानमें सेठ वनेचन्दजी हुए। आपके मूलचन्दजी, मूलचन्दजीके छजमलजी नामक पुत्र हुए। सेठ छजमलजीके रामदासजी एवं नानूरामजी नामक दो पुत्र हुए।

इस खानदानमें सेठ रामदासजी सोजतसे सम्वत् १८९२ के करीब पाली चले गये। आप व्यापार कुशल व्यक्ति थे। आपका जन्म सम्वत् १८६७ में हुआ था। आपने पालीमें अपने व्यापारको बढ़ा कर सम्पत्ति कमाई थी। आपका स्वर्गवास सं० १९२७ में हो गया। आपके हीराचन्दजी एवं गुलाबचन्दजी नामक दो पुत्र हुए। श्री हीराचन्दजी अपने काका नानूरामजी के नामपर गोद चले गये।

सेठ गुलाबचन्दजी—आपका जन्म सम्वत १९१९ की कार्तिक सुदी ८ को हुआ। आप योग्य, व्यापार कुशल एवं धार्मिक सज्जन थे। आपने करीब ५ सालोंतक जोधपुर दरबार श्री यशवंतसिंहजीके छोटे भाई श्री किशोरसिंहजीके पास सफलतापूर्वक कामदारी की। इसके पश्चात् सं० १९३९ में आपने कोटा आकर दलाली की व स० १९४५ से स्वतन्त्ररूपसे अपना अफीमका व्यापार शुरू किया जिसमें आपको बहुत सफलता मिली। आपने शांघाई (चीन) भी आपके अफीमकी पेटियाँ भेजी थीं।

आप वड़े धार्मिक सज्जन भी थे। सं० १६५० में आपने पाटनपोलके एक प्राचीन मन्दिरका जीर्णोद्धार करवाया और एक श्यामपत्थरकी शिखरबन्द वेदी स्थापित कर उसपर सोनेकी कोराई आदिमें वहुतसा धन खर्च किया। इसके अतिरिक्त आपने अपनी हवेलीपर भी एक सुन्दर देरासरजो स्थापित किया जिसकी प्रतिष्ठा सं० १६७४ में कराई। वेदी सुन्दर व सोनेकी कोराईसे भव्य मालूम पड़ती है। सेठ गुलाबचदजी कोटामे प्रतिष्ठित व्यक्ति गिने जाते थे। आपके हाथोंसे कई सत्कार्य हुए। आपने कई जैन पुस्तकोंको छपाकर मुफ्त वितरित किया है। आपने वहुतसे तीर्थों की मय कुटुम्बके यात्रा की। आपका संवत् १६६३ की आषाड़ बदी ६ को स्वर्गवास हो गया। आप आजन्म उपवासादि करते रहे। आपकी धर्मपत्नी भी साध्वी स्त्री थीं। श्री गुलाबचन्दजीके सौभागमलजी एव जोरावरमलजी नामक दो पुत्र हुए।

श्री सौभागमलजीका जन्म सम्बत् १६५२ की कार्तिक सुदी १२ को हुआ। आप मिलनसार, योग्य एवं सज्जन व्यक्ति हैं। सवत् १६८० तक आप सब काम सफलतापूर्वक करते रहे। इसके पश्चात् श्री विनोदीरामजी वालचन्दजीके यहापर सर्विस प्रारम्भ की। आपकी होशियारी एवं वजनदारीसे आपको उक्त सेठोंने सं० १६८२ से अपनी कोटा दुकान का हेड मुनीम वनाकर भेजा। वर्त्तमानमें भी आप कोटा फर्मके प्रधान मुनीम तथा योग्य व्यक्ति हैं। फर्मके सारे कामको योग्यतापूर्वक चला रहे हैं। आपका कोटा स्टेटमें भी अच्छा सम्मान हैं। आपके पुत्र उमरावसिंहजीके विवाहमें कोटा दरवारने लवाजमा, सवार आदि बिना फीसके भेजकर आपके सम्मानको वढ़ाया था। आपके उमरावसिंहजी एवं चैनसिंहजी नामक दो पुत्र हैं। प्रथम व्यापार करने हैं तथा दूसरे अभी पढते हैं।

श्री जोरावरमलजीका जन्म सं० १६६४ की कार्तिक बदी २ को हुआ। आप योग्य व्यक्ति हैं। वर्त्तमानमें आप कोआपरेटिव वैंकके एकाउण्टेंट हैं।

यह खानदान यहांकी ओसवाल समाजमें प्रतिष्ठित समझा जाता है।

चौपड़ा

सेठ चांदमलजी मोहनलालजी चौपड़ा, अहमदनगर

यह परिवार सेठोंकी रीयाँ (पीपाड़—मारवाड़) का निवासी है। वहांसे वहुत समय पूर्व यह कुटुम्ब व्यापारके निमित्त अहमदनगर आया। सेठ चांदमलजीने अपने परिवारके व्यापार तथा सम्मानको विशेष वढ़ाया। आप संवत् १६८२ की आषाढ़ सुदी १४ को स्वर्गवासी हुए। आपके मोहनलालजी, झूमरलालजी तथा चुन्नीलालजी नामक ३ पुत्र विद्यमान हैं। इन तीनों भाइयोंका कारवार सम्वत् १६८६ में अलग हो गया है। तवसे सेठ मोहनलालजी, उप-

रोक्त नामसे अपना स्वतन्त्र व्यापार करते हैं। आपके शान्तिलालजी, कुन्तीलालजी एवं कान्तिलालजो नामक ३ पुत्र हैं। इनके दो बन्धु धर्मानुरागी सेठ मगनमलजीके पास रहते हैं। इस समय आपके यहा कपड़ेका व्यापार होता है।

सेठ केशरीचंदजी दानमलजीका खानदान, कोटा

इस खानदानके सज्जनोंका मूल निवासस्थान जैसलमेरका है। आप ओसवाल जातिके कूकड़ चौपड़ा गौत्रीय श्री जै० श्वे० मं० मार्गीय महानुभाव हैं। आपका वड्क सिंघी है। इस खानदानमें सेठ निहालचन्दजी हुए। आपके धनराजजी एवं केशरीचन्दजी नामक दो पुत्र हुए।

सेठ केशरीचन्दजी सबसे पहले सम्वत् १९१२ के करीब देशसे चलकर छबड़ा (टोंक) आये और वहांपर मेसर्स वागमल राजमल मुमइया अजमेरवालोंके यहांपर नौकरी की। सं० १९२६ तक यहींपर सर्विस करनेके पश्चात् आपने काश्तकारी लेनदेनका अपना स्वतन्त्र कामकाज शुरू किया जिसमे आपको अपनी व्यापार चातुरीसे बहुत सफलता प्राप्त हुई। आप छबडेमे बड़े प्रतिष्ठित व्यक्ति समझे जाते थे। आपका सं० १९६९ में स्वर्गवास हुआ। आपके दानमलजी, माणकचदजी एव लखमीचन्दजी नामक तीन पुत्र हुए।

सेठ दानमलजीका जन्म स० १९२६के चैत्र वदी अमावसको हुआ। आप व्यापारकुशल एव धर्म ध्यानमें विशेष श्रद्धा रखनेवाले सज्जन हैं। आपने अपने हाथोंसे बहुत रुपये कमाये और धर्मके कार्य्योंमें भी बहुत खर्च किया। आपने छापावाड़ीमें एक मन्दिर बनाया तथा कई समय तीर्थयात्रा की। आपका स्वभाव सरल और मिलनसार है। वर्तमानमें आप ही कोटा फर्मका व्यवसाय संचालित कर रहे हैं। आपके भूरामलजो, कन्हैयालालजी एवं चांदमलजी नामक तीन पुत्र हैं।

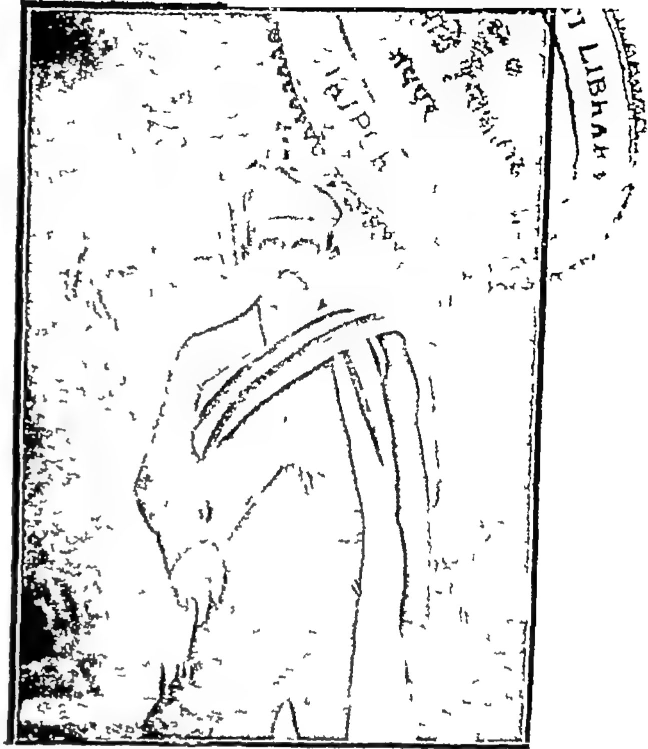
बाबू भूरामलजी, कन्हैयालालजी एवं चांदमलजी तीनों बन्धु बड़े उत्साही एवं मिलनसार नवयुवक हैं। आप लोग भी व्यापार सञ्चालनमें पूर्ण योग दे रहे हैं। बाबू कन्हैयालालजीके सुन्दरलालजी, धर्मचन्दजी एव रणजीत सिंहजी नामक तीन पुत्र हैं।

सेठ दानमलजी अपने बन्धुओंसे सम्वत् १९५४ तक सम्मिलित रूपसे व्यापार करते रहे। तदनन्तर आप सब लोगोंके वशज अलग २ हो गये और अपना स्वतन्त्र कारबार करने लगे। सेठ दानमलजीके परिवारवालोंकी छीपाबड़ोद, कोटा एवं इकलेरेमें मेसर्स केशरीचन्द दानमलके नामकी फर्मे हैं जिनपर बैंकिंग व लेनदेनका व्यापार होता है। इकलेरेमें आपकी एक जीनिंग फैक्टरी भी है।

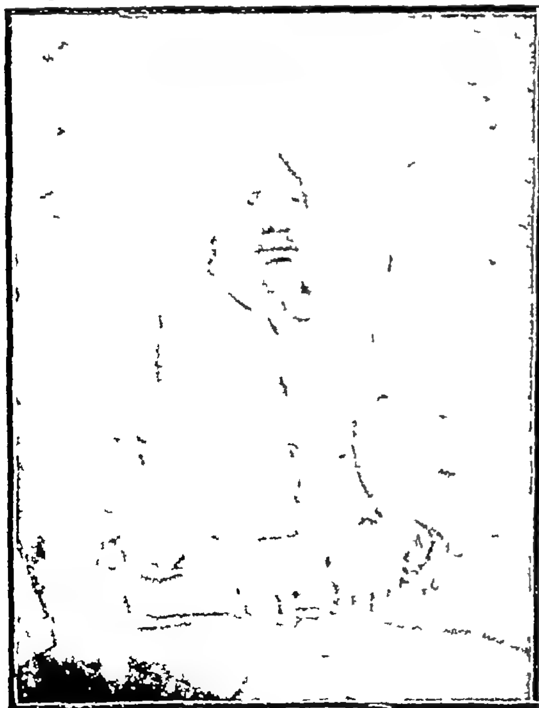
आपका खानदान छीपाबड़ोदमें अच्छा प्रतिष्ठित एवं मातवर माना जाता है।



स्वर्गीय सेठ किशनदासजी मेहर, आस्टी (निजाम स्टेट)



सेठ मुकुन्ददासजी मेहर, आस्टी



सेठ चुन्नीलालजी मेहर, आस्टी



सेठ शोभाचन्दजी मेहर, आस्टी

ललवाणी

सेठ उदयचन्दजी कजोड़ीमलजी ललवाणी, बून्दी

इस खानदान वाले मेड़ता (मारवाड़) निवासी ओसवाल जातिके ललवाणी गौत्रीय श्री जै० श्वे० स्था० आम्नायको माननेवाले हैं। इस परिवारवाले मेड़तासे फतेगढ़ चले गये। सेठ रामनाथजीके पुत्र बलदेवजी हिंडोली तथा हिंडोलीसे बून्दी चले आये। बून्दीमें आपने कपड़ेका व्यापार प्रारम्भ किया। आपके उदयचंदजी एवं कजोडीमलजी नामक दो पुत्र हुए।

आप दोनों भाई व्यापार कुशल व्यक्ति थे। आप दोनों भाइयोंमें बहुत प्रेम था। दोनों भाइयोंने अपने कपड़ेके व्यापारको बढ़ाया तथा बूंदीमें अपनी प्रतिष्ठा स्थापित की। आप लोग यहांपर प्रतिष्ठित एवं वजनदार व्यक्ति माने जाते थे। आप धर्मकेकामोंमें भी सहायता तथा सहयोग प्रदान किया करते थे। सेठ कजोड़ीमलजीके मोतीलालजी, नाथूलालजी एवं शिवचंदजी नामक तीन पुत्र हुए।

सेठ मोतीलालजीका जन्म संवत् १९३८ में हुआ। आप धार्मिक प्रवृत्तिवाले एवं बूंदीमे सम्माननीय व्यक्ति हो गये हैं। आपका सं० १९८६ में स्वर्गवास हो गया। सेठ नाथु-लालजीका जन्म सं० १९५० में हुआ। आप सरल प्रकृतिवाले तथा मिलनसार व्यक्ति हैं। वर्त्तमानमें आप ही अपने सारे कामकाजको देखते हैं। आपका यहांकी ओसवाल समाजमें अच्छा सम्मान है।

आप लोग मेसर्स उदयचंद कजोडीमलके नामसे बूंदीमें कपड़ेका व्यापार करते हैं। सेठ मोतीलालजीकी मृत्युके समय सेठ शिवचन्दजीने एक मकान बूंदीके स्थानकको दान स्वरूपमें भेंट किया है।

मेहर

मेहर खानदान, आस्टी (निजाम स्टेट)

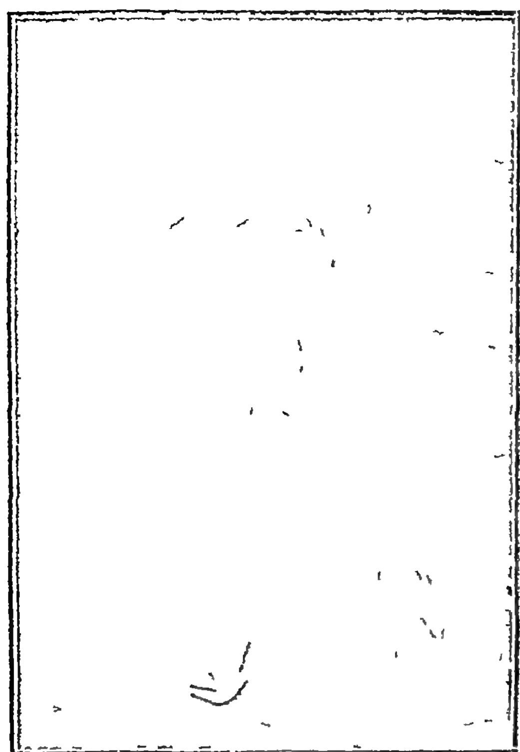
इस परिवारके मालिकोंका मूल निवासस्थान राजोत (मारवाड) है। वहाँसे लगभग १०० वर्ष पहिले सेठ हिन्दूमलजी मेहरके पिताजी व्यापारके निमित्त दोहिठान (आस्टीके पास—निजाम स्टेट) में आये। आपके रामचन्द्रजी, कस्तूरमलजी एवं भागचन्दजी नामक तीन पुत्र हुए। इन बन्धुओंमें सेठ भागचन्दजीने सरडीमें अपना व्यापार जमाया। सेठ कस्तूरमलजी और सेठ भागचन्दजी लगभग ५० वर्ष पूर्व दोहिठानसे आस्टी आ गये। तबसे इन दोनों बन्धुओंका परिवार स्थाई रूपसे आस्टीमें ही निवास कर रहा है। सेठ कस्तूरमल जीका जन्म संवत् १८९२ में तथा सेठ भागचन्दजीका जन्म संवत् १९०२ में हुआ था।

सेठ रामचन्द्रजी मेहरका परिवार—आपका परिवार सूरड़ीमें व्यापार करता है। आपके गेंदमलजी, नवलमलजी तथा राजमलजी नामक तीन पुत्र हुए। इस समय सेठ गेंदमलजी विद्यमान हैं। इन तीनों भाइयोंका व्यापार अलग-अलग होता है। सेठ गेंदमलजीके पुत्र लालचन्दजी, शोभाचन्दजी व चुन्नीलालजी, सेठ नवलमलजीके गम्भीरमलजी, मोतीलालजी और भगवानदासजी एवं सेठ राजमलजीके पुत्र दगडूरामजी और पौत्र पन्नालालजी हैं। यह परिवार सूरड़ीमें व्यापार करता है।

सेठ कस्तूरमलजी मेहरका परिवार—आपने इस परिवारमें बहुत सम्पत्ति कमाई। छोटे ग्राममें निवास करते हुए भी आप सारे बीड़ प्रान्तमें मशहूर थे। आपके थानमलजी, किसनदासजी, मुकुन्ददासजी, पूनमचन्दजी, चुन्नीलालजी तथा शोभाचन्दजी नामक ६ पुत्र हुए। इन भाइयोंमें सेठ थानमलजी और सेठ किशनदासजी स्वर्गवासी हो गये हैं। इस परिवारका ७५ सालोंसे दोहिदानमें "कस्तूरमल थानमल" के नामसे व्यापार होता है। इस समय ५० सालोंसे हेड आफिस आस्टीमें है। यहाँ कस्तूरमल किशनदासके नामसे व्यापार होता है। इसके अलावा सिलेमान-देवला (आस्टी) में थानमल लालचन्दके नामसे, अहमदनगरमें शोभाचन्द लालचन्दके नामसे दुकानें हैं। इन दुकानोंपर साहुकारी, जरायत, कृषि, कपड़ा, रुई, गल्ला व आढ़तका व्यापार होता है।

सेठ थानमलजी मेहरका जन्म संवत् १९१४ में तथा स्वर्गवास संवत् १९५९ में हुआ। आपके पुत्र श्रीलालचन्दजीका जन्म संवत् १९६२ में हुआ। आपने बम्बईमें बी० काम तक शिक्षण पाया है। आप कड़ा जैनशालाके आनरेरी सेक्रेटरी हैं। संवत् १९८४ के हिन्दू-मुस्लिम झगड़ेमें आपने बीचमें पड़कर अपने प्रभावसे शांति स्थापित करवाई थी। ओसवाल परिषद अहमदनगरमें आप वालण्टियरोंके केप्टन थे। आपके पुत्र कुंवरलालजी, शांतिलालजी, कांतिलालजी तथा अमृतलालजी हैं। इनमें तीन बड़े अहमदनगरमें पढ़ते हैं। आप अपनी सिलेमान देवला फर्मका सञ्चालन करते हैं।

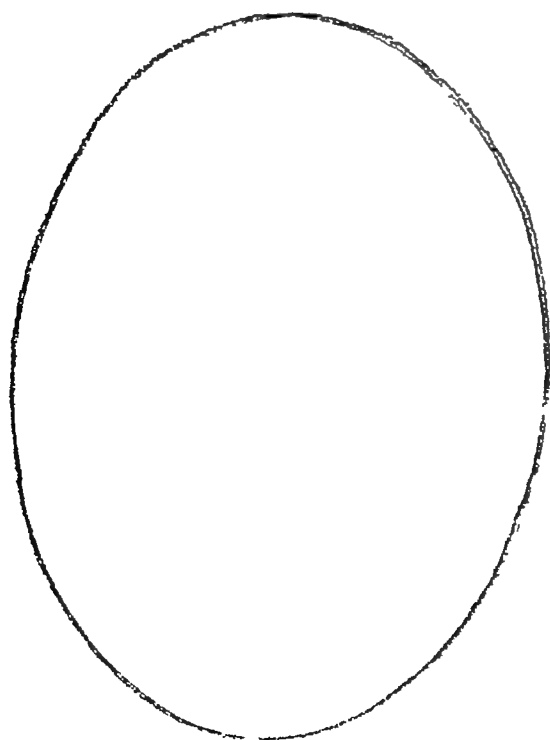
सेठ किशनदासजी मेहरका जन्म संवत् १९३६ में हुआ। आपने अपने पिताजीके पश्चात अपने परिवारके मान-सम्मान व व्यापारको विशेष चमकाया। आप इस परिवारमें बहुत प्रतापी पुरुष हुए। निजाम रियासतके अमीर उमराव और हाकिमात आपको बड़ी इज्जत और मोहब्बत की निगाहोंसे देखते थे। अपनी जातिमें भी आप गण्यमान्य पुरुष माने जाते थे। आपके साथ आपके सब बंधुगण भी अपने व्यापारकी उन्नति व तमाम सामाजिक कामोंमें योग देते थे। संवत् १९५६ के दुष्कालके समय आपने गरीबोंको अनाज व कपड़े द्वारा बहुत मदद पहुंचाई, जिससे निजाम सरकारने आपको बहुत सम्मान दिया। इस प्रकार प्रतिष्ठामय जीवन बिताकर संवत् १९८४ की जेठ बदी ३ को आप स्वर्गवासी हुये। आपके प्रेमराजजी, गोकुलदासजी, मन्नालालजी, अमरचन्दजी तथा नेमीचन्दजी नामक ५ पुत्र विद्यमान हैं। प्रेमराजजीने मेट्रिक्युलेशन तक अध्ययन किया है। आपका जन्म सं० १९५२ में हुआ है। आप अपने



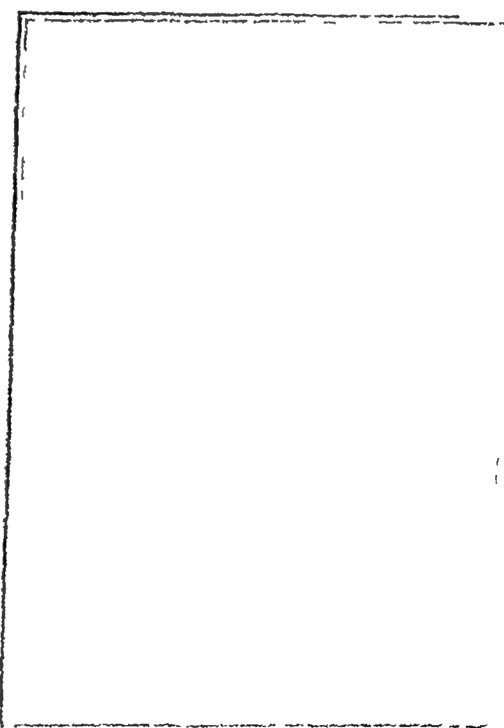
श्री लालचन्दजी मेहर, आरटो (निजाम-स्टेट)



स्व० सेठ गुलाबचन्दजी मेहता, कोटा



सेठ गणेशीलालजी चतुर जमींदार जिरनी (मालवा)



काका सेठ मुकुन्ददासजीके साथ अपनी आस्टी दुकान का काम देखते हैं। आपके छोटे भाई गोकुलदासजी मेट्रिकमें पढ़ते हैं।

सेठ मुकुन्ददासजी मेहरका जन्म संवत् १९३८ में हुआ। आप अपनी पुरानी दुकान दोहिठानका कार्य्य संचालित करते हैं। पन्नालालजीका जन्म सं० १९६१ में हुआ है।

सेठ पूनमचन्दजीका जन्म संवत् १९४५ में हुआ। आपके पुत्र श्रीकनकमलजी व केसरमलजी हैं। कनकमलजीका जन्म सं० १९६७ में हुआ। आप पूनमचन्द कनकमलके नामसे आस्टीमें किरानेका व्यापार करते हैं।

सेठ चुन्नीलालजीका जन्म संवत् १९४९ में हुआ। आप अपने हेड आफिसका कार्य्य सञ्चालन करते हैं। सेठ शोभाचन्दजीका जन्म संवत् १९५३ में हुआ। आप अपनी अहमदनगर दुकानका कार्य्य सम्हालते हैं। आपके पुत्र कुन्दनमलजी तथा चंदनमलजी हैं। अहमदनगरकी मारवाड़ी समाजमें आपकी अच्छी प्रतिष्ठा हैं।

सेठ भागचंदजी मेहरका परिवार—सेठ भागचन्दजीके हमीरमलजी व नारायणदासजी नामक २ पुत्र हुए। इन दोनों बंधुओंका हेड आफिस आस्टीमें है। आपके यहां भागचन्द नारायणदासके नामसे कृषि और जरायतका व्यापार होता है। सेठ हमीरमलजी संवत् १९५९ मे स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र श्रीवंशीलालजी कपड़ेका व्यापार करते है।

सेठ नारायणदासजी सयाने तथा समझदार पुरुष हैं। आप अपनी आस्टी दुकानका संचालन करते हैं। आपके कोई संतान नहीं है।

चतुर

सेठ घासीरामजी नेमीचन्दजी चतुर, सिवनी (मालवा)

इस परिवारका मूल निवासस्थान ताल (मेवाड़) है। वहांसे सेठ जोधराजजी चतुर लगभग सवासौ डेढ़सौ वर्ष पहिले व्यापारके लिये सिवनी (मालवा) आये। यहां आकर आपने आरम्भमें किरानेका व्यापार शुरू किया। उस समय नागपुरके भोंसलोंपर अधिकार प्राप्त करनेके लिये अङ्गरेजी फौजोंका इधर दौरा हुआ करता था। ऐसे समयमें सेठ जोधराजजी ब्रिटिश रेजिमेंटको खाद्य पदार्थोंकी सहायता पहुचाते रहते थे। आपकी इन सेवाओंसे प्रसन्न होकर ब्रिटिश सरकारने आपको चार गांव जमीदारी हकसे इनायत किये। आपके नामपर आपके भतीजे सेठ कल्याणचन्दजी दत्तक आये। सेठ कल्याणचन्दजी भी अपने पिताजी द्वारा स्थापित किये व्यापार एवं जमीदारीके गांवोंका संचालन करते रहे। आपके घासीरामजी तथा नेमीचन्दजी नामक दो पुत्र हुए।

सेठ नेमीचन्दजी—आपका जन्म सं० १९३२ में हुआ। आपने अपने परिवारके व्यापार तथा सम्मानको विशेष बढ़ाया। सिवनीके आप गण्यमान्य सज्जन थे। यहांकी म्यु० के

मेश्वर पदको आपने सम्मानित किया था। आपके भाई सेठ घासीरामजी आपके पूर्व ही स्वर्गवासी हो गये थे। धार्मिक कामोंमें आपकी अच्छी रुचि थी। सं० १९७८ की कार्तक सुदी ७ को आपका अन्तकाल हुआ। आपके यहां आपके ही परिवारसे (सेठ कल्याणचन्दजीके छोटे वन्धुके पौत्र सेठ चम्पालालजीके बड़े पुत्र) श्रीगनेशीलालजी दत्तक आये।

श्रीगनेशीलालजी चतुर—आपका जन्म सं० १९५४ की फागुन सुदी ८ को हुआ। आप सेठ नेमीचन्दजीके यहां सं० १९७९ में दत्तक आये। सेठ गनेशीलालजी चतुर शिक्षित, विचारवान व स्वदेशप्रेमी युवक हैं। आप शुद्ध स्वदेशीवस्त्र धारण करते हैं। सिवनीके हरएक धार्मिक तथा सार्वजनिक कामोंमें आप भाग लेते रहते हैं। वर्तमानमें आप सिवनी लोकलबोर्डके चेयरमैन हैं। स्थानीय आपरेशनरूम में आपने सहायताएं दी हैं। वर्तमानमें आप अपने पूर्वजों द्वारा स्थापित की हुई जमीदारीका संचालन करते हैं। आपने यहां एक श्रीशान्ति जैन पुस्तकालय खोला हैं। सिवनीमें आप गण्यमान्य सज्जन हैं।

गूगलिया

सेठ जेठमलजी मोतीलालजी गूगलिया, पाथर्डी (अहमदनगर)

इस परिवारके मालिकोंका मूल निवासस्थान मलसावावड़ी (सोजत-मारवाड़) है। वहांसे लगभग ७५-८० वर्ष पूर्व सेठ चिमनीरामजी गूगलियाके बड़े पुत्र सेठ तेजमलजी गूगलिया व्यापारके निमित्त दक्षिण प्रान्तके अहमदनगरमें आये तथा वहां आपने कपड़ेका व्यापार आरम्भ किया। सेठ तेजमलजीके ५ वर्ष वाद इनके छोटे वन्धु जेठमलजी भी अहमदनगर आये और इन्होंने पाथर्डीमें किरानेका व्यापार आरम्भ किया। इसके वाद आपने कपड़ेका व्यापार शुरू किया। सेठ जेठमलजीके छोटे भाई मारवाड़में ही निवास करते रहे। सेठ जेठमलजीने परिश्रमपूर्वक सम्पति उपार्जन कर अपनी आर्थिक स्थिति एव परिवारके सम्मानको विशेष बढ़ाया। पाथर्डीकी जैन समाजमें आप सयाने तथा समझदार पुरुष थे। सं०१९७७ की भादवा वदी ३ को ७६ सालकी वयमें आपका स्वर्गवास हुआ। आपके पुत्र श्रीमोतीलालजी गुगलिया विद्यमान हैं।

सेठ मोतीलालजी गुगलियाका जन्म सं०१९४३ की आसोज सुदी १४ को हुआ। आप श्री० श्वे० जै० स्था० सम्प्रदायके माननेवाले सज्जन हैं। आपने पिताजीके बाद अपनी फर्मके व्यापार तथा सम्मानको विशेष बढ़ाया है। आप पाथर्डी एव नगर जिलेकी जैन समाजमें नामांकित व्यक्ति हैं। धार्मिक कार्योंमें एवं शिक्षाके कार्योंमें आप अच्छी सहाताएँ देते रहते हैं। आप हीके विशेषप्रयाससे पाथर्डीमे श्रीतिलोक जैन विद्यालय चल रहा है। इस संस्थाके लिये आपने तथा श्रीमानमलजी साहब पारनेरकरने १६ हजार की एक बिल्डिंग संस्थाको प्रदान की है। इसके अलावा ३।४ हजार रुपया और आप संस्थाको सहायतार्थ दे

चुके हैं। १३ सालोंसे आप इस संस्थाके अध्यक्ष भी हैं। आपका स्वभाव बड़ा सरल है। स्थानीय ग्रामपञ्चायतीमें ५।६ सालोंतक आप मेम्बर रह चुके हैं। पाथर्डीके आप प्रधान सम्पत्तिशाली माने जाते हैं।

सेठ मोतीलालजीके इस समय प्रेमराजजी, चुन्नीलालजी पन्नालालजी एवं नैनसुखजी नामक ४ पुत्र हैं। श्रीचुन्नीलालजी, होनहार युवक प्रतीत होते हैं। इस समय इस परिवारमें साहुकारी, कृषि, कपड़ा व जमीदारीका व्यापार होता है।

बोगावत

श्री उत्तमचंदजी रामचंदजी बोगावत वकील, अहमदनगर

इस परिवारका मूल निवासस्थान सेठों की रीयां (पीपाड़के पास-मारवाड) हैं। वहाँसे लगभग १५० सालों पूर्व इस परिवारके पूर्वज नेताजी बोगावत व्यापारके निमित्त अहमदनगर जिलेके मिरी नामक स्थानमें आये। नेताजीके खेताजी और इनके नथमलजी तथा मोतीलालजी नामक पुत्र हुए। नथमलजीके हिन्दूमलजी तथा छोटूजी और मोतीलालजीके रतनचन्दजी, फकीरचन्दजी और बापूजी नामक पुत्र हुए। इन भाइयोंमें रतनचन्दजीके हंसराजजी और खुशालचन्दजी हुए। इस समय हंसराजजीके पुत्र रामचन्दजी विद्यमान हैं। श्री रामचन्दजी बोगावतका जन्म १९३८ में हुआ। आपके समय तक यह परिवार साधारण स्थितिमें रहा। आपके पुत्र श्री उत्तमचन्दजी एवं पन्नालालजी हैं।

श्री उत्तमचन्दजी का जन्म संवत् १९५८ में हुआ। आपका मेट्रिक तक शिक्षण अहमदनगरमें हुआ। पश्चात् आपने फर्ग्यूसन कॉलेज पूनामे शिक्षण प्राप्त कर बाम्बे हाईकोर्टसे १९२४ में वकीली डिप्लोमा प्राप्त किया। आरम्भमें १ सालतक आप श्री कुन्दनमलजी फिरोदियाके पास प्रेक्टिस करते रहे। सन् १९२५ से आपने अपनी स्वतन्त्र प्रेक्टिस आरम्भ की एवं अपनी होशियारी एवं कार्य तत्परतासे इस में अच्छी सफलता प्राप्त की। आपको इनकमटैक्सकी विशेष जानकारी हैं। राष्ट्रीय कामोंमें भाग लेनेके उपलक्षमें सन् १९३२ में आपको ६ मासका कारावास एवं ३००) का दण्ड भी हुआ था। ऐसे कामोंमें दिलचस्पी रखनेके कारण दो बार सरकारने आपका वकीली डिप्लोमा सस्पेण्ड करनेकी कोशिश भी की, लेकिन आपने उसे पुनः सम्पादन किया। इस समय आप अहमदनगर जैन बोर्डिङ्गके सेक्रेटरी हैं। आपने एक बड़े स्केलपर कृषि कार्य भी आरम्भ किया है। साहुकारी व्यवसाय भी आप करते हैं। कहनेका तात्पर्य यह कि आपने अपनी आर्थिक स्थितिको उन्नत बनाया, अपने परिवारकी प्रतिष्ठा बढ़ाई एवं अहमदनगरकी शिक्षित जनतामें ख्याति पाई।

मुन्नी बोहरा

सेठ सरूपचंदजी जेठमलजीका खानदान, हापुड़

इस खानदानवाले हालान्यू (सिंध) निवासी मुन्नी बोहरा गौत्रके श्री जै०श्वे० मंदिर-मार्गीय हैं। आप हाल के प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। आपके सरूपचन्दजी, जोगीदासजी तथा खेतसीदासजी नामक तीन पुरुष हुए।

सेठ सरूपचन्दजी प्रथम हालासे कस्तला (मेरठ जिला) आये और यहांसे हापुड़में आगये। तभीसे आपके वशज यहींपर रह रहे हैं। आपके पुत्र जेठमलजीका जन्म सं० १९३१ में हुआ। आप धार्मिक भावनाओंके, प्रेमी तथा लोकप्रिय व्यक्ति थे। आपने हापुड़में सराफीके व्यापारमें सफलता प्राप्त की। आपका स्वर्गवास ३० अक्टोबर सन् १९३१ में हुआ। आपके मनोहरलालजी, चिन्तामणिदासजी, सुन्दरलालजी, इन्दरलालजी, मोहनलालजी एवं सोहनलालजी नामक छः पुत्र हुए। प्रथम तीन बन्धु तो अलाहाबाद बैंकमें सर्विस करते हैं तथा शष तीन हापुड़में सराफी और बैंकिंगका व्यवसाय करते हैं। आप सब मिलनसार हैं। मनोहरलालजीके ज्ञानचन्दजी तथा चिन्तामणिदासजीके आनन्दचन्दजी एवं टेकचन्दजी नामके दो पुत्र हैं।

आप लोगोंका खानदान कस्तलावालोंके नामसे मशहूर है।

सेठ जीतमलजी दौलतरामजी बोहरा, मिरजगांव (अहमदनगर)

इस परिवारके मालिक बूसी (मारवाड़) के निवासी हैं। वहांसे सेठ दयारामजी सालेचा-बोहरा व्यापारके निमित्त सवा सौ वर्ष पूर्व महाराष्ट्र प्रान्तके शिराल नामक स्थानमें आये। आपके जीतमलजी, बालारामजी तथा धीरजमल नामक ३ पुत्र हुए। इन वन्धुओंमें सेठ जीतमलजी बोहरा मिरजगाँव आये। आप बड़े बुद्धिमान व व्यापार चतुर पुरुष थे। आपने अपने परिवारके व्यापार तथा सम्मानको विशेष बढ़ाया। आप मिरजगाँव व उसके आसपासके क्षेत्रमें नामांकित पुरुष हो गये हैं। अनाजके बहुत बड़े बड़े व्यापार आप किया करते थे एवं बड़ी रईसी तबियतके पुरुष थे। आपके बन्धु सेठ बालारामजी और सेठ धीरजमलजी अपना स्वतन्त्र व्यापार करते थे। सेठ जीतमलजीके पुत्र दौलतरामजी और बालारामजीके केसरचन्दजी तथा खुशालचन्दजी हुए।

सेठ दौलतरामजी बोहराने अपने पिताजीके फैले हुए व्यापारको समेटकर अपनी साम्पत्तिक स्थितिको विशेष मजबूत किया। आप भी अपने आसपासकी जैन समाजमें नामी पुरुष थे। इधर ५ वर्ष पूर्व आपका स्वर्गवास हो गया है। वर्तमानमें आपके पुत्र श्री माणिकचन्दजी बोहरा विद्यमान हैं। सेठ माणिकचन्दजीका जन्म शके १८१६ में हुआ। आप १३

सालों तक जिला लोकलबोर्डके मेम्बर रहे थे। पाथर्डी जैनशाला आदि संस्थाओंमें सहायताएं देते रहते हैं। आप मिरजगांवके प्रधान धनिक हैं। इस समय आपके यहां कपड़ा, किराना और कृषिका व्यापार होता है। इसी प्रकार इस परिवारमें सेठ के पुत्र सोभाचन्दजी कपड़ेका, सेठ खुशालचन्दजीके पुत्र भगवानदासजी और कृषिका कारवार तथा सेठ घरिजमलजीके पौत्र दीपचन्दजी कृषिका कारबार करते हैं।

बुंदेचा

सेठ माईदासजी छोगमलजी बुंदेचा, अहमदनगर

यह परिवार सेठोंकी रीयां (मारवाड़) का निवासी हैं। वहाँसे सेठ बुन्देचा लगभग संवत् १८८० में व्यापारके निमित्त अहमदनगर आये एव अपने यहां और सूतका व्यापार आरम्भ किया। आपके कोई पुत्र न था। अतएव आपके सेठ छोगमलजी रीयाँसे संवत् १९१४ में दत्तक आये। आपका जन्म संवत् १९०१ में हुआ। आपने अपने पिताजी सेठ माईदासजीके साथ अपने व्यापार तथा परिवारके सम्मानको बढ़ानेकी ओर अच्छा परिश्रम उठाया। संवत् १९३९ में सेठ माईदासजी स्वर्गवासी हुए।

सेठ छोगमलजी बुन्देचा बड़े धर्मात्मा एवं भद्र पुरुष थे। जातिमें आप सन्माननीय व्यक्ति माने जाते थे। संबत् १९६८ की आसोजवदीमें आप स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र सेठ रूपचन्दजी बुन्देचा हुए। सेठ रूपचन्दजी बुन्देचाका जन्म संवत् १९४५ की पोष सुदी ७ को हुआ। आपका परिवार अहमदनगरकी ओसवाल समाजमें गण्यमान्य माना जाता है। आपके पुत्र श्री माणकलालजी बुंदेचा पूनामें एफ० ए० में शिक्षण पाते हैं। इस समय इस परिवारके यहां कपड़ा, अनाज, रूई तथा आढ़तका व्यापार होता है।

दरड़ा

सेठ भूरजी रघुनाथजी दरड़ा, लातूर (निजाम स्टेट)

इस परिवारके मालिकोंका मूल निवास स्थान भखरी (निजाम स्टेट) में है। वहाँसे सेठ भूरजी दरड़ा लगभग १०० साल पूर्व व्यापारके निमित्त निजाम स्टेटके लातूर नामक स्थानपर आये तथा यहा लेनदेनका व्यापार आरम्भ किया। सेठ भूरजीके पुत्र सेठ रघुनाथजी दरड़ा हुए। इन्होंने अपने पिताजीके व्यापारको बढ़ाकर लगभग ७५ साल पूर्व अपनी एक ब्रांच लोहा (नादेड) में खोली, जो इस समय भी व्यापार कर रही है।

सेठ रघुनाथजी दरडाके बालकिशनजी, कस्तूरचदजी तथा बहादुरमलजी नामक ३ पुत्र

हुए। आप तीनों भाई भी अपनी लातूर तथा लोहा दुकानका संचालन करते थे। सेठ बाल-किशनजीके पुत्र सेठ उत्तमचन्दजी एवं सेठ मूलचन्दजी हुए। इन भाइयोंमें उत्तमचन्दजी अपने काका कस्तूरचंदजीके नामपर दत्तक गये तथा सेठ मूलचन्दजी विद्यमान हैं। सेठ कस्तूरचन्दजीके शिवकरणजी एवं रामचंद्रजी नामक २ पुत्र हुए। इनमें सेठ रामचन्द्रजी विद्यमान हैं। यह कुटुम्ब लातूर तथा आसपासके जैन समाजमें एवं व्यापारिक समाजमें नामी माना जाता है।

सेठ उत्तमचन्दजी तथा सेठ रामचन्द्रजीने इस परिवारके व्यापार और सम्मानको बहुत बढ़ाया। सेठ उत्तमचन्दजीका धार्मिक कार्यों में अच्छा लक्ष था। संवत् १९७० के लगभग आप स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र मोतीलालजी बाल्यवयमें ही संवत् १९८३ में स्वर्गवासी हो गये।

सेठ रामचन्द्रजी दरडा—आपका जन्म संवत् १९३० में हुआ। धार्मिक कार्योंमें आपका लक्ष है। आपकी ओरसे लातूरमें श्रीमोतीलाल उत्तमचन्द औषधालय स्थापित है। इसमें लगभग ३ हजार रुपया सालाना आपकी ओरसे खर्च होता है। सेठ रामचन्द्रजी लातूरके होशियार व अनुभवी व्यापारी हैं। आप सेंट्रल बैंक लातूरके सलाहकार व मेम्बर हैं। आपके बड़े भ्राता सेठ शिवकरणजी संवत् १९७० में चचेरे भाई उत्तमचन्दजीके २ दिनों बाद स्वर्गवासी हो गये थे। सेठ उत्तमचन्दजीके छोटे भाई मूलचन्दजीका जन्म संवत् १९५० में हुआ। आप अपनी फर्मके संचालनमें सहयोग देते हैं। आपके यहां श्री हरकचन्दजी (आलेगाव) पूनासे दत्तक आये हैं।

सेठ रामचन्द्रजीके पुत्र श्री पृथ्वीराजजीका जन्म संवत् १९६५ की आसोजवदी ३० को हुआ। आप बड़े होशियार तथा बुद्धिमान युवक हैं तथा अपने कारभारको अपने पिताजीके साथ बड़ी तत्परताके साथ सम्हाल रहे हैं। इस समय आपके इस सम्मिलित परिवारमें सेठ भूरजी रघुनाथजी दरड़ाके नामसे आढ़त, साहुकारी तथा लेनदेनका व्यापार होता है।

जिंदानी

नरसिंहगढ़का जिंदानी परिवार

इस परिवारके मालिकों का मूल निवासस्थान जेसलमेर (राजपूताना) है। वहासे लगभग ७५-८० साल पूर्व इस परिवारके पूर्वज सेठ गोड़ीदासजी मालवा प्रान्तमें आये तथा नरसिंहगढ़में जेसलमेरके पटवा परिवारकी दुकान सेठ सागरमल सगतमलके यहा मुनीम हो गये। अपनी चतुराई से इस दुकानके व्यापारको आपने खूब चमकाया। नरसिंहगढ़ स्टेट तथा जनतामें आपका बड़ा सम्मान तथा वजन था। सम्वत् १९५५मे आप स्वर्गवासी हुए। आपके गम्भीरमलजी, ओंकारलालजी तथा धनराजजी नामक ३ पुत्र हुए। इन भाइयोंमें सेठ

गम्भीरमलजी जवान वयमे ही स्वर्गवासी हो गये। आपके पुत्र सेठ नथमलजी जिदानी हैं।

सेठ उँकारलालजी जिदानी पहिले राजा गोकुलदासजी जबलपुरवालोंकी भोपाल दुकानपर मुनीम रहे। पश्चात् श्री राजमाता राठोड़जी साहिबाके कामदार नियुक्त हुए तथा १५ सालोंतक इस पदपर रहे। आप सम्वत् १९७२ में स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र श्री हीराचन्दजी जिदानी हैं।

सेठ धनराजजी पहिले नरसिंहगढ़ स्टेटके सायर विभागमें मामूली नौकरीपर मुकर्रर हुए। पश्चात् अपने अपना घरू व्यापार आरम्भ किया। सराफी व्यापारमें द्रव्य उपार्जित कर आपने बहुत नाम आबरू व प्रतिष्ठा पाई। आपने यहांके कई सार्वजनिक कामोंमें उदारतापूर्वक सम्पत्ति खर्च की। नरसिंहगढ़ दरबार महाराजा विक्रमसिंहजीने आपको "शिरोमणि सेठ" की पदवीसे सम्मानित किया था एवं मां साहिबाने आपको एक उत्तम सार्टिफिकेट प्रदान किया था। इस प्रकार प्रतिष्ठा पूर्वक जीवन बिताते हुए सम्वत् १९९१ की फागुन सुदी ६ को आपका स्वर्गवास हुआ। आपकी मृत्युसे नरसिंहगढ़ स्टेटका एक भारी पुरुष कम हो गया, ऐसा जनताने अनुभव किया। आपके नामपर श्री छबीलालजी दत्तक हैं।

सेठ नथमलजी जिंदानी वर्तमानमें माजी राठोडजीकी जनानी ड्योढ़ीके कामदार हैं। इसके पूर्व आप रियासतके खजांची पदपर अधिष्ठित थे। इसके अलावा आप अपना घरू व्यापार भी करते हैं। आप नरसिंहगढ़में प्रतिष्ठित और गण्यमान्य सज्जन हैं। आपके चांदमलजी, छबीलालजी, नेमचन्दजी, सिरेमलजी तथा हेमचन्दजी नामक ५ पुत्र हैं। इन बन्धुओंमें छबीलालजी सेठ धनराजजीके नामपर दत्तक गये हैं।

श्री हीराचन्दजी जिन्दानी स्टेट बैंकके अकाउन्टेंट रहे। इधर सन् १९२७ से आप नरसिंहगढ़ स्टेटमें वकालत करते हैं। आपने मेट्रिकतक एज्यूकेशन पाया है तथा सुशील, होशियार तथा मिलनसार सज्जन हैं। आप स्था० म्यु० के मेम्बर हैं। आपके दौलतचन्दजी नामक एक पुत्र हैं। यह परिवार श्री श्वे० जैन मन्दिर अम्नायका माननेवाला है।

बागरेचा

सेठ हजारीमलजी मुलतानमलजी बागरेचा मूथा, कोप्पल (निजाम-स्टेट)

इस परिवारका मूल निवासस्थान जेतारण (जोधपुर स्टेट) है। वहांसे लगभग ६०-७० साल पहिले सेठ हजारीमलजी मूथा कोप्पल (निजाम) आये तथा यहाँ आपने कपड़ेका व्यापार आरम्भ किया। आप लगभग ३५।४० साल पहिले स्वर्गवासी हुए। आपके समरथमलजी, केसरीमलजी, कुन्दनमलजी, उम्मेदमलजी आदि ५ पुत्र हुए। इन बन्धुओंमें सेठ मुलतानमलजीका कारबार लगभग ४० साल पहिले अलग हो गया। इसके पश्चात् सब बन्धु भी अलग २ हो गये।

सेठ मुलतानमलजीने अपने पिताजीके पश्चात् अपने व्यापार तथा सम्मानको विशेष बढ़ाया। आपने अपने हाथोंसे लाखों रुपयेकी सम्पत्ति कमाई। आपका जन्म सम्वत् १९२५ में हुआ है। इस समय आपका परिवार रायपूर जिलेकी व्यापारिक समाजमें प्रतिष्ठित माना जाता है। आपके जसराजजी तथा केवलचन्दजी नामक दो पुत्र हुए। इनमें जसराजजी सम्वत् १९७॥ की मगसर वदी १४ को स्वर्गवासी हो गये। जसराजजीके पुत्र दीपचन्दजी तथा माणिकचन्दजी विद्यमान हैं। श्री दीपचन्दजीका जन्म सम्वत् १९६७ में हुआ। आप बड़े सरल स्वभावके व व्यापारमें होशियार सज्जन हैं।

श्री केवलचन्दजीका जन्म संवत् १९५१ में हुआ। आप कोप्बल म्युनिसिपैलिटीके मेम्बर हैं और यहांकी व्यापारिक समाजमें अच्छे प्रतिष्ठित सज्जन हैं। आपके पुत्र श्री नेमीचन्दजी हैं। यह परिवार कोप्बलमें प्रधान धनिक है। आपकी यहां एक जीनिंग फैक्टरी और वागायत आदि है।

इसी तरह इस परिवारमें सेठ समरथमलजीके पुत्र शेषमलजी तथा अमोलकचन्दजीके यहाँ रतनचन्द सम्पतराज व माणकचन्द किशनराजके नामसे आढ़तका व्यापार होता है। सेठ केशरीमलजीके पुत्र चांदमलजी हैं। सेठ कुन्दनमलजीके पुत्र सागरमलजी कोप्बल के पासके गाँवमें व्यापार करते हैं और उम्मेदमलजीके पुत्र अजराजजी, जुगराजजी, रूपचन्दजी तथा मोतीलालजी कोप्वलमें कपड़ा तथा किरानाका व्यापार करते हैं। यह परिवार श्री जैन श्वे० स्थानकवासी आम्नायका माननेवाला है।

मरलेचा

सेठ कस्तूरचन्दजी जोरावरमलजी मरलेचा, मोमिनाबाद (निजाम)

इस परिवारका मूल निवास कण्टालिया (सोजतके पास—मारवाड़) है। वहांसे इस परिवारके पूर्वज सेठ श्रीचन्दजी मरलेचाके पुत्र कस्तूरचन्दजी तथा जोरावरमलजी मरलेचा व्यापारके लिये संवत् १८८७ के लगभग रवाना हुए तथा झांसीके समीप आकर आप अंगरेजी फौजोंको रसद तथा नगदी सप्लाय करनेका काम करने लगे। इस सिलसिलेमें जहां-जहां ब्रिटिश रेजिमेंट्स जाती थीं, वहाँ २ आप दोनों भाई भी अपनी दुकान ले जाते थे। इस प्रकार मोमिनाबाद, घोड़नदी, सिकन्दराबाद, हिंगोली, औरङ्गाबाद आदि स्थानोंपर आप मुकाम करते रहे। धीरे-धीरे आपने सम्वत् १९३२ के लगभग मोमिनाबादमें अपना स्थाई निवास बनाया और यहीं आप व्यापार करने लगे। इन व्यापारमें इन भाइयोंने बड़ी हिम्मत व बहादुरीसे पैसा कमाया। सेठ जोरावरमलजीके करमचंदजी तथा दलीचंदजी नामक दो पुत्र हुए। इन भाइयोंमें करमचंदजी सेठ कस्तूरचंदजीके नामपर दत्तक गये।



स्व० सेठ करमचन्दजी मरलेचा, मोमिनाबाद
(निजाम-स्टेट)



बाबू उत्तमचन्दजी बोगावत वकील,
अहमदनगर



सेठ मोतीलालजी गूगलिया, पाथर्डी (अहमदनगर)



सेठ [illegible]

सेठ करमचन्दजी मरलेचा—आपका जन्म संवत् १९२७ में हुआ। आपने अपने पिताजी के पश्चात् अपने व्यापार तथा परिवारके नामको विशेष बढ़ाया। आप रईस व ठाटबाटवाले पुरुष थे। पञ्च-पञ्चायती व राज-दरबारमें आपका अच्छा वजन था। आपके छोटे भाई दलीचंदजी छोटी उम्रमें ही स्वर्गवासी होगये थे। इस प्रकार प्रतिष्ठापूर्वक जीवन बिताकर सेठ करमचंदजी संवत् १९८८ की पौष बदी १० को स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र रतनचन्दजी, चंदनमलजी तथा नेमीचंदजी विद्यमान हैं। इन भाइयोंमें रतनचंदजी सेठ दलीचंदजीके नामपर दत्तक गये हैं। आप बन्धुगण भी यहांकी व्यापारिक समाजमें प्रतिष्ठा रखते हैं। आपके यहां करमचन्द चंदनमलके नामसे कपड़ा, साहुकारी तथा कृषिका कार्य्य होता है।

ओसतवाल

मेसर्स नन्दरामजी किशोरीदासजी ओसतवालका खानदान, कोटा

इस खानदानके पूर्व पुरुषोंका निवासस्थान यों तो मेवाड़का है मगर आपलोग पांच-सात पीढ़ियोंसे कोटामें ही निवास कर रहे हैं। आप ओसतवाल गौत्रीय श्री जै० श्वे० स्था० आम्नायको माननेवाले सज्जन हैं। आप लोग बहुत सालोंसे सराफीका व्यापार कर रहे हैं। इसलिये नेणावटीके नामसे भी मशहूर हैं।

इस खानदानमें सेठ नन्दरामजी हुए। आपके किशोरीदासजी एवं किशोरीदासजीके हुकमीचन्दजी नामक पुत्र हुए। आप सब लोग सराफीका व्यवसाय करते रहे। सेठ हुकमीचन्दजीके मन्नालालजी, किशनलालजी, खेतीलालजी, रतनलालजी आदि पांच पुत्र हुए। इनमेंसे सेठ खेतीलालजी विशेष व्यापार कुशल एवं योग्य सज्जन हुए हैं। आपने अपनी व्यापार चातुरीसे अपने व्यवसायको तरक्कीपर पहुचाया तथा अपनी स्थायी सम्पत्तिको बढ़ाया। आपने बहुत-सी जमीन व जायदाद भी खरीदी। आप कोटेमें प्रतिष्ठित एवं यहांकी सरकारमें भी एक सम्माननीय व्यक्ति समझे जाते थे। आपके देवराजजी नामक एक पुत्र हुए।

सेठ देवराजजी—आपका जन्म संवत १९५२ में हुआ। आप बड़े सज्जन एवं मिलनसार व्यक्ति हैं। आपके हाथोंसे अपने फर्मके व्यापारमें बहुत तरक्की हुई। कोटा स्टेटमें भी आपका सम्मान है। वर्त्तमानमें आप ही अपने सारे व्यवसायको सञ्चालित करते हैं। आपकी धार्मिक भावना भी उच्च है। आपके पूनमचन्दजी, छत्रसिंहजी एवं वीरेन्द्रकुमारजी नामक तीन पुत्र हैं।

बाबू पूनमचंदजी उत्साही एवं मिलनसार सज्जन हैं। वर्त्तमानमें आप भी अपने व्यापार में भाग लेते हैं। आपके महेन्द्रकुमारजी नामक एक पुत्र हैं। शेष दोनों बन्धु भी व्यापारमें भाग लेते हैं।

आपलोगोंका खानदान कोटाकी ओसवाल समाजमें प्रतिष्ठित समझा जाता है। आपकी कोटामें मे० नन्दराम किशोरीदासके नामसे एक फर्म है जिसपर सराफीका व्यापार

होता है। इसके अतिरिक्त कल्यानपुरामे भी आपकी एक ब्रान्च है जिसपर जमींदारीका काम भी होता है।

बावेल

मेसर्स प्रेमराजजी भैरूदानजी बावेल, कोटा

इस खानदानके सज्जनोंका मूल निवासस्थान कोटाका है। आप ओसवाल जातिके बावेल गौत्रीय श्री जै० श्वे० स्था० आम्नायको माननेवाले सज्जन हैं। इस खानदानमें सेठ प्रेमराजजी हुए। आपके नामपर भैरूलालजी गोद आये। आप होशियार व व्यापार कुशल सज्जन थे। आपने अपने व्यापारको वढ़ाया। आपके नामपर मोतीलालजी गोद आये।

सेठ मोतीलालजीने व्यापारको तरक्कीपर पहुचाते हुए सारे जीवनभर आनन्द किया। आपके निःसन्तान गुजर जानेपर आपके नामपर सेठ हजारीमलजीके पुत्र चुन्नीलालजी गोद आये।

सेठ चुन्नीलालजीका जन्म संवत् १९३० में हुआ। वर्त्तमानमें आप ही इस सारे कामकाजको सम्भाल रहे हैं। आपको धर्मध्यानमें विशेष आनन्द आता है। आप एक समय बीमार पड़े थे उस समय आपने १००००) दस हजारकी रकम निकालकर उसका व्याज दान धर्मके कामोंमें खर्च किये जानेका सङ्कल्प छोड़ा था। इसके अतिरिक्त आपने अपने दोनों पुत्रियोंको बीस-बीस हजार दहेजमें प्रदान किया है। और भी धार्मिक एवं परोपकारके कामोंमें आप सहायता पहुचाते रहते हैं।

वर्त्तमानमें आप मेसर्स प्रेमराज भैरूदानके नामसे कोटामें बैंकिंग व गिरवीका व्यवसाय करते हैं। यहांकी ओसवाल समाजमे आप प्रतिष्ठित माने जाते।

बैताला

हीराचंदजी बैतालाका खानदान, नागौर

इस परिवारवाले सोमण (मारवाड़) के मूल निवासी ओसवाल जातिके बैताला गौत्रीय श्री जै० श्वे० स्था० सम्प्रदायको माननेवाले सज्जन हैं। इस परिवारके सेठ कनीरामजी करीब १५० वर्षों पूर्व सोमणसे कुचेरिया आ गये। आपके मनरूपमलजीके रामसुखदासजी व मगनमलजी एवं रामसुखदासजीके आठ पुत्रोंमें सबसे बड़े मुल्तानमलजी हुए। सेठ मुल्तानमलजीके दुलीचन्दजी, टीपचन्दजी तथा धूमरमलजी नामक तीन पुत्र हुए। आपलोग कुचेरियामें ही निवास करते रहे।

सेठ दुलीचन्दजीका जन्म सं० १६०६ में हुआ। आपने बम्बई वगैरह स्थानोंपर व्यापार किया। आपका स्वर्गवास सं० १६६७ में हुआ। आपके हीराचन्दजी नामक एक पुत्र विद्यमान हैं।

श्री हीराचन्दजीका जन्म सं० १६३७ में हुआ। आप मिलनसार सज्जन हैं। आपने प्रथम कस्टम व हवालामें सर्विस की। इसके पश्चात् वकालतकी परीक्षा पास करके चीफ कोर्टमें वकालत करना शुरू की। जोधपुरमें तीन सालोंतक वकालत करनेके पश्चात् आप नागौर चले आये। आप वर्त्तमानमें नागौरमें वकालत करते हैं। आप यहाँके प्रमुख वकील हैं। आपका यहांकी ओसवाल समाजमें अच्छा सम्मान है। आपके अमरचन्दजी एवं जबरचन्दजी नामक दो पुत्र विद्यमान हैं।

बद्धेर

लाला कन्हैयालालजी मांगीलालजी बद्धेर, देहली

इस परिवारका विस्तृत परिचय इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें पृष्ठ ६२१ पर दिया गया है। लाला कन्हैयालालजीके मांगीलालजी और चुन्नीलालजी नामक दो पुत्र हुए।

लाला मांगीलालजीका जन्म सं० १६३७ व स्वर्गवास सं० १६६२ में हुआ। आपकी देहलीमें अच्छी प्रतिष्ठा थी। आपके चम्पालालजी, मन्नालालजी तथा ऋषभचन्दजी नामक तीन पुत्र हुए। आप लोगोंके जन्म क्रमशः सं० १६५५, ५६ तथा १६६६ में हुए। इनमें चम्पालालजी बड़े उद्योगी तथा धर्मध्यानी व्यक्ति थे। आपका स्वर्गवास सं० १६७७ में हो गया। मन्नालालजीका भी स्वर्गवास सं० १६६२ की भादवा सुदी १० को हो गया। बाबू ऋषभचन्दजी मिलनसार तथा उत्साही युवक हैं। वर्त्तमानमें आप ही अपने फर्मके प्रधान सञ्चालक हैं तथा देहलीमें जवाहरातका व्यापार करते हैं।

सेठ कन्हैयालालजी रूपचन्दजी बद्धेर जौहरी, कलकत्ता

इस प्रतिष्ठित परिवारका मूल निवासस्थान जेसलमेर है। वहां इस परिवारके पूर्वज सेठ गाढ़मलजी निवास करते थे। आपके देवीचन्दजी एवं सौभागमलजी नामक दो पुत्र हुए। इनमे सेठ देवीचन्दजीके तिलोकचन्दजी एवं कुशलचन्दजी नाम्क पुत्र हुए। यह परिवार सेठ तिलोकचन्दजीसे सम्वन्ध रखता है। आपके शम्भूरामजी तथा शम्भूरामजीके हिम्मतरामजी नामक पुत्र हुए। आपके पुत्र लाला रतनलालजी बड़ेर व्यापारके निमित्त लगभग सम्वत् १६४० मे कलकत्ता आये और यहां आपने अफीम तथा जवाहरातका व्यवसाय आरम्भ किया।

आप बड़े व्यापार दक्ष और होनहार पुरुष निकले। व्यापारमें बहुत द्रव्य उपार्जन कर धार्मिक कार्मोमें आपने उदारता पूर्वक खर्च किया। कई मन्दिरोंके जीर्णोद्धारमें आपने रकमें लगाई। अपने जाति भाइयोंको रोजगारसे लगानेमें एवं उन्हें हर तरहसे मदद देनेमें आप उत्सुक रहते थे। अफीमके व्यापारमें आप इतने मातबर व्यापारी माने जाते थे कि बाजारको घटाना बढ़ाना आपका एवं आपके साथी सुलतानचन्दजी काछवाके दाहिने हाथका खेल था। धीरे धीरे आपने बैंकिंग व्यापार भी आरंभ किया, जिससे कई बंगाली और अंग्रेज सज्जनोंमें आपका अच्छा प्रभाव जमा। इस प्रकार प्रतिष्ठा पूर्वक जीवन बिताते हुए सम्वत् १९५० में आप स्वर्गवासी हुए। आपको जैसलमेर स्टेटकी ओरसे काजीकी उपाधि प्राप्त हुई थी। आपके पुत्र कन्हैयालालजीका जन्म जेसलमेरमें हुआ। आप भी अपने फर्मके बैङ्किग व जवाहरातके व्यापारको सम्हालते रहे। आपने पटनामें एक जैन मन्दिरका जीर्णोद्धार करवाया। इसी प्रकार कई धार्मिक कार्योंमें सहयोग देते रहे। संवत् १९७१ में आपका स्वर्गवास हुआ। स्वर्गवासके समय आप २००००) बीस हजार रुपये धर्मार्थ कार्यके लिये निकाल गये थे। आपके पुत्र लाला रूपचन्दजी इस समय विद्यमान हैं।

सेठ रूपचन्दजीका जन्म संवत् १९५३ में हुआ। आप भी बड़े मिलनसार तथा उत्साही व्यक्ति हैं। आपके यहां इस समय बैङ्किग और जवाहरातका व्यापार होता है। आपके हाउस का पता ४१।२A बद्रीदास टेम्पल स्ट्रीट कलकत्ता है। सेठ रूपचन्दजीके इस समय ३ पुत्र हैं जिनके नाम विजयकुमारसिंहजी, विमलकुमारसिंहजी तथा वीरेन्द्रकुमारसिंहजी हैं। बाबू विजयकुमारसिंहजी बी॰ कामके फोर्थइअर में पढ़ रहे हैं।

धम्मावत

बाबू गोपालचन्दजी धम्मावतका खानदान, बनारस

इस खानदान वालोंका मूल निवासस्थान उदयपुर का था। आपलोग वहांसे मिर्जापुर तथा मिर्जापुरसे करीब १०० वर्ष पूर्व बनारस आकर स्थायी रूपसे रहने लगे। आप धम्मावत गौत्रीय श्री॰ जै॰ श्वे॰ एवं दिगम्बर सम्प्रदायको माननेवाले हैं। इस खानदानमें लाला सुमेरचन्दजी हुए। आपके उमरावचन्दजी उर्फ लल्लूजी, ज्ञानचन्दजी उर्फ गुल्लूजी तथा गोपालचन्दजी नामक तीन पुत्र थे।

लाला उमरावचन्दजीः—आप बड़े नामी तथा प्रतिष्ठित जौहरी हो गये हैं। आपने अपने जवाहरातके व्यापारमें इतनी तरक्की की थी कि आप बनारस महाराजके जुएलर थे। आप बनारसके प्रसिद्ध जौहरी तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति हो गये हैं। आपके कोई पुत्र न था। बाबू ज्ञानचन्दजी आनरेरी मजिस्ट्रेट रहे। आपके पुत्रोंमेंसे अमीचन्दजीका स्वर्गवास हो गया है। शेष बन्धु बाहर व्यापार करते हैं।

बाबू गोपालचन्दजीने अपने व्यापारको ठीक तरहसे संचालित किया। आप भी अच्छे जौहरी थे। आपके गुलाबचन्दजी एवं धर्मचन्दजी नामक दो पुत्र हुए। बाबू गुलाबचन्दजीका स्वर्गवास संवत् १९५१ में हुआ। आप भी अपना जवाहरातका व्यापार करते रहे। आप संवत् १९८९ मे स्वर्गवासी हुए।

बाबू धर्मचन्दजीका जन्म सं० १९५३ की फाल्गुन सुदी ८ का है। आप मिलनसार हैं। वर्त्तमानमें आप ही अपने जवाहरातके व्यापार को सफलतापूर्वक चला रहे हैं। आप मे० धर्मचन्द एण्ड संसके नामसे जवाहरातका व्यापार करते हैं। आपके यहांपर प्राचीनकाल का एक देरासर बना हुआ है जिसमें श्रीपारसनाथ भगवानकी एक बहुमूल्य प्रतिमाजी भी हैं। इस मन्दिरकी पूजाका कार्य वर्त्तमानमें आपके जिम्मे है। इस प्राचीन मन्दिरके दर्शनार्थ बहुतसे दिगम्बर श्रावक बाहरसे प्रतिवर्ष आते हैं। धर्मचंदजीके सन्तोषचन्दजी नामक एक पुत्र है।

टुंकलिया

सेठ गोकुलचन्दजी टुङ्कलियाका खानदान, जयपुर

इस परिवारवालोंका मूल निवास स्थान बड़खेड़ा (जयपुर-स्टेट) का है। आपलोग टुंकलिया गौत्रके श्री जै० श्वे० मं० आम्नायको माननेवाले हैं। इस परिवारवाले बड़खेड़ासे खो तथा खो से सेठ दयाचन्दजी १५० वर्ष पूर्व जयपुर आये। तभीसे आपलोग यहींपर निवास कर रहे हैं। सेठ दयाचन्दजीके बख्तावरमलजी, पन्नालालजी, हीरालालजी तथा मगनीरामजी नामक चार पुत्र हुए।

सेठ मगनीरामजी व आपके पूर्वज जयपुरमें हाथीखाना तथा लेनदेनका काम करते थे। आपके मोतीलालजी तथा लादूरामजी नामक दो पुत्र हुए। सेठ मोतीलालजीके चन्दनमलजी नामक पुत्र हुए। सेठ चन्दनमलजी संवत् १९५२ में स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्रका नाम गोकुलचन्दजी है।

सेठ गोकुलचन्दजीका जन्म सं० १९२८ में हुआ। आप ही ने सर्वप्रथम अपने यहाँपर जवाहरातका व्यापार शुरू किया। इसके पश्चात् आप सं० १९६६ में महकमा तारतम्यके हाकिम हो गये। सं० १९९० से आप पेंशन प्राप्त कर शान्ति लाभ कर रहे हैं। आपके गुलाबचन्दजी, नथमलजी तथा पूर्णचन्दजी नामक तीन पुत्र हैं। आप तीनों बन्धु मिलनसार हैं। गुलाबचन्दजी जवाहरातका व्यापार करते, नथमलजी गोंदे (जयपुरस्टेट) में और बाबू पूर्णचन्द्रजी जोबनेर (जयपुर) में सर्विस करते हैं। बाबू पूर्णचन्द्रजी एक योग्य तथा शिक्षित सज्जन हैं। आपने एम० ए० और विशारद परीक्षाएँ पास की हैं। आप विद्वान महानुभाव हैं।

बरड़िया

सेठ रतनलालजी जीतमलजी बरड़िया, जयपुर

इस परिवारका मूल निवासस्थान जोबनेरका है। आप बरड़िया गौत्रके श्री जै० श्वे० तेरापन्थी सम्प्रदायको माननेवाले हैं। इस खानदानमें चतुर्भुजजी, इनके रघुनाथजी तथा नन्दलालजी नामक पुत्र हुए। आपलोग जोबनेरमें ही हुण्डी चिट्ठीका लेन देन करते रहे। पश्चात् सेठ नन्दलालजीके पुत्र शिवलालजी सबसे प्रथम करीब ११० वर्ष पूर्व वहांसे जयपुर आये और यहांपर मेसर्स शिवलाल इन्द्रचन्द्रके नामसे हुण्डी चिट्ठीका व्यापार किया। आपने अपनी एक फर्म मे० शिवलाल भवानीरामके नामको किशनगढ़में भी खोली थी। आपके भवानीरामजी, इन्द्रचन्द्रजी, चांदमलजी तथा कस्तूरचंदजी, नामक चार पुत्र हुए।

सेठ चांदमलजी व्यापारकुशल तथा साहसी व्यक्ति थे। आपने भी अपने व्यापारको बढ़ाया। आपके पुत्र तेजकरणजीका जन्म सं० १९२३ में हुआ। आपने अपनी एक फर्म मे० जीतमल माणकचन्द्के नामसे बम्बईमें भी खोली थी। आपके रतनलालजी, जतनलालजी, जीतमलजी एवं कल्याणमलजी नामक चार पुत्र हुए। सं० १९७१ मे सेठ तेजकरणजीने अपनी बम्बई दुकान बन्द कर दी तथा आप जयपुर चले आये। आपका स० १९८१ में स्वर्गवास हुआ।

सेठ रतनलालजीका जन्म सं० १९४३ में हुआ। आप सर्विस करते हैं। आपके पुत्र सरदारमलजी मिलनसार युवक हैं। सेठ जीतमलजीका जन्म सं० १९५० में हुआ। आप सफल जवाहरातके व्यापारी हैं। सेठ कल्याणमलजीका जन्म सं० १९५८ में हुआ। आप कलकत्तामें चांदी सोनाके व्यवसायी हैं। जयपुरमें आपलोग एक अच्छी हवेली बना रहे हैं।

शाह नन्दरामजी शिखरचन्दजी बरड़िया, गोटेगाँव

यह परिवार नागोर के पास घंटियाली नामक स्थान का निवासी है। वहाँ से सेठ गंगाधरजी बरड़िया लगभग १०० वर्ष पूर्व व्यापार के लिये गोटेगांव आये। आपके मेघराजी, व्रजलालजी, खेमराजजी तथा प्रेमसुखजी नामक ४ पुत्र हुए। इन भाइयों ने अपने व्यापार तथा सम्मान को अच्छी तरक्की दी। आपकी मेघराज व्रजलाल के नाम से प्रख्यात दुकान थी। संवत् १९४७ में आपने देव संयनाथ भगवान का देरासर बनाया। आप चारों भाइयों का स्वर्गवास हो गया है। इस समय सेठ मेघराजजी के पुत्र रायमलजी एवं खेमराज जी के पुत्र नन्दरामजी विद्यमान हैं।

सेठ नन्दरामजी बरड़िया गोटेगांव के प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। आप स्थानीय म्यु० के वाइस प्रेसिडेंट हैं। आपका जन्म सं० १९३८ में हुआ। आपके पिताजी के स्वर्गवास के समय आप १२ साल के थे, पर आपने अपनी होशियारी से परमानन्द नन्दराम के नाम से जोरों से

व्यापार संचालन किया। सेठ नन्दरामजी के पुत्र शिखरचन्दजी, मोतीलालजी, सुन्दरलालजी, सरदारसिंहजी तथा विजयसिंहजी हैं। इनमें शिखरचन्दजी तथा मोतीलालजी फर्म के व्यापार में भाग लेते हैं। श्री मोतीलालजी फूलचन्द मोतीलाल के नाम से व्यापार करते हैं।

लूणिया

सेठ गौरूमलजी चौथमलजी लूणिया, जयपुर

यह परिवार जैसलमेर निवासी लूणिया गौत्रीय श्री जै० श्वे० तेरापन्थी है। इस परिवारके सेठ गौरूमलजी जैसलमेरसे देहली तथा देहलीसे जयपुर आये और यहांपर जवाहरातका व्यापार किया। आपके चौथमलजी तथा गणेशीलालजी नामक दो पुत्र हुए। आप दोनों बन्धु बड़े धार्मिक तथा मिलनसार थे। आज भी आप अपने नेकचलनके लिये जयपुरमें प्रसिद्ध हैं। आप दोनोंने सफलतापूर्वक जवाहरातका व्यापार किया। आप दोनोंका क्रमशः सं० १९५४ और ५७ में स्वर्गवास हो गया।

सेठ गणेशीलालजीके तेजकरणजी और गुलावचन्दजी नामक दो पुत्र हुए। इनमेंसे तेजकरणजी सं० १९५८ मेंही गुजर गये हैं। सेठ गुलाबचन्दजीका जन्म सं० १९३५ की भादवा बदी २ को हुआ। वर्त्तमानमें आप ही अपने सारे जवाहरातके व्यापारको सञ्चालित कर रहे हैं। आपने सेठ गुलावचन्द एण्ड को० के नामसे एक फर्म और खोली है जिसपर भी जवाहरात व क्युरियोसिटी का व्यापार होता है। आप जवाहरातका एक्सपोर्ट और इम्पोर्ट भी करते हैं। आप बड़े धार्मिक पुरुष हैं। स्तवन, ढाले आदि आपने लिखी हैं। आप जयपुरके तेरापन्थी सम्प्रदायके प्रमुख व्यक्ति हैं। आपके केशरीचन्दजी एवं पूनमचन्दजी नामक दो पुत्र हैं। वावू केशरीचन्दजी व्यापारमें भाग लेते हैं। आपके यहांपर मे० गौरुमल चौथमल एवं सेठ गुलावचन्द एण्ड संसके नामसे जयपुरमें जवाहरातका व्यापार होता हैं।

भाभू

लाला जसवन्तरायजी भाभूका खानदान, होशियारपुर

इस खानदानका मूल निवासस्थान होशियारपुर (पञ्जाव) का है। आप भाभू गौत्रके श्री जै० श्वे० म० मार्गीय हैं। इस खानदानमें लाला जौहरीमलजी हुए। आपके गुलाबरायजी, सुवामलजी तथा शोभारामजी नामक तीन पुत्र हुए। लाला गुलावरायजी के राधूमलजी और शिव्बूमलजी, राधूमलजीके छज्जूमलजी तथा छज्जूमलजीके हंसराजजी हुए। आप सब लोग गुजर गये हैं। लाला शिव्बूमलजीके उत्तमचन्दजी तथा जसवंतरायजी नामक दो पुत्र हुए।

इनमें उत्तमचन्दजी तथा उनके पुत्र प्यारेलालजीका स्वर्गवास हो गया है। होशियारपुर में आप लोग मनिहारीका काम करते थे। लाला शिब्बूलालजी सं० १९४८ में गुजरे।

लाला जसवन्तरायजीका जन्म सं १९२८ में हुआ। आपने सं० १९५० में मेट्रिक पास की। उसी साल आपने लाहौरमे अलायंस बैंक आफ शिमलामें सर्विस की। आपने इस बैंकके अलावा जैन बैंकमें सन् १९१३ से दो सालों तक सेक्रेटरीशिप का कार्य्य किया। फिर पुनः इसी बैंकमें आ गये। सन् १९३२ तक इसकी देहली शाखा में आप सर्विस करते रहे। उन्हीं दिनों सन् १९३१में आपने हायजरी वर्कका देहलीमें एक कारखाना खोला। इसमें आपको काफी सफलता प्राप्त हुई। आप सार्वजनिक स्पीरीटवाले सज्जन भी हैं। आप श्री आत्मानन्द जैन पत्रके ७ सालों तक सम्पादक आत्मानन्द जैन गुरुकुलके ५ सालोंतक निरीक्षक आदि २ रहे। वर्त्तमानमें आप तीन सालोंसे आत्मानन्द गुरुकुलकी प्रबन्धक कमेटीके मेम्बर, आत्मानंद जैन महासभा पंजाब, हस्तिनापुर जै० श्वे० तीर्थ कमेटीकी प्रबन्ध कमेटियोंके मेम्बर हैं। आप को धार्मिक पुस्तकें संग्रह करनेका अच्छा शौक है। आप आत्मानंदजी महाराजके अनन्य भक्त तथा अनेक भाषा जाननेवाले व्यक्ति हैं। आपके बनारसीदासजी, जिनचरणदासजी, लछमण दासजी, नानकचन्दजी, धर्मचन्दजी एवं कस्तूरचन्दजी नामक छः पुत्र हुए। इनमें से लाला बनारसीदासजी देहलीमे परखूमलजीकी विधवाके यहांपर गोद गये तथा जिनचरणदासजी लछमणदासजी क्रमशः लाहौर और देहलीमें अपना अलग स्वतन्त्र व्यापार करते हैं। लाला नानकचंदजी एवं धर्मचन्दजी अभी अपने व्यापारमें भाग ले रहे हैं। नानकचन्दजीके विजयकुमारजी, देवेन्द्रकुमारजी, राजेन्द्रकुमारजी तथा धरणेन्द्रकुमारजी नामक चार पुत्र हैं। इसी प्रकार धर्मचन्दजी के पदमचन्दजी और विमलचन्दजी नामक दो पुत्र हैं।

यह खानदान होशियारपुरमें प्रतिष्ठित माना जाता है। आपकी जैनीको रुमाल एण्ड हायजरी फैक्टरी शाहदरा दिल्लीमें है।

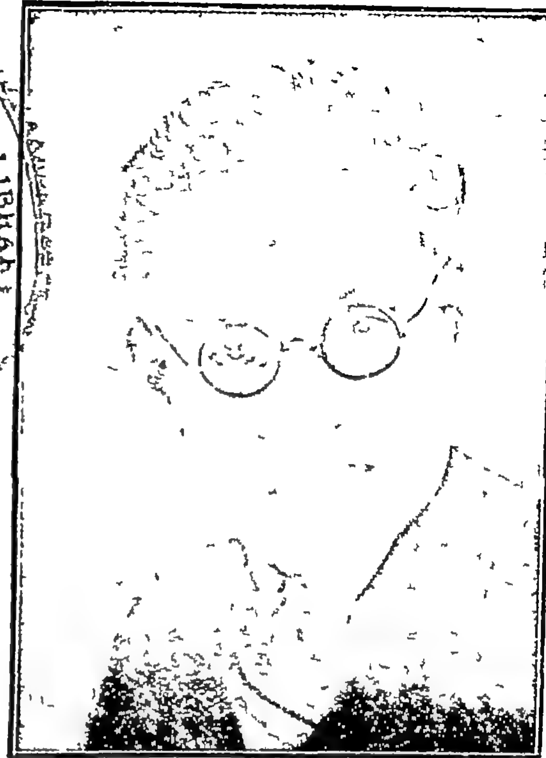
लाला मिलखीरामजी बनारसीदासजीका खानदान, होशियारपुर

इस परिवारवाले होशियारपुर (पंजाब) निवासी भाभू गौत्रके श्री जै० श्वे० स्था० आम्नायको माननेवाले हैं। इस खानदानमें लाला हजारीमलजी हुए। आपके राधाकिशनजी और राधाकिशनजीके गुरुदत्तामलजी तथा नत्थूमलजी नामक दो पुत्र हुए। आप सब लोग होशियारपुरमें ही सराफीका व्यापार करते रहे।

लाला गुरुदत्तामलजीके पुत्र मिलखीरामजीका जन्म स० १९२८ में हुआ था। आप बड़े धार्मिक तथा मिलनसार व्यक्ति थे। आप स्वभावके अच्छे तथा धर्म ध्यानी पुरुष थे। रात्रि भोजन, चौविहार आदि नियमोंको आपबराबर पालते रहे। आप ही पहले पहल सं० १९६९ में देहली आये और यहांपर बसातखाने व आढ़तका कार्य्य शुरू किया। आपको इसमें सफलता मिली। आपके पन्नालालजी तथा बनारसीदासजी नामक दो पुत्र हुए।



लाला कुंजलालजी गधैया (हुकुमचन्द काशीराम)
अमृतसर



बाबू भँवरमलजी सिंघी,
जयपुर



लाला बनारसीदासजी ओसवाल,
सदर बाजार देहली



लाला दीवानचन्दजी लोढा, (नानक-
चन्द दीवानचन्द) सदर देहली

लाला पन्नालालजीका जन्म सं० १६५८ में हुआ। आप कलकत्तेमें अपना व्यापार करते हैं। लाला बनारसीदासजीका जन्म सं० १६६१ में हुआ। आप समाजसेवी तथा मिलनसार युवक हैं। जैन पुस्तकालय सदर बाजार देहलीकी मैनेजिंग कमेटीके आप मेम्बर व समितिके भण्डारके कार्यकर्त्ता हैं। आपके पुत्र प्रेमचन्दजी महावीर पब्लिक लायब्रेरीके खजांची तथा उत्साही युवक हैं। आपका पता बनारसीदासजी ओसवाल सदर बाजार देहली है।

गधैया

लाला हुकुमचन्दजी काशीरामजी गधैया, अमृतसर

इस खानदानका खास निवासस्थान अमृतसर (पंजाब) का है। आप गधैया गौत्रके श्री जै० श्वे० स्था० आम्नायको माननेवाले हैं। यह खानदान मे० मेलूमल मानकचन्द मेंसे निकला है। इस खानदानवालोंने उपरोक्त नामसे सं० १६१४ के गदरके पहलेसे अपने यहाँ बसातखाने का काम चला रक्खा था। आप लोगोंकी फर्म बहुत ही पुरानी तथा बिसात खानेके व्यापारमें प्रमुख रही है। इस खानदानमें लाला हुकुमचन्दजी हुए। आपका जन्म सं० १८५२ में हुआ था। आप अमृतसरमें बसातखाने का सफलतापूर्वक काम करते रहे। आप सरल स्वभाववाले धार्मिक पुरुष थे। हर अमावस्याको आप सदाव्रत देते थे। आप सं० १६१५ में गुजरे। आपके काशीरामजी, वाशीरामजी एवं हंसराजजी नामक तीन पुत्र हुए।

लाला काशीरामजीका जन्म सं० १६३१ में हुआ था। आप व्यापार कुशल तथा हर एकके साथ हमदर्दी रखनेवाले शख्स थे। आपने व्यापार बढ़ाया और अपनी जायदाद बनाई। अमृतसरमें आप प्रसिद्ध थे। आपका स० १६८६ में स्वर्गवास हुआ। आपके फूलचन्दजी, रामलालजी, शोरीलालजी तथा तिलकचन्दजी नामक चार पुत्र हुए। आप चारों भाई व्यापार में भाग लेते हैं। लाला फूलचन्दजीके रोशनलालजी, जुगेन्द्रलालजी, मनोहरलालजी तथा सत्यपालजी और रामलालजीके विजयकुमारजी, पुजनकुमारजी नामक पुत्र हैं।

लाला वाशीरामजी युवावस्थामें ही सं० १६५६ में स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र लाला कुशलालजीका जन्म सं० १६५८ में हुआ। आपने सन् १६१८ में मेट्रिक पास करके अपने व्यापारमें भाग लेना शुरु कर दिया है। सुप्रसिद्ध गुजराती लेखक वाड़ीलाल मोतीलाल शाह ने अपने 'जैन हितेच्छु' में आपकी स्मरण शक्ति, तीक्ष्ण बुद्धि व धार्मिक शिक्षाकी लगनकी तारीफ की थी। आपने देहलीके व्यापारको सम्हाला और यहांपर एक बड़ी फेक्टरी खोली जो आज भी सफलतापूर्वक चल रही है। इस फैक्टरीसे, दूर दूरके प्रांतोंमें मालभेजा जाता है। आप सुधरे हुए खयालके, राष्ट्रीय भावनाओंवाले व्यक्ति हैं। आध्यात्मिक विषयोंमें आपको काफी दिलचस्पी रहती है। आप महावीर जैन विद्यालयके जन्मदाता, श्री श्रवणोपासक जैन मित्र

स्कूलके संचालक हैं। आप आफताफ नामक मासिक पत्रके भी संचालक रहे। आप अपने व्यापारके प्रधान संचालक, उत्साही तथा सार्वजनिक सेवा प्रेमी हैं। आपने परोपकारमें बहुत व्यय किया है। आपके शीतलप्रसादजी तथा देवेन्द्रकुमारजी नामक दो पुत्र हैं। प्रथम एफ० ए० में पढ़ रहे हैं।

लाला हंसराजजीका जन्म सन् १८८७ में हुआ। आपही वर्तमानमें इस खानदानमें सबसे बड़े तथा धर्मप्रेमी सज्जन हैं। आपको व्यापारका अनुभव भी अच्छा है। आपके दीपचन्दजी नामक एक पुत्र हैं। आप मे० हुकुमचन्द काशीरामके नामसे अमृतसरमें तथा काशीराम हंसराजके नामसे देहली सदरमें हायजरी व बसातखानेका व्यापार करते हैं।

लोढ़ा

लाला पन्नालालजी लोढ़ा का खानदान, देहली

इस परिवार वाले करीब १०० वर्षों से देहलीमें ही निवास कर रहे हैं। आप लोढ़ा गौत्रीय श्री जै० श्वे० स्था० आम्नायको माननेवाले हैं। इस परिवारमें किशनचन्दजी हुए। आपके नामपर पन्नालालजी गोद आये।

लाला पन्नालालजी—आप बड़े प्रतिष्ठित तथा व्यापारकुशल सज्जन हो गये हैं। आपके पहले आपकी फर्मपर चूड़ियोंका व्यापार होता था। आपने अपने यहांपर जवाहरातका व्यापार प्रारम्भ कर बहुत सफलता प्राप्त की। ऐसा सुना जाता है कि आपके समयमें आपके यहांसे कई स्टेटोंको जवाहरात जाता था। आप नामी जौहरी तथा योग्य व्यक्ति हो गये हैं। आपने खानदानकी प्रतिष्ठाको भी बहुत बढ़ाया। आपने लाला जीतमलजीको गोद लिया। गोद लेनेके पश्चात् लाला पन्नालालजीके मोतीलालजी नामक पुत्र हुए। आप दोनों भाई करीब ४५ वर्ष पूर्वसे अलग होकर अपना-अपना अलग व्यापार करने लगे। लाला जीतमलजीके नामपर माणकचदजी नागौरसे गोद आये।

लाला माणकचन्दजीने पुनः जवाहरातका व्यापार प्रारम्भ किया और सफलता प्राप्त की। आप मिलनसार व्यक्ति थे। आपकी धर्मपत्नी साधु सेवाप्रेमी तथा नम्र महिला थी। सं० १९६१ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके नामपर फूलचन्दजी प्रतापगढ़से गोद आये। आपका जन्म स० १९४६ में हुआ। आप ही वर्त्तमानमें अपना व्यवसाय संचालित कर रहे हैं। आपके चन्दूमलजी, गुलाबचन्दजी एवं धर्मचन्दजी नामक तीन पुत्र हुए।

लाला चन्दूमलजीका जन्म सं० १९६५ में हुआ। आप वर्तमानमें जवाहरातका व्यापार करते हैं। आपके चमनलालजी और पूनमचन्दजी नामक दो पुत्र हैं। बाबू गुलाबचन्दजीका जन्म सं० १९६६ में हुआ। आप सुधरे हुए ख्यालोंके योग्य तथा उत्साही युवक हैं। देश

सेवासे आपको विशेष प्रेम है तथा आप शुद्ध खद्दर पहनते हैं। कई समय आपको राष्ट्रीय नेताओंके साथ रहनेके अवसर आये हैं। आप राष्ट्रीय विचारोंके योग्य युवक हैं। आपने गुजरात विद्यापीठमें भी अध्ययन किया है। असहयोग आन्दोलनमें भाग लेनेके कारण आप एक समय जेल यात्रा भी कर आये हैं। आप राष्ट्रीय महासभाके देहली अधिवेशनकी स्वागतकारिणीके मेम्बर, स्थानकवासी जैन पाठशालाके मन्त्री आदि हैं। यहांकी महावीर जैन लायब्रेरीके उत्थानमें आपका बहुत हाथ रहा है।

लाला दीवानचन्दजी लोढ़ाका खानदान, अमृतसर

लाला दीवानचन्दजी लोढ़ाका मूल निवासस्थान अमृतसरका है। आप लोढ़ा गौत्रके श्री जै० श्वे० स्था० आम्नायको माननेवाले हैं। आप उन व्यक्तियोंमेंसे एक हैं जो अपने पैरों-पर खड़े रहकर अपनी सारी स्थितिको सँभालते हैं। आप जातिमें एक वजनदार व्यक्ति हैं। करीब ३५ सालोंसे आप देहलीमें व्यापार कर रहे हैं। आप लोकप्रिय तथा अनुभवी व्यक्ति हैं। पञ्चायतके चौधरी भी आप ही हैं। आप मेसर्स नानकचन्द दीवानचन्दके नामसे सदर-बाजार देहलीमे ब्रश, बटवा, निवार आदिका व्यापार करते हैं। आपकी जातिमें अच्छी प्रतिष्ठा है। आपके मोलखराजजी तथा सत्येन्द्रकुमारजी नामक दो पुत्र हैं जो व्यापारमें भाग लेते हैं।

परिशिष्ठ

*राय बुधसिंहजी प्रतापसिंहजी दूगड़का खानदान, मुर्शिदाबाद

यह खानदान सम्पूर्ण भारतवर्षके ओसवाल परिवारोंमें बहुत ही प्रतिष्ठित, अग्रगण्य तथा सम्माननीय माना जाता है। इस प्रसिद्ध राजवंशकी उत्पत्ति चौहान राजपूतोंसे हुई है। आप लोग प्राचीन कालमें सिद्धमौर और अजमेरके पास वीसलपुरमें राज्य करते थे। सन् ६३८ में इस राजवंश में राजा माणिकदेव हुए। आपके पिता राजा महिपालने जैनाचार्य श्री जिन वल्लभसूरिजी से जैन धर्म अंगीकार किया था। आपके दो तीन पीढ़ी बाद दूगड़ सूगड़ नामक दो पुत्र हुए जिनका विस्तृत इतिहास ग्रन्थके प्रथम भागमें दूगड़ गौत्रके प्रारम्भमें दिया गया है। आप हीके नामसे आप की संतानें दूगड़ कहलाईं। आपके कई सन्तानों बाद श्रीमान सुखजी हुए। आप सन् १६३२ ई० में राजगढ़ आये। उन्ही दिनोंमें आप बादशाहके यहांपर पांच हजार सेनाके सेनापति नियुक्त हुए। आप बडे योग्य तथा बहादुर व्यक्ति थे। सम्राट ने आपको राजा की पदवीसे विभूषित किया था। आपके बाद १८ वीं शताब्दीमें आपके खान-

---

* हमें खेद है कि इस प्रतिष्ठित खानदानका इतिहास हमें कुछ विलम्बसे मिला। अतः हम इसे उचित स्थानपर न छाप सके।

दानमें धर्मदासजीके पुत्र वीरदासजी हुए जो अपने निवासस्थान किशनगढ़ (राजपुताना) से तीर्थ यात्रा करनेके लिये रवाना हुआ। आप पार्श्वनाथ तीर्थ होते हुए सपरिवार वंगाल प्रांतके मुर्शिदावाद नगरमें आये और यहीं पर स्थायी रूपसे वस गये। आप वड़े व्यापार कुशल तथा साहसी सज्जन थे। यह वह समय था जिस समय मुर्शिदावाद वंगाल प्रान्तमें सवसे अधिक चमकता हुआ नगर व उन्नतिके शिखर पर था। प्रसिद्ध ईस्ट इण्डिया कम्पनीके समयमें यहांका व्यापार वहुत ही वढ़ा चढ़ा था। ऐसे समृद्धिशाली नगरमें आपने अपना निवासस्थान वनाकर वहां पर वैंकिंग का व्यापार आरम्भ किया। आपके वुधसिंहजी नामक पुत्र हुए।

वावू वुधसिहजीने अपने वैंकिङ्ग व्यापारको सफलता पूर्वक चलाया। आपके वहादुर सिंहजी एवं प्रतापसिंहजी नामक दो पुत्र हुए। वावू वहादुरसिंहजी तो नि संतान स्वर्गवासी हुए। अत सारे परिवार व व्यवसायका कार्य्य भार वावू प्रतापसिंहजीने अपने कन्धोंपर लिया।

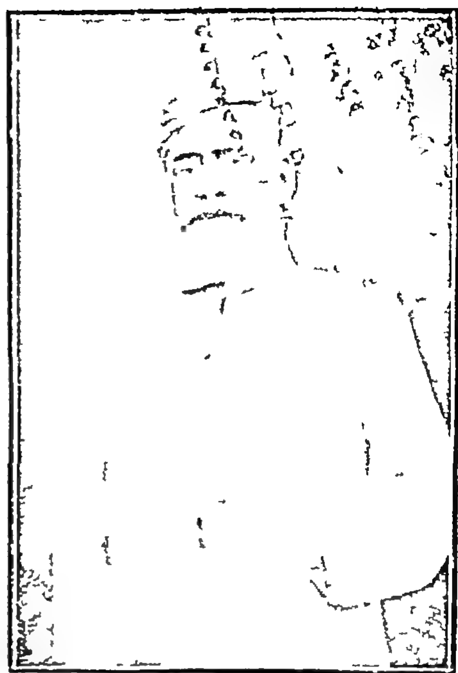
राजा प्रतापसिंहजी—आप इस खानदानमें वहुत ही चमकते हुए, प्रतिभाशाली तथा प्रभावशाली पुरुष हुए। आप व्यापारमें निपुण तथा कार्य्यकुशल महानुभाव हो गये हैं। इस खानदानके इतने ऐश्वर्य्यशाली व वैभव सम्पन्न दृष्टि गोचर होनेका प्रधान श्रेय आप हीको है। आपने अपने व्यवसायको चमकाया व लाखों रुपयोंकी सम्पत्ति उपार्जित की। आपका ध्यान अपनी स्थायी सम्पत्ति वनानेकी ओर भी विशेष रहा। आपने भागलपुर, पूर्णिया, रङ्गपुर, दिनाजपुर, माल्दा, मुर्शिदावाद, कूचविहार आदि जिलोंमें जमीदारी खरीद की।

धार्मिक कामोंमें भी आपने उत्साह पूर्वक भाग लिया। आप वड़े धार्मिक सज्जन थे। आपने कई स्थानोंपर जैन मदिर वनवाये तथा कई धार्मिक कार्यों में मुक्तहस्त से सहायता प्रदान की। आपने पालीताना और शिखरजीकी यात्राके लिये एक पैदल संघ निकाला था जिसमें वंगालके सैकड़ों कुटुम्ब आमन्त्रित किये गये थे। इस संघके शत्रुञ्जय तीर्थपर पहुचने के पश्चात् आपने अगहन वदी १ पर नौकारसी का वड़ा भारी जीमन किया। तभीसे यह प्रथा चालू हो गई तथा आजतक आपके वंशज उक्त मितीपर पालीतानामें दस पन्द्रह हजार मनुष्योंका जीमन हरसाल करवाते हैं।

आपको जाति सेवासे भी वहुत प्रेम था। सैकड़ों ओसवाल वन्धुओं को आपकी ओरसे प्रोत्साहन मिला होगा। आपके आश्रय पाये हुए सैकड़ों परिवार आज भी लखपति की हैसियतमें विद्यमान हैं। आपका कलकत्ते एवं मुर्शिदावादकी जैन जनतामें वहुत सम्मान है। वङ्गालकी जैन समाजमें आप ही सवसे वड़े जमीदार हैं। आपका परिचय इतना व्यापक तथा प्रभाव इतना फैला हुआ था कि दिल्लीके वादशाह तथा वंगालके नवाव ने भी आपको खिलअत देकर सम्मानित किया था। आपका सन् १८६० में स्वर्गवास हो गया। आपके लक्ष्मीपत सिंहजी एवं धनपतसिंहजी नामक दो पुत्र हुए। आप दोनों वन्धुओंका सारा विभाजन राजा प्रतापसिंहजी अपने स्वर्गवासके कुछ मास पूर्व ही अपने हाथोंसे कर गये थे।



स्व० राय वहादुर लछमीपतसिंहजी दूगड, जीयागंज



स्व० बाबू छत्रपतसिंहजी दूगड, जीयागंज



बाबू श्रीपतसिंहजी दूगड, जीयागंज



बाबू जगतपतसिंहजी दूगड, जीयागंज

राय लक्ष्मीपतसिंहजी बहादुर का खानदान - आपका जन्म सन् १८३५ में हुआ था। आपने योग्यता पूर्वक अपनी जमींदारीकी व्यवस्था की तथा खानदानकी प्रतिष्ठाको बहुत बढ़ाया। आप बड़े सार्वजनिक स्पीरीटवाले महानुभाव थे। आपने अपनी जमीदारीके गाँवोंमें स्कूल व अस्पताल खोले तथा अनेक सार्वजनिक एवं परोपकारी संस्थाओंको खुले हाथोंसे दान प्रदान किया। आपकी भी धार्मिक भावनाएं बड़ी प्रवल तथा स्वभाव उदार था। आपने सन् १८७० में एक सङ्घ निकाला था। इस सङ्घमे राजपुतानाके कई नरेशोंसे आपका परिचय हो गया था। एक समय जयपुर नरेश महाराजा सवाई रामसिंहजी जब कलकत्ता आये थे तब आपके यहां अतिथि होकर रहे थे।

आप जैन समाजके अंतर्गत प्रख्यात तथा नामी पुरुष हो गये हैं। आपने सन् १८७६ में छत्रबाग (कठगोला) नामक एक बहुत ही दिव्य उपवन लगाया जिसमें लाखों रुपया व्यय किया। यह बगीचा मुर्शिदाबाद तथा बङ्गालके दर्शनीय स्थानोंमें एक है तथा अपने ढङ्गका अनूठा बना हुआ है। इसी बगीचेमें आपने श्रीआदिनाथ भगवान का एक सुन्दर मंदिर बनवाया जिसकी प्रतिष्ठा श्रीजिनदत्तसूरीजीने सम्पन्न की। आप इस मंदिरके नामपर हजारों रुपये सालके आयकी जमीदारी देवपत्तर कर गये जो आजतक बराबर चली आ रही है। इस सम्पत्ति व देवपत्तर की व्यवस्था बाबू जगतपतसिंहजी के जिम्मे हैं। बाबू लक्ष्मीपतसिंहजी समयके बड़े पाबन्द थे। आपने जीवनमे कभी समयका दुरुपयोग नहीं किया था। गवर्मेन्टने सन् १८६७ में आपको "राय बहादुर" के सम्माननीय खिताबसे सम्मानित किया। आप सन् १८८६ में स्वर्गवासी हुए। आपके छत्रपतसिंहजी नामक एक पुत्र हुए।

बाबू छत्रपतसिंहजी—आपका जन्म सन् १८५७ का था। आप निर्भीक विचारोंके स्वतंत्र व्यक्ति थे। आपका कलकत्तामें बहुत परिचय था। आप जैन समाजके एक प्रमुख नेता तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। आप अपने पिताजीकी मृत्युके पश्चात् अपनी जागीरीकी सफलतापूर्वक व्यवस्था करते रहे तथा आपने अपने खानदानके सम्मानको पूर्ववत बनाये रक्खा। आपका स्वर्गवास सन् १९१८ में हुआ। आपके श्रीपतसिंहजी एवं जगतपतसिंहजी नामक दो पुत्र विद्यमान हैं।

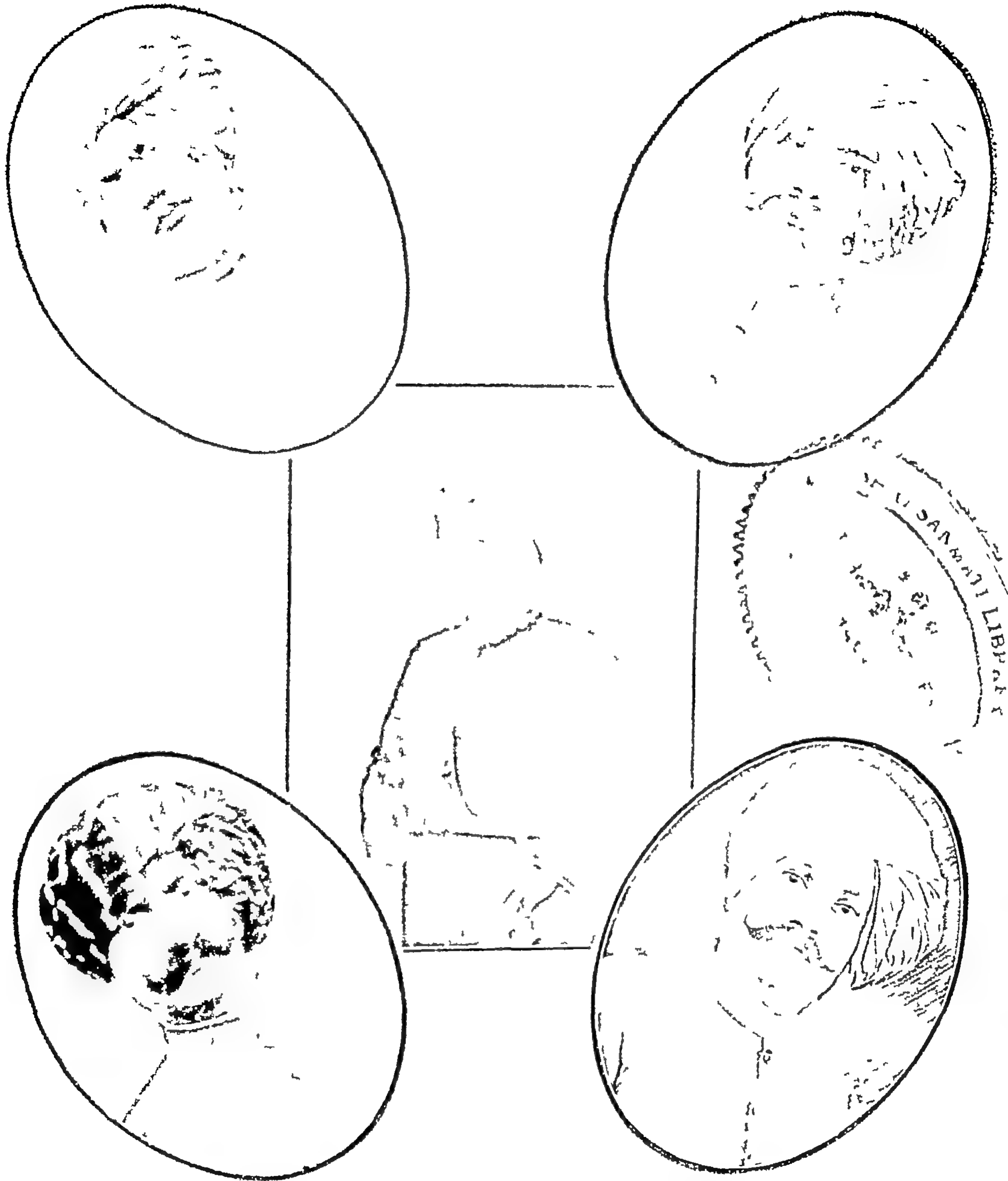
बाबू श्रीपतसिंहजी—आपका जन्म सन् १८८२ में हुआ। आप सरल स्वभावके मृदुभाषी व मिलनसार व्यक्ति हैं। ब्रिटिश गवर्मेण्टमें आपका अच्छा सम्मान है। आपका कई रईसोंसे भी अच्छा परिचय है।

बाबू जगतपतसिंहजी—आपका जन्म सन् १८८९ का है। आप योग्य, मिलनसार तथा बङ्गालके जागीरदारोंमें सम्माननीय व्यक्ति हैं। वर्तमानमे आप ही अपनी जमीदारीकी योग्यता पूर्वक व्यवस्था कर रहे हैं। आपके राजपतसिंहजी, कमलपतसिंहजी, प्रजापतसिंहजी एवं जदुपतसिंहजी नामक चार पुत्र हैं। बाबू राजपतसिंहजी उत्साही तथा शिक्षित युवक हैं। आपने बी० ए० पास कर लिया है तथा लॉ का अध्ययन कर रहे हैं।

राय धनपतसिंहजी बहादुर का खानदान—आपका जन्म सन् १८४० में हुआ था। आपने अपने गुणों, धार्मिक कार्य्यों तथा परोपकार वृत्तियों द्वारा अपने पिताके चमकते हुए नामको विशेप प्रकाशमान किया। अपनी जमीदारीकी योग्यता पूर्वक व्यवस्था करनेके साथ ही साथ आपने अनेक धार्मिक एव परोपकारके सत्कार्य किये। आपने चिरकालसे अप्रकाशित जैन धम के आगम ग्रन्थोंके प्रकाशनको अपने हाथमें लेकर एक अभूत पूर्व कार्य्य किया है। इन ग्रन्थोंको प्रकाशित करानेमें आपने अपना प्रचुर धन व्यय किया जिसके लिये सारा जैन समाज आपका ऋणी रहेगा। आपकी धार्मिक भावनाएँ बड़ी प्रवल तथा भक्तिभाव पूर्ण थीं। आपने अजीमगंज, वालूचर, नलहटी, भागलपुर, लक्खीसराय, गिरीडीह, बड़ाकर, सम्मैदशिखरजी, लछवाड़, कांकड़ो, राजगिरी, पावापुरी, गुनाया, चम्पापुरी, बनारस, बटेश्वर, नवराही, आबू, पालीताना, जलाजा, गिरनार, (बम्बई) तथा किशनगढ़में मदिर बनवाये और धर्मशालाएं निर्मित करवाई। पाठकोंको इन उक्त बातोंसे आपकी धर्मशीलताका पूर्ण परिचय हो जायगा। आपके बनाये हुए इन मन्दिरोंमें शत्रुंजय तलहट्टीका मंदिर विशेप रूपसे उल्लेखनीय है। जैन समाजका इस मंदिरपर बहुत प्रेम भाव है तथा यह मदिर दिन प्रतिदिन उन्नति कर रहा है। इसका चित्र ग्रन्थमें दिया जा रहा है। इसके अतिरिक्त आपने कई संघोंको निकाला तथा बंगालकी सभी संस्थाओंमे उदारतासे सहायता प्रदान की। गवर्नमेंटने आपको सन् १८६५ में "राय बहादुर" का खिताब प्रदान किया। आप मुर्शिदाबादमें ही नहीं वरन् सारे भारतवर्षकी जैन जनतामें आदरणीय तथा लोकप्रिय सज्जन थे। आप सन् १८९६ में स्वर्गवासी हुए। आपके राय गनपतसिंहजी बहादुर, श्रीनरपतसिंहजी एवं श्री महाराजबहादुरसिंहजी नामक तीन पुत्र हुए।

राय गणपतसिंहजी बहादुर :—आप तथा आपके छोटे भाई श्रीनरपतसिंहजी सन् १८८७ में अलग हो गये थे और अपने हिस्सेकी आई हुई स्टेटकी स्वतन्त्र रूपसे व्यवस्था करने लग गये थे। राय गणपतसिंहजी बहादुरका जन्म सन् १८६४ का था। आप योग्य व्यवस्थापक तथा व्यवहार कुशल सज्जन थे। आपने अपनी स्टेटकी सुचारु रूपसे व्यवस्था की। विद्या प्रचारसे आपको विशेप प्रेम था। आपने कई छात्रोंको मदद देकर उच्च शिक्षा दिलाई थी। आपको सन् १८९८ में ब्रिटिश गवर्नमेंटने "राय बहादुर" का खिताब इनायत किया। आप निसंतान सन् १९१५ में स्वर्गवासी हुए। अत आपकी मृत्युके पश्चात् आपके छोटे भ्राता बाबू नरपतसिंहजी सारी स्टेटके उत्तराधिकारी हुए।

राय नरपतसिंहजी बहादुर केसरे हिन्द :—आपका जन्म संवत् १९२२ में हुआ। आप तथा आपके ज्येष्ठ भ्राता राय गणपतसिंहजी बहादुरने मिलकर अपने खानदानकी स्थायी सम्पत्तिमें वृद्धि की, जमींदारी और खरीद की तथा अपने रुतबे को बहुत बढ़ाया। आप लोगोंने भागलपुर जिलेके दरावन नामक स्थानमें अपनी जमीदारी स्थापित की और आप लोग बदाके राजाके नामसे प्रख्यात हुए। आप बड़े माननीय, प्रतिष्ठित तथा मिलनसार सज्जन हो



बीचमें स्व० राय गनपतसिंहजी बहादुर दूगड, मुर्शिदाबाद

(१) स्व० राय नरपतसिंहजी बहादुर कैसरेहिंद, मुर्शिदाबाद (२) बाबू सुरपतसिंहजी दूगड, मुर्शिदाबाद

(३) बाबू महिपतसिंजी दूगड, मुर्शिदाबाद (४) बाबू भूपतसिंहजी दूगड, मुर्शिदाबाद

गये हैं। आपकी जमीदारी ४०० वर्ग मीलमें फैली हुई है तथा इसमें कई गांव वसे हुए हैं। आपने अपनी जमीदारीमे स्कूल तथा दवाखाने खोले। अपनी प्रजाके विद्यार्थियोंकी उच्च शिक्षाका प्रबन्ध भी आप लोगोंकी ओरसे किया जाता है। आप प्रजामें लोकप्रिय तथा प्रजाप्रेमी महानुभाव थे। आपका चरित्र वहुत ही उच्च तथा आदर्श था। आप बड़े सन्तोषी थे। आपका स्वर्गवास सन् १९२७ में हो गया। आपके बाबू सुरपतसिंहजी, महीपतसिंहजी तथा भूपतसिंहजी नामक तीन पुत्र हुए।

वावू सुरपतसिंहजी :—आपका जन्म सन् १८८७ में हुआ। वर्तमानमें आपही अपने परिवारमें सबसे बड़े तथा अपनी जागीरीके प्रधान संचालक हैं। आपका बिहार तथा बंगालके जागीरदारोंमें अच्छा सम्मान है। आप बिहार प्रान्तकी ओरसे सन् १९२९ में कौन्सिल आफ स्टेटके मेवर चुने गये थे। आपने कौंसिलमें जाकर सार्वजनिक कामोंमें विशेष हाथ वटाया तथा बड़े लोकप्रिय रहे। आपके नरेन्द्रपतसिंहजी एवं वीरेन्द्रपतसिंहजी नामक दो पुत्र विद्यमान हैं।

वावू महीपतसिंहजीका जन्म सन् १८८९ में हुआ। आप भी मिलनसार व्यक्ति हैं। आप भी जमीदारीके संचालनमें अपने ज्येष्ठ भ्राताको मदद कर रहे हैं। आपके योगेन्द्रपतसिंहजी, वारिन्द्रपतसिंहजी, कनकपतसिंहजी तथा कीर्तिपतसिंहजी नामक चार पुत्र हैं।

वावू भूपतसिंहजीका जन्म सन् १८९७ का है। आप मिलनसार तथा सार्वजनिक स्पीरीट वाले व्यक्ति हैं। आप विहार जमीदारोंकी ओरसे सन् १९३० में लेजिस्लेटिव एसेम्बलीमें चुने गये थे, जहांपर आपने सन् १९३४ तक रहकर सार्वजनिक देशहितके कार्य्य किये। आप भी असेम्वलीमें लोक प्रिय रहे। आपके राजेन्द्रपतसिंहजी आदि दो पुत्र हैं।

वावू नरेन्द्रपतसिंहजीका जन्म सन् १९१६ में हुआ। आप मिलनसार हैं और आय० एस० सी० में पढ़ रहे हैं।

श्रीमहाराजबहादुरसिंहजी—आपका जन्म सन् १८८० में हुआ। आप अच्छे शिक्षित, समझदार तथा योग्य सज्जन हैं। आप अपनी जमीदारीका सञ्चालन योग्यतापूवक कर रहे हैं। अपने पूज्य पिताजी द्वारा स्थापित किये हुए मन्दिर, धर्मशाला, स्कूल आदिकी सुव्यवस्था करनेका भार आपहीके जिम्मे हैं। आप भी उक्त संस्थाओंकी व्यवस्था बड़ी तत्परतासे कर रहे हैं। अपने पूर्वजोंकी कीर्तिको अक्षुण्य बनाये रखनेका आपको बहुत खयाल है। बङ्गालके जमीदारोंके अन्तर्गत आपका बहुत सम्मान है। आप एक अनुभवी एवं मिलनसार महानुभाव हैं। जैन समाजकी ओरसे श्रीसम्मेदशिखरजी तथा चम्पापुरीजीकी व्यवस्थाका भार भी आप ही के सुपुर्द है। आप श्री जै० श्वे० सोसायटीके आनरेरी जनरल मैनेजर हैं। आप मुर्शिदाबादकी जैन समाजके प्रमुख कार्य्यकर्त्ता तथा सार्वजनिक स्पीरीटवाले महानुभाव हैं। आपके कुमार ताजबहादुरसिंहजी, श्रीपालबहादुरसिंहजी, महिपालबहादुरसिंहजी, भूपालबहादुरसिंहजी, जगतपालबहादुरसिंहजी एवं कुमारपालबहादुरसिहजी नामक छः पुत्र हैं।

कुमार ताजवहादुरसिंहजी शिक्षित, मिलनसार तथा योग्य युवक हैं। आप वर्तमान में अलग रहते तथा अपने हिस्सेकी जमींदारीकी योग्यतापूर्वक व्यवस्था कर रहे हैं।

कुमार श्रीपालवहादुरसिंहजीका जन्म सं० १९६२ मेंहुआ। आप मिलनसार, शिक्षित तथा उत्साही युवक हैं। आप दिनाजपुर जिलेमें आनरेरी मजिस्ट्रेट हैं। आप वर्तमानमें जमींदारीके संचालनमें बहुत योग दे रहे हैं। कुमार महिपालवहादुरसिंहजीका जन्म सं० १९६७ में हुआ। आप शिक्षित, विनम्र, मिलनसार तथा उत्साही नवयुवक हैं और जमीदारीके सञ्चालनमें योग दे रहे हैं। कुमार भूपालवहादुरसिंहजी तथा जगतपालवहादुरसिंहजीका क्रमशः सं० १९७१ तथा ७३ में जन्म हुआ। आप दोनों बन्धु मिलनसार है तथा जमींदारीके सञ्चालनमे योग देते हैं। कुमारपालवहादुरसिहजीका जन्म सं० १९८१ में हुआ।

आपलोगोंका सारा परिवार बहुत ही प्रतिष्ठित तथा सम्माननीय माना जाता है। अपने-अपने जमींदारीके गाँवोंमें भी आपलोग प्रतिष्ठित समझे जाते हैं।

सँखलेचा

श्री लक्ष्मीलालजी सखलेचाका खानदान, जावद

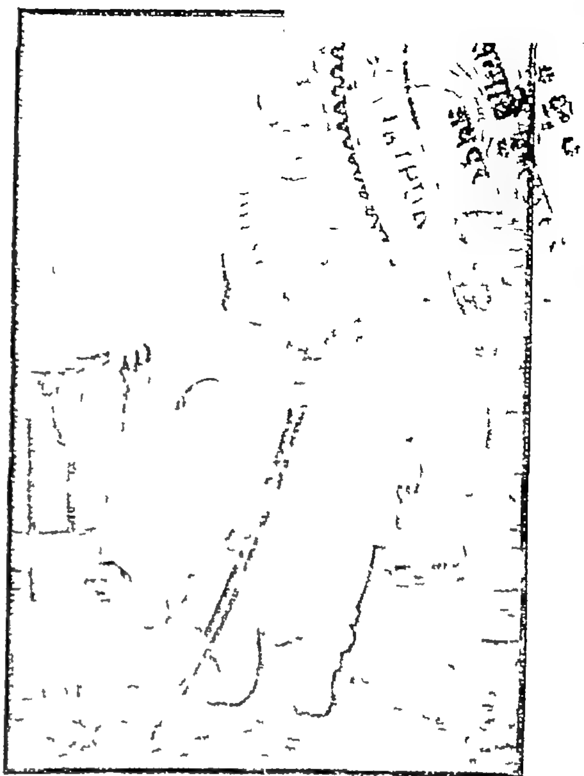
इस परिवारके लोगोंका मूल निवासस्थान मेड़ता (मारवाड़) है। लगभग १०० वर्ष पूर्व वाघमलजी सखलेचा व्यापारके लिये जावद (ग्वालियर) आये। आप एक प्रतिभाशाली एवं साहसी व्यक्ति थे। अतः आपने थोड़े ही दिनोंमें व्यवसायमें अच्छी उन्नति कर ली। उन दिनों अफीम मालवेसे अहमदाबाद जाया करती थी। पर रेल मार्ग न होनेसे डाकुओंका बड़ा भय रहता था। आपने अफीम के वीमेका काम आरम्भ किया और अपनी जिम्मेदारी व प्रवन्ध से जावद व आसपासके नगरोंकी अफीम अहमदावाद पहुंचाने लगे। अपनी दूरदर्शिता और सुप्रवन्धसे आपने कभी इस व्यवसायमें धोखा न खाया। आप उदार और गुप्तदानी व्यक्ति थे।

मानमलजी सखलेचा - वाघमलजीके कोई सन्तान न होनेसे सं० १९११ मे जोधपुरसे मानमलजी सखलेचा गोद आये। आपने भी अपने पिताजीके व्यवसाय ही को जारी रक्खा। साथ ही जमींदारी व लेनदेनका काम भी आरम्भ किया। अपनी व्यवहार कुशलता व सद्व्यवहारके कारण ये जावदमें सबके प्रेमभाजन बन कर रहे। इन्हीं दिनों सं० १९३४ मे आपने अपने निवासके लिये एक सुन्दर हवेली बनवाई। मानमलजीके सन्तान जीवित न रहनेके कारण हमीरमलजीको गोद रक्खा। आपके पुत्र केसरीमलजी आजकल जावद में ही प्रमुख कपडेके व्यवसायी हैं। आप मिलनसार और सज्जन व्यक्ति हैं।

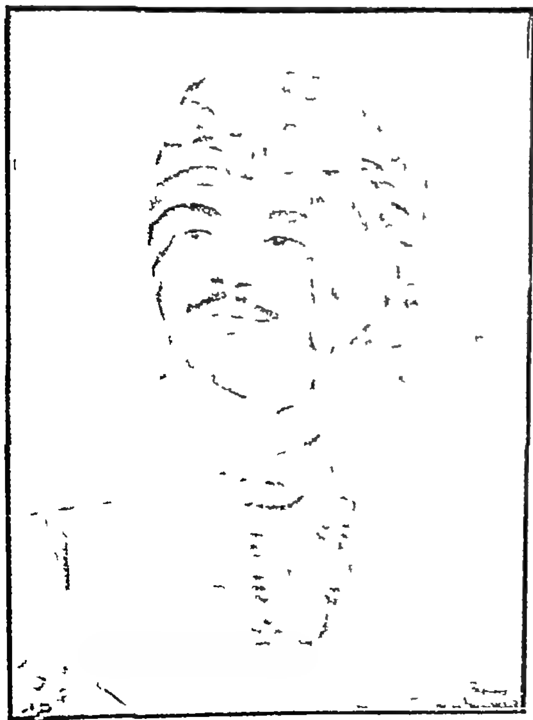
लक्ष्मीमलजी सखलेचा हमीरमलजी को गोद लानेके बाद मानमलजीके सं० १९४५ में लक्ष्मीलालजी नामक एक पुत्र हुए। आप मिलनसार तथा सरल स्वभाववाले सज्जन हैं।



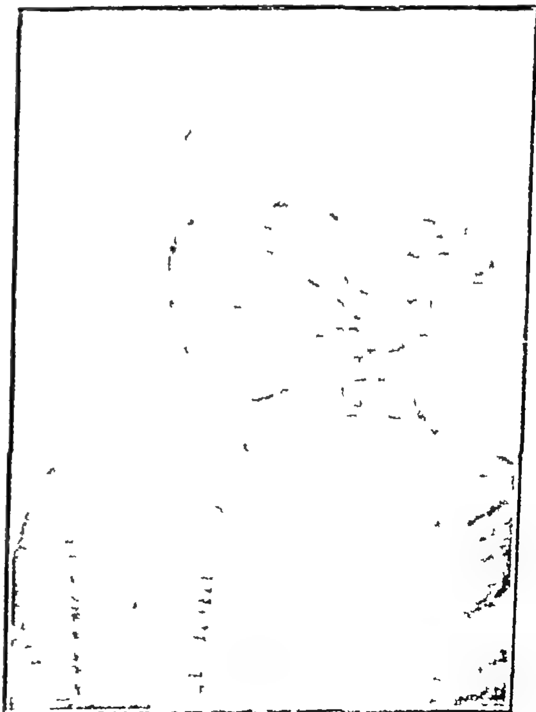
श्री बाबू महाराजबहादुरसिंहजी दूगड, मुर्शिदाबाद



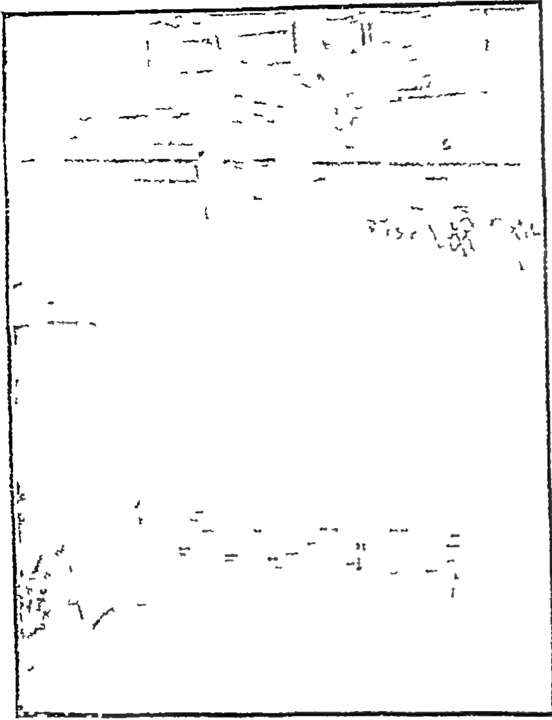
कुमार श्रीपालबहादुरसिंहजी दूगड, मुर्शिदाबाद



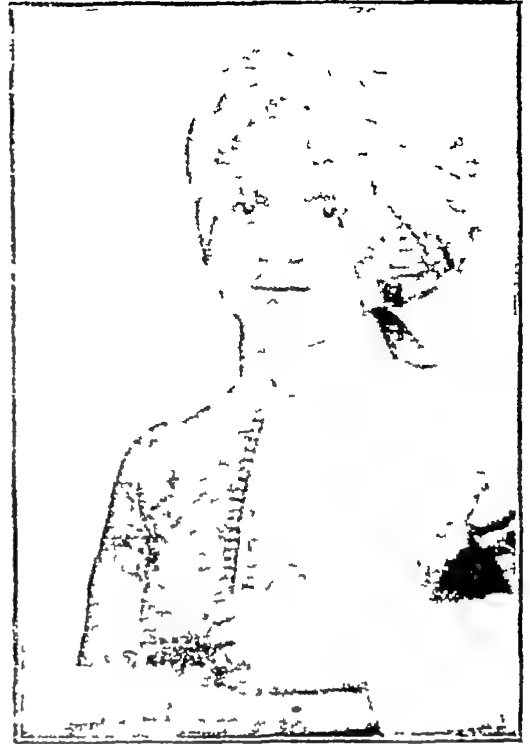
कुमार महिपालबहादुरसिंहजी दूगड, मुर्शिदाबाद



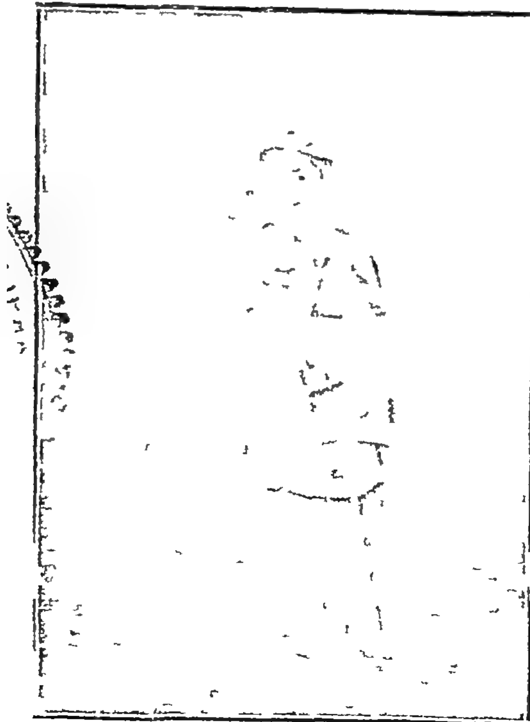
कुमार भूपालबहादुरसिंहजी दूगड मुर्शिदाबाद



बाबू कन्हैयालालजी बढेर कलकत्ता



कुमार जगतपालबहादुरसिंहजी दूगड़, मुर्शिदाबाद



कुमारपालबहादुरसिंहजी दूगड, मुर्शिदाबाद

रूईके व्यापारमें आपको प्रारम्भ हीसे बड़ी दिलचस्पी है। आप ज्योतिष शास्त्र एवं बाजारके अन्य व्यवसायोंपर रूईकी भविष्यकी तेजी मन्दीके सम्बन्धमें अक्सर अखबारोंमें पहिले लेख लिखकर व्यापारियोंको सावधान कर दिया करते थे। अतः आप जावदसे रूईके प्रमुख केन्द्र स्थान बम्बईमें सं० १९८८ में आये और "भविष्य-प्रकाश" नामसे रूईकी भविष्यकी तेजी मन्दी बतानेवाली पुस्तक प्रतिवर्ष प्रकाशित करने लगे। साथ ही आपने रूई, सोने चांदी आदिकी आढ़तका कार्य भी प्रारम्भ किया। इन ५-६ वर्षोंमें आपने परिश्रम तथा व्यवहार कुशलता के कारण व्यापारमें खूब प्रगति की है। साथ ही 'भविष्य-प्रकाश' का आदर भी व्यापारिक समाजमें खूब हुआ है।

इधर कुछ दिनोंसे आप ज्योतिष और गणित सम्बंधी विश्लेषणोंके आधारपर रूई आदि व्यापारिक वस्तुओंकी भविष्यकी तेजी मन्दी जाननेके लिये एक बड़े ग्रन्थ की तैयारी कर रहे हैं। यह ग्रन्थ लगभग २००० पृष्ठोंमें सम्पूर्ण होगा एवं व्यापार सम्बन्धी ज्योतिष साहित्यका अपने ढङ्गका पहला ही होगा।

आपके दो पुत्र चांदमलजी और सौभाग्यमलजी हैं। चांदमलजी जावद हीमें अपनी घरू जमींदारीकी देखरेख करते हैं तथा सौभाग्यमलजी बम्बईके सिडनहम कालेजमें B.Com में पढ़ रहे हैं। ये एक मेधावी युवक हैं। आरम्भ हीसे हमेशा अपनी कक्षामें प्रथम आते रहे हैं।

सिंघी

बाबू भँवरमलजी सिंघी, जयपुर

बाबू भँवरमलजी सिंघी मालीरामजीके पौत्र एवं इन्द्रचन्द्रजीके पुत्र हैं। आप बड़े योग्य प्रतिभाशाली लेखक तथा उत्साही युवक हैं। आप शिक्षित तथा तीक्ष्ण बुद्धिवाले व्यक्ति हैं। आपके विचार सुधरे हुए तथा नवीन ढङ्गके मँजे हुए हैं। आप बी० ए० पास तथा हिन्दीमें रत्न हैं। बी० ए० आपने द्वितीय दर्जेमें १० वें नम्बर से तथा उत्तमाकी परीक्षा भी दूसरे दर्जेसे पास की। आपकी लेखन शैली नवीन ढङ्गकी और रोचक है। आपके भाव बड़े गम्भीर व सारगर्भित रहते हैं।

सार्वजनिक कामोंमें भी आप दिलचस्पीसे भाग लेते हैं। आप अखिल भारतवर्षीय युवक परिषदके ज्वाइण्ट सेक्रेटरी हैं। आप मध्यमा परीक्षाके परीक्षक भी हैं।

वेद

सेठ जगरूपजी अमीचन्दजी वेद मेहताका खानदान, जावरा

इस परिवारवाले मूल निवासी रास (बीकानेर स्टेट) के वेद गौत्रीय श्री जैन श्वे०

स्था० आम्नायको माननेवाले हैं। रासससे करीव १५० वर्षों पूर्व इस खानदानके लखमाजी जावरा आये तथा वहांपर गाँव इजारेका कार्य किया। इसमे आपको वहुत सफलतो मिली। आपके कस्माजी तथा कस्माजीके जगरूपजी, अमीचन्दजी तथा जवरचन्दजी नामक तीन पुत्र हुए।

सेठ जगरूपजी तथा अमीचन्दजी दोनों भाई इस खानदानमें वड़े प्रतिभाशाली तथा प्रभावशाली सज्जन हो गये हैं। आप लोगोंने अपनी व्यापार चातुरीसे गांव इजारेके काममें तथा अफीमके व्यापारमें वहुत सी सम्पत्ति कमाई। आप उदार, मिलनसार तथा लोकप्रिय व्यक्ति थे। जावरा स्टेटने आप दोनोंका स्टेटको आर्थिक सहायता पहुचानेके उपलक्ष्यमें काफी सम्मान किया था। आपके यहांपर विवाहके समय नवाव साहब स्वयं पधारते तथा पोशाकें इनायत किया करते थे। आप यहांके प्रतिष्ठित तथा वजनदार सज्जन थे। आपको जावरा स्टेटने कई वातोंकी माफी वक्षी थी। आपने जावरामें दुकानें, मकान, वगीचे वगैरह वनाकर अपना पूर्ण वैभव जमा लिया था। आपके इन कार्य्यों से प्रसन्न होकर जावरा-स्टेटने आपको "नगर सेठ" का खिताब दिया तथा १५) सालाना होलीपर वक्षा जानेका हुक्म हुआ था जो आजतक वक्षा जाता है। आप लोगोंके नामसे आपका खानदान आज भी मशहूर है। आपने सरकारी कस्टमको ३ सालके लिये ठेकेसे भी लिया था। आपको जागीरी भी प्राप्त हुई थी। सेठ अमीचन्दने प्रतापगड़, पीपलोदा आदि स्थानोंका पोहारा भी किया था। आपका स्वर्गवास सं० १९३९ में तथा जगरूपजीका सं० १९५० में हुआ। सेठ जगरूपजीके मगनीरामजी, गम्भीरचन्दजी एवं टेकचन्दजी नामक तीन पुत्र हुए। आप लोगोंको ५००) सालाना जावरास्टेटसे आपके दिये गये लोनके तमस्सुकके मिलते रहे। सेठ गम्भीरमलजीके तखतमलजी नामक पुत्र हुए। सेठ तखतमलजीका जन्म सं० १९२० में हुआ। आप सेठोंके साथ व्यापारमें योग देते रहे। आपका स्वर्गवास सं० १९६० में हुआ। आपके हस्तीमलजी तथा सौभागमलजी नामक दो पुत्र हुए। सं० १९६८ में आप दोनों अलग २ होकर अपना २ व्यापार करने लगे।

सेठ हस्तीमलजीका जन्म सं० १९३५ में हुआ। आपके उमरावसिंहजी, रतनलालजी तथा शांतिलालजी नामक तीन पुत्र हैं। सेठ सौभागमलजीका जन्म स० १९४६ में हुआ। आप मिलनसार व्यक्ति हैं। आपने अपने हाथोंसे पुनः अपनी सारी स्थिति सम्हाली तथा परिवारके रुतवेको वनाये रक्खा। आप वर्तमानमें कपड़ेका व्यापार करते हैं। आपके सुजानमलजी तथा सरदारमलजी नामक दो पुत्र हैं।

इस खानदान वालोंको "नगर सेठ" की पदवी आज भी चली आ रही है। आप लोगोंके यहां शादी व गमीके समय सरकार की ओरसे लवाजमा इनायत किया जाना है। यह खानदान यहांपर प्रतिष्ठित माना जाता है।

भण्डारी

सेठ चुन्नीलालजी चौथमलजी भण्डारी, जामनवाले, भोपाल

यह परिवार मूल निवासी नागौर (मारवाड़) का है। वहांसे इस परिवारके पूर्वज सेठ शोभारामजी भण्डारीके पिता लगभग सवा सौ वर्ष पहले व्यापारके लिये आस्टा (भोपाल-स्टेट) में आये। वहांसे सीहोर गये तथा सीहोर से लगभग १०० साल पहिले आप भोपाल आये तथा वहां आपने अपना व्यापार जमाया। सेठ शोभारामजीके फौजमलजी, चुन्नीलालजी, चौथमलजी तथा परतापमलजी नामक ४ पुत्र हुए। इन भाइयोंमें सेठ फौजमल जी तथा चुन्नीलालजीने इस परिवारके व्यापार तथा इज्जतको विशेष बढ़ाया। आप लोगों-ने चैनपुरामें जो अब सुलतानपुराके नामसे मशहूर है, दुकान खोली। आपके जिम्मे सरकारी कोठेके व्यापारका काम होता था। भोपाल स्टेटकी ओरसे आप चैनपुराके खजांची मुकर्रर किये गये थे। भोपाल-रियासतमें आप प्रतिष्ठित पुरुष थे। सेठ फौज़मलजीका संवत् १९४८ में, सेठ चुन्नीलालजीका १९५७ में, सेठ चौथमलजीका १९७१ में तथा सेठ परतापमल-जीका १९७८ में स्वर्गवास हुआ। इस समय सेठ फौजमलजीके पुत्र लाभचन्दजी अपना स्वतंत्र व्यापार करते हैं।

सेठ चुन्नीलालजीके फूलचन्दजी, गोड़ीदासजी, कल्यानमलजी तथा नथमलजी नामक ४ पुत्र हुए। इन भाइयोंमें सेठ गोड़ीदासजी भण्डारी इस समय विद्यमान हैं। आप चारों भाइयोंका व्यापार संवत् १९८६ में अलग २ हुआ है। सेठ गोड़ीदासजीका जन्म संवत् १९३३ की भादवावदी १२ को हुआ। सवत् १९६७ तक आपके पास चैनपुराके खजानेका काम रहा। आप सयाने तथा समझदार पुरुष हैं। भोपालमें आपका खानदान नामी माना जाता है। आप के पुत्र श्री सरदारमलजीका जन्म संवत् १९५२ में तथा सिरेमलजीका जन्म संवत् १९५५ में हुआ है। आप दोनों भाई अपने व्यापार संचालनमें भाग लेते है। इस समय आपके यहां चुन्नीलाल चौथमलके नामसे साहुकारी हुंडी चिट्ठीका व्यापार होता है।

सेठ कल्याणमलजीके पुत्र छगनमलजी तथा मिश्रीलालजी विद्यमान हैं। इनमें मिश्री-लालजी सेठ नथमलजीके नामपर दत्तक गये हैं। आपलोग भोपालमें व्यापार करते हैं।



श्रीमाल जातिका इतिहास

History of Shrimals.

इस विशाल देशके इतिहास को देखनेसे पाठकोंको मालूम होगा कि इसके अन्तर्गत अनेक राजवंशोंके उत्थान और पतन, आपसकी छोटी छोटी बातोंमें घमासान युद्धोंका प्रारंभ और समाप्ति तथा भयंकर घृणित फूटके परिणाम स्वरूप विनाशका चक्र चिर-कालसे चला आ रहा है। इस देशकी रमणीयता तथा धन धान्य परिपूर्णतासे आकर्षित होकर खैवर, खुर्रम आदि घाटियोंसे हजारों काबुल, कन्दहार, टर्की, फारस आदि देशोंके मुसलमान आक्रमणकारी सातवीं शताब्दीके बादसे यहां आने लगे और भारतीय वीरोंके पारस्परिक वैमनस्यसे लाभ उठाकर अपने पैरोंको यहांपर मजबूत जमाने लगे। इतिहास यह स्पष्ट तरहसे बतलाता है कि सातवीं शताब्दीके बादसे यहांपर आक्रमणकारियोंका तांतासा बन्ध गया और सर्वत्र जिसकी लाठी उसकी भैंस वाली कहावत चरितार्थ होने लगी। कई आक्रमणकारी तो विध्वंस करने हो आये थे। भारतीय वीरोंने भी इस विध्वंस मे योग दिया तथा मार काट, लूट खसोट, आग लगाना आदिका बाजार बहुत गरम रहा। कहने का तात्पर्य्य यह है कि इस विध्वंस मनोवृत्तिकेकारण भारतीय इतिहास और संस्कृति-को अकथनीय धक्का पहुचा है। कई स्थानोंपर हम हमारी ऐतिहासिक सामग्रीके भण्डारोंको जलाने, प्राचीन कला व संस्कृतिके सुन्दर नमूनोंको नष्ट करने आदिका उल्लेख पाते हैं।

भारतका इतिहास आज भी अन्धकार में है। हमारे बहुतसे इतिहासकारोंने, कवियोंने तथा लेखकोंने जो थोड़ा बहुत परिश्रम किया भी तो उसे समयके कुचक्र और राज्यक्रांतियोंने जहाका तहां हो रख दिया। अब अर्वाचीन कालसे हमारे इतिहासकारों तथा पुरातत्ववेत्ताओं-का ध्यान इस ओर गया है। अब संतोषजनक गतिसे हमारे प्राचीन इतिहासकी खोज हो रही है।

जातीय इतिहास तो बहुत ही अन्धकारमें प्रतीत होते हैं। अभी तककी उपलब्ध प्रायः सभी सामग्रियोंको देखकर इतिहासका विद्यार्थी कभी सन्तुष्ट नहीं हो सकता। जाति विषयक सामग्री में से अधिकांश सामग्री तो ऐसी है जो अप्रामाणिक तथा जातिके प्रशंसक भाटों, भोजकों आदि द्वारा लिखी हुई है। शेष सामग्रीमें आपसमें बहुत ही गहरा मतभेद पाया जाता है।

श्रीमाल जातिके इतिहासमे भी यही बात है। इस जाति का न तो कोई प्रामाणिक इतिहास ही निकला है और न इस विषयमें खोज ही की गई है। इस जातिकी स्थापनाके विषयमें अभीतक जिन-जिन महानुभावोंने अपने मत प्रगट किये हैं उनमेंसे तीन मत प्रधान हैं जिनका उल्लेख हम नीचे करते हैं।

(१) पहला मत जैनाचार्यों एव जैन ग्रन्थोका है। जैनाचार्य्योंने अपने द्वारा लिखी गई पुस्तकोंमें श्रीमाल जाति की उत्पत्तिका भी स्थान स्थान पर उल्लेख किया है। इसी प्रकार जैन ग्रन्थोंमें भी बहुतसे स्थानोंपर इस तरह का वर्णन आया है। जैनाचार्य्यों एवं जैन ग्रन्थोंके रचयिताओं की सम्मतिसे श्रीमाल जाति की उत्पत्ति श्रीभगवान महावीरके निर्वाण पद प्राप्त

कर लेनेके ३० वर्ष पश्चात् अर्थात् विक्रम शताब्दीसे पांच शताब्दियों पूर्व हुई है। कई स्थानों पर इस बातका भी उल्लेख मिलता है कि श्री पार्श्वनाथ प्रभुके पांचवे पाट धर श्री स्वयं प्रभुसूरिजीने श्रीमालनगरमें सर्व प्रथम श्रीमाल बनाये। यह घटना भगवान महावीर स्वामीके निर्वाण पद प्राप्तिके ३० वर्ष पश्चात् घटित हुई है।

(२) दूसरा मत प्रशंसकों, भाटों एवं भोजकोंका पाया जाता है। इन लोगोका कथन है कि सं० १८२ में श्रीमालनगरमें श्रीमाल जातिकी स्थापना हुई।

(३) तीसरा मत इतिहासकारों का है जो सचाईकी कसौटीपर कस जानेके पश्चात् बनता है। इतिहासकार अभी अपने एक किसी निश्चित, प्रामाणिक निर्णयपर तो नहीं पहुंच सके हैं मगर बहुत खोज, परिश्रम तथा सारी परिस्थितियोंकी तुलना करनेके पश्चात श्रीमाल जातिकी उत्पत्ति विक्रमी सं० ८०० एवं ९०० के बीचमें बतलाते हैं। उनका कहना है कि उक्त शताब्दीके पहले श्रीमालनगर में भीमसेन तथा उनके पुत्र उपलदेव, आलपाल और आसल नामके कोई राजा न हुए। सं० ९०० के पश्चात एक जगह ऐसा मालूम होता हैं कि भीनमालके राजपुत्र उपलदेवने मंडोरके पड़िहार राजाके पास जाकर आश्रय ग्रहण किया था। उसी राजाकी सहायतासे कुमार उपलदेवने ओशियां नगरीको बसाया जहांसे ओसवाल जातिकी उत्पत्ति हुई। इन्हीं उपलदेवके पिता भीमसेन श्रीमालनगर के राजा थे। उसी समय श्रीमाल जातिकी स्थापना हुई होगी।

नीचे हम उक्त तीनों मतोंका विस्तार पूर्वक विवेचन करते हैं।

जैनाचार्य्यों की सम्मतिसे श्रीमालजाति की स्थापना—

श्रीमाल जातिके विषयमें यह बात जो निर्विवाद सत्य है कि श्रीमालनगर से ही यह जाति निकली है। अतः हम सर्व प्रथम श्रीमालनगरका कुछ वर्णन देकर श्रीमाल जातिकी उत्पत्तिके विषयमें जैनाचार्य्यों के मतोंको संग्रहीत करेंगे।

श्रीमालनगर—

यह नगर अजमेरसे पालनपुर जानेवाली रेलवे लाइनके आबू रोड स्टेशनसे पश्चिमकी ओर ४० मीलकी दूरीपर बसा हुआ था। आज भी इस नगरके खण्डहर इसकी प्राचीनताके द्योतक हैं। यह एक ऐतिहासिक स्थान रहा है। इस स्थानके पास बहुत सा लड़ाइयां वगैरह भी हुई हैं।

श्रीमालनगरकी प्राचीनता—

यह नगर बहुत ही प्राचीन है। इस नगरके खण्डहर के पास बसे हुए भिन्नमाल (भीनमाल) के तालाब पर एक जैन मंदिर बना हुआ था। अब इस मंदिरके खण्डहर मात्र रह गये हैं। इन खण्डहरमें एक प्राचीन शिलालेख भी मिला है जो निम्न प्रकार है।

* यः पुरात्र महास्थाने श्रीमाले स्वयमागतः सदेवः श्रीमहावीरो देवा (द्धः) सुख सम्पदं ॥ १ ॥

यं शरणं गतः

तस्य वीर जिनेन्द्र (स्य) पूजार्थं शासनं नवं ॥ २ ॥

धारा पद्र महागच्छे पुण्ये पुण्ये कशालितां

श्री पूर्णचन्द्रसू (री) स्वस्ति स० १३१३ वर्ष ॥ आश्विन

पाठकोंको इस लेखसे मालूम होगा कि यह लेख सम्वत् १३१३ का खुदा हुआ है और इसके पहले तक हमारे आचार्य्योंकी यह धारणा थी कि भगवान महावीर स्वयं श्रीमालनगरमें पधारे थे। कई पुस्तकोंके अतर्गत ओशियां वसनेका कारण बतलाते हुए श्रीमालनगरका भी जिक्र किया गया है। श्रीमालनगर, जो अब भिन्नमालके नामसे मशहूर है, के राजा भीमसेन हुए। इनके पुत्र पंवारवंशीय उपलदेव † कारणवश अपने साथियोंको लेकर बाहर निकल गये और जोधपुरके पास ओशियां नामक नगर बसाया। इसी तरह श्रीमालनगरके विषयमें जैन जाति निर्णय, जैन जाति महोदय, श्रीमाल पुराण, स्कन्ध पुराण आदि कई ग्रन्थोंके अन्तर्गत वर्णन आया है। वैसे तो बहुतसे ग्रन्थोंमें बहुतसी इस तरहकी बातें भी लिखी हुई पाई जाती हैं कि श्रीमालनगरके चारों युगोंके नाम अलग अलग हैं और इसका एक दोहा भी बना हुआ है। हम उसे नीचे देते हैं।

‡ श्रीमाल मिती यन्नाम रत्नमाल मिति स्फुटं ॥
पुष्पमालं पुनर्भिन्नमालं चतुष्टये ॥ १ ॥
चत्वारि यस्य नामानि वितन्वंति प्रतिष्ठितं।
अहो नगर सौन्दर्यं महार्यं भिजगत्यपि ॥ २ ॥

इसी तरह इस नगरके विषयमें श्रीमालपुराणके ६ वें अध्यायके ३६-३७ श्लोकोंमें ऐसा कहा गया है।

श्रिय मुदिश्य मालाभिरावृता भूरि यं सुरैः
ततः श्रीमाल नाम्यास्तु लोके ख्याति मिदंपुरं ॥

---

* प्राचीन जैन लेख सग्रह दूसरा भाग लेखांक ४०२

† जैसा कि इस ग्रन्थके प्रथम भागमें लिखा हुआ है कि इस सम्बन्धमें दो और मत प्रचलित हैं। पहला यह है कि पट्टावली नं० ३ में भीमसेनके एक पुत्र श्रीपुंज था जिसके सुर सुन्दर और उपलदेव नामक दो पुत्र हुए। इसी प्रकारका उल्लेख श्रीआत्मानन्द जैन ट्रेक्ट सोसाइटीने अपने ट्रेक्ट नं० १० के ११ वें पृष्ठपर किया है। दूसरा मत यह है कि राजा भीमसेन के तीन पुत्र थे जिनके नाम क्रमश उपलदेव, आसपाल एव आसल थे।

‡ इन्द्रहँसगणी लिखित जैन गौत्र संग्रह पृष्ठ नं ६ पर देखिये।

मगर ऐतिहासिक दृष्टिसे इस तरहकी बाते बिलकुल थोथी और अप्रामाणिक मालूम होती हैं। किन्तु इतनी सब बातोंके होते हुए इस नगरकी प्राचीनताके विषयमें किसीको भी सन्देह नहीं हो सक्ता। प्राचीन कालमें यह नगर बहुत ही समृद्धिशाली तथा उन्नतिशील था। कई पुस्तकोंमें इसका भी उल्लेख पाया जाता हैं। विमल चरित्र को भी पढ़नेसे पाठकोंको श्रीमालनगर की प्राचीनताका ज्ञान हो जायगा।

भिन्नमाल नामकरण :—

हम लोग ऊपर लिख आये हैं कि राजा भीमसेनके उपलदेव, आसपाल और आसल नामक तीन पुत्र हुए। भीमसेन वाममार्गीय थे। इनके प्रथम दो पुत्र उपलदेव और आसपाल भी वाममार्गीय रहे। तीसरे पुत्र आसल जो श्रीमालनगरके राजा हुए जैन हो गये थे। राजा भीमसेन ने श्रीमालनगरका उत्तराधिकारी आसलको बनाया था। भीमसेन जबतक जीवित रहे श्रीमालनगरका राज्य करते रहे। इनके शासनकालमें जैन जनता गोड़वाड़, गुजरात आदि प्रान्तोंमें चली गई। इधर आसल और इसके जेष्ठ भ्रातामें किसी कारणवश साधारण बातोंमें कुछ मनमुटाव हो गया। अतः उपलदेव अपने छोटे बन्धु आसपाल तथा अपने मंत्रियों एवं सामंतोको लेकर किसी नये शहर बसानेकी खोजमें बाहर निकल गये। इन लोगोंने जाकर ओशियां नामक नगर बसाया। इस ओशियाँ पट्टणमें फिर श्रीमालनगरके * बहुतसे धनिक तथा व्यापारी जाकर बस गये।

इस तरह श्रीमालनगर एक दम सूना सा हो गया। एक स्थानपर एक ऐसा भी जिक्र है कि भीमसेनके एक भाई और थे जिनका नाम चन्द्रसेन था। इन चन्द्रसेन † ने अपने नामसे चन्द्रपुर बसाया। श्रीमालनगरके खाली हो जानेके कारण राजा भीमसेनने इस नगरको पुनः बसाया। राजा भीमसेनके बसानेके कारण इसका नाम श्रीमालनगरसे बदलकर भिन्नमाल (भीनमाल) रख दिया गया। तभीसे आजतक यही नाम चला आ रहा हैं। यह भीनमाल, श्रीमालनगरके बहुत ही पास बसा हुआ है।

श्रीमाल जातिकी उत्पत्ति :—

श्री पार्श्वनाथ भगवान तेईसवें तीर्थंकर थे। आपके चार पाट तक तो निग्रन्थ गच्छवाले पाटधर हुए। इसके पश्चात् पांचवें पाटधर श्री स्वयंप्रभुसूरिजी हुए। आप बड़े विद्वान, जैन सिद्धान्तोंके प्रकाण्ड पण्डित एवं प्रभावशाली आचार्य्य थे। अतएव निग्रन्थ गच्छका नाम विद्याधर गच्छ हुआ। आप विहार करते हुए श्रीमालनगर आये और वहांपर ९०००० नब्बे हजार घरोंको जैन धर्ममें दीक्षित किया। बादमें आंचल गच्छवालोंने श्रीमाल जैन बनाये ‡ जैन

* विमल चरित्रमें देखिये।

† देखिये जैन जाति महोदय तीसरा प्रकरण :—

‡ जैन जाति निर्णय पृष्ठ ६६ तथा ६९ पर देखिये।

जाति महोदयमें पृस्ठ ३० पर ऐसा लिखा हुआ है कि श्रीमालनगरके राजा जयसेन थे। इनको आचार्य्य श्री स्वयंप्रभुसूरिजी ने जैन बनाया था। इसी ग्रन्थके ७० पृष्ठपर यह पाया जाता है कि राजा जयसेन भगवान महावीरके उपासक थे। आगे जाकर इसी ग्रन्थके तृतीय प्रकरणमें १६ पृष्ठपर श्रीमालनगरका वर्णन दिया हुआ है। श्रीमालनगरमें बहुत धनीमानी सेठ निवास करते थे। इन सेठोंने एक समय आचार्य्य स्वयंप्रभुसूरिजीको आमन्त्रित किया। उस समय राजा जयसेन एक बहुत बड़े यज्ञ करनेकी तयारीमें था। उस जमानेमें यज्ञके समय सैकड़ों पशु बलि कर दिये जाते थे। जिस समय आचार्य्य देव श्रीमालनगर गये तो उन्हें मालूम हुआ कि निकट भविष्यमें यहांपर एक बहुत बड़ा यज्ञ किया जा रहा है जिसमें सैकडों अमूक तथा निरपराध पशु होम दिये जावेंगे। राजा जयसेन उस समय शैवोपासक था। आचार्य्य देवने राजाको इन पशुओंकी अकारण हत्या करनेके लिये फटकारा तथा अपने तप तेजसे राजा पर पूर्ण प्रभाव स्थापित कर दिया। इसके पश्चात् धीरे-धीरे आपने उसको बहुत ही सुन्दर ढंगसे जैन सिद्धान्त बतलाये और जैन धर्ममें दीक्षित होकर प्राणि मात्र पर दया करनेकी शिक्षा दी। राजा जयसेन ने सामन्तों सहित जैन धर्म अंगीकार कर लिया और यज्ञके लिये इकट्ठे किये गये तमाम पशुओंको मुक्त कर दिया। तब आचार्य्यदेवने तमाम ब्राह्मणोंको एकत्रित कर प्रतिबोधा और उनके इस हिंसा कार्य्यकी घोर निन्दा की। आपने जैन सिद्धान्तोंको इतनी सरलता एवं व्यवस्थित रूपसे समझाया कि जिसे सुनकर अनेकों ब्राह्मण जैन हो गये। जब राजा जयसेनके पुत्र भीमसेनके राज्यकालमें जैन लोग बाहर चले गये उस समय जो जैन ब्राह्मण बाहर गये थे वे श्रीमाली ब्राह्मण तथा जो राजपूत जैन बाहर चले गये थे वे श्रीमाल कहलाये। राजा जयसेनके चन्द्रसेन नामक एक और पुत्र थे। विमलप्रबन्ध एवं विमलचरित्रके अन्तर्गत श्रीमालनगर और श्रीमाल जातिके विषयमें ऐसा लिखा है।

श्रीकार स्थापना पूर्वं श्रीमाल द्वापरान्तरैः।
श्रीश्रीमाल इति ज्ञाति, स्थापना विहिताश्रियाः॥

इन पुस्तकोंमें इस लेखके अतिरिक्त और भी बहुतसे लेख हैं जिनमेंसे बहुतसे लेखोंमें "श्रीमालनगरसे निकलनेके कारण ही श्रीमाल नाम पड़ा" ऐसा उल्लेख है। श्रीमाल जातिकी गौत्रज लक्ष्मीदेवी है।

इन ऊपरके अवतरणोंको पढ़नेसे पाठकोंको भलीभांति मालूम हो जायगा कि आचार्यों एवं जैन ग्रन्थोंके रचयिताओंने निम्नलिखित तत्वोंपर विशेष जोर दिया है।

(१) श्रीमाल नगरमें स्वयंप्रभुसूरि का पदार्पण और जयसेनको सांमतोंसहित जैन प्रतिबोध।

(२) घटनाका विक्रमी सं० ४६७ तथा इसवी सन् ५२६ वर्ष पूर्व घटित होना।

(३) राजा भीमसेनके राज्यकालमें जैनोंका बाहर चला जाना और श्रीमाल नामसे संबोधित किया जाना।

बहुतसे लोगोंका एक और मत प्रचलित है। उनका कहना है कि श्रीमालनगरमें श्रीमल्ल नामका राजा राज्य करता था। यह राजा भी वैष्णव धर्मको पालनेवाला था। एक समयकी बात है कि राजाने एक यज्ञ करनेका निश्चय किया। इसमें सैकड़ों पशु बलि किये जानेके लिये इकट्ठे किये गये। उन्हीं दिनों गौतम नामके एक तपस्वी जैनसाधु अपने साथ पांच सौ साधुओंको लेकर विहार करते हुए श्रीमालनगरकी तरफ निकल गये। वहांपर उनको यज्ञकी सारी बातें मालूम हुईं और उन्होंने राजा तथा प्रजाको निरपराध पशुओंपर क्रूर दृष्टि न डालनेकी सलाह दी। धीरे-धीरे गौतमका श्रीमालनगरमें प्रभाव पड़ता गया और उन्होंने भी इस हिंसा कार्य्यको एकदम मिटाकर सर्वत्र 'अहिंसा परमो धर्म' की दुहाई फेरनेका निश्चय किया। कहा जाता है कि श्रीगौतम के अत्यन्त ही सुन्दर अहिंसाके भाषणोंको सुनकर राजा तथा राजाके सरदार बहुत प्रभावित हुए और हजारों व्यक्तियोंने उनसे जैनधर्मकी दीक्षा ली। उसी समय श्रीगौतमने हजारों ब्राह्मणोंको भी प्रतिबोध कर जैन बनाया था। वे ही ब्राह्मण लोग आगे जाकर श्रीमाली ब्राह्मण कहलाये। इस तरह श्रीमालनगरमें जैनधर्मका बड़ा भारी जत्था जम गया तथा जैनधर्म बड़ी तीव्रगतिसे फैलने लगा।

राजा श्रीमल्ल जैन सिद्धान्तोंके अनुसार प्राणि मात्रपर दया करता हुआ राज्य करने लगा। इनके लक्ष्मी नामक एक सुरूपा और सुलक्षणा पुत्री थी। एक समय सिरोहीके पँवार राजा भीमसेन ने श्रीमालनगर को घेर लिया। श्रीमल्ल राजाके पास युद्धकी पूर्ण तयारी थी। मगर वह व्यर्थमें हिंसा नहीं करना चाहता था। उसने इस पेंचीदे मामलेको दूसरी तरहसे सुलझाया। वैसे वह अपनी सुरूपा पुत्रीके लिये योग्य पतिकी तलाशमें था ही। उसने इस स्वर्ण अवसरको न खोकर अपनी पुत्री लक्ष्मीका विवाह राजा भीमसेनके साथ कर दिया और श्रीमालनगर का राज्य दहेजमें दिया। यह वही भीमसेन राजा है। कालान्तरमें जब भीमसेनके तीन पुत्र हुए तब भीमसेनने अपने तृतीय पुत्र आसलको उसके नानाके राज्यका उत्तराधिकारी बनाया। इसके पश्चात् सारी घटना उसी प्रकार वर्णित की गई है जिस प्रकार हम पीछे लिख आये हैं। कई लोग यह भी कहते हैं कि श्रीमल्ल राजाने सबसे पहले जैन धर्म अंगीकार किया। इससे सब राजपूत लोग जिन्होंने श्रीमल्लके साथ जैन धर्म अंगीकार किया श्रीमल्लके नामके पीछे श्रीमाल कहलाये। मगर यह बात निराधार मालूम होती है। श्रीमाल जाति के नामकरण के विषयमें तो प्रथम कही हुई बात ही सच प्रतीत होती हैं कि जो राजपूत जैन श्रीमालनगरसे बाहर चले गये थे वे श्रीमाल कहलाये।

भाटों तथा भोजकों की सम्मति :—

दूसरा मत भाटों एवं भोजकों का है। इन लोगोंके अनुमानसे संवत् १८२ में श्रीमाल जातिकी स्थापना हुई है। इस विषयमें बहुतसे लोगोंकी यह धारणा है कि भाटों और भोजकोंकी सम्पति भी ठीक है। मात्र सम्वत्के लिखनेमें उन्होंने भूल की है। यह सम्वत् विक्रमी नहीं होते हुए नन्दीवर्द्धन का संवत् गिना जाय तो उनका समय ठीक उतरेगा।

सम्भव है क्योंकि नंदीवर्द्धन का संवत् लिया हो और इन लोगोंमें अशिक्षा का दौर दौरा तो रहता ही है आगे जाकर कहीं नन्दीवर्द्धन तो भूल गये और विक्रमी संवत् की गणना करने लग गये। क्योंकि धीरे धीरे नन्दीवर्द्धनका सम्वत् अप्रचलित सा होने लग गया था और विक्रमी सर्वसाधारणके उपयोगमें आने लग गया था। आज तो नन्दीवर्द्धन का संवत् एकदम लुप्त सा हो गया है।

शेष सब बातें करीब करीब वही मिलती हैं जो आचार्य्यों ने अपने ग्रन्थोंमें लिखी हैं। ये लोग भी उसी भीमसेनके पश्चात्से श्रीमाल जातिके नामकरणका उल्लेख करते हैं।

इतिहासकारों का मत :—

ऊपर हम आचार्य्यों, जैन ग्रन्थों एवं भाटों, भोजकोंके मतोंको दे चुके हैं। अब यह देखना है कि प्रामाणिक तौरसे श्रीमाल जातिकी स्थापना कबसे हुई है। उक्त दोनों मतोंमें हालां कि अपने-अपने समयका दोनों पक्षोंकी ओरसे अनेक स्थानोंपर लिखा हुआ मिलता है मगर ऐतिहासिक प्रमाण एवं दलीलोंके सामने एक भी कथन मजबूती से नहीं टिकता। इस विषयमें ओसवाल जातिके प्रथम भागमें हम लोगोंने काफी प्रकाश डाला है। कारण कि ओसवाल एवं श्रीमाल जातिमें आपसमें बहुत घनिष्ट सम्बन्ध प्रारम्भसे ही रहा है। वैसे तो ओसवाल एवं श्रीमाल जाति एक ही पिताके पुत्रों से उत्पन्न हुई है। श्रीमाल जाति ओसवाल जातिसे कुछ पुरानी है। मगर जो ऐतिहासिक दलीलें ओसवाल जातिके समय निर्णयमें सहायक होंगी वे श्रीमाल जातिका समय भी निर्दिष्ट कर सकेंगी।

बहुतसे लोग इस बातको मानते हैं कि राजा भीमसेनके समयमे जो जैन राजपूत बाहर चले गये थे वे श्रीमाल के नाम से सम्बोधित किये जाने लगे। अतः हम लोगोंको यह देखना है कि राजा भीमसेन भीनमालके राजा कब हुए। दूसरी बात यह है कि श्रीमाल जातिके लोग जब जैन बने तब सर्व प्रथम उन्हें ओसवालोंके प्रसिद्ध आचार्य्य श्री रत्नप्रभु सूरिजीके गुरु श्री आचार्य्य स्वयंप्रभुसूरिजीने प्रतिबोधा था। जैन होनेके पश्चात् श्रीमाल-नगरसे बाहर चले जानेके कारण श्रीमाल कहलाये। इसके कुछ वर्ष पश्चात् ही उपकेश-पुरमें ओसवाल जातिकी स्थापना की गई तथा उन्ही भीमसेनके ज्येष्ठ पुत्र उपलदेव भी ओसवाल बने। ओसवाल जातिके प्रथम भागमें आधुनिक इतिहासकारोंके मतों को संग्रह करके तथा अनेक प्राप्त लेखोंसे अनुमान लगाकर उपलदेव व उपकेशपुर बसनेका समय निश्चय किया गया है। बस उसी शताब्दीमें उससे ४० वर्ष पूर्व श्रीमाल जाति स्थापित हुई है। अतः हम पाठकोंसे ओसवाल जातिकी उत्पत्तिके विषयमें संग्रहित ऐतिहासिक सामग्रीको पढ़नेका अनुरोध करेंगे।

श्रीमाल जातिके गौत्र—

सर्व प्रथम श्रीमाल जाति कुल १८ गौत्रोंमें गिनी जाती थी। मगर कालांतरमें नामी

पुरुषोंके नामसे, गांवोंके तथा धार्मिक कार्य्यों के नामसे अनेक नाम पड़ गये और जो आगे जाकर गौत्र बन गये। वर्त्तमान समयमें श्रीमाल जातिमे कुल १३५ गौत्र गिने जाते हैं। इन गौत्रोंके नाम हम नीचे देते हैं।

कटारिया, कहूंधिया, काठ, कालेरा, कादइया, कुराड़िया, काल, कुठारिया, कूकड़ा, फोड़िया, फोकगड़, कम्बोनियां, खगल, खारेड़, खौर, खोचड़िया, खौसडिया, गदउडघा, गलकटे, गवताणिया, गदइया, गिलाहला, गीदोड़िया, गूजरिया, गूजर, घेवरिया, घौघड़िया, चरड़, चांडी, चुगल, चड़िया, चंदेरीवाल, छकड़िया छालिया, जलकट, जूंड, जूंडीवाल, जाट, झामचूर, टांक, टोकलिया, रीगड़, डहरा, डागड़, डूंगरिया, ढोर, ढोढा, तवल, ताडिया, तुरक्या, दुसाज, धनालिया, धूवना, धुपड, धांधिया, तांबी,नरट, दक्षणत, नायण, नांदरीवाल, निवहटिया, निदुम, निवहेडिया, नागर, परिमाण, पचोसलिया, पखड़िया, पसेरण, पन्चोभू, पंचासिया, पाताणी, पापड़गोत, पूरविया, कलवधिया, फाफू, फोफलिया, फूंसपाण, वहापुरिया, वरडा, वदलिया, वंदूमी, वांहकटे, वाईसभ्र, वारीगोत, वाहड़ा, विमनालक, वीवड़, वोहलिया, भद्रसवाल, भांडिया, भासोदी, भूवर, भंडारिया, भांडूगा, भोथा, महिमवाल, मउठिया, मरदूला, महतियाण, महकुल, मरहठी, मथुरिया, मधुरिया, माधोनपुरी, मालवी, मारमहरा, मांदोरा, मूसल, मांगा, मुरारी, मुदड़िया, रादिका, राकीवाण (राक्याण) रीहालिमा, लवाहला, लड़ारूप, संगरिप, लड़वाला, सांगिया, साथड़ती, सीधूड, (सींधड़), सुद्राड़ा, सोह, सोठिया, हाडीगण, हेडाऊ, हीडोम्बा, अंगरीप, आकोडूपड़, ऊवरा, वोहरा, सावरिया, पलहोट, वूघरिया और कूंचलिया।

इन उक्त १३५ गौत्रोंमें विभाजित श्रीमाल जाति भी एक समय एक बहुत बड़ी संख्यामें थी। मगर श्रीमालनगरसे निकलनेके बाद जो जत्था गुजरातमें चला गया वह वहींपर निवास करने लगा और मारवाड़, गोडवाड़का जत्था मारवाड़ और गोडवाड़में ही वस गया। गुजरातके श्रीमालोंके धीरे २ गौत्र मारे गये। वहां पर ऐसा एक साधारण कहावत मशहूर है कि गुजरातमें गौत्र नहीं और मारवाड़में छोत नहीं। आज भी गुजरातमें ऐसे सैकड़ों घर विद्यमान हैं जो अपना गौत्र वगैरह तो नहीं जानते मगर अपने आपको श्रीमाल कहते हैं और अपना उत्पत्ति-स्थान उपरोक्त श्रीमालनगरको वतलाते हैं। हा, उन्होंने अपने विवाह संबंधाधिकी सुविधाके लिये अपनी जातिमें कुछ विशेष नाम और चिन्ह अवश्य रख लिये हैं। इधर जो श्रीमाल मारवाड़ गोडवाड़ आदि प्रान्तोंमें चले गये थे वे धीरे २ बहुत दूर २ तक फैल गये। उन्हींके वंशज आज भी झूंझनूँ, जयपुर, चिड़ावा, देहली, कानपुर, भरतपुर, लखनऊ, भागलपुर फरौली, हिंडोन, मालवा, कलकत्ता आदि स्थानोंपर निवास कर रहे हैं।

श्रीमाल जातिके प्रसिद्ध पुरुष :—

श्रीमाल जातिके अन्तर्गत बहुतसे नामी तथा प्रसिद्ध पुरुष हो गये हैं जिन्होंने अपनी

समाज सेवा, धर्मसेवा तथा व्यापारिक प्रतिभाके कारण अपने और अपनी जातिके नामको विख्यातकर दिया है। इन लोगोंमें सांडाशा, टाकाशा, गोपाशा, बागाशा, डूंगरशा, भीमसेन, पुनशी, पेमाशा, भादाशाह, नरसिंह, मेणपाल, राजपाल, उद्दाशा, भोजराज आदि २ * के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। इसके अतिरिक्त अनेक स्थानोंपर श्रीमाल जातिके विषयमें बहुत कुछ लिखा हुआ पाया जाता है। कहा जाता है कि विक्रमी आठवीं शताब्दीमें भी श्रीमाल बड़े चमकते हुए और पूर्ण उन्नतिके शिखर पर थे। उसी समय आचार्य्य श्री उदयप्रभुसूरिजीने और बहुतसे अन्य लोगोंको प्रतिबोध कर श्रीमाल बनाया था। अन्हिलपट्टण की स्थापनाके समय भीनमाल एवं चन्द्रपुरके अनेक श्रीमाल परिवारोंको वहांपर निवास करनेके लिये आमंत्रित किया गया था। आज भी उन श्रीमालोंके वंशज वहां पर निवास करते हैं।

इसी प्रकार सोलहवीं शताब्दीमें वेराट, जो अभी जयपुर-स्टेटमें है, के शासक एक श्रीमाल थे। इनका नाम इन्द्रजीत † था। इनके पिताका नाम राजा भारमल था। वैराटके एक शिलालेख से मालूम होता है कि उस समय राजा इन्द्रजीत का बड़ा प्रभाव था। आपने उस समय के प्रसिद्ध जैन आचार्य्य श्री हीरविजयसूरिजीको एक मंदिर की प्रतिष्ठा महोत्सव करानेके लिये वैराटमें आमंत्रित किया था। सूरिजीके कार्य्यों में अत्यन्त संलग्न रहने के कारण उन्होंने अपने शिष्य उपाध्याय कल्याणविजयजी को वैराट भेजा था जिन्होंने सारा प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न किया। इन्हीं राजा इन्द्रजीतजीके वंशज लाला नवलकिशोरजी खैरातीलालजी वाले आज भी देहलीमे निवास कर रहे हैं।

तदनुसार ही युगप्रधान श्री जिनचंद्रसूरिजी ने पाक्षिक, चातुर्मासिक एवं संवत्सरिक पर्वोंके दिन "जयति हुअण" पढ़ने का शाश्वता आदेश बोहित्थ वंशकी संततिको दिया और उन्ही पर्वों के प्रतिक्रमणमे स्तुति बोलनेका आदेश श्रीमालोंको दिया था। इन्हीं आचार्य्यने संवत् १६६१ की माघ सुदी ७ को शाह वच्छराजके पुत्र चोलाको अमरसरमें दीक्षा दी। उसके साथ उसके बड़े भाई विक्रम और माता मीणादेवी ने भी दीक्षा ली थी। इन सब दीक्षा कार्य्योंको थानसिंह नाम के श्रीमालने बड़े समारोहके साथ सम्पन्न करवाया। इसी तरहके अनेक धार्मिक एवं सार्वजनिक कार्य्योंमें श्रीमाल जातिके महानुभावोंने उत्साह पूर्वक भाग लिया जिनके विषयमें आजकी बहुतसे लेख, पट्टावलियाँ आदि आदि विद्यमान हैं। खरतर गच्छ पट्टावली संग्रहमें पृष्ठ नं ७, ११, २३, २८, ३१, ४०, ४४, ४७, ५२, ५३ आदि आदि अनेक पृष्ठोंपर पट्टावलियां दी हुई हैं जिनसे मालूम होता है कि श्रीमाल जातिके धर्मभीरुओं ने अनेक स्थानोंपर धार्मिक कार्य्य किये और पूर्ण धर्म लाभ लिया।

---

* विशेष के लिये जैन जाति महोदय चौथा प्रकरण पृष्ठ ६१ देखिये।

† हीरविजयसूरि रास, सूरीश्वर आने सम्राट तथा श्रीमाली वाणियों ना जाति भेद नामक पुस्तकोंमें देखिये।

भीनमाल नगरमें श्रीमाल जातिके विषयका एक बहुत बड़ा भण्डार था जिसमें श्रीमाल जातिका पूरा पूरा इतिहास लिखा हुआ था। कहते हैं कि उसको मुसलमानोंने बारहवीं शताब्दीमें जलाकर नष्ट कर दिया। एक स्थानपर थोड़ी सामग्री और बच गई थी। वह सामग्री श्री राजेन्द्रसूरिजीको मिली। वहांसे वह कोरंट गच्छीय श्री पूज्यजीके पास गई और फिर वहासे यति श्री माणिक्यसुन्दरजीके हाथ लगी। मगर उसमें सिर्फ ओसवाल वंशावलियां ही मिली हैं।

मंदिर मार्गीय खरतरगच्छीय आचार्योंका इतिहास

हम ओसवाल जातिके इतिहासके प्रथम भागमें मंदिर मार्गीय खरतरगच्छीय आचार्य श्री जिनराजसूरिजी तक तो विस्तार पूर्वक "आचार्य्यों का इतिहास" नामक शीर्षकमें लिख चुके हैं। आचार्य्य श्री जिनराजसूरिजी की मृत्युके पश्चात् आपके दो विद्वान शिष्य गद्दीपर बैठनेको उद्यत हुए। इसी समयसे एक शिष्य श्री रूपसूरिजीने तो अपनी गद्दी बीकानेरमें स्थापित की तथा दूसरी लखनऊकी गद्दीपर श्री रंगसूरिजी विराजे। तभीसे दो अलग अलग गद्दियां स्थापित हो गईं जो आज तक बराबर चली आ रही है।

आचार्य्य श्री रंगसूरिजी :—आप बड़े विद्वान, त्यागी एवं जैन सिद्धांतोंके अच्छे ज्ञाता थे। जनतापर आपका बहुत बड़ा प्रभाव था। यहां तक कि तत्कालीन मुगल सम्राट भी आप पर बड़ी श्रद्धा रखता था।

आचार्य्य श्री जिनचंद्रसूरिजी :—रंगसूरिजीके मृत्युपरात आप गद्दीपर विराजे। आप ओसवाल जातिके महानुभाव थे। आपने वैराठमें बड़े धूमधामसे एक प्रतिष्ठा महोत्सव कराया था। ऐसा कहा जाता है कि जिस समय प्रतिष्ठा कराई जा रही थी उस समय प्रतिमाजी वेदीमें विराजमान न हुई। सैकड़ों व्यक्ति परिश्रम कर करके थक गये मगर सब निष्फल हुआ। तदनन्तर आपसे निवेदन किया गया। आपने अकेले ही प्रतिमाजीको वेदीमें विराजमान करा दिया। इस घटनासे वहां पर प्रस्तुत विधर्मियो पर बड़ा प्रभाव पड़ा।

आचार्य्य श्री जिनविमलसूरिजी :-आप योग्य एवं विद्वान आचार्य्य हो गये हैं। आपने विमल विलास एव विमल मुक्तावली नामक दो पुस्तकें भी लिखीं हैं। खेद हैं कि ये पुस्तके अभी तक प्रकाशित नहीं हुई है।

आचार्य्य श्री जिनललितसूरिजी—आप बड़े पण्डित, संस्कृत तत्वोंके ज्ञाता तथा सस्कृत भाषामें विद्वान थे। जैन जनतापर आपका अच्छा प्रभाव था। आप बड़े त्यागी थे। आपने प्रयत्न करके मुर्शिदाबादके जैन मन्दिरकी प्रतिष्ठा करवाई थी।

आचार्य श्री जिनअक्षयसूरिजी—आप जैन धर्मके मर्मज्ञ तथा विद्वान आचार्य हो गये हैं। एक समय काशीमें होनेवाले वादानुवादमें आपने जैन सिद्धान्तों एवं तत्वोंको रखकर जनतामें एक प्रकाश-सा फैला दिया था। आप अच्छे वक्ता तथा प्रभावशाली आचार्य थे।

आचार्य्य श्री जिनचन्द्रसूरिजी (द्वितीय) उक्त आचार्यके स्वर्गवासी हो जानेके पश्चात् आप गद्दीपर विराजे। आपने कई मन्दिरोंकी प्रतिष्ठा महोत्सव कराये। जयपुर और झुंझनू-में भी मन्दिरोंकी प्रतिष्ठाएं आपके द्वारा सम्पन्न हुईं। आप विद्वान तथा त्यागी आचार्य्य थे। आपके कुल ८४ शिष्य थे।

आचार्य श्रीजिननंदीवर्द्धन सूरिजी—आप बड़े त्यागी आचार्य्य थे। श्रावकोंकी आप पर बड़ी श्रद्धा थी। आप भी विद्वान तथा प्रभावशाली थे। आप जिस समय पालीताना तीर्थ यात्राके लिये रवाना हुए थे उस समय आपके साथ पाँच हजार व्यक्ति थे। इस प्रकार इतने बड़े संघको लेकर आप रास्तेमें कई मन्दिरोंकी प्रतिष्ठाएँ वगैरह करते हुए पालीतानाकी ओर चढ़ते गये। अनेक धार्मिक कार्य्योंको करते हुए हुए आपने यह तीर्थयात्रा समाप्त की।

आचार्य्य जयशेखरसूरिजी—आप आचार्य्य पद पानेके बाद केवल छः मासतक ही जीवित रहे। तदनन्तर आपका देहान्त हो गया। आपने भी प्रतिष्ठा महोत्सव कराये थे।

आचार्य्य श्री जिनकल्याणसूरिजीः—उक्त आचार्य्यके मोक्षगामी होनेके पश्चात् आप इस गद्दीपर विराजे। आप बड़े प्रभावशाली, विद्वान तथा त्यागी आचार्य्य थे। बहुतसे विधर्मी भी आपके त्याग की प्रशंसा किया करते थे। आप बड़े ध्यानी भी थे। बहुतसे अन्य मतावलम्बियों की भी आपपर बड़ी श्रद्धा थी। आपने कई मन्दिरोंकी प्रतिष्ठाएँ वगैरह कराईं। देहलीके नौघरेके मन्दिरका सं० १६१७ में आप ही के द्वारा जीर्णोद्धार कराया गया था। इसके अतिरिक्त आपने कानपुर, झूँझनूं और सम्मैदशिखरजी पर भी मन्दिरोंके प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न किये। आपने हजारों स्थानोंपर व्याख्यान भाषण आदि देकर अजैनोंका ध्यान भी जैन धर्मके ऊपर आकर्षित किया था।

आचार्य्य श्री जिनचन्द्रसुरिजी—आचार्य्य श्री जिन कल्याणसूरिजीके स्वर्गवासी होनेके पश्चात् आप उक्त पाटपर अधिष्ठित हुए। जिस समय आप आचार्य्य हुए एवं गद्दीपर विराजे उस समय आप केवल २० वर्षके थे। आचार्य्य पद प्राप्त कर लेनेके ७ साल बाद ही आप मोक्षगामी हो गये थे। मगर प्रारम्भसे ही आप तीक्ष्ण बुद्धिवाले एवं होनहार प्रतीत होते थे। आप बड़े तेजस्वी एवं जैन शास्त्रोंके अच्छे ज्ञाता थे। आचार्य्य पदपर शासनारूढ़ होनेके पश्चात् आपने अपने प्रखर पाण्डित्य एव विद्वत्ताका परिचय दिया। आप बड़े त्यागी, ज्ञानी एवं व्याख्यान देने में बड़े कुशल थे। कई समय आपने अपनी व्याख्यान चातुरीसे श्रोताओंको मुग्धकर अपनी ओर आकृष्ट कर लिया था। आपने इतनेसे थोड़े समयमें सैकड़ों सभाएं की होंगी और हजारों भाषण दिये होंगे। आपने सं० १६३६ में देहलीके चेलपुरीके मन्दिरकी प्रतिष्ठा कराई थी।

एक समय काशीमें अनेक मतावलम्बी पण्डित इकट्ठे हुए थे। उन पण्डितोंकी सभा में आपने अपने पाण्डित्य पूर्ण भाषण द्वारा सारी सभाको मुग्ध कर दिया था। आपने उक्त सभामें जैनधर्मके सिद्धान्तों एवं अमूल्य तत्वोंको बड़े ही अच्छे ढङ्गसे जनताके सन्मुख रक्खा

था। आपने चन्द्रमाला एवं चन्द्रकोष नामक दो ग्रन्थ भी लिखे हैं जो आज भी आचार्योंके भण्डारमें विद्यमान हैं। ऐसे ग्रन्थोंका प्रकाशन बहुत ही आवश्यक है। श्रीमाल समाजको इन ग्रन्थोंको शीघ्र ही प्रकाशित करना चाहिये।

आचार्य श्री का देहान्त मुर्शिदाबादमें हुआ था। मृत्युके कुछ समय पूर्व आपने अपने पासके सब लोगोंको मृत्युकी पहले ही सूचना देते हुए सामयिक वगैरहसे निपटकर पवित्र होनेकी इच्छा जाहिर की। आपने सामयिक वगैरह किया और उन सब कामोंसे निपटने के बाद ठीक उसी समय जिस समयके लिये आपने पहले कह दिया था आप मोक्ष चले गये।

आपके स्वर्गवास से जैन जनतामें शोक छा गया। आज भी जैन जनता आपको श्रद्धासे याद करती है।

आचार्य्य श्री जिन रत्नसूरिजीः—आचार्य्य श्री जिनचन्द्रसूरिजीके पश्चात् आप ही गद्दीपर विराजे। आप भी बड़े विद्वान, जैन शास्त्रज्ञ एवं प्रभावशाली व्यक्ति थे। आपने चिड़ावा, लखनऊ, कलकत्ता आदि कई स्थानोंपर मन्दिरोंके प्रतिष्ठा महोत्सव कराये और हजारों जैनों एवं अजैनोंको जैनियो के महान सिद्धान्तों एवं तत्वोंको समझाया होगा। देहली का लाला छोटेदासजी वाला मोट की मसजिदके पास का मन्दिर भी सम्वत १९७३ में आपके द्वारा प्रतिष्ठित कराया गया था।

आप बड़े प्रभावशाली एवं त्यागी पुरुष थे। आपने अपने व्याख्यानों द्वारा झूंझनूके कई ठाकुरोंको प्रतिबोध कर उनसे मदिरा मांस आदि छुड़वाया था। आपका स्वर्गवास स० १९९२ के वैसाख वदीमें हो गया। वर्त्तमानमें आपके चार यति शिष्य विद्यमान हैं।

यति श्री सूरजमलजी विद्वान, अच्छे वक्ता एवं जन्त्र तन्त्रादिके ज्ञाता हैं। आपने कई पुस्तकें लिखी हैं। "पाटलिपुत्र का इतिहास" "जिनदर्शन", "सागरोत्पत्ति", "दीवाली पूजन" आदि। आप वर्त्तमानमें २२ बांसतल्ला कलकत्तामें निवास करते हैं।

यति श्रीरतनलालजी शांति प्रकृतिवाले, उदार एवं धार्मिक सज्जन हैं। आपके आचार विचार उत्तम हैं तथा आप नियमके बहुत पक्के हैं। आपको मन्त्र जन्त्रादिका भी ज्ञान हैं। वर्त्तमानमें आप जयपुरमें रहते हैं।

यति श्री रामपालजी शांत, योग्य एवं विद्वान पुरुष हैं। आप बड़े विचारक हैं। आपने भी "प्राचीन स्तवनावली" "जिन गुण मणिमाला" "भावी विज्ञान" तथा "नवरत्न विधान" नामकी पुस्तकें लिखी हैं। आप वर्त्तमानमें स्तवन संग्रह और श्रीमाल जातिका इतिहास नामक ग्रन्थ लिख रहे हैं जो शीघ्र ही प्रकासित होगा। आपके लेख कई अखबारोंमें समय२ पर निकलते रहते हैं।

Leading families of Shrimals.

श्रीमाल जाति के प्रसिद्ध खानदान

राय बद्रीदासजी बहादुर मुकीम तथा कोर्ट ज्वेलर, कलकत्ता

इस प्रसिद्ध परिवारका मूल निवासस्थान राजपूताना था। आप लोग सींधड़ (श्रीधर) गौत्रके श्री० श्वे० जै० मन्दिर मार्गीय सज्जन हैं। राजपूतानासे इस परिवारके पूर्व पुरुष देहली चले आये। इस खानदानमें प्राचीन समयसे ही रत्नोंका व्यापार होता आ रहा है। देहलीमें लाला देवीसिंहजी प्रसिद्ध पुरुष हुए। आपके विजयसिंहजी एवं बुधसिंहजी नामक दो पुत्र थे।

लाला विजयसिंहजी तथा बुधसिंहजी बड़े नामी जौहरी हो गये हैं। आप दोनों बंधुओंने अवध सरकारके आग्रहसे देहलीसे अपना निवास स्थान लखनऊमें बनाया। आप दोनों बंधु प्रतिभाशाली तथा व्यापार चतुर थे। आपने अवधके नबाबके पुत्रोत्पत्तिके समय लाला गोकुलचन्दजी जौहरीके साझेमें छः दिनोंमें सवा लाख रुपयेका अश्व सिंगार आभूषण तयार करवाकर नबाब साहबको भेंट किये जिनको देखकर नबाब साहब आप लोगोंपर बहुत प्रसन्न हुए तथा आपको बहुतसा द्रव्य प्रदान कर सम्मानित किया।

आप दोनों बंधु बड़े धर्मात्मा व्यक्ति भी थे। आपकी प्रतिष्ठा कराई हुई बहुतसी मूर्त्तियां आज भी विद्यमान हैं। आपने लखनऊके मकानमें एक सुन्दर देरासर भी बनवाया था। लाला विजयसिंहजीके कालिकादासजी नामक एक पुत्र हुए जिनका छोटी वयमें ही स्वर्गवास हो गया। आपके बाबू द्वारिकादासजी तथा बाबू बद्रीदासजी नामक दो पुत्र हुए। लाला द्वारिकादासजीका भी छोटी उम्रमें अन्तकाल हो गया।

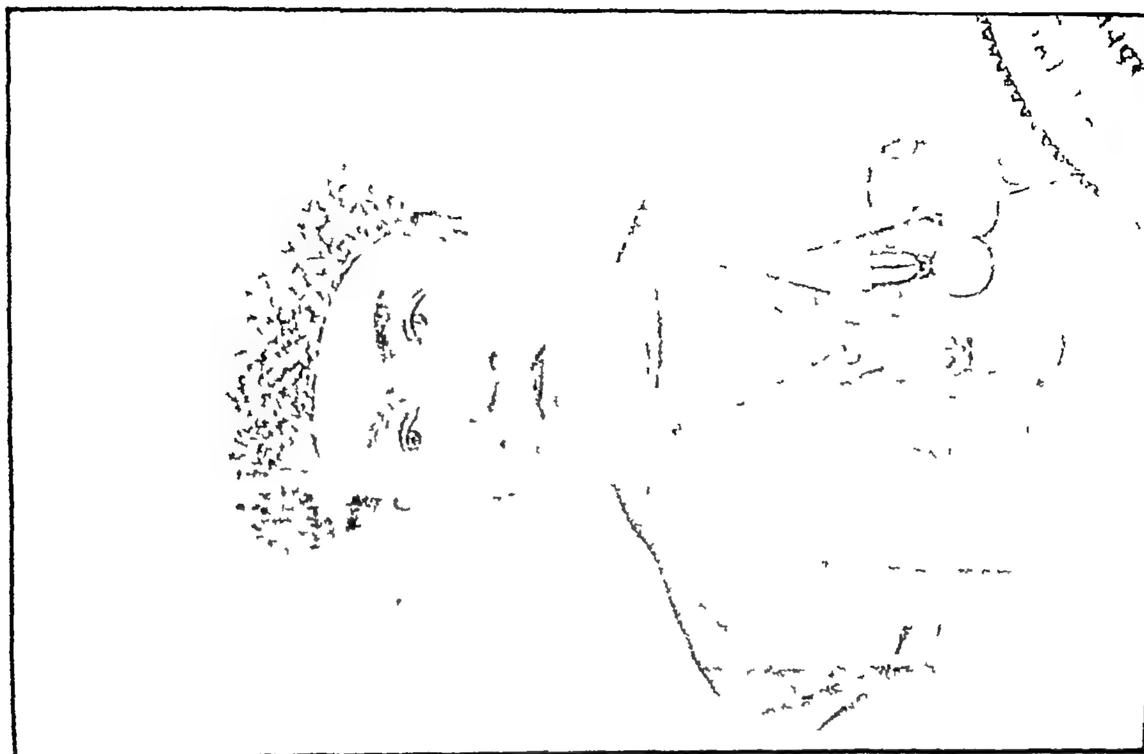
राय बद्रीदासजी मुकीम बहादुरः—आप उन उन्नतिशील एवं प्रतिभाशाली व्यक्तियोंमेंसे हैं जो अपनी योग्यता तथा अपने व्यक्तित्वके बलपर अपने नामको चमका देते हैं। आप कार्य्य कुशल तथा तीक्ष्ण बुद्धिवाले महानुभाव थे। आपका जन्म सं० १८८६ की मगसर सुदी ११ को हुआ। संवत् १९१० में आप लखनऊसे कलकत्ता चले आये तथा वहांपर स्थायी रूपसे निवास करने लगे।

आपका बाल्य जीवन :—रा० ब० बाबू बद्रीदासजीको बाल्यकालमें ही बहुत कष्टोंका सामना करना पड़ा था। आपके पिताजी व ज्येष्ठ भ्राताका स्वर्गवास हो जानेसे सारे परिवारके व्यवसाय व अन्य कार्य्यों के भारको आपको अपने कंधोंपर लेना पड़ा। आपने अपने शिक्षा कार्य्य समाप्त करनेके पश्चात् सारे व्यापारको अपने हाथमें लिया।

व्यापारिक जीवनः—आप अपने समयके भारतवर्षके प्रसिद्ध जौहरियोंमें गिने जाते थे। आपको जवाहरातकी परीक्षाका बहुत अनुभव था तथा आपने इसी व्यापारसे अथाह द्रव्य उपार्जन किया और अपने खानदानको भारतमें प्रसिद्ध कर दिया। सारे भारतवर्षकी ओसवाल तथा श्रीमाल जनता आज भी आपका नाम बड़े गौरवके साथ लेती है। भारतवर्षके वायसराय तक आपकी बहुत पहुंच थी और आप बड़े सम्मानकी दृष्टिसे देखे जाते थे। सं०

१९२५ के अन्तर्गत आपको प्रथम लार्ड लारेन्सके शासन कालमें सरकारी जौहरीकी पदवी प्राप्त हुई। सं० १९२७ में लार्ड मेयोने मुकीम व लार्ड नार्थबुकने आपको मुकीम और कोर्ट ज्वेलर बनाकर सम्मानित किया। आपको जवाहरातकी जानकारी बहुत थी और आप बहुतसे कीमती जेवरात रखते थे। गवर्नमेंटकी ओरसे राजा, महाराजा आदिको जो जेवर खिल-अत वगैरह दिये जाते थे वे आपके द्वारा बनाये जाते थे। आपका नाम दिन प्रतिदिन चमकता गया और आप क्या गवर्नमेंट, क्या राजे महाराजे सर्वत्र प्रसिद्ध हो गये। आपके जीवन कालमें जितने गवर्नर जनरल इङ्गलैंडसे यहांपर आये वे सब आपको बहुत सम्मानित करते रहे। प्रसिद्ध देहली दरबारके समय लार्ड लिटनने आपको "राय बहादुर" के सम्माननीय खिताब व 'एम्प्रेस आफ इण्डिया' मेडल प्रदान कर आपके योग्यताकी कद्र की।

धार्मिक कार्य्य :—लाखों रुपयोंकी सम्पत्तिको धार्मिक आदि कार्य्योंमें आपने बड़ी लगनके साथ व्यय भी किया। आप बड़े धार्मिक तथा सम्पूर्ण भारतकी श्वेतांबर जैन समाज-में अग्रगण्य थे। आपने कई स्थानोंपर मंदिर, दादावाड़ी आदि बनवाये तथा प्रतिष्ठा महोत्सव कराये। कलकत्तेका आपका बनाया हुआ जैन मन्दिर एक बहुत ही सुन्दर स्थान है। इस मन्दिरमें काच, मीनाकारी, सोना आदिका बहुत ही सुन्दर ढगका काम बना हुआ है तथा वेदीमें जवाहरात भी लगा हुआ है। यह भारतके प्रसिद्ध स्थानोंमेंसे एक तथा कलकत्तेकी दर्शनीय वस्तु है। इस मन्दिरके अन्तर्गत भारतीय कलाका एक बहुत ही अनुपम नमूना दृष्टिगोचर होता है। हजारों मनुष्य दूर दूरसे इसे देखनेके लिये आते हैं। विदेशोंसे आनेवाले टुरिस्टोंका तो यहाँपर ताता सा बंधा रहता है। इसके आस पास बहुत बड़ा बगीचा बना हुआ है। बगीचा सुन्दर, विशाल तथा मन्दिरको पूर्ण रूपसे शोभित करता मालूम होता है। सब दर्शनार्थी इस मन्दिरकी अनुपम छविकी मुक्त कण्ठसे प्रशंसा करते हैं। इसके बनानेमें लाखों रुपये लगे हैं। इस मंदिरकी बहुत प्रसिद्धि है। इसका नाम मुकीम जैन टेम्पल गार्डन है। जिस बाजारमें वह मंदिर है उस बाजारका नाम ही बद्रीदास टेंपल स्ट्रीट रख दिया गया है। इसके अतिरिक्त राय बद्रीदासजी बहादुरने श्री सम्मेदशिखरजी (पार्श्वनाथ पहाड़) पर एक और विशाल मंदिर बनवाया जो १८ सालोंमें बनकर तय्यार हुआ। इसके अतिरिक्त आपने अनेकों मंदिरों, दादावाड़ियों, पाठशालाओं व अन्य धार्मिक संस्थाओंमें मदद दी। आपने कलकत्तेमें एक पाठशाला स्थापित की थी। कलकत्तेकी पांजरापोलके स्थापनाकी योजना आपनेही तयार की थी तथा आपने उसमें प्रधान रूपसे अग्र भाग लिया। यह पिञ्जरापोल आज तक बहुत सफलता पूर्वक चल रही है। सं० १९४२ में आपने सिद्धाचल तीर्थपर यात्रीके टेक्सको उठा कर सालाना कुछ रकम नियत करानेमें बहुत प्रयत्न किया और सफल हुए। सं० १९५८ में आपने सपत्नीक १२ व्रतोंका प्रण लिया। इसके पश्चात् चौथा व्रत भी आपने लिया जिसे २० वर्षों तक पालते रहे। आपका बहुतसा समय धार्मिक कामोंमें व्यय हुआ करता था। चौविहार रात्रि भोजन निषेध आदिका आपको बड़ा नियम था।



स्व० राय बद्रीदासजी मुकीम बहादुर, कलकत्ता



बाबू रायकुमारसिंहजी मुकीम, कलकत्ता ।



बाबू राजकुमारसिंहजी मुकीम, कलकत्ता ।

सार्वजनिक कार्यः—जिस तरह आपके व्यवसाय के व धार्मिक कार्य सजीव रहे उसी तरह आपने सार्वजनिक कामोंमें उत्साहके साथ भाग लिया। आप कलकत्तेकी व्यापारिक समाजके अगुआ तथा प्रसिद्ध पुरुष थे। आप ही सुप्रसिद्ध बङ्गाल नेशनल चेम्बर आफ कामर्स कलकत्ताके प्रथम वर्षके सभापति चुने गये थे। इसके अतिरिक्त आप ब्रिटिश इण्डियन एसोसिएशन, हिन्दू युनिवर्सिटी, इम्पीरियल लीग आदि प्रभावशाली संस्थाओंके मेम्बर थे। गरीबों की सेवा करनेमें भी आपने भाग लिया। अकालके समय आपने गरीब जनताको मदद पहुचाई। ऐसी अनेकों संस्थाओंमें आपने सहयोग दिया और कई संस्थाओंके आप पथ प्रदर्शक रहे। जीते नीरोगी जानवरोंको मारनेकी जो सोसायटी बननेवाली थी उसको आपने प्रयत्न करके न होने दिया, सम्मेदशिखरजी पर सूअरकी चर्बी निकालनेका कारखाना खुलने वाला था लेकिन आपने अपने घरसे लाखों रुपये खर्च करके उक्त पहाड़को कोर्ट द्वारा धार्मिक करार करवा दिया और कारखाना नहीं चलने दिया।

इन सब कार्योंके अतिरिक्त आपने एक बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य किया है जिसके लिये श्वेताम्बर जैन समाज आपका बहुत कृतज्ञ है। एक समय विलायत और गवर्नमेण्ट आफ इण्डियाने इस आशयका एक बिल पास कर दिया कि सम्मैदशिखर पहाड़के ऊपर पलटनवाले और आम लोग अपने रहनेके लिये बंगले वगैरह बना सकते हैं। इसपर आपने तन, मन, धनसे पूर्ण परिश्रम कर इस बिलको मंसूख कराने और सम्मैदशिखर पहाड़पर बंगले बनानेकी परवानगी को रद्द करानेकी बहुत कोशिश की। आपने इस सम्बन्धमें भारतके तत्कालीन वाइसराय तक पहुंचकर इस हुकुम को रद्द करवा दिया। इसी प्रकार एक समय किसी एक केसमें श्वेताम्बरियो का सम्मेदशिखर पहाड़ पर का हक कट गया था। आपने प्रयत्नकर इस सम्मैदशिखर पहाड़ को खरीदनेमें सफलता प्राप्त की थी। इसी प्रकार मक्षीजी वगैरह तीर्थोंमें आप सर्व प्रकारसे मदद करते रहते थे। आपके करीब सौ शागिर्द थे जिनमें से बहुतसे आज भी विद्यमान हैं और आपके पास शिक्षा पानेमें अपना गौरव अनुभव करते हैं।

सम्मान :—जनतामे आपका कितना सम्मान था यह पाठकोंको बतलानेकी आवश्यकता नहीं है। ऊपर लिखित अवतरणोंसे आपलोगोंको भली भांति मालूम हो जायगा। उच्च श्रेणीमें आपके सम्मानका जिक्र हम कर चुके हैं। आप दोनों देहली दरबारोंमें बंगालके प्रतिनिधिके रूपमें आमन्त्रित किये गये थे। इन दरबारोसे आपको मेडल आदि इनायत किये गये थे। इसके अतिरिक्त सं १९२१ में तत्कालीन अलवर नरेश महाराज शिवदानसिंहजीने आपको २१ परचेके साथ हाथी, गांव, पालकी वगैरहका सम्मान बक्षा। आपने उक्त गांवको मन्दिरके अर्पण कर दिया। इसी प्रकार हाड़ोतीकी ओरसे आपको पैरोंमें सोना पहननेका अधिकार प्राप्त हुआ था। आप दूसरी श्वेताम्बर जैन कान्फ्रेंसके सं० १९६० के बम्बई अधिवेशनके सभापति बनाये गये थे। जैन श्रेयस्कर मण्डलके सभापति, आनन्दजी कल्याणजीकी पेढ़ी के प्रति-

निधि आदि २ रहे। आपने कलकत्तेमें जैन एसोसिएशन ऑफ बंगाल नामक संस्थाकी स्थापना की थी। कई स्थानोंपर आपके द्वारा आपसी झगड़े निपटाये गये। आपकी सलाह वजनदार मानी जाती थी। कहने का मतलब यह है कि आप क्या व्यवसायिक क्षेत्रमें, क्या सामाजिक क्षेत्रमें और क्या सार्वजनिक क्षेत्रमें सर्वत्र उत्साह पूर्वक भाग लेते रहे और पूर्ण रूपसे सफल हुए। आप श्वेताम्बर जैन समाजके एक बहुत ही प्रतिष्ठित व्यक्ति, कलकत्तेकी हिन्दू समाजके नेता तथा गवर्मेन्टमे मानेता व्यक्ति थे।

स्वास्थ्य व स्वर्गवास :—आपका स्वास्थ्य बहुत अच्छा था। नियम पूर्वक रहनेके कारण आप ८५ वर्षकी आयुमें सं० १९७४ में स्वर्गवासी हुए। आपके स्वर्गवासके समय कलकत्तेकी जनताने एक स्वरसे शोक मनाया व शोक स्वरूप कलकत्ता, बम्बई अहमदाबाद आदि २ स्थानों के बाजार बन्द रहे। हिन्दुस्तानके अनेको स्थानोंपर आपके अभाव मे शोक सभाएँ की गईं तथा आपको अपनी श्रद्धांजलियां अर्पितकी गईं। इतना ही नहीं आपके स्वर्गवासके पश्चात् अपके पुत्रोंके पास भारतके वाइसराय, कमान्डर इन चीफ, कई गवर्नरों, नैपाल, काश्मीर, ग्वालियर, आदि बहुत रियासतोंके राजा महाराजाओंने शोकसूचक तार देकर पूर्ण सहानुभूति प्रगट की थी। आप अपने जीवनकी सभी लाइनोंमें पूर्ण यश प्राप्तकर स्वर्गवासी हुए। आपके बाबू रायकुमारसिंहजी एवं राजकुमारसिंहजी नामक दो पुत्र हुए।

आपका दाह संस्कार आपकी इच्छानुसार तथा गवर्मेन्टकी खास आज्ञासे बगीचे में ही हुआ जो कलकत्तेके इतिहास में आजतक किसीका नहीं हुआ।

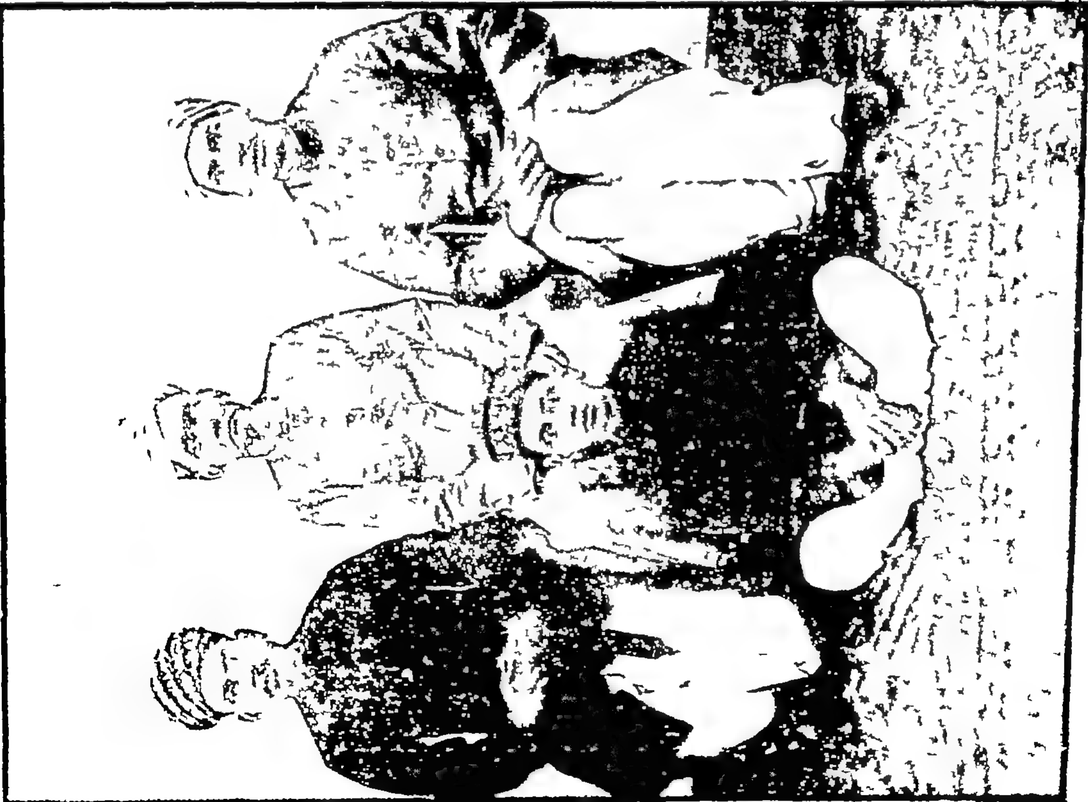
बाबू रायकुमारसिंहजीका जन्म सं० १९३६ में हुआ। आप विचारक तथा मिलनसार सज्जन हैं। आपका यहांपर अच्छा सम्मान है। आप बड़े नेकचलन तथा सच्चे व्यक्ति हैं। आप द्वितीय अखिल भारतवर्षीय जैन कान्फ्रेंसके सेक्रेटरी भी रहे। इसके अतिरिक्त आपका अनेक संस्थाओंसे सम्बन्ध रहा है। आप कलकत्ता पींजरापोल, जैन श्वे० पचायती मंदिर, जैन पौशाल आदि २ के ट्रस्टी हैं। आपके फतेकुमारसिंहजी, जयकुमारसिंहजी तथा विनयकुमारसिंहजी नामक तीन पुत्र हुए। बाबू राजकुमारसिंहजीका जन्म सं० १९३८ तथा स्वर्गवास सं० १९८६ में हुआ। आपके महेन्द्रसिंहजी आदि तीन पुत्र हैं।

यह खानदान यहां पर बहुत प्रतिष्ठित माना जाता हैं।

सेठ चम्पालालजी फर्जनलालजी सींधड़, जयपुर

इस परिवारका मूल निवासस्थान हट्टूपुरा था। आप सींधड़ गौत्रके श्री जै० श्वे० तेरापन्थी सम्प्रदायको माननेवाले हैं। इस खानदानमें सेठ किशनचन्दजी हुए। आप ही सबसे पहले हट्टूपुरासे जयपुरमें आकर निवास करने लग गये थे। आपके हरचन्दजी, माणकचन्दजी, उदयचन्दजी एवं शोभाचन्दजी नामक चार पुत्र हुए। आप लोगोंने अपने पिताजीके स्मारकमें जयपुरमें एक छत्री बनवाई है।

मुकीम जैन टेम्पल गार्डन, कलकत्ता (राय बद्रीदासजी मुकीम बहादुर का बनाया हुआ)
प्रतिष्ठा संवत् १९२३ फाल्गुन सुदी २



बाईं ओर से—(१) बाबू फर्जनलालजी सींघड (२) सेठ चम्पालालजी सींघड़ (३) बाबू धनपतलालजी सींघड़, नीचे पन्नालालजी सींघड़

सेठ हरचन्दजी--आप बड़े भाग्यशाली तथा व्यापार चतुर पुरुष थे। आपके गर्भमें आनेके कुछ महीनों पश्चात् ही आपके पिताजीको तीन लाख रुपयोंका लाभ रहा था। आपने अपने व्यापारको तरक्कीपर पहुचाया तथा मद्रास, कलकत्ता, मछलीनेटर, नागपुर, लट्टीकी हैदराबाद आदि २ स्थानोंपर १२ दुकानें स्थापित कीं। इन फर्मोंपर भिन्न-भिन्न नामोंसे कई प्रकारका बड़े स्केलपर व्यापार होता था। इनमें खासकर आपकी मद्रास फर्म बहुत ही प्रतिष्ठित थी। यह फर्म मद्रासमें सावकार पेठके व्यापारियोंके आपसी झगड़ोंके निपटानेमें पञ्चायती दूकान समझी जाती थी। आप लोगोंकी फर्म बडी मातबर थी। सेठ हरचन्दजी जवाहरातके व्यापारमें बहुत निपुण तथा चतुर पुरुष थे। आपके वहाँपर बहुत बड़े स्केलपर जवाहरात व बैंकिंगका व्यापार होता था। आप स्वयं जवाहरातके व्यापारकी देखरेख किया करते थे। एक दिन हुण्डियों की मिति बहुत निकट आ गई थी अतः आपने एकही दिनमें छ लाखकी व्यवस्था करके सारा भुगतान किया। फिर आपने उसी दिन सब धनीमानी सराफोंको बुला कर यह प्रस्ताव पास करा लिया कि मुद्दती हुण्डीकी मुद्दतके आखिरी दिनके एक दिन पहले बतलाई जाय और उसका दूसरे दिन भुगतान हो।। इस तरहकी कच्ची और पक्की मितीकी प्रथा उस दिनसे निकल गई है जो आज भी जयपुरमें पूर्ववत् बराबर चल रही है।

सेठ हरचन्दजी जयपुरकी व्यापारिक समाजमें प्रतिष्ठित, नामी जौहरी तथा जयपुर स्टेट में सम्माननीय व्यक्ति हो गये हैं। आप वजनदार, अग्रसोची तथा समझदार व्यक्ति थे। आप बड़े धार्मिक पुरुष भी थे। आप हीने सबसे पहले सं० १८५५ में पूज्य भिक्खनजी महाराजके उपदेशसे तेरापन्थी धर्म अंगीकार किया। आपके ताराचन्दजी नामक एक पुत्र हुए। आप अपने कामको संभालते रहे। आपके हीरालालजी तथा भैरूलालजी नामक दो पुत्र हुए।

सेठ हीरालालजीका स्वर्गवास सं० १६१६ में हुआ। आपके चांदमलजी, जीवनलालजी तथा गणेशलालजी नामक तीन पुत्र हुए। इनमें चांदमलजी इसी परिवारमें भागचन्दजीके नामपर व गणेशीलालजी भैरूलालजीके नामपर गोद चले गये।

सेठ जीवनलालजीका परिवार—आपका जन्म सं० १६०८ में हुआ था। आप सादे ढङ्गसे आनन्द पूर्वक रहते हुए सं० १६६५ में स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र चम्पालालजीका जन्म सं० १६३२ की फाल्गुन सुदी २ को हुआ। आप धर्मध्यानी व समझदार सज्जन हैं। आपके फर्जनलालजी तथा धनपतलालजी नामक दो पुत्र हैं। इनमे धनपतलालजी श्री भैरूलालजीके पुत्र गणेशीलालजीके यहापर गोद गये हैं। आप दोनों बन्धुओंका जन्म क्रमशः सं० १६६२ की माह वदी ६ व सं० १६६७ के कार्तिकमें हुआ। आप दोनों बन्धु मिलनसार हैं। वर्त्तमानमें आप अपने २ जवाहरातके व्यापारको संचालित कर रहे हैं। आप दोनों जयपुरके सुप्रसिद्ध जौहरी स्व० रतनलालजी फोफलियाके शागीर्द हैं। बाबू फर्जनलालजी तेरापन्थी समाजके मन्त्री रहे तथा वर्त्तमानमें जैन नवयुवक मण्डलके सदस्य हैं। आपके पन्नालालजी नामक एक पुत्र हैं। इसी प्रकार बाबू धनपतलालजीके सम्पतलालजी नामक एक पुत्र हैं।

सेठ भैरूलालजीका खानदान-- आप बड़े धर्मध्यानी पुरुष थे। आपने पूज्य जीतमलजी महाराजके दो चातुर्मास करवाये थे जिसमें अपने स्वाधर्मी भाइयोंके उतरने आदिकी व्यवस्थामें करीब दस हजार रुपये व्यय किये होंगे। आपका स्वर्गवास सं० ११३८ में हुआ। आपके नामपर गणेशलालजी गोद आये सेठ गणेशीलालजीका जन्म सं० १९१५ के कातिकमें हुआ आप शिक्षित व्यक्ति थे। सं० १९४६ तक तो आपने मद्रास फर्म रक्खी पश्चात् उसे उठा दी। आपका स्वर्गवास सं० १९७१ की आषाढ़ सुद ६ को हुआ है। आपके नामपर उपर्युक्त धनपतलालजी गोद आये।

आपलोग मेसर्स चम्पालाल फर्जनलाल सींधड़के नामसे जयपुरमे जवाहरातका व्यापार करते हैं।

राक्यान

लाला नवलकिशोरजी खैरातीलालजीका खानदान, देहली

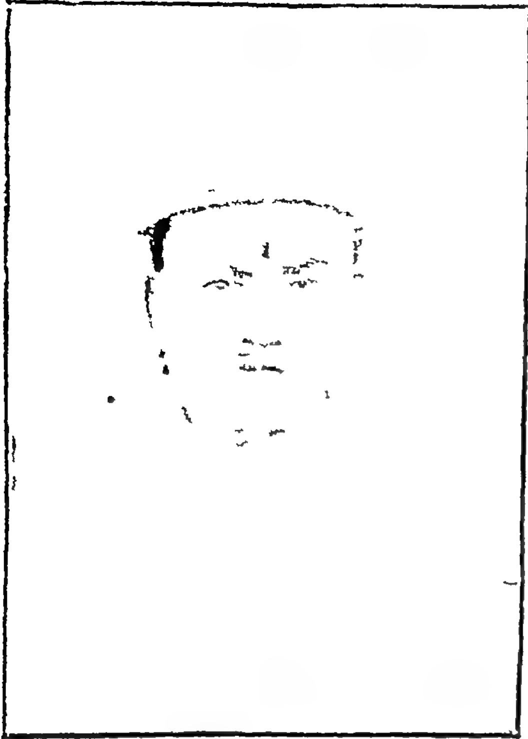
यह परिवार श्रीमाल जातिके गौरवशाली एवं चमकते हुए परिवारोंमेंसे एक है। इसके पूर्वजोंका मूल निवासस्थान वैराट नगर, जो कि अब भी जयपुर स्टेटमें है, का था। जिस समय भारतके बादशाह मुगल सम्राट अकबर थे उसी समय इस खानदान वालों का वैराटमे बड़ा प्रभाव था। आप लोग वैराटके शासक थे। इसी खानदानके पूर्व पुरुष राजा श्री इन्द्रजीतजीके विषयमें आज भी वैराटमें एक शिलालेख मिलता है जिसमें राजा श्री इन्द्रजीतजी द्वारा वैराट नगरमें आचार्य श्री हीरविजयसूरिजी के शिष्य उपाध्याय श्री कल्याणविजयजीके द्वारा एक मन्दिरके प्रतिष्ठा महोत्सव करानेका उल्लेख है*।

इस खानदानके सज्जन श्रीमाल जातिके राक्यान गोत्रीय श्री जैन श्वेताम्बर मन्दिर मार्गीय हैं। इस परिवार वाले औरंगजेब बादशाह तक तो कुशलता पूर्वक शासन करते रहे। उस समय वहांके शासक श्री हुक्मचन्दजी थे। आप पर किसी कारण वश औरंगजेबकी अप्रसन्नता हो जानेसे आप सब कुछ छोड़कर वैराटसे स्याना (यू० पी०) चले आये तथा कुछ समय पश्चात् आप लोग माकड़ी चले गये व माकड़ीसे करीब १३० वर्ष पूर्व इस परिवारके लाला डालचन्दजी सबसे पहले देहली आये।

लाला डालचन्दजीने देहलीमें आनेके पश्चात् अपनी फर्मपर गोटे किनारीका व्यापार प्रारम्भ किया। आपने तथा आपके पुत्र लाला मंगलसेनजीने इस व्यवसायमें सफलता प्राप्त की। इस व्यापारको आपके बाद आपके परिवार वाले भी करते रहे और अब उन्हींके खानदानमें लाला मयूरचन्दजी, अमीरचन्दजी व मोतीलालजी क्रमशः दो गोटे किनारीकी दुकानों-

---

* हीरविजयसूरि रास पृष्ठ १५२ तथा सूरीश्वर अने सम्राट नामक पुस्तकमें देखिये।



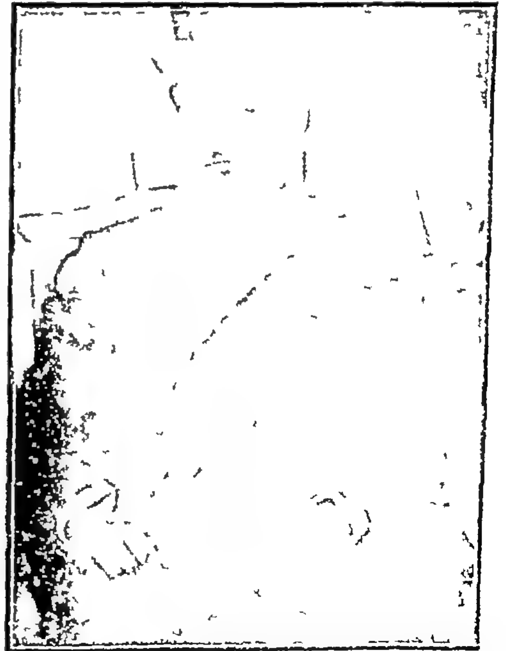
स्व० लाला नवलकिशोरजी राक्यान, देहली



स्व० लाला खैरातीलालजी राक्यान, देहली



बाबू बाबूमलजी राक्यान, देहली



बाबू मिट्ठूमलजी S/o श्री खैरातीलालजी राक्यान, देहली

का लाला प्यारेलाल अमीरचन्द व लाला प्यारेलाल मोतीलालके नामोंसे संचालन कर रहे हैं। देहलीमें आप लोगोंकी दुकान गोटे किनारीका व्यापार करनेवाली प्रधान फर्मों मेंसे एक है और आप लोग गोटे किनारीके व्यापारको सफलता पूर्वक चला रहे हैं। लाला मंगलसेनजीने देहलीके श्री नौघरे व चेलपुरी दोनो मन्दिरोंका इन्तजाम अपने हाथोंसे योग्यता पूर्वक किया तथा आपकेपश्चात् आपके पुत्र लाला कल्लूमलजी व फकीरचन्दजीने भी दोनों मन्दिरों तथा श्रीजीकी पोशाल का इन्तजाम किया। इन धार्मिक संस्थाओंका इन्तजाम अवतक भी इन्हींके परिवारवाले लाला खैरातीलालजी बड़ी योग्यता पूर्वक तथा सुचारु रूपसे कर रहे थे।

लाला सीतारामजीके पुत्र लाला पूरनचन्दजी भी माकड़ीसे देहली चले आये। लाला पूरनचन्दजीके परिवारवाले आज तक देहलीमें निवास कर रहे हैं। लाला पूरनचन्दजीके लाला नवलकिशोरजी, नन्हेमलजी एवं फकीरचन्दजी नामक तीन पुत्र हुए। इनमेंसे लाला फकीरचन्दजीका छोटी आयुमें ही स्वर्गवास हो गया।

लाला नवलकिशोरजी :—आपका जन्म स० १६०५ में हुआ। आप बड़े व्यापार कुशल एवं योग्य व्यक्ति थे। आपने अपने वहांपर सबसे पहले जवाहरातके व्यापारको प्रारम्भ किया और उसे इतना चमकाया कि आप यहांके प्रमुख एवं नामी जौहरियोंमें गिने जाने लगे। आपने अपनी व्यापार चातुरी एवं कार्य्यदक्षता से इस व्यवसाय में लाखोंकी सम्पत्ति उपार्जित की।

सम्पत्ति कमानेके साथ ही साथ आपने उनका सदुपयोग भी किया। आप बड़े धार्मिक एवं परोपकार वृत्तिवाले महानुभाव हो गये हैं। आपने देहलीके अन्दर यात्रियोंकी सुविधाके लिये एक धर्मशाला बनवानेकी अपने पुत्र लाला खैरातीलालजी व लाला बाबूमलजीको आज्ञा दी। लाला नवलकिशोरजीने भी हस्तिनापुरमें एक मन्दिर एवं धर्मशालाका जीर्णोद्धार कराया जिसमें काफी रुपया व्यय हुआ। इसी प्रकारके कई सार्वजनिक काम किये।

आप श्रीमाल एवं ओसवाल समाज में प्रतिष्ठित व्यक्ति हो गये हैं। आप देहलीकी जनतामें भी प्रतिष्ठित व्यक्ति गिने जाते थे। आपका सार्वजनिक एवं परोपकारके कामोंमें सहायता पहुचानेकी ओर भी बहुत लक्ष्य रहा। आप देहलीके नामी जौहरी, समाजमें प्रतिष्ठित व्यक्ति व एक योग्य महानुभाव थे। आपने अपने जीवनकाल में बहुत सी यात्रायें करीं तथा कराईं जिसमें काफी सम्पत्ति व्यय की। आपका स्वर्गवास सं० १९६४ के दूसरे वैसाखमें हुआ। आपके लाला खैरातीलालजी व लाला बाबूमलजी नामक दो पुत्र हुए।

लाला खैरातीलालजी :—आपका जन्म सं० १९३४ के माघ शुक्ला ६ को हुआ। आप योग्य पिताके योग्य पुत्र थे। आप व्यापार कुशल, अनुभवी एवं मिलनसार सज्जन थे। आपको बचपनसे ही व्यापारका बहुत शौक था तथा इसीसे आपने अपने पिताजी द्वारा चमकाये हुए व्यापारको योग्यता एवं सफलता पूर्वक संचालित किया। आप जवाहरातके व्यापारमें निपुण

एवं देहलीके प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। जवाहरातके व्यापारमें आपकी दृष्टि बारीक थी। आपने अपनी व्यापार चातुरीसे इस व्यवसाय में बहुत सम्पत्ति उपार्जित की। इसके अतिरिक्त आपने अपने परिवारके रुतबे व सम्मानको बहुत बढ़ाया। आप देहली तथा बाहर की जैन समाजमें प्रतिष्ठित एवं माननीय व्यक्ति गिने जाते हैं। आप देहलीकी व्यापारिक समाजमें भी सम्माननीय समझे जाते हैं।

आप धार्मिक एवं परोपकारके कामों में भी सहायता प्रदान किया करते थे। देहलीके मालीवाड़ेमे आपने अपने पिताजीकी आज्ञानुसार एक धर्मशाला बनवायी है, जिसमें करीब अस्सी हजार रुपये से अधिक व्यय हुआ होगा। यह धर्मशाला आज भी सुचारु रूपसे चल रही है। आपने श्रीजीकी पौशालका भी पुनर्निर्माण कराया जिसमें बीस हजार रुपयेसे अधिक आपने अपने पाससे लगाया। आपने मोठ की मसजिद पर स्थित छोटे दादाजीके स्थानपर एक सुन्दर जिन मन्दिरका निर्माण कराया। देहलीके नौघरे व श्रीचेलपुरीके मन्दिरोंका व मोठ की मसजिद की श्री दादाबाड़ी तथा मन्दिरका और श्रीजीकी पौशालका प्रबन्ध भी आप बहुत योग्यता पूर्वक तथा सुचारु रूपसे करते रहे। इन सब संस्थाओं को आपके प्रबन्धने पुनर्जीवन दिया है तथा आपके प्रबन्धसे इन सबमें बहुत तरक्की हुई है। देहली की कई संस्थाओं को आपकी ओरसे सहायता तथा प्रोत्साहन मिलता रहता है। खेद है कि आपका हृदयकी गति रुक जानेसे मिती कार्तिक बदी १४ (दूसरी) शुक्रवार ता० १३नवम्बर सन् १९३६को रातके आठ बजे एकदम स्वर्गवास हो गया। आपकी मृत्युसे देहलीकी जनता ने बहुत शोक मनाया। आप बडे सरल स्वभाववाले, नीतिज्ञ तथा मिलनसार सज्जन थे। आपके अन्दर एक अजीब प्रकारकी सहन शक्ति थी। आपके स्वभावसे सब मनुष्य सन्तुष्ट रहा करते थे। आपके मीठूमलजी, जवाहरलालजी, नेमचन्दजी, निहालचन्दजी तथा विमलचन्दजी नामक पांच पुत्र विद्यमान हैं।

लाला मिठ्ठूमलजी एव जवाहरलालजी का जन्म क्रमशः संवत् १९६० तथा १९७२ में हुआ है। आप दोनों बन्धु बहुत मिलनसार हैं तथा व्यापार संचालनमें तत्परतासे सहयोग दे रहे हैं।

लाला बाबूमलजीः—आपका जन्म सवत् १९४२ में हुआ है। अपने ज्येष्ठ भ्राताकी मृत्यु के पश्चात् सारे परिवारका भार आपके कंधोपर पड़ गया है जिसे आप अच्छी तरह चला रहे हैं। आप धर्म स्नेही व्यक्ति हैं तथा हर एक धार्मिक कार्योंमें बहुत तत्परतासे भाग लेते रहते हैं। आप मिलनसार व्यक्ति हैं।

आपके छगनलालजी, हजारीलालजी, सरदारसिंहजी एव लखमीचन्दजी नामक चार पुत्र विद्यमान हैं। इनमें छगनलालजीका जन्म सं० १९६९ में हुआ है। आप भी उत्साही तथा मिलनसार युवक हैं और व्यापार में भाग ले रहे हैं। आपके शेरसिंहजी व बहादुरसिंजी नामक दो पुत्र विद्यमान हैं।

लाला नवलकिशोरजी खेरातीलालजी का परिवार, देहली



बाबू छगनलालजी S/o ला० बाबूमलजी राक्यान, देहली



बाबू जवाहरलालजी S/o ला० खैरातीलालजी राक्यान, देहली

लाला नन्हेमलजी:—आपका जन्म संवत् १६१५ में हुआ। आप पहले तो लाला नवलकिशोरजीके शामलात में जवाहरातका व्यापार करते रहे। इसके पश्चात् आप अलग होकर अपना स्वतन्त्र रूपसे जवाहरातका व्यापार करने लगे। आप भी व्यापार में कुशल तथा जवाहरातके व्यापारमें बारीक नजर रखनेवाले सज्जन थे। आपने अपनी हिकमतसे और कार्यचातुरीसे बहुत सी सम्पत्ति कमाई। आप देहलीके नामी जौहरी तथा योग्य व्यक्ति हो गये हैं। आपका स्वर्गवास संवत् १६८५ में हो गया। आपके लाला नत्थूमलजी नामक एक पुत्र हुए।

लाला नत्थूमलजीका जन्म संवत् १६४७ में हुआ। आप अपने पिताजीके साथ व्यापार में योग देते रहे। आप भी बहुत मिलनसार सज्जन थे। आप बहुत सरल प्रकृतिके व धार्मिक पुरुष थे। आपका स्वर्गवास संवत् १६८७ में हो गया। आपके सुमतिदासजी, शीतलदासजी, रतनलालजी, धनपतसिंहजी, हरकचन्दजी एव प्रेमचन्दजी नामक छः पुत्र हुए। इनमे रतनलालजी की संवत् १६६१ में बहुत अल्पावस्थामें मृत्यु हो गई। आपका जन्म संवत् १६७४ में हुआ था। आपने एफ० एस० सी० की परीक्षा भी प्राप्त कर ली थी। आप विद्याव्यसनी तथा उत्साही नवयुवक थे।

लाला सुमतीदासजी तथा शीतलदासजीका जन्म क्रमश सम्वत् १६६७ की पोस सुदी ३ व सं० १६७१ की पोस सुदी ५ को हुआ। आप दोनों बन्धु मिलनसार एवं उत्साही हैं। वर्त्तमान में अपने फर्मके जवाहरातके व्यापारका सारा काम आज आप दोनो ही बड़ी सफलता पूर्वक चला रहे हैं। शेष सब पढ़ते हैं। लाला शीतलदासजी के सुरेन्द्रकुमारजी, महेन्द्रकुमारजी एवं राजेन्द्रकुमारजी नामक तीन पुत्र हैं।

यह सारा परिवार देहलीकी श्रीमाल एवं ओसवाल समाजमें प्रतिष्ठित समझा जाता है। लाला नवलकिशोरजी वाले मे० नवलकिशोर खैरातीलाल के नामसे तथा लाला नन्हेमलजी वाले मे० नन्हेमल नत्थूमलके नामसे अपना अलग अलग स्वतन्त्र रूपसे जवाहरातका व्यापार कर रहे हैं।

फाफू

राय सुखराज रायबहादुर का खानदान, भागलपुर

इस परिवारका इतिहास भी बहुत ही गौरवशाली और प्राचीन है। आपलोगोंका यो तो मूल निवासस्थान राजपूतानाका है, मगर आप लोग स्वाधीन अन्तिम हिन्दू सम्राट पृथ्वीराज चौहानके शासनकालमे राजपूतानासे देहली आये थे। आपलोग फाफू गोत्रीय श्री जैन श्वे० मन्दिर आम्नायको माननेवाले हैं।

इस खानदानमें राय मोहनजी वडे प्रतापी पुरुष हुए। रायमोहनजीके पूर्वज भी देहलीके मुगलसम्राट अकबर और शाहजहाके शासन काल मे उच्च पदोंपर अधिष्ठित थे।

राय मोहनजीः—आप दिल्लीमें सम्माननीय व्यक्ति हो गये हैं। तत्कालीन मुगल सम्राट जहांगीर के राज्य कालमें ही आपको "राय" का खिताब पुश्तहापुश्तके लिये इनायत हुआ था। आप बड़े योग्य तथा कार्य्यकुशल सज्जन थे। आप सम्राट द्वारा पांच हजार सेनाके नायक बनाये गये थे तथा एक बड़ी जागीर भी आपको इनायत की गई थी।

राय मोहनजी धार्मिक क्षेत्रोंमें भी विशेष कार्य्य करनेवाले व्यक्ति हो गये हैं। कहा जाता है कि आचार्य्य श्री जिनचन्द्रसूरिजीके पांण्डित्य पूर्ण जैन धर्म व सिद्धान्तोंके प्रतिबोध और राय मोहनजीके प्रभावके कारण सम्राटने कई जैन धर्मके मन्तव्यों को स्वीकार कर लिया था। विशेषतः सम्राट जीवहिंसा न होने देनेके पक्षपाती हो गये थे। राय मोहनजीका प्रभाव बहुत ही बढ़ा हुआ था। आप के हरदेवजी नामक एक पुत्र हुए।

राय हरदेवजी :—राय हरदेवजी कर्त्तव्य परायण एवं परिश्रमी व्यक्तियोंमेंसे एक हैं। आपने अपने पैरोंपर खड़े रहकर अपनी सारी स्थितिको बनाया था। आप बड़े साहसी और धर्मशील तथा कर्त्तव्यशील व्यक्ति थे। जिस समय सम्राट शाहजहांके शासनकालमें उनके पुत्रोंके बीच राज्य प्राप्तिके लिये आपसमें झगड़ा होने लगा उस समय आप भी शाहजहांके दरबारी थे। सम्राट की मौजूदगीमें किसी भी पुत्र का पक्ष लेना अधार्मिक समझकर आप अपनी सारी सम्पत्ति अपने भाई अमृतलालजी को देकर बंगालकी यात्राके लिये रवाना हुए। घूमते २ आप सन् १६४८ में बिहारके पूर्णिया नामक स्थानमें आये और यहांपर साधारण स्केलपर अपना व्यापार प्रारम्भ किया। मगर जो व्यक्ति होनहार व चमकनेवाले होते हैं वे चाहे जिस परिस्थितिमें क्यों न हों शीघ्र ही अपनी प्रतिभा से उन्नत हो जनताके सन्मुख आ जाते हैं। इसी प्रकार की घटना राय हरदेवजीके साथ घटी। आपने अपनी व्यापार चातुरीसे व्यापारमें बहुत सफलता प्राप्त की और अपनी बहुत सी जमीदारी भी कर ली। आपने पूर्णिया में ही अपना स्थायी निवासस्थान बना लिया था। आपके शम्भुरायजी नामक एक पुत्र हुए।

राय शम्भुरायजी अपने व्यापारको सफलता पूर्वक संचालित करते हुए सन् १७३८ में स्वर्गवासी हुए। आपके मजलिसरायजी नामक एक पुत्र हुए।

राय मजलिसरायजीः—आप इस खानदानमें विशेष प्रतापी, परोपकारी तथा गरीबोंके प्रति हमदर्दी रखनेवाले महानुभाव थे। कितने ही निधन परिवारोंको आपकी ओरसे सहायता दी गई होगी। आप बड़े उदार, लोकप्रिय तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति हो गये हैं। आपके पुत्र सलामतरायजी भी गरीबोंके प्रति प्रेम रखनेवाले तथा परोपकारी पुरुष थे। आप कार्य्य कुशल तथा योग्य व्यवस्थापक थे। आपने अपनी जमींदारीकी आय बढ़ाई व ब्रिटिश गवर्नमेंट का गहरा विश्वास हासिल किया। आपने कई जैन मंदिर बनवाये तथा जीव हिंसा न होने देने के लिये बहुतसे कार्य्य किये। आपने अपनी जमींदारीमें मछलीका बन्दोबस्त देना बिलकुल बन्द कर दिया था हालांकि इसके करनेसे आपकी आय भी कुछ घट गई थी। आप सन् १८२८ में स्वर्गवासी हुए। आपके टेकराजरायजी नामक एक पुत्र हुए।



राय सुखराज जी रायबहादुर, भागलपुर



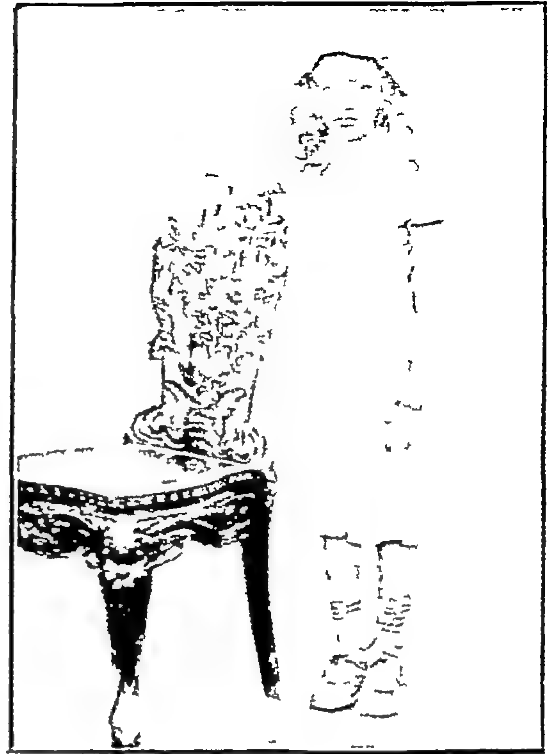
बाबू अभयकुमारसिंहजी, भागलपुर



बाबू जयकुमारसिंहजी S'o राय सुखराज राय बहादुर, बाबू नवकुमारसिंहजी S'o
बाबू अभयकुमारसिंहजी, भागलपुर



सुयशकुमारसिंहजी S/o रायकुमारसिंहजी, नाथनगर।



श्रीविद्यावती D/o रायकुमारसिंहजी, नाथनगर।



सुदर्शनकुमारसिंहजी S/o रायकुमारसिंहजी, नाथनगर।



सुमित्रकुमारसिंहजी S/o रायकुमारसिंहजी, नाथनगर।

श्रीलेखराजरायजी :—आपका जन्म सन् १८३६ में हुआ। आपकी नाबालगीमें ही आपके पिताजी का स्वर्गवास हो गया था। अतः आपके स्टेट की सारी व्यवस्था कोर्ट आफ वार्ड ने की। बाबू लेखराजरायजी भी अपने परिवार सहित बिहार सब डिवीजनके राजगिर नामक स्थानपर चले गये। बालिग होनेपर आप अपने स्टेटकी व्यवस्थित रूपसे व्यवस्था करते रहे। आपका स्वर्गवास सन् १८८७ में हुआ। आपकी मृत्युके समय आपके पुत्र सुखराजरायजीकी उम्र केवल चार वर्षकी थी।

राय बहादुर सुखराजरायजी . आपका जन्म सन् १८७७ में हुआ। आपकी अतीव बालक ऊमर होनेके कारण और अपने पतिकी मृत्यु हो जाने से आपकी सुयोग्य माताजीने अपनी स्टेट का सारा कार्य्य भार कोर्ट आफ वार्डके सुपुर्द कर राय बहादुर सुखराजरायजी की शिक्षाकी ओर विशेष लक्ष दिया। आपकी माताजी बड़ी धार्मिक तथा योग्य महिला हैं। आपके ऊपर भी आपकी माताजीके गुणों का पूर्ण असर पड़ा है तथा आपका जीवन कई अच्छे गुणोंसे परिपूर्ण रहा है। आपके माताजीकी वय करीब ८१ वर्ष की होंगी। आप वर्त्तमान में भी जीवित हैं तथा धर्म ध्यानमे अपना समय विताती हैं।

रा० ब० सुखराजरायजी ने सन् १८६७ में अपनी स्टेटका कार्य्य सम्हाला। आप नीतिज्ञ व्यवहार कुशल एव मिलनसार सज्जन हैं। आप में व्यवस्थापिका शक्ति अच्छी है। अपनी स्टेटका कार्य्य भार आपने अपने हाथमें लेनेके बाद सारी स्टेटकी काया पलट कर दी है। आपने अपनी व्यापार चातुरी तथा योग्यतासे अपनी आय को बढ़ाया और सारे बिहारके अन्तर्गत अपना प्रभाव स्थापित कर दिया। आप ही सबसे प्रथम भागलपुर में आकर निवास करने लग गये। आपने भागलपुरमें बड़ा भव्य तथा दर्शनीय बङ्गला बनवाया है जिसका फोटो इस ग्रन्थमे दिया जा रहा है। इसके अतिरिक्त आपने अपनी स्थायी सम्पतिको बढ़ाया और जनतामें लोकप्रियता हांसिल की।

आपने बहुत उत्साहके साथ सार्वजनिक कार्यों में हाथ बटाया। कई ऊंचे २ पदों पर रहकर आप जनताको सेवा करते आ रहे हैं। आप भागलपुर म्यु० के कौन्सिलर, डिस्ट्रिक्ट-बोर्डके मेम्बर व प्रांतीय कौंसिलके मेम्बर भी रह चुके हैं। आपकी इन सेवाओ के उपलक्षमें गवर्नमेंट ने आपको आनरेरी मजिस्ट्रेट भी नियुक्त कर सम्मानित किया था। इतना ही नहीं वरन् आप स्टेट कौन्सिलके मेम्बर, सेण्ट्रल लेजिस्लेटिव असेम्बली के मेम्बर तथा ई० आई० आर० की अडव्हायजरी कमेटी के मेम्बर हैं।

आपको विद्या प्रचारसे भी बड़ा प्रेम है। आपने प्रान्तीय विश्वविद्यालयको २००००) बीस हजार रुपये दिये। इसके अतिरिक्त आपने भागलपुर म्युनिसिपैलिटीको तीस हजार रुपये दिये। म्युनिसिपैलिटीने इसके उपलक्षमें लाजपत पार्क के बाजारका नाम आपके नामपर रखकर आपके प्रति कृतज्ञता प्रगट की है। अपनी जातिके लोगोंको भी आपने बहुत मदद पहुचाई है। आप विचारशील तथा अनुभवी सज्जन हैं।

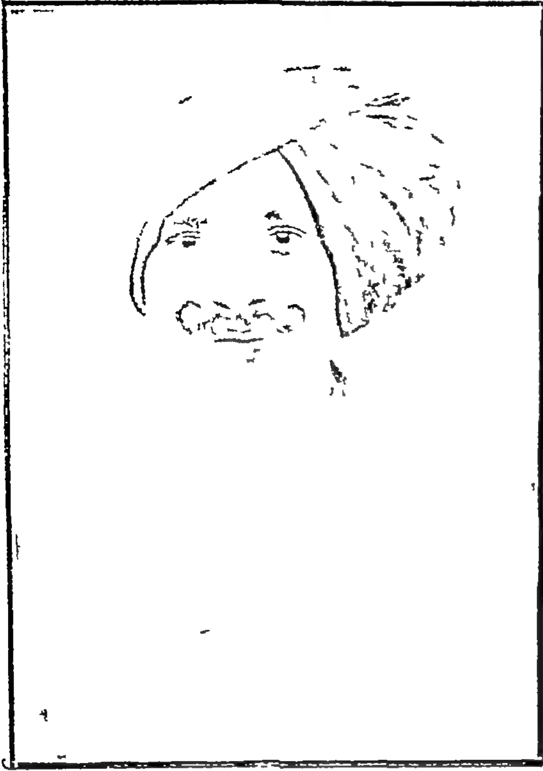
आपकी इन सब सेवाओ से प्रसन्न होकर ब्रिटिश गवर्मेण्टने आपको "राय वहादु
पद्वीसे विभूपित किया। इसके अतिरिक्त देहली दरवारके समय आपको गवर्मेण्टने
तथा सार्टिफिकेट आफ ऑनर भी इनायत किया था। आपका ब्रिटिश गवर्मेण्ट
भागलपुरकी जनतामें अच्छा सम्मान है। आप यहां के प्रतिष्ठित रईस गिने जाते हैं। अ
विहारमें वहुत वड़ी जागीरी है जिसका आप ही योग्यता पूर्वक संचालन कर रहे हैं।
अतिरिक्त आपकी फर्मपर हुण्डी चिट्ठी व वैंकिंगका व्यवसाय भी होता है।

आपका स्वभाव सरल व सादा है। आप वायसराय की कौंसिलके मेम्बर भी थे।
नाथनगर में एक मकान वनवाकर तथा कुछ जमीन प्रदानकर एक हायस्कूल स्थापित
है। इसी प्रकार सार्वजनिक कामोंमे आप हाथ वटाते हैं। आप वड़े धार्मिक पुरुष हैं।
नाथनगर मे एक वहुत ही सुन्दर काचकी जड़ाईका मन्दिर वनवाया है। यह मन्दिर भाग
के दर्शनीय स्थानों में से एक है। आपके रायकुमारसिंहजी, अभयकुमारसिंहजी तथा
कुमारसिंहजी नामक तीन पुत्र विद्यमान हैं।

वावू रायकुमारसिंहजी—आपका जन्म सन् १८६७ मे हुआ। आप योग्य, मिलन
शिक्षित तथा विचारवान युवक हैं। आप वर्त्तमानमे अपने पिताजीसे अलग रहते तथा
हिस्सेकी आई हुई स्टेट का योग्यतापूर्वक सञ्चालन कर रहे हैं। आपने वी० ए० तक
प्राप्त की है। आपके सुयशकुमारसिंहजी एवं सुदर्शनकुमारसिंहजी नामक दो पुत्र हैं।

वावू अभयकुमारसिंहजी—आपका जन्म सन् १६०४ में हुआ। आप महत्वाकांक्षी
मिलनसार है। आपकी वुद्धि तीक्ष्ण और आप अण्डर ग्रेजुएट तथा उत्साही युवक हैं।
के नवकुमारसिंहजी नामक एक पुत्र विद्यमान हैं। वा० जयकुमारसिंहजी का जन्म सन् १
का है। आप अभी पढ़ते हैं। वावू अभयकुमारसिंहजी अपने पिताजीके साथ अपनी जमीं
की व्यवस्थामें योग दे रहे हैं।

आपका खानदान भागलपुरमें वहुत ही प्रतिष्ठित समझा जाता है। राय सुखराज
वहादुर की भागलपुर की कोठी वहुत ही सुन्दर वनी हुई है। इस कोठीके वरावर वि
कोई भी दूसरी कोठी नहीं है।



बाबू रायकुमारसिंहजी S/o राय सुखराजजी राय बहादुर, नाथनगर (भागलपुर)



श्री अमीरचन्दजी राकयान, (प्यारेलाल अमीरचन्द) देहली

सुख भवन, भागलपुर (राय सुखराज रायबहादुर)

प्रकार भीनमालजीके मालाजी तथा पेमकरणजी. मालाजीके कोदूरमलजी, कोदूरमलजीके पृथ्वीराजजी तथा पृथ्वीराजजीके मेहदानजी व चन्द्रसेनजी नामक दो सन्तानें हुईं। पेमकरणजीके सांवलजी एवं पीतोजी, सांवलजीके भोजाजी तथा भोजाजीके धनजी तथा रूपाजी नामक पुत्र हुए।

इस खानदानवाले चन्द्रसेनजी तक तो भीनमालमें ही रहकर अपना कार्य्य करते रहे। इसके पश्चात चन्द्रसेनजीके पुत्र सिंहमलजी भीनमालसे मांडो आये और वहांपर अपना रुतबा व प्रभुत्व स्थापित किया। आप बड़े कार्य्य कुशल तथा योग्य सज्जन थे। आपने तत्कालीन मुसलमान बादशाहके हुक्मसे मांडोकी अच्छी व्यवस्था की जिस पर प्रसन्न होकर बादशाहने आपको मण्डलोईका खिताब बक्षा। आपके सागरमलजी तथा सागरमलजीके वेनाजी नामक पुत्र हुए। आपलोग मांडोकी योग्य व्यवस्था करते रहे। तदनन्तर वेनाजीके पुत्र नैनसीजी मांडोसे बाहर निकले और संवत १४१४ की वैसाख सुदी ५ को निनौरकोटड़ी नामक गांव बसाया जो आज भी प्रतापगढ़ स्टेटमे विद्यमान है। आपके पुत्र हतीजी भी गांवकी योग्यता पूर्वक व्यवस्था करते हुए स्वर्गवासी हुए। आपके पेमाजी, मन्नाजी, धनजी, हंसराजजी तथा मेघराजजी नामक पांच पुत्र हुए।

श्री पेमाजीः—आप बड़े वीर, पराक्रमी तथा साहसी व्यक्ति थे। उस समय भारतके बादशाह एक मुसलमान थे तथा निनौरकोटडी भी उन्होंकी सल्तनतमें था। यह गांव मन्दसौर जिलेमें पडता था। इसी जिलेके अन्तर्गत रिंगणोद नामक स्थानपर भील जातिके लोगोंने उपद्रव करना शुरू कर दिया तथा हाथी भीलके नेतृत्वमें शाही हुकुमकी अवहेलना करते हुए बगावत करना प्रारम्भ कर दी। इस बातपर मन्दसौरके सूबेदारने पेमाजीको योग्य एवं साहसी समझकर उनको इस भीलका दमन करनेके लिये भेजा। श्रीपेमाजी एक सेना लेकर रिंगणोद आये और वहांपर दोनों पार्टियोंमें एक लड़ाई होनेके पश्चात् पेमाजीने भील सरदार हाथीजीको परास्त करके मार डाला। इस युद्धमें करीब दो सौ आदमी मारे गये होंगे। आपके इस बहादुरीके कार्य्य से प्रसन्न होकर बादशाहने मन्दसौरके सूबेदारके मार्फत आपको रिंगणोद परगने में नौ गाव जागीरी व टाकेदारीमें बक्षकर सम्मानित किया। पेमाजी रिंगणोदमें निवास कर अपने गावोंकी व्यवस्था करने लगे। तभीसे आपके खानदान वाले रिंगणोदमें ही निवास कर रहे हैं। श्री पेमाजीके भोजराजजी, भारमलजी, चन्द्रभानजी, रामचन्द्रजी तथा अभेराजजी नामक पांच पुत्र हुए। इनमेंसे भोजराजजीके वंशज रिंगणोदमें आज भी विद्यमान हैं। श्री भोजराजजीके दीपचन्दजी, मनोहरदासजी, लालचन्दजी, रूपचन्दजी एवं पृथ्वीराजजी नामक पांच पुत्र हुए।

इनमेंसे श्री दीपचन्दजीके वंशज बड़े रावलेवाले के नाम से तथा श्री लालचन्दजीके वंशज छोटे रावलेवाले के नामसे मशहूर हैं।

बड़े रावलेका इतिहासः—जिस समय श्री पेमाजीकी जागीरी व टाँकेदारी का उनके पौत्रोंमें

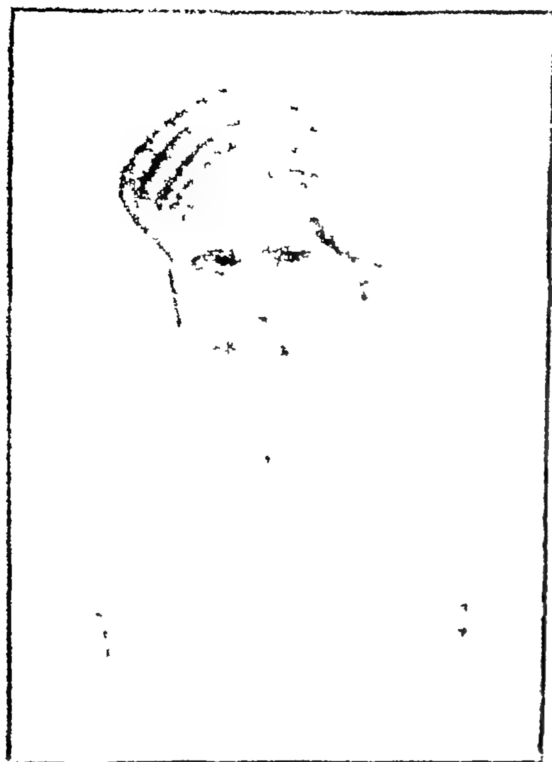
विभाजन हुआ उस समय बड़े रावलेको धतरावदा, चौकी, मातामेलकी, (निम्ब)मौजा कांकरवा व अन्य छोटी-छोटी सभी जागीरोंमें बराबर भाग मिला। इसके अतिरिक्त नगदी दामी, जमीदारीके लगा व सायरमें कुछ हिस्सा भी प्राप्त हुआ। इनमेंसे मौजा कांकरवा आगे जाकर इस खानदानके भाई बाँटमें श्री भगवतीसिंहजी को मिला जिनके वंशज श्रीदुलेसिंहजी आज भी उपभोग ले रहे हैं।

श्री दीपचन्दजीके रामचन्दजी, रतनसीजी व भीमसीजी नामक तीन पुत्र हुए। आप लोगों में से श्री रतनसीजी तथा भीमसीजी गोद चले गये। श्री रामचन्दजीके रतनसीजी तथा श्री रतनसीजीके भीमसीजी गोद आये। श्री भीमसीजीके गोपीजी तथा गोपीजीके मलूकचन्दजी नामक पुत्र हुए। श्री गोपीजी तक आपलोग अपने ठिकानेकी योग्यतापूर्वक व्यवस्था करते रहे।

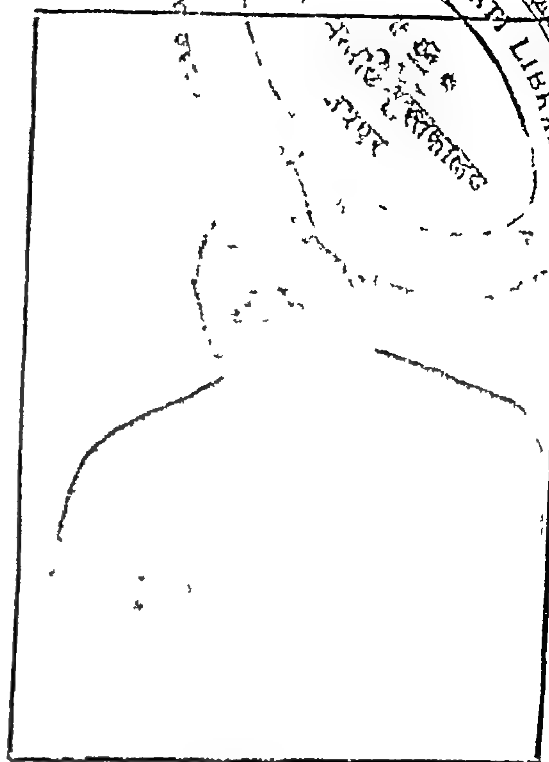
श्रीमलूकचन्दजी—श्रीमलूकचन्दजी वीर, पराक्रमी तथा दिलेर व्यक्ति थे। आपके यहां पर उस समय परगनेकी सारी लगान वसूलीका कार्य्य भी होता था। उस समय यहाके गिरासियों (डोड़िया राजपूत) ने लगान देना बन्द कर दिया। अतः श्रीमलूकचन्दजीने उन्हें दबाकर लगान वसूल करना चाहा। इसमें डोड़िया राजपूतोंने बगावत शुरू कर दी और दोनों पार्टियोंमें लड़ाई छिड़ गई। इसमें श्रीमलूकचन्दजी वीरतापूर्वक लड़ते हुए मारे गये। आपके नथमलजी एवं निहालचन्दजी नामक दो पुत्र हुए।

श्री नथमलजीके नामपर उदयचन्दजी गोद आये। उदयचन्दजीके हरिबख्शजी, हरिबख्शजीके अजबसिंहजी, किशनसिंहजी, परथीसिंहजी एवं भगवतीसिंहजी नामक चार पुत्र हुए। इनमेंसे श्री किशनचन्दजी निःसन्तान गुजर गये तथा परथीसिंहजी गोद चले गये। शेष श्रीअजबसिंहजी एवं भगवतीसिंहजीमें अपनी जागीरी व टाँकेदारीको विभाजन हुआ जिसमें जैसा कि हम ऊपर लिख आये हैं मौजा कांकरव, तथा कस्बा रिंगणोद, चौकी व मूंडलामें थोड़ी २ जागीरीका हिस्सा श्री भगवतीसिंहजी के खानदान वालोंको मिला जिसका उपभोग आज तक आपके वंशज ले रहे हैं। शेष जागीरी श्रीअजबसिंहजीके खानदानवालोंके रही।

श्री अजबसिंहजीका खानदान.—श्री अजबसिंहजीके नामपर श्रीपरथीसिहजी गोद आये। श्री परथीसिंहजीके सालमसिंहजी, सालमसिंहजी के लक्ष्मणसिंहजी तथा लक्ष्मणसिंहजी के बलवन्तसिंहजी व माधवसिंहजी नामक दो पुत्र हुए। आपलोग अपने ठिकानेकी उत्तम व्यवस्था करते हुए अपने खानदानके सम्मानको कायम रखते रहे। आप लोगोंके विषयमें आज भी कई रंगडपने तथा साहसकी बातें प्रसिद्ध हैं। सम्वत १७३२ की श्रावण सुदी ११ शनिवारको रिंगणोद आदि स्थानोंपर देवासनरेश (जूनियर) का राज्य स्थापित हो गया। उस समयसे आजतक देवास स्टेटने इस खानदान वालों का पहले जैसा रूतबा व सम्मान कायम रखते हुए अपनी स्टेटमें सम्माननीय कुर्सी प्रदानकर सम्मानित किया है। इस खानदानके लोग भी



श्री ठाकुर रणजीतसिंहजी, रिंगणोद



श्री ठाकुर रघुनाथसिंहजी, रिंगणोद



बाबू कचरसिंहजी वकील, मन्दसौर



श्री ठाकुर दुर्लेसिंहजी, रिंगणोद

देवास नरेशके स्वामिभक्त एवं आज्ञापालक रह रहे हैं। आप लोगोंके वीरतापूर्ण कार्य्यों एवं स्वामिभक्ति की समय समयपर स्टेटने प्रशसा की है और आपको कई प्रकारके सम्मान इनायत कर अपना कृपापात्र बनाया है।

श्रीबलवन्तसिंहजी बड़े वीर व्यक्ति थे। आपके केशरीसिंहजी नामक एक पुत्र हुए। श्री केशरीसिंहजी बड़े अच्छे स्वभाव वाले सज्जन थे। आप भी अपने ठिकानेका कार्य्य सुचारु रूपसे करते रहे। आपका स्वर्गवास सं० १९६७ में हो गया। आपके नामपर श्रीभगवती सिहजीके परिवारसे श्रीजुगलकिशोरसिंहजी के बड़े पुत्र श्रीरणजीतसिंहजी गोद आये।

श्री रणजीतसिंहजी—श्रीरणजीतसिंहजी का जन्म सम्वत् १९४३ की चैत्र बदी ५ सोमवार को हुआ। आप बड़े मिलनसार एवं सादगी पसन्द सज्जन हैं। वर्त्तमान में आप ही इस खानदानके जागीर व टाकेदारीके मौजेके प्रधान सञ्चालक एवं योग्य व्यक्ति हैं। आप सफलतापूर्वक अपने ठिकानेका कार्य्य चला रहे हैं व अपने खानदानके सम्मानको ऊँचा उठा रहे हैं। आप रिंगणोद गांव तथा जागीरीके गांवोंमें ही नहीं वरन् सारी देवास स्टेटमें प्रतिष्ठित व्यक्ति समझे जाते हैं। आप कामर्स कमेटीके मेम्बर तथा रिंगणोदमें लोकप्रिय सज्जन हैं।

सार्वजनिक कार्य्यों में भी आप दिलचस्पीसे भाग लेते हैं। आप देवास राज सभाके सरकारकी ओरसे नामीनेटेड मेम्बर, श्रीजैन श्वेताम्बर तीर्थ रिंगणोदके चीफ सेक्रेटरी, रिंगणोद म्युनिसीपैलिटीके मेम्बर आदि हैं। गौ सेवासे आपको बड़ा प्रेम है। रिङ्गणोद परगनेके जागीरदारोंमें राजकीय दरबारके समय आपको सबसे पहली बैठक का सम्मान प्राप्त है। सन् १९११ के देहली दरबारके समय आप देवास सरकार के साथ देहली भी गये थे। आपके जसवंतसिंहजी, उमरावसिंहजी, विक्रमसिंहजी, रामसिंहजी एवं हरिसिंहजी नामक पांच पुत्र विद्यमान हैं। इनमें श्री कुँ० जसवंतसिंहजी गड़गुच्चा परगनेमें आनरेरी एडिशनल तहसीलदार हैं। श्री कुँ० उमरावसिंहजी यहींपर काम में योग देते हैं। शेष सब पढ़ते हैं।

श्री छोटे रावले का इतिहास:—श्रीलालचन्दजीसे इस खानदान का इतिहास प्रारम्भ होता है। आप बडे वीर पुरुष थे। कई फारसीमें लिखी हुई सनदोंसे आपकी वीरताका पूरा २ परिचय मिलता है। आपके महासिहजी, रायसिहजी एवं धनजी नामक तीन पुत्र हुए। इनमेंसे श्री महासिंहजी सरकारी कामके सम्बन्धमें ऊनी गये थे जहांपर वीरतापूर्वक लडते हुए मारे गये। आपके स्मारक में आज भी ऊनीमें एक छत्री बनी हुई है। श्रीधनजी के उदयचन्दजी एवं खानचन्दजी नामक दो पुत्र हुए। खानचन्दजीके टोडरमलजी, राजमलजी एवं ससकरणजी नामक तीन पुत्र हुए। श्रीराजमलजी बड़े वीर तथा पराक्रमी व्यक्ति हो गये हैं। आप भी अपने पराक्रमको बताते हुए लड़ाईमें मारे गये। आपके स्मारकमें रिंगणोदमे आज भी एक भव्य छत्री बनी हुई है। श्रीराजमलजीके गुमानसिंहजी एवं मोहकमचन्दजी नामक दो पुत्र हुए। मगर आप दोनों बन्धु छोटी छोटी ऊमरमें स्वर्गवासी हो गये। अत. श्रीराजमलजीके नाम पर आपके छोटे भ्राता श्रीजसकरणजी गोद आये। श्रीजसकरणजी बड़े शूर थे। आपने

अपने खानदान के शत्रु राजपूतोंसे वीरता पूर्वक बदला लिया था। आपके पुत्र नाहरसिंहजी छोटी ऊमरमें ही गुजर गये। अतः जसकरणजीके नामपर हीरासिंहजी गोद आये। आप सब लोग अपने ठिकानेकी योग्यता पूर्वक व्यवस्था करते रहे।

श्री हीरासिंहजी :—श्री हीरासिंहजी इस खानदानमें बहुत ही प्रसिद्ध एवं कार्य्य कुशल व्यक्ति हो गये हैं। आप प्रभावशाली, पराक्रमी तथा बहादुर व्यक्ति थे। आपने अपने खानदान के नामको पुनः चमकाकर अपना यश बढ़ाया व खानदानके रुतवे व सम्मानमें वृद्धि की। इसके अतिरिक्त आपने अपनी जागीरीकी नई सनदें हाँसिल कीं। आपकी योग्यता एवं कार्य्य कुशलता से प्रसन्न होकर देवास स्टेट ने भी आपको २० बीघा जमीन इनाम में प्रदान करके सम्मानित किया था। यह जमीन आज भी आपके खानदान वालोंके पास विद्यमान है। देवास स्टेटमें सम्मान प्राप्त करनेके अतिरिक्त आपने अपना परिचय इतना बढ़ाया था कि आपको सिन्धिया, होलकर आदि पराक्रमी पुरुषोंने भी परवाने देकर सम्मानित किया था। राजकीय सम्बन्ध मे अपना एक खास स्थान प्राप्त करनेके साथ ही साथ आपने प्रजा में भी अपनी लोकप्रियता काफी बढ़ा ली थी। आपके जोरावरसिंहजी, जोरावरसिंहजी के भगवतीसिंहजी एवं भगवतीसिंहजीके किशोरसिंहजी नामक पुत्र हुए। आप सब लोग भी ठिकानेका कार्य्य संचालन कुशलता पूर्वक करते रहे।

श्री भगवतीसिंहजी :—श्री भगवतीसिंहजी बड़े प्रभावशाली एवं वजनदार व्यक्ति थे। आपका रिंगणोदकी जनतामें अच्छा सम्मान था। इसी प्रकार स्टेटमें भी आप प्रतिष्ठित व्यक्ति गिने जाते थे। आप बडे धार्मिक एवं योग्य व्यक्ति थे। आपने पैदल रास्तोंसे चारो धामकी यात्राएँ की थीं।

श्री किशोरसिंहजी :—श्री किशोरसिंहजी का जन्म सम्वत् १९३२ में हुआ। आप बड़े व्यवस्था कुशल एवं उदार हृदयवाले व्यक्ति थे। आपने मेट्रिक तक शिक्षा प्राप्त की थी। यह वह समय था जब कि चारों ओर अविद्यांधकार छा रहा था तथा पढ़े लिखोंकी संख्या बहुत कम पाई जाती थी। आप शिक्षित, व्यापार कुशल तथा अपनी प्रजाके अच्छे व्यवस्थापक थे। आपका रिंगणोद तथा बाहर बहुत सन्मान था। आपके कार्य्यों से देवास दरबार बहुत प्रसन्न रहा करते थे। आपकी मृत्युके पश्चात् देवास दरबारने आपके पुत्र श्रीरघुनाथसिंहजी के पास एक शोक पत्र भेजा था जिसमें आपकी व्यवस्थापिका शक्ति एवं शासन कुशलता की भूरि २ प्रशंसा की थी। आप देहली दरबारमें भी गये थे। आपका स्वर्गवास सं० १९८४ में हो गया। आपके रघुनाथसिंहजी, सज्जनसिंहजी, मदनसिंहजी एवं मोहनसिंहजी नामक चार पुत्र विद्यमान हैं। इनमेंसे श्रीसज्जनसिंहजी तो गोद चले गये हैं।

श्रीरघुनाथसिंहजी :—श्रीरघुनाथसिंहजीका जन्म संवत् १९५६ में हुआ। आप शिक्षित, योग्य तथा कार्य्यकुशल व्यक्ति हैं। आपको इतिहास संकलनसे विशेष प्रेम है। आप इस समय अपने ठिकानेकी व्यवस्था योग्यता एवं सफलता पूर्वक कर रहे हैं। आपही इस समय

इस ठिकानेमे सबसे बड़े एवं प्रधान संचालक हैं। आपकी योग्यता एवं कार्य्य कुशलता व कानूनी जानकारीसे प्रसन्न होकर देवास स्टेटने आपको आनरेरी एडिशनल तहसीलदारके पदपर नियुक्त कर सम्मानित किया है। आप बड़े मिलनसार एवं विचारक सज्जन हैं। आपका रिंगणोद एवं बाहरकी जनतामें बड़ा सम्मान है। आप समाज सेवी तथा साहसी व्यक्ति हैं। रिंगणोदमे एक समय धाड़ा पड़ा। इस धाड़ेके समय आपने साहस पूर्वक धाड़ियोंका सामना किया व उनको खदेड़ दिया। इस साहसपूर्ण कार्य्यसे प्रसन्न होकर देवास सरकार ने आपको खिलअत प्रदान कर सम्मानित किया।

आप सार्वजनिक कामोंमें भी दिलचस्पीसे भाग लेते रहते हैं। आप रिंगणोदकी लायब्रेरी तथा क्लबके प्रेसिडेट एवं लोकप्रिय सज्जन हैं। आपने अपने पिताजी द्वारा उद्घाटित मंदिरको पूर्ण करके उसमें प्रतिमाजी स्थापित करवाईं। कृषि शास्त्र का भी आपको अच्छा ज्ञान है। आपने अपने पिताजीकी मृत्युके पश्चात् सारे ठिकाने की व्यवस्था कुशलता पूर्वक की व हवेली वगैरह सारी नई बनवाई। यह हवेली संवत् १६७३ में पास की नदीकी जोरदार बाढ़के टक्करसे गिर गई थी। आप यहांकी कामर्स सभाके मेंबर हैं तथा देवास स्टेटकी राज सभाके मेम्बर भी रह चुके हैं। आपके व्रजराजसिंहजी नामक एक पुत्र विद्यमान हैं। श्रीमदनसिंहजी एवं मोहनसिंहजी इस समय उज्जैनमें व्यवसाय कर रहे हैं।

छोटे रावलेके अन्डरमें मौजा मेंहदी, मूंडला, माता मेलकी (निस्ब) मौजा रनारा, व कसबा रिङ्गणोद पांती (निस्ब) गांव हैं। इसके अतिरिक्त आपके हिस्सेमें थोड़ी थोड़ीसी जागीरी है। सायरमें कुछ हिस्सा भी था।

बड़ा रावला तथा छोटा रावला इन दोनों ठिकानोंको देवास स्टेटकी ओरसे निम्न लिखित सम्मान प्राप्त हैं।

दो चपरासी, छड़ी, हरकारा रङ्ग सूर्ख, मुहरसिक्का, नुकराई, एक पायगा, घोड़े दो, चंवर, दस्त नुकराई दो, म्याना रङ्ग सूर्ख बन्नाती नग एक आदि। इनके अतिरिक्त देवास स्टेटमें आप लोगोंको ताजीम भी प्राप्त है तथा खुशीके समय पोशाक भी अता फरमाई जाती है और शोकके समय पगड़ी व दुशाले बख्शे जाते हैं।

ठिकाना काकरवा का इतिहास :—जैसा कि हम ऊपर लिख आये हैं कि श्रीहरिवल्लभजीके पुत्र श्री अजबसिंहजी व श्री भगवतीसिंहजी में भाई बांटेके अनुसार जागीरी व टांकेदारीकी जागीरीमें विभाजन हो गया। उस समय इस ठिकानेको कांकरवा गांव व रिङ्गणोद तथा मूंडलामें थोड़ी २ जागीरी मिली। श्रीभगवतीसिंहजी के भवानीसिंहजी, भवानीसिहजीके प्रतापसिंहजी, नाहरसिंहजी एवं पर्वतसिंहजी नामक तीन पुत्र हुए। श्रीप्रतापसिंहजी के नामपर प्यारसिंहजी गोद आये। इसी प्रकार प्यारसिंहजीके नामपर श्रीजुगलसिहजी गोद आये। श्रीपर्वतसिंहजीके प्यारसिहजी एव जुगलसिंहजी नामक दो पुत्र हुए जो उक्त लिखे अनुसार गोद चले गये।

श्रीजुगलसिंहजी :—आप बड़े शुद्धाचरण वाले एवं धर्म प्रेमी सज्जन थे। आपका स्वभाव भोला था। आपने अपने ठिकानेकी ठीक व्यवस्था की। आपका स्वर्गवास सं० १६९८ में हो गया। आपके रणजीतसिंहजी एवं दुलेसिंहजी नामक दो पुत्र विद्यमान हैं। इनमेंसे श्रीरणजीतसिंहजी तो श्रीअजबसिंहजी के परिवार वाले बड़े रावलेके ठाकुर श्रीकेशरीसिंहजी के नामपर गोद चले गये हैं।

श्रीदुलेसिंहजी :—आपका जन्म संवत् १६५२ की चैत्र वदी ५ को हुआ। आप साहसी, उत्साही एवं मिलनसार व्यक्ति हैं। आप अपने ठिकानेकी सफलता पूर्वक व्यवस्था कर रहे हैं। आपको देवास सरकार ने एक चोरको पकड़नेके उपलक्ष में एक बन्दूक भी इनायत की हैं। आपके नरेन्द्रसिंहजी एवं नरभेसिंहजी नामक दो पुत्र विद्यमान हैं। श्रीदुलेसिंहजी वर्त्तमानमें कोर्ट आफ वार्डके आनरेरी असिस्टण्ट सुपरिन्टेन्डेन्ट हैं।

यह सारा खानदान देवास स्टेटके बहुत ही प्रतिष्ठित एवं प्रमुख खानदानों में से एक है। श्रीमाल समाजमें इस खानदानका इतिहास चमकता हुआ रहा है। आपके पूर्वजोंने कई समय कई लड़ाइयों में वीरतापूर्वक लड़कर हंसते २ अपने प्राणोंको अपने स्वामी की स्वामि-भक्ति में अर्पित कर दिये हैं। इस खानदानमें बड़े रावले वालों की रिङ्गणोद परगनेके ठाकुरोंमे पहले नम्बरकी बैठक व छोटे रावले वालोंकी दूसरे नम्बरकी बैठकका सम्मान प्राप्त है। इस खानदानके कई शहीदोंके स्मारकमें आज भी छत्रियां बनी हुई हैं। इसके अतिरिक्त बहादुरी-से मर जाने वालों की धर्मपत्नियां सतियाँ हुईं जिनके स्मारक भी आज विद्यमान हैं। इस खानदानवालोंके पास आज भी बहुतसे रुक्के मोजूद हैं।

यह सारा खानदान हमेशासे अपने मालिक श्री देवास महाराज साहबका स्वामिभक्त तथा पूर्ण रूपसे सेवा करनेवाला रहा है।

सेठ गुलाबसिंहजी फतेसिंहजी नागर का खानदान, कानपुर

यह परिवार करीब १०० वर्षों से कानपुरमें निवास कर रहा है। आप लोग नागर गौत्रीय श्री जै० श्वे० मं० आम्नायको माननेवाले हैं। इस खानदान में लाला श्रीचन्दजी हुए।

लाला श्रीचन्दजी :—आप बड़े प्रतिष्ठित व्यक्ति हो गये हैं। आप उन दिनों गवर्मेन्ट-के ट्रेझरर थे। आप योग्य व्यक्ति थे। आपने कानपुरमें एक बहुत बड़ा मकान बनवाया। आप ही के बाद से आपके परिवारका इतिहास मिलता है। आपके उदयभानजी तथा उदयभान जीके ताराचन्दजी नामक पुत्र हुए।

लाला ताराचन्दजी अपने पुत्र निहालचन्दजीके साथ कानपुरमें मे० ताराचन्द निहालचन्द के नामसे बहुत बड़े स्केलपर कपड़ेका व्यवसाय करते थे। आपकी फर्म कानपुरमें कपड़े

की वहुत वड़ी फर्म समझी जाती थी जिसपर कई यू० पी० के रईसोंके खाते वगैरह थे। आप दोनों पिता पुत्र व्यापार कुशल तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। आप दोनों ही ने अपने सारे व्यापारको सफलता पूर्वक संचालित किया। लाला निहालचन्दजीके नामपर माणिकचन्दजी गोद आये।

लाला माणिकचन्दजी वडे धर्मात्मा तथा आरामप्रिय व्यक्ति थे। आपके स्वर्गवास हो जानेके पश्चात् आपके नामपर लाला गुलाबसिंहजी गोद आये।

लाला गुलावसिंहजी:—आपका जन्म सं० १६२८ में हुआ। आप बड़े धार्मिक विचारवाले, कार्य्य कुशल एवं योग्य व्यक्ति हैं। कानपुरमें आपने एक दस हजार वर्ग गजका प्लान घेरकर उसे गुलाबगञ्जके नाम से वसाया है जिससे आपको प्रति वर्ष वहुत वड़ी किरायेकी आमदनी हो जाती है। आपने अपने खानदानके सन्मान व स्थाई सम्पत्तिको वहुत बढ़ाया है। इसके अतिरिक्त आपने इसी गुलाबगंज के अन्तर्गत एक फते महाराज थिएटर नामक सिनेमा भी वनवाया है जो सफलता पूर्वक चल रहा है। इस सिनेमा का प्रसिद्ध नाम चित्रा है।

आप कानपुरकी जैन जनतामें प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। आपका गवर्मेन्टके कई बड़े २ अफसरों से मेल है। आप यू० पी०के चेम्बर आफ कामर्सके १५ सालों तक मेम्बर रहे तथा वर्त्तमानमें आप मरचेंट चेम्बर आफ कामर्सके मेम्बर हैं। आपके वाबू फतेहसिंहजी नामक एक पुत्र विद्यमान हैं। वाबू फतेसिंहजी का जन्म सं० १६५४ मे हुआ। आप व्यापार कुशल तथा मिलनसार व्यक्ति हैं। वर्तमानमें आप ही अपने सारे व्यवसाय को सफलता पूर्वक संचालित कर रहे हैं। आप बड़े फूर्तिले यथा योग्य हैं। आपके महाराजकुमारसिंहजी तथा लक्ष्मीनारायणसिंहजी नामक दो पुत्र हैं।

आप लोगोंके यहापर किराया, वैङ्किग, जवाहरात तथा हुंडी चिट्ठीका व्यवसाय होता है। आपकी फर्म का नाम गुलाबसिंह फतेसिंह पड़ता है।

फोफलिया

श्री रतनलालजी छुट्टनलालजी फोफलियाका खानदान, जयपुर

इस खानदानके पूर्व पुरुषोंका मूल निवासस्थान देहली का था। आप फोफलिया गौत्रके श्री जै० श्वे० मं० मार्गीय सज्जन हैं। इस परिवारमे सेठ खूबचन्दजी हुए। आप देहलीमें जवाहरातका व्यापार करते थे। आपका वहाँपर अच्छा सम्मान था। जयपुर नरेश सवाई जयसिंहजी जब देहली गये थे तब जौहरी खूबचन्दजीको अपने साथ ले आये थे। इसके अतिरिक्त जयपुर नरेशने जौहरी खूबचन्दजीको १०००) सालकी आय का एक गांव जागीरी में देकर तथा २) रोजकी तनख्वाह मुकर्रर कर वहुत सम्मानित किया। यह गांव तथा यह तनख्वाह

आपके खानदान वाले श्रीजवाहरलालजी के गुजरनेके पांच-सात सालों बाद तक बराबर मिलती रही। तत्पश्चात् स्टेटमें खालसे हो गई। सेठ खूबचन्दजीने जयपुरमे आकर अपने जवाहरातके व्यापारको सफलता पूर्वक चलाया। आपके बुधसिंहजी, विजयसिहजी, चुन्नीलालजी तथा बहादुरसिंहजी नामक चार पुत्र हुए।

जौहरी बहादुरसिंहजी जवाहरातके व्यापारको बराबर करते रहे। आपके शत्रुसिंहजी एवं बख्तावरसिंहजी नामक दो पुत्र हुए। श्रीबख्तावरसिंहजी भी जवाहरात का व्यवसाय करते थे। आपके जवाहरसिंहजी नामक एक पुत्र हुए। आप जयपुर नरेश स्व० श्रीराम-सिंहजी महाराज के साथ रहते तथा कसरत वगैरह किया करते थे। आप पर उक्त महाराजा की बड़ी कृपा रहती थी। आपके रतनलालजी नामक एक पुत्र हुए।

श्रीरतनलालजी—आपका जन्म सं० १९१९ में हुआ था। आप जवाहरातके व्यापारमें बहुत ही निपुण तथा अनुभवी सज्जन थे। जवाहरात के व्यापारमें आपकी इतनी सूक्ष्म दृष्टि थी कि आप कलकत्ता, बम्बई, मद्रास आदि दूर दूरके जौहरियोंमें प्रसिद्ध तथा वजनदार समझे जाते थे। आपने अपनी व्यापारिक प्रतिभासे अपने जवाहरातके व्यापारको चमकाया और लाखों रुपयोंकी सम्पत्ति उपार्जित की। आप बड़े प्रभावशाली और जयपुरकी जौहरी समाज-में बड़े प्रतिष्ठित व्यक्ति माने जाते थे। आपका स्टेटमें भी बहुत सम्मान था। जयपुर नरेश जब कोई जवाहरात वगैरह खरीदते थे तब पहले सेठ रतनलालजीको बतला लिया करते थे। कई प्रसिद्ध-प्रसिद्ध जौहरी आपको गुरु कहकर पुकारते थे। आज भी जयपुरमें कई ऐसे प्रतिष्ठित तथा नामी जौहरी विद्यमान हैं जो आपके शिष्य रह चुके थे। आपका जयपुर की श्रीमाल एवं ओसवाल समाजमें अच्छा सम्मान था। आप प्रायः सभी सार्वजनिक कामोंमें सहायता प्रदान किया करते थे। आपका स्वर्गवास स० १९९२ की कार्तिक वदी अम्मावस्या को हुआ। आपके नाम पर जोधपुरसे श्रीचम्पालालजी गोद आये।

सेठ चम्पालालजी का जन्म सं० १९३७ में हुआ। आप अपने पिताजी द्वारा जमाये हुए विस्तृत जवाहरातके व्यापार को सफलता पूर्वक करते रहे। आपका छोटी उमरमें ही सं० १९६० में स्वर्गवास हो गया। आपके नामपर बाबू छुट्टनलालजी जोधपुरसे गोद आये।

बाबू छुट्टनलालजीका जन्म संवत् १९६२ में हुआ। आप बड़े उत्साही तथा मिलन-सार युवक हैं। वर्त्तमानमें आप ही सारे फर्मके जवाहरातके व्यापार को योग्यता पूर्वक सञ्चालित कर रहे हैं। आप प्रायः सभी सार्वजनिक कामोंमें मदद दिया करते हैं। आपके जतन-मलजी, कानमलजी एवं मानमलजी नामक तीन पुत्र हैं।

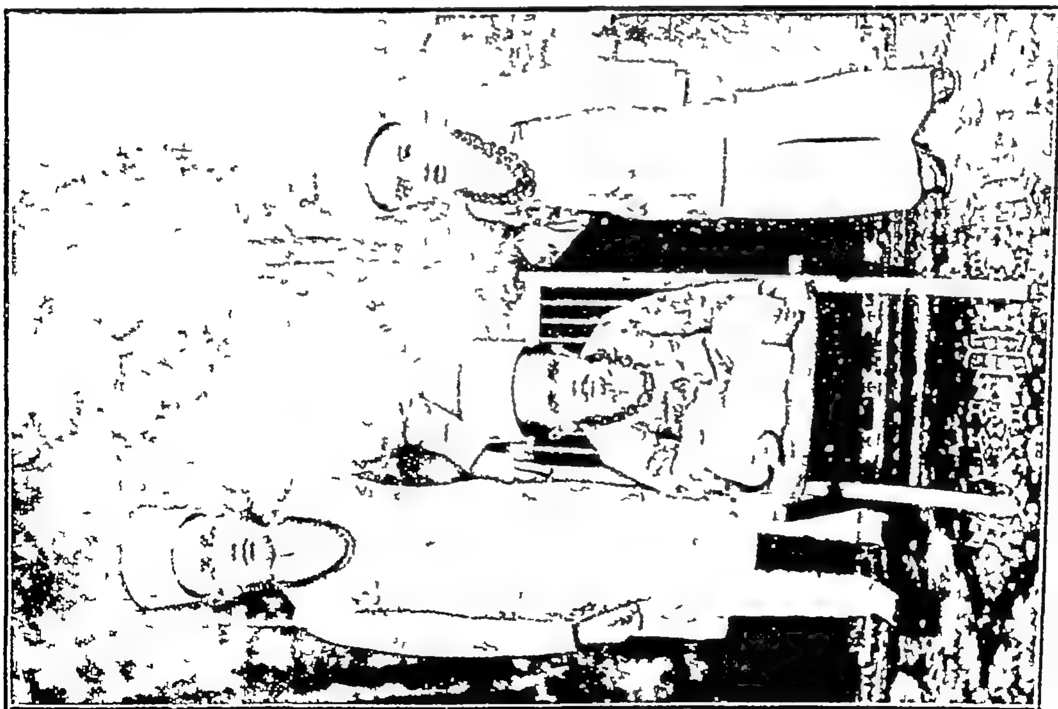
आप लोगोंका खानदान जयपुरकी जौहरी समाजमें प्रतिष्ठित एवं मातबर माना जाता हैं। आप जयपुर मे मे० रतनलाल छुट्टनलाल फोफलियाके नामसे जवाहरातका व्यापार करते हैं।



स्व० सेठ रतनलालजी फोफलिया जौहरी,
जयपुर



बाबू छुट्टनलालजी फोफलिया जौहरी,
जयपुर



दाहिनी तरफ बाबू जतनमलजी, बांई ओर कानमलजी, बीचमें मान-
मलजी S/o बाबू छुट्टनलालजी फोफलिया जौहरी, जयपुर

लाला शिखरचन्द्जी फोफलियाका खानदान, लखनऊ

इस परिवार वाले लखनऊ निवासी फोफलिया गौत्रके श्री जै० श्वे० मं० मार्गीय हैं। इस खानदानमें लाला रिद्धूमलजी हुए। आपने लखनऊसे कलकत्ते जाकर रिद्धूमल मन्नालाल के नामसे लाला मुन्नालालजी बड़दंतूके साझे मे जवाहरातका व्यापार किया था जिसमें आपको अच्छी सफलता प्राप्त हुई। आपके शिखरचन्द्जी नामक एक पुत्र हुए।

लाला शिखरचन्द्जीका जन्म सं० १९०७ मे हुआ था। आप व्यापार कुशल, सज्जन तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। आप भी जवाहरातके व्यापारको करते रहे। मोती के काममें आपने आपने अच्छी दृष्टि तथा जानकारी प्राप्त कर ली थी। आपने कलकत्तेके अफीम चौरस्ते के मन्दिरमें अग्र भाग लिया था। आप कलकत्ता की श्रीमाल समाज की प्रगतिमें भाग लिया करते थे। आपका सं० १९६७ में स्वर्गवास हो गया। आपके पुत्र इन्द्रचन्द्जी का छोटी ऊमरमें ही स्वर्गवास हो गया। आपके नामपर श्री मुकुन्दलालजी भँसालीके पुत्र कपूरचन्दजी जोधपुर से गोद आये।

लाला कपूरचन्दजीका जन्म सं० १९६१ में हुआ। आप सन् १९१३ तक कलकत्ता रहे। पश्चात् लखनऊ चले आये। आप मिलनसार तथा शिक्षित सज्जन हैं। आपने सन् १९२७ में लखनऊ यु० से बी० काम० की परीक्षा पास की है। सन् १९३० से आप किंग जार्ज मेडिकल कालेज में सर्विस करते हैं। आप आल इण्डिया जै० श्वे० कान्फ्रेंस बम्बई की स्टैंडिंग कमेटीके एक सालतक मेम्बर रहे। लखनऊ की जै० श्वेताम्बर सभाके आजतक मन्त्री हैं। इसी प्रकार आपने जैन श्वे० पब्लिक लायब्रेरीके उत्थानमें बहुत योग दिया है। वर्त्तमानमे आप उसके ट्रेझरर हैं।

श्रीश्रीमाल

लाला हजारीमलजी श्रीश्रीमाल का खानदान, देहली

इस खानदानका मूल निवासस्थान अन्हिलपुरपाटन (गुजरात) का है। आप लोग श्रीश्रीमाल गौत्रके श्री जैन श्वे० मन्दिर मार्गीय हैं। अन्हिलपुरपाटन से आपलोग अहमदाबाद तथा वहांसे करीब ३५० वर्ष पूर्व देहली आये। तभीसे यह खानदान देहलीमे निवास कर रहा है।

इस खानदानके पूर्व पुरुष सेठ रायचंदजीको बादशाह शाहजहाँ देहली लाये थे। आप जवाहरातका काम करते रहे। आपके नेमीचंदजी, नेमीचन्द्जीके सूरजमलजी, सूरजमलजीके छगनलालजी एवं छगनलालजीके रोशनलालजी, किशनचंदजी तथा बिशनचंदजी नामक तीन पुत्र हुए। इनमे लाला रोशनलालजी के केशरीचंदजी एव फकीरचंदजी नामक दो पुत्र हुए। आप सब लोगोंके समयमें आपके यहांपर जवाहरातका व्यापार होता रहा।

लाला केशरीचन्दजी—आपका जन्म सम्वत् १८८७ का था। आप व्यापार कुशल तथा प्रसिद्ध व्यक्ति हो गये हैं। आपने जवाहरातके व्यापारको बहुत बढ़ाया। तदनन्तर सं० १६०८ से आपने बालमुकुन्दजी माहेश्वरीके साझेमें जोरोंसे जवाहरातका व्यापार शुरू किया। आप इस व्यवसायमे अच्छे अनुभवी थे। आपने इस व्यवसायमें लाखों रुपये कमाये। आप देहली की जनतामें लोकप्रिय, सम्माननीय तथा योग्य सज्जन हो गये हैं। आप सार्वजनिक एवं परोपकार के कामोंमें बहुत योग देते थे। आपने अपने सम्मानको बहुत बढ़ाया था। आपका स० १६३५ की कार्तिक वदी ८ को स्वर्गवास हो गया। आपके लाला हजारीमलजी नामक एक पुत्र हुए।

लाला हजारीमलजी—आपका जन्म सम्वत् १६१८ में हुआ। आप व्यापार कुशल, देहली के गण्यमान्य सज्जन, अनुभवी एवं उदार महानुभाव हैं। आपने अपने जवाहरातके व्यापारको इतना चमकाया कि आपकी फर्म देहलीकी खास २ प्रधान फर्मों में से एक है तथा बहुत ही प्रतिष्ठित समझी जाती है। आपने अपने हाथोंसे लाखों रुपये उपार्जित किये हैं।

आप एक बड़े प्रभावशाली तथा वजनदार व्यक्ति हैं। आपकी सलाह बड़ी कीमती तथा आदर की दृष्टिसे देखी जाती हैं। देहली तथा पञ्जाब प्रान्तकी सैकड़ों संस्थाओंको आपकी ओरसे प्रोत्साहन मिला होगा। आप बड़े परोपकारी एव गरीबोंके साथ हमदर्दी रखनेवाले महानुभाव हैं। देहलीकी जैन समाजमें आप अग्रगण्य तथा सार्वजनिक क्षेत्रमें बहुत ही प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं।

आपका धार्मिक जीवन भी बहुत प्रशंसनीय रहा है। आपके द्वारा देहली की प्रायः सभी संस्थाओं को सहायता मिलती रहती है। आपका नाम देहली तथा पंजाब प्रान्तमें बहुत मशहूर है। आप मिलनसार, बुद्धिमान एवं अनुभवशील सज्जन हैं। पेचीदे मामलों के समयमें जब दो पार्टियोंमें कुछ झगड़ा पड़ जाता है तब आप तथा स्व० खैरातीलालजी मध्यस्थ नियुक्त कर दिये जाते थे। आप दोनों ही सज्जन बड़ी ही चतुराईसे सारे मामलेको निपटा देते थे। इस तरहके सैकड़ों झगड़े आपने निपटाये होंगे। आप वर्त्तमानमें वृद्ध हैं तथा पूर्ण शांति लाभ कर रहे हैं। आपने देहली गौशाला, दादावाड़ी आदि संस्थाओंमें बहुत सहायता पहुचाई है। दादावाड़ी का तो आपने ४० वर्षों तक प्रबन्ध करके उसे बहुत उन्नतिपर पहुचाया। आप जैन और अजैन सभी संस्थाओंको मदद पहुंचाते रहते हैं। आपके नाम पर गुजरातसे गोद आये हुए युवक पूनमचन्दजी का २६ वर्षकी वय में ही स्वर्गवास हो गया है।

आप लोगोंके शादी सम्बन्ध सब रीति रस्म आज भी गुजरातमें होते हैं। आप लोगोंका खानदान पाटन, देहली तथा पंजाबकी ओसवाल एवं श्रीमाल समाजमें प्रतिष्ठित समझा जाता है। आप लोग मे० रामचन्द्र हजारीमलके नामसे लाला बालमुकुन्दजी माहेश्वरीके वंशजोंके साझेमें जवाहरातकाबड़े स्केलपर व्यापार करते हैं। आप लोगों का सम्मिलित व्यापार बहुत सालोंसे चला आ रहा है। लाला हजारीमलजीके साढ़ू के पुत्र लाला बाबूमल-



लाला हजारीमलजी श्रीश्रीमाल, देहली



बाबू निहालसिंहजी भाण्डिया, भागलपुर



श्री राजमलजी टाक जौहरी, जयपुर



बाबू सुखलालजी जरगड, जयपुर

जी योग्य, देशभक्त तथा सार्वजनिक स्पीरीटवाले सज्जन हैं। आप पर लालाजीका पूर्ण विश्वास है तथा आप ही सारे व्यापारको संचालित कर रहे हैं। आप पांजरापोलके मेम्बर आदि २ हैं।

संघवी

श्रीशिवशङ्करजी मुकीम का खानदान, जयपुर

इस खानदानके सज्जनोंका मूल निवासस्थान देहली का था। आप लोग संघवी गौत्रके श्री जै० श्वे० मंदिर मार्गीय हैं। इस खानदानके श्री देवीदासजी देहली के बादशाहके जौहरी थे। आपके गोर्द्धनदासजी नामक पुत्र हुए।

श्रीगोर्द्धनदासजी :—आप देहलीके नामी जौहरी हो गये हैं। आपकी फर्म देहलीके जवाहरात के व्यापारियों में मातबर मानी जाती थी। आप मिलनसार एवं योग्य सज्जन थे। जयपुर नरेश मिर्जा राजा सवाई जयसिंहजीके पुत्र श्रीरामसिंहजीने संवत् १७१२ में आपको अपना भाई बनाया और पगड़ी बदलकर सम्मानित किया। इसके पश्चात् सं० १७२४ में में जब श्री रामसिंहजी जयपुरकी गद्दीपर विराजे तब सेठ गोर्द्धनदासजीको देहलीसे जयपुर आकर बस जानेका निमन्त्रण दिया। जयपुरसे बालकृष्णजी शेखावत इस निमन्त्रण पत्र को लेकर जयपुर गये थे। इसमें आपको लिखा गया था कि आप जवाहरातों और अमूल्य वस्तुओंको लेकर यहां आओ। इसके साथ ही साथ आप अपने योग्य कारीगरों को भी साथमें लेते आना। सेठ गोर्द्धनदासजी तब जयपुर चले आये। उक्त नरेश की आप पर बहुत कृपा रहा करती थी। कई समय आपको असली रुक्के प्रदान कर सम्मानित किया था। इनमेंसे हम कुछ यहांपर देते हैं।

"लिखतन रामसिंहजी अतर गोर्द्धनदास सूं पगड़ी बदली कंवरपदामें सो हमारे वंश ईनकी वाईनकी औलादकी गौर न करे तीने चीतोड़ मारको पाप संवत १७२१ काती सुदी ६"

इसी प्रकार आपको एक और रुक्का प्रदान कर आपको हांसलकी माफी और खास पोशाकका सम्मान बख्शा। वह इस प्रकार है।

"गोर्द्धनदासजीके म्हाको राम राम अत थे खातर जमा राख देस मै वनज करो थाने वा थांकी औलाद जो देस मै व हजूर मै व्यौपार करे त्यांने हांसल माफ फरमायो छे अर खास पौशाक थांकी फरमा छे सवत् १७३१ माह वुदी ३"

इस प्रकारके कई रुक्के प्रदान कर सेठ गोर्द्धनदासजीका बहुत सम्मान किया गया। सेठ साहब बड़े व्यापार कुशल तथा अनुभवी जौहरी थे। जयपुरमें आप स्थायी रूपसे बस गये तथा जयपुर नरेशने भी आपको स्टेट जुएलर बनाया और पुश्तहापुश्तके लिये मुकीम का खिताब प्रदान किया। आपके पूर्णचन्द्रजी नामक पुत्र हुए। आप तथा आपके पुत्र शिव-

चन्दजी अपने जवाहरातका व्यापार करते रहे। आप लोगोंने अपने सम्मान व रुतबेको बनाये रखते हुए स्टेट जौहरीका काम सफलता पूर्वक किया। संवत् १७७६ में महाराज सवाई जयसिंहजी ने प्रसन्न होकर सेठ पूर्णचन्द्रजीको एक खास रुक्का इनायत किया जिसमें लिखा था कि महाराजा साहबकी खास पोशाकका आधा कपड़ा पूर्णचन्द्रजीसे लेना और आधा दूसरे व्यापारियोंसे। उस समय जयपुर नरेश के खास पोशाकका कपड़ा जो लाते थे उनको कुछ निश्चित रकम तनख्वाहके रूपमें दी जाती थी। उस रकमकी आधी पूर्णचन्द्रजीको दी जानेका भी उस रुक्केमें जिक्र किया गया है। सेठ शिवचन्दजीका सं० १८४१ में स्वर्गवास हुआ। आपके नथमलजी नामक एक पुत्र हुए।

श्रीनथमलजी :—आप मिलनसार, जवाहरातके व्यापारमें कुशल तथा अनुभवी व्यक्ति हो गये हैं। आप लोग भी स्टेट जौहरीका व्यवसाय करते रहे। स्टेट जौहरीका कार्य्य आपके वंशज शिवशङ्करजी तक बरावर चलता रहा। श्री नथमलजीने अपने खानदानके सम्मानको पूर्ववत् बनाये रक्खा। आपको महाराज प्रतापसिंहजीने प्रसन्न होकर ५० बीघा जमीन मन-रामापुरा (जिला सांगानेर) में इनामके बतौर देकर आपका आदर किया था। आपको रुक्के भी इनायत किये गये थे। इतना ही नहीं वरन् जयपुर-स्टेटने आपको सं० १८४२ में फ़ाग और मुकम्माबाद परगनों की चोधरायत व सं० १८४४ में ६००) सालाना रेख का बुध-सिंहपुरा इनाममें दिया। यह गांव आपके जीवन कालतक रहा तथा उक्त परगनोंकी चौध-रायत और ५० बीघा जमीन आपके वंशज श्रीशिवशङ्करजी तक रही। पश्चात् खालसे हो गई।

सेठ नथमलजी जयपुरकी जनतामें सम्माननीय तथा योग्य व्यक्ति थे। आपका सं० १८६३ में स्वर्गवास हुआ। आपके बख्तावरमलजी, जसकरणजी, हुकुमचन्दजी, जोरावरमलजी एवं महाचन्दजी नामक पांच पुत्र हुए।

श्रीबख्तावरमलजी—आप भी नामी स्टेट जौहरी तथा प्रतिष्ठावाले सज्जन थे। जयपुर नरेशने आपकी व्यापारिक चतुराईको देखकर आपको एक खास रुक्का इनायत किया था जिसमें ८६५) सालानाकी आय का एक गांव तथा तनख्वाह इनायत की जानेका जिक्र है। आप वजनदार व्यक्ति थे। आपके अभयचन्दजी, हरिशंकरजी, एवं बल्देवजी नामक तीन पुत्र हुए। सेठ अभयचन्दजी भी अपने पूर्वकालीन व्यापार तथा सम्मानको बनाये रखते हुए सं० १९२१ में स्वर्गवासी हुए। आपकी मृत्युके समय जयपुर नरेश ने आपके खानदानवालोंको एक खास रुक्का प्रदानकर ६००) की जागीर बहाल की। आपके पुत्र मांगीलालजी पर तत्कालीन जयपुर नरेश महाराज रामसिंहजीकी बड़ी कृपा रही। आप भी सफलतापूर्वक स्टेट जौहरी का कार्य्य करते रहे। आपके नामपर श्रीशिवशंकरजी गोद आये।

श्रीशिवशङ्करजी—आपका जन्म सं० १९२७ में हुआ। आप बड़े योग्य, जवाहरातके व्या-पारमें निपुण तथा जनतामें अच्छे सम्माननीय व्यक्ति थे। आप स्टेट जौहरी रहे। आप यहां की जौहरी समाजमें माननीय व्यक्ति हो गये हैं। आपका स्वर्गवास सं० १९८३ की फाल्गुन

वदी ६ को हुआ। आपके मानमलजी, दानमलजी एवं वसन्तीलालजी नामक तीन पुत्र हुए। आप तीनों भाइयों का जन्म क्रमशः सं० १९६१, १९६७ तथा सं० १९८४ में हुआ। आपलोग मिलनसार एवं सुधरे खयालोंके व्यक्ति हैं। जयपुरमें आपलोगों की अच्छी प्रतिष्ठा है। आप-लोग मेसर्स मानमल मुकीम एण्ड संस के नामसे जवाहरात का व्यापार करते हैं। श्री-मानमलजी उत्साही तथा सार्वजनिक कामोंमें भाग लेनेवाले सज्जन हैं। आप जैनयुवक मण्डलके प्रेसिडेंट रहे तथा वर्तमानमें उसके आप व्हाइस प्रेसिडेंट हैं। इसी प्रकार जयपुर श्रीमाल सभाके प्रेसिडेंट, ज्युएलर्स एसोसिएशनके सेक्रेटरी तथा जैन श्वेताम्बर कान्फ्रेंस के मेम्बर आदि हैं। आपके वीरेन्द्रसिंहजी, आनन्दकुमारजी तथा दानमलजीके सुरेन्द्रकुमारजी नामक पुत्र हैं।

यह खानदान जयपुरमें प्रतिष्ठित समझा जाता है। आपलोगोंको वंशपरम्परा के लिये मुकीम का टायटल प्राप्त है।

भांडिया

बुधसिंहजी भांडियाका खानदान, लखनऊ

इस खानदान वालोंका मूल निवासस्थान जयपुर का है। आप लोग भांडिया गौत्रके श्री जै० श्वे० मं० मार्गीय हैं। इस खानदानमें लाला बुधसिंहजी हुए। आप जयपुरमें अच्छे जौहरी थे। आपके भगवानदासजी एवं पन्नालालजी नामक दो पुत्र हुए।

लाला पन्नालालजी :—आप जवाहरातके व्यापारमें निपुण तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। आप सं० १९११ के करीब जयपुरसे लखनऊ आये और यहाँपर जवाहरातका व्यापार जोरोंसे प्रारम्भ किया। आप यहाँपर जयपुरवालोंके नामसे मशहूर थे। आप यहाके नामी जौहरी तथा मिलनसार महानुभाव हो गये हैं। आपने वहुतसे शागीर्द तैयार किये थे। आपका करीब ५० वर्ष पूर्व स्वर्गवास हो गया है। आपके पुत्र अखेचन्दजीका जन्म संवत् १९१३ में हुआ। आप स्पष्ट वक्ता तथा अच्छे स्वभावके सज्जन थे। आप जवाहरात तथा लेन देनका व्यापार करते रहे। संवत् १९५१ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके कुशलचन्दजी, ज्ञानचन्दजी, गुलाबचन्दजी एवं सितावचन्दजी नामक चार पुत्र विद्यमान हैं।

लाला कुशलचन्दजीका जन्म संवत् १९३४ में हुआ। आप इस परिवारमें सबसे बड़े एवं योग्य पुरुष हैं। आप ही अपना जवाहरातका व्यापार सञ्चालित कर रहे हैं। लाला ज्ञानचन्दजीका जन्म संवत् १९४२ तथा स्वर्गवास संवत १९८२ में हुआ। आप जवाहरातका व्यापार करते रहे। आपके पदमचन्दजी, नगीनचन्दजी, फूलचन्दजी एवं पूरनचन्दजी नामक चार पुत्र विद्यमान हैं। बाबू पदमचन्दजीका जन्म सं० १९६६ में हुआ। आप शिक्षित तथा धी०

एस० सी० पास ह। आप वर्त्तमानमे यहांपर वकालत कर रहे हैं। वाबू फूलचन्द्जी सं० १६-६२ में स्वर्गवासी हो गये हैं।

लाला गुलाबचन्द्जीका जन्म सं० १६४३ में हुआ। आप योग्य, शिक्षित, सुधरे हुए विचारोंके महानुभाव हैं। आपने बी० ए० एल०एल० बी० पास करके वकालत करना प्रारम्भ की। आप बड़े उत्साही तथा तीक्ष्ण बुद्धिवाले महानुभाव हैं। आप उत्तरोत्तर वृद्धिको पाते रहे। वर्तमानमें आप सब जज तथा असिस्टेण्ट सेशनजज हैं। लाला सितावचन्द्जीका जन्म सं० १६५० का है। आप जवाहरातका व्यापार करते हैं। आपके रिखबचन्द्जी नामक एक पुत्र विद्यमान हैं। यह खानदान लखनऊकी ओसवाल एवं श्रीमाल समाजमें प्रतिष्ठित समझा जाता है।

राय बुधसिंहजी मुकीम का खानदान, कलकत्ता

इस परिवारका मूल निवासस्थान मारवाड़का था। आपलोग भांडिया गौत्रके श्री जै० श्वे० मं० मार्गीय सज्जन हैं। करीब १५० वर्षों से आपलोग कलकत्तामें निवास करते हैं। इस परिवारमें वावू बुधसिंहजी हुए।

वावू बुधसिंह—आप जवाहरातके व्यापारमें निपुण तथा योग्य व्यक्ति थे। आप हीने सर्व प्रथम अपनी फर्मपर जवाहरातको विलायत एक्सपोर्ट करना शुरू किया था। आप तथा आपके पिताजी दिल्लीके वादशाह तथा ब्रिटिश गवर्मेन्टके कोर्ट जुएलर्स थे। आप बड़े नामी जौहरी तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति हो गये हैं। आपको बादशाहने राय का खिताब इनायत किया था। आपका कलकत्ते की जौहरी समाजमें अच्छा सम्मान था। आपके पिताजी भी बड़े प्रसिद्ध जौहरी थे। आपको पुश्तहापुश्त के लिये मुकीम का टायटल प्राप्त हुआ था। आजतक आपके वंशज मुकीम कहलाते हैं। वावू बुधसिंहजीके जवाहरलालजी एव पन्नालालजी नामक दो पुत्र हुए।

वावू जवाहरलालजीका जन्म सं० १६०० मे हुआ। आप जवाहरातके व्यापारको करते रहे। आपका स० १६६० में स्वर्गवास हुआ। आपके मोतीलालजी, चुन्नीलालजी एव माणक-लालजी नामक तीन पुत्र हुए।

वावू मोतीलालाजीका जन्मसन् १८५७ मे हुआ। आपने करीब ५० वर्षों पूव मे० मोती-लाल मुकीम एण्ड सस के नामसे अपना जवाहरातका कार्य स्थापित किया। आप सफलता पूर्वक जवाहरातका व्यवसाय करते हुए सन् १६२१ को १८ जूनको स्वर्गवासी हुए। आपके प्यारेलालजी, सुन्दरलालजी एवं कुन्दनलालजी नामक तीन पुत्र विद्यमान हैं।

वावू प्यारेलालजीका जन्म सन् १८८१ का है। आप कलकत्ताकी श्रीमाल समाजमें सर्व प्रथम बी० ए० हुए तथा आपहीने श्रीमाल समाजमें सर्व प्रथम वकालत शुरु की। आप

शिक्षित हैं। बाबू सुन्दरलालजी तथा कुन्दनलालजीका जन्म क्रमशः सन् १८६४ और १८६८ का है। आप दोनों बंधु मिलनसार हैं तथा मे० मोतीलाल मुकीम एण्ड संसके पार्टनर और जवाहरातका व्यापार करते हैं। बाबू सुन्दरलालजीके मनोहरलालजी तथा कांतिलालजी नामक दो पुत्र हैं।

बाबू खड्गसिंहजी भांडियाका खानदान, भागलपुर

इस परिवारका मूल निवासस्थान माकड़ी (यू० पी०) का है। आप लोग भांडिया गौत्रके श्री जै० श्वे० मं० मार्गीय हैं। इस खानदानमे बाबू बख्तावरसिंहजी हुए। आपके उमरावसिंहजी तथा शेरसिंहजी नामक दो पुत्र हुए। बाबू शेरसिंहजीके प्रतापसिंहजी, दिलीपसिंहजी, होशियारसिंहजी तथा खड्गसिंहजी नामक चार पुत्र हुए। इनमें यह परिवार खड्गसिहजीका है। बाबू खड्गसिंहजी करीब ७० वर्ष पूर्व भागलपुर आये और यहींपर बस गये। आपका विवाह भागलपुरके प्रसिद्ध रईस राय सुखराज राय बहादुरकी बहनसे हुआ था। आपके निहालसिंहजी, इन्द्रसिंहजी, भँवरसिंहजी तथा कमरसिहजी नामक चार पुत्र हुए।

बाबू निहालसिंहजी बड़े धार्मिक भावनाओं वाले व्यक्ति थे। आप रा० ब० सुखराजरायजीके यहां पर सर्विस करते रहे। आपके पुत्र बाबू बहादुरसिहजी वर्त्तमानमें विद्यमान हैं तथा वहींपर सर्विस करते हैं। इसके अतिरिक्त आप अलग कपड़ेकी दूकान भी करते हैं। आपके कुशलसिंहजी नामक एक पुत्र हैं। बाबू इन्द्रसिंहजीका जन्म सं० १९४३ में हुआ। आप योग्य विचारशील एवं कार्य्य कुशल व्यक्ति हैं। आपके विजयसिहजी, वीरेन्द्रसिंहजी, दीपसिंहजी, तेजसिंहजी, जितेन्द्रसिहजी तथा हरिन्द्रसिंहजी नामक छ पुत्र हैं। इनमें बाबू विजयसिंहजीका जन्म सं० १९६० में हुआ। आपने सन् १९२३ मे बी० ए० तथा १९२६ में बी० एल० पास किया। आप शिक्षित, देशभक्त तथा योग्य सज्जन हैं। कांग्रेसके कार्य्योंमें आप दिलचस्पीसे भाग लेते हैं। वर्त्तमानमें आप भागलपुर कोर्टमें सफलता पूर्वक वकालत कर रहे हैं। बाबू भँवरसिंहजीका जन्म सं० १९४५ का है। आप भी मिलनसार व्यक्ति हैं। आपके राजसिंहजी, कुमारपालसिंहजी, ज्ञानपालसिहजी तथा जगतपतसिंहजो नामक चार पुत्र हैं। बाबू कमरसिंहजीका जन्म स० १९४७ मे हुआ। आप जिस समय एफ० ए० में पढ़ रहे थे उस समय आपका स्वर्गवास हो गया।

धांधिया

श्री फूलचन्द्जी माणकचन्द्जी धांधिया, जयपुर

इस खानदानके सज्जनोंका मूल निवासस्थान लखनऊ का है। आपलोग धांधिया गौत्रके श्री० जै० श्वे० म० मार्गीय हैं। इस परिवारमें सेठ बलदेवदासजी हुए। आप लखनऊमें

जवाहरातका व्यापार करते थ। आप वहाँसे करीब १२५ वर्ष पूर्व जयपुर आये और यहींपर स्थायी रूपसे बस गये। आपने जयपुरमें बहुत जवाहरातका व्यापार किया। आपके पुत्र गुलाबचन्दजीका जन्म सं० १८८२ का था। आप जवाहरातके व्यापारमें चतुर तथा व्यापार कुशल महानुभाव थे। आपने जयपुरमे जवाहरातका व्यापार किया तथा अपने व्यापारमें विशेष तरक्कीकर अपनी एक फर्म कलकत्तामें भी खोली थी। आपका स्वर्गवास सं० १९३५ में हो गया। आपके नामपर वसई जिला नारनौलसे लाला फूलचन्दजी गोद आये।

श्री फूलचन्दजी :—आपका जन्म सं० १९२२ में हुआ। आपके पिता श्री नानकचन्दजी वसई गांवमें कानूनगो थे तथा वर्त्तमानमें भी आपको पटियाला स्टेटमें जागीरी वगैरह है। सेठ फूलचन्दजी जवाहरातके व्यापारमें निपुण तथा योग्य महानुभाव हो गये हैं। आपने बंबई, कलकत्ता आदि स्थानोंपर लाखों रुपयोंके जवाहरात का लेन देन किया तथा इङ्गलैण्ड, अमेरिका आदि देशोंमें एजेण्टों द्वारा प्रचार करवाया था। जयपुरसे आप हीने सबसे प्रथम विलायत डायरेक्ट जवाहरात भेजना शुरू किया था। आप जयपुरके नामी जौहरी, कपड़द्वाराके जौहरी तथा प्रतिष्ठित महानुभाव थे। इसके अतिरिक्त स्व० महाराज श्री माधोसिंहजीके राज्यकालमे जयपुर स्टेटमें सं० १९७१ से १९७६ तक जो झाड़शाहीसे कलदार रुपयोंके एक्सचेंजका व्यवसाय हुआ वह सब आप हीके द्वारा किया गया था। इसमें आपके हाथोंसे करोड़ोंका लेन देन हुआ होगा। आप राज्यमें सम्माननीय, जनतामें प्रतिष्ठित तथा अनुभवी सज्जन थे। आपने अपने व्यापारको चमकाया और सर्वत्र यश सम्पादित किया। वर्त्तमान एजंट गवर्नर जनरल कर्नल जी० डी० ओगिलवी की आप पर बड़ी कृपा रही। आप गरीबों के सहायक थे। आपका स्वर्गवास स० १९८८ के वैसाख बुदि ८ को हुआ। आपके मानिकचंदजी, महतावचन्दजी एवं मोतीचन्दजी नामक तीन पुत्र हैं।

श्री मानिकचन्दजीका जन्म सं० १९४८ में हुआ। आप योग्य तथा मिलनसार सज्जन हैं। आप ही वर्त्तमानमें अपने व्यवसायके प्रधान संचालक हैं। आपने सं० १९८८ में मे० माणिकचन्द एण्ड संस के नामसे एक फर्म खोली है जहाँपर जवाहरातका व्यवसाय होता है। अनेकों टूरिस्ट लोग यहांसे दूर दूर जवाहरात ले जाते हैं। आपके पूनमचन्दजी एवं पद्मचंदजी नामक दोनों पुत्र व्यापारमें भाग लेते हैं। श्री महतावचन्दजी एवं मोतीचन्दजीका जन्म क्रमश स० १९५२ एवं १९५५ मे हुआ। आप लोग मिलनसार हैं तथा वर्त्तमानमें अपने व्यापारमें सहयोग दे रहे हैं। श्री महतावचन्दजीके अमरचन्दजी तथा हीराचन्दजी नामक दो पुत्र हैं। अमरचन्दजी एम० ए० में तथा हीराचन्दजी बी० ए० में पढ़ रहे हैं। आप दोनों शिक्षित युवक हैं। अमरचन्दजीके मेहरचन्दजी तथा दौलतचन्दजी और हीराचन्दजीके परतापचन्दजी नामके पुत्र हैं। श्री मोतीचन्दजी के मिलापचन्दजी तथा कमलचन्दजी नामक दो पुत्र हैं। आप दोनों पढ़ रहे हैं। इसी प्रकार पद्मचन्दजीके ताराचन्दजी एवं सन्तोषचन्दजी नामक दो पुत्र हैं।

आप लोग मे० फूलचन्द माणकचन्द के नामसे जयपुरमें जवाहरातका व्यापार करते हैं। इसके अलावा मे० माणकचन्द एण्ड संसके नामसे आपकी जवाहरात की एक और फर्म है। आपके यहांसे विलायत डायरेक्ट भी जवाहरात एक्सपोर्ट किया जाता है।

खारड़

बाबू खेड़सिंहजी खारड़ का खानदान, कलकत्ता

इस खानदानका मूल निवास स्थान महिम का है। आपलोग खारड गौत्रके श्री जैन श्वे० मं० मार्गीय हैं। इस परिवारके सेठ खेड़सीजी वहापर सरकारी नौकरी और जमीदारी का काम सफलता पूर्वक चलाते रहे। आपके पुत्र भगवानदासीके गोपालसिंहजी, जसवंतराय जी, मुत्सुद्दीलालजी तथा जगन्नाथजी नामक चार पुत्र हुए।

बाबू जसवंतरायजीका खानदान :—आपका जन्म सं० १९१६ में हुआ। आप व्यापार कुशल तथा साहसी व्यक्ति थे। आप मेहम से करीब ६० वर्ष पूर्व सबसे पहले कलकत्ता आये और यहांपर जवाहरातका व्यापार प्रारम्भ किया। आपको इस व्यापारमे बहुत सफलता प्राप्त हुई। आप जवाहरातके व्यापारमें निपुण, यहां भी जौहरी समाजमें प्रतिष्ठित तथा योग्य व्यक्ति हो गये हैं। आपका सं० १९८३ में स्वर्गवास हुआ। आपके हीरालालजी, मुन्नीलालजी तथा रोबीलालजी नामक तीन पुत्र हुए।

बाबू हीरालालजीका जन्म सं० १९३४-३५ का है। आप बड़े मिलनसार तथा व्यवहार कुशल हैं। वर्त्तमानमें आपही अपने सारे जवाहरातके व्यापारको सँभाल रहे हैं। आप श्रीमाल समाजमें प्रतिष्ठित व्यक्ति माने जाते हैं। आपने जगन्नाथघाट रोड कलकत्तामे एक बहुत सुन्दर मकान बनवाया है। आपके छतरसिंहजी, अजितसिंहजी, विजयसिंहजी एवं कमलसिंह जी नामक चार पुत्र विद्यमान हैं जो अभी पढ़ते हैं।

बाबू रोबीलालजीका जन्म सं० १९४४ में हुआ। आप अपने ज्येष्ठ भ्राताके साथ जवाहरातका व्यापार करते हुए सं १९८६ में स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र रतनलालजी करीब १० सालोंसे अपना अलग स्वतन्त्र व्यापार कर रहे हैं। बाबू रोबीलालजी भी अपने ज्येष्ठ भ्राता को जवाहरातके व्यापारमें योग देते हुए स्वर्गवासी हो गये हैं।

बाबू हीरालालजी हीरालाल खारड़के नामसे जवाहरातका व्यापार करते हैं।

सेठ सुजानमलजी खारड़का खानदान, जयपुर

इस परिवारके पूवजोंका मूल निवासस्थान मेहम (जिला रोहतक) का था। आप लोग खारड़ गौत्रीय श्री जैन श्वे० तेरापंथी हैं। महिममें आप लोगोंकी कोठी थी।

मगर जिस समय आप जयपुर आये उस समय उसे अपने सम्बन्धीको दे आये थे। करीब १५० वर्षों से यह परिवार जयपुरमें रह रहा है। इस परिवारके सेठ जीवसुखरायजी जवाहरातका व्यापार करते थे। आपके लक्ष्मणदासजी एवं हुकुमचन्दजी नामक दो पुत्र हुए।

सेठ लक्ष्मणदासजीका खानदान :—आप यहांके प्रतिष्ठित जौहरी तथा माननीय व्यक्ति हो गये हैं। आपके बहुतसे शागिर्द आगे जाकर नामी जौहरी हुए। आपने जवाहरातके व्यापार में काफी सम्पत्ति कमाई। आप प्रभावशाली तथा मिलनसार सज्जन हो गये हैं। आप अच्छे श्रावक तथा जैन शास्त्रोंके ज्ञाता थे। आपका स्वर्गवास सं० १९३० में हुआ। आपके देवदास जी, कुन्दनमलजी, चांदमलजी एवं नानूलालजी नामक चार पुत्र हुए। सेठ बलदेवदासजी जवाहरातके व्यापारको करते रहे। आपके सुखलालजी तथा नरसिंहदासजी नामक दो पुत्र हुए। सेठ सुखलालजी बम्बईमें तथा नरसिंहदासजी जयपुरमें जवाहरातका व्यापार करते रहे। नरसिंहदासजीके पुत्र नथमलजी चांदमलजीके नामपर गोद गये।

सेठ कुन्दनमलजीका जन्म सं० १८९९ में हुआ। आपने प्रथम सायरातमें मुलाजिमात की तथा फिर जवाहरातका व्यापार किया जिसमें आपको ठीक सफलता मिली। आपका सं० १९६१ में स्वर्गवास हो गया। आपके पुत्र अम्बालालजीका जन्म सं० १९४१ का है। आप जवाहरातका व्यापार करते हैं।

सेठ चांदमलजीके दत्तक पुत्र नथमलजीका जन्म सं० १९४६ में हुआ। आप सेठ नरसिंहदासजी तथा सेठ चांदमलजी दोनों घरोंके मालिक तथा मिलनसार सज्जन हैं। आप इस समय जवाहरातका व्यापार सफलता पूर्वक चला रहे हैं। आपके पुत्र मानमलजी मिलनसार युवक हैं तथा जवाहरातके व्यापारमें भाग लेते हैं।

सेठ नानूलालजीका जन्म सं० १९१० में हुआ। आप जवाहरातका व्यापार करते हुए सं० १९५० में गुजरे। आपके पुत्र मूलचन्दजी एवं लखमीचन्दजीमेंसे मूलचन्दजीका जन्म सं० १९४५ एव स्वर्गवास सं० १९६९ मे हो गया। सेठ लखमीचन्दजीका जन्म सं० १९४० में हुआ। आप अपने जवाहरातके व्यापारको सफलता पूर्वक चला रहे हैं। आपके पूनमचन्दजी तथा कैलाशचन्दजी नामक दो पुत्र हैं। बाबू पूनमचन्दजी जवाहरातके व्यापारमें भाग लेते हैं।

सेठ हुकुमचन्दजीका खानदान:—आप अपने ज्येष्ठ भ्राता सेठ लछमणदासजीके साथ जवाहरातका व्यापार करते हुए अपने लेनदेनका व्यापार भी करते रहे। आप सं० १९१५ में स्वर्गवासी हुए। आपके कस्तूरचन्दजी तथा मानिकचंदजी नामक दो पुत्र हुए। सेठ कस्तूरचंदजीका जन्म सं० १९०८ की भादवा वदी ४ का था। आप रा० ब० बद्रीदासजीके शागिर्द थे तथा आपने उनके साझेमें एक जवाहरातकी फर्म मांडले (ब्रह्मा) में खोली थी। इसमें आपको ठीक सफलता मिली। आप सं० १९६१ की आषाढ़ वदी ११ को स्वर्गवासी हुए। आपके सुजानमलजी एवं मोमीलालजी नामक दो पुत्र हुए। सेठ सुजानमलजीका जन्म सं० १९३५ की चैत्र वदी ५ को हुआ। आप मिलनसार हैं तथा जयपुरमें जवाहरातका व्यापार



खारड परिवार, जयपुर



लाला सरदारसिंहजी मेहमवार, देहली



बाबू सुरेन्द्रकुमारजी मेहमवार, देहली

करते हैं। आप जैन शास्त्रोंके ज्ञाता और ढालें तथा स्तवनोंके जानकार हैं। आपके पुत्र मह-तावचन्दजी एम० सी० ब्रदर्सके नामसे जौहरीबाजारमें मनिहारीकी दुकान करते हैं। आप उत्साही तथा हिन्दीमें विशारद हैं। बाबू मोमीलालजी सं० १९६७-६८ से अलग होकर बम्बई-में अपना स्वतन्त्र जवाहरातका व्यापार करते हैं। आपके पद्मचन्दजी, उत्तमचंदजी तथा सौभागचन्दजी नामक तीन पुत्र हैं।

सेठ माणकचन्दजी:—आपका जन्म सं० १९१२ की भादवा वदी ४ को हुआ। आप इस खानदानमें पुण्यात्मा तथा महान् पुरुष हो गये हैं। आप तीक्ष्ण बुद्धिवाले महानुभाव थे। धर्म पर आपकी बहुत श्रद्धा थी। आपने संवत् १९२८ की फाल्गुन वदी ११ को लाडनूंमें जैन-धर्ममें दीक्षा ली तथा संवत् १९३१ में सिंघाड़ोंके मालिक बनाये गये। तदनन्तर सं० १९४९ की चैत्र वदी २ को युवराज बनाये गये। आप तेरापन्थी धर्मके छठे आचार्य्य हो गये हैं। आपके विषयमें कई ग्रन्थोंमें बहुत कुछ प्रकाशित हो चुका है। आपका स्वर्गवास सं० १९५४ की कार्तिक वदी ३ को हो गया।

सेठ लक्ष्मणदासजी तथा हुकुमचन्दजीके परिवारवाले संवत् १९४५ से अलग होकर अपना स्वतन्त्र कारबार कर रहे हैं।

बदलिया

चौधरी दशरथसेनजीका खानदान, मन्दसौर

इस परिवार वालोंका मूल निवासस्थान देहली का था। आप बदलिया गौत्रके श्री वैष्णव धर्मको पालनेवाले सज्जन हैं। इस परिवारके पूर्व पुरुष श्री मजलिसरायजी करीब २२९ वर्ष पूर्व देहलीसे मन्दसौर आये और यहांपर गांवोंको बसानेकी आयोजनामें दत्तचित्त रहने लगे। आप लोग प्रभावशाली, कार्य्यकुशल तथा साहसी महानुभाव थे। आप लोगोंके द्वारा करीब ६० गाँव बसाये गये होंगे। आपके इन कार्य्योंसे प्रसन्न होकर देहलीके बादशाह-ने आप लोगोंको एक सनद, ६० गांवोंमें कुछ दामी कुल १८००) सालाना तथा एक मौजा जमींदारीमें इनायत कर सम्मानित किया था। आप लोगोंका इन गाँवोंमें अच्छा सम्मान था। आपके पुत्र श्री राजमलजी तथा राजमलजीके पुत्र जीवराजजी अपने गाँवोंकी व्यवस्था करते रहे। उस समय इन गांवोंके कानूगोका दफ्तर भी आपके यहांपर रहता था। इन गाँवोंकी व्यवस्था व लगान वसूलीका सारा कार्य्य आप हीके मार्फत किया जाता था। आप लोगों-का उस समय काफी सम्मान था। सेठ जीवराजजीके गुलाबसिंहजी नामक एक पुत्र हुए।

सेठ गुलाबसिंहजी—आपके जीवन काल में उक्त साठ परगने ग्वालियर स्टेटके अन्तर्गत आ गये। तत्कालीन ग्वालियर नरेशने भी आप ही लोगोंके जिम्मे उन साठ परगनोंको व्यव-स्था रक्खी तथा कानूगोका आफिस भी आपके यहांपर रखकर सम्मानित किया। आपके

राजरूपजी, राजरूपजीके गुलाबसिहजी (द्वितीय), गुलाबसिंहजीके फतेसिंहजी, फतेसिंहजी-के नन्दलालजी एवं नन्दलालजीके दशरथसिंहजी नामक पुत्र हुए। आप सब लोग अपने पुश्तैनी गांवोंके कामोंको योग्यतापूर्वक सञ्चालित करते रहे। आप लोगोंको पुश्तहा-पुश्तके लिये चौधरीका खिताब भी मिला था जो आजतक बराबर चला आता है।

श्री दशरथसिंहजी—आपका जन्म सं० १६२८ में हुआ। आप योग्य कार्य्यकुशल तथा अनुभवी व्यक्ति हैं। आपने अपने गावोंकी व्यवस्था सफलतापूर्वक की। इसके अतिरिक्त आप ओकाफ कमेटीके मेम्बर रहे। आप यहांके प्रतिष्ठित, वजनदार तथा योग्य पुरुष समझे जाते हैं। आपको ग्वालियर सरकारकी ओरसे कई समय पोशाके, सर्टिफिकेट आदि भी इनायत किये गये हैं। इतना ही नहीं आप मन्दसौरके आनरेरी मजिस्ट्रेट भी बनाये गये थे। सं० १६-६६ तक तो गाँवोंकी सारी व्यवस्था उपरोक्त प्रकारसे ही होती रही। इसके पश्चात् गवर्मेंटने सब गांवोंको अपने डायरेक्ट हाथमें कर लिया और सारी व्यवस्था भी गवर्मेंट द्वारा होने लगी। उसी समय आपका इनामी मौजा भी नम्बरदारी मौजा बना दिया गया। आप मन्दसौरमें प्रतिष्ठित तथा प्रभावशाली व्यक्ति हैं। आपके कचरसिंहजी नामक एक पुत्र विद्यमान हैं।

बाबू कचरसिंहजी—आपका जन्म सम्वत् १६५७ में हुआ। आप शिक्षित, सुधरे हुए खयालों के तथा समाज सुधारक सज्जन हैं। आपने सम्वत् १६७५ में यहांकी वकालत परीक्षा पास करके मन्दसौरमें वकालत करना शुरू की। आप वर्त्तमानमें वहाँके प्रमुख वकील तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। आप ग्वालियर स्टेटकी मजलिसे आमके मेम्बर, डिस्ट्रिक्ट बोर्डके मेम्बर, कोआपरेटिव बैंकके डायरेक्टर तथा मन्दसौर म्युनिसिपैलिटीके मेम्बर हैं। आपके अमरसिंह-जी नामक एक पुत्र विद्यमान हैं। यह खानदान मन्दसौरमें प्रतिष्ठित समझा जाता है।

लाला मुन्नीलालजी सिताबचंदजी बदलिया जौहरी, पटना

इस खानदान का मूल निवासस्थान बसई (शेखावाटी) का है। आप लोग श्री जैन श्वेताम्बर मंदिर मार्गीय श्रीमाल जातिके सज्जन हैं। इस खानदानमें लाला चौकचंदजी हुए। आपके मुकुन्दरायजी, जगन्नाथजी तथा अनूपरामजी नामक तीन पुत्र हुए। इन भाइयोंमेंसे लाला जगन्नाथजी लगभग १५० वर्ष पहले बिहार प्रांतके मनेर नामक गांवमें आये तथा जमींदारी आदिका साधारण काम काज करते रहें। आपके दयाचंदजी तथा अमृतलालजी नामक दो पुत्र हुए। इस समय लाला दयाचंदजीका परिवार पटनामें तथा लाला अमृतलालजी का परिवार भागलपुरमें निवास कर रहा है।

लाला दयाचंदजीके पुत्र उत्तमचंदजी एवं पौत्र बाबू मुन्नीलालजी हुए। बाबू मुन्नी-लालजीने इस खानदानके व्यापार तथा सम्मानको खूब बढ़ाया। आपने बिहार प्रांतके कई रईसोंसे अपना जवाहरातके व्यापार का सम्बन्ध स्थापित किया और इस व्यवसायमें सम्पति

उपार्जन कर अपनी घरू जमीदारीको खूब बढ़ाया। रईसोंसे भी आपको थोड़े लगानपर जमीदारी प्राप्त हुई थी। आप बड़े धर्मालु तथा परोपकारी सज्जन थे। प्रत्येक निर्वाण उत्सव पर आप पावांपुरीजी जाया करते थे। यहां पर आपने एक धर्मशाला भी बनवाई थी। आस पासकी श्वे० जैन समाजमें आपकी अच्छी प्रतिष्ठा थी। आपको बिहारके रईसोंसे कई सर्टिफिकेट प्राप्त हुए थे। आप सं० १६०० में स्वर्गवासी हुए। आपके नामपर लखनऊसे बाबू सिताबचंदजी दत्तक आये। आपने भी अपने व्यापार तथा प्रतिष्ठाको बड़ी योग्यतासे संभाला, आप संवत् १६८३ में स्वर्गवासी हुए। आपके किशनचंदजी एवं बुधसिंहजी नामक दो पुत्र हुए। लाला किशनचंदजी संवत् १६५६ में स्वर्गवासी हो गये हैं।

वर्त्तमानमें लाला बुधसिंहजी विद्यमान हैं। आपका जन्म संवत् १६३४ मे हुआ। आप भी अपनी समाजमें अच्छे प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। इस समय आपके यहां पर जवाहरात व जमीदारीका काम काज होता है। आपके विजयसिंहजी, जयसिंहजी, कमलसिंहजी, पद्मसिंहजी तथा श्रीपालसिंहजी नामक पांच पुत्र हैं। इनमेंसे प्रथम दो स्वर्गवासी हो गये हैं। शेष तीनों भ्राता शिक्षित तथा मिलनसार सज्जन हैं।

टांक

लाला उमरावसिंहजी टांक का खानदान, देहली

इस परिवार वालोंका मूल निवासस्थान भूरासर (जयपुर-स्टेट) का है। आप टांक गौत्रके श्री जै० श्वे०मं० मार्गीय हैं। इस परिवार वाले भूरासरसे चाटसू तथा चाटसूसे देहली में आकर निवास करने लगे। इस परिवारमें जौहरी हुकुमचंदजी हुए।

जौहरी हुकुमचंदजी :—आप देहलीसे लखनऊ गये तथा वहांपर अवधके नवाबके अन्डर में आपने सर्विस की। आप नवाब शुजाउद्दौला तथा उनके उत्ताराधिकारी आसफउद्दौलाके राज्यकालमें अवधके एक प्रभावशाली कोर्ट जुएलर थे। आपको "राय" का खिताब भी इनायत किया गया था। आप उदार तथा मिलनसार महानुभाव थे। आपकी इस्ट इण्डिया कं० के लखनऊ एजंट आनरेबल मि० पामर से अच्छी मैत्री थी। आपका जन्म सन् १७२८ तथा स्वर्गवास सन् १७८६ में हुआ। आपके टेकचंदजी नामक एक पुत्र हुए। आपका जन्म सन् १७५१ में हुआ था। आप लखनऊसे पुनः देहली चले गये तथा वहा पर जाकर आपने मुगल सम्राटके यहां पर सर्विस प्रारंभ की। आप देहलीकी कोर्टके जौहरी तथा "राय" के खिताबसे सम्मानित रहे। आपके हीरालालजी नामक एक पुत्र हुए। लाला टेकचंदजी का स्वर्गवास सन् १८३४ में हो गया।

लाला हीरालालजी :—आपका जन्म सन् १८०५ में हुआ। आप जवाहरातके व्यापारमें निपुण तथा कुशल व्यक्ति थे आप लार्ड डैलहौजीके विश्वसनीय जौहरी थे। आपने देहली

नरेश श्री सुदर्शन साहब की बहुत सेवाएँ की थीं। आपने प्रसिद्ध सन् १८५७ के गदरके समय ब्रिटिश गवर्नमेंटको बहुत मदद पहुँचाई जिसके उपलक्ष्यमें आपको गवर्नमेंटने २५०००) पच्चीस हजार रुपया इनायत किया था। गदरके पश्चात् आप दिल्ली डिस्ट्रिक्ट कोर्टके असेसर रहे तथा सन् १८६२ में आप म्युनिसीपैलिटीके कमिश्नर चुने गये। इस पद पर रहकर आपने बहुतसे कार्य्य किये। आप एक प्रतिष्ठित व्यक्ति तथा अच्छे जौहरी हो गये हैं। आपका सन् १८६६ में स्वर्गवास हो गया। आपके भोलानाथजी एवं रूपचंदजी नामक दो पुत्र हुए।

उक्त दोनों बन्धुओं का जन्म क्रमशः सन् १८२५ तथा १८३२ में हुआ। आप लोगोंने गदरके समय गवर्नमेण्टको मदद करवानेमें अपने पिताजी को सहायता की तथा नौघरेके मन्दिरको सजाया। आप लोगोका गवर्नमेण्टके उच्च अधिकारियोंमें तथा राजाओंमें अच्छा सम्मान था। आप लोगों का स्वर्गवास क्रमशः सन १८७१ तथा १८६६ में हो गया। रूपचंदजी के रिक्खामलजी नामक एक पुत्र हुए।

जौहरी रिक्खामलजीः—आपका जन्म सन् १८५६ में हुआ। आप सन् १८८७ मे तत्कालीन वाइसराय द्वारा कोर्टके जौहरी बनाये गये तथा सन् १८८१ में ड्यूक आफ आडेनवर्गने भी आपको अपना जौहरी बनाकर सम्मानित किया। इसी वर्ष तत्कालीन कमान्डर इन चीफ द्वारा मुकीम बनाये गये। आपका गवर्नमेंटके उच्च पदाधिकारियोंमें और देशी राजाओं में अच्छा सम्मान था। आप जवाहरातके व्यापारमें निपुण, प्रतिष्ठित तथा योग्य व्यक्ति थे। जिस समय एच० ई० एच० दी ड्यूक आफ कनॉट और ड्यूक आफ औडेनवर्ग भारतमें आये थे उस समय उक्त दोनों महानुभावोंने आपके घर जाकर आपको बहुत सम्मानित किया था। टेहरी नरेश स्व० कीरतिसिंहजी, अलवर नरेश स्व० मंगलसिंहजी, उदयपुरके स्व० महाराणा श्री फतेहसिंहजी, रामपुरके स्व० नवाब साहब, जोधपुरके स्व० महाराजा साहब, मांडीके दीवान पदजिवानन्दजी, उदयपुरके दीवान बलवन्तसिंहजी कोठारी आदि महानुभावोंकी आप पर कृपा रहती थी। टेहरीके महाराजा साहब तो जब जब दिल्ली आते तबर आपको बुलाते तथा बहुत आदर करते थे। आप इस प्रकार यश पूर्वक जीवन बिताते हुए सन् १९०८ में स्वर्गवासी हुए। आपने अपने नामपर अपने भानजे उमरावसिंहजी (जयपुरके कन्हैयालालजी फोफलिया के पुत्र) को दत्तक लिया।

लाला उमरावसिंहजीः—आप तीक्ष्ण बुद्धिवाले, बुद्धिमान सज्जन हैं। आप अपनी प्रारम्भिक शिक्षामें कई क्लासोंमें प्रथम तथा उच्च नम्बरोंसे पास हुए तथा आपको बहुतसे इनाम वगैरह प्राप्त हुए। आपने सन् १९०५ में बी० ए० पास किया। इस परीक्षामें फारसी भाषामें द्वितीय नम्बरसे पास होने पर आपको इनाम मिला था। आप सन् १९१० में एल० एल० बी० पास हुए और एम० ए० तक अध्ययन किया। आप कई भाषाएं जानते हैं तथा १९१० से देहलीके अन्तर्गत वकालत कर रहे हैं। आप यहांके एक प्रतिष्ठित वकील हैं तथा सफलता पूर्वक अपनी वकालत कर रहे हैं। आपको स्व० टेहरी नरेश और उदयपुर महाराणा

साहबकी ओरसे खिलअत वगरह प्राप्त हुई हैं। टेहरी नरेशने आपको अपनी यूरोप यात्रामें साथ ले जानेकी इच्छा प्रकट की थी। मगर बन्धनोंके कारण आपके पिताजीने आपको जाने की परवानगी नहीं दी। आपने सन् १९११ के सेन्सस में, भारतकी ऐतिहासिक खोज आदि २ कार्यों में बहुत भाग लिया है। इसके अतिरिक्त आप पब्लिक लायब्रेरी और रीडिंग रूमके दो समय प्रबन्धक चुने गये। वर्त्तमानमें भी आप प्रबन्धक कमेटीके मेंम्बर हैं। आपका देहलीकी समाजमें अच्छा सम्मान है।

जौहरी हीरालालजी छगनलालजी टांक, जयपुर

इस परिवार वाले चाटसू निवासी टांक गौत्रके श्री जै० श्वे० मं० मार्गीय हैं। इस परिवार वाले चाटसूके अन्तर्गत कपड़ेका व्यापार करते थे। आपलोग वहांपर प्रतिष्ठित समझे जाते थे। आज भी आप की चाटसूमें एक हवेली तथा दुकान बनी हुई है। सेठ दिलसुखरायजी सं० १९३५ में स्वर्गवासी हुए। आपके हीरालालजी एवं छगनलालजी नामक दो पुत्र हुए।

सेठ हीरालालजी एवं छगनलालजीका जन्म सं० १९०२ एव वैशाख बदी ७ सं० १९१७ में हुआ। आप दोनों बन्धु व्यापार कुशल तथा साहसी थे। सं० १९४० मे आपलोग चाटसूसे बम्बई गये और वहांपर अपनी व्यापार चातुरीसे जवाहरातके व्यापारमें लाखों रुपयोंकी सम्पत्ति कमाई। आप सं० १९५२ में बम्बईसे जयपुर चले आये और यहांपर भी जवाहरातका व्यापार प्रारम्भ किया। सेठ छगनलालजी उत्साही तथा धार्मिक व्यक्ति थे। आपको जवाहरातके व्यवसायका बहुत ज्ञान था। आप दोनों भाइयों ने श्रीमालों के मन्दिरके पास जयपुरमें एक धर्मशाला भी बनवाई जो आज भी विद्यमान है। आप दोनों भाइयों का स्वर्गवास क्रमशः सं० १९६३ एवं आषाढ़ सुदी १४ स० १९६६ में हुआ। सेठ हीरालालजीके उमरावसिंहजी एवं छगनलालजीके राजरूपजी नामक पुत्र विद्यमामान हैं। आप लोग सं १९६७ से अलग २ होकर अपना स्वतंत्ररूपसे अलग व्यापार करते हैं।

श्री राजरूपजीका जन्म स० १९६४ की श्रावण बदी १४ को हुआ। आप शिक्षित तथा मिलनसार व्यक्ति हैं तथा वर्त्तमानमें अपने जवाहरातके सारे काम काजको सभालते हैं। आप जैन नवयुवक मण्डलके सदस्य तथा कोषाध्यक्ष, श्रीमालोंके मन्दिरके मैनेजर, श्री० जै० श्वे० कन्या पाठशालाके सेक्रेटरी आदि २ हैं। आपके दुलीचन्दजी नामक एक पुत्र हैं। आप मे० हीरालालजी छगनलाल टांकके नामसे जयपुरमें जवाहरातका व्यापार करते हैं।

जरगड़

जौहरी कपूरचन्दजी कस्तूरचन्दजी जरगड़, जयपुर

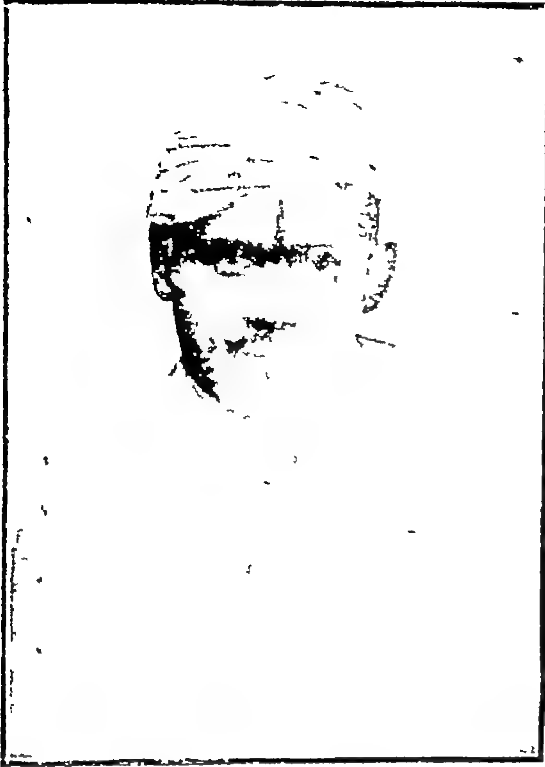
इस परिवार वालोका मूल निवासस्थान देहलीका है। आप लोग जरगड़ गौत्रके

श्री जै० श्वे० म० मार्गीय हैं। देहलीमे आप लोग जवाहरातका व्यापार करते थे। आप लोगोंका नाम वहाके नामी जौहरियोंमें था। कहा जाता है कि आप शाही जौहरियोंमेंसे थे। सुना है कि इस परिवार वाले जयपुर नरेश द्वारा २०८ वर्ष पूर्व देहलीसे जयपुर लाये गये हैं। आप लोगोंने जयपुर आकर भी देहलीके जवाहरातके व्यापारको चालू रक्खा। इस खानदानमे जौहरी कपूरचन्दजी हुए। आपने जयपुरमें जवाहरातका व्यापार किया। आपके कस्तूरचन्दजी नामक एक पुत्र हुए।

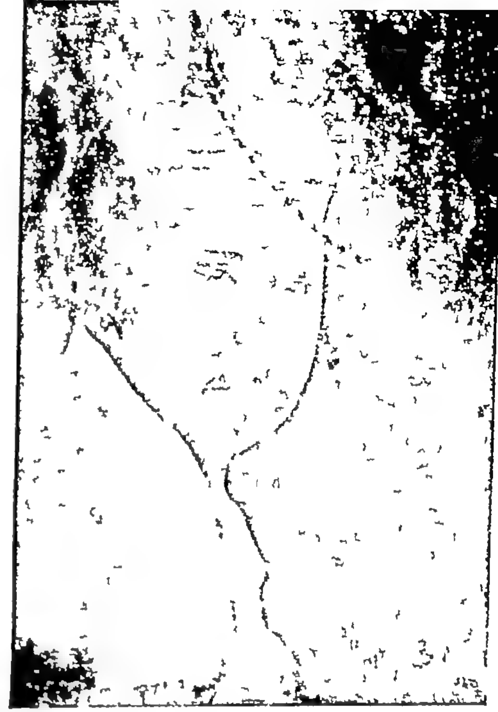
जौहरी कस्तूरचन्दजी :—आप जवाहरातके व्यापारमें निपुण तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति हो गये हैं। आपने अपने हाथोंसे बहुत जवाहरातका व्यापार किया। आप कर्नाटकके नवाबके भी जौहरी थे। आपके नामपर प्रथम शिवबख्शजी गोद आये। इसके पश्चात आपके मेहरचन्दजी एवं मूलचन्दजी नामक दो पुत्र हुए। श्री शिवबख्शजीको कस्तूरचन्दजीने अपना हिस्सा व मकान वगैरह देकर अलग कर दिया। शेष दोनों बन्धु शामलातमें ही व्यापार करते रहे।

श्रीमेहरचन्दजी :—आप व्यापार कुशल तथा साहसी व्यक्ति थे। १२ वर्षकी अल्पायुमें आपके पिताजीका स्वर्गवास हो गया था। अतः छोटी ऊमरसे ही आपको अपना सारा कार्य्य सम्हालना पड़ा। आप योग्य तथा कार्य्य कुशल व्यक्ति थे। लाखोंकी सम्पत्ति कमा कर आपने अपने परिवारके सम्मानको बढ़ाया। आपने अपने यहांपर एक कारपेट फेक्टरी भी खोली थी। आप जयपुरकी जौहरी समाजमें प्रतिष्ठित तथा नामी जौहरी हो गये हैं। आप वजनदार तथा मिलनसार व्यक्ति हो गये हैं। आप गरीबोंके प्रति हमदर्दी रखनेवाले महानुभाव हो गये है। आपने एक "हिन्दू अनाथालय" भी खोला था। आप ही इसके संस्थापक थे तथा दो सालों तक इसे अपने खर्चेसे भी चलाया था। आप बड़े धार्मिक एवं धार्मिक संस्थाओंके सहायक थे। हमें जयपुरमें यह मालूम हुआ है कि जयपुरमें जैनियोंके प्रसिद्ध स्थान दादावाड़ी में आपने अपने खर्चेसे सोनेका काम भी करवाया था। वहांपर फर्श बनवाई तथा हर समय दादावाडीकी सहायता के लिये आप तयार रहते थे। आप माह सुदी ४ सं० १९८५ को स्वर्गवासी हुए। मृत्यु समय आप अनाथालय को २१००) दान दे गये। यह अनाथाश्रम आज भी सुचारु रूपसे चल रहा है। आपके प्रतापचन्दजी एव दौलतचंदजी नामक दो पुत्र हुए।

जौहरी प्रतापचन्दजी :—आपका जन्म सं० १९४८ के करीब हुआ था। आप व्यापार कुशल, धार्मिक भावनाओंके एवं मिलनसार थे। आपने छोटी ऊमरसे ही व्यापारमें भाग लेना शुरू कर दिया था। आप जवाहरात और कालीन दोनोंके काम को देखते थे। मगर कारपेट फेक्टरी मे जोर हिमा अधिक होती थी। इसलिये आपने कारपेट फेक्टरीका काम बन्द कर दिया। आपने अपने यहांपर जेवर और जवाहरातका व्यापार बहुत किया। आपको कई राजा और रईसो द्वारा अपने अच्छे कामके लिये सर्टिफिकेट इनायत हुए थे। चौमू, ईडर आदि ठिकानोंसे भी आपको सार्टिफिकेट प्राप्त हुए थे। आप सं० १९८८ की मगसर बुदी २ को



स्व० जौहरी प्रतापचन्दजी जरगड, जयपुर



स्व० सेठ गणेशीलालजी वेराठी, जयपुर



बाबू तिलोकचन्दजी S/o प्रतापचन्दजी जरगड, जयपुर



बाबू लालचन्दजी वेराठी S/o गणेश-लालजी वैराठी, जयपुर

स्वर्गवासी हुए। आपके कैलाशचन्दजी एवं तिलोकचन्दजी नामक दो पुत्र हुए। इनमेंसे कैलाशचन्दजी तो छोटी ऊमरमें ही गुजर गये हैं। बाबू तिलोकचंदजीका जन्म सं० १६७१ की फाल्गुन सुदी ११ को हुआ। आप बड़े उत्साही एवं मिलनसार नवयुवक हैं। वर्त्तमानमें आप ही अपने व्यापारको संचालित कर रहे हैं।

जौहरी दौलतचन्दजीका जन्म सं० १६५३ में हुआ। अपने ज्येष्ठ भ्राताकी मृत्युके पश्चात् आपने अपने सारे व्यापारको संभाला। आपके हाथोंसे भी व्यापारमें खूब वृद्धि हुई। आप व्यापार कुशल एवं जवाहरातके व्यापारमें निपुण थे। आपको ईडरके महाराजने अपना खास जौहरी बनाया था। इतना ही नहीं ईडरके महाराज और भोपालके नवाबकी ओरसे आपको सार्टिफिकेट भी प्राप्त हुए हैं जिनमें 'आपकी कीमत उचित है और माल उत्तम है' का उल्लेख किया गया है। आपने लाखों रुपयोंके जवाहरातका लेन देन किया होगा। आप यहांके एक प्रतिष्ठित जौहरी हो गये हैं। आपका स्वर्गवास सं० १६८५ की कार्तिक सुदी ८ को हो गया।

वर्त्तमानमें तिलोकचन्दजी मे० कपूरचन्द कस्तूरचन्दके नामसे जयपुरमें जवाहरातका व्यापार करते हैं।

जौहरी सुगनचन्दजी सौभागचन्दजी जरगड़, जयपुर

इस परिवारवाले दिल्ली निवासी हैं। आप जरगड़ गौत्रके श्री जैन श्वे० स्था० आम्नाय को माननेवाले हैं। इस खानदानवाले सेठ सुगनचन्दजीके पिताजी दिल्लीसे जयपुर आये थे। सेठ सुगनचन्दजी कुशल जौहरी तथा होशियार व्यक्ति हो गये हैं। आपने जयपुरमें बहुत जवाहरातका व्यवसाय किया। आप योग्य एवं अनुभवी थे। आपने बहुतसी सम्पत्ति कमाई और अपने सम्मानको बढ़ाया। आप बम्बई गये हुए थे कि ५० वर्षकी आयुमें एका-एक स्वर्गवासी हो गये। आप जवाहरातके व्यापारमें बहुत निपुण थे। आज भी आपके बहुतसे शागीर्द अच्छे जौहरी गिने जाते हैं। आपके सौभागमलजी नामक एक पुत्र हुए।

सेठ सौभागमलजीने छोटी ऊमरसे ही जवाहरातका व्यापार शुद्ध कर दिया था। आपने अपने जवाहरातके व्यापारको बहुत बढ़ाया। दूर २ देशोंके लोग आपसे मिलते और जवाहरात खरीद कर ले जाते थे। आपको देहली दरबारके समय तत्कालीन वाइसरायने एक सर्टिफिकेट देकर सम्मानित किया था। इसी प्रकार सन् १६०२-३ की इण्डियन आर्ट मेन्यूफेक्चर एक्जीबिशनकी ओरसे भी आपको प्रथम नम्बरका मेरिट इनाम मिला था। आपको और भी बहुतसे प्रशंसा पत्र प्राप्त हुए थे। आप सन्तोषी, समयके पाबन्द तथा धार्मिक व्यक्ति थे। आपके पुत्र इन्द्रचन्द्रजीका जन्म सं० १६३५ में हुआ। आप अपने पिताजी द्वारा स्थापित जवाहरातके व्यापारको सफलता पूर्वक संचालित करते हुए सम्वत् १६८५ की जेठ सुदी ८ को

स्वर्गवासी हुए। आप धार्मिक भावनाओंके माता पिता की आज्ञा पालनेवाले थे। आपके नाम पर जोधपुरकी पटवा फेमिली से श्री मिश्रीमलजी पटवाके पुत्र सुखलालजी गोद आये। सुखलालजीका जन्म संवत् १९७२ में हुआ। आप मेट्रिक तक पढ़े हुए हैं तथा मिलनसार युवक हैं। वर्तमानमें आप अपना व्यवसाय संचालित कर रहे हैं।

मेहमवार

लाला जवाहरलालजी मोतीलालजी मेहमवार, लखनऊ

इस परिवारका मूल निवासस्थान झूँझनू (जयपुर स्टेट) का है। आपलोग मेहमवार गौत्रके श्री जैन श्वे० मं० मार्गीय हैं। इस परिवारके लाला ठाकुरसीदासजीके पीरामलजी, चुन्नीलालजी एवं सालगरामजी नामक तीन पुत्र हुए। इनमेंसे लाला चुन्नीलालजी सबसे पहले झूँझनूसे लखनऊ आये। आपने यहांपर जवाहरात व लेनदेनका व्यापार किया। आपके जवाहरलालजी नामक एक पुत्र हुए। आपलोग स्थायी रूपसे यहीं पर निवास करने लग गये।

लाला जवाहरलालजीका जन्म संवत् १८९३ के करीब हुआ था। आप बड़े धार्मिक, प्रतिष्ठित तथा प्रसिद्ध जौहरी हो गये हैं। आपने लखनऊमें एक मन्दिर बनवाया व अपने खानदानकी प्रतिष्ठा स्थापित की। आपने भी सफलता पूर्वक जवाहरातका व्यवसाय किया। आपका स्वर्गवास करीब ५० वर्ष पूर्व हो गया है। अपके नाम पर पालीसे सेठ बख्तावरमलजी के पुत्र मोतीलालजी गोद आये हैं।

लाला मोतीलालजीका जन्म सं० १९३५ में हुआ। आप व्यापार कुशल, अनुभवी तथा मिलनसार सज्जन हैं। आपने यहांपर आनेके बाद अपने व्यापारको सफलता पूर्वक संचालित किया और अपनी प्रतिष्ठा स्थापित की। आपने जमीदारी वगैरह भी खरीद की है। आप यहांपर प्रतिष्ठित तथा अपने फर्मके प्रधान संचालक हैं। आपके प्यारेलालजी, कुन्दनलालजी, जीवनलालजी, मोहनलालजी, सुन्दरलालजी एवं रतनलालजी नामक छः पुत्र हुए। इनमें लाला प्यारेलालजीका स्वर्गवास हो गया है। शेष सब बन्धुओंका जन्म क्रमशः १९५६, ६५, ७१ एवं ७३ में हुआ। आप सब लोग मिलनसार हैं तथा अपने व्यापारमें हाथ बटा रहे हैं बाबू रतन लालजी अभी पढ़ते हैं। आप लोगोंके यहांपर जवाहरात, बैंकिंग व लेनदेनका व्यापार होता है।

लाला जवाहरलाली सरदारसिंहजी मेहमवार, देहली

इस परिवारका मूल निवासस्थान झूंझनू (जयपुर-स्टेट) का है। आपलोग मेहमवार गौत्रके श्री जै० श्वे० मं० मार्गीय हैं। झूंझनूसे यह परिवार देहली आकर यहीं पर स्थायी रूपसे निवास करने लगा। इस परिवारके पुरुष लाला मुन्नालालजी देहलीमें जवाहरातका

व्यापार करते थे। आप धार्मिक पुरुष थे। आपके लच्छूमलजी नामक एक पुत्र हुए। लाला लच्छूमलजीका जन्म सं० १८७० का था। आप अच्छे स्वभाव वाले तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति हो गये हैं। आप भी सफलतापूर्वक जवाहरातका व्यापार करते हुए सं० १९३५में स्वर्गवासी हुए। आपने अपना एक मकान भी देहलीमें खरीदा था। आपके जवाहरलालजी नामक एक पुत्र हुए।

लाला जवाहरलालजीका जन्म सं० १९०७ में हुआ। आपका शरीर हृष्ट पुष्ट तथा सुन्दर था। आप भी जवाहरातका व्यवसाय करते हुए सं० १९६८ में स्वर्गवासी हुए। आपकी द्वितीय पत्नी श्रीपानकँवरबाई आज भी विद्यमान हैं जिन्होंने अपने मकानको दुबारा सुन्दर बनवाया और इसके अन्दर एक कुआ तथा एक मन्दिर बनवाया है। आपका अनूपशहर निवासी लाला हीरालालजीके पुत्र सरदारसिंहजी पर बड़ा प्रेम है। आप हीने सरदारसिंहजी का स्नेह पूर्वक लालन पालन किया है।

लाला सरदारसिंहजीका जन्म सं० १९२९ में हुआ। आप मिलनसार एवं योग्य व्यक्ति हैं। वर्त्तमानमें आप ही अपने जवाहरातके व्यापारको संचालित कर रहे हैं। आपने १८ वर्षों-तक कलकत्तेमें आफीसोंकी दलाली कर बहुत व्यापारिक ज्ञान प्राप्त किया। आप कलकत्ते के लाला गणेशीलालजी कपूरचन्दजीके शागिर्द हैं। आपने अपने हाथोंसे जवाहरातका व्यवसाय किया है। आप मोती धोने व बनानेमें बड़े निपुण हैं। आपकी पेरिस तथा लन्दनमें बहुतसी आढ़तें हैं। आपने भी बाबू सुरेन्द्रकुमारजीका स्नेहपूर्वक पालन किया है। सुरेन्द्रकुमारजी उत्साही नवयुवक हैं।

जौहरी चन्दनमलजी गणेशीलालजी बेराठी, जयपुर

इस खानदानके पूर्वजोंका मूल निवासस्थान वैराठीका था। आपलोग मेहमवार गौत्रके श्री जैन श्वे० मं० मार्गीय हैं। वैराठसे उठनेके कारण आप वैराठीके नामसे मशहूर हैं। इस परिवारमें सेठ केवलचन्दजीके पुत्र बल्देवजी हुए। आप ही सबसे पहिले वैराठसे जयपुर आये और यहांपर जवाहरातका व्यापार करके यहींपर बस गये। आप बड़े प्रतिष्ठित एवं योग्य व्यक्ति थे। आपको खेतड़ीसे मुसाहिबकी पदवी भी प्राप्त हुई थी। आप यहाके अच्छे जौहरी हो गये हैं। आपके पुत्र देवीलालजी भी जवाहरातका व्यापार करते रहे। आपके चन्दनमलजी नामक एक पुत्र हुए।

श्रीचन्दनमलजीने अपने जवाहरातके व्यापारको बढ़ाया और अपनी प्रतिष्ठा स्थापित की। आपने बम्बई आदि दूर दूरपर स्थानोंमें जवाहरातका व्यापार कर नाम पाया। आप जयपुरके प्रसिद्ध जौहरी हो गये हैं। आपके गणेशीलालजी नामक एक पुत्र हुए। श्री गणेशीलालजीका जन्म सं० १९४० की भादवा सुदी ४ को हुआ। आपने भी अपना व्यापार

चातुरीसे अपने जवाहरातके व्यापारको बढ़ाया और अपना सम्मान स्थापित किया। आप साहसी व्यापारी, थोक व्यापार करनेमें चतुर तथा सम्माननीय जौहरी हो गये हैं। आपने अपने हाथोंसे लाखों रुपये उपार्जित किये। आपका स्वर्गवास सं० १६८८ के वैशाख वदी ७ को हुआ। आपके नामपर जोधपुरसे बाबू लालचन्दजी गोद आये। बाबू लालचन्दजी का जन्म सं० १६७६ की श्रावण सुदी १० को हुआ। आप उत्साही नवयुवक हैं तथाअपने कामकाजको संभाल रहे हैं।

पटोलिया

पटोलिया परिवार, जयपुर

इस परिवारका मूल निवासस्थान लखनऊ का है। आप पटोलिया गौत्रके श्री जै० श्वे० तेरापंथी सम्प्रदायको माननेवाले हैं। इस परिवारके पूर्व पुरुष बहादुरसिंहजी लखनऊसे करीब १५० वर्ष पूर्व जयपुर आये और यहांपर जवाहरातका व्यवसाय किया। आप यहां पर स्थायी रूपसे बस गये तथा हवेली वगैरह बनवाई। आपके जवाहरमलजी एवं चुन्नीलालजी नामक दो पुत्र हुए।

श्री जवाहरमलजी भी जवाहरातका व्यापार करते हुए अपने पुत्र मोतीलालजीको छोड़ स्वर्गवासी हो गये। जौहरी मोतीलालजीके भूरामलजी नामक एक पुत्र हुए।

जौहरी भूरामलजी :—आपका जन्म संन् १६०८ में हुआ। आप प्रभावशाली, योग्य, तथा वजनदार व्यक्ति थे। आप एफ० ए० तक पढ़े हुए थे तथा प्रारंभसे ही तीक्ष्णबुद्धि वाले व्यक्ति थे। प्रथम आप इंजिनीयरिंग डिपार्टमेंटमें सर्विस करते रहे। इसके पश्चात् आप नाबालगीके समयमें कपड़ द्वारा (प्राइवेट पर्स स्टेट ट्रेझरी) के सेक्रेटरी रहे। फिर आप अकाऊंट डिपार्टमेंटमें डिप्टी अकाउंटंट जनरलके पदपर नियुक्त हुए। आप अपनी कार्य्य कुशलताएव व्यवहार चातुरीसे उत्तरोत्तर पदवृद्धि करते रहे।

आप जयपुर स्टेटमें सबसे पहले मैनेजर होकर उनियारा ठिकाने की व्यवस्था करनेके लिये उनियारा भेजे गये। आपसे स्टेटके सभी उच्च पदाधिकारी तथा पोलिटिकल एजंट प्रसन्न रहाकरते थे। जयपुर पोलिटिकल एजंट मेसर्स डब्ल्यू० एच० बेनाल्ड, एच० पी० पीकाक, कर्नल ए० पी० थार्नटन आदिने आपकी व्यवस्थापिका शक्ति तथा अनुभव शीलता की बहुत प्रशंसा की थी। सवाईसाके महाराजाने भी एक पत्र द्वारा आपकी उनियारा ठिकानेके मेनेजर की नियुक्ति पर हर्ष प्रगट किया था। इसके अतिरिक्त कर्नल एस० एस० जेकाब आदिने आपको सर्टिफिकेट देकर सम्मानित किया था। आपका जयपुर स्टेटमें अच्छा सम्मान था तथा दरबारमें आपको कुर्सी प्राप्त थी। इसी प्रकार जनतामें भी आप सम्माननीय व्यक्ति थे। आपहोने सर्व प्रथम एक तेरापंथी साधुकी मृत्युके समय सरकारसे हाथी, घोड़ा, लवाजमा

वगैरह प्राप्त कर साधूजी के शव के जुलूस को अजमेर दरवाजेकी ओर निकाला था। आपका यहां की पंच पञ्चायतीमे अच्छा सम्मान था। आपका सं० १६३६ में स्वर्गवास हुआ। आपके सूरजमलजी, छगनलालजी तथा मगनलालजी नामक तीन पुत्र हुए।

आप तीनों भाइयोंका जन्म क्रमशः सं० १६३६, १६३८ तथा १६४१ में हुआ। आप तीनों भाई मिलनसार तथा उत्साही सज्जन हैं। बाबू सूरजमलजी एफ० ए० तक पढ़ कर बैंक ओफ बंगालकी सिराजगञ्ज शाखा पर ट्रेझरर नियुक्त हुए। फिर आपने अपने जवाहरात के व्यापारको शुरू किया। आप यहां पर वजनदार व्यक्ति माने जाते हैं। वैश्य महासभाके ज्वाइंट सेक्रेटरी भी आप रहे। आप उत्साही हैं। बाबू छगनलालजी पहले जवाहरातका व्यापार करते रहे। वर्त्तमानमें आप जयपुरमें चीफ कोर्टमें सफलता पूर्वक वकालत कर रहे हैं। श्री मगनलालजी जवाहरातके व्यापारमें निपुण थे। आपने बहुत जवाहरातका व्यवसाय किया। आपका स्वर्गवास सं० १६६२ में हो गया है। आपलोग मे० सूरजमल पटोलियाके नामसे जवाहरातका व्यापार करते हैं।

मूसल

जौहरी केशरीचन्दजी भँवरलालजी मूसल, जयपुर

इस परिवारका मूल निवासस्थान मालपुरा (जयपुर स्टेट) का है। आप लोग मूसल गौत्रके श्री जै० श्वे० स्था० आम्नायको माननेवाले हैं। इस परिवारके सेठ रुघनाथजी करीब १२५ वर्ष पूर्व मालपुरासे जयपुर आये तथा यहांपर स्थायी रूपसे निवास करने लग गये। आपने तथा आपके पुत्र मांगीलालजीने यहांपर लेनदेनका व्यापार किया। सेठ मांगीलालजी-का जीवन सादा, सदाचार पूर्ण तथा भजनानंदी था। आप संवत् १६५२ में स्वर्गवासी हुए। आपके केशरीचंदजी तथा कन्हैयालालजी नामक दो पुत्र हुए।

सेठ केशरीचंदजी—आपका जन्म संवत् १६१५ में हुआ। आप जवाहरातके व्यापारमें विशेष कुशल थे। आपने सर्वप्रथम अपने यहांपर जवाहरातका व्यापार प्रारम्भ किया तथा अपने व्यवसायको बहुत बढ़ाया। जवाहरातमें आपकी दृष्टि अच्छी थी। आप यहांके प्रसिद्ध जौहरी तथा बाहर "मूसलजी" के नामसे मशहूर थे। आप बड़े धार्मिक, स्थानकवासी समाजमें प्रतिष्ठित तथा चार व्रत, रात्रि भोजन आदिको दृढ़तासे पालन करनेवाले महानुभाव थे। ३० वर्षोंतक आप भोजनादिके नियमोंको पालन करते रहे। आप सं० १६८१ की माह सुदी २ को स्वर्गवासी हुए। आपके भँवरीलालजी नामक एक पुत्र हुए। श्री कन्हैयालालजी भी अपने भाईके समान ही स्वभाव तथा आचरण वाले थे। आप भी जवाहरातके व्यापारमें योग देते रहे।

सेठ भँवरीलालजीका जन्म श्रावण वदी ४ सं० १६४६ को हुआ। आप आत्मसम्मान

वाले, मिलनसार तथा वजनदार व्यक्ति हैं। आपके धार्मिक विचार बड़े उन्नत हैं। आप जयपुर स्था० संघकी ओरसे अखिल भारतवर्षीय स्था० कान्फ्रेंसकी मैनेजिङ्ग कमीटीके प्रतिनिधि चुनकर भेजे गये थे। जयपुर श्रीमाल समाजकी मैनेजिंग कमेटीके आप मेम्बर भी हैं। आपका यहांपर अच्छा सम्मान है। वर्त्तमानमें आप ही अपने जवाहरातके व्यापारको सञ्चालित कर रहे हैं। जाति सेवा करनेकी आपमें विशेष लगन है। आपके गट्टूलालजी, मुन्नीलालजी, सरदारमलजी, फतेचन्दजी तथा वहादुरमलजी नामक पांच पुत्र हैं। गट्टूलालजी व्यापारमें भाग लेते हैं।

ढोर

जौहरी सरदारमलजी पूनमचन्दजी ढोर, जयपुर

इस परिवारवाले जौनपुर निवासी ढोर गौत्रके श्री जै० श्वे० मं०मार्गीय हैं। आपलोग जौनपुरसे दिल्ली और दिल्लीसे सेठ दान्तरायजी करीब २०० वर्ष पूर्व सागानेर आये। आप बड़े प्रसिद्ध आदमी हो गये हैं। आपके पूर्वज साह तोलाजी तथा उनके पुत्र मेहराजजी द्वारा सं० १४७६ के माघ वदी ११ की पधराई हुई श्री शांतिनाथ भगवानकी प्रतिमाजी आज भी जयपुर के नये मन्दिरमें विद्यमान है। इसी प्रकार संवत् १५११ के जेठ सुद ३ पर अजीतमलजी और सोहनपालजी ढोरने दो प्रतिमाएं पधराई थीं जिनका शिलालेख व प्रतिमाजी आज भी बनारसमें विद्यमान है। ये प्रतिमाएँ जौनपुरसे १॥ मीलकी दूरीपर गोमती नदीके किनारेसे मिली हैं। श्री दान्तरायजीके पुत्र सेवारामजी सागानेरसे जयपुर आकर रहने लगे। आपने यहांपर जवाहरातका व्यापार किया। आपके फकीरचन्दजी तथा जमनादासजी नामक दो पुत्र हुए। श्री जमनादासजीके घासीलालजी, गुलावचन्दजी एवं गोपीचंदजी नामक तीन पुत्र हुए। आप सब लोग जवाहरातका व्यापार करते रहे।

सेठ घासीलालजीका जन्म सन् १९०६ की मगसर सुदी १३ को हुआ। आप यहांकी श्रीमाल समाजमें प्रतिष्ठित व्यक्ति तथा चौधरी थे। आप भी जवाहरातका व्यापार करते हुए स० १९८९ की भादवा सुद ६ को स्वर्गवासी हुए। आपके केशरीचंदजी, हजारीमलजी, श्रीचन्दजी, सरदारमलजी, मोमीलालजी तथा पूनमचन्दजी नामक छ. पुत्र हुए। इनमें केशरीचन्दजी, हजारीमलजी एवं श्रीचंदजीका स्वर्गवास हो गया है। तथा मोमीलालजी अपने काका गोपीचन्दजी के नामपर गोद चले गये हैं।

श्री सरदारमलजीका जन्म स० १९३६ में हुआ। आप यहां पर प्रतिष्ठित व्यक्ति व श्रीमाल सभाके पंच हैं। आप जवाहरातका व्यापार करते हैं। श्री पूनमचन्दजीका जन्म स० १९८७ की पौस सुदी १५ को हुआ। आप योग्य तथा मिलनसार हैं और अपने जवाहरातके व्यापारको सफलता पूर्वक कर रहे हैं। आप श्री श्वे० जैन पाठशालाके सन् १९१० से

आजतक सेक्रेटरी हैं। इसके अतिरिक्त आप पाच सालों तक श्री जैन श्वे० कान्फ्रेन्सके प्रांतीय सेक्रेटरी भी रहे। आप उत्साही तथा सार्वजनिक स्पीरीटवाले व्यक्ति हैं।

जूनीवाल

जौहरी गुलाबचन्दजी राजमलजी जूनीवाल, जयपुर

इस परिवारवाले देहली निवासी जूनीवाल गौत्रके श्री जै० श्वे० तेरापन्थी सम्प्रदायको माननेवाले हैं। इस परिवारवाले देहलीमें जवाहरातका व्यापार करते थे। तदनन्तर इस परिवारके सेठ भवानीशङ्करजी जयपुर आकर अपना जवाहरातका व्यापार करने लगे। कहा जाता है कि आपको महाराज प्रतापसिंहजी देहलीसे लाये थे। सेठ भवानीशङ्करजीने जयपुरमें एक हवेली,बनवायी और यहाँपर स्थाई रूपसे निवास करने लगे। जवाहरातके व्यापारमें बहुत सी,सम्पत्ति उपार्जित कर आपने बहुत जायदाद भी खरीदी और अपनी प्रतिष्ठा स्थापित की। आपने एक वैष्णव मन्दिर तथा एक बगीची भी बनवाई जो आज भी विद्यमान है। आपके पुत्र श्रीचन्दजी भी बडे स्केलपर जवाहरातका व्यापार करते रहे। श्रीचदजीके लालजीमलजी, लालजीमलजी के गणेशलालजी तथा गणेशलालजी के फूलचन्दजी नामक पुत्र हुए। आप सब लोग जवाहरातका व्यापार करते रहे।

सेठ फूलचन्दजीने सर्व प्रथम तेरापन्थी धर्म अंगीकार किया था। आप भी जवाहरातका व्यापार करते हुए स० १९५६ मे स्वर्गवासी हुए। आपकी यहांपर अच्छी प्रतिष्ठा थी। आपके पुत्र गुलाबचन्दजीका जन्म सं० १९३३ में हुआ। आप बड़े धार्मिक तथा सरल स्वभाव वाले व्यक्ति थे। आप भी जवाहरातके व्यवसायको करते हुए सं० १९८५ में स्वर्गवासी हुए। आपके राजमलजी, मानमलजी, दौलतमलजी, धनरूपमलजी एवं पदमचन्दजी नामक पाँच पुत्र हुए। बाबू राजमलजी मिलनसार हैं तथा वर्त्तमानमे अपने जवाहरातके व्यवसायके प्रधान सञ्चालक हैं। आपके सरदारमलजी आदि दो पुत्र हैं। बाबू मानमलजी तथा दौलतमलजी जवाहरातके व्यापारमें भाग लेते हैं। धनरूपमलजी एफ० ए० में पढते हैं। बाबू मानमलजीके कैलाशचन्दजी तथा सन्तोषचन्दजी नामक दो पुत्र हैं।

चंडालिया

श्री लक्ष्मीचन्दजी श्रीमाल का खानदान, जयपुर

इस परिवारवाले देहली निवासी चण्डालिया गौत्रके श्री जै० श्वे० स्था० सम्प्रदायके अनुयायी हैं। यह परिवार देहलीसे कानपुर, कानपुरसे शुजालपुर, शुजालपुरसे सारंगपुर तथा सारंगपुरसे रिंगणोद आया और यहींपर स्थाई रूपसे निवास करने लग गया।

इस खानदानके पूर्व पुरुष जीवराजीके एवन्तीदासजी, एवन्तीदासजीके शोभाचन्दजी तिलोकचन्दजी तथा कपूरचन्दजी नामक तीन पुत्र हुए। इनमें शोभाचन्दजीके मेहरचन्दजी, खूबचन्दजी एवं मंच्छारामजी नामक पुत्र हुए। इनमें खूबचन्दजीके पुत्र नीमचन्दजी सारंगपुर से शुजालपुर आये। आप प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। आप ही पुनः शुजालपुरसे रिंगणोद चले आये और यहांपर बड़े रावलेमें कामदारीका काम किया। आपका विवाह बड़े रावले ठिकाने में श्री बखतकुंअरवाईके साथ हुआ था जिसमें आपको १००) सालानाकी जागीरीकी ज़मीन बड़े रावलेकी ओरसे मिली थी। आपके पुत्र जगन्नाथजीके जुहारीलालजी, मिश्रीलालजी एवं लक्ष्मीचन्दजी नामक सन्ताने हुईं।

श्री जुहारीलालजी:—आप अनुभवी तथा मिलनसार व्यक्ति हैं। आपने सं० १६५६ के दुष्कालके समय गरीबोंकी बहुत सेवा की थी। श्री लक्ष्मीचन्दजी साहसी तथा अच्छे व्यक्ति हैं। आप रिंगणोद पंचायत बोर्डके मेम्बर थे। आपने एक समय साहस पूर्वक जावरा नवाब साहबसे निवेदनकर रिंगणोदकी नदीमें मछलीकी शिकार न करनेकी प्रार्थना की थी। आपके हीरालालजी, पन्नालालजी, मोतीलालजी, राजमलजी, सौभाग्यमलजी, चांदमलजी एवं वाघमलजी नामक सात पुत्र हैं। इनमें राजमलजी जयपुर चले गये हैं। शेष सब बन्धु मिलनसार हैं।

लाला गिरधारीलालजी, लखनऊ

लाला गिरधारीलालजी श्री जै० श्वे० मंदिर मार्गीय सज्जन थे। आप बहुत ही योग्य, जवाहरातके व्यापारमें निपुण तथा अनुभवी महानुभाव हो गये हैं। आप बहुत प्रसिद्ध जौहरी तथा सम्पूर्ण श्रीमाल समाजमें प्रतिष्ठित व्यक्ति हो गये हैं। आपके करीब २२५ शागिर्द थे जो आज भी आपकी जवाहरातके व्यापारकी निपुणताको याद करते हैं। आप जैन सिद्धान्तोंके जानकार, धार्मिक तथा मिलनसार महानुभाव थे। लखनऊके नवाबके यहांपर आपका बहुत सम्मान था। आपका नाम बहुत प्रसिद्ध था। आप लाला साहबके नामसे विशेष प्रख्यात थे। आपके पुत्र कन्हैयालालजी हुए। वर्त्तमानमें इस खानदानमें कोई भी विद्यमान नहीं है।

❀ समाप्त ❀